

## प्रस्तावना ॥

सृजन पालन आदि कर्ता ईश्वर ने इस स्थूल भूतम कारण एवं पञ्च तत्वमय इन्द्रियादि सहित इस मनुष्य शरीर को उत्पन्न किया और इसमें इस शरीर द्वारा उपयुक्त यहाँ तक शक्ति दे दी है कि यही मनुष्य इह लौकिक धर्म अर्थ काम और धार लौकिक मोक्ष को भी मिट्टु कर सकता है परन्तु इन सबों का मुख्य कारण आरोग्यता है । जिस शरीर में आरोग्यता नहीं होती वह समस्त भूमण्डल का राजा होने पर और चौगुट कला विद्या निधान रहने पर भी उपरोक्त चारों पदार्थों से वञ्चित रहता है । हाय वह आरोग्यता जैसी कि अब चाहिये कहीं नहीं दिखाई देती । पुरा काल में इसी भूमण्डल के मध्य में आरोग्य प्रभाव से कैसे २ मीर पुरुष और वेदोपवेद के आद्योपान्त वेत्ता अनेक महर्षि हुये हैं कि जिनकी विख्यात अब तक सब मनुष्यों के हृदयस्थ हो रहा है । थोड़ेही रोज हुये कि इसी मध्य प्रदेश में आसहा ऊदल दयाराम आदिक अति यलयान और श्रीधर आदिक कैसे विद्वान हुये हैं कि जिनका शतांश भी आज कल के मनुष्यों में होना दुष्कर है, वर्तमान में ही देखिये हम लोगों की अपेक्षा इस समय इङ्ग्लैण्ड के लोग इसी दिन चर्म्या रात्रि चर्म्या के उत्तम आचरण से कैसे २ काम कर रहे हैं कि जिनके केवल यंत्र विद्याओं को देख कर एक दूसरे ब्रह्मा का अवतार मानना पड़ता है । इस से सब से प्रथम इस आरोग्यता पर सब को ध्यान देना अवश्य चाहिये । यद्यपि लोग रिष्ट पुष्ट और अपने काम काज में लिपटे हुये दिखाई देते हैं, लेकिन प्रायः देखने में यही आता है कि लोग मिथ्याहार विहारादि द्वारा रोगाकुल हो हजार में चाहे दो, चार पूर्ण आयु को प्राप्त होते हैं बाकी सब अकाल ही में मृत्यु को प्राप्त होते हैं । वेद में भी प्रमाण है कि मनुष्य शत जीवी हैं परंच विकर्म के प्रभाव ( सांसारिक बुरे आचरण) से शीघ्र ही काल यम होते हैं । यह वेद का कथन प्रत्यक्ष देखने में आता है कि

आज कल मनुष्य तुच्छ २ रोगों से अकस्मात् शीघ्र मर जाते हैं । तथा तीस ३० चालीस ४० वर्ष भर में ही मृत हो जाते हैं । कहां तक कहें कि दशै वर्ष की अवस्था से बाल पकना शुरू हो जाता है । यहां तब देखने में आता है कि पांच सात वर्ष के बालक मूत्र रुच्छादिक रोगों से पीड़ित हैं । इसका मुख्य कारण यह है कि आंगे के लोगों का खाना पीना चलना फिरना स्त्री प्रसङ्गादिक जितने कर्म हैं सब ठीक तौर पर ये आज कल क्यों नहीं हैं वैद्यके शास्त्र के न जानने से ! वैद्यक विद्या केवल वैद्यों ही के लिये नहीं है बल्कि सर्वे साधारण के स्मरण रखने के योग्य है ।

सर्वे साधारण में यह विद्या प्रायः लुप्त क्यों हो गई है कारण यह है कि जब से यह देश अत्यापारी यवनों के हाथ में आकर उत्पीड़ित होने लगा और समस्त वेद वेदाङ्ग यावत् हिन्दू शास्त्र ये वे सब भस्मी भूत हो कर प्रदेश मात्र में सौदा विद्या फैल गई और प्रजा शास्त्र को असहन कष्ट प्राप्त होने लग गया तभी से यहां के लोगों का शारीरिक और मानसिक बल क्रम से घटते घटते जो कुछ रहा सहा वह भी अङ्गरेजी राज्य के गुणानुसार खाना पीना रीति नीति प्रयत्नित होने से मनुष्य प्रकृति में बहुत कुछ हेर फेर हो इस महोपकारी विद्या का लोप ही हो गया ।

अतीव आक्षेप का विषय इस पर है कि जब तमाम भारत वर्ष अस्वास्थ्य कर क्यों हो गया है और इसका प्रतीकार भी किसी प्रकार हो सकता है इस बात की कोई खोज खबर नहीं लेता ले कर, यह सबों को दृढ़ निश्चय हो गया है कि जब तब इस वैद्य विद्या में राजा ध्यान नहीं देगा उन्नति होना असंभव है ॥

पर हम यही कह सकते हैं कि इस विद्या का जीर्णोद्धार चाहे जय हो समाज ही करेगी । इस लिये विशेष कर पहिले, हम आयुर्वेदीय चिकित्सक जन समाज से ही सन्मन्य प्रार्थना करते हैं कि आप लोग क्यों घोर निद्रा में सो रहे हैं क्या आप लोगों के कर्ण में रोगाक्रान्त दुःखियों

देश वाले आज तक नहीं कर सकते । हाय, यह यही आयुर्वेद है कि जो इस समय प्रायः लुप्त दशा पर भी इस देश के अनेक चिकित्सक बिना काटेही स्नान मूल प्रलेप पही अथवा पिचकारी किम्या अन्य कोई औषध भर कर अनायाम घाय अच्छा कर देते हैं । ऐसे बहुत ब्रण देखे गये हैं कि जिन्हें डाक्टर लोग पुलटिस देकर नहीं पका सके देशी वैद्यों ने एकही प्रलेप के द्वारा उसे गला दिया है । शरीर में ऐसे बहुतसे स्थान हैं कि जहां शस्त्र प्रयोग अत्यन्त कठिन और दुखदाई है डाक्टर लोग सेवाय शस्त्र प्रयोग के पीस और रक्त कदापि नहीं गिरा सक्ते परन्तु एतद्देशीय उत्तम चिकित्सक गण औषध के द्वारा ऐसी युक्ति करते हैं कि चमड़ा फट कर आपसे आप पीस और रक्त निकल आता है । ऐसे भी बहुत ब्रण तथा शोथ देखे गये हैं कि डाक्टरों ने बहुत दिनों तक अनेक चेष्टा की पर ये नहीं बैठे और आयुर्वेदाक्त प्रलेप द्वारा झट पट बैठ गये हैं । ब्रण शोधन और रोपण के लिये आयुः शील गुणोंपेत पण्डित गण ऐसे २ तैल और घृत निकाल गये हैं कि जिनके द्वारा भगन्दर नाड़ी ब्रण और दुष्ट ब्रण अच्छा हो जाता है । अपची गण्डमाला आदि रोगों के अच्छा करने में आज तक आयुर्वेदाक्त चिकित्सकों की बराबरी कोई नहीं कर सका ॥

घात रोग, कुष्ठ रोग, जीर्णञ्जर प्रभृति रोगों पर आयुर्वेदाक्त केवल तैल जैसा उच्छिष्ट है वैसे उष्ण औषध दूसरे किसी चिकित्सक के मत में नहीं पाया जाता रक्तातिसार आदि रोगों में हमारे देश की औषधियां वेणु सुगन्ध वाला कुरैया नागरमोषा आदि जैसी गुण कारिणी हैं विदेशी दवाइयों में ऐसी कोई नहीं है यह घात बहुत ठीक और मेटेरियामेडिका एथं फारना कोपिया आदि किताबों से स्पष्ट है कि इस देश में आय कर डाक्टर लोग भी एतद्देशीय औषधियों का अनुकरण पूर्यक काम में लाने लगे तथापि हमारे शास्त्रोक्त कुटजायलेह, कुटज पुटपाक की चमत्कारी को नहीं पाते । ग्रहणी उदर आदिक रोगों में प्रत्यक्ष देखा जाता है कि देशी वैद्य लोग परपटी दुग्ध बटी, मानमंड प्रभृतिके द्वारा जितने रोगी आरोग्य कर सक्ते हैं उतना डाक्टरों से होना असम्भव है ॥

## इसपत्रका मुख्यप्रयोजन क्याहै ॥

व्याध्युपश्रानां व्याधिपरिमोक्षः स्वस्थस्य रक्षणञ्च ॥

आध्यात्मिक ( ज्वरादि रोगों से क्लेश ) आधि भौतिक ( सर्पादि दुष्ट जन्तुओं से क्लेश ) आधि दैविक ( मन इन्द्रियादिकों से क्लेश ) रोग युक्त पुरुषों को रोग से परिमोक्ष करना तथा आरोग्य जन की रक्षा । इस वास्ते हम सब मनुष्यों के उपकार के लिये लघु ग्रहत्सिद्धान्त ग्रन्थों की सम्पत्ति से एवं श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये हुए अभिप्रायों से, अनुमान से, प्रत्यक्ष से, वर्तमान पृथ्वी जल वायु के गुणानुसार देह पालन, आयुस्संरक्षण धात्री शिक्षा, बालरक्षा, स्त्री पुरुष व्यवहार, साक्षात्खाद्य आचार व्यवहागादि अनेक शरीरोप योगी पदार्थों का वर्णन आरोग्य दर्पण पत्र द्वारा प्रकाश करना आरंभ किया है आशा है, कि इस पत्र के अनुसार चलने से जैसे की आगे के लोग पुरुषार्थी पराक्रमी और विद्वान होते थे अथ भी होने लगे । आज हम बड़े आनन्द के साथ मनुष्यों के उन महूल कारों का यों का प्रकाश करते हैं जो कि सब से प्रथम मनुष्यों को फलदायक हैं ॥

## शौच ॥

सो दो प्रकार है एक बाह्य दूसरा आभ्यन्तर मृत्तिका और जलसे हस्त पादादि धोना बाह्यशौच है और काम क्रोध लोभ मोहादिक से रहित होना आभ्यन्तर शौच है । अतएव मनुष्यको शरीर रक्षार्थ यह दोनों शौच करना आवश्यक है । सबको उचित है कि सूर्योदय के पूर्वही उठ ईश्वर की प्रार्थना कर अपने कर्तव्यकार्य को विचार कर तब शौच अर्थात् दिशा को जाये परन्तु मत्वासे उठ तभी मग्न नहीं किल्लु दश मिनट ठहर के तब जाय जिससे दस्त गुठामा जाये । दस्त लानेके लिये किसी प्रकार की आदत न

डालनी चाहिये जैसा कि लोग दस्त जानेके पहिले तमाकू खातेहैं या पीतेहैं  
 या दस्ताघरचीश खा लेतेहैं इन सबोंके अभ्यास से स्वयं मलप्रयाण की जो  
 मक्तिहै वह जाती रहतीहै । यह भी याद रखनेके योग्यहै कि दस्त जाने  
 के लिये दिशा किरतेसमय बहुत ताकत न दे क्योंकि धातु गर्भ निर्वल हो  
 उसी वक्त पेशाब के रास्ते से ढरक आता है । इससे दस्त में और भी कथ  
 जियत आ जाती है । कारण यह है कि जितना ही धातु क्षीण होगी  
 उतना ही अग्नि मन्द और दस्त में कथजियत आवैगी । जब देखे की पेट  
 बहुत भारी है और कई रोज से दस्त सुलासा नहीं हुये तब सोते समय  
 कोई ऐसा मुलायम रचन द्रव्य खा ले कि जिससे सबेरे सुलासा दस्त आ  
 जाय इसी हेतु बहुत से लोग सोते समय दूध पीते हैं लेकिन न चाहिये ।  
 क्योंकि जितनी धातुत्पादक द्रव्यादिक हैं उनको खा पीके न सेना चा-  
 हिये, हेतु यह है कि पचना नहीं; जब न पचा तो मल अधिक या पतला  
 अवश्य ही होगा, इससे अग्न्यादि आशय तथा बीर्य निर्वल हो जाता है ।  
 मुलायम रचन यह है, उष्ण प्रकृत वाले को जैसे कि शरपत इमिली गुल-  
 कंद गुलाब गुलकंद सेवती गुलकंद अगिलतास मुरत्ता हड़ अमृत हरीतकी  
 इत्यादि । शीत प्रकृत वाले को जैसे कि लषण पंचक यवक्षारादि चूर्ण पं-  
 चसकार चूर्ण कोष्ठबद्धारि चूर्णादि जिनका नुसखा आगे लिखा है, इन द-  
 वाइयों को सोते समय खा लेने से सबेरे सुलासा दस्त आ जाता है ।  
 प्रायः हिन्दूस्तानी लोग जो दिशा जाने के समय शिर में अंगोला बांध  
 लेते हैं और दिशा के समय घेालते नहीं ये दोनों कर्म उत्तम हैं । इनको  
 अवश्य करना चाहिये क्योंकि शिर बांधने से मलाशय में गर्मी पहुच कर  
 दस्त माफ आता है और मूक रहिने के समय से मल आपान वायु प्रेरित  
 निराश्रय त्रिबली मार्ग हो निकलता है त्रिबली मल मार्ग को कहते हैं  
 जिसमें शंस की तरह तीन बल है तीनों का नाम यह है । प्रमाहिनी  
 सर्जनी चाहिका इन तीनों शिरा की प्रकृत और गुण जाने कहेंगे यही  
 तीनों में से एक ऐसी नाही है कि जिसमें बुद्धि स्थान से संबंध है तब तक  
 जल और मृत्तिका से सफाई न कर ले तब तक यह चञ्चल रहती है ले-  
 किन पानी के तरावट से स्थिर हो जाती है इससे जब तक हाथ पैर मुंह

न धो डाले तब तक न तो शिर का कपड़ा खोले और न धोले इस का और २ अभिप्राय योगशास्त्र से मालूम हो सकता है वह भी आगे कहेंगे ॥

यदि यह कोई शंका करे कि और देश वाले क्यों नहीं शिरमें कपड़ा बांधते और सूक रहिते क्या उनके यह स्नायु नहीं है, परंच यावत् कर्म मनुष्यों के शरीर रक्षक हैं वे सब देश प्रभाव से हैं जैसे कि इङ्गलैण्डवाले प्रायः दिशा फिर के आबदस्त नहीं लेते कागद से गुदा पोंछ डालते हैं इसका मुख्य कारण हिम प्रधान देश है । क्योंकि अति जाड़ा के कारण पानी छुआही नहीं जाता ॥

### दंत धावन ॥

शीघ्रानन्तर दन्त शुद्ध हेतु १२ अंगुल की लम्बी और कनिष्ठिका प्रमाण मोटी जिसके बीच में गाँठ न हो ऐसी दातून को करे परंच जहाँ तक हो सके खैर महुआ करंज नीम बबूल और मौसली इन्हीं की दतून हो यदि शींठ पीपर गिर्ष सेंधा निमक इन सबों के चूर्ण में शहत या तेल मिला दातों में मल कर बाद दातून करे तो दाँतो के बीच में जो मांस बढ़ जाता है मुंह की दुर्गन्धि दाँतों से रून का आ जाना और यादी पन यह कभी न हो, दांत बिमल और अन्न में रुचि हमेशा बनी रहे । अगर किसी समय दातून न मिले तो काष्ट फोयला और सेंधा निमक बूक कर दांत मल डाले और जीभ छीलने के वास्ते सेना या चांदी आदि धातु की सुन्दर मुलायम चिकनी धन्याकार दश अंगुल की बनी हो इसके अभाव में दातून फाड़ कर जीभ छील ले यदि उपरीक्त रीति से दन्तधावन जिह्वा शुद्ध कर कभी २ या जब आवश्यक समझें एक छँटाक काली तिल के तेल से कुल्ली कर डाला करें तो मुख का फीकापन दुर्गंध मसकुर का मूजना और दांत का हिलना बन्द हो और दांत की जड़ सूख मजबूत हो परन्तु ये लोग जिनका गला तालु, ओष्ठ और जिह्वा का रोग हो एवं मुख सड़ा । तथा सांसी प्रवास हिचकी हो या जी म-पेछाता हो ज्वादा नसा साये हो शिर और कर्ण में दर्द हो, तो जब तक ए बेमारियां न आराग हो जायं तब तक दातून न करे बाद दन्त-

घायन के शीतल जल से सूख नेत्र सुख को धो डाले । दन्त घायन के अलावा यदि मनुष्य दिन में तीन चार सरतबे हमेशा ठंडे जल से नेत्र सुख धोया करे तो उसको नेत्र और शिर की बीमारी कभी न हो ॥

### दन्तमञ्जन ॥

सही सुपारीका कोइला १ छँटाक भूजाहुआ तूतिया ६ मासा दोनोंको बूककर दांत मांजने से दांत सूख साफ होजाता है तथा दांतों से रक्त का आना बन्द हो जाता है ॥

### प्रतिसारण ॥

फूट, दासहल्दी, धवके फूल, पाढी, कुटकी, हल्दी, तेजबल, मोषा, लोध इन सबों को बराबर भाग ले चूर्ण कर जीभ और दांत के जड़ में चारंबार मल कर छार गिराने से दन्त पीड़ा रक्त आना समूदा मूज्जन और जलन शल्द जाता रहता है ॥

### प्रातःकालकी हवाखाना ॥

दन्तघायन के बाद मनुष्य अच्छा कपड़ा पहिन पैर में जूता हाथ में छड़ी ले सूर्योदय के पूर्वही किसी अच्छे मगोचे या स्वच्छ मैदानमें कि जहां मल मूत्र आदि बुरे पदार्थों की दुर्गन्धि न हो । वायु सेवनार्थ वहां जाय न बहुत जल्दी चले न बहुत आहिस्ती समगति से वहां टहिले । परञ्च बहुत तेज-इया चलता हो या आन्धी गरदा हो तो न जाये । क्योंकि तेज हवा अर्थात् आन्धी गुद्वाड़े में रहिने से शरीर रुख तथा चेहरे की रंगत बदल जाती है और बात श्लेष्म वाले के सन्धियों में दर्द होने लगता है मनुष्य को यहां तक चलना फिरना उचित है कि जब तक पैर न चके क्यों कि बहुत ज्यादा चलने से शरीर में हारारत और कमर में कमजोरी आती है एवं बीप्यं भी कुछ निर्वल हो जाता है । जोलोग न घूमते हैं न किसी प्रकार का परिश्रम करते हैं उनका शरीर कफ मेद के बढ जाने से मोटा और शिथिल हो जाता है । जैसे की महन्त और प्रायः तीर्थों के पंडे

“सुखवातप्रसेवेत ग्रीष्मेशरदिमानयः” ग्रीष्म शरत अर्थात् वैशाख ज्येष्ठ फा-  
र्तिक और अगहन इन महीनों में सुखार्थी लोग अवश्य वायु का सेवन  
करें ॥

### जूतापहिरनेकागुण ॥

मनुष्य को ऐसा जूता पहिरना चाहिये कि जिसकी एही कुछ ऊंची  
हो न बहुत ढीला हो न तङ्ग हो । जूते के भीतर किसी तरह का ऐसा  
रुलायम चमड़ा लगा हो कि जिससे तलुवे के सून में उष्णता न पहुँचे ।

जूता पहिरने से पैर में ताकत रहती है, आदमी सुख समेत चल  
सक्ता है, पैर का चमड़ा मुलायम रहित है बिबाई जादि किसी तरहकी  
बीमारी नहीं होती न काटा और बिच्छू आदि जीवों से भय रहित है  
इसलिये जूता चारो आश्रमियों को पहिरना चाहिये और जो प्रायः ब्र-  
ह्मचारी आदि जूता न पहिर कर खड़ाऊं पर चढ़ दिन रात चला करते  
हैं उनका मस्तिष्क रुझ होजाता है और बुद्धि बिकसितो के साथ मिल  
जाती है । नग्न पैर चलने से नेत्र और शिर में गर्मी पहुँच कर शिरोग्रह  
आदि अनेक बीमारी होती है ॥

### छड़ीलेनेका गुण ॥

मनुष्य को यह भी उचित है कि बिगैर छड़ी लिये हुये कभी बाहर  
न निकले क्योंकि हाथ में छड़ी रहिने से दातसे काटने वाले कुत्ता आदि  
और सोंग से मारनेवाले गाय भैंस आदि इसी तरह और २ घातक जीवों  
से बचने का सम्भव रहित है । छड़ी हाथ में लेने से कमर और हाथकी  
कलाई में ताकत रहितो है पैर जमीन पर ठीक तौर से पड़ता है और  
छड़ी हाथ में रहिने से एतना साहस रहितो है कि सानों कोई रसक  
अपने साथ है ॥

### तेललगाना ॥

मनुष्य को आधघण्टा या एक घण्टा हवा तागा बहुत ही बाद करना



खाने के सूर्योदय से लेकर सात आठ बजे भर में तेल लगाना अति गुण कर होता है ॥

## शिर में तेल लगाना ।

शिरमें तेल लगाने से शिर सम्बन्धी यावत् रोग हैं सब नष्ट हो जाते हैं । बाल फाले और चिक्कने रहित हैं । आंख कान नाक और मुख इनमें किसी तरह की बीमारियां नहीं होती बाल कम पकता है और शिर ठंडा रहता है । जो लोग नित्य शिर में तेल लगा शिर से स्नान करते हैं उन की बुद्धि तीव्र होती है और निद्रा सुख पूर्वक आजाया करती है । इस हेतु शिर में तेल रोज लगाना चाहिये ॥

सब प्रकृति वालों के लिये फाली तिल का तेल अति उत्तम है । शिर में गरी का तेल भी फ़ायदा करता है । लेकिन कितने लोग यह जानते हैं कि शिर में गरी का तेल लगाने से नुक़सान होता है सो यह भूल है । हां गमेली हिना आदिक तेलों के लगाने से बेशक बाल जल्द पक जाते हैं । कारण यह है कि यह तेल सफ़ेद तिल के साथ बनता है और सफ़ेद तिल बाल को जल्द पकाता और नजला पैदा करता है । एक कारण गरी के तेल न लगाने का और भी है कि गरी के तेल से शिर गन्धाने लगता है । यदि गरी का तेल इस रीति से बना कर शिर में लगावे तो शिर कभी न गन्धावे ॥

गरी का तेल सेर भर बालउड़, सुगन्धवाला, कपूर कचरी, छरीला, आगरमोषा, सुगन्धनन्तरी, सुगन्धकोकिला, पांढरी, महाभारी, चम्पायती, सकेदचन्दन, डोटीलाइची, ए सब एक २ तोला नर कचूर, तेजवल, हाहू बेर, तालीस, कपूर, लौङ्ग, महीलायची, ए सब चार चार भासा ले सब को अथकचरा कर एक बड़े घोतल में तेल और सब दवा डाल काग से मुख बन्द कर दश रोज तक दिन को घाम में और रात को ओस में रख दिया करे । बाद दश रोज के यह तेल बिलायटिङ्ग पेपर या सूय जप्पीन कपड़े से छान दूसरे घोतल में रख दे और रोज शिर में लगाया करे ॥

अमलक्यादि तैल ।



कच्चे आमले का रस दो सेर, सेंधा निमक ३ छँटाक गुलेटी पाय भर मुलेटी को अधकघरा कर सेर भर पानी में एक रात दिन भिगोय रखे दूमरे रोज मल कर पानी छान ले । बाद सेर भर फाले तिल का तेल किसी कलई दार बरतन में डाल चूल्हे पर घड़ा उभी में आमले का रस सेंधा निमक और मुलेटी का पानी भी छोड़ मंदाग्नि में पचा ले जब देखे की पानी बिलकुल जल गया तब तेल उतार ले परंच एतना ध्यान अवश्य रखे कि तेल न जलने पावे इस तेल को छान कर रोज शिर में लगाया करै तो उसको शिर सम्बन्धी बिकारोत्पन्न कभी न हो शिर ठंडा बाल फाले और चिकना हमेशा बना रहे इसी तेल को अथवा काले तिल के तेल को यदि बाल्यावस्था से दिन प्रतिदिन शिर में लगाना प्रारंभ करै तो जन्म भर तक उसका बाल कदापि न पके । जो हम लोगों की अपेक्षा बंगालियों का बाल अति काल में पकता है सो केवल तेलही का गुण है । यद्यपि और २ कारणों से भी अकाल पलित (नवीन अवस्था में बाल का स्वेत होना) होजाता है, यथा—

क्रोधशोकश्रमकृतः शरीरोष्माशिरोगतः । पित्तचकेशान  
पचितं पलितं तेन जायते ॥ सुश्रुत ॥

(क्रोध) धातु की क्षीणतासे उष्ण प्रकृत हो हर समय अन्तस में गुस्सा का रहिना (शोक) धन पुत्र कलत्रादिकों के नष्ट से अथवा किसी के बिरह की चिन्ता में डूबा रहिना (श्रम) क्षुधा पिपासा लगी है पेट गर्म और चित्त घबड़ा रहा है परन्तु काम से खुट्टी नहीं मिलती, इत्यादि कारणों से तमाम शरीर की गर्मी पेट में पित्त द्वारा उष्ण भाव हो मस्तिष्क जिसको अंगरेजी में (ब्रेन) कहते हैं उसमें जाके लगने से बाल भी पकता है तथा वही जल नीचे गिरने से; नेत्र, कर्ण, दन्त और नाशिका में विकार पहुंचता है, इसी को हिंस्रतं बाले निजला कहते हैं

तथापि शिर की रुक्षता से बाल ग्रीघ्र पकने का सम्भव रहता है परन्तु उपरोक्त तैल या और बहुत से तैल हैं कि जिनके शिरोवस्ति से अकाठ पलित और नजला नहीं होता ॥

मनुष्य को तैल आदि द्वारा शिर की रक्षा करना अवश्य कर्तव्य है क्योंकि समग्र शरीर का मूल मस्तिष्क इसी शिर में है, जिसकी ताकत से मनुष्य के बल बुद्धि, विद्या, पराक्रम पुरुषार्थ और आयुः की वृद्धि होती है, इसी की ताकत से स्वामी दयानन्दसरस्वती और केशवसेन आदिकों ने बड़ी र ब्यवृत्ता दे हर एक देशों में अपनी २ सभाएं जमा गये । इसी मस्तिष्क की पुष्टता से इस समय कारनल अलकट हजारों मस्तिष्क के निर्बल भ्रूआ हिन्दुओं को चेला मूढ़ रहा है । इस्से इस लेख पर ध्यान दे अवश्य शिर की रक्षा करनी चाहिये ॥

### कान में तैल छोड़ना ।

मनुष्य को दूसरे तीसरे दिन कानमें भी तैल जरूर डालना चाहिये क्योंकि "इनुमन्याशिरः कर्णशूलघ्नना कर्णपूरणम्" सुश्रुत । कर्ण पूरण अर्थात् कान में तैलादिक के डालने से कान का परदा तर रहता है जिस्से ठोड़ी मयूरगलसन्निभ गले के पीछे की शिरा शिर और कान इनमें दर्द कभी नहीं होता ॥

### शरीर में तैल लगाना ।

इसके बराबर शरीर में ताकत लाने वाला दूसरा उपाय नहीं है । "जलसिक्तस्यमर्दुन्ते यथा मूलेऽङ्कुरास्तरो तथाधातुविष्टदुर्हिस्नेहसिक्तस्य जायते" । जैसे बृक्ष के जड़ में जल सोँघने से वृक्ष का अंकुर बढ़ता है, वैसेही शरीर में तैल के लगाने से धातु बढ़ता है । यही कारण है कि जो आयुर्वेद वेत्ता वैद्यगण, वात रोग, कुष्ठरोग, जीर्णज्वर, प्रभृत रोगों पर विशेष कर तैलही का अधिक गुण दिखाया है यह वात तो प्रसिद्ध है कि मर्दन करने से तैल सब रोग कूपों के राह से शरीर में घुसकर एक

ही समय सद्य नशों में तथा रक्तादि में कार्य करता है । इसलिये तैल मर्दन करना अत्यावश्य है ॥

शरीरमें तैल लगाने से स्नायु शिरा धमनी और त्वचा कोमल रहती है खाज दाद सेंहुआ फोड़ा फुन्सी आदि त्वचा की बीमारियां स्वप्न में भी नहीं होती हैं शरीर शूयमूरत बली और फुर्तीला बना रहता है ॥

### चन्दानादितैल ।

सफेदचन्दन, मोषा, खम, सुगन्धवाला, मुलेठी, कमलगट्टा की गरी, छाटीलायची, नागकेशर, मँजीठ, हरदी, दारुहरदी, शिलाजीत, जटामासी, तेजपात, कड्कोल, सरियन, कुटकी, अगर, लींग, केशर, दालचिनी, ए सद्य औषध दो दो तोला ले फूट कर ४ सेर पानी में एक रात्रि दिन भिगोय रखे दूसरे रोज उन्हीं सद्य औषधियों को शिल पर पीस उसी पानी में छान ले तत्पश्चात् षेड सेर काले तिल का तेल किसी कलईदार बरतन में हाल चूएहे पर षट्पाय मन्दाग्नि से उक्त जल और पांचसेर दही का तोड़ पचा ले । जब देखे की सद्य पानी जल गया तब उतार ठंडा कर छान घातल में भर कर रख दे । इस तेल को शरीर में मर्दन करने से जीर्णज्वर, उन्माद गर्मी पित्तत्रिकार, मुख तथा शरीर का पीलापन, दातों का भूल जाना, धातु की क्षीणता और सुस्ती ए सद्य नष्ट हो जाते हैं । यदि पांच चार महीना बराबर इस तेल को लगाये तो बदन ऐसा सुखे और शूयमूरत हो जाता है कि जिसका कुछ ध्यान नहीं । यह तेल सद्य फोड़े नहीं बना सकते इसलिये काले तिल का तेल सर्व साधारण को लगाना उत्तम है ॥

### निषेध ।

तरुणज्वर्यजीर्णो च नाभ्यक्तव्यौ कथंचन । तथा विरक्तो वां-  
तश्च निरुद्धो यश्च मानवः ॥

नपाज्वर, अजीर्ण, अतीसार और बगन वाला, तथा गुदा मार्ग की पिचकारी ले चुका हो एतने मनुष्य तैल न लगावे ॥

### स्नान करना ।

हर एक चिकित्सा ग्रन्थों के देखने से ज्ञात होता है कि जैसा इस आर्य्योक्त में स्नान करने का प्रचार है वैसा अन्य देशों में नहीं । इस का मुख्य कारण यही है कि एक तो और २ द्वीपों की अपेक्षा यह द्वीप सदा ही गर्म है दूसरे ग्रीष्म ऋतु में अल्पन्त उष्ण हो जाता है । तीसरे इस देश में एक २ नदी ऐसी हैं कि जिन में स्नान या उन के केवल जल पीनेसेही कुष्ठतक आराम हो जाता है । चौथे हमारे भूतपूर्व भारतवर्षीय अधिकांश आत्मगण योगाभ्यासी होते थे इस लिये उन को बाह्य कर्म (शौचक्रिया) अधिक करना पड़ता था । स्नान करने से न तो वैकुण्ठ मिलता है और न मुक्ति होती है पर यह स्वास्थ्य का एक अङ्ग है "अद्भिर्गात्राणि शुष्यन्ति" मनु० इत्यादि बहुतसे बचन हैं कि जलसे केवल १२ प्रकार के मल दूर होते हैं । जैसे कि—

वसाशुक्रमसृद्वाज्जा मूत्रविट्प्राणकर्णविट । श्लेष्माशुद्रूपि-  
कास्वेदी द्वादशैतेनृणांमलाः ॥ मनु०

वसा, श्लेष्म, रक्त, गज्जा, मूत्र, नाक, कान इन सबों का मूल और कफ आंशु, कीचर, पसीना यही १२ मल मनुष्यों के शरीर में होते हैं वेही साफ करने के लिये स्नान है । आज कल हमारे भ्रातृ गणों के हृदय से उक्त आशय तो जाता रहा । गङ्गाजी मुक्ति के देने वाली हैं यही निश्चय कर जून फजून नहाय रोग प्रसित हो कितने कष्ट पट शरीरही से मुक्ति हो जाते हैं ॥

### स्नान का गुण ।

तन्द्रापपोषणमनं तुष्टिदंपुंस्त्ववर्द्धनम् । रक्तप्रसादनंचापि  
स्नानमग्नेशदीपनम् ॥ सुश्रुत चिकित्सा स्थान अ० २४

स्नान करने से हर समयका औंधाना और पापोपशमन अर्थात् मन की श्लानि जाती रहती है चित्त की प्रसन्नता और पुंस्त्व की वृद्धि होती है अग्नि दीपन एवं रक्त का सञ्चालन ठीक रहता है । जब यह सब बातें स्नान करने से प्राप्त होती हैं तो आत्मा भी सब व्याधियों से शांत हो सकता है इसी लिये आचार्यों ने कहीं यदि प्रसंग वस मुक्ति प्राप्ति भी कह दिया हो तो कोई असंगत नहीं है ॥

### तेल लगा के स्नान करने का गुण ।

शिरामुखैरोमकूपैर्धमनी भिञ्चतर्पयन् । शरीरबलमाधत्ते  
युक्तस्नेहो ऽवगाहने ॥ सुश्रुत चिकित्सा स्यान् अ० २४

तेल लगा के स्नान करने से शिरा मुग (मस्रोली भसों का मुह) रोम कूप (रोमों के गह्दे) धमनी (सबसे बड़ी नसें) वे सब पुष्ट होते हैं और शरीर में ताकत आती है । सब मनुष्यों को उचित है कि गर्म ऋतु में अधिक गर्म जल से और जाड़े में अधिक ठंढे जलसे कदापि स्नान न करे "अतिशीताभ्युशीतेष श्लेष्मणारुतकोपनम् । अत्युष्णमुष्णकालेष पित्तशोणितवर्द्धनम्" सुश्रुत चिकित्सा अ० २४ । शीत काल में अति शीताभ्यु (बासी पानी) में स्नान करने से कफ वायु का कोप होता है इसी प्रकार उष्ण काल में अत्युष्ण जल (आग से या घाम से गर्म किया हुआ जल) के स्नान करने से पित्त रक्त बढ़ता है । यह भी याद रखने के योग्य है कि कैसाहू जाड़ा से जाड़ा क्यों न पड़ता हो गर्म जल शिर पर कभी न डाले "उष्णेनशिरसःस्नानमहितंचक्षुपःसदा" सु० चि० अ० २४ गर्म जल से शिर से स्नान करना हमेशा नेत्र के लिये अहित है । यदि ऐसाही किसी को कफ वात की बीमारी घेरे हो तो अलबत व्याधि का बलाबल देख गर्म जल शिर पर दे ॥

### निषेध ।

अतीसार, ज्वर कर्णमूल, वातरोग, आघमान (पेटफूलाहो) अजीर्ण

इन रोगों में और भोजन मैथुन और कसरत के उपरान्त तत्क्षण स्नान न करे । शरीर पसीना युक्त हो । या अति शीतल वायु यहती हो या यदन किसी कारण से गर्म हो तो भी स्नान न करे । जिस पानी में झीड़े पड़ गये हों चास फूस के पड़ने से सड़ गया हो और जिस तालाब या नदी में पाखाने और नावदानों की नालियां लगीहों और पानी उसका चारो तरफ से रुका हो तो उस जल से स्नान न करना चाहिये इलाजुलगुरवा और तिव यूसफी आदि यूनानी किताबों में लिखा है कि चाहे गर्मजल से हो या सर्द जल से हो रोज २ नहाना पटों को क्षीण करता है । इसी कारण से बहुत से हिन्दूओं को जोकि सदा नहाते हैं चाहे युवावस्था में स्थभाव की गर्मी से हानि कम चालूम होती हो परन्तु अब उमर कुछ अधिक बढ़ जाती है तो रगों और गुरदे में निर्बलता देख पड़ती है ॥

(उत्तर) यह लेख महा भ्रम दायक और हिन्दुओं के तन्दुरुस्ती का विघ्न कारक है क्योंकि यूनानी वैद्यक शास्त्र अरब पारस आदि ठंडे मुहकों के प्रकृत के अनुसार बने हैं जहां आभ्यन्तरिक गर्मी और वायु शीत का सञ्चार रहता है वहां अवश्य प्रति दिन का स्नान करना औगुण करेगा । भारतवर्ष में वायु गर्मी हमेशा बनी रहती है यदि लोग स्नान करने का नियम छोड़ दें तो थोड़ेही काल में उनको कोई न कोई रक्त सम्बन्धी बीमारी अवश्य खड़ी हो जाय । एां, बहुत ज्यादा तर स्नान करना बीसे की बाजे २ अधिकाचारी हिन्दू गण जी दफे दिशा जाते हैं ते दफे नहाते हैं ऐसा न चाहिये प्रतिदिन नियमित समय पर एक सरतवे स्नान करना उत्तम है । अन्यथा स्नान करने से नालियां सङ्कुचित हो उत्तेजन क्रिया से रहित हो जाती हैं ॥

### स्नानकरनेका समय ॥

निरोग पुरुषों के लिये सूर्योदय से लेकर सात बजे दिन तक स्नान करना लाभदायक है; विभार और कमजोर मनुष्य को आठ बजे से ग्या-

रह यजे तक में स्नान करलेना उत्तम है । आज कल बहुत से वैद्य लोग  
 ग्रहण ग्रन्थों के अनभिज्ञता से कतिपय ऐसे रोगों में स्नान करना बन्द क-  
 रा देते हैं कि जिन रोगों में स्नान पथ्य है । यही कारण है कि बहुत से  
 रोगी आरोग्य न होकर और भी उसी में पच जाते हैं । जैसे, रक्तपित्त,  
 यक्ष्मा ( तपेदिक ) हिचकी, तृष्णा, भूखा, मदात्यय ( जो अधिक नशा  
 खाने से हो ) उन्माद अपस्मार ( मृगी ) अस्मरी ( पथरी ) यह सब रोग  
 बिना स्नान के कदापि निर्मूल नहीं हो सक्ते पुराना ज्वर, दाहुरोग, उ-  
 ष्णघान ( जिसमें बातों का भूलना आदि अनेक उपद्रव होते हैं ) मूत्र-  
 कृच्छ्र मूत्राघात ( मुजाफ ) नेत्ररोग, विषरोग, चाहिये कि उक्त रोगार्त  
 पुरुष और गर्भिणी स्त्री तमान शरीर में तेल लगा के पूर्वोक्त समय में  
 अवश्य स्नान करै । हाल की बात है कि महर्षि शाहगञ्ज के एक व्याधू को  
 उष्ण मात की बीमारी दो वर्ष से थी डाक्टरों दवाइयों में हजारों रूपये  
 खर्च हुये पर विमारी न गई किसी एक महात्माने शिक्षा दिया कि व्याधू  
 साहब आप नित्यप्रति गङ्गाजी स्नान करिये गङ्गाही जल पीजिये और  
 उन्हीं का ध्यान रखिये आप की विमारी जाती रहेगी । थापा जी वैद्यक  
 मतसे रोग और गङ्गा जलका संयोग परिज्ञात करके नहीं कहा था लोक  
 में जैसे प्रसिद्ध हैं उस तरह से कहा था पर व्याधू जी उस साधू की शिक्षा  
 मान प्रतिदिन सबेरे उठ गङ्गा नहाने लगे और जल भी गङ्गाही का पीने  
 लगे उनका रोग एकही दो महीने के आभ्यन्तर में जाता रहा, अब क्यों  
 कर हम मान सक्ते हैं कि गङ्गाजी के स्नान करने से लोगों का दुःख नहीं  
 छूटता । यह जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश के एका-  
 दश समुदास में आयुर्वेद द्वारा गंगा जी का पदार्थ समालोचना न कर  
 एक बारगी लिखमारा जोकि जल स्थल भय हैं वे तीर्थ कभी नहीं होसक्ते  
 क्योंकि "जनायैस्तरंति तानितीर्थानि" मनुष्य जिन करके दुःखों से तरे उन  
 का नाम तीर्थ है अब पाठक गण विचार करै कि ऐसे २ महा यज्ञ बिना  
 रियों से बढ़ कर और कौन सा दुःख है यह बिलकुल अनभिज्ञता है कि  
 जल का केवल एक बुझानाही गुण जान लिया और सब दवा घेठे । जल  
 प्रकरण में गङ्गा जल का गुण लिखेंगे ८



## कसरत करना ।

कसरत भी आरोग्यता का एक बड़ा अङ्ग है । हमारे इस देश में कसरत करने की चाल भले आदमियों में अब नहीं रह गई होगी समझते हैं क्या हम को पहलवानी करना है और गद्काफरी घाना आदिक कसरत को तो निश्चयी बदमासी पेसा जान कर उस का नाम तक नहीं लेते, काल की भी क्या विचित्र गति है, एक समय यह था कि यही हमारे भारत आतृगण उक्त विद्या में ऐसे २ निपुण होते रहे और उमी के प्रभाव से आरोग्यता; साहस, बल, धीर्य और सदा बुद्धि शील बने रहते थे कि जिन की अत्युन्नत विमल कीर्ति रूपी मयूर अब तक अधिकांश शिक्षित पुरुषों के हृदय में नाच रहा है यह बात विचार करने के योग्य है कि जिस समय से आयुर्वेदानुगामी धनुर्वेद की अवनति आरम्भ हुआ तभी से आर्य सन्तान या हिन्दुओं की सौभाग्य प्रभा अस्तमित और भारत लक्ष्मी का अन्तरध्यान हो चला और तभी से हिन्दूगण निर्बलता हेतु मुसलमानों से लड़ते हुये भी पराजित होने लगे और दिन २. निर्दुर्न निरन्तेज और शक्ति रहित होते आये । तभी से आज तक हिन्दुओं की प्राचीन रीति नीति उन्नति आदि सब बातों में ऐसी हेठी पड़ी चली आती है कि जिसका उदाहरण देखलाना अपने यह के खिद्र का प्रकाश करना है । यही धनुर्वेद प्रणाली की आज फल ऐसी अनादृत और लुप्त दशा है कि लोग गवर्नमेंट से प्रार्थना करते हैं कि हम को वालंटियर बनाइये हम आप की सन्ती रूस मनहूस से लड़ कर फूस कर देंगे । हम कहते हैं खाक कर देपमें जब तुम्हारी चार कदम चलने से सांस फूलने लगती है, किसी के शरीर से रक्त बहते देख गस आ जाता है, राम लीला मुहरंग संग पड़ने से दश रोज बाहर नहीं निकलसक्ते दश कोठरी के भीतर रह कर भी शंख नहीं बजा सक्ते, बलिप्रदान में अजा तक का हाथ से नहीं मार सक्ते, किसी तरे का गुल गपाड़ा सुनतेही ले लोटा पाखाने को दौड़ते ही तो क्या तुम वालंटियर बनोगे और रूस को फते करोगे अङ्गरेजों में साठ वर्ष के बूढ़े को भी किसी न किसी प्रकार का

कसरत करते अवश्य ही देखते होंगे, यह कसरतही का प्रताप है जो अद्यावधि भारत वर्ष में नित नये गोरे मुह वाले आकर धमंगजरी मचा रहे हैं और हात्तरी आदि कलईदार घनकीली चीजों को देखा २ कर हिन्दुस्तानियों के तन मन धन को खींच अपनी मुट्ठी में कर लिपा है । अब यह समय ऐसा नहीं है कि आप लोग उनकी मुट्ठी से छुटकारा पाने का यत्न न करें आप लोग सुश्रुतादि ग्रन्थों की आलोचना कीजिये और देखिये कि कसरत के क्या २ गुण उन लोगों ने वर्णन किया है ॥

### कसरत का गुण ।

शरीरोपचयःकान्ति गात्राणांसुभित्ता, दीप्ताग्नित्वमना  
लस्यं स्थिरत्वंलाघवंमृजा । श्रमक्लमपिपासीप्लाशीतादीनां  
सहिष्णुता, आरोग्यंचापिपरमंव्यायामादुपजायते ॥ सु०

कसरत करने से तमाम शरीर के त्वचा कस जाते हैं वदन खूब सूरत और सुडौल हो जाता है, अग्नि दीप्त अनालस्य (सुस्ती न सालुम हो) स्थिरत्वं अर्थात् शरीर बहु काल स्याई रहे हलकी और नुलायम भी बनी रहती है । कसरती मनुष्य मेहनत, पियास, गरमी सरदी इन सब को सहि सक्ता है और उसको परम आरोग्यता प्राप्त होती है ॥

कैसाहू मोटा से मोटा क्यों न हो कसरत करने से अवश्य उसकी ब्रे ढङ्गी मुटाई कम हो जाती है अतएव कैसाहू दुबला मनुष्य होगा कुछ न कुछ जरूर मोटा हो जाता है । निश्चय है कि बिना कसरत किये शरीर में तय्यारी और ताकत कभी नहीं आसक्ती चाहे यह दिवा रात्रि मोतीही क्यों न खाया करें । अहूरेज लोग हिन्दुस्तानियों की अपेक्षा रिष्ठ पुष्ठ बली पराक्रमी विद्वान और एक न एक नये २ कल विद्या के प्रकाश करने वाले दिखलाई देते हैं यह सब कसरत ही का प्रताप है । यदि कोई यह कहै कि हजारों हिन्दुस्तानी लोग ऐसे २ कसरत करने वाले पड़े हैं कि एक अकेला दश अंगरेज को मार के गिरा सक्ता है ले-

किन महा मूर्ख लंठराज क्यों बने रहते हैं ? यह क्यों नहीं विद्वान् और गिरुप विद्या के प्रकाशक होते हैं, इसका उत्तर यही है कि उनका कसरत मत विद्या से सम्बन्ध नहीं रखता और पथ्य प्रकरण से ठीक भी नहीं मिलता कारण यह है कि विद्वान् लोग कसरत को बदमाशी पेसा जान त्याग बैठे हैं और मूर्ख लोग इसे जोषिका समझ राज दरबारों में या जहाँ तहाँ खेल कूद के पेट भर लेते हैं । बुद्धि की परिचालना और विद्या की उन्नति करने वाला गुण प्रायः भारत धर्म से जाता रहा कसरत करने वाले को बदन रणुगिरि दुर्गम और कठोर स्थल में एवं सत्रुओं से भय कम रहता है । एकाएकी किसी प्रकार की विमारी या वृद्धापन बहुत जल्द उसे नहीं घेर सक्ता और अजीर्ण की विमारी तो उसे होती ही नहीं ॥

व्यायामकुर्वतानित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमविदग्धं वानिर्दीपं परिपच्यते ॥

प्रतिदिन का कसरती यदि विरुद्ध भोजन ( रोगोत्पन्न कारक ) खा लेगा तो निस्सन्देह विदग्ध हो या अविदग्ध हो पर उसे निर्दीप पच जायगा इसी तरे—

वयोरूपगुणौ हीनमपिकुर्यात्सुदर्शनम् ॥ सु०

अवस्था और रूप करके हीन भी पुरुष कसरत करने से अति रूपयान् हो जाता है । अपने शरीर की आरोग्यता ( हेल्थ ) चाहने वाले मनुष्य धारहो महीना थोड़ा डण्ड मुग्दर और बैठक की कसरत अवश्य करे । बहुत से लोग यह जानते हैं कि बैठक करने से स्त्रीत्व ( नपुंसक ) हो जाता है यह महा भूल है, "हां" बिना लंगोट कैसे बैठक लगाने से पोता बड़ आने का सम्भव रहता है ॥

कसरती पुरुष को घी दुग्ध आदि बलकर यस्तु हमेशा खानी चाहिये विशेष कर कसरत के उपरान्त बिना कोई ताकत बर चीज खाये प्राणी

पीना वर्जित है । बहुत से लोग कसरत के पहिलेही दूध पी लेते हैं या कसरत किये जाते हैं और दूध या भीजा चना खाते जाते हैं । यह सू-खता है । क्योंकि इसका विधान वैद्यक में कहीं नहीं है—और परित्ना से नुकसान पाया गया है । यह भी याद रखने के योग्य है ॥

वयोवलशरीराणिदेशकालाशनानिच । समीच्यकुर्व्यात्व्या  
याममन्यधारीगमाप्नुयात् ॥ सु०

मनुष्य को उचित है कि अपनी अवस्था यल शरीर देश काल और भोजन देख कर कसरत करे अन्यथा करने से रोगी हो जाता है जैसे की अवस्था तो १० वर्ष की है पर कसरत करना ३० वर्ष वाले की बराबर, यल ५ सेर व्रोज्जा उठानेका है मनभर उठानेमें उद्यत है, शरीर तो महा मोटी पर बिना क्रम एका एकी मलखम आदि (जमनाष्टिक) का कसरत किया चाहते हैं । अति शीतल देश में मही लगा के छतलोटा करना, उष्णकाल में अधिक करना अयोग्य है, खाना तो छँटाक घी भी नहीं डण्ड लगाना पांच सौ इससे अवश्य जयी, तृष्णा, बमन, रक्त, पित्त, भ्रम, खांसी, स्वास और ज्वर आदिक बिमारी होने का सम्भव है ॥

### निषेध ॥

रक्तपित्तकृशःशोषास्वासकासक्षतातुरः । भुक्तवान्स्त्रीपुत्र  
क्षीणोभ्रमार्तश्चविवर्जयेत् ॥

रक्त, पित्ती, दुर्बल और जो किसी रोग से सूखा जाता हो, दमा, खांसी और घाव से पीडित या अति स्त्री प्रसङ्ग करने वाला गरमी, सु-जाक तथा घुमरी युक्त पुरुष और भोजन के ऊपर कसरत न करे ॥

कसरतकरनेकासमय ॥

उत्तम तो यह है कि सवेरे स्नान के उपरान्त यथाशक्ति कसरत कर बाद नाथे में चन्दन लगा गायत्री सन्ध्या से निश्चत हो भोजन करे । इस्से

अतिरिक्त समय में भी कसरत कर सकता है पर नागा न होनी चाहिये, नियमित समय पर अवश्य कुछ न कुछ जरूरही कर ले । कसरत कर के उसी वक्त लँगोट खोल डालना, या स्नान कर लेना, या बिना कोई चीज खाये जति ठण्डा जल पी लेना नुकसान करता है । कसरत के उपरान्त आधघण्टा या पावघण्टा टाइल के तब कोई काम करे । पाठकगण, यदि आप लोग इस दुर्लभ शरीरकी कि जिसके द्वारा पारो पुरुषार्थों की सिद्धि है आनन्द से रखना चाहें तो अवश्य कसरत करें ॥

### चन्दनलगाना ॥

यद्यपि आजकल माथे में चन्दन लगाना नव शिक्षित लोगों को पा खण्ड या एक प्रकार का चिन्ह जान पड़ता है परञ्च आयुर्वेद में इसका अधिक गुण लिखा है जो सविस्तार इसे दूसरे खण्ड में लिखेंगे ॥

### पैर धोना ॥

यह जो प्रायः हिन्दू लोग बिना पैर धोये भोजन नहीं करते इसे होटल में भोजन करने वाले जेन्टलमेन लोग चाहे बुरा समझें या पसन्द न करें लेकिन यह भी एक उत्तम फल देने वाला कर्म है ॥

पादप्रचालनंपादमलरोगश्रमापहम् । चक्षुःप्रसादनं वृष्यं  
रक्षोघ्नं प्रीतिवर्द्धनम् ॥

पैर के धोने से पैर का मल रोग और थकाई जाती रहती है नेत्रमें तरावट शरीर में तैपारी और मन प्रसन्न रहता है । केवल खानेही के समय पैर धोना नहीं बल्कि जय २ आवश्यकता देखे तभी पैर धो डाले जैसे कि भोजन के आदि में सूत्रपुरीप के अन्त में कहीं से घूग फिर के आया हो और सोते समय पर जरूर पैर धोना चाहिये पैर धोयके सोनेसे सुख समेत नींद आ जाती है और यह दुस्स्वप्न नहीं देखता ॥

## भोजन ॥

यह बात सबको अच्छी तरह से मालूम है कि हम लोगों को भूख और प्यास लगती है और तब खाने और पीने की जरूरत पड़ती है । यदि किसी मनुष्य को कुछ रोज तक कुछ भी खाना न मिले तो इसमें شک नहीं कि वह बहुत दुबला हो के भूख से मर जायगा । इससे यह बात सिद्ध हुई कि भोजनही-जीवन का मूल है इसलिये विशेष कर मनुष्य को खाने पीने के नियमों पर ध्यान अवश्य रखना चाहिये क्योंकि जिन का खाना पीना एक मन्थी हुई तादाद के मसूजिय नहीं है उसे और समस्त आचरणों से कुछ भी फायदा नहीं हो सक्ता । यह बात साफ जाहिर है कि ठीक समय पर परिमित भोजन करने से यह भोजन अति शुणकारी होता है जैसा कि सुश्रुत में लिखा है ॥

अहारः प्राणनः सद्यो वल्लह्वेहघारकः । आयुस्तेजः समुत्साह  
स्मृत्वा जीऽग्निविवर्द्धनः ॥ चि० स्या० आ० २४ ॥

समय का भोजन सद्यही प्राण को वृत्त करता है और बल कर एवं देह धारक है आयुः तेज उत्साह स्मरण शक्ति पराक्रम और अग्नि को बढाता है । जो लोग समय कुसमय कम जादा पशुवत भोजन किया करते हैं उनके सामने हर समय काल खड़ा रहता है और वेही मनुष्य है जो आदि विमारियों से पीड़ित भी होते हैं ॥

हमारे हिन्दुस्तान में हर एक तिथियों में व्रत की परिपाटी ऐसी फैल गई है कि लोग देव काल पात्र न विचार कर एकादश्यादिक तिथियों में उपवास कर एक न एक रोग में ग्रस्त हो जाते हैं । जैसे देखिये ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की एकादशी को अन्न खाना कौन कहै जल तक पीना मना है कि जिस ऋतु में एक पड़ी भर जल न मिलने से मनुष्य व्याकुल हो जाता है । तो ऐसी अवस्था में सबके लिये व्रतों की परिपाटी आयुर्वेद सम्मति नहीं है क्योंकि लिखा है कि—

भोजनेच्छाविघातास्या दङ्गमर्दाऽरुचिःभ्रमः । तन्द्रालो-  
चनदौर्बल्यं धातुदाहोबलक्षयः ॥ विघातेर्नापपासायाः श्लेष  
करुणास्ययोर्भवेत् । श्रवणस्यावरोधश्च रक्तशोषोहृदिव्यथा ॥

खूब भूख लगने पर भोजन के न मिलने से यदन में हड़ फूटन  
होना, अरुचि, शरीर ढीली, नेत्रों में आंफ, नेत्र के सामने तिलमिल ना-  
लूस होना, रक्त गांसादि सप्त धातुओं में दाह और बल का नाश  
होता है । तो भला बतलाइये जिस शरीर से परम पुरुषार्थ की सिद्धि है  
वही निकम्मी होगई तो उपवास करनेसे कैसे तुम मुक्ति पा सकेहो गीता  
में स्पष्ट लिखदियाहैकि उपवास से योगकीसिद्धि नहींहोती । इसी प्रकार  
प्यास से, प्यास के रोकने से कंठ और मुख का सूखना, श्रवण शक्ति अ-  
र्थात् सुनने की ताकत जाती रहती है । रुधिर का सूखना और हृदय  
में दर्द होने लगता है । भावप्रकाश में भी लिखा है कि—

पनीयंप्राणिनांप्राणविश्वमेवचतन्मयम् । अतीत्यन्तनिषे-  
धेननक्तचिद्धारिवारयेत् ॥

विश्व तनमय यह जल मनुष्य का प्राण है इसलिये जहां जल का  
पीना अत्यन्त निषेध है वहां भी प्यास लगने पर पानी अवश्य पिये क्यों  
कि "वृषितो मोह मायाति मोहात् प्राणं त्रिमुञ्चति" प्यासे को पानी न  
मिलने से बिहोशी आती है और बिहोशी में प्राण छूटने का सम्भव है  
ब्रह्माल में एकादशी के दिन विधवा स्त्रियों की यही दुर्दशा होती है ए-  
कादशी महात्म के इस वचन से कि "एकादश्यामन्नेपापानियमन्ति" अ-  
र्थात् जितने पाप हैं वे सब एकादशी के दिन अन्न में बसते हैं उस इस  
वचन को धर्म का मूल जान उन विधारी अथलाओं को जबरदस्ती उप-  
वास कराते हैं । यद्यपि यह व्रतादिक गीता आदि ग्रन्थों के देखने से नि-  
रर्थक जान पड़ता है पर इमें मत मतान्तरों के झगड़े से प्रयोजन नहींहै  
लेकिन जब हम देखते हैं कि व्रत करते २ गर्भवती का गर्भ गिर जाता है  
पुत्रवती का पुत्र बिभार हो जाता है । सद्यो विवाहिता स्त्री लड़के और

युवा पुरुषों को निस्तेज देखते हैं तो हम क्यों कर कह सकते हैं कि एका दश्यादिकों के व्रत से दुःख नाश हो जाता है ऐसा तो नहीं होता किन्तु चण्डा क्षुधा आदि से दुःख होता है और दुःख पाप का फल है, यद्य तो यह है कि धर्मात्मा पुण्यात्मा और ईश्वर का जानने वाला वही पुरुष हो सकता है कि जिगका खाना पीना चलना फिरना आदि इन्द्रियों का आचरण कालानुसार ठीक बन्धा है ॥

भोजन करने का घर सफेदी से पुता हुआ उमदा साफ और पाक स्थान से कुछ दूर पर होना चाहिये यहाँ पर कुछ सुगन्धित द्रव्य रखेहों और नेत्र के सामने विशेष करके भोजन करने एवं सोवने का कमरा बहुत साफ रखना लिखा है । खाने के बख़ यदि माता पिता गिर ब्रह्म पाक कर्ता ( खाना पकाने वाला ) मोर कुत्ता और बानर इन्हें सामने बैठाय लेवे तो उत्तम है, क्योंकि इन सभी की दृष्टि अच्छी होती है और बहुत गरीब आदमी जिन्हें उत्तम प्रकार का भोजन दुर्लभ है एवं बिल्ली आदि जीव उस समय न रहने पायें ॥



### भोजनकेपात्र ।

भोजन के समय घी कांसे के पात्र में रखना उत्तम है, क्योंकि कांस की फटेरी में घृत बिगड़ता नहीं, यही कारण है जो यद्य में घृत कांस ही के पात्र में रखना लिखा है । सीठी चीज पीने या चाटने की हो तो चांदी के पात्र में रखते । सूखा मांस ( कषाय आदि ) रसा दार या चू-रवा ( अखनी ) सोने के पात्र में लिखा है । फटु और अन्न आदि की घटनी घरीरः पत्थल की कूही में ले ॥

दद्यात्तान्नमयेपात्रेसुशीतंशुश्रुतंपयः ॥

पीने के लिये उमदा परिश्रुत शीतल जल तान्न पात्र में लेना चाहिये । बहुत लोग जानते हैं कि तामे के बर्तन में पानी पीना मने है



सो मूल-दे, मनु ने सिर्फ दूध या सहत आदि सीधी चीज-ताम्र पात्र में रख कर खाना सने किया है, इसका कारण यह है कि उक्त द्रव्यों में ताम्र का बन्नि कारक अंश खिंच जाता है । निर्णय सिंधु में लिखा है ।

गव्यंचताम्रपात्रेभ्यः मद्यतुल्यं घृतं विना ॥

दूध ताम्र पात्र में रखने से मद्य के तुल्य हो जाता है, यदि घृत उस में न मिला हो, इससे स्पष्ट होता है कि घृत उस अंश को खींचने नहीं देता । भोजन के समय मद्य मृत्तिका पात्र में और दही चीनी कांच एवं स्फटिक पात्र में रख कर खाना लिखा है "कुलार्णव, कुलप्रदीप, समयाचार देवीरहस्य आदि शाक्त के ग्रन्थों में लिखा है" कि कांच पात्र कभी जूठ नहीं होता, वैसेही विष्णुपुराणादि वैष्णवी ग्रंथों में शंख की महिमा लिखी है । दाल भात और रोटी इन्हे अच्छे मनोरम छिछले पात्र में लेना अच्छा है । उक्त पात्रों के अभाव में उक्त धातुओं की कलई हो, उसके भी अभाव में पत्थल या मृत्तिका का पात्र लेना उत्तम है जितने सूखे पदार्थ हैं उन्हें अपने दहने तर्फ और पानी आदि द्रव्य पदार्थ अपने बांये तर्फ रखना उचित है और दाल रोटी की थाली अपने सामने रखै । चाहिये कि एक गज लम्बी चौकोर बिलस्य भर की ऊंची चौकी अपने सामने रख उसी पर सब पात्रों को स्थापन करै ताकि झुक कर खाना न पड़े क्योंकि—

सुखमुच्चैःसमासीनःसमदेहोऽन्नतत्परः ॥ सुश्रुत,

सुख पूर्वक ऊंची छाती और शरीर को सूख सीधी करके भोजन करै क्योंकि झुक कर खाने से पेट दबा रहता है, इससे उस समय पक्काशय की धमनी निर्बल रहती है । यही कारण है जो युरोपियन लोग टेबुल पर खाना रख और कुर्सी पर बैठ कर खाते हैं, पर एतद्देशीय नवशिक्षित गण उक्त आशय को तो जानते नहीं इसे अय्याशी कोटिमें गणना कर मड़े २ महाजनों के लड़के चोरी छिपा होटल में जाके खाना खाते हैं इससे यदि अपने घर में एक चौकी पर भोजनके समय बरतन सजा और

आप सुख पूर्वक आसन पर बैठ आनन्द से भोजन करे तो होटल से क्या कम राजा मिले, अङ्गरेजोंका अनुकरण भी न हो और महागांसकी पर-सादी से भी बचे रहें । पर वह साहब जो मुख में चुरट दाब ( गिटपिट बोलत साहबी गत चले पतलून जाकट से ) उन्हें यह कब अच्छा लगेगा ॥

भोजन करने के पदार्थ न बहुत गर्म हों और न बहुत शीतल पर ताकत देने वाले सुगन्धित मसालों से धूपित हो । और भोजन करने में न तो बहुत जल्दी करे और न अति देर करे, यद्यपि नीति का बचन है-

अचिरंकुरुराजिन्द्रभोजनेशयनेरणे ॥

भोजन शयन और युद्ध बहुत जल्द करना, पर जल्दी २ भोजन करना बड़ा हानि कारक है ॥

पूर्वमधुरमश्रीयान्मध्येऽस्त्रलवणारसौ ॥ सुश्रुत,

भोजन के आदि में मिष्ट द्रव्य जैसे दूध घिनी या रोटी दूध खीर और मालपुआ आदि, मध्य में अन्न और नगकीन यथा रोटी तरकारी दाल भात और घटनी आदि, अन्त में पीने की यथा माठा आदि पीना लिखा है । पर बहुत काल से आयुर्वेद का प्रचार प्रायः लुप्त हो जाने के कारण मनुष्यों का खाना पीना ऐसा गड़बड़ हो गया है कि लोग इतना भी नहीं जानते कि कौन सी चीज हमें पहले और कौनसी पीले खानी चाहिये और कौन द्रव्य के साथ कौन सा पदार्थ खाना उचित नहीं है, इसीसे अन्धी तादाद और नियमित समय के भोजन करनेवाले लोग भी प्रत्यह अनेकानेक रोगों में ग्रस्त रहते हैं ॥

अब कुछ भोजन के उन अङ्गों को कहता हूँ जिस से प्रत्येक मनुष्य की स्वस्थता, बल, बुद्धि, पराक्रम बढ़ सकती है । यह सभी जानते हैं कि भूख प्यास लगनेपर खाने पीने की इच्छा सब लोगों को होती है इसलिये उक्त वेगों के रोकने या उनके समय को न्यूनधिक करने से रोग पैदा होता है । भूख मारने से देह और आंखों में दर्द, अरुचि, अम, तन्द्रा,

दाह, और बल का नाश होता है, जो लोग भूख लगने पर नहीं खाते उनकी अग्नि पहिले तो वातादिक देवों को नष्ट कर धातु को जलाती है बाद वही जठराग्नि आहार रूपी इन्धन न पाके ठंडी हो जाती है किसी कवि ने कहा भी है ॥

आदौ रूपविनाग्निनीलशंकरीकामस्यविध्वंशिनी । ज्ञानि-  
च्छेदकरोतपःत्रयकरीधर्मस्यनिर्मूलिनी ॥ पुत्रभ्रातृकलत्रभे-  
दनकरीलज्जाकुलच्छेदिनी । सामांपीडतसर्वदोषजननीप्रा-  
णापहारीक्षुधा ॥

अब बतलाइये कौन कह सकता है कि मनुष्य व्रत उपवास करके अर्ध धर्म काम मोक्ष को पा सकता है, इस दुर्लभ शरीर को तो वैधक काल के मुख में दे शीघ्र ही जीवन से हाथ धो सकता है, जो चारों पुरुषार्थों के साधन की जड़ है, हम यह नहीं कह सकते कि तुम एकादश्यादि व्रत मत करो, करो फिर; करो अवश्य करो; किन्तु प्यारे भ्रातृ गण, भूख लगने पर अवश्य खावे; चाहे कन्दही फल खा के रहे कुछ अन्देशा नहीं, हां खा ना, न पचने से अजीर्ण हुआ हो तो एकादशी पर क्या हसर है आप द्वा दशी को भी न खाइये, हम तो वैद्य हैं जिससे आप आरोग्य रहें वही शिक्षा देंगे । बिचार सहित आहार करने से वृत्ति, बल, बुद्धि आयु, शक्ति ओज और सुन्दरता की वृद्धि होती है ॥

जो हमने कहा है कि भोजन के आदि में सीठी चीज खानी चा-  
हिये उसका कारण यह है कि जो मनुष्य जितनी देर में भोजन करते हैं उस काल का तीन भाग कर प्रथम में वायु शमन करनेवाली सीठी चीज बीच में अग्निकारी खट्टी और नमकीन और अन्त में कफ नाशक कड़ुई तीली और कपैली चीजों को प्रीति पूर्वक मन लगा कर भोजन करना चाहिये; जो लिखा है कि कड़ी और भारी वस्तु भी भोजन के आदि में खाना उत्तम है इस लिये कि भोजन काल में जठराग्नि तेज रहती है

हम से कड़ी और भारी वस्तु ( रोटी पूरी आदि ) खाना जल्द पच जाता है ॥

पहले हम भोजन करने का मकान भोजन के पात्र और किस प्रकार भोजन करना चाहिये कह आये हैं और यह भी दिखलाया है कि ठीक समय पर भोजन करने से क्या लाभ होता है । अब विचार करना चाहिये कि ईश्वर ने हमारे जीवन के हेतु क्या २ वस्तु उत्पन्न किया है और कीन २ द्रव्य के स्थान से हमें क्या २ हानि लाभ हो सकता है । उ-रोक्त सब बातें खास करके उन लोगों के लिये हैं जिनको सब तरे का आराम है । पर विशेषकर समान्य रीति से देश काल आवश्यकता औ दीप विचार करके उसके अनुसार चलना सब को उचित है ॥

### अन्न पाक यंत्र ॥

सच्चिदानन्द ज्योति स्वरूप नित्याखण्ड निस्पृह निर्गुण परमात्माने जीवधारियों के अभ्यन्तर ऐसे २ सूक्ष्मातिसूक्ष्म नाड़ियों के द्वारा प्राण रक्तक भोजन पचने और शुक्र बनने का यंत्र बनाया है कि जरा भी चलट फेर होने में शरीरही नष्ट भ्रष्ट हो जाती है । जो कुछ भोजन किया जाता है वह पहले प्राणवायु आय कर आहार को आमाशय में ले जाती है यह आहार घट रस में कोई रस क्यों न हो आमाशय में जा सधुर और केना सा हो जाता है बाद यही पाचक पित्त से दग्ध हो खटा हो जाता है फिर समान वायु से प्रेरित हो ग्रहणी में पड़ता है और ग्रहणी से अग्निकोष्ठ में पच कहुआ हो जाता है यदि न पचा तो आंय हो गया और नहीं तो यही उत्तम रस अग्नि के बल से सधुर और धिकना हो जाता है और यही रस अमृत के समान हो भखिल घातुओं को उत्पन्न कर शरीर को पुष्ट करता है । यदि सन्दाग्नि से अपक्व अर्थात् अच्छे प्रकार से न पचा तो यही रस कहुआ खटा हो तादृश डकार उत्पन्न करता है और विष समान हो अनेक उदरादि व्याधि प्रगटकर महत्

केश देता है चाहिये उस अवस्था में बन्धित द्रव्य के जल से धमन कर उस रस को निकाल डाले ॥

यह भी जानने के योग्य है कि जितना खाना खाया जाता है वह सब शरीर के विभागों के बनाने में नहीं काम आता अथवा कुछ हिस्सा जो फ़ूजल है बदन से बाहर निकल जाता है परंतु उन मिश्र द्रव्यों की मूरत में आकर निकलता है जिनमें निमक की चीजें ज्यादा रहती हैं जैसे मल मूत्र । जब आहारसे रस खिंच कर अलग हो जाता है तब सार हीन मल, और जल, रह जाता है उस जल को मूत्र बाहिनी शिरा लेकर बस्ति याने मूत्र की थैली में डाल लिंग द्वारा निकाल देती है और मल को अपान वायु पक्षाशय में लाय त्रिमली अर्थात् गुदा मार्ग से निकाल देती है ॥

बाद इसके फिर यह रस समान वायु (जो वायु अग्नाशय में रहती है) से प्रेरित (भेजा हुआ) हृदय में जाय रंजित पित्त (रंजक पित्त यह है जो अपनी ताकत से उसी रस को रक्त बना देता है) से पचकर रक्त हो जाता है । यही रक्त सर्व शरीर में स्थिति उत्तम जीवका आधार है और रक्तही बदन के सब हिस्सों को जिन्दा रखता है । रक्त क्या चीज है और किस तीर पर यह शरीर में चलता है और गर्दिस किया हुआ रक्त किस प्रकार उसी हृदय से साफ हो जाता है इन सबों का बयान रक्त प्रकर्ण में लिखेंगे ॥

यदि यह रस रक्त न होकर विदग्ध हो गया तो सदा हो जाता है अब जानना चाहिये कि भोजन किया हुआ द्रव्य प्रथम रस बनके ५ रोज में पित्त की मदद से रक्त हो जाता है, इसी प्रकार पांच ५ रोज में रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से हड्डी, हड्डी से मज्जा और मज्जा से ९ दशक अधिक एक मास में जाके शुक्र बनता है । परन्तु जिसकी जठराग्नि तेज है उसकी हमसे कम दिन में और जिसकी भूख कम है उसको हमसे भी अधिक में शुक्र होता है । लेकिन धातु बर्हुक औषध खाने से जल्द

और अधिक शुक्र होता है । यद्यप्यस्या में वायु की अधिकता से रस सूख जाता है इसलिये उस अवस्था में वायु शक्ति का एक एवं धातुपदाने वाले तर द्रव्य भोजन करना उत्तम है । शरीर में वायुही प्रधान वस्तु है इसकी ताकत से जीवधारी गण अनेक प्रकार के काम कर रहे हैं जैसे दूध में घी और ऊख में रस रहता है वैसाही मनुष्य के शरीर भरमें शुक्र है और यही शुक्र, स्त्री के देखने, छूने, उसकी बोली सुनने, उसका ध्यान करने और मीथुन का आनन्द होने से लिङ्ग के रास्ते निकल जाता है, यही कारण है कि अति मीथुन करने से मनुष्य बहुत जल्द निबल हो यद्द हो जाता है ॥

मनुष्य को अपने खाने पीने का संपन्न विचार सहित ठीक समय पर रखना उचित है, चाहिये कि जिसमें धातु में हानि न पहुंचे और दिन प्रति दिन शुक्र की वृद्धि होती जाय ऐसा भोजन करे । भूख होने पर यदि भोजन न करे तो अग्नि बीर्य और रक्त को सुखाती है इसलिये भूख लगने पर अवश्य खावे ॥

### भोजन करनेका समय ॥

सामान्य तरह से सब चिकित्साओं का मत है कि एक पहर दिन के ऊपर और दो पहर के भीतर और रात के एक पहर के भीतर भोजन करना श्रेष्ठ है; परन्तु रस दोष और गल के पकने पर जब भूख तेज हो आहार करने का यही समय ठीक है लेकिन परीक्षा से देखा गया है कि जिन लोगों के भोजन का समय बँधा है उन्हें उन्ही समय में जाके भूख लगती है, जो लोग एक दिन रात में एकही बार भोजन करते हैं उन्हें ठीक दोपहर के भोजन करना उत्तम है । बाजी २ यूनानी क्लिपों में लिखा है कि दो दिन एक रातमें तीन बार से अधिक न खाना चाहिये शायद ऐसा यूनान वाले करते भी हों पर यहांके मुसलमानोंमें तो ऐसा

नहीं देखा जाता हनारी रायमें तो भोजन का समय दस बजे दिन और १० वा ९ बजे रात को उत्तमही उसमें भी जो कोमल प्रकृति वाले हैं और जिन्हें पढ़ने लिखने आदि की मेहनत अधिक पड़ती है उन्हें नामुली भोजन के अतिरिक्त प्रातःकाल शीघ्र के अनन्तर और सन्ध्या समय पार पांच बजे शीघ्र के अनन्तर शुद्धचित्त हो कुछ ताकतपर मोदक या अन्य पदार्थ खाके जल पी लेना बहुत जरूरी है, क्योंकि इससे शरीर का बल अधिक मेहनत करने पर भी नहीं घटता पर समय का स्याल अवश्य रखना चाहिये ॥

### निपिद्धान्न ॥

जिस अन्न में कुछ स्वाद न हो ऐसा भोजन बामी, जूठा (उच्छिष्ट) और जो खाना बमाने लगा हो, बहुत देर में पका हो या दुरियाय गया हो, शीतलसे फिर गर्म किया गया हो या अच्छी तरह न पका हो और जल गया हो तो कदापि न खाना चाहिये क्योंकि ऐसे २ अन्नों के खाने से मिशूनितादिक रोग होने का सम्भव रहता है, यह भी याद रखने के योग्य है कि भात के साथ भिरका और मुर्ग के मांसके साथ मूली, मूली के साथ दूध या दही के साथ बकुले का मांस न खाना चाहिये क्योंकि उसमें कफ में विकार उत्पन्न होता है। दूध के साथ अज्जीर या नींबू या गड़ली और क्यूतर के घरे के मांस के साथ प्याज का खाना बजित है क्योंकि इससे वायु का कोप होता है। सरसों के तेल से भूँजा हुआ क्यूतर का मांस और दूध के साथ तेल का बना पदार्थ कदापि न खाना चाहिये इसमें शीघ्र ही कणल रोग होता है ॥

जो हम लिख आये हैं कि चार दफे भोजन करना चाहिये, मर्पात् नामुली भोजन के अतिरिक्त भी सबेरे और शाम को कुछ मलिष्ट पदार्थ खाना अत्यावश्यक है। और अति लाभदायक शिक्षा में यह भी देखलाया है कि प्रातःकाल उठ कर बामी गुंड बामी पानी पीना अति गुणकारक है। मन्त्र म् यों को उचित है कि उक्त जल पान के एक घण्टा बाद

नीचे कड़े पुये पदार्थों में से जो इच्छा हो खाना बहुत जरूरी है पर ऐसा भी न खा ले जिससे कि मामूली भोजन में बिग्न पड़े (खाने की इच्छा न हो या कम खाया जाय) ॥

### कुण्डलनी अर्थात् जलेबी ॥

जलेबी का बनाना कुछ कठिन नहीं है, इसलिये बनाने की क्रिया नहीं लिखा इसे घर में औरतें भी बना लेती हैं और बाजार में भी हेलवाइयों की दुकान में प्रत्यह सघेरे ताजी मिल सकती है ॥

### गुण ॥

एषांस्तुलसीनाम्नापुष्टिकान्तिफलप्रदा । धातुवृद्धिकरी  
वृष्यारुच्याचेन्द्रियतर्पणी ॥

जलेबी शरीर को पुष्ट ( मखत ) करती है कान्ति ( चेहरे पर रीनक ) और बल को बढ़ाती है, धातु वृद्धि, वृष्य ( सद्यः शुक्रकर ) रुचि और इन्द्रियों को तृप्त करती है । परीक्षा करने से देखा भी गया है कि रोज सघेरे जलेबी खाने से बहुत अधिक फायदा हुआ है, लेकिन मन्दाग्नि वाले को आंश पैदा करती है, बाजार की अपेक्षा घर की बनी हुई जलेबी बहुत लाभदायक होती है क्योंकि बाजार का खमीर अच्छा नहीं होता, खमीरही पर कुछ कथन नहीं है बाजार के बने पदार्थ सभी खराब होते हैं । इसी से वेद में लिखा है:—

“नापणीमज्ञमज्ञीयादिति”

बाजार का पका अन्न न खाना चाहिये । कारण यह कि हेलवाइए लोग प्रायः सड़ा, चुना, घामी, खराब जो कुछ माल बच जाता है उसे भी किसी न किसी ढङ्ग से बेच डालते हैं और बहुत प्रकार का मिलावट कर देते हैं । इसी समय ने हर एक मेलाओं में लोगों को हैजा हो जाता है ॥



## "माखन मिश्री" ॥

दूध मथने से जो ची निकलता है उसी को प्रायः मक्खन कहते हैं।  
मक्खन का गुण ॥

“दुग्धाख्यं नवनीतन्तु चक्षुष्यं रक्तपित्तनुत् । वृष्यं बल्य मति-  
स्त्रिगधं मधुरं ग्राहि शीतलम्”

दूध से निकला मक्खन नेत्र और रक्त के विकार को हर लेता है और वृष्य (शुक्रकर) बल्य (दाकत घर) अति चिक्कन, मीठी, ग्राहि (दीपन पाचन) और शीतल है। रोज सवेरे माखन और मिश्री के खाने से विशेष कर नेत्र और सस्तिष्क में अधिक बल होता है और इसके खाने वाले को मृगी, उन्माद, मूर्च्छा और शिर की बिमारी स्वप्न में भी नहीं हो सकती। यदि नियम के साथ रोज सवेरे तीन बार महीने तक का-सस्यास (दमा) और यक्ष्मा (कफजयी) वाले को माखन मिश्री खिलाई जाय तो हम निस्सन्देह कह सकते हैं कि बिमारी जाती रहेगी ॥

## आंवला का मुरब्बा ॥

रोज सवेरे एक वा दो रेना रङ्गित आंवले के मुग्घे में एक चांदी का बर्क लपेट कर खाने से जैसा फायदा करता है प्रशंसा करना व्यर्थ है। आंवला तीन दोष को नाश करता है ॥

“रक्तपित्तप्रमेहघ्नं परंब्रुष्यं रसायनं । हन्ति वातं तदस्त्रत्वात्  
पित्तमाधूर्यशैत्यतः ॥ कफारुचकपायत्वात् फालंधाच्यास्त्रि-  
दापजित्”

आंवला रक्त पित्त और प्रमेह का नाशक एवं वृष्य और रसायन (जो वृद्धावस्था न आने दे) है विशेष कर आंवला अपने खट्टे अंग से वात को, मीठे और मीठे अंग से पित्त को, रुख और कपाय प्रभाव से

कफ का नाश करता है । जिनके आंवले का सुग्घा और चांदी का चकं न मिल सके वे । सुफे मूला आंवले का चूर्ण ६ मामा और मिश्री ६ मामा मधेरे फांक कर खाइ। सा जल पी लिया करै तो भी बहुत फायदा करै ।

### गोक्षुर पाक ॥

बड़ा गोक्षुर पाय भर, जायित्रो ३ मामा, लवङ्ग ४ मामा, मिर्च १ तोला, कपूर ६ मामा, अकरकरहा ६ मामा, मसुद्रगोष ६ मामा, अजधाइन ६ मामा, हरदी ६ मामा, आंवला, तज, तेजपात, छोटीलापची, वंश्लोचन, नागकेशर और तालमराना, एक २ तोला घेई भांग ५ मामा, अफीम २ मामा, गौ का दूध ४ मेर, चिनी २ मेर, बबूल का गोंद ८ तोला, चांदी का चकं २० ताब । क्रिया, सब दवाइयों का भिन्न २ कूट कपड़ छान कर ले पहिले दूध को फट्टाई में चढ़ा भाष दे जय दे। हिस्सा दूध जल जाय तब गोक्षुर का चूर्ण और अफीम को दूध में छोड़दे और पकाता जाय, जय बिलकुल रोया हो जाय तब उसी में पाय भर घी हाल रोवे को सूय भूंग ले, याद इसके गोंद के भी घी में तल ले, फिर चिनी का उमदा घामभी कर उसी में रोया और सब दवा मिला दे बदाम ५- किमकिम ५- पिस्ता ५- गरी २ तोला, नई चिरींजी २ तोला इन सबों को भी महीन कतर कर उसी में हाल एक २ छंटाक का लड्डू बनाले ।

“प्रातस्त्रेव्यमिदं महीपधवरं रोगौघविध्वंसनं ह्यर्गोघ्नं  
सकलप्रमेहहननं प्रौढांगनाद्रावणम् ॥”

नित्य प्रातःकाल एक लड्डू खाने से सम्पूर्ण रोगों का नाश होता है विशेष कर घायाशीर प्रमेह के नाश करने एवं स्त्री द्रावण और घातु स्तम्भन में उत्तम औषधि है । और भी बहुत सी दवाइयां प्रातः काल खाने के योग्य हैं जिनका बयान फिर कभी समयानुसार करेंगे । प्रिय पाठकगण ऊपर लिखे हुये औषधियों में जो प्रास हो सके अवश्य प्रातः

काम लाया करिये फिर देखिये मन्द रोज में कैसा फ़ायदा मालूम होता है ॥

## दूसरा भोजन ॥

इसका नियम दिन के एक पहर के ऊपर और दो पहर के भीतर लिख चुके हैं । इस वक्त के भोजन लायक उत्तम यह वस्तु है, मूंग और उर्द की धुली हुई दाल क्योंकि इन दोनों का खिलका ज़हर है कानपुर से लेकर पूरे में प्रायः लोग अरहर की दाल ज्यादा खाते हैं हैं लेकिन जहाँ तक परीक्षा करने से ज्ञात हुआ है केवल अरहर की दाल खाना अति हानि कारक है इन सबों के गुण आगे प्रकाश करेंगे । चावल, दूध, घी, चिनी, मुन्हायस, तरकारी और मांस, किन्तु मांस का शास्त्र विहित खाद्यान्नाद्य की अनुगति आने देगे । इस समय केवल इतनाही दिखलाते हैं कि घिना घी दुग्ध अर्थात् खिलकुल रूखाही अन्न खाना बड़ा निषेध है क्योंकि निरा रक्त (अरहर चना की दाल रोटी) और रूखा आन्न (चना अरहर और मटर का चरभन) वे पचे हुये गोलाकार हो कर ऊपर का हिस्सा उभका जल जाता है इससे मन्दाग्नि या कोष्ठबद्ध होने का संभव है । दूध भात या दूध रोटी चिनी के साथ रोज भोजन के आदि में खाना शरीर को मोटा और बलवान करता है । दालभात दालरोटी और निचरी के साथ घी खाने से खाना अच्छी तरह हजम हो जाता है एवं कोष्ठ परिस्कार और मन्दाग्नि का नाश होता है । यह भी याद रखने के योग्य है, जैसा किमी कवि ने कहा है ॥

“शतंविहाय भीक्षुव्य सहस्रज्ञानमाचरेत् । लक्षंविहाय दातव्यं कोटिलक्ष्णा हरिभोजित्”

सर्वे माधारण को उचित है कि सैकड़ों ज़रूरी काम को छोड़ समय पर भोजन करें क्योंकि भोजन काल के पहले ही खालेने से सामर्थ्य की हानि, सिरमें दर्द और मिशूषिका आदि बीमारी उत्पत्ति होने का डर

है इसी तरह भोजन के समय के धिता कर खाने से वायु का विकार, मन्दाग्नि अरुचि अग्नीर्ण रोग पैदा होता है । सुतरां नियमित समय पर भोजन करना अति लाभ दायक है । कौष्ट अर्थात् जहां भोजन किया हुआ पदार्थ एकत्रित होता है उसके चार भाग मान कर दो भाग अन्नादि से, १ भाग जल से परिपूर्ण करना और एक भाग वायु के सञ्चार के लिये खाली छोड़ देना चाहिये ॥

### भोजन का तीसरा समय ॥

चार पांच बजे शाम को ममस्त द्रव्योपार्जनादि कामों से निवृत्त हो शीथान्तर शुद्ध चित्त हो बतौर जल खया के कोई पुष्ट कारक लड्डू या अधो लिखित में जो मुनासिब समझे खाकर थोड़ा जल पी ले बाद इसके कामेऽदीपन मसाला से पूरित बंगला पाग का एक बौड़ा खा स्वच्छ निर्मल और इतल सुगन्धादिकों से वासित हलका बस्त्र पहन हाथ में छड़ी ले मन प्रसन्न और श्रम निवारणार्थ किसी बगीचे में या ऐसे स्थान में एक आध घंटा घूमने के लिये निकल जाय जहां हर एक अपने परम प्रेमियों से मेल मिलाप हो, या किसी उत्तम हवादार दिव्य स्थान में बैठ कर दिख बहलाने वाली किताब देखे या मितार आदि रमणीक वाद्य बजायें या सुने, या अपने परम इष्ट गिहों से यातालाप करे इन व्यवहारों से परिश्रम की जो हगारत है विलकुल जाती रहती है. चित्त प्रसन्न और घातुं पुष्ट होता है, एवं उस व्यक्त को नजले की बीमारी स्वप्न में भी नहीं हो सकती है ॥

### कपिकच्छु ( केवाछ ) पाक ॥

केवाछ के घोज की गरी ५१ दूध ५४ चिनी ५२ छोटी पीप, तिर्ष जायकल, तज, तेजपात, लयह, छः छः मासा, जायित्वी और केशर चार चार मासा, छोटी लायची, यंशलीयन, पुननंधा, मफेद मूसली, मफेद चन्दम, अमर और अकरकरहा, एक २ तोला, बस्तूरी एक या दो मासा

कपूर ३ ग्रामा, बदाम पिस्ता किसमिम और मुनक्का आधे २ पाय इन सब दवाइयों को अलग २ फूट कपड़ खान कर ऊपर कढ़े हुये गोपुरुक पाय की तरह इमे तैय्यार कर यादाम आदि मेधा डाल तीन २ तोले का मोदक बना ले प्रत्यह संध्या समय एक लड्डू याकर ऊपर से पाय आध पाय दूध पी लेने से सब प्रकार का प्रमेह नाश होता है ॥

“तत्रापिचीण देहस्य बलपुष्टि विवर्द्धनम्”

कैमाहू दुर्बल और बल हीन पुरुष क्यों न हो कुछ काल पर्यन्त इसके सेवन से अवश्य बली और पुष्ट होगा ॥

यदि उक्त पाक न बन सके तो मराने को घी में तल कर चिनी या मिश्री में पाक बना लें । रोज संध्या समय तीन चार तोला खाकर दूध या जल पीले अगर यह भी न हो सके तो सिर्फ पाय या आधमेर अथाथट दूधही पीले क्योंकि उस समय कुछ पर कुछ खाना बहुत जरूरी है ॥

### चौथा रात्रि भोजन ॥

यह तो लिखी चुके हैं कि एक घण्टे रात के भीतरही भोजन करना उत्तम है कि । बहुत से लोग ऐसे भी देखे जाते हैं जो १२ बजे रात को आहार करते हैं पर यह बिल्कुल वाहियात है क्योंकि भोजन वास्तविक न परिपाक होने से सखेरे देा तीन दफे दस्त आता पड़ता है और कुछ डकार या गले में जलन होती है ॥

### अति लाभदायक शिक्षा ॥

शरीर के आरोग्य कारक अनेक विषय ऐसी हैं जिन्हें याद रखने से सर्वसाधारण जन प्रति दिन क्या प्रति मुहूर्त लाभ उठा सकते हैं सुतरां आत्म हितकारियों को उचित है कि निम्नलिखित बातों पर अवश्यमेव ध्यान दें ॥

१ भोजन से उदर को बहुत नहीं भर लेना चाहिये क्योंकि अधिक खाने से बदन बेकार और निकम्मा हो जाता है ॥

२ एक आहार जब तक न पच जाय तब तक दूसरा आहार कभी न करना चाहिये क्योंकि इससे अग्नि का दीपन पायन बल घट जाता है ॥

३ भोजन करके ततक्षण स्त्री प्रसङ्ग कदापि न करना चाहिये इससे निश्चयही उदर मूग और अपहृष्टि हो जाता है ॥

४ अति भूख लगी हो तो पानी पी कर पेट न भर लें कारण यह है कि जलोदर रोग होजाता है, इसी तरह अति प्यास में अन्न खा लेने से गुण्ड रोग होता है ॥

५ प्राणी मात्र को छः घंटे से कम और आठ घंटे से ज्यादा नहीं सोना चाहिये । क्योंकि छः घंटे से कम सोने में मस्तिष्क में निर्व्यगता और आठ घंटे से अधिक सोने में शरीर में भारी पन और आलस्य प्राप्त होती है ॥

६ शरीर पसीना से आर्द्र हो तो जब तक पसीना न मूग जाय या कपड़े से अच्छी तरह न पोंछ लिया जाय तब तक आकाशी हवा विशेष कर पूर्व की वायु न लगनी चाहिये और न स्वेद युक्त शरीर पर पानीही पड़ना उचित है समय यह है कि इन दोनों कारणों से क्षायुषों में वायु के कोप से दर्द होने लगता है ॥

७ दिस्थान्तेपिवेद्दुग्धं निशान्तेशीतलंजलं । भोजनान्ते  
पिवेत्तन्नं किमन्यैर्भेषजैर्नृणाम् ॥

मन्थ्या समय दूध पीना अति लाभदायक है, इसी लिये शास्त्रकारों ने धातु महक द्रव्य मन्थ्याही को खाना लिखा है और धातु सृष्टिकारक द्रव्यों में दुग्ध प्रधान द्रव्य है ॥

“ धातुपट्टि अन्न-वलाङ्करण जीकोई पूछे याय ।  
पय समान औषध नहीं जगमें दिया वताय ॥ ”

८ प्रति दिन सूर्योदय के पड़ले कुछ अंचकार रहते में एक घेर या नितनी इच्छा हो जाती जल पीने से मन रोगों का नाश और १०० वर्ष की आयु होती है, और यह क्रिया अर्श, शोथ, कुष्ठ, मूत्राघात, रक्तपित्त, अस्रपित्त, मेद और उदर, नेत्र, कर्ण, गल गिर रोग एवं यस्ति शूल और त्रिदोष को नाश करता है पर यह भी याद रखने योग्य है कि मोते से उठ कर तत्काल जल न पी ले दश पन्द्रह मिनट ठहर के जल पीना उचित है । उभी काल में नाक से वाली जल पीने से बुद्धि और दृष्टि की शुद्धि एवं जल्द बाल का पकना, स्वरभंग, पीनस, कासश्वासदि अनेक रोग नाश होते हैं ॥

९ भोजन के अन्त में तक अर्धात् माटा पीने से भोजन अच्छे प्रकार पच जाता है ॥

१० (उदके आत्मनं न पश्येत्) पानी में अपना मुख न देखना चाहिये सबसे यह है कि दृष्टि रजक नभ में वायु का कोष होता है ॥

आयुर्वेद (वैद्यक शास्त्र) के जानने वाले प्रियधर “व्याघ्रशकुनिक पतितपापकारिणां तपप्रतिफलदयं एवंविद्या प्रकाशते नित्येशोधस्वार्थं क्षमाद्य प्राप्नोति” मन के तथा प्राय पशुओं के मारनेवाले ( गोघातक नलेल) पक्षियों के मारने वाले तथा पतित (जो हिन्दू इत्यादि हो गया है और खाद्यान्नाद्य का विचार न रखता हो) और पापियों की औषध न करना इन आवरण से विद्या सफल होती है लोक में नित्यता बढ़ती है यश होता है धर्म, अर्थ काम और मोक्ष प्राप्त होते हैं ॥ शुश्रूत

जप्र. कि दूध-घृत उत्तम अन्नादिकां से शरीर पुष्ट और बलावान रहता है तो मांस खाने की कोई ज़रूरत नहीं है । मांस खानेवाले इस को बहुत कुछ समझते हैं और ऐमाही है भी लेकिन विचार करना चा-

हिचे कि किम समय पर किस चीज की आवश्यकता होती है। स्वास्थ्य में मांस खाना व्यर्थ है और देखला सक्ते हैं कि और २ पदार्थ खा कर के मांस की अपेक्षा अधिक फल पा सक्ते हैं, तो अच्छे विच्छे में भी पशु का खाना पशुओं का काम है, जग की तुम्हारे खियां चन्द तरह के मस्तु खाने पीने के लिये ऐसे तैय्यार हैं कि जिनके खाने पीने से दिन प्रतिदिन बलिष्ठ और पुर्णार्थी हो सक्ते हो तो क्यों क्या मांस खाकर बदनाम होते हो। तुम्हारे पूर्व के पुरये जिनका इतिहास दिन रात बांधा और सुना करते हैं। ये तुम से किम घात में कम थे, क्या वे मांसाहारी थे? कभी नहीं। विचार करके देखिये भारतवर्ष, चीन, और जापान में करीब ३० किरोड़ बौद्ध मत वाले हैं और सब लोग जानते हैं कि यह लोग कुछ कम जेअर नहीं हैं और यह भी नहीं है कि इन लोगों की जिन्दगी येड़े दिन की होती है इस लिये हे प्यारे बांधयगण क्या की हालत को छोड़ जहां तक बन पड़े मांस भक्षण त्याग करो इसमें तुम्हाराही कल्याण है ॥

गरमी के दिन बीत जाने पर इलकें कपड़ों की क्रमशः बदलना चाहिये जाड़े के दिनों में शरीर रुईदार और ऊनी कपड़ों से आरोग्य रहता है ॥

जाड़े के दिनों में लोग रात को सोयन करने के मकान की कियाड़ बन्द रखते हैं चाहिये कि सूब तड़के उठ कियाड़ और खिड़कियों को कुल काल तक खोल रक्खा करै क्योंकि सुरास हवा जो रात में एकट्ठी होती है निकल जाती है ॥

गद्यपान इस देश में जैसा फैला हुआ है और फैला जाता है उसका कारण गुप्त नहीं है विद्वान लोग सभी जानते हैं। जहां तक आयुर्वेद द्वारा अवलोकन किया जाता है गद्यपान (जो निक नशा करने के लिये पीते हैं) किसी तरह पर सुख दाई नहीं हो सक्ता बल्कि अनेक तरह के रोग पैदा हो सक्ते हैं प्रत्यक्ष है कि इसी की मित्रता गोया अपने-आप के बुझाना है, प्रायः देखने में आया है कि इनके पीते २ कितने लोग थे



कार और पागल हो गये हैं । अति सुरापान से मस्तिष्क का नाश और बहुत से रोग, यक्ष्मा, स्वास और काश पैदा हो जाते हैं और रक्त का कोई उपद्रव उठना तो शक्य ही नहीं है और यह भी है कि जो अति सुरापान से रोग होता है उसे अमाध्यही जानना चाहिये फिर धन्वन्तर भी उसकी चिकित्सा नहीं कर सकते हैं, इसलिये हे व्यारे भ्रातृगण दया की हालत को छोड़ और किसी तरह पर सुरापान करना उचित नहीं है बाकी बचान सुरा के प्रकर्ण में करेंगे ॥

बहुत तम्बाकू और चुरट को भी पीना न चाहिये क्योंकि इसके अभ्यास से आंत, फुफुम (फेफड़ा) हृत्पिंड (दिल) मस्तिष्क और दांत कमजोर हो जाते हैं । क्योंकि शीतल वायु से दिल की ताकत कायम रहती है और आन्तरिक आशय मजबूत होते हैं इस हेतु दया के अतिरिक्त तम्बाकू आदि का पीना याहियात है ॥

सात आठ बजे रात को एक मरतवे न से। के एकबारगी रात को पढ़ने से और अधिक श्रम करने से बुद्धि तीव्र नहीं रहती इसलिये नियम के साथ दिनही में या तीन चार बजे रातको उठके पढ़ना उत्तम है लेकिन चिमनी या किसी किस्म की तेज रोशनी को आखों के सामने रख कर पढ़ने से नेत्र कमजोर हो जाते हैं इसलिये यदि रातको पढ़ना है तो नेत्र को बचा कर रोशनी रखें या लम्प पर हरी चिमनी लगाई या चिमनी पर आड़ रख कर पढ़ सकते हैं ॥

जाड़े के दिनों में जो मकान सौंड़ या पानी से तर रहता है उस मकान में बिना अग्नि रखे रहना निषेध है क्योंकि जाड़े के ऋतु में बहुत अधिक सरदी से अलग रहनाही उत्तम है, कारण यह है कि इस ऋतु में अति ठण्ड जल हया और सरद आहार आदि के सरदी की अधिकता से उयर खांसी जानघात और अतीसार आदि रोग पैदा हो जाते हैं ॥

बिना जाने बुझे और परिष्ठा के किसी के हाथ से कुछ चीज विशेष

कर पान का बीड़ा न खाना चाहिये इसी प्रकार मूर्ख वैद्य ( अताई ) के हाथ की दवा खाना और जहर खाना दोनों बराबर है क्योंकि शास्त्रकारों ने इस यात का बड़ाही निषेध किया है, कारण यह है कि:—

औषधोऽमृतकल्पास्तुगस्वाशनिविषोपमाः । भवन्त्यत्रैव  
पहतास्तमादेतौ विवर्जयेत् ॥

औषधि जो अमृत के समान हैं वे उन् अशिक्षित वैद्यों के हाथ से शस्त्र बज्ज अथवा विष के समान हो जाती हैं इसलिये मूर्ख चिकित्सकों के हाथ की औषध कभी न खाय ॥

स्नेहादिष्वनभिज्ञोयः क्खियासु च कर्मसु । सनिहन्ति जनं लो  
भात् कुर्वेद्यो नृपदापतः ॥

जो वैद्य मनपपर पसीमा देना अथवा छेदनभेदन (चीरकाड़) आदि क्रियाओं को नहीं जानता यह लोभ से रोगी के प्राण को नाश कर देता है और उस हत्या से राजा पापी बनता है क्योंकि उसने अपने राज्य में ऐसे मूर्ख को चिकित्सा करने का अधिकार क्यों दिया ॥

जो वैद्य केवल शास्त्र को जानता है और कर्म को नहीं जानता इसी तरह जो क्रिया को जानता है परन्तु शास्त्र के बोध से रहित है वह वैद्य रोगी को पायकर चमड़ाया जाता है जैसे कातर पुरुष रण में चमड़ा जाता है राजा को उचित है कि ऐसे वैद्य का सरधा डाले ! फिर आन कल बहुत से वैद्य ऐसे भी देखने में आते हैं कि कुछ पढ़े लिखे तो हैं पर उसके तत्व (गीतरी मतलब) को बिलकुल नहीं जानते तो बस गनुष्य चाहे सब शास्त्र को पढ़ ले परन्तु बिना अर्थ के जाने यह शास्त्रज्ञ नहीं कहलाता केवल शास्त्रों का भार उठाने वाला है । “यथा खरचन्दन भारवाही भारस्यवेत्ता नतुचन्दनम्य” जैसे गधे पर चन्दन लादने से गधा केवल चन्दन के भार को जानता है परन्तु उसकी सुगन्ध को नहीं जानता ॥

## सुबह का उठना ॥

अगर आदमीको सबेरे उठना होता तो रातको सबेरेही सोना जरूर है । बहुत रात आ जाने पर जो सोते हैं वे सबेरे बिछीना परसे नहीं उठ सक्ते । अगर यह उठें भी तो कुछ फायदा न होकर बहुत तरह की सरावियां पैदा होती हैं बदन दुबला और रोगी हो जाता है, भ्रम भारी मालुम होता है, आंखों में जलन होती है और किसी काम के करनेही में उत्सह नहीं होता । इसलिये अगर भोर के बत्त चार पांच बजे बिछीना पर से उठने का नियम करना होता रात को नव दम बजे सोने का अभ्यास करना पड़ेगा और यही करना उचित है ॥

रात को ज्यादा न जाग कर सोने की आदत लगाने से सुबहको उठ कर अपना काम अच्छी तरह हो सकता है सिर्फ इतनाही नहीं होता पर हमने बहुत तरह की आफतें, डर और घुरी घुरी घातोंसे भी बचाव होता है । आधी रात के अंधियारे में छिप कर और इसे सुयोग समझ कर बहुत से लोग अपने पैरों में आप कुलहाड़ी गाते और नरक का दरवाजा खोलते हैं और अन्तको जगम भर पछताया करके भी अपने किये हुए घुरे कामों के फल से छुटकारा नहीं पाते ऐसे भी आदमी बहुत से देखने में आते हैं कि जो अपने किये हुए घुरे कामों का फल अपने लक्षके बालों तक फैलाते हैं और उनके विचारे लक्षकों को निरपराधी हो कर भी अपने पिता के किये हुए घुरे कर्मों का फल भोगना पड़ता है । ऐसे नरक के जाने वाले, अपनी ही जिन्दगी में दाग लगा कर सिर्फ आपही दुःख नहीं भोगते पर इस पृथ्वी पर के बहुत से दूमरे मनुष्यों को भी दुःख सागर में डुबाते हैं ऐसे आदमियों के जिन्दगी पर धिक्कार है ।

भाइयो, तुम कभी भी इस तरह की घुरी घाल मत कभूल करना । हर रोज प्रण करके रात को ९.१० बजे सोने की आदत लगाओ और भोर को चार पांच बजे उठो और जगम भर इसी नियम का पालन करी इस नियम के चलने से हिमाय करके देखो कि जिन्दगी के दिन कितने

बढ़ जाते हैं। एक आदमी भार धजे हर रोज, उठ कर अपना काम शुरू करता है। और दूसरी आदमी छः धजे उठ कर काम शुरू करता है। यदि वे दोनों रात को एकही वक्त सोवें तो ४० बरस के बाद मालूम पड़ेगा कि पहिला आदमी दूसरे से १० बरस ज्यादा बचा। इस तरह हिंसाय करने का मतलब यही है कि असल जिन्दगी क्या है? इस बातको अगर अच्छी तरह सोचा जाये तो, ब्रजपन का खेल, खाना, खाना पीना सोना, आराम धीरह कामों में जो यक्त धीतता है वह छोड़ कर सिर्फ कड़े-घंटे जो हगलोग हकीकत में अच्छे कामों में धिताते हैं उनी का नाम असल जिन्दगी रखने से, भले कामों में, मनुष्य के जीवन का बहुत ही कम वक्त खर्च होता है, यह तो साफही जाहिर है इस तरह हिंसाय करने से जो जितना ज्यादा काम कर सकता है उसको उतनाही बड़ी जिन्दगी का आदमी कह सकते हैं और इसी लिये उन दोनों आदमियों में एक आदमी दूसरे से दस बरस ज्यादा जीआ ॥

एक बड़े ज्ञानी ने कहा है कि, सुबह दगढी हवा में कोई ऐसी एक चीज है कि जिससे लाल रून की तेजी बढ़ती है। मर्रा शरीर तेजस्व होता है, ओंठ लाल होते हैं और बदन सघनी जगह से सुधील होती है इसलिये मैं कहता हूं भाई यदि तुम दीर्घजीवी होना चाहो, शरकर आयांगसे जिस तरह निर्मल जलका सोना बहता है उसी तरह अपनी नसों में रून बहै यह चाहते हो तो अपना धिखीना सुबह को तड़के छोड़ो और परिदों की भांति नेहाल हो। कर ईश्वर का भजन करते हुए किरने को बाहर निकल जाओ। तब यह मालूम होगा कि मनुष्य इस जिन्दगी में कितना सुधी हो सकता है। यदि इस जन्म में मनुष्यों के उपकारका कोई बड़ा काम करना चाहे। यदि अकाल मृत्यु से बच कर बुढ़ापेमें सुख से ईश्वर का भजन करते हुए प्राण देना चाहे, तब प्रण करके नियम के साथ तड़के उठो, सूर्य निकलने के पहिले आलस से भरेहुये धिखीना को छोड़ो, घर की रुकी हवा से बाहर निकल जाओ। थोड़ी देर तक साफ और दगढी हवा खाओ। ईश्वर का नाम ले कर उत्साह के साथ काम में

लगा, तभी तुमको मालुम होगा कि तुम कितनी तरफ़ी करते हो और कितना काम कर डालते हो तुम अपना काम अपनी तरफ़ी और फुर्ती देस कर आश्चर्य में आ जाओगे ॥

—\*—  
ऋतु ॥

शरद ऋतु ।

शरदऋतु मघ मुनियेकी मलमे कुआर कार्तिक गिने गये हैं । सुश्रुत में भी इसी प्रकार पहिले ऋतु का वर्णन किया है पर दोनों के एकट्ठा होने और कोप करने और उनके मस के लिये दूमरे प्रकार ऋतु संज्ञा बांधी है जिसको मस वैद्यक शास्त्रानुयायियों ने भङ्गीकार किया है । ये भादों कुआर को वर्षा कहते हैं और कार्तिक अगहन को शरद ऋतु कहते हैं । यथार्थ में भी दोनों का एकट्ठा और कोप होना आदि इसी प्रकार की ऋतु बांधनेही से ठीक होता है ॥

यद्य ऋतु मनुष्यों के स्वास्थ्य और शरीर संशोधन में जैमालाभ दा-यक है सभी जानते हैं । इसी ऋतु में स्नेह, स्वेद, वसन, जुगाय और रक्त मोक्षण (फस्त लेना) उत्तम होता है । इस ऋतु में खाने पीने का समय अवश्य ठीक २ रखना चाहिये । आजकल प्रायः अग्नि मन्द और अजीर्ण द्वारा पेटादिक रोगोत्पन्न होने का सम्भव रहता है क्योंकि “वर्षामंभीयतेपित्त, शरत्काले प्रकुप्यति” वर्षा ऋतु का एकट्ठा हुआ पित्त, शरद ऋतु में कोप करना है । इसी हेतु शारङ्गधर ने विशेषकर १५ रोग अवश्य अल्पाहार करना लिखा है ॥

“कार्तिकस्य दिनान्यष्टौ चष्ठीवा ग्रहणस्य च । यमद्रुहा  
समाख्याता खल्पाहारी सुखीभवेत्” ॥

कार्तिक शुक्ल पक्ष की अष्टमी से अगहन की अष्टमी पर्यन्त यम दन्द्र्या मंशक दिन है इन दिनों में खल्पाहारी मनुष्य सुख से रहते हैं

इस ऋतु में पित्त सगन कारक आहार विहार करना उचित है । जैसा कि, मूंग, पुराना चावल, जंगली जानवरों का मांस, ऊव, मिश्री का सरसत, शहत, ताड़ी, गाय का दूध, आदि और जो २ समय के फलादिक हैं अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन करे । वृक्ष की छाया, कपूर और स्वेत चन्दन का लेप कुछ चन्द्रमा की मेषों, सुगन्धित पुष्पों की भाला, सफेद और हलका बस्त्र पहिरना, सुग्धादु गीतल तथा निर्मल जल पीना, आत्र फल प्रायः सभी जल निर्मल हो जाने के कारण पीना लिखा है । परन्तु आंसूद और नदी का जल जैसा गुण दायक होता है बयान करना स्या है । लेकिन यह नदी जिसका जल कहीं से रुका न हो न गाय भैंस और घोड़ा आदि पशु वहां धोये जाते हों । जहां मनुष्य स्नान न करता हो धोधी कपड़ा न धोता हो । और शहर गावों के नाशदानों की मीरियां जहां पर न लगी हों । यहां का जल पीना उत्तम है ॥

प्रायः जो नदी हिमालय से निकली हैं या जिनकी धारा बालू तथा पगरीली भूमि में तीव्र गति में बहती है उनका जल अति हलका, निर्मल और अमृत के समान होता है यह पूर्वकाल के सुश्रुतादि वैद्यों ने परीक्षा करके देखी है इभी कारण गंगा जी का महात्म यहां तक बढ़ गया है कि नाम लेने से पाप फलायमान होते हैं ॥

### ( आंसूद जल की विधि )

प्रातः काल एक घड़ा में जल भर कर घाम में रख दे और रात्रि को वैसाही रक्खा रहने दो दूसरे रोज़ छान कर पीने को रख ले याद उसी प्रकार घड़े को जल से भर कर फिर रख दो । यह जल सूर्य के किरणों से तथा और चन्द्रमा के किरणों से या अधी पतित ओस के अणु मात्तों से शीतल हुआ अमृत के समान हो जाता है । बात, पित्त, कफ, रक्त इनका सम कारक, बल वृद्धि कर, अरुचि क्षय, और मन्दाग्नि का नाशक एवं नेत्रों को अतिलाभ दायक है ॥

## निषेध ।

खटाई, गर्म चीज, क्षार, नदिरा, दही, अलसी, तेल, ज्यादा नमकीन वस्तु, दिन का सोना, घाम ब्रत करना, रात्रि जागरण, मैथुन । श्लोष और जो २ पित्त के बढ़ाने वाली वस्तु हैं भोजन करना नम वैद्यों ने शरद ऋतु में मना किया है इस मूल पर कार्तिक और अगहन के जितने पर्व हैं सब उत्तम भोजन विशिष्ट हैं । जैसे दियाली, अन्नकूट, श्रावृद्धितीया, रामपूर्णिमा, देव उठानी एकादशी को भी यहाँ सब प्रकार उत्तम फल फूल भोजन करते हैं । वर्षा रितु का उत्पन्न चीजें बिष्णु को पछिले सनपेण की जाती हैं । इसका कारण यही है कि वर्षा ऋतु में सब औषधियां निरस और बिदाह करने वाली रहती हैं वे शरद ऋतु में रस युक्त और बलवती हो जाती हैं और आजही काल की संग्रहीत औषधियां साल भर गुण दापक रहती हैं । यह भी एक प्रधान कारण है कि बनिषों के यहाँ की औषधियां कुसमय के संग्रहीत होने से रोगों पर अपना वयार्थ गुण नहीं दिखाती ॥



## हेमन्त ऋतु ।

शीत और माघ महीने को हेमन्त ऋतु कहते हैं । आज कल अग्नि की तीव्रता से भोजन पचावत पच कर उसका रस शीघ्र खिंच तमाम प्ररीर में पहुंच जाता है "तस्मात् स्निग्धं तदाहितम्" सु० इसने स्निग्ध पदार्थ अथात् घी दुग्ध आदि अधिक दहित करता है । यही कारण है जो इस ऋतु के राने पीने में प्रायः आयुर्वेद ग्रंथकारों ने स्निग्धी स्निग्ध लिया है और प्रत्यक्ष भी है कि कैसाहू निर्बल वर्षों न हो जाड़े में अचर्यही कुछ अधिक खाने लगता है । हम गिस्सन्देह कह सकते हैं कि इस ऋतु में जो मनुष्य मंथन सहित बनिष्ट घालुत्पादक द्रव्य भोजन करते हैं उनका बल एक वर्ष तक कदापि नहीं घटता । इस ऋतु के राने योग्य पाक ॥

## मूसली पाक ।

मूसली सफेद देहली की ५ गौ का दूध ४ सेर, घी पाव भर, चीनी २ सेर, जायफल, लौंग, केशर, सेण्ड, पीपर, मिर्च जावित्री ए सब छः २ मासा छोटी लायची, त्रिफला तज, तेजपात, जटामासी और नाग केशर ए छ जीर्ण एकरताला । केयांछ का बीज, धनियां और बंशलाचन दे। २ तोला, पहिले सब दवा को अलग २ फूट कपर छान कर ले । दूध को एक कड़ाही में डाल भौंटावे जय देखे कि तीन हिस्सा दूध जल गया एक हिस्सा बाकी है तब मूसली के चूर्ण को उसी में डाल सूख घोंट ले जय सूख गाढ़ा खोजा के मानिन्द हो जाय तब उसी में घी डाल खोवे को सूख भूजे जय सहक उठने लगे और रखा उसका बिपर जाय उतार ले । बाद चीनी की गाढ़ी घामनी बना उसी में खोया और सब दवा को मिला ऊपर से बादाम की गरी आधपाव पिस्ता आधपाव चांदी का चकं २० डाल आधी २ छंटाक की गोली बना ले प्रातः और सायंकाल एक गोली खा के ऊपर से पाव भर गौ के दूध पीने से अथशय प्रमेह आदिक रोग आराम हो बल वीर्य बढ़ता । वैद्यक शास्त्र, में हर एक पाके के गुण यहां तक लिखा है कि खाने वाला कामदेय से अधिक रूप और दृहस्पति से भी अधिक विद्वान हो जाय परञ्च परित्रा लेने से ज्ञात हुआ कि जिन तरे हर एक स्त्रियों में कवियों की तरंगे चुपों हैं उसी प्रकार यह भी है ॥

## रतिवल्लभाख्य दृहत्पूंगीपाक ॥

दक्षिणी चिकनी सुपारी डेढ़पाव, गौ का दूध ५ सेर, चिनी टाईसेर, घी पाव भर, छोटी पीपर, जायफल, जावित्री, तेजपात, शोंठ, लौंग, केशर, गजपीपर, कचूर, मेथी, छ २ मासा । छोटी लायची, गुलसकरी, मरियारा के जड़ का छान, दालचीनी, खस, सुगन्धबाला, मेथा, त्रिफला, बंशलाचन, शतावर, केयांछ का बीज, मुनक्का, तालमखाना, बड़ा गोखुरू खुशारा, तीसुर, धनियां, सूखा कसेरू और सिद्धाड़ा, मुलेठी, धरै, जटा-



मासी, सौंफ, सफेद मूसली, असगन्ध, मिर्च, धिरींजी, सेनर का बीज, क-  
मलगट्टे की गरी, स्वेत चन्दन, और लाल चन्दन, ए सब एक एक तोला  
कस्तूरी, शुद्ध कपूर, अनवेधी मोती, गुलाब के अर्क की चोटी चार रसामा,  
बदान की गरी और पिस्ता बाघ २ पाय, चांदी का वर्क २० सोनेका वर्क  
५ सब दवाइयों को अलग २ कूट कपरदान कर पूर्वोक्त रीति से पाक  
बना सभी में सब औषध हाल आधी २ छँटाक का मोदक बना दोनों म  
नय एक २ लड्डू खा ऊपर से पावपर दूध मिश्री मिला के पिये । कुछ  
दिन बराबर इसके खाने से बीर्य्य अधिक बलवान हो जायत्य नष्ट हो  
जाता है । और जिन मनुष्यों का बीर्य्य प्रमत्त में न रुकता हो तो इतनी  
औषध और मिला दे । अकरकरहा १ तोला, शमुद्रशोष, पोस्ता का दाना  
और धुनी हुई भांग ४ २ माषा दूध का सोधा हुआ धतूर का बीज  
४ माषा ॥

### हेमन्तऋतु का पथ्य ॥

घी, दूध, मांस, उद, मिश्री, ऊख, मद्य (बलकारक अंके) और रित  
के फल इत्यादि प्रकृत के अनुसार खावे शरीर में तैल गर्दन, कमरत स्त्री  
प्रसङ्ग, अग्नि का सेवन पटे मकान में सोना गर्म जल का पीना इत्यादि  
इस रितु में वैद्यों ने उत्तम लिखा है तथापि पाठक गणको इस बात पर  
अपश्य प्रतिक्षण दक्षचित्त रहना चाहिये कि कौन भी बातें हमारे लिये  
बलप्रद हैं और कौन भी नहीं, यथा स्त्री प्रसङ्ग चाहे जो रित हो प्रति-  
दिन करना हांथी मरीखे बलवान को भी नटिया मसान कर सुदुर्दों के  
कोटि में कर देता है । यदि ऐसाही अति कामी हो तो इस रितु में आ  
ठवें रोज प्रसंग कर सक्ता है नहीं तो चही वेदानुसार मास २ में उत्तम है  
"आगकातापना" चाहे जाड़ासेजाड़ा क्यों न पड़ताहो पित्तप्रकृत वाला और  
जिसको खून की बिमारी हो कदापि न चाहिये । अतिकाल तक घागमें  
रहना किमीरित में अच्छा नहीं है क्योंकि "आतपस्वेदमूर्च्छासकपित्तवृणा  
हृमःभ्रमः, दाहंविप्ररक्तनाकुप्येदेतांखायाव्यपोहति" आदा घाग में रहने  
से पसीना शिर में गर्मी रक्त पित्त पियान ओंकाई पुनरी शरीर में जलन

और चेहरे का रंग काला पड़ जाता है, इन सबों की शान्ति छाया से होती है ॥



### वसन्त ऋतु ॥

फाल्गुण और चैत्र महीने को वसन्त कहते हैं हेमन्त ऋतु का सञ्चित कफ आगकल कोप करता है । इस ऋतु में कसरत करना, शाम सबेरे हवा खाना, चिनी का सरयत आदि शीतल पदार्थों का सेवन करना बहुत फायदा करता है । परन्तु सबसे बढ़कर इस ऋतु में कै करना और जुलाब लेना उत्तम लिखा है और देखा भी गया है कि अर्द्धाब्द जुलाब होने से शरीर हलकी और चित्त प्रसन्न हो जाता है । पर अंटेकरपच्चू किसी की बनाई हुई कड़ी जुलाब ले लेना विषकुल वाहियात है । कारण यह है कि जुलाब का पच जाना या तादाद से जादा दस्त का आ जाना शरीर को नाश कर डालता है । चरक, सुश्रुत और यागभट्ट इनका मत यह है कि बिना स्नेह घी आदि चिकनी चीज पी के नाड़ियों के मल को फुलाना (स्वेद) फूले हुये नाड़ियों के मल को पसीना के द्वारा बाहर निकलना (अमन) पित्त को ऊर्ध्व मार्ग से गिराना (जुलाब लेना उत्तम नहीं है । यूनानी हिकमत में लिखा है कि घनैर मुञ्जिस (दोष पकाए नये) के मुस्तहल न लेना चाहिये । डाकूरी में इसका कुल विचारही नहीं है, इसी से डाकूरी जुलाब यथार्थ गुण नहीं करता इस लिये हम आप लोगों के उपकारार्थ दो चार साधारण २ जुलाब लिखे देते हैं कि जिनमें सेवाय फायदा के हानि नहीं है ॥

### मुञ्जिस हकीमी ॥

खीरा ककड़ी का बीज १॥ तोला, गुणधनप्ला, गुणनीलोपर, गुलाब का फूल और काहू ये सब एक २ तोला, मुलेठी ८ मासा, उन्नाय १४दाना आलूबखारा २० दाना, लसेड़ा २० दाना मुनक्का १५ दाना, सब दवा को

तब, एमिड डाल शीघ्रही पी जाय । सोडा एमिड अंगरेजी दवा राना में तो एक के आठ देना पड़ता है पर मौदागरे के चढ़ा सोडा एक पीण्ड (आधसेर) ≡ का और टाटारिक एसिड ४ औंस (आधपाव) ≡ का मिलता है । एवं शीतल जल या बर्फ का पानी फायदेमन्द है, बर्फ का गुण प्रथम अङ्क में लिख चुके हैं बहुत से लोग जानते हैं कि बर्फ की ताभीर गर्म है अथ-गरम है तो, लोग जाड़े में क्यों नहीं पीते और शीत की बिमारियों में क्यों नुकसान करता है जानना चाहिये कि जो शीतल परिशुत जल (फिल्टर वाटर) का गुण है यही बर्फ का, रहा यह कि उपादा टण्डक की बजे से जल की अपेक्षा बर्फ का बिपाक किञ्चित अधिक गरम है ॥

दिन को तःखाने में या पढे हुये सफाई में और रात्रि को शोच में शयन करना गुण दायक है । दिन को शयन करना सेवाय इस ऋतु के और ऋतों में धर्जित है ॥

सर्व्वर्त्तुपुट्टिवास्वापः प्रतिसिद्धोऽन्यत्रशीघ्रात् प्रतियिहेष्व  
पितुं बालुवृद्धस्त्रीकर्पितक्षत क्षीणमद्यनित्ययानवाहनध्वक्स्म  
परिग्रान्तानामभुक्तावेतां मेदःस्निदकफरसरक्तक्षीणानाम जौर्ण  
नांचमुहूर्तं ( घटिकाद्वयं ) दिवास्वपनमप्रतिसिद्धम् सु० गा  
रीरक अ० ४ ॥

निषेध में भी बालक, बृद्ध, स्त्री क्लेशित कोड़ा से पीड़ित, घातुक्षीण बाला शराधी, पेहे ह्यापी आदि की मयारी में या रास्ते का थका, भूखा, मेद पसीना रस और रक्त करके क्षीण और जिसे अजीर्ण मानना रहता है तो वे लोग दिन में दो चढ़ी से सकते हैं ॥

दिवास्वापः प्रकोपाच्च कासस्वासेप्रतिश्यामशिरोगौरवाङ्ग  
मर्हाऽरौचकाञ्चराम्निदौर्वल्यानिभवन्ति ॥

दिन के सोने से मनुष्य को खांसी, खास, जुकाम शिर में भारीपन अंग में दर्द, अरुचि, उबर और शरीर दुर्बल हो जाता है ॥

रात्रावपिजागरितवतां वातपित्तनिमित्तास्ताएवोद्भवा  
भवन्ति तस्मान्नजागृत्याद्रात्रौ दिवास्वप्नञ्चवर्जयेत् ॥

वही रोग रात के जागने से घात पित्त करके होता है इसलिये दिन के सोवना और रात के जागना वर्जित है—ऐसाही यदि अति जरूरत रात के जागने की पड़े तो ( रात्रावपिजागरितवतांजागरितकालादुर्द्धमिप्यतेदिवास्वप्नः ) चाहिये कि जितना कालतक रातको जागे उसका आधा दिन को शयन करे ॥

यह भी सब पर विदित है कि और ऋतों की अपेक्षा इस ऋतु में चण्ड प्रकृत वाले को अधिक श्लेश मिलता है अतएव उन्हीं के कल्याणार्थ कुछ औषध लिखे देते हैं ॥

छ; मासा बिहीदाने को डेढ़पाव जल में एक मृत्तिका पात्र में भिजा कर रात को ओस में रखदे, सबेरे सूख मलकर लुभाव निकाल लेव याद उसमें एक तोला मिथ्री डाल पहिले एक पा दो आंवले का मुरझा खा कर ऊपर से वही बिहीदाने का सरघत पी जाय । इसी प्रकार सबेरे भिजो कर किसी ठण्डे मकान में रखदे शाम को उक्त प्रकार सेवन करे । इसी प्रकार दो महीने बराबर पीने से अन्तस दाह, हौलदिल, पुगरी, समलघायु, मिरगी और बातों का अधिक विस्मृत होना जाता रहता है ॥

### अन्यच ।

खीरा ककड़ी का बीज, धनियां, काहू का बीज, कुलफा, कासनी, गुलाम का फूल और सेवती का फूल दो २ तोला खस सफेद चन्दन का बुरादा कमल गह्वे की गरी, सौंफ़ मिर्च एक २ तोला खोटी लामची छ मासा सब को अथकचरा कर दो दो तोले की मात्रा बना ले एक मात्रा को पावभर जलमें रात को भिजो सबेरे सूख मल के खान कर दो तोला

चिनी छोड़ पी जाय, इसी प्रकार दानों समय पीने से अधिक फायदा करता है ॥

### पेटे का मुरब्बा ।

पेटे का गूदा दो सेर चीनी दो सेर, पेटे के टुकड़े २ बना कर बांस की गुदनी से गोद कर चूने के पानी में घड़ी भर डाल रखें फिर सफा पानी से धो कर किसी ताँबे के बरतन में थोड़े से पानी में डाल कर जोस दे जब पेठा जाधा गलजाय उतार पानी से निचोड़ ठंडा कर लें । फिर घूरे की घासनी पको कर उसमें उन टुकड़ों को डालकर थोड़ी देर तक जोस दे जब शीरा उनमें भरजाय उतार कर ठंडा कर लें । जब देखे शीरा बहुत पतला हो गया है तो उसमें से पेटे को निकाल घासनी को थोड़ी और गाढ़ कर उसमें फिर पेटे को डाल देय बाद इसके सफेद जीरा, धनियां, तेजपात इलायची छोटी, मिर्च, बंभलोचन दो दो तोला और चांदी के बर्क २० सबों को चूर्ण कर मिला अमृतधान में रख दे । इसको शाम सवेरे खाने से रक्त पित्त ज्वर, ज्वरी प्यासीस्वास, कामादि रोग छूट जाते हैं विशेष कर धातुहीन वाले को अधिक फायदा करता है ॥

ईश्वर ने मनुष्य के आरोग्य रहने के हेतु समय २ पर अनेक प्रकार के फलफलादिक उत्पन्न किया है चाहिये कि मनुष्य अपने मिजाज के मुताबिक देय अल्पश्रय थोड़ा बहुत रोज २ फलों को खाया करे इसलिये हम समय के फलों का भी कुछ गुण लिखे देते हैं

### हिनवाना ।

इसमें कुछ निमक का भी अंश है सुख बीजवाले में कृष्ण बीजवाला हिनवाना उत्तम होता है, ( गुण ) दूबरे दरजे का शीतल है इसका विपाक गर्म है धातु को क्षीण करता है और पित्त बहक एवं कफ वायु का नाशक है और कफ खांसी वाले को अधिक फायदा करता है ॥

## खरबूजा ।

चतुर्थ श्रेणी में ठण्डा है, ( गुण ) वायु पित्त का नाशक एवं दिशा पेशाब साफ लाने वाला है विशेष कर बुझाक वाले को अधिक फ़ायदा करता है ॥

## बेल ।

विशेष कर ग्रहणी और आमशूल को नाश करता है लेकिन बड़े बेल की अपेक्षा छोटा बेल किञ्चित गर्म है एलका और शीघ्र पचजाता है लेकिन स्वाद में फट्टु है ॥

## फालसा ।

द्वितीय दर्जे का शीतल है स्वाद में कषाय और अम्ल है परञ्च पकने पर मीठा हो जाता है और खाने में भी मीठा ही फालसा गुण दायक होता है ( गुण ) दिल का घड़कना चुमरी पियास अन्तर्दाह रुधिर की गरमी, गरम ज्वर ( वात पित्त ज्वर ) घातु क्षय इन रोगों को आराम करता है विशेष कर चीनी के साथ इसका शरबत बड़ा फायदा करता है ॥

## प्राचट ऋतु

आपाढ़ और श्रायण महीने को प्राचट् ऋतु कहते हैं ग्रीष्म ऋतु का संघय ( संग्रह ) वायु इस ऋतु में कोप करता है । इसलिये बरज कल वायु शमनकारी बाहारादि करने से वायु बलहीन हो जाता है । घी, दूध, इत्यादि भोजन एवं वदन में मही लगा के कसरत करना अधिक फ़ायदा करता है ॥

## आम ।

इस ऋतु में ईश्वर ने मनुष्य के खाने योग्य एक उत्तम फल आम का

ऐसा उत्पन्न किया है जिसका प्रमंशा करना व्यर्थ है हम तो जानते हैं स्वर्ग में भी इससे बढ़कर फल न होता होगा १ वैद्यक में आम के गुण अधिक लिखे हैं, इसमें कुछ संदेह नहीं है कि आम के अर्थात् में अनेक प्रकार के गुण भरे हैं ॥

### आम का फूल ।

इसे छाया में सुखा चूर्ण कर बराबर की मिश्री मिला ६ मासा के अंदाज दोनों समय जल के साथ खाने से अतीसार, प्रमेह कफ पित्त, अरुचि रुधिर एवं दृष्टि रोग आराम होता है । परन्तु केवल वायु दृष्टि रोगी को कम फायदा करता है ॥

### आम की गुठली ।

पके आम की गुठली के भीतर की गरी का चूर्ण, खांड या दही के साथ खाने से बमन अतीसार और पेट का दाह हर लेता है ॥

### आम का पत्ता ।

आम के मुलायम नमीन पत्ते के चूर्ण से कफ पित्त का नाश होता है, दूधरे हरणक संगल में इसका बन्धनवार बना कर चरमं बांधने से गृह की शोभा और देवता तक प्रसन्न होते हैं ॥

### आम पेशी अर्थात् अमचूर ।

इसका स्वाद खटा और कसायला है पर खाने से दस्त राफ और कफ वातको नाश करता है ॥

### आम की खटाई ।

यद्यपि खाने से कुछ घातु में विकार पहुंचाती है, पर छगाने से खजुली विशेष कर तकरी के मूत्र से या और कोई फदकीले जानवर के छु जाने से शरीर में जायला सा पड़ जाता है यह शीघ्र ही आराम होता है ॥

## लगाने की तरकीब ।

आंग की पुरानी खटाई २ तोला ढांक के पत्ते की द्विपुनी १ तोला मिर्च १० दाना सबको महीन पानी में पीस बाद सी पानी का धोया हुआ घी छटांक घी में फेंट दोनों समय लगावे और एक मरतवे रोज नाँव के पानी से धो डाला करै ॥

## आंम का छाल ।

आंम का अन्तर छाल २ तोला कुचल कर पावभर जल में रात को भिगा ओस में रखदे सबेरे मलकर खान २ मासा शहद डाल ७ रोज पीने से रक्त पित्त अर्थात् मुख से या दस्त से या दोनों रास्ते से पित्त के साथ छेहू का गिरना अवश्य जाता रहता है ॥

## अम्रातक अर्थात् अमावट ।

इसे इस तौर पर बनाते हैं कि पके आंम के रसका किसी काष्ठ या पत्थल आदि चिकने पात्र पर फैला के घाम में सुखावें, ऐसे कई बार सुखा २ के जमाता जाय उसीको अमावट कहते हैं । अमावट को लोग कई तरह से खाते हैं, इसका गुण, रचक रुचिकारी, हलका और पाचन है एवं छर्दि पिपासा और वात पित्त का हरने वाला है ॥

## कच्चा आम ।

कच्चा आम बहुत सदा रुखा त्रिदोष और रुधिर में विकार उत्पन्न करने वाला है इससे कच्चा आम खाना अच्छा नहीं, लेकिन इसी आम से जब दूसरा पदार्थ बनता है- तो उसका गुण औरही हो जाता है जैसे आचार आदि । आम का आचार तेलहा और नुनहा एवं आम का मुरब्बा और आम का सिरका यह सब लोग बना सकते हैं और इन चीजों का खाना भोजन के मध्य में उत्तम होता है खाली पेट आचार खाना अच्छा नहीं है ॥



## सास ।

यह अंगरेजी आचार है और अंगरेजों में इसका खर्च अधिक रहता है, पाने की तरकीब यह है कि हरे आम की छिली हुई फांकी आधसेर तक ५। चिनी ५। = डीला अदरख ५। किस्मिस ५। लाल मिरचा बांधी उटांक निखालिस मिरका ५।। मिरके में सब चीज को घोंस कर किसी बरतन में भर मुख बन्द कर १५ या २० रोज तक घाम में रखे फिर उस को निचोड़ कपड़े में खाने दोतल में भरले और जब किसी खानेको मजेदार करना हो तो उसमें से दस पांच बूंद डाल दे ॥

## आम की जेली ।

तरकीब यह है कि दो सेर कच्चे आमों को डील के सहान कतरले डेढ़ सेर पानी में इतना पकावे कि यह सूख गलजाय जब देखे कि आधा पानी रह गया है उतार ले और धीले रंग के फलालेन के कपड़ेमें जिम प्रकार कुसुम बुआया जाता है उसी प्रकार खाने वाद टपकाये हुये अर्क के बराबर मिश्री या चिनी डाल घासनी पकाले और चिनी के बरतन या धीड़े मुख की दोतल में भर कर जमावे यह यह मजेदार चीज है खाने से मन प्रसन्न हो जाता है ॥

## आम की चटनी ।

कच्चा आम डीला हुआ एक सेर शक्कर १ सेर तामक ५। लाल मिर्चा ५। अदरख ५। सूखा सुदीना ५। मिरका ५। सब चीजों को मिरका में महीन पीस किसी आचार के बरतन में पांच ब रोज घाम में रखदे बाद खाने के काम में लावे ।

## आम का पाक ।

पपके और सीठे आम का रस १६ सेर मिश्री ४ सेर ची १ सेर तीनों को एक फलहेदार डेग में डाल चूल्हे पर चढ़ाय मन्दागि से पकावे जब

सूयं गाढ़ी चासनी हो जाय तब उतार शीतल कर उसमें यह दवा डाले  
निर्घ, धनिया, सफेद जीरा, तेजपात, दालचिनी, नागकेशर, छोटी ला-  
यची, वंसलोचन, अकरकरहा, यह सब दो २ तोला छोटी पीपर, लौंग,  
और जायफल यह सब एक २ तोला केशर ६ मासा कस्तूरी १ मासा  
चांदी का बकं ३० ताब सहत ५। सब दवा को पीस उक्त चासनी में पि-  
लाप अमृतघान में रसदे । एक छटांक सबेरे और एक छटांक शाम को  
खा, के ऊपर से दूध पीने से शरीर पुष्ट और स्वास कास आदि आराम  
होता है पक्का आम साके ऊपर से दूध पीना अति गुणकर होता है ॥

### जल ।

मनुष्य, पशु पक्षी कीट पतङ्गादि सभी जीव पानी की इच्छा रखते  
हैं और ईश्वर रचित द्रव्यों में से जल यह वस्तु है कि जिसके बिना क्षण  
भर जिन्दगानी नहीं रह सकती इसी तरह जीव से अन्य जड़ पदार्थ वृक्ष  
लता गुलम, तृणादि यह भी जल के बिना व्याकुल हो जाते हैं और जल  
न पाने से शीघ्रही समूल नष्ट हो जाते हैं, इसी से वैद्यक में जल का प्र  
धानं नाग जीवन रक्खा है "पानीयं प्राणिनां प्राणविश्वमेव घतन्मयम्" आ  
हार के बिना तो कुछ काल प्राण रखा हो सकती है परन्तु जल के बिना  
जीवन रखा बड़ीही कठिन है । यह तो जल का अभाव हुआ, जल के  
प्राप्ति समय में भी यदि कुटित या विष दूषित जल मिला तो भी जी-  
वन का बिनाशही समकिये, क्योंकि ऋतु के विपर्यय अर्थात् शीतकाल में  
गर्मी और वर्षा काल में शीत होने से एवं अन्य २ कारणों से भी जल  
मिगड़ जाते हैं और बगड़े जल के व्यवहार से शरीर में अनेक रोग हो  
जाते हैं ॥

यह तो सभी जानते हैं कि भूख मारने की अपेक्षा प्यास मारना  
कठिन काम है । पर क्यों कठिन है और प्यास क्यों लगती है ? इसका  
कारण यह है कि शरीर में जो चैतन्यता है यह रुधिर से है और वही  
रुधिर निरन्तर सम्पूर्ण शरीर की शिरा ( भेईन ) और मूत्र २ स्रावुओं

( नभं ) में दौरा करता है सो इमी गति के हेतु में रुधिर का शरीर  
 अंश कम हो जाने से घन हो जाता है तब उस गति को समंजस करने  
 के लिये रुधिर में फिर जलांश बढ़ाना चाहिये, यम इमी क्रिया से रक्त  
 में सुमती पहुंच कर मनुष्य को प्यास मालुम होती है । यह तो सिर्फ  
 स्वाभाविक प्यास है इस्मे भिन्न और २ कारणों से भी रक्त का जलांश  
 कम होने से तृष्णा लगती है । यथा, धूंक के अधिक गिरने से पसीना  
 निकलने रोने और आंसू बहाने से एवं गर्म और अधिक सार पदार्थ के  
 खाने से इसी तरह सोच, क्रोध, यिन्ता, कसरत और रास्ता चलने से  
 जल पीने की इच्छा होती है ॥

सच्ची प्यास लगने पर पानी पीना अच्छा है परन्तु बहुत सी जगह  
 अपय्य भी है जैसे रात्रि में उठि २ के पानी पीना नजला पैदा करता  
 है, फल आदि जैसे खरूंगा, तरबूज नामक खीरा जल इत्यादि अनेक  
 प्रकार के ऐसे फल हैं जिन्हें खाकर ऊपर से जल पी लेना खांसी और  
 अजीर्ण रोग होने का डर है और बच्चों के लिये तो बहुत ही मना है,  
 इसी तरह मैथुन और कसरत करने के उपरांत, बहुत मेहनत या रास्ते  
 का थका हो तो पानी न पी ले क्योंकि इस्से नाड़ियां निस्तेज हो जा-  
 ती हैं । इगने हिकमत की किताब में यह लिखा देखा है, मनुष्य को  
 उचित है कि मैथुन (स्त्री प्रसंग) के उपरांत जल पी लिया करे, वीर्य  
 गानिन्द ची के है और तमाम जिस्स में रहता है वरत मैथुन के गर्माहट  
 पाकर वह पतला और चलायमान हो जाता है सो जल पी लेने से फिर  
 वह गाढ़ा और ठंडा हो जाता है । पाठकगण, वैद्यक शास्त्र में मैथुन के  
 उपरांत जल पीना अति हानि दायक ठिकरा है परीक्षा से यहां तक  
 सिद्ध हुआ है कि यदि मैथुन के तत्क्षण उपस्थि को जलसे न धोकर रु-  
 माल से पोछ लिया करे तो उत्तम है कारण यह है कि उस समय वह  
 स्थान अति उष्ण रहता है इस्से जल शीघ्रही भीतरी नसें में जाय उसे  
 निर्बल और निस्तेज कर देता है मैथुन के उपरांत क्या २ करना चाहिये  
 उसे मैथुन के प्रसंग में लिखेंगे ॥

अति लुधा में बिना कुछ भोजन के जल पी लेना अपय्य है अर्थात्

अग्निमन्द हो के उदर रोग होता है । एक दिन में कई जगह का जल न पीना चाहिये जिस कुये या नदी या तालाब में छोटे २ कीड़े पड़ गये हों या झूड़ा करकट के गिरने से पानी सड़ गया हो या जिस कुये के समीप सड़ास हो तो उसमें का पानी न पीना चाहिये ॥

आज कल के रोगों के देखने से मालुम होता है कि मनुष्यों को स्वच्छ जल पीने को नहीं मिलता है सैकड़ों प्रकार के रोग मनुष्यों भ्रष्ट जल पान और दुष्ट वायु के सेवन से होता है, सब से उत्तम जल नदी का है सो नदी के जल पीने वाले भी प्रायः बिगारही रहते हैं, इसका भी सबब यही है, एक तो नदी और तालाबों में अनेक अस्वास्थ्य कर द्रव्यों के साथ जल ऊपर से बहकर आ मिलता है, दूसरे नदियों में गलीज कूड़ा और मुर्द, अघजले मुर्द, और जले हुये मुर्दों की राख हा-ली जाती है, तीसरे जिस घाट से पानी पीने के लिये लेते हैं यहाँ या उसके थोड़े ही दूर पर लोग नहाने धोते औ जानवरों को गहलाते हैं और धोबी कपड़े धोते हैं, चौथे आज कल प्रायः उन घाटों में जहाँ कि लोग नहाने धोते और जल पीते हैं तमाम शहरों के नाशदानों का पानी बह कर जाता है । इसी तरह अनेक विघ्नों से कुएँ का भी पानी बिगड़ जाता है, जैसे कुयों के समीप सड़ास और मारियों का होना पानी को गन्दा करता है, कुवों में मुड़ेर का न होना जिस्से बरसात का मैला पानी चला जाता है, बाजे २ कुवों के पास जानवरों का पानी पिळाने और सहक छिड़कने के हौद बने हैं उन हौदों का गन्दा पानी सूक्ष्म २ सूराखों से होकर कुयों में रसा करता है; फिर कुयों का मुख खुले रहने से पास के श्शकों के पत्ते उड़ कर उसमें गिरते हैं और मूस चुइस छिपकिली वगैरह जानवर भी गिर पड़ते हैं फिर अन्तर कुवों की जगत पर लोग नहाने और गलीज कपड़ा ऐसे ढंग से पछाहते हैं कि तमाम छींटा झुएँ में जाता है, उक्त सब कारणों से कुयों का पानी गन्दा हो जाता है ॥

ध्यान देकर देखने और परीक्षा-लेनेमें ज्ञात हुआ है कि भारत वर्ष में यात पैत्तिक ज्वर, बिभूचिका, रक्त आमातिसार, श्लेष्म (हाथीपांव)

और अपवृद्धि (पीते का मूजन) गजला, जादि और भी बहुत से रोग हैं जो विशेष कर जलही के दोष से होते हैं ॥

भोजन के गध्य में प्यास लगने पर घूंट दो घूंट जल पी लेना अच्छा है परन्तु श्लेष्म प्रकृत वाले को जहां तक हो सके भोजन के अन्त में जल पीना उत्तम है । भोजन में एक रस के अन्त और दूसरे के प्रवेशमें (जैसे नींटा खाने के बाद नमकीन पदार्थ का खाना) पूर्व रस को जिह्वा से छुड़ाने के हेतु यदि लृप्या हो तो एक घूंट जल पी ले नहीं तो सिर्फ जल से कुंजा कर डाले क्योंकि "विशुद्धरसनेतस्मै रोचतेऽन्नमपूर्ववत्" इस तरह करने से जिह्वा शुद्ध रहती है और जो २ पदार्थ खाये जाते हैं उनका यथार्थ स्वाद मिलता है । जो लोग भोजन के सङ्ग अधिक जल पीते हैं उनका पेट बड़ जाता है और अग्नि मन्द हो जाती है । भोजन के बीच में थोड़ा जल पीने से अग्नि तेज होती है अन्त में पीनेसे अंग पुष्ट और ताकतवर होता है । भोजनके कुछ देर बाद थारभ्यार थोड़ा २ जल पीने से शीघ्रही आहार पच जाता है ॥

### जलका नाम ।

जल, पानी, सलिल, नीर, फीलाज, अंबु, आप, वार, वारि, ताय, पय, उदक, जीवन, अमृत और घनरस यह पंद्रह जल के मुख्य नाम हैं "यथानाम तथागुणः" जैसा नाम है वैसाही जल में गुण भी हैं ॥

### सर्वसाधारण जलका गुण ।

धुरी अंग आंश के सामने अधियारा का होना, प्यास, तंद्रा (आंसू प्रवाहना) बर्न अजीर्ण और अति निद्रा को दूर करता है एवं थल को बढ़ाता है तर्पण, हृदय को हित और रस का कारण तथा अमृत के समान जीवन है ॥

## तालाव के जलका गुण ।



उत्तम भूमि में हमेशा जिसमें जल बना रहता है वह तड़ाग (तालाव) कहलाता है । तालाव का जल स्वादु में कषायल पाक में कहुआ और वायु का बढ़ाने वाला एवं मूत्र और बिष्टा के बांधने वाला होता है और रक्त पित्त को नाश करता है । यहीं कारण है कि जो तालावके जल पीने से अजीर्ण हो जाता है और स्नान करने से शरीर खजुवाने लगता है, सम्भव है कि यदि बह्मदेश वाले यदन में तेल दरदी मल के स्नान न करें और अधिक तेल न खांम तो उनका जीवन ही कठिन हो जाय क्योंकि यहां तालावही में लोग नहाते धोते और वही का जल पीते हैं याद रखना चाहिये कि चापत किसी समय पर सेवाय तालाव के दूसरा जल पीने को न मिले तो अवश्य औषधियों के द्वारा जल शुद्ध कर लेना उचित है ॥

## बावली ।

पत्थरों वा इंटों की सीढ़ियां जिस घीड़े कुये में नीचे तक बनाई जाती है उसको बापी (बावली) कहते हैं जो बावली का जल खारा होता है तो पित्त को वृद्धि कर शीत वायु को नाश करता है और सी-टां होने से कफ-कृत और वायु पित्त का नाशक होता है ॥

## कुआं ।

जो जमीन में सफड़ा भोल और गहिरा खोदा जाय जिस में की पानी निकल आए चाहे पक्का हो या कच्चा उसे कूप ( कुआं ) कहते हैं । जो कुयें का जल सीटा हो तो हलका और त्रिदोष नाशक एवं अग्नि और बल का वृद्धि करने वाला और मनुष्यों को अति हितकारी होता है और खारा होने से अग्नि मन्दादि अनेक रोग का करने वाला होता है ॥

घुमरी, जी मघलाना, धुमां सा डकार आमा, यमन और-रक्त पित्त इन रोगों में जरूर ठंडा जल पिलाने से उपकार होता है ॥

### शीतल जलका निषेध ।

पशुली की दर्द में शीत युक्त वायु रोग में गूठे के दर्द में, ह्रियकी में, उदर शोथ और नवीन उवर में शीतल जल न देना चाहिये ॥

### अति जल पीनेका निषेध ।

अरुचि जुकाम सन्दाग्नि कौढ़ मधु प्रमेह ( जिस मूत्र पर मच्छी वै ठती हैं ) कोड़ा, उदर रोग उवर और नेत्र रोग इन रोगों में जल बहुत ही थोड़ा २ पीना योग्य है और बहुत जल एक बारगी पीलेता तो किसी अवस्था में सेवाय हानि के लाभदायक नहीं होता, क्योंकि ज्यादा निकृदार जल के पीने से अन्न का परिपाक नहीं होता और जब अन्न ही नहीं पचा तो विमारी न पचनेमें या कोई नवीन विमारी खड़ी होजाने में क्या असम्भव है । मनुष्य को उचित है कि अठराग्नि के बढ़ाने के लिये थोड़ा २ जल बारम्बार पीये । प्रायः देखने में आया है कि अज्ञान लोग रोगियों को चित्त छेदे में भी जल पिला देते हैं सोचना चाहिये क्योंकि "उत्तानशयनेपेयंकाश्यं सन्दाग्निदे। परुत् । आसदक्षिणपार्श्वेनपिबेतीयं सुखा बहं" उतान सोये जल पीने से दुर्बलता और सन्दाग्नि आदि दोष बढ़ता है घामे और दहिने करवट जल पीने से आरोग्य लाभ होता है ॥



### अद्भुत ।

बहुत सी तरकीबें ऐसी हैं जिनकी करामात से एक प्रकार का तिलस्स जान पड़ता है । पर तिनका ओंट पहाड़ही है जब तक उब तत्व को लोग सम्पूर्ण रूप से नहीं जानते तब तक उन्हें अवस्था मालुम होता है, जहां जानगये फिर क्या मही कहेंगे बाह तिनका ओंट पहाड़ ॥

## पानी से सूखा बालू निकालना ।

साफ किया हुआ बालू या भाभूजे का बालू या पत्थल को कूट क-पड़ छान कर तीनपाय लेवे । एक छटांक मेंम को गला उसी बालू में डाल ऐसा मल दे कि मोम घिलकुन न मालुम हो, बाद किसी बरतनमें भर कर रखदे । जय किसी को दिखलाना हो तो एक चौड़े मुह का ब-रतन ( जिसमें बन्धी मुट्टी अंच्डी तरह आ जा सके ) ले पानी भर दे । यहा पर घोड़ी चालाकी चाहिये बालू को मुट्टीमें भर मुट्टीको उक्त पानी के अन्दर ले जाय चुपचाप बालू को रखदे कि बालू की पिण्डी न फूटने पावे ऊपर से पानी को गन्दलो दे ताकि लीगों को मालुम हो जाय कि बालू पानी में मिल गया तब हांप को पानी से निकाल सबको देखा दे फिर पानी में हांप डाल आहिस्ते से उसी बालू की पिण्डी उठा कर या हर लाय सबके सामने मुट्टी के एक कोने से बालू झरझरा दे ॥

## बिना आग के आग बल उठे ।

कौरो पुटास और चिनी दोनों बराबर ले एक में मिला दे किसी कागदार सीसी में रखदे, जय किसीको दिखलाना हो तो घोड़ी सी वही दवा निकाल उसमें किसी दङ्ग से एक बिन्दु गन्धक का तेजाब डाल दे, बस तेजाब के डालतेही बल उठेगा ॥

## अट्टप्राक्षर ।

अगर चूने से सफेद कागज पर लिख कर सुखावे तो कुछ न पढ़ा जायगा, परन्तु जल में डालने से सब अक्षर सफेद देख पड़ेगे ॥

## दूसरा ।

पूर्वोक्त प्रकार दूध से लिख कर सुखावे, पानीमें डालनेसे नीले रंग के अक्षर देखने लगेगे ॥



### तीसरा ।

नीसादर, नीबू या पिपाज या लहसुन के रससे सफेद कागज पर लिख कर सुखा ले, आंघ दिखाने से सुख रंग के अक्षर देख पड़ेंगे ॥

### चौथा ।

मदार के दूध से हथेली में लिख कर सुखा ले कुछ भी न मालुम होगा, जब दिखलाना ही तो थोड़ी सी राख लेकर हांघ में मल ले सब काले रंग के अक्षर देखने लगेंगे ॥

### मोम की बत्ती आपी आप वालने की विधि ।

एक मोमबत्ती के सिरे पर फास्फोरस ( यह एक दवा है हड्डियों के खार से बनती है ) मद्य में घिस कर लगादो फिर रख छोड़ो देखाने के समय एक बिल्ली की छड़ी एक तरफसे गरम कर बत्ती के ऊपर मारो और कहो जल उठ तो वह बत्ती खुद-ब-खुद जल उठेगी ॥

बिल्ली की छड़ी में यह सुधीता है कि वह गरम भई मालुम नहीं होती है ॥

### वरतनपर चांदीचढ़ानेकी सहज विधि ।

चांदी का बर्त ५ भूजी फिटकिरी १५ रत्ती नीसादर १५ रत्ती सेंधा नमक १५ रत्ती तीनों को खरल कर किसी शीशी में रख दे जिस वरतन पर चांदी चढ़ाना हो उसे सूख मांज कर चमका ले याद दही पीहर से सूख मल दे, पर यह कलई कच्ची है ॥

## पीतल तांबा आदि वस्तुओंके साफकरनेकी रीति ।

छोटी २ चीजें जैसा कि घड़ी के पुरजे चैन और वस्तुहों उन्हें चिमटी से थोड़ा नाइट्रिक एसिड में डुबो शीघ्रही पानी में बुझा देय घसकने लगेगा ॥

## कांच की चीजों का बराबर तोड़ना ।

गिलाश शीसा या बोटल बगैरइ जहां से तोड़ना हो वहां रती से जरा निशान करदे फिर एक लोहे की सलाई सूख गरम करके उसपर फेरें तो ठीक बराबर जगह से घट्ट टूटेगी ॥

## दूसरी तरकीब ।

जहां से तोड़ना हो उस स्थान को घोड़ी सी इस्चिपटें या मिट्टी के तेल में सूत का डोरा तर करके बांध दियासलाई से जला दे जब थल कर बुत जाय तो यहां पर जरासा पानी डाल दे ठीक उसी जगह से टूटेगी ॥

## ऐने पर कलई करना ।

जिस कदर बड़ा ऐना हो उतनाही बड़ा तांब शीसे की पन्नी जो घनियों को दूकानों में मिलती है सेंगले एक चिकने पत्थल पर कि जिसमे बाल समान भी कहीं रेखा नहीं हो क्योंकि जो कुछ करामात है वह पत्थलही में है अकसर कलई करने वालों के पास पत्थल बहुत उमदा रहता है । उसी पत्थल पर पन्नी को फैला दे और उसके ऊपर घोड़ा पारा ( जितने में कि संगस्त तांब में फैल जाय ) डाल कपड़े की मोटली से चारो तरफ फैला दे उस ऐने को ले एक तरफ से उसी पन्नी पर सरका दे और उठा ले वह पन्नी शीसे की अच्छी तरह धोय लेगी और मुख दीखने लगेगा । इसका

कारखाना देहली और कलकत्ते में बहुत है और इस काम के करने वाले प्रायः मुसलमान हैं यहां भी दो तीन मुसलमानों की दूकानें हैं चाहिये कि हमारे एक आध हिन्दू भाई भी दुकान कर लें ॥

## तांबे के डेकची आदि पर कलई करना ।

जिस बरतन पर कलई करना हो उसे इटकोहरा (पक्की ईंट का रवादार चूर्ण) और इमिषी या आंम की खटाईसे सूख मांजे ताकि जरा भी नैला न रहे और बरतन घमकने लगे, तब उसे अग्नि पर रख सूख गर्म करे (ऐसा गर्म हो कि उसमें रांगा डालने से गल जाय और फैलाने से फैल जाय) तब उस गरम बरतन में रांगा डाल घम के गलायले, बाद इसके बरतन के चारों तर्फ नौसादर की बुकनी ठोड़ कपड़े से गले हुये रांगे को जहां तक कलई करना हो आहिस्ते से चारों तर्फ फेर देय उस बहुत उत्तम स्वेत और घमकदार कलई हो जायगी । इस काम के करने वाले सिर्फ मुसलमानही लोग हैं और मुसलमानों के अतिरिक्त हमारे हिन्दू भाई विशेष कर कायस्थ और काश्मीरियों के यहां तो अवश्य ही कलईदार बरतन रहता है और कलईदार बरतन कहीं निषेध भी नहीं है और न वैद्यक मत से कलईदार बरतन में खाना पकाना मना है पर हिंदू लोग अपने खाने पीने का बरतन मुसलमान को नहीं छुलाते इस लिये हर एक शहरों में एक दो हिन्दुओं की दूकानें होनी चाहिये ॥

## जरमन सिलवर ।

३ भाग दस्ता धातु, दो भाग तांबा और तीन भाग निकेल यह भी एक प्रकार चांदी की आकार धातु है और बड़े २ खीदागरों के यहां मिलता है उक्त तीनों धातुओं को एकत्र कर गला देने से जर्मन सिलवर बन जाता है ॥

## पूटीन ।

आलमारी याकस और कियाड़ आदि के दराज या सांभ को बन्द करने के लिये पुटीन तैय्यार की जाती है इसके बनाने की बहुत सी तरकीबें हैं परन्तु सर्व साधारण कार्य के लिये यह उत्तम है । पहिले थोड़ा सा टीमी का तेल अग्नि पर सूष पका ले बाद उसे अग्नि पर से उतार शीतल कर ले, अन्दाज नाफिक जितने में तेल घन हो जाय लिखने की खरी बूक कर मिला दे और एक काष्ठ पर रख एक लोहे की द्योही से सूष पीटे की पीटत २ अति कोमल हो जाय तब काम में लावे ॥

## दो द्रव्यों के संयोग से अद्भुत पदार्थ का बनना ॥

असंख्य द्रव्य ऐसे हैं कि जो एक दूसरे के साथ मिला जाने से अति आश्चर्य और बहुत से गुण सम्भित पदार्थ बन जाते हैं जैसे चूना और नीसादर । इन्हें भिन्न २ सुझने से नाक को कुछ भी कष्ट नहीं मालुम हेगता पर इन्ही दोनों को एक में मिला देने से इसमें ऐसा एक प्रकारका तेज उत्पन्न हो जाता है कि लोग उसको नाक के पास तक नहीं ले जा सक्ते अंगरेजी में इसीको "इमोनिया" कहते हैं । परन्तु यह लोग इसको बड़ी सफाई के साथ तैय्यार करते हैं । नीचे लिखी हुई रीति से मिलाने में भी वैसाही तेज और यही फायदा होता है परन्तु इसकी तेजी थोड़े ही काल में जाती रहती है । खाने का चूना सुक्ता हुआ और नीसादर दोनों सम भाग ले एकत्र कर किसी कागदार सीमी में बन्द करले । यदि कोई आदमी किसी कारण से वेहेग हो गया हो या शीत से दांत बैठ गये हों तो इसके सुझातेही होश में आ जाता है । जिस स्त्री को भूत प्रेत चुड़ैल लगेहों और बड़े २ झाड़ फूंक वालों से भी न कबूलती हो तो इसके सुझा देने से फीरन तोबा करने लगेगी और कहेंगी मैं कलनियां हूँ अग जाती हूँ बस भूत प्रेत चुड़ैल सब भय जायगे । परन्तु यह भी याद रखना चाहिये कि तीन निश्ट से अधिक देर तक किसी को न सुझावे

और बालकों को किसी अवस्था में न सुझानी चाहिये । एवं उस आदमी को भी न सुझाये जो किसी नशा के खाने से ब्रेहोश हो गया हो । एक विशेष बात परीक्षाओं से और भी सिद्ध भई है कि जो बिहोश रोगी इस के सुझाने से होश में नहीं आया तो फिर उसका होश में आना बहुत कठिन है ॥

उन्हीं उक्त दवाओं पदार्थों से पानी भी बनाया जाता है जिसको अंगरेजी में "एमोनियां वाटर" बोलते हैं और उसी अर्कको स्पिरिट के साथ मिलाने से स्पिरिट एमोनिया" कहलाता है और मोल लेने से अंगरेजी दवा खाने में ॥) का एक औंस ( ढाई तोला ) मिलता है ॥

लेकिन यही अर्क यहां भी तैयार हो सकता है । उसकी तरकीब यह है कि नया चूना एक सेर पानी में भिगा दे और दूसरे एक बासन में आधसेर नौसादर को तीन सेर पानी में मिला के जोश दे जब सूख गये हो जाय तब उसीमें चूने का पानी भी डाल दे बाद ठंडा हो जानेके उस पानी को आइस्ते से थोरा २ उठेल ले फिर उसी थोरे पानी को डेग में भर धीमी आंच से आधसेर अर्क टपका ले । इसका मात्रा २० बिन्दु से ६० बिन्दु पर्यन्त है । सूखी रोग में और सांप के काटने में हात्तरी चिकित्सा की यह प्रधान औषधि है आध घंटे पर उक्त बिमारी में इस दवा के पिलाने से शीघ्रही फायदा होता है । एक तोला एमोनिया वाटर को ६ तोला सरसों के तेल में मिला के गले के सूजन से लगाने से अधिक फायदा करता है । नौसादर और चूना इन दोनोका गुण अलग २ भी अनेक रोगों पर है लेकिन वैद्यलय इसका गुण बहुत कम जानते हैं ।

हैजा ॥

इस बिमारी का नाम सुनते ही सगरे शरीर के रोम सड़े हो जाते हैं और देह घर २ फांपने लगती है । हां ! ! ईश्वर ने फिसे २ एक २ रोग कराल महाकाल के समान मनुष्य के इस छोटे से जीव के हरणार्थ उत्पन्न किया है कि जिसके चंगुल में फँस कर इस अचार संसार में पल

भर, को पादस्थिति करना दुष्कर हो जाता है । आज कल प्रायः देवने नें जाता है कि हमेशा ऐजे का राज्य किसी न किसी देश में बना ही रहता है । फिर विशूचिका (ऐजा) महारानी की कृपा कटाक्ष रोगियों पर ऐसी रहती है कि यदि रोग प्राप्त काल में सङ्घेय या डाक्टर न मिला जट पट ग्राम कर डालती है । पीले एक भी किसी की दाल गलाई नहीं गलती । चाहे अमृत का घड़ा क्यों न हाथ में लिये हो बस कर गल २ कर रोना और कहना कि हाय अमुक डाक्टरों दयावाने की इरी सीसी पिलाई जाती तो जखर बच जाता समय चूक फिर दया प-  
 यताना । हम बिमारी के सम्यन्ध में बिलायत वालों ने कई मतवे आं-  
 दोलन किया और बड़े २ सभ्य एलोपैथिक तथा होमियोपैथिक डाक्टर  
 सहीदियों से अनुसंधान किया कि कोई ऐसा उपाय या औषध प्रकाश  
 की जाय कि जिसे संक्रामक रोग अर्थात् विशूचिकादि रोगों की उ-  
 त्पत्ति बहुत कम हो और इसे भरने न पावें । इसके उत्तर में डाक्टरोंने  
 भेड़ोभांति से परीक्षा करके कहा है कि सेवास नपाई और धूम द्वारा  
 दूषित विष वायु का निराकरण । एवं रोगियों के सलं सूत्र द्वारा रोग न  
 फैलने पावें और उपाय नहीं है । प्रत्यक्ष भी है कि आज तक किसी  
 वैद्य डाक्टर और एकीन द्वारा कोई ऐसी निश्चय उग्र सहीपधि न नि-  
 कली कि जिससे रोगी बचही जावे और यही औषधि देश विदेश गांध  
 गंध जहां वैद्य डाक्टर गूलर के फूल हैं सर्वत्र बटवा दी जाती कि जिस  
 से रोगी इस महामारी के पद से लतगदैन न होने पाते ॥

एग निस्सन्देह कह सक्ते हैं कि जैसा आज कल संक्रामक रोग (जो  
 रोग छुईलूत और घटसू से फैलते हैं) किसी न किसी स्थानमें बनाही र-  
 हता है । ऐसा उपद्रव पूर्व काल में कभी न था । इसका मुख्य कारण  
 यही है कि अगले जमाने में यहाँ जंगल इस कदर थे कि जिससे वह  
 दूषित वायु जो मनुष्यों के स्वास द्वारा निकलता है सय-ष्टवादि सींच  
 लेते थे इनसे हथा साफ बनी रहती थी । दूसरे दुष्ट और निपिद्ध गांसा  
 दारी बहुत कम थे इससे मनुष्य के शरीर से दूषित वायु भी नहीं नि-  
 कलती थी । विवेचित भया है अधिक जो गांसादि दूषित गांसाहारी

मनुष्यों के शरीर से जीवनी निकलता है यह निहायत बदबूदार होती है जिससे कि जहरीली वायु ( मलेरिया ) होने का सम्भव है । यदि कोई यह कहे कि अगले जमाने में जब कि बहुत जङ्गल या उन जंगलों में लाखों दुर्गन्धित जानवर शेर भेड़िया रहते थे और हजारों गौ भैंस आदि जीवों को खाते थे और मांस छट्टियां वहीं पड़ी सड़ा करती थी कि जिससे बड़ा भयानक दुपित वायु उत्पन्न होता था तो उनमें क्यों नहीं संक्रामक बिमारियां पैदा होती थीं ? मत्स्य है पर ईश्वर ऐसा दयालु और सर्व शक्तिमान है कि उन जङ्गलों में अस्मात् अंधों के वेग से परस्पर मांस आदि वृक्षों की हालियां रगड़ जाने से अग्नि लग जाती थी और वहां के जानवर दूसरे जंगल में भाग जाते और बहुत से वहां जल जाते थे ॥

तीसरे इस आर्यावर्त में मुर्दे भी सेवाय जलाने के फेंके या गाड़े नहीं जाते थे । आज कल गाड़े जाने के वजे से लक्षों बिगड़ा जमीन बिगड़ गई और उस जमीन की हवा बिगड़ कर लोगों के शरीर में रोग उत्पन्न किया और यही हवा भूत प्रेत पिशाच के नाम से प्रसिद्ध हो गई २ भिद्धानों की बुद्धि को भी बिगाड़ दी ॥

चौथे आज काल प्रायः गांवों के निकासों में मरे हुये जानवरों की छट्टियों का ढेर लगा रहता है वो सड़ कर हवा गन्दी कर हालतों हैं । पांचवे हर एक शहर के बाहर थोड़ेही दूर पर बंपुलसों के मैलों का गड्ढा भरा रहता है कि जिसकी दुर्गन्धि आधे २ मील तक जाती है और ईंट खपरू आदि पत्तावे भी जलरां लहरं लगे रहते हैं कि जिनमें एही और बहुत सी निकम्मी बदबूदार चीजें पड़ती हैं और वे लपक के साथ न जल कर केवल चारोओर धुआं पारी गचामे रहती दे कि जिसकी दुर्गन्धि मनुष्य को असक्त रहती है ॥

उठें पूर्व काल में यज्ञ होम अधिक होते थे जिससे कि वायु में दुर्गन्धित पदार्थों के परिमाण मिल कर हवा हमेशा स्वच्छ रहती थी । यद्यपि अब सनाई का बन्दोबस्त अच्छा है पर उपरोक्त रीति से न होने

के कारण दिन २ संक्रामक रोगों की वृद्धि होती जाती है और इस पर गवर्नमेंट भी ध्यान कम देती है ॥

इस प्रकरण के उठाने का मुख्य अंगिप्राय यह है कि हमारे पड़े लिखे देगे गण सचेत हो आधुनिक बाध्य सफाई ही में न भरन रहें अर्थात् पिनायती सभ्यताही पर न लट्टू रह कर अपने पूर्वजों की सत्-क्रियाओं को भी देखें सुनें और हमारे आयुर्वेद से हैजा आदि संक्रामक रोगों से बचने के नियमों को याद रखें और हैजा प्राप्त होने पर जब तक अच्छा सत वैद्य या देश कालज्ञ हकीम हात्तर न आ जाय तब तक उसके रोकने का उपाय करता रहे । क्योंकि बहुत से स्थान ऐसे हैं कि जहां कोई भी चिकित्सक नहीं है यदिही भी तो काम दो काम पर जब उसे एक आदमी बुलाने को गया ओर वैद्यराज न मिले कहीं चिकित्सा करने गये हैं अथ यह आदमी यहीं ठहर गया कि वैद्य जी को संग ले के चलें उधर अति काल होने से दूसरा भी आदमी चला तब रोगी और घबराने लगा । चिकित्सक को आते २ पांच चार घंटा या इस्से भी कुछ अधिक काल लग गया तब तक में रोग चतुर्गुण हो रोगीही इस अमार संसार को परित्याग चला । इस लिये यह रोग ही न होने पावे ऐसा उपाय सर्वदा करना चाहिये, वह उपाय सभ से मुख्य सफाई है जिसके वैद्य हात्तर और हकीम सभ प्रकार के चिकित्सक लोग जानते हैं ॥

### सफाई ॥

१ मकान की आंगनाई फुल बड़ी हो जिसमें धूप और हवा आ सके नाबदान एक कोने में और पक्का हो जिससे पानी ऋदाके से निकल जाया करे ॥

२ पाखाना यदि सगढाम अर्थात् गहिरा कुप सा हो तो हर सहीने में दो तीन सेर खारी निमक या चूना या रेह गही डाला करे और पाखाना या सुह्दी हो तो पंद्रहमें रोज कारबोलिक के पानी या चूने के पानी से धुला दिया करे ॥



३ आंगनाई में या दरवाजे में दुर्गन्धित गंदीली चीज़ या ऐसी चीज़ जिस से भी सचलाने का सम्भव हो न पड़ी रहनी चाहिये ॥

४ सद्य अमीर ग़रीब को उचित है कि दरवाजे पर या जहाँ उचित समझें यथा शक्ति यदि फुल्यारी लगाने की शक्ति न हो तो फूलों के गमला बोड़े बहुत अवश्य रखें । यह जो तुलसी का पेड़ हमारे यहाँ बड़ा पूजनीय है यह हमी मफाई का प्रधान अङ्ग है । इस पर दुर्घातु आकर्षण की शक्ति अधिक है इससे इसके घरमें अवश्य रखना चाहिये ।

५ चाहिये कि तमान मकान चूने से पुता रहे परंच भीतन करने और सेने का घर तो निश्चयी पुता रहना चाहिये और रसेाई का घर गोघर और पिंडीर से पुता रहना चाहिये और रसेाई के घर में बैठकर भोजन न करे । इसी कारण गहूर्त चिन्तामणि से रसेाई बनाने का घर अग्नि कोण में और भोजन का घर पश्चिम दिशा में लिखा है ॥

६ जब कपड़े से दू आने लगे तो बिना धुलाये उसे कदापि न पहिने ॥

## हैजा न होनेका उपाय ।

यह तो सभी जानते हैं कि हैजा हमेशा एक न एक देशमें बनाही रहता है पर विशेष कर ग्रीष्म ( वैशाख जेष्ठ ) और वसन्त (फाल्गुणचैत्र) ऋतु-में हैजा होने का सम्भव रहता है । और यह भी सबको विदित है कि एक प्रकार की विषदूषित वायु फैलती है तभी अजीर्ण द्वारा यह रोग होता है । हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि प्रातःकाल पर इसका रो कना दुस्ताप्य है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि इसके चङ्गुल में न फँसने का उपाय हमेशा करता रहे पर उपरोक्त महीनों में तो अवश्यही अपने संजनों को ठीक रखे । क्योंकि यह रोग उन्हीं का होता है जिन्हें यह परिज्ञान नहीं है कि हमें किस समय यथा आचरण और कौन द्रव्य भक्षण करना उचित है और कौन नहीं । और जो व्यक्त परिमित भोजन

करते हैं विशेषतः आयु के हितार्हित विषय में खूब अभिज्ञ है यह प्रायः इस रोगमें आक्रान्त नहीं होते ॥

१ बहुत गर्म स्थान में रह कर एक बारगी शैत्य स्थान में न चला जाय और न बहुत ठंड पदार्थ भोजन करले ॥

२ अतिशय जल पान, कभी अल्प कभी जादा, कभी कम पका कभी जादा पका या यासी द्रव्य भोजन, दिशा पेशाब का रोकना, दिवानिद्रा रात्रि जागरण, प्रभृति त्याग करे ॥

३ दश ग्यारह बजे के उपरान्त रात को न जागे क्योंकि रात के जागने से प्रायः हैजा हो जाता है ॥

४ अत्यंत बिरेचक औषध, तेल की बनी हुई पकौरी आदि गर्मशीज शरीर आदि अधिक नशा न खावे ॥

५ शाम सवेरे घंटा आध घंटा शुद्ध वायु का सेवन करना और गीत बाद्यादिकों से मनमें विनोद रखे ॥

६ हैजा के प्रादुर्भाव समय में प्रतिदिन एक बार तेल का शरबत पीना या ठंडई के साथ रत्ती दो रत्ती भांग घोंटकर प्रतिदिन सन्ध्या समय पीना उत्तम है ॥

७ कपूर सूंघे और कपूर का पानी २ तोला दोनों समय पी लिया करे अथवा जल के घड़े में एक छोटी सी डली कपूर की डालदिया करे क्योंकि कपूर के सेवन से हैजा नहीं होता, परन्तु इस विषयको लोग बहुत कम जानते हैं । बिलायत के प्रसिद्ध डाक्टर रिङ्गर साहय चिकित्सा विधान में लिखा है कि गरमी के दस्तमें (ऐजेंट) कपूर से बढकर दूसरी औषध नहीं है ॥

८ बहुत सकेत फोठरी में रात को मुख दाँप कर न सोये और न किसी अधिक तङ्ग बैठक में दश घीस आदमी को सङ्ग लेकर बैठे ॥

९ जिस स्थान में हैजा उठा हो वह स्थान त्याग दूसरे जगह को चला जाय और हैजे का नाम सुन कर कदापि न डरे ॥

१० घरमें मत्स्यहंशाम सबेरे गंधक या दशांग या धूप या गुग्गुलुकी धूनी अवश्य दिया करे क्योंकि इससे विष दूषित वायु का निराकरण हो जाता है यही कारण है जो पूर्वचारों ने व्यवस्था दिया है कि गृहस्थ लोग घर में ठाकुर रखे और शाम सबेरे धूप दीप दिया करे । अंगरेजी डाक्टरों ने अच्छी तरह परीक्षा लिया है कि हैजा वाले रोगियों का मल आदि कूप तालाब नद्यादिकों के जल के साथ मिल जाने से यह रोग शीघ्र ही चारों तरफ फैल जाता है । यदि हैजावाले का मल इधर उधर न फेंका जाय और बस्त्र आदि तालाब नदी कूप आदि स्थानों पर न धोये जाय तो निश्चय है कि यह विमारी चारों तरफ न फैले, चाहिये कि किसी एकांत में गढ़ा खोद उसमें फाष्ट कोयला डाल उसी में मल फेंके और ऊपर से चूने का पानी या कार्बोलिक एसिड का पानी छुड़ा दे इससे मल का दोष दूर हो जाता है । और बस्त्र को पहले चूना या क्षीराइड भास लाईम के जल से धो कर तब तालाब आदि में या धोबी को धोने को दे । जिस घर में रोगी हो उस घर को धूप आलकत्तरा या गंधक के धुंवा से धूपित करे और उसी मकान के एक कोने में कार्बोलिक एसिड की एक सीसी का मुह खोल कर रख दे । इससे रोगी को प्रायदा और देश का उपकार दोनों होगा ॥

### विष वायु दूषित गृह ॥

इन्फेकटेडचेम्बरस । जिस समय ज्वर, हैजा, माला आदि रोग द्वारा देश भर ग्रसित हो जाय, या कोई गृहस्थ में परिवार उक्त रोग में ग्रसित हो कोई तो मर जाय, कोई, आराम हो और कोई २ फिट उसी रोग में ग्रस्त हो दुर्बल बना रहे तब निश्चय जानना चाहिये कि उस देश या उस घर की वायु विष से दूषित है, तब अगर उस देश के मत्स्यहंशाम अपने २ घर में या फक्त रोगी के घर में निम्न लिखित धुंवा देवे तो निश्चय उक्त महाकराल रोगों से छूट जाय ॥

## सोरे का धुंआ देना ॥

सोरा १ उटांक, गन्धक का तेजाय आधी उटांक । एक बड़े पात्र में या गमले में गरम जल भर कर उसके बीच में एक बरतन इस प्रकार से रखें कि उसके भीतर जल न जाने न पावे । बाद उस बीच के बरतन में सोरा डाल ऊपर से बूंद २ गन्धक का तेजाय टपकाना आरम्भ करें इससे धुंआ निकलने लगेगा । एक छोटे से घरमें धुंआ करने के लिये केवल एक पात्र बहुत है, यदि बड़ा घर हो तो उसी तरह दो पात्र स्थापन करें और जिस घर में रोगी हो उस घर में तो अवश्य धुंआ देंगे लेकिन धुंवे का पात्र रोगी के समीप न रखें किन्तु थोड़ी दूर पर रखें ॥

इस धुंवे को पहले पहल श्री युत डाक्टर कारमर्षकेल स्मिथ साहय ने प्रकाश किया था । जिस समय सन् १७८२ ई० में ब्रिंलायत के बिनचेस्टर नगर में उक्त रोग द्वारा बड़ी गरी पड़ी थी तिस समय इस धुंवे से बड़ा भारी उपकार हुआ और इसी पर गवर्नमेंट ने उक्त डाक्टर को पचास हजार रुपया पुरस्कार दे कर राज चिकित्सक का पद अभिषिक्त किया । उसी समय से आज तक हर एक चिकित्सक गण बराबर इसे काम में लाते आये और इससे विशेष उपकार देखा गया है ॥

हैजे को संस्कृत में बिभूचिका, अंगरेजी में कालरा, यंग भाषा में उछाउठा और तन्त्र शास्त्र वाले इसीको महामारी की बिमारी कहते हैं डाक्टरी में मेलिगनेस्ट आदि कालरा बहुत प्रकार के हैं जिनका बयान आगे लिखेंगे । प्रथम हज " बङ्गस्कालरा " का बयान करते हैं जो देश विदेश सर्वत्र फैला है ॥

## इस हैजे का विवरण और लक्षण ॥

पारस्वार के और पाकस्थली एवं आंत में दर्द हो । परन्तु अधिक समय होने से पेटका दर्द बन्द हो जाता है । दस्त पतला पीत वर्ण और

मल सहित एवं अजीर्ण द्रव्य युक्त और अवशेष में कुछ हांघ सहित भी होता है । जिह्वा कंटक मई और नाड़ी मन्द २ गति एवं कधी गतिहीन भी हो जाती है । पियास अत्याधिक और किसी २ रोगी को हिचकी भी आने लगती है हांघ पैर शीतल समग्र शरीर या ओठ और हांघ पैर के नाखून तो अवश्यही नील वर्ण हो जाते हैं । सम्पूर्ण शरीर में ऐंठने और हांघ पैर के नस खिंचने लगते हैं । उक्त लक्षण युक्त रोगी ऐसाही कोई भाग्य बस बच जाता हो नहीं तो २४ घंटे के भीतर अवश्यही मर जाता है ॥

### चिकित्सा ॥

रोगी को किसी प्रकार की गीली चीज खाने न दे, जिसमें ताकत आये ऐसी चीज खिलानी चाहिये । जैसे ब्रांडी या पोटावाइन के साथ अरारोट का गांड़ मिलाके पिठाना उत्तम है । और इस दवा को देवे ॥

१ चाकनिकुत्तचर ५ औंस । टिञ्चू (हाईमाथऐगाई देा ड्राम । पिपर-मेन्ट याटर १ औंस सब को एकत्र कर एक २ औंस के अंदाज दिन में चार पांच दफे या जैसा रोगी का बलाबल देखे सेवन करावै ॥

अगर देखे कि रोगी बिल्कुल बलहीन हो गया है और नाड़ी अति क्षीण एवं स्थान भ्रष्ट चल रही है, शरीर या हांघ पैर पाला के समान है, तब निम्न लिखित उष्ण कारक अर्क पिलावै ॥

### व्यवस्था ॥

ऐरोमेटिक एमोनिया १ ड्राम । मलफिठरिक ईथर आधा ड्राम । टिञ्चूर कारबेन कम्पौंड ४ ड्राम, ब्रांडी १ औंस, लडेनम १ ड्राम, केम्फर याटर ५ औंस । एकत्र कर एक बीसी में १२ दाग (भाकं) बना उसी में अर्क भर दे, एक २ दाग आध २ घंटा या एक २ घंटे पर देवे जब देखे कि दो तीन मात्रा दे चुके और कुछ फायदा नहीं मालुम होता तब

## सोरे का धुंआ देना ॥

सोरा १, छटांक, गन्धक का तेजाय आधी छटांक । एक बड़े पात्र में या गमले में गरम जल भर कर, उसके बीच में एक घरतन इस प्रकार से रखे कि उसके भीतर जल न जाने न पाये । याद उस बीच के घरतन में सोरा डाल ऊपर से बूंद २ गंधक का तेजाय टपकाना आरम्भ करै इससे धुंआ निकलने लगेगा । एक छोटे से घरमें धुंआ करने के लिये केवल एक पात्र बहुत है, यदि यहा घर हो तो उसी तरह दो पात्र स्थापन करे और जिस घर में रोगी हो उस घर में तो अवश्य धुंआ देवे लेकिन धुंवे का पात्र रोगी के समीप न रखे किन्तु थोड़ी दूर पर रखे ॥

इस धुंवे को पहले पहल श्री युत डाक्टर कारमचेंकेल स्मिथ साहय ने प्रकाश किया था । जिस समय सन् १७८२ ई० में ब्रिगायत के बिनचेस्टर नगर में उक्त रोग द्वारा बड़ी गरी पड़ी थी तिस समय इस धुंवे से यहा भारी उपकार हुआ और इसी पर गवर्नमेंट ने उक्त डाक्टर को पचास हजार रुपया पुरस्कार दे कर राज चिकित्सक का पद अभिषिक्त किया । उसी समय से आज तक हर एक चिकित्सक गण बराबर इसे काम में लाते जाये और इससे विशेष उपकार देखा गया है ॥

हैजे को संस्कृत में विशूचिका, अंगरेजी में कालरा, बंग भाषा में चलाउठा और तन्न शास्त्र वाले इसीको महामारी की बिनारी कहते हैं डाक्टरों में मेलिगनेन्ट आदि कालरा बहुत प्रकार के हैं जिनका ययान आगे लिखेंगे । प्रथम हम " इङ्ग्लैंडकालरा " का ययान करते हैं जो देश विदेश सर्वत्र फैला है ॥

## इस हैजे का विवरण और लक्षण ॥

आरम्भ के और पाकस्थली एवं आंत में दर्द हो । परन्तु अधिक समय होने से पेटका दर्द बन्द हो जाता है । दस्त पतला पीत वर्ण और

मल सहित एवं अजीर्ण द्रव्य युक्त और अघशेष में कुछ आंघ सहित भी होता है । जिह्वा कंटक गई और नाड़ी मन्द २ गति एवं कधी गतिहीन भी हो जाती है । पिपास अत्याधिक और किसी २ रोगी को हिचकी भी आने लगती है हाथ पैर शीतल समग्र शरीर या ओठ और हांघ पैर के नासून तो अघश्यही नील बण हो जाते हैं । सम्पूर्ण शरीर में ऐंठन और हांघ पैर के नस खिंचने लगते हैं । उक्त लक्षण युक्त रोगी ऐसाही कोई भाग्य बस बघ जाता हो नहीं तो २४ घंटे के भीतर अघश्यही मर जाता है ॥

### चिकित्सा ॥

रोगी को किसी प्रकार की गीली चीज खाने न दे, जिसमें ताकत आये ऐसी चीज खिलायी चाहिये । जैसे ब्रांड़ी या पोटावाइन के साथ अरारोट का गांड़ मिलाके पिलाना उत्तम है । और इस दवा को देवे ॥

१ चाकनिक्सचर ५ औंस । टिञ्च(डाईआसऐगाईं दो ड्राम । पिपर-मेन्ट वाटर १ औंस सब को एकत्र कर एक २ औंस के अंदाज दिन में चार पांच दफे या जैसा रोगी का यलायल देखे सेवन करावे ॥

अगर देखे कि रोगी मिलकुल बलहीन हो गया है और नाड़ी अति क्षीण एवं स्थान भ्रष्ट चल रही है, शरीर या हांघ पैर पाला के समान है, तब निम्न लिखित उष्ण कारक अर्क पिलावे ॥

### व्यवस्था ॥

ऐरोमेटिक एमोनिया १ ड्राम । सलफिउरिक ईथर आधा ड्राम । टिञ्चर कारबेन कम्पींड ४ ड्राम, ब्रांड़ी १ औंस, लडेनम १ ड्राम, कैस्कर वाटर ५ औंस । एकत्र कर एक सीसी में १२ दाग (मार्क) घना उसी में अर्क भर दे, एक २ दाग आध २ घंटा या एक २ घंटे पर देवे जब देखे कि दो तीन मात्रा दे चुके और कुछ फायदा नहीं मालुग होता तब

बीस २ गिनट पर देना शुरू कर दे । तब भी यदि हाथ पैर में गर्माहट और नाड़ी तेजी के साथ न चलने लगे तब पैर की एड़ी और हाथ की कलाई पर राई का पलस्तर रख दे । पलस्तर लगाने का प्रयोजन यह है कि इसके द्वारा गर्मी उत्पन्न हो नाड़ी चलने लगे ॥

### वैद्यक मत से हैजा ॥

पीले हम हैजा न होने का उपाय लिख आये हैं, पर अब हम आयुर्वेद द्वारा संक्षेप से हैजे का निदान और चिकित्सा लिखते हैं । आशा है कि पाठकगण अवश्य इस उल्लेखानुसार रोगियों को अकाल काल से बचा धन्यवाद देंगे ॥

आज कल हैजे की अधिकता से विशेष कोड़े लक्षण दिखलाने की जरूरत नहीं है क्योंकि मूर्ख से भी मूर्ख तक जान जाते हैं कि इसे हैजा ही गया है ॥

### हैजेका लक्षण ॥

मूर्च्छातिसारौवमथुःपिपासा शूलभ्रमेद्विष्टन जृम्भदाहाः ।

वैवर्ण्यकम्पौ हृदयेऽजथ भवन्तितस्यां शिरसश्चभेदः ॥

रोहोशी, दस्त पतला, बारंबार के होना, पिपास, शरीर में छूँठन घुमरी, कल न परे, जँभुवाई, दाह, शरीर का रंग बदल जाना, देह कांपना हृदय और शरीर में दर्द होना- विशेष करके के दस्त पेट और शरीर में छूँठन पेशाब का न होना, पिपास की आधिप्यता अवश्य होती है ॥

### साध्य लक्षण ॥

यदि धीरे २ उपद्रव घटता जाय विशेष कर बमन । रोगीको चोड़ा निद्रा आ जाय शरीर गर्म बना रहे एवं रोगी तीन चार रोज बच जाय



और घात कफ का फोड़े उपद्रव न उठे तो यकीन है कि रोगी अवश्य  
यथ आयगा ॥

### असाध्य लक्षण ॥

हाथ पैर में ऐंठन ज्यादा हो, स्वर मज्ज और बल घट गया हो, भी  
तर दाह ऊपर शीत हो । रोगी को कल न पड़े, पेशाब न उतरे मारे  
पियास के गले में कांटे पड़ गये हों, सांस कम आवे या सांस लेते में  
गला खर २ घोले हुधकी आवे और नाड़ी रुक २ के चलें तो रोगी का  
जीना बड़ा कठिन है ॥

### चिकित्सा ॥

इस रोग की चिकित्सा नामा प्रकार की है विशेष कर डाक्तरों में  
इसकी बड़ी तूल के साथ बयान है, परन्तु जिस प्रकार की चिकित्सा से  
अधिकांस लाभ देखा गया है प्रथमतः उसीको कहते हैं । इसके परे और  
भी वैद्य डाक्तरों के मतानुस से कौन औषध देने से क्या लाभ हुआ है  
यह भी प्रकाश करेंगे ॥

जहां तक हो सके फौरन के दस्त बन्द करे । इकीमों की राय है  
कि हीजा शुरू होतेही के दस्त न बन्द करे कुछ दूषित मल निकल जाने  
दे ? पर हम कहते हैं कि तत्क्षण बन्द करना उचित है क्योंकि हीजे के  
दस्त बन्द करने में रोगी का पेट नहीं फूलता । बाद इसके पेशाब खो-  
लने और शरीर में ताकत लाने की उपाय करे ॥

हीजे की प्रधान औषधें केवल यह है । अफीम, पारद, कफूर, ब्रांड़ी  
सीक, गुलाब, पुदीना, यर्ष ॥

### विशूचिकान्तक वटी ॥

सिगरख सकमूदा बांदी एक तोला को १२ प्रहर कागजो नींबूके रस

में खरल कर छाया में सुषा ले बाढ़ इसके विमरण के बराबर अजीम लें दोनों खरलमें हाल पानीसे घोंट कर बाजराके बराबर गोलियां बनाएँ । यह बटी हैजे में रामबाण सा गुण दिखाती हैं; और पाठक गणों से सविनय प्रार्थना करते हैं कि जहां तक हो सके बटी को पुनर्पार्थ दिया करें ॥

### अनुपान ।

चाहिये कि हेजा शुरू होतेही यह गोली खिला दी जाय, रोगी गोली को मुह में रख पानी से उतार आवे न दांत से कुचले और न जीभ से टुपलावे । यदि गोली उसी समय के से गिर जाय तो दूसरी गोली पानी में चील कर पिला दे, गोली के पचतेही के दस्त बन्द हो जायगा अगर गोली पच जाय और दस्त न बन्द हो तो ३ घंटे के बाद एक या दो गोली जैसी ताकत देसे खिला दे । फिर भी न बन्द हो तो १० घंटे तक गोली न दे पिपास और यमन-रोकने की उपाय करै अर्क सौंफ ५ अर्क पुदीना ५ अर्क गुलाब ५ अफूर का पानी ५॥ आधी लँटाक, बर्क का पानी ५। इन सबों में जो मिल जाय एकत्र कर एक २ तोला दश २ मिन्ट पर बराबर पिलाता जाय, इसके भी के न बन्द हो तो घोड़ी राई पानी में पीस आठ अंगुल लंबा चौड़े कागज पर लेप कर घेंट पर रख दे जय सूख जलन होने लगे तय निकाल डाले, जय देसे कि रोगी के हांघ पैर में ऐँठन ज्यादा है और बदन बहुत ठंडा है नाड़ी की गति अति बन्द है तो उक्त रीत्यानुसार राई हांघ पैर की फलाई पर रख दे । और केवल तारपीन का तेल हांघ पैर में मालिश करना प्रारंभ कर दे जब तक कि ऐँठन मिट कर नाड़ी सूख तेजी से न चलने लगे ॥

उपोंही दस्त बन्द हो उसी यक्त पेगाय खोलने की चेष्टा करै । फलभीसारा ३ तोला, टेसू का फूल २ तोला दोनों को पानी में पीस टिकिया बना पेडू पर रख दे और आध २ घंटे पर बदलता जाय और पन्द्रह २ मिन्ट पर प्रायैट्रिक इपर का दश २ बूंद घोड़े से पानी के

साथ या दश २ दाना शीतल चिनी की चुकनी घेड़े से पानी के साथ बराबर देता जाय जब तक कि पेशाब साफ न आने लगे ॥

अति झुका लगने पर साबूदाना मिश्री के साथ दे या भंग की मुंछायम, खिचरी दे ॥



### आध्यात्मिक शक्ति ॥

परम पिता परमेश्वर ने हमारे आत्मा की रक्षा और उसके आध्यात्मिक कार्य साधन के लिये आत्मा के साथ २ एक प्रकार की सूक्ष्म विद्युत् भी दी है जिसके सूफी लोग "नूरेइन्सान" और यूरोपीय विद्वान, आहिल कहते हैं । यह विद्युत् शीतल, प्रकाश युक्त और सूक्ष्मगामी होती है । जिस प्रकार आत्मा अपनी मानसिक इच्छा द्वारा अपने वास्तु शारीरक अंगों को हिलाता, डोलता अपने काम में लाता है उसी प्रकार इस विद्युत् को भी जिधर चाहता है फैलाता और उच्छे अनेक प्रकार के कार्य साधन करता है । इस विद्युत् द्वारा आत्मा वास्तु इन्द्रियों के बिनाही जितनी दूर चाहे देख सकता सुन सकता है और अपनी इच्छा प्रकाश कर सकता है । यह विद्युत् ऐसी सूक्ष्म है कि कोई पहाड़ दियार आदि उसे रोक नहीं सकता है उनके भीतर से निकल २ जाती और आत्मा दृष्टि आदिक शक्तियों को दूर २ फैला देती है । इस विद्युत् का और कोई शब्द नहीं मिलता लाचार विद्युत् कहना पड़ा इसी के द्वारा योगी जन अद्भुत शक्ति सम्पन्न होकर एक स्थान पर बैठ कर देश देशान्तरों को आभ्यन्तरिक दृष्टि से देख सकते हैं । इसी विद्युत् के विषय में आज कल "चिये सोफिटी" कुछ कहने और लिखने लगे जिसे लोग उनकी दुग में पुमे जाते हैं और उनके चेले बनते जाते हैं यह आश्चर्य की बात नहीं है । संसार में यद्यपि कोई मनुष्य एक सुख शरीरक अङ्ग को ही किसी ऐसे कार्य में लगाना आरंभ करे, जिसे और लोग नहीं कर सकते, तो सब हीरान होकर उसके पीछे

में खरल कर छाया में सुला ले बाद इसके भिन्नरख के बराबर अफीम ले दोनों खरलमें डाल पानीसे घोंट कर बाजराके बराबर गोलियां बनालें । यह बटी हैजे में रामदाणं ना गुण दिखाती हैं; और पाठक गणों से स-विनय प्रार्थना करते हैं कि जहां तक हो सके बटी को पुनर्पार्थ दिया करे ॥

### अनुपान ।

चाहिये कि हैजा शुरू होतेही यह गोली खिला दी जाय, रोगी गोली को मुह में रख पानी से उतार जावे न दांत से कुछले और न जीभ से टुघलावे । यदि गोली उसी समय के से गिर जाय तो दूसरी गोली पानी में घोल कर पिछा दे, गोली के पचतेही के दस्त बन्द हो जायगा अगर गोली पच जाय और दस्त न बन्द हो तो ३ घंटे के बाद एक या दो गोली जैसी ताकत देखे खिला दे । फिर भी न बन्द हो तो १० घंटे तक गोली न दे पियास और घमम रोकने की उपाय करै अर्क सौंफ ५। अर्क पुदीना ५= अर्क गुलाब ५= अफूर का पानी ५॥ आधी छंटाक, बर्फ का पानी ५। इन सबों में जो मिल जाय एकत्र कर एक २ तोला दश २ मिन्ट पर बराबर पिछाता जाय, इससे भी के न बन्द हो तो थोड़ी राई पानी में पीस आठ अंगुल लंबा थोड़े कागज पर लेप कर घेंट पर रख दे जब सूख जलन होने लगे तब निकाल डाले ; जब देखे कि रोगी के हांघ पैर में ऐंठन ज्यादा है और बदन बहुत ठंडा है नाही की गति अति मन्द है तो उक्त रीत्यानुसार राई हांघ पैर की कलाई पर रख दे । और केवल तारपीन का तेल हांघ पैर में मालिश करना प्रारंभ कर दे जब तक कि ऐंठन मिट कर नाही सूख तेजी से न चलने लगे ॥

उयोंही दस्त बन्द हो उसी यक्त पेशाब सोलने की चेष्टा करै । कलमीसारा ३ तोला, टेपू का फूल २ तोला देनों को पानी में पीस टिकिया बना पेहू पर रख दे और आध २ घंटे पर बदलता जाय और पन्द्रह २ मिन्ट पर भाईट्रिक इपर का दश २ बूंद थोड़े से पानी के

साथ या दश २ दाना शीतल चिनी की युक्तगी चोड़े से पानी के साथ बराबर देता जाय जब तक कि पेशाब साफ न आने लगे ॥

बलि क्षुधा लगने पर चाबूदाना गिन्नी के साथ दे या मूंग की मुलापन सिचरी दे ॥



### आध्यात्मिक शक्ति ॥

परम पिता परमेश्वर ने हमारे आत्मा की रक्षा और उसके आध्यात्मिक कार्य साधन के लिये आरणा के साथ २ एक प्रकार की सूक्ष्म विद्युत् भी दी है जिसको ग्रीकी लोग "नूरेइन्सान" और यूरपीय विद्वान, आहिल कहते हैं । यह विद्युत् शीतल, प्रकाश युक्त और सूक्ष्मांगी होती है । जिस प्रकार आत्मा अपनी मानसिक इच्छा द्वारा अपने मास्य शारीरिक अंगों को हिलाता, होलता अपने काम में लाता है उन्ही प्रकार इस विद्युत् को भी जिधर चाहता है फैलाता और उससे अनेक प्रकार के कार्य साधन करता है । इस विद्युत् द्वारा आत्मा मास्य इन्द्रियों के बिनाही जितनी दूर चाहे देख सकता सुन सकता है और अपनी इच्छा प्रकाश कर सकता है । यह विद्युत् ऐसी सूक्ष्म है कि कोई पहाड़ दियार आदि उसे रोक नहीं सकता है उनके भीतर से निकल २ जाती और आत्मा दृष्टि आदिक शक्तियों को दूर २ फैला देती है । इस विद्युत् का और कोई शब्द नहीं मिलता लाचार विद्युत् कहना पड़ा इसी के द्वारा योगी जन अद्भुत शक्ति सम्पन्न होकर एक स्थान पर बैठ कर देश देशान्तरों को आश्चर्यकर दृष्टि से देख सकते हैं । इसी विद्युत् के विषय में आज कल "पियो सोफिटी" कुछ कहने और लिखने लगे जिसे लोग उनकी दुग में घुमे जाते हैं और उनके चेले बनते जाते हैं यह आश्चर्य की बात नहीं है । संसार में यद्यपि कोई मनुष्य एक सुच्छ शरीरक अङ्ग को ही किसी ऐसे कार्य में लगाना आरंभ करे, जिसे और लोग नहीं कर सकते, तो मग हीरान होकर उसके पीटे

दीखने लगते हैं । पियोनाफिट्ट लोगों ने इस पुरातन विद्या का अभी तक एक लेश भी नहीं जाना है । और न यह जानने के लिये प्रयत्न ही करते हैं । उन लोगों ने तो केवल रूपमा कमाने और भारत वासियों को मूढ़ने के लिये ही यह घोषा या तमासा मेस्मिरीजम आदिक सीख लिया है । जिसने हमारे भोले भाले देश वासी मंतवाले होकर उनके गीत गाते और अपने परिश्रम की कमाई में आग लगाते हैं । मेरे प्यारे भारत वासियों यह तुम्हारे ही देश की विद्या है जिसने जम "गियां कीं जूती गियां की चांद" का खेल हों रहा है । जिन प्रकार हम यद्यपि एक हाथ उर्दूवाहूँ की नाई पड़ा या खड़ा रहने दें, और उसने कुछ काम न लें, तो थोड़े से काल में यह जकड़ कर किसी काजका नहीं रहता है । अगर कोई अच्छा घँटा मिले और किसी भीषधि या यत्न द्वारा उसे सुधारे, तो यह कुछ काम देने लगे तो सम्भव है । इसी प्रकार अनेक समय में हम लोगों ने अपने धाप दादा के आध्यात्मिक साधन को छोड़ कर इस अद्भुत ईश्वरीय शक्ति को बेकार कर रक्खा है जिसने अब हम साधारण रूप से भी उसे किसी काम में नहीं ला सकते हैं । और यद्यपि किसी को उसका लेश मात्र भी साधक देखते हैं, तो गुलाम बनने, उसकी जूतीं साँझ करने, और अपना तन मन अर्पण करने का तत्पर हो जाते हैं । इसमें सन्देह नहीं कि हम इस महान शक्ति को रो कर बहुत दुर्बल और दुखी हो रहे हैं । और जय तक इस अपने साधन की ओर दृष्टि न करेंगे, तब तक हमारी दशा सुधर न सकेगी । यही तो योग का मूल है । आज कल हमारे भारत वासी यह समझते हैं कि इसको साधन करने के लिये धरधार त्याग करना पड़ता है । और संसार से बिदेगी होकर वन में रहना होता है । नहीं भाई, यह सारा खेल संसार के पवित्र उद्देश्य के पूरा करने के लिये ही है । परमेश्वर ने यह सुन्दर संसार त्याग करने और उसी मुँह मोड़ने के लिये नहीं बनाया है । हाँ, अत्याचार, फुसंस्कार आदि अपशय त्याग करना पड़ता है क्योंकि जय तक आत्मा पवित्र न हो, यह विद्वुत्त निर्मल नहीं होती, और न अपना कार्य कर सकती है । यदि लोगों की

इच्छा होगी, और यह अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जानना और उसे अपने कार्य में लगाना चाहेंगे, तो मैं यथा शक्ति उनको ऐसा उपाय और साधना बतलाने में प्रस्तुत हूंगा जिसे वह इस शक्ति को लाभ करके अनेक प्रकार का आनन्द पावेंगे । मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे देश वासी इन शारीरिक इन्द्रियों पर ही भरोसा करते न रहें, क्योंकि एक समय ऐसा आवेगा जब यह शरीर न रहेगा और आध्यात्मिक इन्द्रियों से ही काम लेना पड़ेगा यद्यपि अभी से इसका सीखना आरंभ न करेंगे तो मृत्यु के पश्चात् अंधे लूटे की दशा में रहना पड़ेगा ॥

### आध्यात्मिकशक्ति साधन ॥

आज मैं लोगों की इच्छा देख कर कुछ आध्यात्मिकशक्ति के दृष्टि का उपाय वर्णन करना आरंभ करता हूँ । यदि भारत वासी सज्जन पुरुष शान्ति लाभ निमित्त इसको सीखना और अपने जीवन में इसका अनुष्ठान करके आनन्दित होना चाहेंगे तो मैं धीरे-धीरे इस शक्ति प्रकाश करूंगा । यह तो मैं जानता हूँ कि आज कल हमारे देश वासी युक्ति, तर्क ज्ञान आलोचना, संदेह यादी, और सांसारिक गोलमाल से अशान्त और थकित हो कर एक प्रकार की नूतन पिपासा योग साधने की प्रकाश कर रहे हैं । इसी लिये किसी मनुष्य में लेश मात्र भी आध्यात्मिकशक्ति देख कर मोहित हो जाते हैं । यहां तक कि धन और प्राण भी अर्पण करना स्वीकार कर बैठते हैं । जिसका कि मैं पहिली बार कुछ वर्णन कर चुका हूँ ॥

आप जानते हैं जब एक वस्तु पर किसी प्रकार का रंग चढ़ जाता है, तो उसपर दूसरा रंग चढ़ाना, या उसको अपनी पहली अवस्था में लाना कठिन होता है । पहिले उस रंग को रगड़ कर साफ करना पड़ता है । इसी प्रकार जब हमारी प्रकृति ही बदल गई है, हमारा रंग ही दूसरा हो गया है, तब हमारे आत्मा की प्रकृति शक्ति का प्रकाश पाना या उसको असली रूप का मिलना कठिन देखाई देता है ।

सारा कार्य विश्वास द्वारा ही चलता है, खाना, पीना, उठना, बैठना, सोना, जागना, याजिष्य, व्योपार सभी विश्वास बिना नहीं हो सक्ते हैं। हमारे आपस में विश्वास न होने के कारण हमें एक दूसरे की सहायता नहीं करते, एक दूसरे का उपकार साधन नहीं करते, इसी लिये दाम धन फर दुःख भोग कर रहे हैं, देग विनाश हो रहा है। आप कहते होंगे कि यह तो और ही कुछ कह रहा है, जिस विषय पर कहना है और जिसके लिये हम अपेक्षा करते हैं, यह तो नहीं कहता है। महा राज जब तक भूमि ठीक नहीं होती, उसमें बौर्ये बोने से कुछ फल नहीं होता है ऐसे छोटे मोटे चुटकले जिनके चिओसफ्रिट लोगों में देखते हैं, और जिनके कारण आप मोहित हो रहे हैं, यह तो दो दिन में जा सक्ते हैं। यह तो याजीगर के आन के वृत्त हैं, आज हैं कल नहीं। मैं तो आप के हृदय भूमि ऐसा पेड़ लगाना चाहता हूँ कि जो सर्वदा हरा भरा रहे और उत्तम से उत्तम फल देकर आप को आर्य्य पुरुषों की ठीक सन्तान बना देवे। चबड़ाइये नहीं, आप को कुछ बहुत कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा थोड़ा ही हृदय भूमि का जंगल काट कर बाग लगाना होगा—केवल अपने हृदय को प्रकृति अवस्था में लाना होगा, प्राणी जंगल साफ करना होगा। इसी लिये मैं आज आप से इतनाही कहना चाहता हूँ, कि प्रकृत विश्वास क्या है (जिसे आप को विदित हो जावेगा, कि आप के ऊपर कैसा रंग चढ़ा हुआ है) और उसके उज्वल करने की रीति क्या है। प्रकृत विश्वास ही आत्मदर्शन का मूल है, जब तक आप अपने आत्मा को देखही नहीं सकेंगे, तो उपकी शक्ति का जानना, उसकी वृद्धि या उसके कार्य साधन करना कैसे सम्भव हो सकेगा ?

यह तो स्पष्टरूप से जाना जा सक्ता है, कि जिसे लोग विश्वास कहते हैं वह प्रकृत विश्वास नहीं यह तो केवल आपस के संस्कार हैं। इस बात का प्रमाण यही देख लीजिये, कि वह संदेह से जतीत नहीं है। जब तक संदेह है तब तक यही जानना चाहिये कि प्रकृत विश्वास नहीं मिला और जब तक प्रकृत विश्वास प्राप्त नहीं। तब तक योग को



घात कहना ही निरर्थक है । योग के पथ में चलने के लिये सर्वत्र ही यह लौकिक संस्कार परित्याग करना और प्रकृत विश्वास दूढ़ना होगा । प्रकृत विश्वास योग पथ की पहिली सीढ़ी है ॥

प्रकृत विश्वास का लक्षण अपरिहास्यता और अनतिरङ्गशीयता ही है । जिस विश्वास को किसी बल द्वारा टूटा न सके, हठार २ विरोधी युक्ति से उसे हिला न सके, यही प्रकृत विश्वास है । दर्शन शास्त्र में इस को ब्रह्म विद्या और आत्मप्रत्यय बोलते हैं । जिसके विपरीत कुछ भाषना करदी नहीं सक्ते यही आत्म प्रत्यय, यही प्रकृत विश्वास है । क्यों जी देखो तो सही आप में भी कुछ है, चुटकुलों को देखकर तो मोहित हो जाते हो । किन्तु पहिले इस विश्वास के लाभ करने के लिये प्रस्तुत हो । तब मैं आगे कहूंगा, नहीं तो बस सलाम । बाकी दूसरे राह में देखो ॥

### लड़कों की पसुली की विमारी ॥

एक तो वैद्यक शास्त्र की ऐसे ही दुर्दशा हो रही है दूसरे जो कुछ छ भी यह अपढ़ ज्ञान नकली वैद्य और चांडाल औरतों के मारे और भी मत्पानाश हो रहा है । यह तो सभी जानते हैं कि युवा गनुष्यों के अपेक्षा बालकों के रोगों का नाही के द्वारा यपार्थ ज्ञान कर लेना बड़ा दुर्कर है, क्योंकि समान जादमी नाही के अतिरिक्त अपने समग्र क्षेत्रों को कड़ भी देता है । बालक विचारा न तो बाल सके और न अपने आभ्यन्तरिक सुख दुःख का ध्यान कर सके यह सिर्फ माता के आधीन रहता है चाही माता मारे या जिलार्थ । धार्मी शिक्षा, गर्भ रक्षा, बाल पोषण और स्त्री पुरुष व्यवहार आदि विद्या जो स्त्रियों को पढ़ना अत्यावश्य है यह तो जाता रहा अब तो केवल गङ्गा नहाना, मंदिरों में जा के कथा सुनना पति रोंके तो चूल्हा और घर के वरतन कोढ़ना, फलनियों के शिरे बलिराजा भावधै, फलनियों तो दुसा माया का पूजत

घों और फलाने याया जी तो ऐसे हैं कि जन्म के यांक को लड़का देते हैं यही कुसङ्ग और कुसंस्कार रह गया । यही कारण है आजकल स्त्रियों के अति प्रसङ्ग होने का यया इतिहास है कि बिना महामायाकी आज्ञा पर के मद कुल कर तो सके, जहां बालक बीमार हुआ और उन के स्वामी जी बोले कि लाओ किसी सतवैद्य या डाक्टर को दिखलायें तहां फूट घुडुक उठीं कि कुछ जानंत यूक्त ही कल घण्टिया की गाई आई रही सो देख लिहेअ है । फिर यया पूछना है ओढ़ चदरिया तैय्यार है गई । हमारे इस देश के स्त्रियों को ऐसा टोना टागरका दूढ़ विश्वास पड़ गया है कि जहां देखो अच्छे २ घर की स्त्रियां बालकों को बगन में दयाए और हांप में घोड़ी सी बड़न्ही की सींक लिये महजित के दर-याजे खड़ी हैं । प्रायः देखने में आता है कि बड़े सवेरे सड़कों पर सड़क बटोरने वाले हलालखोर आदि हाय में झाडू लिये लड़कों को फार रहे हैं । बड़े आश्चर्य की बात है कि अंगरेज और बङ्गालियों के ऐसे खूब मूरत और साफ लड़के जिनको दाइयां गोदों में लिये सड़कों पर टह-लाया करती हैं, कि जिनको अच्छे और बुरे लोग सभी देखते हैं उनके लिये न कहीं टोना न टागर और हमारे इस देश वालों के लड़के जिन की नाक यह रही है । नक्खियां भिन भिना रही हैं, बदन में मैला कुचैला कपड़ा पहना है तैल चभोके चिपड़ों की तइबीज गले में गुंपी है लहसुन और हांग की दुगन्धि देह से निकल रही है, घर के बाहर नहीं आने पाते परंच टोना उन्हें रोज लगता है ॥

जब देखिये एक तो अति काल तक बालक का मुख ढांप कर गोद में दया रखने से बीमारी होती है, दूसरे टोने के भय से, लड़कों को इस कदर मैला कुचैला बनाये रहती हैं कि जिससे अकस्मात एक न एक रोग उत्पन्न हो रहता है, तीसरे जो मांसाहारी गर्मी सुजाक वाले सैकड़ों मुसलमानों के भुंह की भाफ और धूंक कि जिसकी बीजार बालक की मां के मुख तक जाती है, कि जिससे रोग होने का सम्भव है, डाक्टर, हकीम सभी कह सकते हैं । चौथे हलालखोर आदि गीचों के कपड़े झाडू और टाकरों की दुगन्धि, पांचवे माता का तीन बजे रात्रि

से उठ गङ्गा जमुना का गहाना, एकादशी, मङ्गल और एतवार का व्रत अन्न और रूख पदार्थों का जून कजून भोजन, उठे बिना जाने यूँके सेहुड़ के पत्ते का अकंतक पिला देना, इत्यादि ह्य कहां तक कहें हजारों अनाचार हैं । "माता यदि धिप दद्यात् पिता विक्रयते सुतं, राजा हरति सर्वस्वं शरणं कस्य जायते" । माता ही बालक को यदि धिप पिला दे पिता बेध ह्वाले राजा सब छीन ले तो फिर यह किस के शरण में जा सक्ता है ॥

अब कहिये इस प्रकार बालकों को रखने से बर्षोंकर जीवन रक्षा हो सकती है यदि छोट पोटा बच भी गये तो उमर, निर्बलता के कारण बल धीर्य बुद्धि तथा सक्ति उत्तमता अनुकरण उपलब्ध कदापि न होगी । इसी समय से इस देश बालों के लड़कों की सेवा लायक नहीं होती बालक और भी जस २ उमर बढ़ती जाती है तस २ और भी मोटों होती जाती है ॥

यह जो पसुली की बीमारी आज फल प्रसिद्ध है और सूर्य से विद्वान तक यही कहते हैं कि इस लड़के की पसुली चल रही है । इसको सूख गर्म चीज खिलाओ और पेट पर गर्म दवाईयों का लेप करो । परन्तु आज तक किसी ने इस विषय पर ध्यान न दिया कि अमिल में यह बीमारी क्या है और इस बीमारी का हाल किसी ग्रन्थ में भी है या नहीं । ह्य नहीं जानते इस बीमारी का प्रकाशक कौन वैद्य डाक्टर हकीम है जो हर एक औरत मद के मुह से पसुली चली २ सुनाई देती है । इसी भेड़िया घसान से तमान भारतवर्ष तहस नहस हो गया इसी प्रयाग नगर में एक से एक वैद्य धन्वन्तरि बने हजारों रुपये खसोट रहे हैं पर इसकी आलोचना आज तक किसी ने न की । ये जो याव्य रहित पराधीन विचारे हजारों लड़के प्रति दिन अकाल कालग्राम होते जाते हैं इसका प्रतीकार किमी प्रकार हो सक्ता है या नहीं इसी रोग का हवाल यदि किसी सगप कोई प्रथम श्रेणी के यूरोपियन डाक्टर लिख कर गवर्नमेंट में भेज देगा और जैसे माता की बीमारी रोकने के

लिये टीका का प्रकाश हुआ है उसी प्रकार इसका भी टीका या औषध लगाने अपवा बिलाने का दुकन निकल आवेगा तो अन्त में निरुद्यगी लोग लड़कों को लेके भीतर भागेंगे और यही कहेंगे कि सरकार हमारे साथ अन्याय करती है ॥

निस्सन्देह कह सकते हैं कि "पसुली-चली" इस नाम की बिनारी का लेख समस्त वैद्यक के ग्रन्थों में नहीं है पर अत्याश्चर्य्य इस विषय पर है कि पढ़े लिखे वैद्य लोग भी झूटाका कह देते हैं कि इसकी पसुली चल रही है । हिक्मत के ग्रन्थों में कहीं २ पसुली के रोग का यत्र ऐसा लिखा है पर निदान ठीक २ नहीं मिलता । किसी २ देश वाले इसी रोग को हद्दा हद्दा भी कहते हैं । इस रोग की दवाइयां प्रायः लोहार बड़ई डोम चमार कमाई तक बना करके बांटा करते हैं कि जिनसे ह-जायों लड़के विचारे काम आ जाते हैं । इसका संशोधन बिना राजाकी दृष्ट पड़े कदापि होना सम्भव नहीं है । अब हम पाठकगणों के अवलोकनार्थ प्रथमतः बालकों के उन समय रोगों का वर्णन करते हैं जो प्रायः लड़कों को हुआ ही करते हैं और जिनका वैद्यक के ग्रन्थों में प्रमाण भी मिलता है । सुश्रुतादि सिद्धान्त ग्रन्थों के देखने से ठीक मालुम होता है कि सेयाय पूतना आदि बालग्रह के और जो रोग संपान के होते हैं वगैरे बालकों के भी, पर शाङ्गधर आदि छोटे २ ग्रन्थों में पूतना के अन्यत्र बहुत से बालकों के रोग लिखे हैं कि जिनके लक्षण अद्यावधि बालकों में पाये जाते हैं और उसी प्रकार की चिकित्सा से रोग आराम भी हो जाता है । पूतना आदि बालग्रह जिनका घयान बृहत् ग्रन्थोंसे छोटे ग्रन्थ तक सभी में पाये जाते हैं, और जिनका लक्षण फुल २ बालकों में भी मिल जाता है पर चिकित्सा उनका सेयाय झाड़ू फूंक टोटका उतारा के और नहीं है परञ्च ग्रन्थकार ने जिस मतलब से टोटका आदि लिखा है उनका गूढ़ अभिप्राय कभी प्रकाश करेंगे । क्योंकि यहाँ सब से पहिले हमको यही कहिना पड़ता है कि जय तक कुपथ्य से माता के दूध में विकार उत्पन्न नहीं होता तब तक बालक कदापि रोगग्रस्त भी नहीं होता । जिन स्त्रियों के दूध में मात का विकार अधिक हो जाता है

उस दूध पिये बालक का लक्षण यह होता है । दिन प्रति दिन दुबला होता जाय, दस्त दूधरे तीमरे रोज़ हो, पेशाब करते कारो और कम चतरे और गिन्मिनाता रहे ॥

पित्त दूषित दूध पीने से दस्त पतला फटा या पीला या हरा हो, मुह से फटा दूध भी फेंक दे, शरीर गर्म रहे, मुह पर से कपड़ा फेंक दे, और कभी २ पसीना भी आ जाय मूत्र गर्म चतरे ॥

कफ सम्बन्धी दुष्ट दूध के पीने से मुह से छार बहे, हर समय आँ-पाया करै और उबकाय ॥

बालकों की हांफ़ी जिसको लोग पसुली की बيمारी जानते हैं और घड़का जिसे औरतें क्षपेट कहती हैं इस बिमारी में लड़के खेलते २ एक-एक आंग उलट देते हैं और चेहरे का रंग बदल जाता है मालूम होता है कि खतम हो गये मगर जब मुह पर पानी छिड़का जाता है और बदन में हवा लगती है तो फिर होस में आजाते हैं लेकिन यहां की स्त्रियां तो निस्सन्देह इस बिमारी को अढ़ाई घड़ी का नारमिंही टोना जान उसको और भी चारो तरफ से हांप अजबदाहन और मिर्च की धूनी दे कर फौरन मार डालती हैं । प्रिय पाठक गण, दूध में विकार उत्पन्न होने का सूत्राय (प्रथम लक्षण) यह है कि आठ दस रोज़ के वे-स्तरही से बालक की मा के पेट में आगसा जलने लगता है या पेट करोने, लगता है यदि उसका उपाय तरक्षण कर दिया जाय तो न माता का दूधही बिगड़े और न लड़का बिमार हो ॥

उसका उपाय यही है कि जंग्र धात्री (दूध पिलानेवाली स्त्री) के पेट में आंग बल उठे या पेट करोने लगे तब पाय भर गी के दूध में एक तोला मिश्री मिला के पिया देय या मिश्री का सरयत पिला देय या और कोई ठंडी चीज तिला के पानी पिला देय । इसी प्रकार यत्न जलग-उठने के कर दिया करे तो कदावि बालक बिमार न हो । सब को उचित है कि यह बात अवश्य अपनी २ स्त्रियों को जिनका दूध

बालक पीता है। मिरा दे कि जब उनके पेट में आग सा जलने लगे या पेट फटने लगे तो उक्त उपाय में निवारण कर लिया करे। क्योंकि "अग्र मोची सदा सुखी" पहले ही मोच लेने में मनुष्य सदा सुखी रहता है। ऐसा कौन सा मनुष्य है जो यह न जानता होगा कि "गृहे रत्नानि बालके" बालक गृह का एक रत्न है और जिनके गृह में बालक नहीं हैं यह घर धन के समान है, एक पुत्र के लिये लोग लाखों रुपये खर्च कर डालते हैं देवी देवता पीर पैगम्बर मनाया करते हैं यहां तक कि मै स्त्री पुत्रप दिया रात्रि इसी शोध में पड़े रहते हैं और कहते हैं कि हे ईश्वर हमको एक लड़का चाहे लँगड़ाही लूना दे लोग अपुत्री तो न कहेंगे। अब विचार करने का स्थल है कि ऐसा अमूल्य पदार्थ कि जिसके द्वारा पितर तक स्वर्ग जाने की भाशा रखते हैं, वह केवल माता की अज्ञानता से उण मात्र में एक साधारण बिनारी में विचारे अकाल काल प्राप्त हो जाते हैं। हां! "पुत्रशोक महाकष्टम्" ऐसा कौन सा पाषाण हृदय होगा जो माद मर जाने पुत्र के महा शोक समुद्र में डूब कर अस-हन कष्ट को न प्राप्त होगा ॥

यह जो पसुली की बिनारी आज कल समस्त भारत वर्ष में फैली है खास कोई ऐसी बिनारी नहीं है कि जिसमें लड़के मरही जाय। यह केवल रोग के अनभिज्ञता से लोग भ्रम में पड़ उलटी पुलटी औपध करके बालकों को मार डालते हैं। पाठक गण प्रथमतः जब हम सिर्फ आयुर्वेद के दो चार छोटे मोटे ग्रन्थ देख चिकित्सा करना आरम्भ किया था उस अवस्था में हमारी भी यही दशा थी कि प्रचलित गोलियां जो कि लोग अब तक बनाकर लड़कों को दिया करते हैं हम भी देते थे, पर ईश्वर की करुणामय दृष्टि से शीघ्र ही हम को सुश्रुतादि ग्रंथों के अथलोकन द्वारा इस बिनारी का अनुमान हो गया और दोहरे चार लड़कों पर आजमाने से पूर्णतः कुपथ्य जनित रोग निवारक नहीपधि भी उपलब्ध हो गई। उसी समय से आज तक कोई दश हजार लड़के ऐसे न माराम किये होंगे कि जिसे लोग पसुली की दवा खिलाते और करवातेर मारचुके थे एक परिवार और देखा है कि जब अति गर्म दवा

देते देते बालक के अभ्यन्तर गर्मी इस कदर बढ़ जाती है कि बगल में ज्वर मापक तापमान यंत्र (थर्मामीटर) के लगाने से पारद सी नम्बर तक चढ़ जाता है तो फिर उसका बचना बड़ा कठिन हो जाता है ॥

### उक्त रोग का लक्षण यत्न ।

माता के भिदग्ध दूध के पीने से बालक के पक्षाशयस्य वायु कुपित हो पित्त के साथ मिल जाने से छाती का कफ सूख जाता है तब प्राण वायु के अवरोध से स्वास गत वायु का गर्मनागमन कुछ कम होने के कारण बालकों को एक प्रकार की हांपी पैदा होती है तब पेट उनका अति कोमलता के कारण उछलने लगता है उसी को लोग पसुली की विमारी जानते हैं ॥

यह रोग दो प्रकार से होता है एक वायु पित्त के कोप से दूसरा केवल वायु से, पहले का लक्षण यह है कि पेट बहुत अधिक न उछले दस्त पतला हो, पेशाब बहुत गर्म और कम उतरे, गले में कफ का घुर-घुराहट हो या न भी हो पियास से भौंठ चाटे और पानी के तरफ जादा रुजू हो, कपड़ा मुह पर न रख सके और कभी २ घण्टा कर दूध भी न पिये । दूसरे का लक्षण जो सिर्फ वायु से होता है यह यह है कि गले के सूख जाने से दस्त न हो, पेट बहुत उछले, मूत्र अति उष्ण हो और कम मूते और गला सांय २ करे या गलेमें कफ बोले, नाशिका का छिद्र सूख जाय स्वास मुससे जावे और कुछ पेट भी फूल जाता है ॥

### पसुली की विमारी की अनभूत महौपधि ।

जो रोग सिर्फ वायु पित्त के कोप से होता है कि जिसका लक्षण ऊपर लिख चुके हैं, उसका उत्तम उपाय यह है कि पहिले उसका दस्त इस औषध से गाढ़ा और कम कर दे । देक की गरी सूखी ६ मासा,

पुराने आंस के गुठली की गरी ४ मासा दानों को महीन चूर्ण कर ४ मासा मिश्री मिला सब को ६ मासा कर पानी के साथ दिन में ६ भरतवे करके पिला दे । या केवल बेल का मुरदा दे २ मासा करके दिन में ४ भरतवे पानी में घोला कर पिला दे । एकही दो रोज में दस्त गाढ़ा और कम हो जायगा । याद दो रोज के पांच २ दाना शीतल चिनीकी चुकनी दे २ घंटे पर पानी के साथ देकर पेशाब की गर्मी भी छान्ट दे । जब देखे कि इसका दस्त और पेशाब साफ होता है तब तबले में कुछ कफ का चरघराहट बांकी है तब कार्बोनेट आफ सोडा या साफ किया हुआ चज्जीखार ६ रत्ती मिश्री ४ रत्ती दानों को मिला ४ भाग कर पानी के साथ दिन में ४ दफे पिला दे । ऊपर लिखी हुई मात्रा दो वर्ष से ऊपर वाले बालकों के लिये है, उससे कम उमरवाले बालकों को आधा मात्रा देना चाहिये और उसकी मात्रा को गर्म चीजों से परहेज करावे ।

दूसरा जो केवल वायु से होता है उसमें पहिले दस्त सुलागा करावे यह यह है कि दोहा ३ रत्ती, गुलकन्द गुलाब ४ मासा पहिले गुलकन्द को थोड़े से पानी में चोला मल कर छान ले तब उसी में थोड़ा डाला पिला दे । इसी तरह दिन में ३ या चार भरतवे पिलावे । यदि इससे एक रोज में दस्त न आवे तो दूसरे रोज सघेरे रेंही का तेल २ मासा तारपिन का तेल २ चिन्दु थोड़े से दूध में मिला के पिला दे । याद दस्त साफ आने के पूर्वोक्त रीति से शीतल चिनी पिला पेशाब भी साफ कर दे । यदि लड़का कुछ खाता पीता हो तो उसे सूङ्ग की सुलायस खिचरी या साबूदाना दूध मिश्री के साथ दे । निस्सन्देह बालक पांच सात रोज में आराम हो जायगा ॥

आशा है कि हमारे प्रिय पाठक गण इस लेखानुसार उपाय कर बालकों को अकाल काल के मुख से बचाय इसका आन्दोलन अवश्य करेंगे । क्योंकि जीवदान के समान दूसरा दान नहीं है और न जीव रक्षा के बराबर संवार में कोई उपकार है । लिखा भी नन्दपुराण में ॥



“अप्येकं नीरुजीकृत्य व्याधितं भेषजैर्नरः । प्रयाति ब्रह्मवदनं कुलसप्तकं संयुतः” जो मनुष्य एक भी रोगी को औषध द्वारा निरोग करता है वह सात कुल सहित ब्रह्म लोक को जाता है “कपिलाकोटिदानाद्दि यत्कलं परिकीर्तितम् । तत्कलं कोटिगुणितं सेकातुरपिक्त्सिमा” एक कोटि कपिला गौ के दान में जितना कल है, उसका कोटि गुण कल एक रोगी की चिकित्सा में है पाद्मसम्बन्धः “दीर्घंतीव्रामयप्रस्तं ब्राह्मणंगामचापिवा, दृष्ट्वापयिनिरातं कं कृत्यास ब्रह्महाशुचिः” पुरातन कठिन रोग प्रस्त ब्राह्मण या गौ को रास्ते में देख उसका रोग छुटा देने में ब्रह्म एत्या का पाप छूट जाता है । पुरा काल में एही भूमण्डल मध्य में मनुष्यों के कल्याण एवं देह रक्षार्थ निमित्त अनेक महर्षि यह यज्ञ द्वारा अनेकानेक द्रव्य तथा शारीरिक परीक्षा कर अपघ्नं वेदान्तर गत आयुर्वेद नामक प्रतिष्ठित शास्त्र मिर्यात किया तद्वारा अष्टपर्यन्त दयावल्गुमी प्राज्ञ वैद्य वर देश काल के अनुसार प्राणी मात्र का दुःख हरण करते आये । अल्प काल से समुद्र तुल्य आयुर्वेद शास्त्र का शंका समाधान एवं समालोचना न होने से प्राय लुप्त ही हो गया ॥

### धातु शिक्षा ।

सब से पहले इसके लिखने का अभिप्राय यह है कि उत्तमोत्तम स्वास्थ्य सभी को लाभ हो सकता है जिसके पूर्णसु महर्षि का उद्योग जन्म से यथा मार्गधान ही से किया जाय, क्योंकि “द्विन्नेमूलेनीय पत्रं नशाखा” इसके जड़ का मजबूत होना अत्यावश्य है । और यह सभी जानते हैं कि मालकों के भीतरी पीड़ा का हाल जानना हर एक का काम नहीं है ? सेवक संग दीर्घों के जिन्हें आयुर्वेद का पांचवा अंग कीर्णभृत्य नामक तंत्र में सूय अभ्यास हो पर इस बात का महा रोद और अत्यंत शोक है कि हमारे इस देश के वैद्य लोग शुश्रुतादि आयुर्वेद के अमृत सरोवर में स्नान न करने से यह तंत्र बिलकुल नहीं जानते इसी से

अपकीर्ति और अपयश का टीका लगाये फिरते हैं कि जिसमे हवरे के नहाने वाले (धर्मकार कर्मोंहर) भी चिनाते हैं । बाल-चिकित्सा पर ध्यान देना बच्चों को क्या गृहस्थ मात्र को भी उचित है । बालकों की अवस्था तीन भाग में विभक्त है ॥

पहली शिशुता, जोकि जन्म से दो वर्ष पर्यन्त जब तक कि दूध के समय दांत न निकल आयें ॥

दूसरी कुमारता, अर्थात् दो वर्ष से सात आठ वर्ष पर्यन्त जब तक कि दूध के समय दांत ग्रहण कर ठहराऊँ दांत सध न आजायें ॥

तीसरे केशोर, जो कि कुमारता यौतने के उपरान्त पन्द्रह सोलह वर्ष पर्यन्त की अवस्था गिनी जाती है ॥

अब हम शिशु संज्ञक बालक की जन्म समय से लेकर जब तक कि दूध के समय दांत न निकल आयें पूरी और परिश्रित चिकित्सा लिखते हैं । पाठक गण अपनी २ स्त्रियों को इसे अवश्य पढ़ावें ॥

### स्नान ॥

जन्म हुए बालक को उसी समय स्नान कराना अच्छा नहीं । प्रायः स्त्रियाँ ठंडे पानीसे भी नहयातीं या धो डालती हैं; पर इससे उपकार न होकर और अगहित होता है जैसा कि आंख और फेफड़े में जलन इत्यादि । परंश अति गरम जलसे भी नहयाना उचित नहीं है क्योंकि इसे भी रक्तके अति कोमलता से बच्चे के शरीर में ददोरा या दागा २ सा निकल आता है । इसलिये केवल पानी की जराया धिकाले जैसा कि आड़ेमें प्रातःकाल में फूपका जल उष्ण होता है । आजकल जन्म हुए को दाईं लीग सायुन लगा के नहलाती हैं पर याद रखना चाहिये कि सायुन बच्चे के आंखमें न जाने पाये । इस प्रकार नहयाना उततम है कि

एक किमी पात्र में शीतगर्भ जल भर जन्मतुष्ट बालक को सूष नह्वया कर तमाम मैल साफ करदे क्योंकि जो धात्री डर से अधिक जल में न नह्वया कर ऐसाही धोना के रहने देती हैं, इससे मैल जम कर त्वचा में अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं । बच्चे को नह्वाने के बाद बहुत कोमल क पड़े के टुकड़े से आहिस्ते २ रगड़ के चमड़े का मैल पांछ लेना चाहिये ताकि कुछ गर्भ के मैल का अंश न रहजाय ॥

एक घार प्रातःकाल बालकों को शिर से पैर तक रोज नह्वाना चाहिये । बहुत सी औरतें जानती हैं कि बालकों को रोज २ नह्वानेसे सर्दी और कफ खांसी हो जाती है ? सो भूल है, बल्कि चौथे आठवें न ह्वाने, से बेशक बालक बीमार हो जाता है । ऐसा देखने में भी आया है रोज २ जल द्वारा सफाई न रखने से बालकों के शिर में मैल जम कर फुन्सियां निकल आती हैं जिसे वैद्यक में उपशीर्षक (चांडचूद) कहते हैं इसी प्रकार गुदा में मैल जमकर गुदपाक (दिशाकेजगह घाय) और कान के पीछे मैल जमकर कनकटी हो जाती है । हां इतना अवश्य करना चाहिये कि जन्म समय में या जाड़े के ऋतु में बालक को स्नान कराया मुलायम कपड़े से बहुत शीघ्र तमाम शरीर पोंछ ले बाद इसके धात्री अपने हाथों को आग में सेंक ले ताकि फिर ठंड़े २ हांघ बालक के शरीर में न लगने पावें, इस प्रकार करने से अवश्य बालक बलिष्ठ होता जायगा । हमने प्रायः देखा है कि गरम ऋतु में भी स्त्रियां धात्रीशिता की अनभिज्ञता से दो २ घंटे तक जन्मतुष्ट बालक को आगसे सेंका करती हैं । दो महीने के बाद यदि बालक किसी कारण से कश और आशक्त देख पड़ता हो तो उसके नह्वाने के पानीमें तनिकसा संधानिमक डाल देने से लड़का बली होता जायगा ॥

जिस ढङ्ग से बच्चों को नह्वाना लिखा है यदि वैसाही प्रति दिन स्नान कराया जाये तो अवश्य बच्चा नाना प्रकार के दुःखों से बचा रहेगा इसी से प्राचीन वैद्यकों ने यह यथार्थ गुण जान संस्कृत में जल का नाम

भीषण (जिलाने वाला) कहा है वास्तविक वायु के नीचे जलही जीवों के भीषण का मूल है बिना जल भीषण का प्राणधारण कदापि नहीं हो सक्ता । ठीक समय के स्नान से रोगदोष दूररहते हैं नाड़ियां सतेज और शरीर बलिष्ठ होता है । एतद्देशियों के लिये ऐमाउत्तम और कोई पदार्थ बलदायक नहीं है उसने हे बच्चों की माता यदि प्रीति पूर्वक नि-  
नय बांधके नित्य बच्चों को स्नान कराती नाओगी तो अवश्य बालकोंकी स्वास्थ्यता दिन ३ बढ़ती जावेगी इनमें कुछ भी संशय नहीं है ॥

### स्तनपान का वयान ॥

जो स्त्री दो एक बार बच्चा पैदा कर चुकी हैं वह जन्मतुए बालक को थोड़ा ठहर के स्तन का दूध अवश्य पिलावे । वज्रतेरी गर्भ मिजाज वाली स्त्रियों के एक दो रोज स्तन में दूध आता नहीं, उस अवस्था में जब देखे कि दो एक बार बच्चे के मुखमें स्तन देके चुभलाने से भी दूध नहीं निकलता तब लाचार हो गाय या बकरी के दूध में आधा गर्भ पानी और जरासा रवादार चिनी डाल कर पिलावे । वाद इसके ऐसा उपाय करे \* जिससे माताके स्तन में प्रीघ्रही दूध आजाय क्योंकि जन्मतुए को कुछ रोज तक ऊपर का दूध या किसी प्रकार का खाना खिला कर रखने से बच्चा वज्रत दुर्बल और कमजोर हो जाता है ॥

पर यह बात वज्रत याद रखने के योग्य है कि बिना पानी मिलाइया दूध बच्चे को कभी न पिलावे क्योंकि निखालिस दूध वह हजम नहीं कर सकते । फटा २ दूध की करने लगते हैं और उन्हें अनपचा दस्त आने लगता है और घेठ के दूद के मारे रें, रें, किया करते हैं ऐसी हालत में न स्तन पड़ा तो लड़के खतमही हो जाते हैं ॥

\* दूध में दो तोला घतावर पका थोड़ी सी मिथी डाल कर पिलाना या चार भासा तालमखाना के चूर्ण की फंकी फंका कर ऊपरसे दूध पिलाना, स्तन प्रकृत वाली को दो पीपर दूध में पकाकर पिलाना ॥

जो बच्चा दूध पीने में इच्छा न करे अथवा वह पीने चाहता है और पीते नहीं वगैरह तो भट किसी अच्छे चिकित्सक को बुला के देखा लेना उचित है कि बच्चे की जीभ किसी दूसरे स्थान से जुड़ तो नहीं गई जो वह दूध नहीं पी सकता । यदि जुड़ी हो तो अति सूक्ष्म अस्त्र से उसे चीर कर अलग करदे जिसे कि बच्चा सुख से दूध पीने लगे ॥

यह तो सभी जान सकते हैं कि जहां लड़का पेट के बाहर ज़भा और मां का दूध पिया तहां जखर ही पाखाना फिरेगा लेकिन जब देखे कि जन्म-तुषा अपनी मां का दूध पीने पर भी दस्त नहीं फिरा और एक या दो रोज बीत गया है तो अवश्य है कि लड़के को एक मामा अंडी के तेल में जरा सा सड़त मिला के चटादे या दूधमें घोलकर पिलादे क्योंकि दो तीनदिनतक पेट में पुराना मल रहने से सुख जाता है और उसी से बच्चे को धगुस्टंकार रोग हो जाता है जिसे लोग जमुहा दवाना कहते हैं । ऐसा भी देखने में आया है कि बच्चे को दस्त आरहे हैं और जज़भा दवा लिया है ? कारण यह है कि आज कल धात्रो विद्या के न जानने से स्त्रियों को दिग्ग काल का परिज्ञानता तो जाती रहो परंपरा की अधाधुंध बातें याद हैं, जैसे सोहर ऐसे घर में करना जो घर मकान भर में सब से खराब सकेत अधियारा और कोने में पड़ता है । हवा स्वप्न में भी न जा सके इस तरे मकान बन्द उस पर भी दिन रात राई और लहसुन की धूनी प्रसूती यदि अति गर्म प्रकृति वाली भी हो तो भी उसे भोंका भोंक साठौरा और अजवाइन दिया जाता है । उपरोक्त कारणों से दग्ध ज़भा माता का दूध जहां बच्चे ने पिया भीग्रही दस्त पतला और पेघाव अति गर्म अदहन सा होने लगा, वस शिर में गर्मी पहुंच ताखु (जिसकी ताकत से लड़के दूध पीते हैं) सुख जवड़े का नस खिंच काला बैठ जाता है । इसे भी जज़भा दवाना कहते हैं, और भी बहुत से कारण हैं जिसे यह रोग होता है पर इस दिग्ग के सूख लोग सेवाय भाड़ फूंक के और जानते ही नहीं । फिर यह रोग ऐसा हत्यारा है कि जिस लड़के को होता है उसकी जागही ले के हींड़ता है । और में इसी रोग से हजारों लड़के मरते हैं । पाठक गण यह अमोक्ष्य बातें आपही पढ़ कर न रखदे प-

रुच को प्रोत्साहित करके स्त्रियों को अशुभ पढ़ाई दी । फिर इच्छित स्त्रियां धात्री कम में कभी चैतन्य हो जायगी कि आप को ४) विजिट दिके भी किसी नेम साधव को न बुलाना पड़ेगा ॥

फिर भी कहा जाता है कि माता को उचित है कि नित्य नियम पूर्वक बंधेल से बच्चे को दूध पिलावे क्योंकि प्रायः ऐसा भी देखने में आया है कि बच्चों को मां निरोग रिष्ट पुष्ट और स्तन का दूध बेकार रहित है तो भी बालक बीमार ही रहता है कारण यह कि दूध पिलाने की रीति नहीं जानती ॥

चेत करके दक्षिण बायें दोनों स्तनों का माता पारी २ बच्चों को स्तन पान करा दिया करें यह न ख्याल करें कि स्तन लुड़ाने से बालक रोने लगेगा क्योंकि वैसा न करने से शायद किसी स्तन में दुग्ध इकट्ठा हो जम गया तो फौरन बच्चे दूध स्तन में किसी न किसी प्रकार का क्षेय उत्पन्न कर सक्ता है ॥

बाजी २ स्त्रियों का यह हाल है कि किसी रोज लड़के को तो दिन भर दूध ही पिलाया करती हैं और कभी आलस्यवश दिन में एकदो ही तीन दफे पिला के रहने देती है इससे अनपच होकर लड़के को अशुभ पेट की बीमारी हो जाती है, इस लिये दूध पिलाने का वक्त बांध रखना चाहिये, जैसा कि लड़के को प्रथम महीने में दिन भर में आठ दफे और रात को दो तीन दफे से ज्यादा दूध नहीं पिलाना चाहिये इसी प्रकार ज्यों २ बच्चों कि आयु बढ़ती जाय अर्थात् पांच छः महीने के बाद चार २ घंटे का नियम बांध दे । अक्षर धात्री लड़कों को नौद से उठा के दूध पिलाने लगती हैं या बच्चा सो रहा है और आप चुधर २ उसे दूध पिलाये जाती हैं यह आदत बहुत ही खराब है, और ज्यादा रात बीते पर भी दूध न पिलाना चाहिये, बांद एक पहर के अथवा ग्यारह बारह बजे के बाद अशुभ

रायेंगे या रात को बच्चा से जरा दूर लड़के को सुलावें ताकि वह मत मानता दुग्ध न पिये दूर २ सुलाने से मेरा मतलब यह नहीं है कि दूसरी कोठरी या दूसरे पलंग पर ॥

एक आदत और भी यहां की स्त्रियों में देखी जाती है कि जैसे ही रसोई पकाय कांथ से बाहर आईं उसी समय दुग्ध पिलाने लगती हैं या किसी के साथ लड़ रही हैं और दुग्ध पिलाती जाती हैं ऐसा न चाहिये क्योंकि उस समय उनका दुग्ध विष समान हो जाता है ॥

याद रखना चाहिये कि जब माता को कोई बीमारी हो या तद्विषयत गुस्से या सौच से परेशान हो या व्रत उपवास किये हो तो लड़के को उस समय मा का दुग्ध न पीने देना चाहिये क्योंकि उस दुग्ध के पीने से बालकों को अनेक प्रकार की बीमारी हो जाती है ॥

प्रसूता का शरीर सबल और स्तन दुधार हो तो चार मास पर्यन्त बच्चे को कोई अन्य अहार देने की जरूरत नहीं है यदि सागने के दो दांत निकल जायें तब मा के दूध के सिवा साबूदाना या पुराने चावल का भात दूध के साथ देने से कुछ हर्ज नहीं होता और मा का दूध तभी सुड़ाना उचित है जब लड़के का समय दांत निकल जायें, किसी कारण से मा के स्तन में दूध न होता हो या मा सूतिका ज्वर आदि रोगसे ग्रस्त हो तो चाहिये कि दूध पिलाने को कोई अन्य धात्री रखले या दूध पिलाने वाली सीसी से पिलाये, पर दूध गाय या बकरीही का होगा उचित है और बाजे २ लोग लड़कों को गदही का दूध पिलाते हैं, लेकिन दूध में पानी जरूर मिलाना चाहिये और जैसे २ लड़के की उम्र बढ़ती जाय जैसे पानी का हिस्सा भी कम करता जाय, पानी सिर्फ इस लिये बढ़ाया जाता है कि दूध पतला हो जाय जिससे कि लड़के को आसानी से पच जाय और सुबेरे का दूध तीसरे पहर को और तीसरे पहर का दूध शाम को न पिलाना चाहिये ॥

जब बरखा छः सात महीने का हो जाय तो उसे मा के दूध के

रंच को शिशु करके स्त्रियों को अवश्य पढ़ाईये। फिर देखिये स्त्रियां धात्री क्रम में कैसे चैतन्य हो जायगी कि आप को ४) विजिट दिके भी किसी नेम साधव को न बुलाना पड़ेगा ॥

फिर भी कहा जाता है कि माता को उचित है कि नित्य नियम पूर्वक वंधेल से बच्चे को दूध पिलावे, क्योंकि प्रायः ऐसा भी देखने में आया है कि बच्चों की मां निरोग रिष्ट पुष्ट और स्तन का दूध वेकार रहित है तो भी बालक बीमार ही रहता है कारण यह कि दूध पिलाने को रीति नहीं जानती ॥

चेत करके देखने बायें दोनों स्तनों का माता पारी २ बच्चों को स्तन पान करा दिया करें यह न ख्याल करें कि स्तन छुड़ाने से बालक रोने लगेगा क्योंकि वैसा न करने से सायत किसी स्तन में दुग्ध इकट्ठा हो जम गया तो फौरन वंच दूध स्तन में किसी न किसी प्रकार का कोष उत्पन्न कर सकता है ॥

बाजी २ स्त्रियों का यह हाल है कि किसी रोज लड़के को तो दिन भर दूध ही पिलाया करती हैं और कभी आलस्यवश दिन में फकत दो तीन दफे पिला के रहने देती है इससे अनपच होकर लड़के को अवश्य पेट की बीमारी हो जाती है, इस लिये दूध पिलाने का वक्त बांध रखना चाहिये, जैसा कि लड़के को प्रथम महीने में दिन भर में आठ दफे और रात को दो तीन दफे से ज्यादा दूध नहीं पिलाना चाहिये इसी प्रकार ज्यों २ बच्चों कि आयु बढ़ती जाय अर्थात् पांच छः महीने के बाद चार २ घंटे का नियम बांध दे। अन्तर धात्री लड़कों को नींद से उठा के दूध पिलाने लगती हैं या बधा सी रहता है और आप चुभुर २ उसे दूध पिलाये जाती हैं यह आदत बहुत ही खराब है, और ज्यादा रात बीते पर भी दूध न पिलाना चाहिये, बाद एक पहर के अथवा ग्यारह बारह बजे के बाद अवश्य



रायेंगे या रात को बच्चा से जरा दूर लड़के को सुलायें ताकि वह मृगमानता दुग्ध न पिये दूर २ सुलाने से मेरा मतलब यह नहीं है कि दूसरी कोठरी या दूसरे पलंग पर ॥

एक आदत और भी यहां की स्त्रियों में देखी जाती है कि जैसे ही रसे।ई पकाय आंघ से बाहर आइें उधी समय दुग्ध पिलाने लगती हैं या किसी के साथ लड़ रही हैं और दुग्ध पिलाती आती हैं ऐसा न चाहिये क्योंकि उस समय उनका दुग्ध थिय समान हो जाता है ॥

याद रखना चाहिये कि जब माता को कोई बीमारी हो या तथियत गुस्से या साध से परेशान हो या अत उपवास किये हो तो लड़के को उस समय मा का दुग्ध न पीने देना चाहिये क्योंकि उस दुग्ध के पीने से बालकों को अनेक प्रकार की बीमारी हो जाती है ॥

प्रभृता का शरीर सबल और स्तन दुधार हो तो चार मास पर्यन्त बच्चे को कोई अन्य आहार देने की जरूरत नहीं है यदि सामने के दो दांत निकल आयें तब मा के दूध के सिवा साबूदाना या पुगाने चायल का भात दूध के साथ देने से कुछ हर्ज नहीं होता और मा का दूध तभी छुड़ाना उचित है जब लड़के का समय दांत निकल आवे, किसी कारण से मा के स्तन में दूध न होता हो या मा सूतिका खर आदि रोगसे ग्रस्त हो तो चाहिये कि दूध पिलाने को कोई अन्य धात्री रखले या दूध पिलाने वाली सीसी से पिलाये, पर दूध गाय या बकरीही का होना उचित है और बाजे २ लोग लड़कों को गदहों का दूध पिलाते हैं, लेकिन दूध में पानी जरूर मिलाना चाहिये और जैसे २ लड़के की उम्र बढ़ती जाय जैसे पानी का हिस्सा भी कम करता जाय, पानी सिर्फ इस लिये बढ़ाया जाता है कि दूध पतला हो जाय जिससे कि लड़के को आसानी से पच जाये और सवेरे का दूध तीसरे पहर को और तीसरे पहर का दूध शाम को न पिलाना चाहिये ॥

जब बरधा छः सात महीने का हो जाय तो उसे मा के दूध के

जलावा संवारी खाणा (दाल भात रोटी) आदि भी घोड़ा २ खिलाना प्रारंभ करदे और पुराने गह्वीन चावलका भात और दूध खिलाना बच्चों को अति लाभ दायक होता है, परन्तु यह बांध कर खिलाना बहुत ज़रूर है । बहुत सी औरतें बच्चों को ज़बरदस्ती ज्यादा खाना खिला देती हैं इस वास्ते कि लड़के मोटे ताजे हो जाय, ऐसा समझना ग़हा भूल है, क्योंकि जितना पच सके उतनाही खिलाना अच्छा है । जियादे खिलाने से लड़के का पेट निकल जाता है, गला पतला और देखने में लड़के दशाहीन मालुम पड़ते हैं, इस लिये कम और दिन रात में सिर्फ तीन या चार दफे खिलाना उत्तम है, और यह बात भी याद रखने के योग्य है कि जब तक लड़का दशधर्य का न हो जाय बिना दूधके खाना कभी न देना चाहिये, कीड़े २ दूध न देकर सांस का जूम बच्चों को पिछाते हैं परन्तु यह बच्चे के पक्ष में पथ्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि उससे पेट में अम्ल (खटा रस) उपजता और पेट फूलता है, और छांट भी हो जाती है, एवं कभी २ पेट में पीड़ा और सर्रोड़ भी उठने लगती है । लेकिन दूध भी अनेक गायों का या गाय बकरी भैंस का एक में मिला के देना अनुचित है सिर्फ एक ही गाय या बकरी का दूध देना चाहिये । जिस दोहनी में दूध दुहा जाय अथवा जिस पात्र में दूध रक्खा रखा करे उसको चेत करके देख लेना चाहिये कि भीतर मैग तो नहीं जगा है । मैल जमे और बिना जाग के सँके दोहनी में का दूध शीघ्रही पेट में जाके कटकर दहीसा हो जाता है । सांझ सवेरे दोनों बेला नित्य दुध के टटका दूध उसमें जरासी मिश्री और कणिकाभर निमक डाल कर भात के या रोटी के साथ या ऐसाही पिछा देना बच्चोंको बड़ा फायदा करता है । मिश्री से सांघ पुष्ट होता है और नोन से पचने की शक्ति बढ़ती है और पेट में कीड़े नहीं पड़ने पाते ॥

बच्चों को अधिक गोठा और फल फलहारियोंसे रूय परहेज करना चाहिये । यहाँ के औरतों की बान है कि जहाँ लड़का रोया फूट उसके ह्याप में गोठा या कुछ फल का बीज धँसा देती हैं यह नहीं जानती पीछे हमको गिर पर ह्याप घर कर रोना होगा ॥

मीठा खिलाना दांत के हक में बहुत खराब है और इससे शीघ्रही सुखंटी (सिंथ्या) रोग हो जाता है कि जिस बिमारी से आज कल भारतपर्यं के असंख्य लड़के बिचारे अकाल कालवास होते जाते हैं, इस रोग का लक्षण और औपचोगिक लिखेंगे । फल फलहारियों से लड़कों के पेट में बीमारियां हो जाती हैं ॥

### लड़कों को कपड़ा पहिनाना ।

जहां लड़का पैदा हुआ उसी वक्त से यहां की धातु शिवा हीन स्त्रियां बच्चे को शिर से पैर तक ऐसा ढांप रखती हैं कि जिसका कुछ बयान नहीं, यहां तक कि गर्म ऋतु में भी रुईदार या फलालैंग के कन-टोप से हर समय शिरको ढांपे रहती हैं । परन्तु इससे बिगाड़ छोड़ कुछ भी गुण नहीं हो सकता । साधारण रुई के कपड़े के टुकड़े की अपेक्षा फलालैंग अथवा अन्य किसी गर्म कपड़े के टुकड़े से बच्चे का पेट बांधे रखना ठीक है । कारण यह है कि बच्चे का पेट दन्दाया रहता है जिससे उसको सुख और स्वस्थता बाध होती है और सूत्र आदि के द्वारा जो यह भीग भी जाता है तो भी नाभि बन्धी नहीं भीगने पाती, परन्तु उस भीगेहुये को अलग कर दूसरा पहिना देना उचित है । परन्तु याद रखना चाहिये कि उसे बहुत कम के न बांधें क्योंकि कमके बांधने से अंतरी का काम ठीक न नहीं होने पाता विशेष करके यदि अंतरीका कुछ दुख बच्चे को हो गया तो आरोग्य करने में यही कठिनाता पड़ती है ॥

बहुत लम्बे कपड़े के द्वारा बच्चे को लपेट रचना या अनेक कपड़ों से खूब ढांप रचना बिलकुल याहियात है, सिर्फ एक ऐसे चाफ और मुलायम कपड़े से बच्चों को ढांके रहना चाहिये ताकि मच्छर आदि न काटें न तेज वायु बहुत शरीर में प्रवेश करे और छाती पेट एवं पांख सर्वदा ढांके रहना चाहिये पर शिर नेत्र मुख नाशिका और कर्ण (कान) खुला रहना उत्तम है । जो लड़का जन्मही से रुश हो या खंसी आती हो तो जाड़े और सर्पों के दिनों में फलालैंगका टुकड़ा उसे उड़ाये रहना बहुतही अच्छा है ॥

जब देखे कि कपड़े मैले हो गये हैं या पेशाब करने से भीज गया है और न उतार कर दूसरा साफ कपड़ा पहिराया उचित है क्योंकि भीजा या पसीना खाया हुआ कपड़ा बरचे के देह पर पड़ा रहने न पाये ॥

शिर खुला रहे ऐसा सुग कर बहुत से लोग शङ्कित होंगे उन्हें चा-  
हिये कि विशेष कर गर्म ऋतु में मोटे कपड़े की टोपी या कनटोप न  
पहिना के पतील भूत के कपड़े की टोपी पहिनाया करें, क्योंकि मोटी  
टोपी या कनटोप पहिना रखने से भाये में गर्मी पहुंच पसीना चुचुका  
जाता है बाद वही पसीना शीतल हो फिर उसी गर्म भाये में सुष्क हो  
जाता है उसी गर्मी शर्दी के योग से बरचे की नाक बहने लगती है ॥

जिम घरमें लड़के रहते हों यह घर खूब साफ और हवादार होना  
उचित है । रात को लड़के गर्मी से रोयें तो उन्हें पट्टा फल कर हवा  
देनी चाहिये । जब चौदह पन्द्रह रोज के लड़के हो जाय तो उन्हें गोद  
में बाहर ले जाकर हवा खिलानी चाहिये, पर यहां की दुष्ट स्त्रियों के  
सारे लड़के बिचारे यहीं बाहर नहीं निकलने पाते हैं, जहां कोई भी  
बाहर ले चला यहीं लाय र कर दीड़ी खबरदार बाहर न ले जाओ क-  
लनियां बड़ी टोनहाइन है देखते टोना लगाय देई । हे ईश्वर दयानिध  
भारत वर्ष से कब यह कुसन्कार दूर होगा ॥

### दांत निकलना ।

बच्चों को दांत निकलने के समय भी बड़ी तकलीफ होती है, प्रायः  
एतद्देशीय अशिक्षित स्त्रियां दांत आने के पूर्व की अनेकानेक उपद्रवों  
को टोना और नजर सगुन बस फाड़ही फूक के भरोसे में पड़ कर बाल-  
कों के जीवन से हाथ धो बैठती हैं, दांत निकलने का समय सब बाल-  
कों का एक सा नहीं होता, किसी को तो सातवे आठवे महीने में  
दूध के दांत निकलने लगते हैं, कभी ऐसा देखा गया है कि तीस चार  
मास के भीतरही बच्चों का दांत निकलना प्रारंभ हो गया है । आज  
तक देखने में नहीं आया पर सुना है कि बाजे बरचे पेट ही से दांत

लिये जाये हैं । अस्तु पर ऐना यच्चा बिरलाही कोई जन्मता होगा और यह भी कह सकते हैं कि पेट ही से उत्पन्न दांत शीघ्रही फूट भी जाता होगा । किसी २ यच्चे को एक दो बरस इस्से अधिक बर्ष होने पर भी दांत नहीं निकलते केतनों के जवानी पर दुग्ध का दांत निकलता है किसी डाक्तरी पुस्तक में लिखा है कि फ्रांस देश में एक युद्धिया के दुग्ध के दांत पचासी बर्ष की अवस्था में निकले थे, किसी २ ग्रंथकारों का कथन है कि केतनों के जन्म पर दांत ही नहीं निकलते ॥

बालकके दन्तोत्पन्न का शुभाशुभ फल भी कई एक ग्रंथों में लिखा है, जैसे, यदि बालक दांत समेत जन्मे तो उसका जन्म राक्षसका जानना और उससे अनेक जीवों का लेश पहुंचे और माता को शीघ्र ही नाश करे । प्रथम द्वितीय और तृतीय मास में बालक के दांत निकले तो पिता का नाश करे चाहे वह पिता सूर्य के समान तेजस्वी क्यों न हो पर वह बालक यम समान है निश्चही पिता का प्राण हरै । चतुर्थ मास में दन्तोत्पन्न होने से निश भ्राता को नाश करता है । पञ्चम मास में मामा को और षष्ठम मास में माता पिता के घन का नाशक है । अगर सातवे मास में बालक के दांत निकले तो अवश्यमेव दासत्व का प्राप्त ( किसी का सेवा टहल करने वाला ) हो । अष्टम, नवम, दशम, एकादश, द्वादश, त्रयोदश, और चतुर्दश इन महीनों में दांत के निकलने से बालक सौभाग्य युक्त अनेक सुखों के भोगने वाला होता है, निपिट्टु भासों में दन्तोत्पन्न होने का शान्ति भी ग्रंथकारों ने लिखा है पर उसके लिखने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ी ॥

दुग्धके दांतोंकी संख्या १० ऊपर और १० नीचे मिला कर २० होतीं है । तिनमें बीच वाले साम्हने के चार २ दांतों को राज दन्त और उनके पास के एक इधर एक उधर इस क्रम से दो २ दांतों को कुक्कुर दन्त (भेदन दन्त) कहते हैं और दोनों तरफ के दो २ दांत इसी प्रकार नीचे ऊपर मिला के दांतों की चौगढ़ (पियन दन्त) के दांत कहते हैं । उनके उत्पत्ति का क्रम प्रायः यही देखने में लाया है कि पहले नीचे की बाढ़

ऊपर के दांतों के मध्य का देा २ दांत सम और बाद इसके पहिले ऊपर अनन्तर नीचे के निकलता है इस क्रम में प्रायः दो वर्षों में समग्र दांत निकल जाते हैं । दांत निकलने के समय अक्सर बच्चों को उबरा, खांसी और दस्त पतला होने लगता है । जब देखे कि उक्त विमारियां दांत के वजे से हैं और दांतों की जड़ का मांस फूला एवं छूने में गर्म और पीड़ा बोध होता है मस्कुल के उस स्थान को जहां पर दांत बिचे रहते हैं सूक्ष्म छूरी से चीर देना चाहिये । लेकिन ख्याल रखना चाहिये यदि मस्कुल फूला और गर्म न मालुम होता हो तो कदापि न चीरे और न अँगुली से दबावे क्योंकि यहां कि स्त्रियां चिरा न देकर प्रायः अँगुली से फूले हुए मस्कुल को दबा देती हैं ताकि घमड़ा फटकर दांत आसानी से निकल जाये पर इसमें चीर देना कहीं अच्छा होता है ॥

दांत निकलने के समय बच्चा जो चीज हाथ में पांभता है उसे मुह में डाल के मस्कुल के नीचे दांतों की जड़ में रख पांभने लगता है । लेकिन यह वस्तु कड़ी हुई तो अपने दरेरे से दांत जल्द जाने में अधिक बाधा करता है इसमें छोटी और कड़ी कोई वस्तु भूल कर भी लड़के को न दे थापद घोसे से गले ही में चला जाय, सब से उतम यह है कि एक रबर का गेंदा या फङ्गण बना कर बच्चे की कलाई में पहिराय दे ताकि उसी को धारम्भार मुह में डाला करे । एक घात और भी देखने में आती है कि प्रायः लड़के दांत निकलने की दशा में अपनी अँगुलियां अँगूठा मुह में डाल पिया करते हैं । सो उसे न छुड़ाना अच्छा है, कारण यह है कि एक तो दांत निकलने की व्यथा शांत रहती है, दूसरे दांत निकलने में हित होता है, तीसरे मुह से लार बहने लगता है, उस अवस्था में लड़कों के मुह से लार बहना बहुत अच्छा होता है । यद्यपि अधिक लार बहा करने से बच्चे की छाती पर का कपड़ा भीग जाता है, परन्तु लार के बहने से तालू ओदे रहते हैं और आहार की पचन शक्ति बढ़ती है लेकिन बच्चे के मां को यह भी बर्षदा ख्याल रखना चाहिये कि लड़के का मुह तो नहीं आ गया जो लार अधिक बहता है, क्योंकि मुह जाने का लार सियाय हानि के कुछ भी फायदा नहीं दे

सक्ता, यदि हो तो निम्नलिखित उपायों से शीघ्र ही बच्चे के मुह को आराम करना अत्यावश्य है । जो अधिक नार बहने से आरम्भ्वार बच्चे की छाती और छाती पर का कपड़ा भीगा जाया करता है; उसे चेत कर के पीछे लेना और भीगा कपड़ा उतार के सूखा कपड़ा पहिना देना उचित है ॥

एतद्देशीय बच्चों को दांत निकलने की दशा में नाना प्रकारके रोग घेर लेते हैं और उन रोगों से हजारों बच्चे लड़के मर जाते हैं । कारण यह है कि एक तो यहां कि अपढ़ स्त्रियां जन्मतेही से बच्चे को अफीम लिखाना शुरू कर देती हैं कि जिसे दांत अति पीड़ा और जलन के साथ निकलना है । दूसरे चाहे लड़का गर जाय पर मुसकुर कभी न चीरने देगी, तीसरे टोना टागर पर ऐसा दूढ़ बिस्वास पड़ा है कि सिर्फ करवाने ही के भरोसे में बच्चे को खतम कर डालती हैं ॥

माता के दुग्ध विकार से प्रायः बच्चों का मुह आजाता है, सो दो प्रकार का है जो बच्चे के मुख में सफेद गलाहई सी जमी और फटी २ सी देख पड़े यह मुख श्राव है लौकिक में इसे सफेद मुहा कहते हैं इसमें मुह से नार बहुत बहता है और जो घालक के मुख में लाल २ दाने या छाले पड़ जाय उसे मुख पाक ( लालमुहा ) कहते हैं ॥

### चिकित्सा ।

सफेद कत्या ६ मासा, शीतलघिनी १० दाना, कपूर १ रत्ती तीनों को पानी में पीस अँगुली से मुख के भीतर लेप करै ॥

पीपल का छाल और पत्र दोनों सुखाय बराबर ले कूट कपड़ खान कर २ रत्ती के आन्दाज दिन में ४ दफे सहत के साथ घटाने से बच्चों का मुखश्राव आराम होता है ॥

सरिधन, छोच, तिल, मुलहठी, चारो को छः २ मासा ले पाय भर जल में काय कर, उसी काय में रुई भिगा २ बच्चे का मुख दिन में दो

या तीन दफे धोख लिया करे इसके मुख पाक शीघ्रही मिट जाता है । लेकिन बच्चे की मां को परहेज आवश्यक करना चाहिये । दन्त चिकित्सा आगे लिखेंगे ॥

अब सिर्फ यह बात कहना है कि कभी दांत निकलने के समय बच्चों की देह में जा बजा खास कर कानों के पीले छोटी २ फुन्मियां वा खाज उपजती है परन्तु एकाएक किसी भीपघ को लगाकर अराम करना हानि कारक है, उस स्थान पर कोई भीपघ लगाने की जरूरत नहीं है सिर्फ नीम के पानी या साबुन से रोज २ घों देना काफी है और कभी २ जगसा रेड़ी का तेल दे के फोटा साफ कर देना चाहिये, बस आपही निश्चत हो जावेगी ॥



### बच्चों को हवाखिलान ।

अत्यन्त छुट पनही से चाहिये कि बच्चे को नित्य गोद में ले कर शाम सघेरे घर के बाहर किसी स्वच्छ स्थान में जा निर्मल और आरोग्य कारक वायु का सेवन कराये । कितने रोज के लड़के को बाहर ले जाकर हवा खिलाना चाहिये ? यह बात देश काल और ऋतुओं के स्वभाव से साधुम हो सक्ता है । जैसे गर्मी के दिनों में प्रातःकाल और सन्ध्यासमय पन्द्रह बीस रोज के बच्चे को भी गोद में लेजाकर बाहर हवा खिलाना उत्तम है परन्तु जाड़े और बरसात में इतनी अवस्था वाले को बाहर ले जाना अच्छा नहीं है ॥

जब बच्चा तीन चार महीने का हो जाय तब तो नित्यवही प्रतिदिन दोनों समय बच्चे का पांव अच्छे कपड़े से ढांप तोप के गोद में लेके बाहर किसी उत्तम स्थान में घुमा ले जाना लड़कों को जीवन रूपी दृष्टकी जड़ में अमृत का सींचना है । प्रायः देखने में आया है कि जहां बालकों को गोद में लिया बालक खुद प्रसन्न हो बाहर ले चलने के लिये चेष्टा प्रकाश करता है और बाहर ले जातेही बच्चे बहुत सन्तुष्ट और प्रफुल्लित



देख पड़ते हैं । जिस दिन बड़ी ठण्डी हवा चलती हो या गरदा गुबार हो तो बच्चे को कदापि न ले जाना चाहिये ॥

प्रायः हिन्दुस्तानी गँवरदल मर्द और औरतें लडकों को गोद में लेना बिलकुल नहीं जानती हैं और न अँगरेजों के लडकों को गोद में लिये हुए देख शिक्षा होती है । यहां कि जो बेषकूक मजदूरिन या खुद बच्चे की माता बच्चे की जांच फाड़ अपने कमर पर बिठा कर ले चलती हैं बल्कि बच्चे को गोद में लेना जानती हैं, इस प्रकार गोद में लेना लडकों के स्वास्थ्य में बड़ा हानि पहुंचाता है, यहां तक कि फीते के नीचे की नस में अति रगड़ पड़ते २ वही जुवा अवस्था में फ्लीषत्व का रूप दिखलाता है ॥

बचपन ही से अङ्ग का प्रचालन स्वस्थता के लिये आवश्यक है, यही कारण है कि ईश्वर ने बच्चेको जन्मतेही से उनकी प्रकृत हाथ पैर सकेलने और फेकने की करदी है । सबको उचित है कि चेत करके बच्चों को एक छोटे खटोले या चीरस जमीन पर गुलगुला और सांफ़ बिछौना बिछा उतान लिटा दिया करे, तब देखिये बच्चा कैसा हर्षित और प्रफुल्लित हो हाथ पैर ऐंथता और फेकता है और खिल खिला कर हंसता है कि देखतेही धनता है, उक्त क्रिया ( परिचालन ) से बच्चे की आन्तरिक पेशियां बढ़ती हैं और पीठ की रीढ़ एवं हाथ पांय अच्छा बलवान होता है और विशेष बात यह है कि बच्चे का खाना हजम हो जाया करता है ॥

देखिये ईश्वर की कृपा से प्रथमतः बच्चे अनायास स्वभाय ही से बकियां चलने लगते हैं और फिर स्वभायही से क्रमशः कुछ थान खड़े भी होने लगते हैं बाद चलने फिरने की शक्ति हो जाती है भगवान ने जो कुछ चमत्कारी और प्रवीणता किया है सम धन्य है कितनी स्त्रियां बच्चों को बकियां चलने से रोकती हैं इस लिये कि कपड़ा मैला हो जायगा यह नहीं जानती कि बकियां चलने से बच्चों की जांच, हाथ पांय और सभ्य नस रोज बरोज बली होते जाते हैं ॥

यह भी स्त्रियों को जानना अवश्य है कि जब तक बच्चे की पीठ का हाड़ (रीढ़) मजबूत न हो जाय और लड़के कुछ घाम कर स्वयं न राड़े होने लगे तब तक प्यार से बच्चे को बहुत मक्कफोर और न खड़ा करने की चेष्टा करे, प्रायः बच्चों को नादान स्त्रियां दोनों हाथ में पकड़ के नेंदे के समान ऊपर उछाल कर लोफ लेती हैं यह महज नादानी है क्योंकि इस तरह पर बच्चा भयभीत हो जाता है और जत्रु (हँसिया) एवं रक्त के चक्र में व्यतिक्रम पड़ जाता है और दूध पिलाने के बाद भी बच्चे को न मक्कफोरना चाहिये ॥

बच्चे के छेदे रहने का स्थान या कोठरी को न तो चारोतर्फ से ढपा रहना चाहिये कि जिस्से एक बरगी वायु का आना जाना बन्द होजाय और न ऐसाही खोल रखे कि शीतल युक्त वायु सगस्त घर में भर जाय चेत करके बच्चों के लिये एक ठोटीसी मसहरी अवश्य बनवा ले ताकि छेदे हुये बच्चे को मसा मच्छर आदि जीव न काट सकें, यह भी प्रायः देखने में आया है कि तेल उपटन के बाद छेदे हुये बच्चों के खटोले पर अकसर चींटी चढ़ जाती हैं इसलिये मसहरी के चारो पाये के नीचे चार पत्थल की कूड़ी में पानी भर कर रख देना उचित है ताकि कोई जीव जन्तु बच्चे की खाट पर न चढ़जाय, बाकी दूसरे खण्ड में देखो ॥

### वीर्य ।

यह बात प्रगट है कि प्राणी मात्र के लिये आरोग्य और स्वस्थ रहने का मुख्य कारण वीर्य की ताकत है, जिसका वीर्य क्षीण स्वल्प या शुष्क हो जाता है वह अवश्य किसी न किसी रोग में ग्रस्त हो शीघ्रही मृत्यु के कराल मुख में प्रवेश करता है या सदैव के लिये किसी न किसी कठिन रोग में लिप्त हो गृहकार्य देवकार्य और विद्या के पठन पाठन आदि सतकार्य से रहित हो पूर्ण आयु भर उसका जीवन निष्फल एवं दुःखदाई हो जाता है । यह सभी जानते हैं कि समान्यता से वीर्य सन्पूर्ण शरीर में रहता है पर विशेष कर वीर्य वीर्याशय और स्त्रियों

के शुद्ध रक्त में रहता है यदि उनमें क्षीणता हुई तो शीघ्रही शरीर का नाश हो जाता है । जैसे परम शोक का स्थल है कि मनुष्य इस धीर्य के तुच्छ और अमार समझ कर नष्ट और धिनष्ट करने में कुछ भी शंका नहीं करते और कुसंग यम हस्त मैथुनादि या वेश्या गमनादि विषय में लिप्त हो थोड़ेही काल में अपने जन्मात् सुख परम पीरुप और मान बहाई को भी हाथ से रो बैठते हैं । बुद्धिमान को उचित है कि दया धीर्य कभी न नष्ट करें बल्कि जहां तक हो निरन्तर इसके पट्ट करनेहीं की चेष्टा में रहें क्योंकि धीर्यही शरीर का मूल है, धीर्य ही के बल से शरीर में तेज पराक्रम सौंदर्यता और विद्या प्राप्त होती है ॥

कितने भयानक रोग मानव देह में घुस कर शरीर को नाश करते हैं ज्ञान न होने के कारण मनुष्य अकस्मात् कितनी विपदा में गिरजाता है, कोई नहीं कह सकता । जानकर भी कितने आदमी हैं, जो ऐसी विपदा के भय से सतर्क हो कर उनसे बच सक्ते हैं ?

यास्तविक में मनुष्य यह कह कर कि हम इनसे नहीं बच सक्ते हैं, पग पग में रोग यन्त्रणा और मन की यातना आदिक शारीरिक मानसिक अशेष क्लेशों में फँस कर दुःख भोग करते २ इस जीवन की लाशा को समाप्त कर देता हैं । तौ भी जो मनुष्य विचार शील और चतुर होता है, यह सतर्क रह कर और जहां तक हो सकता है इन सारे पापों से बच कर अनेक सुख के साथ जीवन निर्वाह करने में अवश्य समर्थ होता है ॥

जैसाही हो, पाप तो अनेक प्रकार से संचटित होताही रहता है, किन्तु मनुष्य इस पाप या अनिष्ट का कारण सर्वत्र नहीं जान सकता है । जानने की सामर्थ्य भी हो तो भी यह समझ कर कि हम नहीं जान सक्ते, मनुष्य अनेक प्रकार के पापों का भागी बनजाता है । इस लिये इसी अज्ञात या अज्ञान पाप के विषय में ही आज कुछ कदना चाहते हैं ॥

अतिशय स्त्री संसर्ग करने में शरीर धीरे २ टूट फूट जाता है, एस्त

मैथुन करने से भयानक अनिष्ट होता है, भारी खाना खाने से उदरामय ( पेचिस ) उपस्थित होती है, बहुत पढ़ने चिन्ता और शोक आदि के करने से मनोवृत्ति और विचार शक्ति बहुतही निस्तेज हो जाती है, इत्यादि ऐसे २ पापों और उनके कारणों को बहुत लोग जानते हैं और जान कर यथा शक्ति उनसे बचने की चिन्ता करते हैं किन्तु पर-स्त्री विषयक चिन्ता और देहस्थशक्त घातु को तेज करनेवाले बहुत कारणों से मनुष्यों का जो अनिष्ट होता है, उसे कितने आदमी जानते हैं ! नहीं जानते यही समझ कर हम आज अलक्षित पाप या अनिष्ट के विषय को साधारण मनुष्यों के उपकारार्थ कहना चाहते हैं ॥

महात्मा चरक ने कहा है ।

रसद्वजौ यथा दधिं सर्पिस्तैलं तिले यथा ।

सर्व्वानुगतं देहे शुक्रं संस्पर्शने तथा ॥

तत् स्त्री पुरुषसंयोगे चिष्टा सङ्कल्पपीडनात् ।

शुक्रंपच्यवते स्थाना ज्जल माद्र्नात् पटादिव ॥

हर्षान्तर्पात् सरत्वाच्चपौच्छिल्याद्गौरवादपि ।

अनुश्लवन भावाच्च द्रुतत्वान्मासुतस्य च ॥

अष्टाभ्य एभ्य देहेभ्यः शुक्रं देहात् प्रसिच्यते ।

अर्थात् जैसे जल में रस, तिल में तेल और दधि में घी सर्वत्र अनुगत भाव से विद्यमान रहता है । वैसेही शुक्र घातु भी सर्वत्र देह में अनुगत भाव से रहकर चर्म में अधिक रहता है । यही शुक्र स्त्री पुरुष के संयोग चिष्टा संकल्प और पीड़न द्वारा भीगे यस्त्र से जल की नायी अपने स्थान से गिर जाता है । उसी तरह हर्ष द्वारा यह शुक्र भी जल मूत्रम पित्त भारी पशुल और पलायमान हो कर देह से निकलने लगता है ॥

इन्हीं सारे महात्माओं के वाक्य के अनुवर्ती हो कर पुरातन काल से ही हिन्दू शास्त्रों में शुक्र धातु के अत्यधिक रखने के लिये बहुत से उपदेश पाये जाते हैं । आयुर्वेद तो ही ही है, उनके सेवाय वेद पुराण स्मृति, मनुसंहिता आदिक जिस किसी शास्त्र को खोला देखोगे-सारे शास्त्र में ही स्त्री पुरुष के विषय में कैसी २ सुन्दर युक्ति और उपदेश हैं । किसी बयस और कैसी अवस्था स्त्री पुरुष का विवाह उचित है । स्त्री पुरुष के कैसे संयोग से अच्छी सन्तान उत्पन्न हो सकती है, पुरुष के शुक्र और स्त्री के आर्तय में कैसा दीप हो जाने से सन्तान नहीं होती अथवा विकृत सन्तान होती हैं, और दूषित शुक्र और रक्त के संशोधन का उपाय हम जितना कुछ जानते हैं उन सब बातों के विषय में शास्त्राकार कुछ न कुछ आन्दोलन कर गये हैं । इन में शारीरिक सम्बन्ध हेतु वैद्यक शास्त्रों में अच्छी प्रकार वर्णन किया गया है । यास्तविक में वैद्य शास्त्रकार लोगों ने इस विषय में जो २ मूत्र २ तत्त्व का अनुसन्धान कर गये हैं, उसकी तुलना में हम लोग आज कल के चिकित्सक गण कोई नई बात नहीं जानते हैं, क्यों नहीं जानते इस बात को हम धीरे २ यत्नपूर्वक कुछ ही हो, वैद्यकशास्त्र में शुक्रधातु को सर्व्व प्रकार अचल रखने के लिये बहुतही उपदेश हैं ॥

### शुक्र-तस्माद्दिशिष्येण रक्ष्यमारोग्य मिच्छता ।

अर्थात् आरोग्य या सुख की अभिलाषा करनेवाले लोग शुक्रधातु की सर्व्वदा रक्षा करते हैं । क्योंकि शुक्र विशुद्ध न रहने से मनुष्य पुरुषत्व या पौरुष से हीन हो कर एक प्रकार सारे सुखों से वञ्चित हो जाता है \* ॥

\* चाहे कोई हमारी इस बात को यहाँ न माने किन्तु जो पुरुष स्त्री संसर्ग नहीं करता, या जो स्त्री संसर्ग की शक्ति नहीं रखता वह सारे सुख सम्भोग से वंचित रहता है । अतएव वहाँ पर हमारे वक्तव्य का औरही ग-और उद्देश्य है । वह अवश्यही अपने पाठकगणों को किसी न किसी समय बतावेगा ।

यह तो शास्त्र की बात हुई । अब हम इस बात की जाँच करना चाहते हैं, कि आज कल के हिन्दू लोग इन शास्त्र की बातों पर कहां तक चलते हैं । किन्तु जाँचना क्या करें, जिस हिन्दू धर्म की देहाई देकर, जिन शास्त्रकारों के वाक्यों की श्रेयता प्रतिपादन करके आज हम इन सारी बातों का आन्दोलन करते हैं, पर अपशोष, क्या उन बातों के कहने को हमें स्थान मिला है ? कौन हिन्दू सन्तान इस गम्भीर वाक्यों के मर्म को जान कर इनपर काम देगा ? हम यही नहीं कहते कि कोई नहीं सुनेगा । हम कहते हैं कि दो एक मनुष्य को सारी बात पर ध्यान देना असम्भव हिन्दुओं में न सुनने के ही बराबर है ॥

जो है, हम शुक्र धातु के दूषित और नष्ट होने के कुछ न कुछ कारण बतला ही देते हैं ॥

जो इन सारे कारणों में सबसे पहले बाल्य विवाह आदिक कितने एक सामाजिक दोष हमारे सम्मुख खड़े हो जाते हैं, किन्तु हम कहते हैं कि हमारे देश में इस समय बहुत से लोग पूर्ण यौवन अवस्था में भी विवाह करके इन सारे दोषों से नहीं बच सकते हैं क्योंकि जब चौबीस बरस के बलिष्ठ भारोग्य बालक का आठ दश या ग्यारह बरस की कन्या से विवाह हुआ उसी दिन से उस जवान बालक का इस लड़की के साथ विवाह करने के कारण शारीरिक अनिष्ट होना आरंभ हो जाता है । देश की रीति अनुसार वह जवान उसी दिन से उस दुरथ पोष बालिका की जवान स्त्री बनकरने लगता है । उस बालिकाके साथ उनका सहवास तो होने ही लगता है । इसके निधाय कोई २ आदमी पशुवत् व्यवहार करने से भी नहीं हटते इस सहवास से जो अपकार होता है उसे चाहे कोई समझ न सके किन्तु विचार करने से इसका अनिष्ट तो अवश्य ही जान सकेंगे । कह चुके हैं कि इस सूक्ष्म अनिष्ट के विषय पर जाँचना करना इस प्रथम का प्रधान उद्देश्य है । यह तो हमने पहिले कह दिया, कि जैसा तिल में तेल और जल में रस

अनुगत भाव से विद्यमान रहता है, शुक्र धातु भी ठीक वैसेही शरीर में विद्यमान रहता है । तिल या ऊख के पेरने से जैसे तिलका तेल और ऊख का रस एकट्ठा हो कर निकल आता है, शरीरस्थ शुक्र धातु भी ठीक वैसे ही स्त्री पुरुष के संयोग, चेष्टा संकल्प और रगड़ से भाँगे वस्तु से जल की तरह अपने स्थान से गिर जाता है । तिल या ऊख को पेर कर उसी समय उसको न निकाल लें तो थोड़ेही दिनों में नष्ट हो जाता है । देह का शुक्र धातु भी चाहे किसी कारण अपने स्थान से हट जावे यदि उसी समय बाहर न हो जाय तो दूषित हो कर नाना विध रोग उत्पन्न करता है । अथ देखना चाहिये कि नाना कारणों से मनुष्य का धातु अपने स्थान से हिल जाता है या नहीं । कोई पर स्त्री विषय की चिन्ता कर के कोई अपनी बालिका स्त्री के साथ प्रत्यह संसर्ग में ही रहकर कोई शुक्र के उद्दीपक या स्थान भ्रष्ट करने वाले कर्म करके, शरीरस्थ शुक्र धातु को यहाँ से वहाँ करके दूषित करते और नाना प्रकार के रोग कमाने में कभी नहीं चूकते हैं । यह तो सूक्ष्म अनिष्ट की बात हुई अर्थात् इस सारे पूर्वोक्त कारणों से शरीरस्थ शुक्र धातु अपने स्थान से हटाता है या नहीं और हट कर कोई विशेष अनिष्ट करता है या नहीं, यह केवल सूक्ष्म चिन्ता के बिना ऐसी वैसे बातों से समझाना कठिन है । कुछ ही हो, शुक्र योग को रोकने या उसे स्थान से हटाने से केवल अदृश्य अपकारही नहीं होता । इसके लिये कोई एक बाहरी रोग भी उपस्थित हो जाते हैं जैसा कि वैद्य शास्त्र में लिखा है ॥

मेढ्रे वषणयोः शूल मङ्गमर्द्दी हृदिव्यथा ।

भवेत् प्रतिहते शुक्ले विवन्ध मूत्रमेवच ॥

अर्थात् शुक्र के उपस्थित योग के रोकने से पुरुष के अङ्ग और कोष में तीव्र वेदना हृष्ट फूटन और हृदय में वेदना, और मूत्ररोग हो जाता है । फिर कहा जाता है कि जो अनेक समय बालिका स्त्री के साथ बिना संसर्ग के रहते हैं उनको भयानक प्रमेह और धातु का रोग हो जाता है । परन्तु इसी अवस्था से घीरे २ एकशीरा और कोरक आदिक

कठिन व्याधि भी उत्पन्न हो जाती हैं । और शुक्र धातु की इस अवस्था में धीरे २ बौर्य हीन हो जाने में कोई सन्देह ही नहीं है ॥

यहां पर यह विचार करना पड़ता है कि यद्यपि देह में सब से श्रेष्ठ शुक्र धातु में पद २ पर जो दोष उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है, उसे कितने मनुष्य जानते हैं और जानकर भी कितने लोग इन दोषों से बचने की चेष्टा करते हैं । हमारा यहां तक विश्वास है, यहां तक हम कह सकते हैं कि देह में इस प्रकार शुक्र धातु के उत्तेजित होने से भीतर और कभी २ बाहर भी बहुत सा अग्निष्ट होता जाता है ॥

अनेक प्रकार से सिद्ध हो सक्ता है कि हिन्दुओं की देही के अवनति का यही कारण है । विस्तार हो जाने के भय से हमने इस पर और कुछ अधिक नहीं लिखा । जितना कुछ हमने लिखा है उसे पढ़ कर अनेक पुरुष इन दोषों से यथा शक्ति बचने की चेष्टा करेंगे । कुछ ही है, इसके पीछे जो इन स्त्री पुरुष संसर्ग के विषय में लिखेंगे उसमें इन सारी बातों का भी अन्दोलन करते जायेंगे ॥

### स्वप्न दोष चिकित्सा ॥

आज कल यह रोग भी छोटी २ अवस्था वाले पुरुषों में अधिक तर फैला हुआ है । आगे के जमाने में इस विमारी का कोई नाम भी नहीं जानता था और न ग्रहसंघों में इसका कहीं निदान और चिकित्सा है जय से बाल विवाह होना आरंभ हुआ है तभी से इसका भी जन्म हुआ है, इसके अतिरिक्त रोगियों कि अधिकता, सूखता और विषयाओं का भ्रूण, भारत के घन का होम खसम जोरु में जूती जुतवुल और आर्यावर्त की कुदशाओं का प्रघार यह सब बाल विवाह ही से हुआ है अभी क्या कुछ दिन बाद देखियेगा कैसे २ फटार बहादुर पैदा होंगे कि शायद बिलस्त से कुछ ऊंचे हां सेर आधसेर बोक्ता उठाने और भील आधभील चल भी सके ॥



स्वप्नदेाप कई कारणों से होता है एक तो अकाल में हस्तमैथुनादि अनेक संसर्ग से भीर्य का पतन होना, दूसरे तरह बेतरह की चिन्ता, तीसरे बिपयसक्तों की सङ्गति, चौथे भंग चरस चयडू शराब में दिनरात मस्त रहना, पांचवे अपनी स्त्री को देख गुस्सा करना और मा याप से कहना कि हमें खर्चा देओ नहीं तो परदेश चले जायंगे, छठे मा याप की डांट ससुर तुम्हार बिवाह करदिया गीना करदिया मेहर का लैके रही पैदा करी खाय । और भी बहुत से कारण हैं जिन्हें भीर्य देाप के प्रसंग में कहेंगे ॥

### चिकित्सा ॥

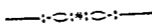
सफेद मूसली २ भाग, मखानाकी ठुरी ३ भाग, तालमखाना ४ भाग, इन तीनों दवाइयों को ले कर कूट कपर छान कर सब की जाधी मिश्री मिला छ २ मासे की पुड़िया बना ले शाम सवेरे एक पुड़िया मुहमें रख पाय भर गी के दूध से सतार जावे इसी प्रकार ३ सहीने यरायर खाने से स्वप्न देाप अवश्य बन्द हो जाता है । परन्तु गर्भ चीज और नशा वर्गैरह से पहरेज करना होगा ॥

बहुत से अनजान लोग रात को सूब सल लँगोट बांध के सोते हैं ताकि खयाब न हो लेकिन इससे और भी होता है । किसी मनुष्य को रात के लँगोट बांध के न सोना चाहिये मध्य यह है कि रात्रिको मूत्र की थैली में मूत्र का अंस अधिक हो जाता है पेशाब छगने पर अंगलस यस यदि उठ कर पेशाब न किया और सो गया तो अवश्य स्वप्न हो जायगा ॥

### अंगरेजी दवाइयों की समालोचना ॥

पाठक गणों के स्मरणार्थ कुछ डाक्तरी औषध का भी गुणागुण प्रकाश करते हैं कि जो आज कल सर्वसाधारण में प्रचलित हैं, पर लोग

## वेदना निवारक मालिस ॥



यदान का तेल २ औंस, कपूर १ ड्राम, छेड़मग आधा ड्राम, एकत्रित करके दर्द स्थान पर मर्दन करें ॥

ऐल किववेस। शीतल चिनी का तेल। इन तेल का रंग विपामेन्ट तेल के सदृश है। सुजाक, प्रनेह और मदर रोग में इस तेल को और २ सूत्र कारक औषध के साथ पिलाने से फायदा होता है ॥

### (ग्नेरिया [सुजाक] मिक्सचर)

शीतल चिनी का तेल एक ड्राम, वेल्सन कोपेवा २ ड्राम, नाई-ट्रिक इपर ३ ड्राम, लायकर पुटाम २० बिन्दु, गोंद का जल ११ औंस एकत्रित कर एक औंस के परिमाण दिन में दो-तीन दफे के पीने से शीघ्र उपकार होता है ॥

ऐल क्लोम। ठयाङ्ग का तेल। इस तेल का रंग सुखा है। इसको विरेक औषध के साथ एक बिन्दु मिला के देने में पेट के दर्द में बड़ा फायदा करता है। इस तेल को रुई के फाड़े से धीरे धीरे दांत के तरे दवाने से दांत के दर्द को फौरन आराम करता है। दांत में फोड़े लग गये हों तो इस तेल का फाड़ा उस दन्त के छिद्र में रख देने से दन्त रुग नष्ट हो जाते हैं ॥

ऐल नटमेग। जायफल का तेल। यह तेल भी किञ्चित् एरिद्रा वर्ण होता है। जब हिजे की बिमारी में शरीर शीतल हो जाता है तो इसको कपूर के तेल के साथ हस्त पाद में मर्दन करने से या एक-दो बूंद किसी हिजे की दवा के साथ खिला देने से फिर शरीर गर्म हो जाता है इनका मात्रा ३ से ५ बिन्दु पर्यन्त अधिक मात्रा खा लेने से मसा करता है—

ज्वर एवं हैजा रोग में यदि शरीर हिमाङ्ग हो जाय तो निम्न-  
लिखित औषध मर्दन करने से यथेष्ट उपकार होता है ॥

जायपाल का तेल १ ड्राम, केम्पर लिनिमेन्ट २ औंस, तारपीन का  
तेल १ औंस एकत्र कर हाथ पैर में मालिस करै ॥

ऐल सिनेगन दालचिनी का तेल । यह भी तैल हरिद्रा वर्ण होता  
है । इसके प्रायः अजीर्णादि रोगों में देते हैं मात्रा १ विन्दु से ३ विन्दु  
पर्यन्त है । इसके भी यदि रुई के फाहे में मोर कर दन्त छिद्र में रखे  
तो दन्तक्षत शीघ्र आरोग्य हो ॥

अभिनिवेश चित्त से ध्यान देकर देखते हैं तो कतिपय अंगरेजी  
औषध ऐसे देखे जाते हैं कि जिनका गुण कथित रोगों पर यथार्थ लक्षित  
होता है पर उनकी वनायत ऐसे टंग से है कि जिसकी व्यवस्था देखते  
ही पुराने लोग घृणा करने लगते हैं । जैसे कि मलहम कोई अंगरेजी  
मलहम ऐसा नहीं है कि जिसमें सुअर की चर्बी न पड़ती है ॥

आइन्टमेन्ट (मलहम) आफ आइंओडिन कम्पौंड इस मलहम का  
रंग किञ्चित् रक्तिसु वर्ण होता है और ॥) का एक औंस (आधो छटांक)  
अंगरेजी दवा खानों में मिलता है । गलगण्ड, गण्डमाला, यकृत (लीवर)  
झीहा (स्लीन), कर्णमूल स्फीक गला और बगल की गिल्टी एवं कोप  
शिरा का सखतपन इन सब रोगों पर उक्त मलहम के मर्दन करने से  
शोषण क्रिया द्वारा चाहे रोग समूल नष्ट न हो परंच उपरोक्त रोगों का  
हेट्टि होना शीघ्र ही दूरी भूत होता है ॥

आइंओडिन २० ग्रेन (१० रत्ती) रेक्टफाइड स्पिरिट १ ड्राम (३० रत्ती)  
सूकर चर्बी २ औंस (एक छटांक) एकत्रित कर घोंट ले पूर्वोक्त रोगों पर  
घोड़ा २ अंगुली से या किसी दूसरे पदार्थ से लेकर दिन में दो तीन बार  
मर्दन करै ॥

आइन्टमेन्ट आइंओडिंहाइंड आफ पुटैस इसका गुण उपरोक्त मल-

हम के सदृश है । विशेषतः इसमें यह है कि बालक के एकत्र मीठा और अमृतदादि रोग में थोड़ा २ मालिम करने से अधिक फायदा करता है । इससे जलन आदिक नहीं होता ॥

आइन्टमेन्ट आफ जिङ्क यह स्वेत रङ्ग का मलहम है । स्त्री-के स्तन का घाय । शिर के घाय दाद रोग क्षत और जिस घाय में पानी सा पुगपुचाता है इस मलहम के लगाने से घाय शीघ्र शुरू होता है और नेत्र के पलक पर इसका लेप करने से नेत्र दाह और सोते समय पलकों का चपक जाना जाता रहता है ॥

× अक्साईड आफ जिङ्क ॥० या १ ड्राम ऐल रोजमेरि. ५ बिन्दु शुगर की चर्बी १ औंस एकत्रित कर लिन्ट या फपड़े की पट्टी कतर उसपर म लहम लगा घाय पर लगा दे ॥

आइन्टमेन्ट वेनाडेना इसका गुण वेदना निवारक है ॥

शरीर के चाहे जिस स्थान में दर्द हो इस मलहम के मर्दन करने से अवश्य फायदा होता है । यह मलहम केशन एकसट बट वेना डेना और सुगर की चर्बी से बनता है ॥

आइन्टमेन्ट मलफर कम्पौंड गन्धक का मलहम । यह मलहम खाज की बिनारी को बहुत शीघ्र आराम करता है । पहिले खजुरी के घाय को गमे पानी और साबुन से सूप धो डाले बाद यह मलहम लगावे । इस मलहम को इस तर्रे बना ले । साफ गन्धक ६ ड्राम, फिट्करी ५ ड्राम सोरा १० ग्रैन, कोमल साबुन ६ ड्राम, ऐलवर्गमेन्ट-५ बिन्दु, सुगर की चर्बी २ औंस इन सब दवाइयों को एकत्र कर सरल में सूप घोट ले ॥

याकी दूसरे खप में देखो ।

## सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मङ्गलाचरण	१	मापन मिथ्री	३६
प्रस्तावना	२	आंघोला का सुरक्षा	"
मुख्य प्रयोगन	७	गोक्षुर पाक	३७
शीथ प्रकरण	"	दूसरा भोजन	३८
दन्तधावन	९	भोजन का तीसरा समय	३९
दन्त मञ्जनादि	१०	केवाळ पाक	"
प्रातःकाल की हवा खाना	"	रात्रि भोजन	४०
जूता पहिरने का गुण	११	अति लाभदायक शिक्षा	"
उड़ी लेने का गुण	"	सुबह का उठना	४६
तेल लगाने का गुण	"	शरद ऋतु के गुण	४८
शिर में तेल लगाने का गुण	१२	आमृद जल की विधि	४९
कान में तेल डोहने का गुण	१४	हेमन्त ऋतु	५०
शरीर में तेल लगाने का गुण	"	सूमली पाक	५१
चन्दनादि तैल	१५	रतियल्लम पाक	"
खान करने का गुण	१६	हेमन्तऋतु का पथ्य	५२
तेल लगाके खान करनेका गुण	१७	यमन्तऋतु	५३
खान करने का समय	१८	मुञ्जिस और जुलाय	"
कसरत करने का गुण	२१	हात्तरी जुलाय	५४
कसरत करने का समय	२३	शीघ्रऋतु	५५
चन्दन लगाने का गुण	२४	पेठे का सुरक्षा	५८
पैर धोने का गुण	"	प्राष्टऋतु	५९
भोजन	२५	शाम के सर्वाङ्ग का गुण	"
भोजन के पात्र	२७	शाम की जेठी	६२
अन्नपाक यंत्र	३१	जलप्रकरण	६३
भोजन करने का समय	३३	जल का नाम	६६
निपिदुग्ध	३४	सर्वसाधारण जल के गुण	"
जलेधी का गुण	३५	तालाय के जल का गुण	६७

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बाघली के०	"	की विधि	८१
कूप के०	"	हिजे की दवाइयां	८३
यमुना नदी के०	६८	आध्यात्मिक शक्ति	८७
गङ्गा नदी के०	"	आध्यात्मिक शक्ति साधन	८९
रोगकारक जलका पद्विधान	"	लडकों की पसुली की धीनारी	९७
अति शीतल जल का गुण	"	पसुली रोग के लक्षण	९७
शीतल जल का निषेध	६९	अनभूत दवा	"
जादा पानी पीनेका निषेध	"	धातु शिक्षा	९९
अद्भुत	"	घालकों का स्नान	१००
पानी से मूसा घालू निकलना	७०	स्तन पान कराने की विधि	१०२
बिना आग के आग जल उठे	"	लडकों का कपड़ा पहिनाने की	
कई ढङ्ग से अक्षरों का उड़ जाना	"	विधि	१०७
मेाग की बत्ती बिना जलाये जल		लडकों के दांत का बयान	१०८
उठे	७१	मुख पाक की चिकित्सा	१११
घरतनों पर चांदी घढ़ाना	"	बच्चों को दूधा खिलाना	११२
घरतम साफ करने की विधि	७२	धीर्य्य प्रकरण	११४
सीसे (ऐने) पर कलई करना	"	अति धीर्य्य निकलने से रोग	१२०
घरतनोंपर रांगेकी कलई करना	७३	स्वप्न दोष	१२०
जरतन सिलघर बमाने की विधि	"	स्वप्न दोष की चिकित्सा	१२१
घुटीन य०	७४	अङ्गरेजी दवाइयों की	
दो चीजों के मिलने से चमत्कार	"	समालोचना	१२४
द्विजा प्रकरण	७५	सुजाक की दवा	"
द्विजा क्यों होता है	७६	अङ्गरेजी तैल और मलहनों का	
सफाई	७८	बयान	"
द्विजा न होने का उपाय	७९		
पर से तराव दूधा निकालने			



## आरोग्य दर्पण ॥

“द्वादश अङ्गों का एकजिल्द”  
द्वितीयखण्ड ॥

जिसमें भोजनान्त में मुरा घोने से लेकर गर्भाधान पर्यन्त<sup>१३८</sup>  
कर्म, अति लाभदायक शिक्षा आदि अनेक विषय  
पूरित पण्डित जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य ने  
लोकोपकारार्थ रच कर प्रकाश किया ॥

आयुर्वेदाक्त औषधालय

शानसेनगञ्ज

प्रयाग

“धार्मिकयन्त्रालय में मुद्रितहुआ”

सिधाय ग्रन्थकर्ता के किसी को ठापने  
अथवा भाषा बदल बदल  
करने का अधिकार  
नहीं है ॥

द्वितीयावृत्ति १००० साह सेप्टेम्बर सन् १८८४ मूल्य १॥

# सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
आचमन	१	समयानुसारं पुष्टियों का धारण	
भोजनान्त में कर्म.	३	करना	२१
भोजनान्त में शयन कर्म	४	ऋतु योग्य पुष्ट	२१
वामपाश्र्व शयन कारण	४	पुष्टियों के धारण करने की अवधि	२१
भोजनान्त में स्मरण	५	पुष्टियों के विशेष गुण	२२
तथा अन्यच्च वर्जित	७	खड़ाऊं	२३
ताम्बूल ( पान ) के २७ गुण	७	सायं संध्या कालं	२३
पान त्याज्य अंग	८	रात्रि में भोजन	२४
पान में घूना आदि लगाने का		मद्यपान	२५
प्रमाण	१०	विधि युक्त मद्यपान का फल	२८
पान खाने का समय	११	अविधि मद्यपान	२८
अमीरी छटका	१२	निद्रा विधि:	३०
गरीबी छटका	१२	शय्या विचारः, शिल्प शास्त्रे	३०
संध्या समय का कर्म	१३	शयन में दिशा का विचार	३१
पीशाक	१३	दीप कालः	३२
छाता का गुण	१७	दीप का मुख	३३
पायताया या मोजह	१७	उत्तम दीप लक्षण	३३
पगड़ी	१८	पुरुष दीप निर्माणे दीपः	३३
भूषण	१८	छालटेग का गुण	३४
पंचरत्नानि	१८	पंखा	३४
रत्न धारण के गुण	१८	दिशा भेद से बाहर के द्वे का	
पुष्ट धारण के गुण	२०	गुण	३५



# सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
आचमन	१	समयानुसार पुष्पों का धारण	
भोजनान्त में कर्म	३	करना	२१
भोजनान्त में शयन कर्म	४	ऋतु योग्य पुष्प	२१
बामपाश्वर्य शयन कारण	४	पुष्पों के धारण करने की अवधि	२१
भोजनान्त में स्मरण	५	पुष्पों के विशेष गुण	२२
सपा अन्यच्च यजित	७	बड़ाऊं	२३
तास्त्रुण ( पान ) के २७ गुण	७	सायं संध्या काल	२३
पान त्याज्य अंग	८	रात्रि में भोजन	२४
पान में चूना आदि लगाने का		मद्यपान	२५
प्रमाण	१०	विधि युक्त मद्यपान का फल	२८
पान खाने का समय	११	अविधि मद्यपान	२८
अमीरी छटका	१२	निद्रा विधि:	३०
गरीबी छटका	१२	शय्या विचारः, शिल्प शास्त्रे	३०
संध्या समय का कर्म	१३	शयन में दिशा का विचार	३१
पीशाक	१३	दीप काष्ठः	३२
छाता का गुण	१७	दीप का मुक्त	३३
पायतामा या मोजह	१७	उत्तम दीप लक्षण	३३
पगड़ी	१८	पुरुष दीप निर्माणसे दीपः	३३
भूषण	१८	छालटेन का गुण	३४
पंचरत्नानि	१९	पंखा	३४
रत्न धारण के गुण	१९	दिशा भेद से बाहर के द्वे का	
पुष्प धारण के गुण	२०	गुण	३५

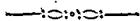
विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कोन की हवा का गुण	३५	त्रिदोष लक्षण	३३
अंजन	३५	उपद्रव	३४
सुरमा लगाने की विधि	३६	नमूरिका ( छोटी माता )	३४
आंख दूखने का उप	३६	धर्म पीड़िका माता	३४
रतींधी अंजन	३६	अमाध्य लक्षण	३५
आदर्श ( आइना )	३७	माता की चिकित्सा	३७
प्रसाधनी ( कंधी )	३७	शीतला की टीका वा उपाय	
शयन विधि	३७	( लिम्फ )	३८
शयने आवश्यक कर्माणि	३८	टीकालगाने के साधारण लक्षण	८०
नैघुन विधि	३९	आयुर्वेद	८१
गर्भाधान के पूर्व स्त्री पुरुष को		आयुर्वेद की परंपरा	८१
अवश्यकीय कर्म	४१	भरद्वाज मुनि	८२
घृत	४४	शरक मुनि	८२
अति लाभदायक शिक्षा	५४	धन्वंतरि	८३
कामानुर के लक्षण	५६	नाड़ी ज्ञान	८३
स्त्री त्याज्य	५७	प्रधान चतुर्दश नाड़ी	८५
शुक्र दोष	५९	दशमायु	८५
गर्भिणी गमन निषेध	५९	नाड़ी स्पर्श विधि:	८५
चुष्टि के जल लेनेका सहज उपाय	६०	प्रकृत्यानुसार नाड़ी	८६
अहिंसा परमा धर्म:	६५	मृत्यु नाड़ी लक्षण	८७
घात शिक्षा	६८	रोग रहित अपमृत्यु नाड़ी का	
बालकों की खांसी की दवा	७०	लक्षण	८७
साधारण लक्षण	७१	हाकूरी मतानुसारेण नाड़ीज्ञानं	८८
अप बिस्कोटक	७३	रोगपरीक्षा	८८
बड़ी माता का स्वरूप	७३	जिह्वा परीक्षा	८९

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
सूत्रपरीक्षा	९०	कफ कोपकारक बर्ग	"
सूत्र लेनेकी विधि शिवसंहितासे	९०	श्लेष्म कोप के लक्षण	"
गल परीक्षा	९१	कफ प्रकृति के लक्षण	१०३
बर्ण परीक्षा	९२	हाकृरी मतसे कफप्रकृतिके लक्षण	"
स्पर्श परीक्षा	९२	रक्त प्रकृति के लक्षण	१०४
जातंत्र परीक्षा	९२	विचित्र प्रकृति	"
स्वप्न परीक्षा	९३	श्लेष्म कोप शृद्धादि द्वारक बर्ग	
द्रुत परीक्षा	९४	विद्यक से	१०५
अशुभ सूचक द्रुत	९५	लक्षण	१०६
शरीर लक्षण	९५	बीर्य्यत्र दोष	१०७
वातक्षय के लक्षण सु० अ० २५	९६	रक्त सञ्चालन	१०९
वात शृद्धि के लक्षण	"	<b>अन्भूत औपधियां ।</b>	
वायुकोप के लक्षण	९७	विषाध	१११
वात प्रकृत के लक्षण	"	दुमरा अंगरेजी	११२
हाकृरीमतसे वात प्रकृतिके लक्षण	"	तीमरा	११३
शृद्ध तथा कोप वायु शमन		चीया	११४
कारक बर्ग	९८	शतायुरि चूर्ण धातु पुष्टि पर	"
पित्त	"	लिङ्ग स्थान करने का लेप	११५
पित्तक्षय के लक्षण	९९	तिला	"
पित्त शृद्धि के लक्षण	"	पाताशयंत्र से तेल निकालने	
पित्त के कोप करनेवाले बर्ग	"	की विधि	"
पित्त दोष के लक्षण	१००	चिकित्सा चम्मिलनी से च्यामन	
पित्त प्रकृति के लक्षण	"	की औपध	११६
हाकृरी मत से पित्त प्रकृति		हिंग्वाष्टक चूर्ण	"
के लक्षण	"	ताकतवर शराम	११७
शृद्ध तथा प्रकोप पित्त के शमन		लाक्षादि तैल	११८
कारक बर्ग	१०१	शीतांमलादि चूर्ण	११९
कफ	"	सदिगादि घटों	"
कफक्षय के लक्षण	१०२	पुराणज्वरे पथ्यम्	१२०
कफ शृद्धि के लक्षण	"		

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अक्षरबट्टी	१२१	दूसरी पिचकारी	"
सुधामागर जक	१२३	कुटा काटने की पिचकारी	"
एश्यड पाक	"	सुजाक पर अञ्जन	१३८
अफीम खानेवालों के लिये		कामोत्पादक बट्टी	"
अफीम पाक	१२४	खाने की विधि	१३९
भांग का पाक	१२५	छयणभास्कर चूर्ण	"
घनाने की विधि	"	खाने की विधि	१४०
कामोत्तेजक चूर्ण	१२६	दृढ़त्व हिंवादि यटी	"
मदर रोग की अपूर्व औषध	१२८	खाने की विधि	"
काळे साँप के काटने का इलाज		कमिनाशक चूर्ण	१४१
धी० सी० से	"	"मास" भाँव की दवा	"
कस्तूरी की पहिचान	"	अंगरेजी काभी रोशनार्द	१४२
कस्तूरी की उत्पत्ति	१२९	दूसरी, तीसरी, चौथी विधि	"
कस्तूरी का गुण	१३०	दन्तदलेक कानी गीली स्याही	१४३
सुगनाभ्यादि बट्टी (कस्तूरी की		प्रीतदलाक वा. सवुग स्याही	"
गोली)	"	दरी स्याही	"
घनाने की विधि	"	छाछ स्याही	१४४
केशर की पहिचान	१३१	सुगरी स्याही	"
सफेदचन्दनके तेलका पहिचान	१३२	आत्मशपाजी	१४५
अंगरेजी इनली की घटनी	"	कुलेल घनाने की सहज उपाय	"
भांग की घटनी	१३३	कुलकी की वरक	१४६
सुजाक की दवा	"	पर के सुषे लायक घोड़ी सी	
पिचकारी की दवा	१३६	साधुन	१४७
पिचकारी सध प्रकार के		इङ्गलेण यात्रा की सुगाढाचना	"
सुजाक की	१३७		

\* इसमें दृष्टि दोष से अंगरेजी को जगह "अंगरेजो" रूप गया, चाहा है कि पाठकगण सुधार लेंगे ॥

# आरोग्यदर्पण द्वितीय खण्ड ।



## आचमन ।

चिकनाई छुटाने के लिये भोजन के उपरांत घने के वेदन से हाथ मुंह गल कर जल से धो डालना उत्तम है । कितने लोग साबुन से भी धोते हैं, बिलायती साबुन तो बेशक अनेक जानघरों के चरघी आदि दुरी वस्तु से तैय्यार होता है किन्तु देशी साबुनमें कोई दुरे पदार्थ नहीं है (चूना, सज्जी, गरी के तेल आदि वस्तुओं से बनता है जिसके बनाने की क्रिया भी आगे लिखेंगे) तथापि लोक मिन्दित होने से त्याज ही उत्तम है ॥

यदि कोई महाशय सफाई के लिये देशी साबुन का इस्तेमाल करें तो कोई हर्ज भी नहीं है ॥

भोजनांत में मुख धोने के समय चाहिये की जो कुछ दांतीकी संधि में च्छिष्ट लगा हो उसे आइस्ते से लकड़ी तिनका (खरया) से या सोने और चांदी के सूक्ष्म मूस सलाई से निकाल कर कुल्ली कर डाले, क्योंकि भोजनके उपरांत कई कुल्लों के करने से, कफ, तृष्णा, मुखका सूखना, नाश हो मुख की शुद्धि होती है । भोजन के उपरांत कितनी कुल्ली करे इसमें प्रमाण है ।

कुर्याद्वाद्दशगरुडूपान्पुरीषोत्सर्जनैततः । सूत्रोत्सर्गेतु  
चतुरो भोजनान्तेतुषोडशः ॥

शीघ्रके अनन्तर मनुष्य को १२ कुल्ली करने और चिर्क सूत्र परित्याग में ४ कुल्ला और भोजन के उपरांत मुख धोने के समय १६ कुल्ला करने चाहिये । बहुत से जमीर लोग जाड़े के दिनों में रात्रि के भोजनान्त में

गरम जल से कुझी करते हैं अगर किसी को सन्देह हो कि करना चाहिये या नहीं ? यह भी शंका दूर किये देते हैं ॥

सुखीष्णोदकगरुडूपः कफारुचिमलापहः । दन्तजाड्यहर-  
द्यापि सुखलाघवकारकः ॥

सुखीष्णोदक अर्थात् सहने लायक गरम जल से जाड़े के दिनों में कुझी करने से कफ, अरुचि, मुख का मैल, दाँतों का ठंढा होना नाश हो के मुख हलका होता है किन्तु गरम दिनोंमें शितारीके अलावा गरम जल से कुझा करना नहीं चाहिये, और सुनिये जो आप लोगों को जानना बहुत जरूरी है । प्रायः आप लोगों ने घेद्यों के मुख से सुना होगा कि कल कलहरी खा के ऊपर से जल नहीं पीना चाहिये इन कहते हैं जल पीना तो निषेध ही है आचमन भी नहीं करना चाहिये क्योंकि जिह्वा के नसें के द्वारा जल गलेमें जाके खांसी आदि रोग उत्पन्न करता है, विशेष कर निम्नलिखित चीजों को खाके तो कभी कुझा न करै ॥

द्राक्षादीनि फलानीचून् पयामूलघृतंदधि । ताम्बूलमौ-  
षधं पत्रं हविर्भुक्तापिनाचमेत् ॥

मुनक्का से लेकर कच्चे कल, जल, ( पींडा ) दूध, मूल ( गकरफंद आदि ) घृत, दही । पान का बीड़ा, औषध, पत्र और हविष्यास पदार्थ को भोजन करने पर आचमन भी नहीं करना चाहिये क्योंकि इन चीजों को खाके ऊपर पानी पीने से अथवा कुझा करने से श्वासकास आदि रोग उत्पन्न हो जाते हैं ॥

यदि किसी अन्न की कण दाँतों के संधि से न निकले तो मनु जी के लेखानुसार उसे पबित्र या दाँतों के समान पबित्र जान कर छोड़ देना चाहिये क्योंकि ताकत करके निकालने से दाँत कमजोर और

सांस युक्त हो जाते हैं । उसी अवस्था में जल से आंखों को धोने से दृष्टि में बल और ज्योति बढ़ती है इसमें भी बचन है यह कोई न कहे कि सम्पादक महाशय के जो जी में आता है उड़ाते जाते हैं ॥

आचम्यजलयुक्ताभ्यां पाणिभ्यांचक्षुषीस्पृशेत् । भुक्त्वापाणि-  
तलेघृष्ट्वा चक्षुषायदिदीयते ॥ अचिरेणैवतद्वारि तिमिराणि-  
व्ययेहति ॥

आचमन करके अर्थात् मुख धोके भीजे हुये दोनों हाथों से नेत्रों को पोंछ लेय, दूसरा बचन है कि भोजन के बाद मुख धोके भीजे हुये अपने दोनों हाथों को रगड़ कर नेत्रों को पोंछ लेने से यह जल बहुत जल्द नेत्र रोग को नाश करता है तात्पर्य यह कि भोजन के उपरान्त कुंसा धुँस करके उपरान्त नेत्र मुख अवश्य धो डाला करे ॥

### भोजनान्त मे कर्म ।

भुक्त्वा शतपदं गच्छेत् वामपार्श्वे तु संविशेत् । शब्द रूप  
रसान् गन्धान् स्पर्शां च मनसः प्रियान् ॥ भुक्त्वावानुपसेवेत्  
तेतान्नं साधु तिष्ठति सु० सूत्र स्यान् अ० ४६

भोजनके बाद मनुष्य को अत्यावश्यक है कि सौ कदम टहलके अति कोमल शय्या पर आर्य करघट लेट रहे, उस समय शब्द अर्थात् शान्ता आदि मने।हर भोलने वाली चिद्धियों की आयाज सुनना, रूप (सर्पौर धुँसकर) देखना, रस (पान आदि) वस्तुओं का रस चूषना, गन्ध (इतरादि का सूँघना) स्पर्श (रुई से भरे हुये कोमल तकियों पर हाथ फेरना) इत्यादि जिससे मन प्रसन्न हो, सेवन करने से भोजन किया हुआ अन्न यथार्थ पच जाता है, बाद, बीच पच्चीस मिनट के फिर, दहिने करघट १०

भिन्नत छेद कर उठ खड़ा हो भोजन के परे गत पद चलने से अन्न स्व-  
स्थ और आयु की वृद्धि होती है, दीढ़ने वाले के पीछे गीत दीढ़ती है,  
टहलने के बाद किंचिन्मात्र पलंग पर छेद रहने से अङ्ग पुष्ट होता है ।  
भोजन के बाद बैठने से पेट में मन्दी, तोंद और तंद्रा बढ़ती है ॥

अन्य मत से भोजनांत में शयन क्रम ।

श्वसासनाद्यौ समुत्तानस्तान्द्विः पार्श्वेतुदक्षिणे । ततस्तुद्वि-  
गुणान्वासे पश्चात्सुप्याद्यया सुखम् ॥

अर्थ—भोजनान्तर सौ कदम झोल कर गाठ स्वास पर्यंत धित छेद  
जावे फिर सोलह श्वास दहनी करघट सोवे, फिर ३२ श्वास निकले इ-  
तनी देर तक बाँई करघट सोवे पीछे अपनी इच्छानुसार चाहिये जिधर  
की करघट सोवे ॥

वामपार्श्व शयन का कारण ।

वामदिशायामनलोनाभेरूर्ध्वोस्तिजंतूनाम् । तस्मात्तुवाम  
पार्श्वेशयीत मुक्त प्रपाकार्थम् ॥

अर्थ—बाँई तरफ नाभी के ऊपर शक्ति स्थान है, इसी से भोजन  
करे हुये मनुष्यके अन्नके परिपाकार्थ बाँई करघट शयन करनी चाहिये ।

अथ शब्द, रस, रूप, रस और गंध इन पांचों को भोजनान्त में  
जो वैद्यकों ने मनुष्यों के लिये सेवन करना हितकारी लिखा है उसका  
कारण दिखलाते हैं ॥

स्वास्थ्य के विषय में एक बिलायती, डाक्टर का लिखवर हमने एक  
किताब में पढ़ा है, उसमें लिखा है कि भोजन के बाद चित्त सेना उत्तम



है, किन्तु उन्हीं ने यथार्थ कारण नहीं दिखलाया कि क्यों उत्तम है लेकिन इतना तो हमने भी अनुभव किया है कि चित्त सेते से आत्मा को आनन्द अधिक मिलता है ॥

शब्द—उत्तम गान और बाजा एवं मने। हर चिहियोंकी बोल चित्त की विश्रुतता, शोक और चिन्ता को हर लेता है । स्पर्श—त्वचा में कोमलता यथार्थ रक्त संचालन और मीठ पैदा करता है । रस गंध—दान इलायची की स्वाद और इतर आदि की सुगंधि सेवन करने से भोजन का जल स्वस्थ और सुख प्राप्त होता है । रूप—तस्वीरों के देखने से दीर्घ एवं काम की वृद्धि और मन प्रसन्न होता है ॥

### भोजनान्त में स्मरण ।

हमारे हिन्दू मत में भी कोई २ बातें किसी स्थलमें चाहें वे शारीरक हों, चाहे धार्मिक ऐसी लिखी हैं कि जिसे सुन कर इङ्गलेण्डीय विदेशीय जन को कौन कहे एतद्देशीय आज कल के नव शिक्षित गण चकित हो झूठ २ कहने लगते हैं, किन्तु हम कहते हैं कि हमारे भूत पूर्व ऋषिगण चंडूबाण नहीं थे उन्होंने जो कुछ लिखा है उसमें भीतरी मतलब अवश्य गंभीर है किन्तु हम लोग यिद्या हीन होने से नहीं समझ सकते हैं तो सिधाय झूठ के और क्या कहेंगे ? हमारे वैद्यक शास्त्र तथा अन्य ग्रन्थों में लिखा है कि भोजन के उपरान्त निम्नलिखित महात्माओं को स्मरण करने से भोजन किया हुआ अन्न अच्छी तरह पच जाता है ॥

अगस्तिं कुंभकर्णं च शनिं च वडवानलं ।  
आहारपाचनार्थाय स्मरेत्सोमञ्चपञ्चमम् ॥  
शर्धातिं च मुक्कान्यां च व्यधनं शक्रमश्विनौ ।  
भुक्तमात्रः सरैद्यस्तु चन्द्रस्तस्य न हीयते ॥

अगस्तिमुनि ( पार्वती जी के खिलाने से भी न अचाने ) कुंभकर्ण ( भोजन करने में प्रसिद्ध ही वे ) शनिश्चर ( यह प्रसिद्ध हैं ) वडवानल

( समुद्र जघप गये ) और पञ्चम भीमसेन महाराज ( जाने और घल देना में प्रसिद्ध ) इन पाँचोंको जो भोजन के उपरान्त स्मरण करके पेट पर हाथ फेरता है भोजन किया हुआ अन्न उमका निर्विघ्न पच जाता है । शर्पाति, सुकन्या, चपयन, इन्द्र और अंशुवती कुमार जो मनुष्य भोजन करने के उपरान्त उक्त पाँचों को स्मरण कर नेत्रों को भीजे हुये हाथों में पोछता है, उसके नेत्र कभी नष्ट नहीं होते ॥

भोजन के बाद अप्रिय शब्दों के सुनने, रत्नानिकर वस्तुओं के देखने और बहुत हंसने से अमन हो जाता है ।

इस स्थल में थोड़ी सी वात और कड़ने की उत्पत्ति है जो आरोग्य दृष्टिको जनों के लिये निश्चायत उपधीगो है वह यह है कि भोजन के उपरांत जब तक भोजन पच कर पेट कुछ हलका न हो दूसरा भोजन न करे और न कुछ फल फलहरो खावे वहाँ तक कि बहुत पेट भरके पानो भी न पिबे, हाँ भोजन के उपरांत पौडे का चूसना और पियास होने पर थोड़ा २ करके कईवार जल पीने से लाभ है किन्तु उपरोक्त कर्मों से अजीर्ण होने का खौफ रहता है । लिखा भी है:—

अत्यस्वु पानाद्विपमाशनाद्वा संधारणात् स्वप्नविपर्ययाच्च ।

कालेऽपिसात्क्यं लघुचापि भुक्तमन्नं पाकं भवति नरस्य ॥

बहुत जल पीना, बिपम भोजन अर्थात् पूर्ण कृत भोजन के उपरि-पक्क मैही किर भोजन कर लेना, मल मूत्र के वेग का रोकना, दिन में सोना रात में जागना और बिना भूख या भूख नार कर या समय पर बाध सेर की जगह उँटाकही खा के रह जाना इन्हीं कः प्रकार के कुर्व-यम से अजीर्ण अग्नि मंदादि रोग पैदा होते हैं, ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, राग, द्वेष और शोक युक्त हो कर भोजन करने से आहार का पाक उत्पन्न न हो अजीर्ण हो जाता है, भोजन के बाद पन्द्रह २ मिनट में दो तीन बार थोड़ा २ जल पीना बहुत फायदा करता है । अगर भोजन के

परे शिर में भारी पन जति मिट्टा, धड़कन और भालस्य मालूम हे। तो मिश्री के सरयत में ज़रासा नीबू का अर्क डाल कर पी जाय या पीठे की गंडेरी चुहे ॥

### तथा अन्यच्च वर्जित ।

शयनंचाशनंचाति नभजिन्नद्रवाधिकं । नाग्न्यातपौनस्रवनं  
नयानंनापिवाहनं ॥ व्यायामंच व्यवायंच धावनंपानमेवच ।  
युहंगीतंचपानंच मुहूर्तंभुक्तवांस्त्यजित् ॥

भोजन करने के उपरांत दो तीन घड़ी तक जब तक भोजन कुछ पच न जाय निम्नलिखित कामोंको न करै, जैसे—घोर निद्रा, पुनः भोजन करना, द्रव अर्थात् अत्यन्त पतले पदार्थों का पीना, आंच के सामने या घाम में रहना जल में तैरना या बहृत स्नान करना, रास्ता चलना, घोड़े हाथी आदि सवारी पर बैठना, कसरत करना और स्त्री गमन करना, दीड़ना, बहृत चलना कुश्ली लड़ना, गाना और पढ़ना आदि कर्म न करै क्योंकि इन सब कर्मों से भोजन का परिपाक नहीं होता ॥

### तांबूल (पान) के २७ गुण ।

तेज, गरम, रोचक, कपाय, तीता, क्षार और हलका है, रक्त, पित्त, और मुह को साफ, कान और सुन्दरता बुद्धि, कफ, दुर्गन्धि हार, पंख्या, हनु, दांत और जीभ का मल, गल रोग, घात व्याधि और अम को नाश करता है गया पान भीठा, कपैला, भारी और कककारी साग के बराबर है । पुराना पान घोड़ा कहुआ हलका और कफ नाशक है । पका हुआ मफेद पान अधिक गुण दायक है । मङ्गला पान कहुआ, दस्तावर, पाचक, पित्तकर और कफ नाशक है और देशावर बङ्गला के अपेक्षा कुछ कफ गर्म और भीठा है ॥

सुपारी—भारी, शीतल, कृशी, कपैली, मोह ( शिर में चक्कर ) सद ( नशा ) कफ और पित्त नाश एवं हाड़ों के घस्यन को ढीला करने वाली है, सब से उत्तम सुपारी जिसके बीच में सड़ी हो, कच्ची सुपारी कफ और अग्नि मन्द करने वाली होती है । बेहतर होगा कि पान के साथ खाने के लिये एक रोज पूर्वही पकी सुपारी को महीन कतर कर गुठाय या चन्दनके अर्कमें न हो तो सिर्फ पानीही में भिगा रखे तथा दक्षिणी ( चिकनी ) सुपारी पान के साथ खाना बहुत ही फायदा करती है ॥

कत्या—कफ और पित्त समन कारी है । खैरसे बृजारों साधारण २ बिनारियां आराम होती हैं जिसका अयान आगे करिगे । खैर बहुत प्रकार के हैं परंतु खाने और दवा के काम में सिर्फ दोही अर्थात् कृष्ण खदिर ( काले रंग का खैर जो उक्त नामक वृक्ष के आम्बान्तरिक काष्ठ के जलीय सार से प्रस्तुत होता है, पांडु खदिर ( पपड़िया खैर ) जो ग्याम्बिर नामक वृक्ष के पत्र एवं तरुण शाखाओं के अग्र भाग के जलीय अंश से तैय्यार होता है । सिंहपुर एवं भारत समुद्रस्थ द्वीपों में बनाया जाता है । कृष्ण खैर की अपेक्षा पांडु खैर उत्तम होता है । एतद्देशीय व्यापारी लोग सभी खैर में हूँटा पत्थर मिळाने हैं इससे बतियों के पहां का खैर बिना साफ किये हुये कापी न खाना चाहिये ॥

चूना—वायु और कफ नाशक है, घाली अयान हात्तरी प्रकर्ण में देखे ला । पान, सुपारी कत्या और चूना मिलजाने से अद्भुत रंग का मन प्रसन्न करने वाला पदार्थ बन जाता है कि जिसके खाने से सुन्दरता, मुष शुद्ध, सुगन्ध और त्रिदोष शांत होता है । पान के साथ प्रातः काल में सुपारी, मध्याह्न में खैर और रात में चूना अधिक खाना चाहिये, पान की हथेली और फुनगी निकाल कर खाया उचित है और इसके तीन पीक पूंक कर शेष रस खाने से अमृत समान गुण होता है क्योंकि "आदीवि-षोपसंवेपं द्वितीयं मेदि दुर्जरं, तृतीयादि तु पातयं सुधानुरत्यं रसायनम्"

## पान के त्याज भेद ।

आयुरग्रे यशोमूले लक्ष्मीमध्येव्यवस्थिता । तस्मादयं तथा  
मूलं मध्यंपर्णस्य वर्जयेत् ॥ पर्णमूले भवेत्ब्याधिः पर्णाग्रे पाप  
संभवः । जौर्णपत्रं हरत्यायुः शिराबुद्धि विनाशिनौ ॥

ऊपर इसे लिख आये हैं कि पान की जड़ तथा अग्र भाग और नश  
तोष के तब खावे, उसे दिखलाते हैं । पान के अग्र भाग में आयु का नाश  
मूल में यश और मध्य में लक्ष्मी (शोभा) की घास रहती है । इस कारण  
पान का मूल मध्य और अग्र भाग त्याग करना क्योंकि पान के मूल मक्षण  
करने से शरीर में रोग उत्पन्न होता है । अग्र भाग सेवन से (पाप) मन  
में ग्लानि और बड़ा तथा घासी पान खाने से आयु का नाश तथा शिरा  
युक्त (जो पान के बीच में लकीर होती है बिना उसके निकाले) खाने से  
बुद्धि का नाश होता है ॥

## पान में चूना आदि लगाने का प्रमाण ।

गुञ्जाक्षं चूर्णकं चैव तत्समं खदिरंमतं । माषैकं क्रसुकं  
सर्वे कर्पूरादिगणं च यत् । मिश्रितं पूगतुल्यं स्यात्ताम्बूले मान  
सौरितम् ॥

ढोंग प्रायः पान खाने का शौक रखते हैं, परन्तु पान लगाना नहीं  
जागते इसी से पान नुकसान करता है । चूना और रौंर आध २ रत्ती  
लगावे । सुपारी का कहरन ६ रत्ती धरै और कपूर, लौंग, छोटी छायाची  
आदि का चूर्ण सब मिलाके छः रत्ती रहे इस रीतिसे पान का तीव्र घ-  
साना चाहिये और बीड़े में दो पान से कम न रहे क्योंकि ठीक चूना  
रहने से पान का पीक अत्यन्त रक्त वर्ण और सुपारी अधिक होने से

रंग का नाश होता है । पान में चूना अधिक लगाने से मुख दुर्गन्धि करने लगता है । निम्नलिखित चीजों के सहित लगाने से बीड़ा जायकेदार और सुगन्धित होता है—जैसे पान सुपारी खैर चूना घनाई तगाकू छोटी लायची जावित्री फंकेल जायफल कस्तूरी छींग कपूर और केशर इन सहित घना बीड़ा मनुष्यको मदान्मत्त आनन्द से आनन्दित करता है ॥

यद्युत से लोग पान न खाके सिर्फ सुपारी चयापा करते हैं । जैसे रीवां आदि प्रदेश के लोग पत्तीखो खाते हैं धर्म सम्बन्धी ग्रन्थों में पान रहित सुपारी खाने का बहुत कुछ निषेध किया है ॥

अनिधाय मुखिपर्यं पुगंखादति योनरः । दशजन्म दरिद्रः  
स्यात्ततश्चाधो गतिं व्रजेत् ॥

पान के बिना जो मनुष्य केवलसुपारी खाता है वह दश जन्म दरिद्री हो नर्क को जाता है, इसमें संदेह नहीं केवल सुपारी खानेसे मुख फीका जिह्वा कठोर शिर में कमजोरी और बुद्धि अम होता है और भी बचन है ।

विनापर्यंमुखेदत्वा गुवाकुंभक्षयेद्यदि । तावद्भवतिचा-  
ण्डाली यावद्गङ्गानपश्यति ॥

बिना पान के जो मनुष्य केवल सुपारी खाता है वह जब तक गंगा जी का दर्शन न करे चाण्डाल रहता है, यह बचन धर्मशास्त्र का है वैद्यक का नहीं और धर्मशास्त्रों में ऐसे २ बचनों को देने का मुख्य प्र-  
योजन ऋषियों का यह है कि लोग उस काम को अवश्य त्याग देय ।  
जैसे:—

वाचस्पती—तांबूलंविधवास्त्रीणां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ।  
तपस्विनांचविप्रेन्द्र सर्वपुण्यहरं स्मृतम् ॥

विषवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वी याने संन्यासी आदि के शरीर का पुण्य पान खाने से नाश होता है । वैद्यकशास्त्र में विधि युक्त पान खाने को किसी के लिये निषेध नहीं किया है, उक्त लोगों को जो धर्मशास्त्र पान खाने से रोकता है मुख्य तात्पर्य यह है कि एक तो पान खाना शृङ्गार है दूसरे काम की बृद्धि होती है इसी लिये निषेध किया है अगर जितेन्द्रिय लोग सिर्फ़ मुख शुष्यर्ष पान खावें तो कोई हर्ज नहीं है ॥

मूत्र की हासत और मल त्याग करने के पीछे पाग न खाना चाहिये । बहुत पान खाने से मुख, जिह्वा, नेत्र, केश दांत और कान में विकार एवं पित्त, वायु, रक्त और शोष (घातुक्षय) रोग की उत्पत्ति तथा बल और क्षुधा का नाश होता है । स्नान भोजन और जल पीने के उपरांत या कहीं से यका आया हो पान खाना अच्छा होता है । “न नेत्रकोपे न च रक्तपित्ते क्षतेनघाते नघिपेनशोपे” आंख रोग रक्त पित्त घाय या फोड़ा फुन्सी, उष्ण वायु, विष और शोष रोगों में पान खाना नुकसान करता है ॥

ग्रंथान्तर मत से पान खाने का समय ।

रतौसुप्तोत्थितेस्नाते भुक्तेवन्ते च संगरे । सभायां विदुषां  
राज्ञां कुर्यात्ताम्बूल चर्वणम् ॥

स्त्री संभोगके समय, शयन से उठ कर स्नान पूजनादि से निवृत्त हो के, भोजन के उपरांत, घमन के अथवा दन्तघायन करके, कुशती और युद्ध में राजा एवं पण्डितोंकी सभामें इतनी जगह पान खाना उत्तम है ।

तमाल पत्र—जहां तक परीक्षा से देखा गया है दवा के अतिरिक्त तमाकू खाने से नुकसान करता है, भारत में बिरलाही कोई ऐसा मनुष्य

निकलेगा जो तमाकू न खाता हो, न अधिक मही ज़रासा पान ही के साथ खा लेते हैं, अधिकश्रम ज़रासा पान ही के सिर्फ पान के साथ तमाकू खाते हैं, तमाकू खाने से दांत, भांघ और मस्तिष्क निर्यत एवं बुद्धि मन्द पड़ जाती है चाहे जो हो यह भी प्रायः देखनेमें आता है कि किसी वस्तु की आदत पड़ जाने से हानि देख कर भी लोगों से नहीं छोड़ा जाता । पढ़िउे तो तमाकू किसी अवस्था में खाना लाभ नहीं यदि खाने की ऐसाही इच्छा हो तो चाहिये कि निम्नलिखित रूप से तमाकू वनाय ले और जरा सा पान में रख कर खाये ॥

### अमीरी लटका ।

प्राथमर् अर्धे तमाकू के पत्ते को ३ सेर पानी में रात को भिगा दे सवेरे उष पानी को फेक दूसरा पानी उतनाही निकुदर डार दे फिर शाम को यह पानी फेक उतनाही और पानी छोड़ रात भर रख छोड़े पुनः सवेरे उष पानी को फेक तमाकू चुषा ले । याद रख तमाकू को महीन कतर कर सेरभर गुलाब के अर्क में धीमी भांघ से पका ले जब डेढ़ पाव अर्क बाकी रह जाय तो सूय मलकर छान ले और फिर उसे धीमी भांघ में पकाना शुरू करे जब सिर्फ एक छंटाक रहिजाय तो सतार ले और सवेद चन्दन का सुरादा ६ मासा अकरकरहा ६ मासा छोटी छायची का दागा १ तोला जायजल ६ मासा जायित्री ३ मासा लैंग ६ मासा केशर ५ मासा कपूर ३ मासा कङ्कोल ४ मासा कस्तूरी ४ रशी चांदी का अर्क २० ताव सध को महीन घूंक उक्त अर्क में चोट उर्द के घराभर गोली बना ले और पान के साथ एक गोली खाये । गरमी के दिनों में लैंग जावित्री आदि वस्तु का मात्रा कम कर दे ॥

### गरीबी लटका ।

१ पाव तमाकू के पत्ते की गरमी पूर्व क्रियानुसार पानी में भिगा



कर निकाल दालें घाद सुलाय के महीन कतर ले कुटी हुई धनिया १ तोला, छोटी छायाची १ तोला, चिकनी सुपारी २ तोला, लौंग ६ मासा, फामफला ६ मासा, केवड़े से घासित खैर १ तोला, सब को महीन कतर तमाल पत्र में मिला छिन्नी में रख दे और जरासा पान में छोड़ लिया करे । कैसाहू उमदा तमाफू क्यों न बनी हो भोजन के उपरांत पान के साथ भी न खाया चाहिये ॥

### संध्या समय का कर्म ।

शरीर आरोग्य रखने के निमित्त गनुष्य को उचित है कि द्रव्योपा-  
र्जनादि कामों से निवृत्त हो कर चार पांच बजे संध्या को शीघ्र के अन-  
न्तर (अक्तर लोग हैं जो दिन रात में सिर्फ एक दफे शीघ्र जाते हैं परन्तु  
दानों समय शीघ्र जाना बहुत अच्छा है) हाथ पैर और मुख धो कर अन्न  
निवारणार्थ और यतौर जलखवा के थोड़ा सा बल बहुत ल मोदक या  
पाय भाधसेर अघावट दूध में एक तोला शहत और तोला भर मिथी  
हाल कर धी जाना चाहिये याद एक पान का थोड़ा खा के ऋतु के  
अनुसार वस्त्र धारण कर पूर्वोक्त कपमानुसार किसी बगीचे में या जहां  
मन प्रमद हो गया खाने के हेतु जायै या किसी दिव्य स्थान में बैठ कर  
एवं वृद्धि करने वाली पुस्तकों को देखे या अपने हृष्ट मित्रोंसे बातलाप  
करै इत्यादि कर्म से अन्न, आलस्य और मन की उदासीगता नष्ट हो कर  
चित्त प्रसन्न, घातु एवं आयु की वृद्धि होती है ॥

### पौशाक ।

वस्त्र धारण करने से जो कुछ ऊपरी सजावट है वह तो हई है  
विशेष इससे शरीर की रक्षा है । आगे समय में इस देश निवासियों के  
सिर्फ पौशाक यह से जैसे धीत (धोती) अङ्गरक्षा (अंगरखा) उष्णीय (प-  
गड़ी) और दोपट (दुपटा) जय से मुसलमानों का राज हुआ तब से सं-

सर्ग, बच भाव्य गण भी कुरता, फतुही, नीमस्तीन, पापगामा, साफा, एमा, इत्यादि पहरने लगे । अंगरेजी राज होने से औरही घाल बदल गई जिसे देखिये जाकट फोट पतलून ही में मस्त हैं, इसी प्रकार दूसरे के राज होने पर वैसाही बस्त्र धारण करने लगीं तथा नुक्रसान पर बिलकुल ध्यान ही नहीं ईश्वर ने मनुष्य को युद्धि दी है कि जिस्ने समस्त पदार्थों के हेतु पथार्थ प्रकृति जान कर अपने लाभ के स्वार्थमें लावे । हे प्यारे भाव्य माइयो भेड़ी मत बनो अपने हित अहित वस्तुओं पर ध्यान दो जो वस्तु श्रेयकार है चाहे स्वदेशीय हो या विदेशीय हो प्रवृण करना और हानि कारक वस्तुओं को सर्वदा तिरष्कार करना युद्धिमानों का काम है ॥

प्राचीन ग्रन्थों के देखने से जाना जाता है कि पूर्व समय में इस देश वाले काले कपड़े नहीं पहनते थे क्योंकि सब स्थलों में श्वेताम्बर, पीताम्बर, रक्तांबर और विद्याम्बर, शब्द पाये जाते हैं । यास्तव में पीशाक देश काल के अनुसार होना चाहिये अति उष्ण देश या गरम श्रतु में श्वेत या सँदली रंग का शीतल और महीन बस्त्र धारण करने से भेषा, प्रृति, शीतलता की प्राप्ति और गरमी की निवृत्ति होती है और सर्वांग में श्वेताम्बर धारण से यश, आरोग्यता, शोभा, आनन्द रुचि, काम और प्रीति होती है विशेष कर वर्षाकाल में तो आवश्यक श्वेताम्बर धारण करना चाहिये । क्योंकि लिखा भी है ॥

शीतकालेतुक्वीशियं क्षपायधर्मवासरे । वर्षासुश्वेतवस्त्रंस्या  
देववस्त्राणिधारयेत् ॥ शुक्लान्तुशुभदं वस्त्रं शीतातपनिवारणं ।  
नक्षेप्यांनचवाशीतं तत्तुवर्षासुधारयेत् ॥

शीत काल में या ठण्ड मुल्कीं में रेशमी कपड़ा पहिनना, गरमी में नेरुवा बस्त्र और वर्षा काल में सफेद बस्त्र धारण करना चाहिये । सफेद

वस्त्र का गुण आयुर्वेद के जानने वालों ने इस प्रकार कहा है कि सफेद वस्त्र शीत और गरमी दोनों को निवारण करता है, न यह गरम है और न शीतल है इसलिये शीत गरम समान गुण विशिष्ट वर्षा काल में सफेद ही वस्त्र पहिनना लाभदायक है ॥

अति शीत देश या ऋतु में वायु और कफ समन करने वाली छाल्टी, टसर्री, रेशमी और पशमीना श्वेत या सुर्ख रङ्ग के कपड़े पहिनना उत्तम है ॥ क्योंकि ।

कौशियं चित्रवस्त्रं च रक्तवस्त्रं तथैव च । वातश्लेष्माहरं तत्तु  
शीतवातविधारयेत् ॥

रेशमी कपड़ा, रंग विरंग के रंगे हुये कपड़े और लाल वस्त्र कफ वात को नाश करता है और शीतकाल या देश में प्रायः शीतवायु का जोर रहता है इसलिये शीतकाल में जहाँतक हो रेशमीही वस्त्र पहिनने चाहिये कोई २ टीकाकार चित्र वस्त्र के स्थान में ऊनी वस्त्र, धनात, लोई, धुस्सा साल, कम्बल आदि का ग्रहण किया है ॥

आयुर्वेद विद्वानों ने कपाय वस्त्र की बहुत कुछ तारीफ की है इस को पवित्र, शीतल पित्त का नाश करनेवाला लिखा है । धर्म के ग्रंथों में सन्यासियों के लिये जो कपाय (गिरुया) वस्त्र धारण करने को लिखा है सिर्फ आरोग्यतार्थ, क्योंकि कपड़ा पहिनने न पहिनने से मुक्ति लाभ नहीं है, और न किसी को नर्कही में जाना पड़ता है ऋषियों ने उसके फायदे पर लक्ष्य करके धर्मशास्त्रों में इसलिये लिख दिया है कि हठात् लोग उसे ग्रहणही करें । कपाय वस्त्र एक तो जल्द मैला नहीं होता, दूसरे उसमें पसीने का बिकार नहीं होता, तीसरे जहाँ जल मिले पछार डाले बहुत जल्द साफ हो जाता है, सायुन बगैरह नहीं खोजना पड़ता, चौथे घतुर्पाश्रम का पिन्ह है ॥

चाहे गर्म ऋतु हो या सर्द जात्र कल जिसे देखिये सभी काले कपड़े पहनते हैं एक यह भी देश में अधिक रोग फैलने तथा निरन्तर रोगी घने रहने का एक मूल कारण जान पड़ता है ॥

क्योंकि काले कपड़े पहनने से रस, रक्त और शीर्ष्यो अल्पि रगर्गि पहुँचती है, कारण यह है कि और २ पदार्थों की अपेक्षा काशी वस्तु से उष्णता अधिक निकलती है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि एक चीकोम टीन का पात्र बनाओ उसके एक ओर काला रङ्गो, दूसरी ओर सफेद कागज चिपका दो तीसरी तर्फ शीशा और चौथी ओर केवल टीन रहने दो फिर उस पात्र में गरम जल भर मुख ढाँप दो और चरमासेटर जिसे गरमी शरदी नापी जाती है उसके निकट चरो जब टीनकी जोर उसे लाओगे तब डिगिरी कम हो जायगी, शीशे के सममुख करनेसे पारा ऊपर को चढ़ेगा, कागज के सामने करने से अधिक ऊँचा होगा और काले रङ्ग की तर्फ ले जाने से सय से अधिक पारा ऊँचा हो जायगा इसके स्पष्ट है काले तर्फ से उष्ण जल की गरमी अधिक निकलती है । इस लिये जाड़े के दिनों को छोड़ और ऋतों में तो काला कपड़ा पहिरना अवश्यही नुकसान करता है क्योंकि काले कपड़े में सूर्य का तेज अधिक प्रवेश करता है इससे शरीर की उष्णता बाहर ज्यादा निकलती है यही कारण है कि उष्ण देश के मनुष्य काले और हिम देश के गीर घुते हैं । यदि कहे कि यूरोपियन लोग तो प्रायः कालेही कपड़े सय दिन पहिनते हैं उन्हें नुकसान क्यों नहीं करता ? कारण यह है कि ये लोग अति शीत देश के रहने वाले हैं । बड़े अपसेस की बात है कि अंगरेज लोग हिन्दुस्तानियों के खाल चलन की एक भी अनुकरण न किया और हिन्दुस्तानियों ने यहां तक नकल किया कि मिलकुल नकल बन गये अर्थात् बिना दुम के लंगूर हो गये धिक्कार है ऐसे मनुष्यों को जो निष्कलंकित अपने देश के प्राचीन रीतों को त्याग देते हैं ॥

## छाता का गुण ।

वर्षानिखरजाधर्म हिमादीनांनिवारणम् । वर्ष्यञ्चक्षुष्यमौ  
जस्यं शङ्करंक्षुधारणम् ॥

छाता धारण करने से मङ्गल नेत्र को हित, उत्साह, बल और सुख प्राप्त वर्षा, धूप, हवा, धून और शीत से रक्षा होती है। बिना छाता के ग्रीष्म काल के धूप में चलने से ज्वर हैजा आदि अनेक रोग होते हैं ॥

इसी प्रकार जाड़े के दिनों में रात्रि में भी छाता लगाना ओस का भयाव होता है क्योंकि जाड़े के दिनों में रात में जय अधिक सरदी पड़ती हो बिना छाता के धूमने से जुकाम खांसी और ज्वर जिसे शारदीय ज्वर कहते हैं होता है। यही कारण है जो बिलायत आदि सरद मुलकों में रात्रिमें भी सर्वसाधारण लोग छाता लगाके बाहर निकलते हैं ॥

आजकल भार्याधर्म में जिस के हाथ में देखिये बिलायती छाता मौजूद है, मौजूद क्यों न रहे, बिलायती छाते में जो रूप रंग सीकियानापन है कभी हिन्दुस्तानी छाते में आ सकता है इसीसे विक्री भी अधिक है, हम ने एक सम्याद पत्र में पढ़ा है कि प्रति वर्ष बिलायत से हिन्दुस्तान में ३ करोड़ रुपये का छाता जाता है। भारतवर्ष में एक से एक घनपान राला पड़े हैं किसी सपूत से यह नहीं बनपड़ता कि छाता बनाने का कल हिन्दुस्तान में खोल दें कि जो करोड़ों रुपये इस के जरियेसे बिलायत जाता है वहीं रहे। खैर इसको हम कहां तक रोवेंगे हमारा काम आरोग्यता के विषय में शिक्षा देना सा देते हैं। गरम दिनों में हरे रंग का छाता लगाना रुधिर और नेत्रों के लिये हित है और काले रंगका छाता जाड़ों के दिनों में रात्रि को लगाना लाभदायक है ॥

## पायतावा या मौजूह ।

पुर्ण काल में यहां पायतावे का व्यवहार कहीं न था अब सभी लोग

इसे पहनते हैं । रात में पापलाया पहन कर किसी ऋतु में न सोना चाहिये, जूता और मोज़हू दोनों पहने हुये राह से चल कर जब कहीं स्थिर बैठना हो तो उस समय सर को मुला रखना चाहिये । जिस के पैर के तलुवे में जलान हो या ज्वर हो उसे मोज़हू पहनना निषेध है परन्तु सर-सामं या उन्माद की विमारी में जब सर पर भीगा कपड़ा रक्खा जाता है उस अवस्था में मोज़हू इस लिये पहिना देना उचित है कि सायत कम-जोरी से श्रंग ददं या शीत न आत्रय ॥

### पगड़ी ।

उष्णीर्षकान्ति क्लृत्केश्य रजीव्रात कफापहम् । लघुतच्छ  
स्यते यस्मा द्गुरु पित्ताक्षि रोगकृत् ।

पगड़ी पहनने से शोभा, बालों की रक्षा और कफ का नाश होता है परन्तु थोड़ी देर तक पगड़ी सर पर रखनी चाहिये सुतरां देर तक धारण करने से पित्त और नेत्र रोग होता है या बहुत हल्की पगड़ी बांधे ॥

परन्तु दक्षिणी ब्राह्मणों को इसका ध्यान भी नहीं देना और तीन र सेरकी पगड़ी हर समय तिर पर धरे रहते हैं ।

### भूषण ।

विधि के साथ स्वर्ण और जवाहिरों का भूषण यथा योग्य पहनने से सुन्दरता सन्तोष, बल, पुष्टी, शोभा, अोज गंभिमान, प्रीति और धन की सृष्टि, पाप अमंगल ग्रह दृष्टि दोष और दुःखम का नाश होता है । आर्य ग्रन्थों के देखने से ज्ञात होता है कि प्राग् के समय भारत में आभूषण पहनने की रीति अधिक थी प्राचीन जी कहते हैं, कि रामराज में ऐसा अनुष्ण कोई न था कि जिस के कान में स्वर्ण कुण्डल और स्वर्ण मकुट न हो। तब समय चोर डाकू का नाम भी न था क्योंकि सब आर्यगण सम्प-

जब वे जय से झेड़ों का राज हुआ चाप ही चाप घोर दुष्ट डाकूओं की भी दृष्टि हुई, इस में शक नहीं कि आभूषण धारण में प्रत्यक्ष उपरोक्त गुण पाये जाते हैं परन्तु आज के समय में उक्त गुण के परिवर्तन में यदां तक अवगुण देखने में आता है कि नित नित हजारों जन लूटे और असंख्य मालक मारे जाते हैं ॥

हमारे विचार में उपरोक्त गुण लाभार्थ पञ्चरत्न में जो लाभ है तत् जहित सिर्फ एक अंगूठी धारण करना युवा पुरुषों को हानिकर नहीं है ॥

क्योंकि गहना पहिनने के कारण कितनी जान जाती है छिपा नहीं है विशेष कर लड़कों को तो कभी गहना पहिनाना नहीं चाहिये ॥

### पंच रत्नानि ।

नीलकं यच्चकंचेति पद्मरागश्च मौक्तिकम् । प्रवालञ्चेति विज्ञेयं पञ्चरत्नं मनीषिभिः ॥

अन्यच्च—सुवर्णं रजतं मुक्ता राजायतं प्रवालकम् ॥

नीलक, हीरा, पद्मराग, मोती और मूंगा यही पञ्चरत्न हैं, दूसरा सुवर्ण, चांदी, मोती, राजायतं और मूंगा रत्नाभावे सिर्फ सुवर्ण लेना ॥

### रत्न धारण के गुण ।

ग्रह दृष्टि हरं पुष्टि करं दुःखप्र नाशनं । पापदोर्भाग्य शसनं रत्नाभरण धारणम् ॥

अंगूठी आदि में रत्नों को गह के पहिनने से सूर्य्यादि गवग्रहों की क्रूर दृष्टि का नाश, शरीर में मलाधान, युरे स्वप्नों का नाश, मन की ग्लानि और दुर्भाग्यता नाश होती है ( गवग्रहों के रत्न यह हैं ) सूर्य का मायिक मणि, चन्द्रमा का मोती, मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, शु-

हस्यति का पुखराज, शुक्र का हींग, शनि का नीलग, राहु का गोमैंद, और केतु का वैडूर्य, जो यह ही खराब दृष्टि हो उन्हींका रवधारण करने से वो प्रसन्न होते हैं ।

### पुष्प धारण के गुण ।

सुपुष्पाणि सुगन्धीनि नित्यं शीर्षप्रधारयेत् । सुगन्धि पुष्प  
पत्राणां धारणं कान्तिकारणम् ॥ आयुष्यं वृद्धिदं पुष्यं मल-  
ज्मी कलि नाशनम् ॥

सुन्दर सुगन्धित गुलाब, चमेली बेला आदि के पुष्प अथवा सुगन्धित पत्रों के शिर पर धारण करने से उन फूलों से माला आदि बना के गले आदि अङ्गों में पहिरने से रूप यौवन प्रफुल्लित होता है, ओकाहे; बालस्य, उदाशीनता और शरीर के दुर्गन्धि का नाश होता है । नेत्रों में तरावटः दाह जलन का नाश और मन प्रसन्न होता है ।

जातीपुष्पं तथा बेला जाम्बजं कुटजं तथा । पाटलञ्च वृ-  
हत्पुष्पं वकुलं चम्पकंतथा ॥ श्रीखण्डञ्च व गौलालं कस्तूर्या  
सह धारयेत् । मन्दार मरुवञ्चैव नीलात्पल कुमुदतं रक्तोत्पलं  
यूथिकाञ्च कुपूरैः सह धारयेत् ।

इस श्लोक का अर्थ यह है कि चमेली, बेला, नारंजी, (कुटज) कु-  
रैया वा इन्द्रजय का फूल, गुलाब, कूजा, मौलसिरी, चम्पा, और गुलाला  
इन पुष्पों के हार आदि गहनों तथा पंसियों में कस्तूरी को सफेद च-  
न्दन में घिस के उन पर सूब छिरक फर पहनने से अथवा पुष्पों के पं-  
सियों की हवा खाने से जितने प्रकार के रोग हैं सब शमन होते हैं इसी  
प्रकार मन्दार सहआ, नील कमल के फूल, कुई (नीलोपर) लाल कमल  
और जूही इन पुष्पों की अस्तुओं पर कपूर जल छिरक के धारण



से भी समस्त रोगों का शमन होता है । विशेष कर घुमरी, हौल दिल, उन्माद, प्रमेह, क्लीबत्व, मस्तिष्क की निर्बलता और मन का विकार तो बहुत शीघ्र नाश होता है ॥

### समयानुसार पुष्पों का धारण करना ।

स्नान करने के पहिले चमेली की माला पहिनना, स्नान करके जूही और बेल के फूल का धारण करना और तेल लगा के केतकी के पुष्प का धारण करना उत्तम लिखा है और कमल के पुष्पों को जब इच्छा हो काम में ला सक्ता है ॥

### ऋतु योग्य पुष्प ।

अर्थात् गरमी के दिनों में धारण करने लायक पुष्प यह हैं । पीली चमेली, कुन्द, रेवाड़ी, चन्दन के फूल, बेल पुष्प यह सब रस और बल में समान हैं, यह सब त्रिदोष नाशक हैं इस लिये हमेशा धारण करने के योग्य हैं परन्तु गरम दिनोंमें ज्यादे फायदेमन्द हैं ॥

जाड़े के दिनोंमें या जिस देश में हमेशा जाड़ा पड़ता है उन देशोंमें केतकी, मौलसिरी, कमल, गुल्लाला और चम्पा लाभदायक है ॥

क्योंकि ये पुष्प शीतकाल के हरने वाले और तासीर में कुछ गरम हैं इसलिये इन्हें शीत काल में धारण करने से अधिक लाभ होता है ॥

वर्षा काल में—बेल, मरुघा, नील कमल, गुलाब, पांहर और चन्दन के पुष्प ए मातदिल हैं, त्रिदोष नाशक, स्वच्छ नेत्रों में ठंडक देने वाले और मिर को पुष्ट करते हैं ॥

### पुष्पों के धारण करने की अवधि ।

जाई का फूल छ पहर तक गुणवान रहता है बाद बेकाम हो जाता है । नेवारी का फूल चार घड़ी, कमल पुष्प तीन रात, केवड़ा ५ पांच रात,

गुलाब दी रात, चमेली साधीरात तक, चम्या १ दिन, जूझों ४ घड़ी, वंशन्ती, मौलसिरी, चन्दन और योषर्ण इतने पुष्प जब तक चन्द्रे मालूम हों धारण करे । मन्दार, चरुया, देवना, पांडर, इतने पुष्प जब तक समन्वित रहें धारण करना चाहिये ॥

### पुष्पों के विशेष गुण ।

त्रिदोषशमनीजाती महादाघ विनाशिनौ । सुगन्धं दीप  
समनं गौल्लालं पुष्पमुच्यते ॥ पित्तद्विगदञ्चैव चक्षुष्यञ्चोत्पल-  
सृतम् । श्लेष्मवात प्रशमनमुष्णावीर्यञ्च निर्मलम् ॥ पुष्पाणां  
प्रवरञ्चैव केतकोपुष्पमुच्यते । ईपदुष्णसुगन्धञ्च सुगीतं दृष्टि-  
दायकम् ॥ शिरोभ्रम विनाशार्हं शतपत्रं तु शोभनम् ।  
अधार्थ्यं मल्लिका पुष्पं दृष्टिहानि करंपरम् ॥ चपकं वात  
शमनं चक्षुष्यं विगदं शुभम् । पाटलं च महाशीतं श्लेष्मवात  
प्रवर्द्धनम् ॥ मन्दाग्नि पित्त दीपत्रं कर्णत्र्याधि विनाशनम्  
पाटलं धारयेद्यस्तु सम्पद्या स समन्वितम् ॥ ज्वर मूर्च्छा  
पिपासाघ्न मायुष्यन्दाह नाशनम् ।

जाडो का पुष्प त्रिदोष नाशक और महा दाह का शान्त करने वाला है, गुल्लाले का पुष्प शक्ति समन्वित और दीपों को शमन करता है । कमल का पुष्प वात कफ नाशक नयनों का हित पित्त हर्ता लवण, वीर्य कुछ गर्म और निर्मल होता है । केतको पुष्प सब पुष्प में उत्तम है कुछ लवण समन्वित शीतल और दृष्टि को बढ़ाने वाला है, मस्तक भ्रम को नाशक शत पत्र है । चमेली का पुष्प दृष्टि को हानि कारक है यतः इसे न धारण करे, चम्या का पुष्प वात नाशक नेत्रों का हित और शुभ है । पाटल पुष्प शीतल कफ वात का शर्वक मन्दाग्नि पित्त के दीप और कान को पीड़ा को दूर करता है । जो

मनुष्य पाटल पुष्प को धारण करता है वह धनी होता है ज्वर दाह प्रास मूर्च्छा को दूर करता है और वायु वर्द्धक है पाटल गुलाब का भी नाम है ।

### खड्गं ।

भोजन के पहले और पीछे खड्गं पहनने से काम आयु और नेत्र को हित है अधिक पहनने से दृष्टि को हानि होती है ॥

द्विगादि गणों को उचित है कि पूर्व खण्ड कथनानुसार समस्त कर्मों से निवृत्ति हो के सूर्यास्त समय में पश्चिम या उत्तराभि मुख बैठ के सायं संध्या को उपासना करें ॥

### सायं सन्ध्या फलम् ।

बोधायनः ।

यदुपस्थकृतं पापं यच्च येनि कृतं भवेत् । सायं संध्या  
मुपस्थाय तेन तस्मात्प्रमुच्यते ॥

जो मनुष्य राग द्वेष छोड़ भौतर या जलादि से बाहर पवित्र एवं एकाग्र चित्त हो प्रसन्नता पूर्वक सायं संध्या तथा ईश्वराराधन कर्ता है वह पतके समान दुःख और महा पापों को भो काट डालता है और जो मनुष्य प्रातःसायं संध्या और परमेश्वर को स्तुति प्रार्थना नहीं करता वह कृतघ्न मूर्ख और महा पापी है उस का अमूल्य जीवन का दिन व्यर्थ जाता है और भो लिखा है ॥

मरौचिः—संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता ।  
जीव मानो भवे च्छूटो नृतः श्वा चाऽभिजायते ॥

दक्षः—संध्या होनाऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्व कर्मसु । यदन्य  
त्कुरुते कर्म न तस्य फल भागभवेत् ॥

मनुः—नतिष्ठति तु यः पूर्वां नीपास्ते यस्तु पश्चिमात् ।  
स साधुर्भिवहिष्कार्यः सर्वस्मादिज कर्मणः ॥

मरीचि महाराज कहते हैं । जो संध्या कर्म नहीं जानता और न संध्या का यन्दना करता है वह जीवन मात्र शूद्र हो के याद मरने के कुत्ता के योनि में जन्म लेता है । दक्ष जी कहते हैं कि जो द्विजाति संध्याकर्म को नहीं करता वह हमेशा अपवित्र और सब उत्तम कामों से बहिर्भूत रहता है । संध्याकर्म के अतिरिक्त जैसे गङ्गा नहाना एकादश्यादि व्रत करता है उसके फल का भागी नहीं होता । मनु का वाक्य है कि जो प्रातःकाल की संध्या नहीं करता और न सायं संध्या का उपाशक है वह द्विजादि सम्पूर्ण कर्मों से छुट जाता है इसलिये सायं संध्या और प्रातःकाल की संध्या अवश्य करे जो वैदिक मंत्रों से न कर सके वह सिर्फ ईश्वरका ध्यान और प्राणायाम करे ॥

स्नानंसन्ध्याजपोहिमः स्वाध्यायोदेवतार्चनम् । यस्मिन्  
दिनेनसिञ्चन्ते वृथासद्विषीण्ट्याम् ॥

मिताक्षरा का यथन है कि स्नान सन्ध्या जप होम और देवता का पूजन जिस दिन नहीं कर्ता मनुष्य का वह दिन व्यर्थ जाता है सन्ध्या कर्म का विधान आध्यात्मिक शः के प्रकरण में लिखेंगे ॥

सन्ध्या काल भोजन करने से रोग, मैथुन करने से गर्भ का विगाह, सोने से धन का, विद्या पढ़ने से आयु का नाश और राह चलने से भय होता है । शशि, शोभना राखी काम और आनन्द देनेवाली है जन्धियाली से भय भूत और दिशा भ्रम होता है । निर्मल और शीतल वायु शरीर में लगने से (विशेष कर गर्मी के दिनों में सन्ध्या समय) पित्त और दाह रोग का नाश होता है ॥

रात्रि में भोजन ।

रत्रौचभोजनंकुर्यात् प्रथमप्रहरान्तरे । किञ्चिदूनंसमश्री-  
याहुर्जरंतत्रवर्जयेत् ॥

मनुष्य को उचित है कि रात्री में एक प्रहर के भीतर अर्थात् ९ या १० घंटे भरमें भोजन कर लेवे क्योंकि अधिक रात जाने पर भोजन करने से अजीर्ण होने का डर है और रात्रि में कुछ कम भोजन करना यानि जितनी भूख है। उसकी चीथाई आहार छोड़ देवे और जितनी चीजें देर में हजम होने वाली हैं उन्हें रात्रि में कभी न खाये। कारण यह है कि रात का भोजन न पचने से शीघ्र अजीर्ण हो जाता आदि रोग उठ खड़े होते हैं। यह बात याद रखे कि अगर रात्रि के भोजन से अजीर्ण हुआ हो तो दिन में दो बार भोजन न करे क्योंकि रात्रि के अजीर्ण में दूसरे दिन भोजन करने से मन्दाग्नि रोग होता है, यदि अत्यन्त भूख लगे तो बहुत हलकी और शीघ्र पाकी द्रव्य भोजन करे ॥

## मद्य पान ।

आज कल हिन्दुस्तान में भी शराब पीने की लोगों को अधिक आदत पड़ गई है। कितने लोगों की इसके पीछे जान जाती है छिपा नहीं है क्योंकि शराब और विष में कोई भेद नहीं है। (वेद्विषयगुणाः प्रोक्तास्तेषामद्यप्रतिष्ठिताः) जितने गुण विष में शास्त्रकारोंने कहा है वे सब मद्य में भी विराजते हैं। यद्यपि आयुर्वेद तत्त्व दर्शियों ने मद्यपान में अनेक गुणभीदिखलाया है और उसे स्वभाव में अन्न के समान कहा है तथापि अयुक्त प्रमाण से पिया भया मद्य मनुष्य को शीघ्र हनन करता है। जैसे अन्न प्राणियों का प्राण है परन्तु वेप्रमाण खाया हुआ अन्न मनुष्य को शीघ्र मार डालता है। लिखा भी है ॥

प्राणाः प्राणभृतामन्नं तदयुक्तं दिनस्त्वसून्। विषं प्राणहरं  
तच्च युक्ति युक्तं रसायनम् ॥

अन्न यह जीव मात्र का प्राण है लेकिन वेमन्दाज भोजन किया अन्न प्राण नाशक होता है। विष यद्यपि प्राण नाशक है परन्तु युक्ति से सेवन किया भया विष भी अमृत के तुल्य रसायन होता है।

तथापि जहां तक हेा वकै विष का त्याग करना ही शिष्ट जनों का काम है क्योंकि सांप का पकड़ने वाला यद्यपि अपनी मंत्र की ताकत से सांप को पकड़ता है लेकिन यह भी सिद्धान्त है कि सांप पकड़ने वाले की मृत्यु सांप ही के द्वारा होती है । इसी प्रकार शराब पीनेवाले चाहे वे विधि से पिये वा अविधि से अन्ततोगत्या उनकी मृत्यु मद्य ही के द्वारा होती है । यह कथन कंवल हमारा कहना मात्र नहीं है बल्कि इसी विषय में बिलायत के आयुर्वेद वेत्ताओं तथा बिज्ञान शास्त्र के वेत्ताओं ने अनेकानेक उपाय दिये हैं जिसे पाठकगणों के अवलोकनार्थ नीचे प्रकाश करते हैं ॥

प्रोफेसर गिल्डन् ने लिखा है "मद्य (शराब) एक प्रकार का विष है । रघु शास्त्र और धनस्यति शास्त्र में यही स्थान अर्थात् यही उपनाम श्रेष्ठ है । पीनेवालेकी मात्रा अनुकूल यह शीघ्र अपना प्रभाव दिखलाता है अथवा बिलम्ब में अर्थात् अकस्मात् शीघ्र प्राणघात करता है वा धीरे धीरे" ॥

डाक्टर मुनरो का कथन है "मद्य के विषय में प्रत्येक लिखने वालों ने लिखा है कि यह निद्रा कर विष है अर्थात् घोर से प्राणघात करने वाला है" ॥

डाक्टर लीज का कथन है "मैटीरियामेडिका (वैद्यक ग्रन्थ) सम्पूर्ण ग्रन्थकार अथ सहमत हैं कि मद्य उद्भिज विषों में सब से बलवान और मृत्यु कारक विष है" ॥

डाक्टर गार्डन ने लिखा है "तीक्ष्ण मद्य से अधिक बलवान विष प्राप्त होना कठिन है" ॥

प्रोफेसर सेवाल का कथन है "मद्य मनुष्यों के स्वभाव और उसके विभागों पर तथा पावन शक्ति पर विष का प्रभाव उत्पन्न करता है और उदात्त में दाह उत्पन्न कर देता है । जिसका फल यह होता है कि अनेक

प्रकार के ग्रण और कृच्छ्र रोग हो जाते हैं और उदर के चारों ओर की त्वचा कड़ी हो जाती है और अन्त में मांस ग्रन्थि, मांसायुद् और दूसरे इन्द्रिय सम्यन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं" ॥

डाक्टर योमैनस कहता है कि "मद्य जितने फाल तक उदरमें ठहरता है वह पाचन शक्ति का सभ से प्रबल शत्रु है" ॥

हाक्टर योगेरी का बचन है "मद्य उदर के लिये सभ से हानिकारक वस्तु है" इसके पीनेसे कुछ दिनोंके पश्चात् कलेजे में रक्त संवय हो जाता है फिर अन्यान्य पदार्थोंकी शुद्धिसे, कलेजेके कहीं मोटे कहीं छोटी होने के कारण, मद्यप मनुष्य अपना साधारण नित्यका कार्य करनेमें सर्वथा असमर्थ हो जाता है जिससे न तो पित्तश्राव होता है और न रक्त शुद्धि होती है । धीरे २ दूसरे विकार उत्पन्न होकर एक प्रकार का रोग जिसको अंगरेजी में "जिन्डुन्कर्स लीवर" या "आयनेल्ड लीवर" कहते हैं हो जाता है । बहुधा रक्त के रुकने से अत्यन्त दुखदाई पीड़ा सहित जलोदर रोग हो जाता है जो प्रायः असाध्य रोग है । पुनः शरीर में अनेक प्रकार की नित्य नई पीड़ाओं को भोग कर मद्यप रोगी निराश हो मृत्यु का आश्रय लेता है ॥

प्रोफेसर सस का बर्णन है " कि मैं ने जाठ मनुष्यों के कलेजे की परीक्षा ली थी जो कि मद्य के अधिक अभ्यासी होने के कारण मृत्यु के इस्तगत हुये थे । उन सभ के कलेजेके दशा में तनिक भी अन्तर न था" ।

डाक्टर लिट्ल जान, जो कि एडिनबरा में सर्व साधारण की स्वस्थता का द्रष्टा ( निगहवान ) और पुलिस सर्जंग था, लिखता है "मैं ने जहां तक परीक्षा की मद्यपों के कलेजों को रोग-ग्रसित पाया । मद्य के न्यूनाधिक मात्राजुक्कूल रोग की दशा भी वैसेही थी" ॥

मिटर ब्रान्जगन कहते हैं चाहे जितना न्यून मद्य पीने का अभ्यास (शादत) क्यों न हो परन्तु बहुधा यह हैजा पैदा करता है और मद्यप को यह हैजा पैदा हो जाय तो असाध्य बनाता है" ॥

डाक्टर स्वाण का कथन है "न्यूयार्क के अस्पताल में २०४ हैजे के रोगियों में केवल ६ मनुष्य ऐसे थे जो सदिरा नहीं पीते थे" ।

डाक्टर एलिस् ने पार्लियामेंट सम्मन्धिनो एकसभा में कहा था "मादक  
द्रव्य मुख्य कर के मद्यपान अधिक विक्षिप्तता का हेतु है क्योंकि मिडल सेक्स,  
के पागल खाने में २८ विक्षिप्त ( पागल ) एक वर्ष में उन में १९ मदिरा पीने  
वाले थे ॥

एडनबरा के रायल रासायनिक के डाक्टर "स्को" का कथन है "मद्यपान  
विक्षिप्तता ( पागलपन ) का मुख्य कारण है । १८० विक्षिप्त जिन के रोग का  
कारण ज्ञात हो गया था उन में पचास मद्यप थे" केवल यही रोग नहीं  
प्रायः मद्यपी के अनेक रोग हुआ करते हैं जो मदिरा के कारण असाध्य हो  
जाते हैं ॥

मद्य का प्रभाव केवल मद्य पीनेवाले पर नहीं समाप्त होता किन्तु एक  
दूसरे के पश्चात् अर्थात् उस की सन्तति भी वैसी ही होती जाती है । डाक्टर  
होव, एक प्रसिद्ध अमेरिका निवासी, लिखता है कि दो सौ विक्षिप्त मनुष्यों में  
से जिन का रोग निदान विहित हो गया था ४५ ऐसे थे जिन के माता पिता  
मद्यप थे ॥

डाक्टर कारपेन्टर कहता है "सभी पूर्ण विश्वास है कि जिन जो मद्य  
के अभ्यस से उन्मत्त हो जाते हैं उन की सन्तति की भी वंशो कष्ट भोगना  
पड़ता है" ।

न्यूयार्क प्रुटाके का कथन है "मद्यप की सन्तान अवश्य मद्यप होती है",

अब बुद्धिमानों के विचार करना चाहिये कि बिलायत आदि जो  
एक प्रकार का अति हिम प्रधान देश है कि जहां मद्यपान अधिक  
हानिकर न होना चाहिये, जब वहां के लोगों को नुकसान करता  
है तो यह आर्यावर्त जहां एक प्रकार की सूर्यदा आभ्यान्तरिक लो  
गों के अन्तस में गर्मी बनी रहती है वहां मद्यपान क्यों न हानि  
कर होगा ? अवश्य होगा यही कारण है जो भारत में प्रति दिन  
कोढ़ियों की वृद्धि होती जाती है ॥

विधियुक्त मद्य पान का फल ।

विधिना मात्रया काले दितै रन्नै र्यथावलं । प्रहृष्टो यः पि-  
बेन्मद्य तस्य स्यादमृतोमम् ॥ स्निग्धैःसदन्नैर्मासैश्च भक्ष्यैश्च



सह सेवितं । भवेदायुः प्रकर्षाय वलाया पचयाय च ॥ काम्य-  
ता मनसस्तुष्टि स्तेजा विक्रम एव च । विधिवत्सेव्यमानेतु  
मद्येसन्निहिता गुणाः ॥

जो मनुष्य विधि पूर्वक मात्रा सहित भोजन के साथ अपनी ताकत के अनुसार प्रसन्न चित से मद्य पीता है वह मद्य अमृत के समान गुण करता है । उत्तम बनाया धिकने अन्न ( ताजा घृत पहा दाल भात आदि ) और मांस ( मूरावा कयास आदि ) और मनोहर खानों के साथ पिया मया सरास आयुः ( उमर ) बल और शरीर का बढ़ाने वाला होता है । बल बढ़के द्रव्यों से खिंधा हुआ उमदा सरास, अन्दाज से विधि पूर्वक पिये तो उस के पीने से रूप की सुन्दरता, मन का चन्तोप, शरीर का तेज और पराक्रम बढ़ता है, यदि मद्यपान न करे तो अति उत्तम है ॥

### अविधि मद्य पान ।

निर्भक्त एकान्ततएव मद्यं निषेव्यमाणं मनुजेन नित्यं ।  
उत्पादयेत्कष्टतमान्विकारा नापादयेच्चापि शरीर भेदम् ॥  
क्रुद्धेन भौतेन पिपासितेन शोकाभितप्तेन बुभुक्षितेन ।  
व्यायामभाराध्व परिक्षतेन वीगावरोधाभिहतेनचापि अत्य-  
न्मरुच्चावततोदरेण साजीर्णभुक्तेन तथाऽवलेन । उष्णाभि-  
तप्तेनच सेव्यमानं करोति मद्यं विधिधान्विकारान् ।

जो मनुष्य बिना भोजन अर्थात् खाली पेट में सरास पिया करता है । याने गिलास पर गिलास टकीसे जाना है और उसके ऊपर कुछ खाना नहीं खाता उस के शरीर में अति बड़ा असह्य रोग होते हैं और उसे बड़ मनुष्य मर जाता है । जो मनुष्य क्रोध के ऊपर, भय युक्त, पियास शोचप्रस्त में, भूखे पेट और भेदनत क्रिये भये पर, बोझ उठाने के उपरान्त, कहीं से थक के आया हो,

दस्त मूत्र खुलासा न हुआ हो, या पेट में पित्तजमा हो या रुद्ध पन्न खाये हो जैसे बजरा आदि, अजीर्ण से पेट भरा हो, अति धूपकातपा या गर्मी से व्याकुल हो उस के ऊपर सराव पीने से वह शरीर में अनेक प्रकार का रोग उत्पन्न करता है । इसलिये जिसे मद्य पीने को लत पड़ गई है विना पिथे चैन नहीं या जो कभी २ मगप्रसन्नार्थ सराव पीने को आदत रखते हैं । वे रातों में भोजन के साथ ही एक छंटाक या इस से कुछ कम पी सकते हैं परन्तु अति गरम ऋतु में वह भी निषेध है । और सब नियम भोजन करनेके वंछो हैं जो दिन के भोजन प्रकरण में लिखे हैं । भोजन करने के दो अथवा एक घड़ी के बाद उत्तम पलंग पर सोना आरोग्य कर है ॥

### निद्रा विधिः ।

नित्यागन्त जगदीश्वर ने मनुष्यों को क्या जीव मात्र को दिन कृत परिचयम आश्चर्य रात में सोने से का नियम बना दिया है । सुख पूर्वक रात्रि में सोने से परिचयम से उत्पन्न आन्त्रस्यादि जितने उपद्रव हैं वे सब शान्त होते हैं । रात में जागने से, या किसी बिघ्न से, अथवा किसी रोग के कारण से रात में नींद न पड़ने से आलस्य, आंघ, शिरदर्द, ओकाई और अजीर्ण आदि अनेक रोग खड़े हो जाते हैं । इसलिये मनुष्य को उचित है कि हजारों जङ्गरी कानों को छोड़ रात में अवश्य सोवे परन्तु छ. अथवा सात घंटे से अधिक न सोना चाहिये ॥

### शय्याविचारः, शिल्पशास्त्रे ।

चतुराशीतिपर्वाणि दैर्घ्येणपरिकल्पयेत् । षष्ठङ्गुलानि  
विस्तारं मञ्जुकंदस्तमस्मितम् ॥ एवंशय्याविधातव्यं सर्वेषां  
शयनाचिता । मानाधिक्येदरिद्रः स्यान्मानहीनेसुखक्षयः ॥

भाषार्थः—साढ़े तीन हाथ की लम्बी ढाई हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊंची ऐसी शय्या होनी चाहिये इससे बड़ी दरिद्र और छोटी सुख

क्षय करनेवाली है । बिष्णु पुराण में लिखा है कि न बहुत बढ़ीहो और न छोटी एव न मैली कुचैली हो और सटमल जिसमें न हो वह शय्या सुख की देनेवाली होती है । उत्तम पलंग पर सोनेसे त्रिदोष नाश होता है । तोशक पर सोने से वायु और कफ नाश हो रक्त दृढ़ होता है । परंतु गरम ऋतु में सूती गलीचे पर सोने से बहुत फायदा होता है । जमीन तथा काठ की चौकी पर सोने से बात पित्त का कोप होता है ॥

सुश्रुत—उपरोक्त लक्षण युक्त पलंग बल, पुष्टि प्रीति नींद और बुद्धि को बढ़ाने वाला त्वचा को मुलायम मांस और रक्त को मुनासिध अन्दाज से अंग में पहुंचाने एवं श्रम वायु और कफ रोग का हटाने वाला है । मार्कण्डेय का वचन है कि भीगी, गन्ध, उत्तर शिर और जिसमें मसहरी न हो ऐसे पलङ्ग पर न सोये । गार्ग्य ऋषि कहते हैं शून्यालय, स्मशान, घोरहा, शिवालय, मातृ वैशमनि (मातृ वर्ग की निज कोठरी में) गोशाला, धान्याशय आदि स्थानों में, पलाश, आंच, जामुन इनके नीचे, अपरीक्षित स्थान और बिजुली से दग्ध स्थान में आरोग्य के चाहनेवाले जन कदापि न सोवें ॥

### शयन में दिशा का विचार ।

मार्कण्डेयः—प्राक्शिरः शयनेविद्याङ्गन मायुश्च दक्षिणे ।  
पश्चिमे प्रवला चिन्ता हानिमृत्यु रथोत्तरे ॥

गार्ग्यः—स्वर्गहे प्राक्शिरः शिते प्रवाशुर्ये दक्षिणाशिराः ।  
प्रत्यक्शिरः प्रवासेतु न कदाचिदुदक् शिरा ॥

विष्णुपुराणे—प्राच्यांदिशिशिराशस्तं याम्यायमथवानृप ।  
सदैवस्वपतः पुंसां विपरीतं तुरीगदम् ॥

मार्कण्डेय का वचन है कि पूर्व शिर में सोने से विद्या, दक्षिण में वायु की वृद्धि पश्चिम में चिन्ता घोर उत्तर में मृत्यु प्राप्त होती है । गार्ग्य कहते हैं अपने घर में पूर्व शिर, स्वसुराज में दक्षिण शिर घोर यात्रा में पश्चिम शिर कर के सोना परन्तु उत्तर शिर कभी न सोवें ॥ वि. पु. में लिखा है पूर्व शिर सोना शुभ है ॥

विपरीति सेने में रोग होता है । और भी इसी प्रकार बहुत से ऋषियों के वचन पाये जाते हैं तथा परीक्षा से भी जाना गया है कि उत्तर गिर सेने से अवश्य दुस्स्वप्न आदि होते २ कोई न कोई रोग भी हो जाता है इसे उत्तर गिर कभी न सेना चाहिये ॥

करवट सेने से बला, हमेया वित सेने से नजला और छाती पर छाया रख कर सेने से दुस्स्वप्न होता है ॥

अथ्या गिर को और जंघो और पैर की तर्फ नोची होगी चाहिये एवं चारों पाधे के तले जलयुक्त चार कूंडी रहनी चाहिये ताकि चींटी आदि कोई कृमि अथ्या पर चढ़ न जाय ॥

सेने का कमरा रमणीय, सुगन्धित शोभा युक्त सुखद (तसबीर वगैरह) वस्तु से युक्त एवं जाड़े में गुलाबी, बर्षा काल में श्वेत और गरमी में हरे रङ्ग से पोता होना चाहिये ॥

सेने समय निम्नलिखित पदार्थ खाट के समीप अवश्य रख लेवे ।

उपानही वेणुदण्ड मम्बु पात्रं तथैव च । ताम्बूलादीनि  
रम्यानि समीपे स्थापयेद्गृही ॥

जूतों का जोड़ा या खड़ाजं, बांस का सेंटा या कोई हथियार हो, जल भरा पात्र और पान कायची अंतर आदि मन प्रसन्न कारक रमणीय वस्तुओं को मनुष्य मात्र सेने समय अपने पास अवश्य धर लेवे ।

**दीप कालः मरीचिः ।**

रवेरस्तं समारभ्य यावत्सूर्योदयो भवेत् । यस्यतिष्ठेद्गृहे-  
दीप स्तस्यनास्ति दरिद्रता ॥

सूर्यास्त से लेकर जय तक सूर्योदय न हो जिसके घरमें दीपक जलता है यह दरिद्र नहीं होता है एक तो यही प्रत्यक्ष है कि घोर का भय कम रहता है । दीपक का मुख पूर्व होनेसे आयु, उत्तर मुख होनेसे धन की वृद्धि पश्चिममुख होनेसे दुःख और दक्षिण मुख होनेसे हानि होता है ॥

दीप का मुख ॥

प्रत्यङ्मुखोदुःखदोऽसौ हानिदोदक्षिणामुखः ॥

मरीचि का बचन है कि पश्चिम और दक्षिण मुख दीपक हानिकारक होता है कार्त्तवीर्य तन्त्र में लिखा है कि मनुष्ठान में प्रत्यङ्मुख-दीप स्थापन करना चाहिये इससे स्पष्ट हुआ कि गृह में सर्वदा उत्तर और पूर्व मुख दीपक रखना उत्तम है ॥

“उत्तम दीप लक्षणम्” सुदग्ने ॥

नेत्रह्लादकरः सार्चि दूरतापविवर्जितः ।

सुश्लिखः शब्दरहितो निर्धूमोनातिदृखका ॥

नेत्रों को क्षयकारक, दूर तक जिसकी तेजी न जाती हो अर्थात् ठण्ठी रोमनी हो सुन्दर गुल, धूम तथा शब्द रहित हो और टेम न अति ऊँच और न दीर्घ ऐसा दीप मनुष्य को आरोग्य पद होता है । दीपक की बत्ती सूत या जन आदि बखी की न होनी चाहिये सर्वदा कपास की बत्ती और रनेह में से घृत या तिल तथा सरसों का तैल दीपकमें जलाना वैद्यक का मत है परन्तु आज कल जहाँ देखिये ठाकुरदारे से लेकर पाखाने की कोठरी तक करे-सन ऐल (मिट्टी का तैल) और विलायती चिमनी जलती हैं । इसमें संदेह नहीं कि एक लैम्प जला देने से कमरा भर चमक उठता है परन्तु चिमनी की तीव्र चमक नेत्र की ज्योति को मन्द करती है । पिछले समय में सौ बर्ष के उदकी भी चश्मे की धाजत नहीं होती थी अब सोलह बर्ष के छोकरों की बिना चश्मा राह नहीं सुझता यह सब कारण प्राचीन व्यवहारों के त्याग का है । आरोग्येच्छु जन को उचित है कि आवश्यकीय कार्य के अतिरिक्त सर्वदा चरी चिमनी जलाया करें ॥

श्लेष्म प्रकृति वाले के शयन गृह में रात भर दीप का जलना लाभदायक है और वातपित्त प्रकृति वाले को हानिकारक है ॥

“पुरुषस्य दीपनिर्व्वारणेदीपः”

यह बात प्रायः सभी जानते समते होंगे कि पुरुष को दीपक बुताने में दीप होता है इसीसे स्त्रियां पुरुष को दीप बुताने भी नहीं देती हैं ॥

दीप निर्व्वापणात्पुंसः कृष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियः ।

अपिरेणैव कालेन वंशनाशो भवेत् ध्रुवम् ॥

पुरुष को दीपक बुझाने से और स्त्रियों को प्रेता के घोरने से वंश नश्य जाता है अर्थात् वीर्य तथा रज कुछ काल में वंशोत्पादक हीन होजाता है । यदि कोई आधुनिक मतावलम्बी पाठक कहें कि यह किमौ तन्त्र या पुराण की गप्प है ? तो उसका उत्तर यही है कि कुछ दिन वैद्यक शास्त्र को पढ़ो स्वयं यज्ञा जाती रहैगी ॥

लालटेन का गुण ॥

मनुष्य को चर्चित है कि यदि अंधियाली रात में कहीं जाना हो तो लालटेन अवश्य ले लेय क्योंकि मार्ग में सर्पादि जन्तुओं और शत्रु का भय नहीं होता है ॥

पङ्खा ॥

दयामय पिता जगदीश्वर ने मनुष्यों के रक्षार्थ निर्व्वानु की अवस्था में व्यजन (पङ्खा) बनादिया है पङ्खे की हवा दाह, मूर्च्छा, पसीना और यकावट दूर करती है । ताड़ के पङ्खे की हवा त्रिदोष प्रमन करने वाली है । वांस के पङ्खे की हवा गरम और रक्तरोग पैदा करती है । चवर, कपड़ा, मोर के पङ्ख और बेंत के पङ्खे की हवा प्रकृति के सम चिकनी, तर, सुख देनेवाली, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, पसीना, बेकली और बात, पित्त प्रमन करनेवाली होती है विषेप कर मसा मच्छड़ आदि दंभन करनेवाले जीवों से क्षेप नहीं होता, भोजन करते समय में भी पङ्खे से वायु दिये जाय कि जिसमें मक्खी आदि जीव भी भोजन पर न बैठने पावे क्योंकि मसा मच्छड़ आदि के काटने से रक्त रोग और भोजन पर बैठ जाने से हैजा आदि रोग होता है कारण यह है कि उक्त जीव गाय, गीरु, कुत्ता आदि अनेक जीवों के विकार रक्त को पान करते हैं और वही रक्तयुत उल्ल से मनुष्य के कोमल शरीर में काटते हैं इससे रक्त रोग होता है । और भोजन के द्रव्य पर बैठने से हैजा आदि अजीर्ण रोग होता है । ज्वर आदि किसी किस की बीमारी क्यों न हो जिस तरह घ घास लगने पर जल का निषेध नहीं है उसी प्रकार गर्मी लगने पर पङ्खे की हवा का निषेध नहीं है । जो मनुष्य बाहर की हवा से परहेज कर निरन्तर कपड़े के पङ्खे की हवा में रहते हैं उनकी प्रायु और आरोग्यता सदा बढ़ती है ॥

“दिशाभेद से वाहर के हवे की गुण” सुश्रुते ।

पूर्व की हवा भारी, गरम, मीठी (क्योंकि फलों में मीठे रस पैदा करती है) चिकनी, तर करनेवाली दाह और वायु रोग के बढ़ानेवाली पित्त रक्त लघा दोष, बवासीर विष, कास, सन्निपात ज्वर, दमा, आमबात रोगीत्यन्त करनेवाली है परन्तु मिहनती (कसरती आदि) और धातुक्षीण वाली को हित करती है ॥

दक्षिण की हवा मीठी, हलकी, ठण्ठी बल और दृढ़ बनानेवाली पित्त और रक्त रोग नाशिनी है ॥

पश्चिम की हवा तेज और सुखानेवाली हलकी वायु बढ़ानेवाली बल, मेद पित्त और कफ को नाश करती है । उत्तर की वायु—चिकनी, मीठी, ठण्ठी कोमल बल और दोष बढ़ानेवाली है ॥

“कोन की हवा का गुण ”

पूर्व और दक्षिण कोण की हवा सूखी और दाह पैदा करती है । दक्षिण और पश्चिम कोने की हवा ठण्ठी है । पश्चिम और उत्तर कोनेकी हवा कड़वी, तीती और वायु बढ़ाने वाली है । उत्तर और पूर्व कोने की हवा कड़वी और वायु रोगकारी है । हवा की उत्पत्ति, स्वरूप, वजन, ताकत और हवा से क्या २ बस्तुयें तैयार होती हैं यह सब पदार्थविद्या से ज्ञात हो-सक्ता है शिल्पप्रकर्ण में इसे भी लिखेंगे ॥

“अञ्जन”

प्रति दिन आंखों में सुरमा देना हित है । परन्तु लोग इसे शृङ्गार या असभ्यता, ज्ञान कम काम में लाते हैं । हमारी यह सम्मति है कि दूसरे तीसरे दिन दृष्टि के बढ़ाने के लिये आंखों में अञ्जन अवश्य लगा लिया करें ।

“पक्ष्मलं विशदं कान्त मममोञ्ज्वल मण्डलम्,

नेत्रमञ्जन संयोगाद्भवेच्चामल तारकम् सुश्रुते”

नेत्र में अञ्जन लगाने से पलकों के मूल नष्ट हो नेत्र का फेलाव सुन्दरता श्वेत मण्डल और कृष्ण तारा मल रक्षित रहता है ॥

वैद्यक में यह भी लिखा है कि हेमन्त और शिशिर ऋतु में दोपहर के समय ग्रीष्म और शरत् में प्रातःकाल, वर्षा में संध्या समय, परन्तु जबतक आ-काश साफ हो और अधिक गरमी न हो, बसन्त ऋतु में जब इच्छा हो आंखों

में सुरमा लगाना उत्तम है। परन्तु सामान्य विधि से सुबह या शाम को लगाना चाहिये। निषेध—बहुत सर्दी, गर्मी, हवा, मेघ धिरेङ्गये, रात में जागरण, वमन, शिर में खान, और भोजन करके और नवज्वर रोग में सुरमा लगाना मना है ॥

### “सुरमा लगाने की विधि”

शाम सुरमा जो सिन्धु पर्वत से आता है बाजार में बनियों की दूकानों में मिलता है आध पाव लेकर आग में गरम करके तीन २ बार गोष्ठत में शिफला के काथ में, प्रसद में, बकरी के दुग्ध में, भंगरा के रस में बुझा ले, तब साफ पानी से खूब धोकर साफ करके दर्शाय शुद्ध कपूर मिलाय खूब महीन चूर्णकर किसी कागदार सीधी में रख लेय, यदि पूर्वोक्त द्रव्यों में शीशे की भी पिघला करके तीन २ बार शोधकर सलाई बना ले तो अति उत्तम है, न होसके तो साधारण शीशे की सलाई से पूर्वोक्त लेखानुसार आंखों में अञ्जन लगाने से आंख की जलन, कीचड़ आना, खुललाहट, पानी बहना, दर्द, हवा और घाम का बिचार जाता रहता है ॥

### आंख दूखने का लेप ॥

छोटी चरई, सेंधा नमक, मीस, और रसवत इन चारों को सम भाग ले पानी में महीन पीस किञ्चिन्मात्र गुनगुना कर सीती समय या जब इच्छा हो पत्तकों पर लेप कर देय शीघ्र ही आराम होगा ॥

### रतौंधी का अञ्जन ॥

रसवत, चरदी, दास चरदी, शमेली और नीम के पात सबको बराबर ले गीवर के रस में घोंट गीली बना ले दोनों समय पानी में घोंट अञ्जन करे तो नियय रतौंधी छुट जाय परन्तु शिर में शमेली के तेल को लगा कर स्नान करे और दुग्ध आदि तर और शीतल चीज खावे ॥

अति क्रोध, शोक, रुदन, स्त्री प्रसङ्ग करने से, अति सूक्ष्म तथा पमकीली वस्तुओं के देखने से, नङ्गे पाँव चलने से घाम तथा आंसू में रहने से, मदिरा आदि नशों के अधिक सेवन से, गरमी के रोग से, सामर्थ्य से अधिक पढ़ने लिखने से मनुष्य जल्दी ही दृष्टिहीन या अल्पदृष्टि होता जाता है ॥

इसमें आंखों में अञ्जन लगाने से, शिर में तेल दिकर स्नान करने से, निरन्तर वीर्य की रक्षा करने से दिन में तीन बार चार चार और मुख के घेने से सूँग, लाख घान, जौ घी, दूध मुनक्का, भाँवला, किला, भांगरे को



साग, बनसुर्गा, हिरण, ककुभा, काला तीतर इनके मांस और जिन २ चीजों के खाने से दिल और दिमाग में ताकत पड़ती है, उन सबों के खाने से सर्वदा रमणीय शीतल मकान में रहने और सुखपूर्वक निर्विघ्न रात में सोने से मनुष्य दृष्टिहीन नहीं होता ॥

### आदर्श (आईना)

लोग कहते हैं कि रात में आईने में मुख देखने से मुख में भाई पड़ती है परन्तु यह बचन हमें किसी ग्रन्थ में नहीं मिला, दर्पण देखने का कोई काल नियत नहीं है मनुष्य को इच्छा होने पर हर समय देख सकता है । आईने में मुख देखने से महल, शोभा, बल, पुष्टि और आयु बढ़ती है ॥

### प्रसाधनी (कह्वी)

इसका भी अनियत काल है आवश्यक होने पर मनुष्य बालों को भाड़ सकता है, आबनूस या मैसे को सींग को कह्वी अच्छी होती है । कह्वी से रोक बालों को साफ करने से बालों का मूल और कौड़े नाम होकर शोभा बढ़ती है लेकिन एक बचन भी है ॥

शरीर शुद्धिं निर्वर्त्य कृतशौच विधिर्नरः ।

केशपात्रे प्रकुर्वीत प्रसाधन्यादि शोधनम् ॥

शौचानन्तर नहा धो के संध्या से निवृत्ति हो कह्वी से बालों को साफ करे क्योंकि बाल भाड़ने से बाल टूटते हैं और बाल टूटने से हिजातिगण अशुद्ध होजाते हैं (ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है) तो बिना स्नान किये संध्याकर्म निषेध है इसलिए संध्या से निवृत्ति होके तब बालों को भाड़ें ।

एक स्थल में लिखा है कि कह्वी से बालों को सवारना कायस्थानि वर्षों के लिये है, ब्राह्मणादि के लिये नहीं क्योंकि ब्राह्मणों को सर्वदा मुण्डन या बद्धत छोटी २ बाल रखने चाहिये, खैर इसका खण्डन तो हम नहीं करते किन्तु बाल रहने पर कह्वी से बालों को साफ करना सब वर्षों के लिये आयुर्वेद का मत है ।

### अधनत्रिधि ।

उपानहौवेणुदण्ड मन्वुपात्रं तथैवच । ताम्बूलादीनि र-

न्यानि समीपे स्थापयेद्गृही ॥ नार्दवासाश्च नग्रस्य शून्येभ्यस्तत्र  
खेऽग्नयिः ॥

सीते समय पलंग के समीप पहिरने का लूता या बिलपर अथवा खड़ाजें  
बिस्तर के नीचे पलंग पर डण्डा, लाठी या कोई हथियार, पलंग के पास  
किसी तिपाई पर खच्छ जल और बोड़ी आदि रमणीक वस्तुओं को अवश्य  
रखलेवे । किन्तु भोगी कपड़ों पर तथा नग्न होकर, अकेले घर में, भरीर में  
तैलादि मईन करके, उच्च स्थान अर्थात् बिना भाड़ के चबूतरा, घटारी  
अथवा मदान आदि पर न सोवे ॥

“अयने आवश्यक कर्माणि” मार्कण्डेयः—

रात्रिसूक्तं जपत्स्नात्वा देवाश्च सुखशायिनः । नमस्कृत्वा  
व्ययं विष्णुं सऽमाधिस्थं स्वपेन्निशि ॥ दक्षः—निद्रा समय मासाय  
तांबूलं वदनात्यजेत् । पर्यङ्कात्प्रमदां माला त्पुण्ड्रपुष्पाणि  
मस्तकात् ॥

सीते समय के जरूरी काम मार्कण्डेय जी इस प्रकार लिखते हैं कि वेदीक  
रात्रिसूक्त पाठ करके अवश्य विष्णु भगवान और देवताओं को स्मरण करके  
अयन करे । दक्ष जी कहते हैं कि निद्रा प्राप्त समय मुख से पागको थूकदेय,  
माथे का चन्दन और पुष्पों का माला वगैरह भी गले से दूर करदेय ॥

तात्पर्य यह है कि पलंग के पास लूता रहने से मूत्रादि त्याग करने के  
खिये पहिरने के काम आता है । अस्त रहने से दुःखप्र का नाश और शत्रु का  
भय नहीं रहता, जल और पान आदि रखने से रात्रि में मुख सोने आदि  
और बोड़ी खाने में काम आता है, भोगी कपड़ों पर सोने से चढ़ दई होने  
लगता है, नग्न सोने से खप्रादि दोष तथा दुःखप्र होता है, तैलादि लगा की  
सोने से चोटी आदि पलंग पर चढ़नेका भय और कपड़ा मैला होता है, बिना  
भाड़ उच्च स्थान में सोने से गिरने का भय रहता है ।

जगत्पिता जगदीश्वर को स्मरण करके सोने से चढ़ों की रक्षा और चम  
खोगों का नाश भदा होता है, मुख में पाग का बीड़ा रखकर सो जाने से उस  
के कण श्वासद्वारा गले में जाके खाँसी उत्पन्न करता है और गले में पुष्पोंके

माला आदि पछिन कर सोने से पतझादि कृमि आ खिपटते हैं ।

प्रायः ऐसे लोग हैं जिन्हें सोती समय जल पीने की आदत है कितने लोग रात में कई बार उठ के जल पीते हैं, परन्तु नुकसान करता है जिन्हें रातको घ्यास अधिक लगे वे शीतलचीनी चाबकर सोया करें तो लप्सा न लगे ॥

मैथुन विधि ।

पूर्वरान्ने व्यतीते तु सगच्छे द्रुतिमन्दिरं ।

पादौ प्रचालयत्पूर्वं पश्चाच्छय्यां समाविशेत् ॥

जय महर भर राशि व्यतीत होजाय अर्थात् १२ बजे के उपरान्त जब मनुष्य रतिमन्दिर अर्थात् स्त्री के पास जावे तहां जाकर प्रथम पैरों को धोय पोछ कर तब शय्या पर बैठे ।

जिस ग्रन्थ की देखिये रात ही में मैथुन करना सिद्ध होता है तिसमें भी मध्याह्न को छोड़ दे अर्थात् ११।१।२ और ३ बजे रात के अभ्यन्तरमें मैथुन श्रेष्ठ है । एकान्त, रमणीक, सुगन्ध शोभा और सुखद वस्तु युक्त सजे कमरे में चिड़ियों की सुरीली गान सुनते हूये, बदन में सुगन्ध फूक इतर लगा कर और उत्तम भूषण वस्त्र धारण कर और बलकारी द्रव्य हलका भोजन करके इलायची, केसर, कस्तूरी आदि सुगन्ध द्रव्य युक्त पान चाबते हूये कामबाण से व्याकुल प्रीतियुक्त पुत्रार्थी पुरुष पूर्वोक्त उत्तम शय्या पर स्त्रीमसङ्ग करे ॥

ऋतुवती स्त्री को भी चाहिये कि उत्तम २ वस्त्र, आभूषण और अञ्जनादि सर्वाङ्ग शृङ्गार कर परस्पर प्रीति में मग्न निबटना और थोड़ा भोजन किये काम में व्याकुल आनन्द सहित पतिके सङ्ग रति करानेकी प्राप्त हो ॥ परन्तु:-

अति वृद्धायां दीर्घरोगिण्या मन्ये वा विकारैणोपश्लेष्टायां,  
गर्भाधानं नैव कुर्वीत् । पुरुषस्याप्येवं विधेय त एव,  
दोषाः सन्भवन्ति ॥

अति बुढ़ापा (५० वर्ष से उर्ध्व) दीर्घ रोगिणी अन्य विकार युक्त जैसे अकामा अङ्गहीना आदि स्त्रियों में गर्भाधान न करे इसी प्रकार पुरुष को भी जानना । जैसे बृद्धत भोजन किये, अघोर, अशुभ, चुषा, लप्सा, व्यथा । और मत्सादि वेगयुत, बालक, बूढ़ा, रोगी और कामधेग रहित पुरुष से (यदि उत्तम सन्तान की इच्छा रखती हो तो) कभी गर्भाधान न करावे ॥ और भी ।

पंचविंशे ततोवर्षे पुमान्नारो तु षोडशे ।

समत्वागतवैष्णो तौ जानीयात्कुशलोभिपक्व ॥

सुश्रुते सूत्रस्थाने अ० ३५ ॥

शरीर की उत्पत्ति वा भवनति की विधि जैसी वैद्यक शास्त्र में है वैसी अन्यत्र नहीं, किन्तु समय और कैसा भोजन करके नैद्युन करने से कैसा बालक उत्पन्न होगा और शतुल पराक्रम, तेजवान, विद्यावान् आदि गुण युक्त पुत्र हमलोग कैसे उत्पन्न करसक्ते हैं ये सब वैद्यक-शास्त्र में विधान हैं इस लिये विशेष कर गर्भाधानादि संस्कारों के करने में वैद्यकशास्त्र का आशय अवश्य लेना चाहिये । देखिये सुश्रुतकार परम वैद्य (कि जिनका प्रमाण सब विद्वान लोग मानते हैं) गर्भाधान का समय कमसे कम १६ वर्ष की कन्या २१ वर्ष का पुरुष अवश्य ही, जितनी सामर्थ्य पच्चीसवें वर्ष में पुरुष के शरीर में होती है उतनी सामर्थ्य १६ वर्ष में कन्या के शरीर में होजाती है इसलिये वैद्य लोग उच अवस्था में होने की समवीर्य वाले जानें । उक्त अवस्था से न्यून समय में कभी गर्भाधान न करे क्योंकि ॥

उन षोडश वर्षीया मप्राप्ताः पञ्चविंशतिम् ।

यथाहते पुमान् गर्भं कुचिस्थः स विपद्यते ॥ २ ॥

जातो वा न चिरञ्जीवैज्जीवेद्वा दुर्बलेन्द्रियः ।

तस्मादत्यन्तं बालार्या गर्भाधानं न कारवेत् ॥

सुश्रुते शरीरस्थाने ॥ अ० १० ॥

१६ वर्ष से कम अवस्था की स्त्री में यदि २१ वर्ष से कम अवस्था वाला पुरुष गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही विगड जाता है, भन्ततो-गत्वा यदि उत्पन्न भी हुआ तो चिरजीवी न होगा, कदाचित् जीवे भी तो अत्यन्त शरीर का दुर्बल और रोगी हो इसके अत्यन्त बाला यानि १६ वर्ष की अवस्था से कम अवस्था की स्त्री में कभी गर्भाधान न करना चाहिये ॥

बाह्यविवाह और न्यून अवस्था में गर्भाधान ही का यह फल है कि लाखों पुत्रहीन हैं और होते लाते हैं, बाबा जी के यन्त्रविभूति से धन का भी सर्वस्व नाश और दुराचार की वृद्धि भाग्य का नाम ले ले फिर पीट कर रोना दृष्टि-

गोधर होरहे हैं यह क्या मूठी बात है एक २ स्त्रियों के दय २ लड़कें हों और एक भी न जिये ॥

प्रथम तो परस्पर चप्रीति होने के कारण गर्भधारण ही नहीं होता यदि इन्धा भी तो गर्भ ही गिर जाता है या मरे लड़के पैदा होते हैं राम २ रटते पैदा भी इये तो माता मवानी को दोषी कर श्रीघ्नही फिर जर्हा के तर्हा ही चले जाते हैं । हे शार्थ्य भाइयो । यदि आपलोग अपने कुल का दीपक उत्तम सन्तान सुन्दर सखील बुद्धि शैल पराक्रम युक्त श्रीमान् पूर्ण चन्द्रकला के समान प्रदीप्तिमान चाहते हो तो (गौरीदद्याद्विष्णुलोकं वैकुण्ठं रोहिणीं ददौ) इस लालच को त्याग और धनोक्तानन्दन पाधा पुरोहितों के जटपटांग कथा से बहिरे वन अवश्यमेव सीलहवे दर्प की कन्या का २५ दर्प के पुत्र के साथ विवाह करो इससे न्यून में कभी मत करो यही देय की उत्तमि देय का श्रीमाय और देय का सुधार करनेवाला कर्म है ॥

“गर्भाधान के पूर्व स्त्री पुरुष को आवश्यकीय कर्म”

पुरुष को उचित है कि एक मास पर्यन्त ब्रह्मचर्य से रहे और घातु पुट श्रीपधि तथा धी दुग्ध आदि बलकर पदार्थ का अधिक सेवन करे, विशेष कर जिस दिन गर्भाधान करना हो “सर्पिः स्निग्धः सर्पिः क्षीराभ्यां शाल्योदनंभुक्ता” पुराने चावल के भात में गोघृत, गोदुग्ध और मिथी मिला कर पचवा खीर भोजन करे ॥

स्त्री को भी चाहिये कि उत्तम आहार भोजनकर एक मास ब्रह्मचारिणी रहे विशेष कर ॥

“अथौ प्रथम दिवसात् प्रभृति ब्रह्मचारिणी ।

दिवा स्वप्नाञ्जनाश्रुपात स्नानानुलेपना ॥

भ्यङ्गनख च्छेदन प्रधावन हसनं कथनाति ।

शब्दश्रवणाव लेखनानि लायासान्परिहरेत्”

रजोदहन (भासिक कर्म) के प्रथम ही दिन से ब्रह्मचारिणी दिवा स्वप्ना (दिनको सोना) आंखों में चक्कन लगाना, रीना, स्नान, शरीर में तेक और चबटन का लगाना, नख कटाना, हसना, ब्रह्म वकबाद करना, गंधीर शब्द सुनना, नख से जमीन लिखना, तेक हवा और मेहनत त्याग करे क्योंकि ॥

द्विवाखपन्त्याः खपशीलोऽञ्जनादन्वी रोदनाद्विकृतदृष्टिः ।  
 स्नानानु लेपनाद्दुःखः शीलस्तैला म्यङ्गात् कुठी ॥  
 नखापकर्त्तनात् कुनखी प्रधावनाच्चंचलो हसनाच्छ्राव ।  
 दन्तौष्ठतालजिह्वःप्रलापी चातिकथना दतिशब्द श्रवणा ॥  
 हृदिरोऽवलेखनात् खलतिर्मास्ता यास सेवना दुन्मत्तो ।  
 गर्मो भवतीत्येव मेतान् परिहरेत् ॥ सुश्रुते शा०श्र० २ ॥

दिन के सोने से चपशील (पापाणहृदय) अञ्जन लगाने से चम्पा, रोने से विकृत दृष्टि (ऐंघाताना) स्नान और चबटन लगाने से दुःख युक्त तैल लगाने से कोड़ी, नख कतराने से कुनखी (एक प्रकार का कुट्ट है) दौड़ने से चञ्चल, हँसने से काला दांत ओष्ठ तालु जिह्वा और आग तान बकने वाला, अति बोलने और शब्द श्रवण से बधिर, पृथ्वी लिखने से दुष्ट और अति वायु सेवन तथा परिश्रम करने से उन्मत्त गर्भ (लड़का पैदा) होता है इसलिये उक्त बातों को रजो युत स्त्रियां चवश्य त्याग करें ॥

वैद्यक के अतिरिक्त पुराणों में भी रजो युक्त स्त्रियोंको छूनेतक का निषेध है और प्रथम दिवस में चाण्डाली, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन रजकी (धोविन) संध्या लिखा है, कारण यह स्पष्ट होता है कि जिससे गर्भवती तीन दिन सबसे भिन्न ऐकान्त स्थल में बास करे "न रहे बांस न वाजे बांसरो" तब अवश्यमेव रजोयुक्ता उक्त बातों से बच सकती है । केसा आनन्द होता है जबकि हमसो ग पूर्व ऋषियों के रचोद्भवे ग्रन्थों के अभिप्राय को पूर्ण रूपसे जान जाते हैं आज कल के सिर्फ अंगरेजी बूके हुए नवजवानों को अभिप्राय तो सूझ पड़ता नहीं कोट पतलून की धाम में भट कच हते हैं कि हमारे पूर्व ऋषियोग तो बेवकूफ थे ॥

दर्भ संस्तर शायिनीं करतल श्रावणां न्यतम  
 भोजनीं हविष्यं त्रहृष्व भर्तुः संरक्षेत् ।

ततःशुद्धस्नानार्ता चतुर्थेऽहन्यहतवाससमलंकृतां ॥

कृत मङ्गल स्वस्ति वाचनां भर्तारंदर्शयेत् ॥

भावाद्यः—कुशे की चटार्क पर सीवे, हाथ में या पत्र में रखकर खीर भोजन करे और तीन दिन पति से बची रहै, चौथे दिन स्नानकर मलिन वस्त्र त्याग सुन्दर अम्बर तथा आभूषण धारण कर कल्याणकारक वेदमन्त्र पढ़ के पतिका दर्शन करे । पतिही का क्यों दर्शन करे इसमें क्या हेतु है ।

पूर्व पश्ये हतु स्नाता यादृशं नरं मङ्गना ।

तादृशं जनयेत् पुत्रं भर्तारं दर्शये दतः ॥

ऋतुस्नाता अर्थात् मासिक धर्म से शुद्ध होके जिस रूप रङ्ग के पुरुष या स्त्री को देखिगी तादृश रूप पुत्र अथवा कन्या को उत्पन्न करेगी इस कारण भर्ता ही को देखना उचित है ।

प्रथम हम दिखला चुके हैं कि ऋतुस्नाता मारी "भर्तारं दर्शयेत्" यह बात बहुत सत्य और परीक्षित है कि धर्मवती अपनी इच्छानुसार गौर या श्याम सुन्दर रूप लौलसुत शोभायमान सन्तान उत्पत्ति कर सकती है, यह कोई कल्पना वा रूपक नहीं है किन्तु पूर्ण सत्य यथार्थ है कि उत्तम संतान करने का मुख्य हेतु यद्योक्त बधू बर के आचार तथा आहार पर निर्भर है । भाग्य के भरोसे जो घोर अज्ञान निद्रा में पड़े हैं वे तो अवश्यही इसे मिथ्या कल्पित कहानियाँ जानेंगे । जो २ विद्यायें मनुष्यकी आत्मा और मनसे सम्बन्ध रखती हैं यद्यपि उसका अंकुर यही भारतवर्ष है परन्तु आज योरुप आमेरिका आदि अन्य हीरो के विद्वान और तत्त्वदर्शियों के गिर और होरहाहे वे भी इसी बातको मानते हैं कि सन्तान का स्वरूपवान् बलवान् बुद्धिवान और तेजवान् होना माता के आधीन है प्रायः देखा भी गया है कि माता पिता गौराङ्ग और स्वरूप वाले हैं परन्तु लड़के बदर्शक और कालेङ्गि हैं । अत्यन्त बाध्यावस्था में गर्भाधान करने के कारण बालक गर्भही में विगड़ जाते हैं वा उत्पन्न हुये और मरगये अथवा गर्भाधानही नहीं होता उस अवस्था में पुरुष अपने वीर्य (यह प्रकरण आगे लिखेंगे) और स्त्री रजको शुद्ध करे । स्त्री जब देखे कि रजस्रला होने के समय में १२ । १३ दिन शेष रहे तो दोनों समय सिर्फ खीर भोजन करे और ऋतु समय में सास्त्रोक्त रीति (आगे कहेंगे) से गर्भाधारण किया करे तो अवश्य उत्तम सन्तान होवे, यदि इस प्रकार करने से भी दो तीन ऋतुकाल व्यर्थ जाय अर्थात् गर्भाधान क्रिया निष्फल होयाने गर्भास्थिति न हो तो निम्नलिखित घृत की बनाकर स्त्री पुरुष दोनों सेवन करे और मद्य

मांसादि तमोगुण भोजन तथा ऋतुकाल से अतिरिक्त मैथुनादि कुत्सितविचार त्याग करें, जिस प्रकार योगी अपने तन मन और धन को योगाभ्यास में लगा देते हैं, मुक्ति के प्रार्थी शरीर को भी विष्णुमें अर्पण कर देते हैं, विद्यार्थीगण द्रव्योपाजन तथा अभ्यमण्डली में प्रथमा प्राप्त्यर्थ विद्याध्ययन में दत्त चित्त से कटिबद्ध होजाते हैं उसी प्रकार उत्तम सन्तान चाहने वाले भी सिद्ध बाबा आदि सुटेरों की आशा छोड़ घृत दुग्धादि चावल गेहूँ आदि जिससे अंतःकरण की शुद्धि बल पुरुषार्थ चारोग्यता और बुद्धि प्राप्त होती है भोजन करें, ब्रह्मचर्य से रहें और यथाचित काल में अपनी स्त्री का समागम करें। जैसे अन्य २ पदार्थों को उत्कृष्ट करने की विद्या है वैसीही संतानको उत्पत्ति करने की यही वैद्यक विद्या है चाहे कि इस पर लोग अधिक ध्यान दें क्योंकि इसके न होने से भारत की सन्नति होना संभव्य असम्भव है ॥

### घृत ।

शामा चल्दी ४ तोला चल्दी, खेत चन्दन, सुरा, झूट, छटामासी, मोरविल (यह नाम दक्षिण में प्रसिद्ध है) शुद्ध शिलोजीत कपूर मोथा यह सब दो २ तोला ले झूट कपरछान कर ठाई सेर गौ के दूध में मिलाय एक गूलरके काष्ठ पुत्र में दही जमादेय और प्रातःकाल गूलर ही की मथानी से मथ करके उसमें से मक्खन निकाल उसको ताय करके उसमें केसर, जायफल, कीटी लायची दो २ मासा कस्तूरी ४ रत्ती मिला के नित्य प्रातःकाल दो २ तोले के चन्दोज से दोनों जने खौर चयवा भीठे भात के साथ मिला के यथासुचि भोजन करें, इत्यादि और भी कामदेव घृत लहसुंफलादि संतानीत्यादक घृत लिखे हैं किसी अष्टमिपकुशर से स्वप्रकृत्यानुसार बनवाकर सेवन करें। स्वामी दयानन्द भी अपने संस्कारविधिमें चक्र घृत लिखा है और यह कहा कि यदि चक्र घृत सेवन से भी दो काल व्यर्थ जाय तो तीसरे महीने में ऋतु समय जब आवे तब पुष्य नक्षत्र युत ऋतुकाल दिवस में जिस दिन गर्भाधान करना हो (पुष्य नक्षत्र रहै) प्रथम प्रातःकाल उपस्थित होवे प्रथम प्रसूता (बिछाई) गौ का दही दो मासा और जब के दानों को सेक के पीस दो मासा ले दानों को एकत्र करके पत्नी के हाथ में दके उससे पति पूछे "किन्मिषसि" इस प्रकार तीन बार पूछे और स्त्री भी अपने पति को "पुष्यवनम्" इस वाक्य को तीन बार बोल के उत्तर दिये और जब युक्त दही को पीजाय, इसी रीति से पुनः २



३ वार विधि करना तत्पश्चात् मङ्गाङ्गुली वा श्वेत फलकी भंडकटाई (कण्टकारि) पीपल को छत में महीन पीपल के उसका रस ऋषभे में छान के पति (पुरुष) पत्नी के दाहिने नाक के छिद्र में मिश्रित करे और पति निम्न लिखित मन्त्र से जगन्नियंता परमात्मा की प्रार्थना करके यथोक्त (पूर्वोक्त लेखानुसार उत्तम चाभूषणादि धारण कर प्रसन्नचित्त हो) ऋतुदान करे यह सूत्रकार का मत है ॥

ओम् यमोपधौ त्रायमाणा सहमाना सरस्वती ।

अद्या अहंष्टहत्याः पुत्रः पितुरिव नामजगभम् ॥

सुश्रुतकारका भी मत है “लब्धगर्भायाश्चैतेष्वहःसुलक्षणा वटशुद्धा सहदेवाविश्वदेवानामन्यतमं घोरिणाभिपुत्र्यन्ती चतुरो वा विन्दून् दद्याद्दक्षिणे नासापटे पुत्रकामायै न चतादन्वष्टीवेत्”

पूर्वोक्त प्रकार सुलक्षणा वटशुद्ध (वरगद् के वृक्ष का सुगमा) सहदेवा विश्वदेवा (वृटी है) और भी जितने समान गुणकर दुधार वृक्ष हैं हाथ से खुरकर कर उसका दूध तीन या चार बिंदु दक्षिण नासा में दे खींच जाय और धूके न “पुत्रकामायै” कहने का मुख्य प्रयोजन यह है कि उक्त वट दुग्धादि दक्षिण नासा पुट में देने से पुत्र और वामनासा पुट में देने से कन्या उत्पन्न होगी, वाग्भट्ट में भी लिखा है कि लक्षणा वृटी वा वट जटा प्रथम व्याई गौ के दुग्ध में घोंट स्त्री ऋतुकाल में तीन चार बून्द वामनासा से चढ़ाय जाय तो नियय कन्या उत्पन्न होगी और भी अनेक उपाय सन्तानोत्पादक की हैं जिन्हें चांगी कहेंगे ।

स्त्री स्वाभाविक रीतिसे प्रति मास ऋतुकाल रजस्वला होती है जिसदिन रजोदर्शन होता है उस दिन से १६ दिन तक प्रसङ्ग करने की अवधि है उसी को समय और ऋतुकाल भी कहते हैं इसके बाद गर्भ नहीं रहता, इसके जाननेवाले चतुर व्यभिचारी पुरुष तथा व्यभिचारिणी स्त्रियां जो गुप्त रूपसे एक प्रकार का सम्बन्ध रखते हैं वे अवश्य १६ दिन त्याग के प्रसंग करते हैं कारण यह कि गर्भाधान होने का भय नहीं रहता है ।

प्रायः अज्ञान विधवायें जो अपने पातिव्रत धर्म तथा शिष्टाचारसे अनभिज्ञ हैं वे कामवाण से व्यथित हो शीघ्र ही परपुरुषमें रत होजाती हैं फिर क्या खानमैद्युन के समान क्षणमात्र की आनन्द अन्तिम दुःख की सीमा नहीं

(लोमों पर विदित है कि आज कल जकारों गर्भापात होते हैं अतः सख्य मद्यही के जन्मतुषे बालक दरिया, सण्डास और गढ़ोंमें फेंके जातेहैं) उन अवस्थाओं को यह बात अवश्य याद रखना चाहिये कि उक्त १६ रात्रियों के बाद दिन रात आनन्द में मग्न रहने से भी गर्भाधान नहीं रहता ॥ उपरोक्त १६ रात्रियों में प्रथम की तीन रात्रियों में कदापि प्रसङ्ग न करना चाहिये क्योंकि उन तीन रात्रियों में स्त्री के शरीर में से एक प्रकार मलीन स्थिर निकलता है जो कोई इन रात्रियों में प्रसङ्ग करते हैं उनका बल बुद्धि तेज और चायु का नाश होजाता है तथा गर्भ स्थिति नहीं रहता क्योंकि—

“नचप्रवर्त्त मानेरक्ते वीजं प्रविष्टगुणकरत्नवति  
यद्यानया प्रतिस्रोतः पाविद्रव्यं प्रक्षिप्तं प्रतिनव  
वर्त्तते नोर्ध्वङ्गच्छति तद्रूदेवद्रष्टव्यं”

बहते ज्ञेय रक्त में प्रसङ्गद्वारा प्रविष्ट वीर्य गुणकर नहीं होता अर्थात् खून के साथ वीर्य भी बह जाता है जैसे बहते जल में कोई उतरानेवाली वस्तु के फिकने से तत् स्थानमें ठहर नहीं सकती। रात्रिगणना इसलिये है कि दिन में ऋतुदान का निषेध है।

श्री स्वामी दयानन्द जी ने संस्कार विधि में गर्भाधान के प्रकरण में और चिगमनलाल मु० त० तिखड़र ग्राहजहाँ पुर निवासी ने एक छोटी सी पुस्तक गर्भाधान विधि की बनाई है उसमें लिखा है कि रजोदर्शन से ४ रात्रि तक प्रसङ्ग निषेध है, खैर स्वामीजी ने तो मनु का प्रमाण दिया है भला उक्त सुदर्स जो प्रथम चार रात्रियों का निषेध किस स्त्र में देखा है यह भी क्या भूगोल का पढ़ाना है वैद्यक सम्बन्धी व्यवस्था जो विना ततविषयक शास्त्र अवलोकन के करता है उसे प्रच्छन्नन का पाप होता है। वाग्भटादि सिद्धान्त आयुर्वेदीय ग्रन्थों में चतुर्थ दिवस का निषेध कहीं नहीं लिखा है वल्कि चौथे दिन गर्भाधान का विधान लिखा है यथा सश्रुते।

तीन रात्रि त्याग कर चतुर्थ रात्रि में गर्भाधान करने से सम्पूर्ण अंग युक्त दीर्घायु मन्तान होती है, अन्यथा।

इसलिये ऋतुवती तीन रात्रि पति का संग त्याग करै, अन्यथा।

“विकल्पेवञ्चतुर्थ्यां षष्ठ्यामष्ट्यां दश्यां द्वादश्याचोपे

यादिति पुत्रकामः”

पुत्र उत्पन्न करनेवाले चौथी, छठवीं, दसवीं और बारहवीं रात्रि में गर्भाधान करें ।

“अतःपरं पञ्चम्यां सप्तम्यां नवम्यामेकादश्याञ्चस्त्रीकामः,  
त्रयोदशी प्रभृतयोनिन्द्याः”

कन्या की इच्छा करनेवाले पांचवीं, सातवीं, नवीं, ग्यारहवीं रात्रि में प्रसङ्ग करें, तेरहवीं रात्रि से सोलहवीं अर्थात् अंत की चार रात्रि निषिद्ध है ।

पहिले कह चुके हैं कि स्त्रियों का मासिक तीन ही दिन रहता है चौथे दिन से गर्भाधान की रात्रि होती है और सम रात्रियों में पुत्र तथा विषम रात्रियों में गर्भाधान रहने से कन्या होती है किसी २ का मत है कि गर्भाधान के समय में यदि स्त्री रजसाधिदय वाली हुई तो कन्या होगा शुक्र अधिक हुआ तो पुत्र होगा जो रज और शुक्र समान हुये तो नपुंसक लड़का पैदा होगा । गीरखपुर से एक मन्त्राग्रय लिखते हैं कि गर्भाधान में लिखा है कि ४ दिन धर्मवती स्त्री को त्याग करे और आप आरोग्य दर्पणमें चौथे दिन गर्भाधान की विधि देते हैं और आज कल प्रायः ऐसा देखने में भी आता है कि ४ ५ दिन अथवा किसी २ का तो आठ २ दस २ दिन तक रक्त बन्द नहीं होता तो उस अवस्था में किस तरह प्रसंग मनुष्य करसक्ता है क्योंकि गर्भ रह नहीं सक्ता तो प्रसंग करना व्यर्थ है । दूसरे ज्योतिष शास्त्र में लिखा है कि अशुभ २ शुभ दिन नचत्र आवे तब गर्भाधान करें यदि उत्तम मुहूर्त न मिले और गर्भाधान का समय प्राप्त है तो इसमें क्या करना योग्य है ।

कृपाकर इसका उत्तर अवश्य दीजिये ?

(उत्तर)—प्रकृष्यावस्था और जिसका जैसा बल है उससे अधिक अथवा कम रक्त जाना और तीन दिन से अधिक दिन तक रक्तयाव बना रहना रोग समझा जाता है । रक्त दर्शनमात्र दिखलाई दे या घेठ में अधिक दर्द होकर एक रक्त का गांठ गिर पड़े या सिर्फ एक ही दो दिन रक्तयाव होकर बन्द होजाय अथवा मास से और दो चार दिन बढ़कर धर्म हो तो जानना चाहिये कि रज क्षीणता से रक्त सूख गया है उसका उपाय यह है कि अनार इत्यादि रक्तोत्पादक द्रव्य खिलाकर रक्त को वृद्धि करे और तीन दिनके उपर कई दिनतक रक्तयाव होना तथा पांच चार दिन मास पूर्ति को रह जाय

तभी रक्तथाव होजाना रक्त की जथाता जानना चाहिये, जब तीन दिन से अधिक दिनतक रक्तथाव होते देखे तो शीघ्र ही शीघ्र धारा उसको बन्द करने की चेष्टा करे। जितनी शीघ्रिया रक्तप्रदर की है वे सब उस शवस्था में काम-देसती है। ज्योतिष शास्त्र में सिर्फ गणितमात्रमाननीय है य.युर्वेद वित् चिकित्सिकगण आवश्यक कार्यमें सुहृत्तादि फलित अंगकी नहीं मानते।

दत्तात्रयो आदि कई ग्रन्थों में बंध्या की किकित्ता तथा निदान इस प्रकार से लिखे हैं कि एक समय पावंतो जी ने शिव जी से प्रश्न किया कि महाराज बाल स्त्रियों के गर्भ ही नहीं रहता सो क्या कारण है। शिव जी बोले कि स्त्री लोग छः दौपों से बंध्या होती है उनमें भी कोई स्त्रियोंको तो जन्मावधि संतान नहीं होता अर्थात् जन्मबंध्या होती है, किसीके होते हैं और मर जाते हैं उसे मृतबंध्या कहते हैं, किसीके सिर्फ एक संतान होकर बन्द होजाता है उसे काकबंध्या कहते हैं, उक्त बंध्यायें निम्नलिखित ६ दौपों से होती हैं प्रथम फूल (गर्भाशय) के मध्य में वायु भरजाती है। २ फूल के ऊपर मांस बढ होजाता है। ३ फूल में कृमि होजाते हैं। ४ फूल वायुवेगमे शीलत होजाता है। ५ पुष्प दग्ध होजाने से। ६ पुष्प उलट जाता है, केचित् भूतदोष और ७वाँ अष्टम कर्मदोष मानते हैं। फूल में दोष प्राप्त होने का मुख्य कारण बालविवाह है। स्त्री पुरुष में परस्पर अप्रीति और असमय मैथुन है। हीटो स्त्रीको जो बड़ा पुरुष मैथुन करता है तो भी फूल जल जाता है। लक्षण-मासिकधर्म के बाद जब पुरुष रति करचुके तो पूछे कि तुम्हारा कौन अङ्ग दृखता है जो स्त्री से कहे कि शरीर कांपता है तो जानना कि फूलमें वायु है, कटिमें दईकहे तो मांसबृद्धि जानना, पित्तुरियों में दई बतलावे तो फूल में कृमि जानना। छाती में दईकहे तो शीतल माय व्यथा में फूल दग्ध और जाँघोंमें दईहोना कहे तो जानना कि फूल उलट गया है। यदि कहीं दई न हो तो जानना कि पूर्वजन्म का दोष है।

जब देखे कि स्त्री के गर्भाशय का फूल जल गया है तो समुद्रफल, सेधा नोन और किञ्चिन्मात्र लहसुन तीनों को महीन पीस रुई के फाहा में करके भग में रख दे अगर जलन-मालुम हो तो निकाल डाले दूधी तरह तीन दिन करे चौथे दिन स्नान करके पति का अङ्ग करे नियय है कि गर्भाधान शक्य होगा। फूल में हवा भर गया हो तो ही गको घाले तिल के तेलमें पीस रुई

में तर कर भग में तीन दिन रखने से होय नाश होता है । यदि फूल में मांस बढ़गया हो तो काखा जीरा, हाथी का नाखून और रेंडी का तेल तीनों को महीन पीस रुई में तर कर भग में रखते तीन दिन पर्यन्त चौथे दिन पुरुष का सङ्ग करे । ३ फूल में कीड़ा लगा हो तो हड़, बहेरा, फायफल तीनों को सावुन के पानी में महीन पीस रुई के फाहा में तर कर भग में रखते तो कृमिनाश हो गभं रहे । ४ फूल शीतल होगया हो तो बघ, स्याह जीरा, असगन्ध तीनों को चौकिया सुहागा के पानी में पीस फाहा तर कर तीन दिन पर्यन्त भगमें रखने से आराम होता है । ५ यदि गर्भाशय उलट गया हो तो कस्तूरी और केसर दोनों को पानी में पीस गीली बनाय भग में राखे । चतुर्थ दिन स्नान पति का सङ्ग करे आशा है कि आधान रहेगा ॥ ६

एक महाशय हज़ारी बाग से पत्रहारा निम्नलिखित बातें पूछा है उसे भी इसी स्थल में पाठक गणों के अवलोकनाय प्रकाश करते हैं वह यह हैं १३ रात्रि से १६ अन्त की रात्रि क्यों निषिध है यदि इन रात्रियों में आधान होजाय तो उसका क्या फल होगा । दूसरा अगर आधान के प्रारम्भ ही से स्त्री दो मास पर्यन्त रोगान्त रहै तो उसकी चिकित्ता होनेसे बालक को कुछ ह्येय होता है या नहीं (उत्तर) मासिकधर्म के खामान्तर स्त्रियोंके गर्भाशय (पुण्य) का मुख खुल जाता है और प्रायः छोड़य रात्रि पर्यन्त खुला रहता है तत्पश्चात् रक्त का मेल उसमें पुनः सञ्चित होना आरम्भ होता है इस कारणसे उस अवस्था में आधान नहीं रहता यदि किसी कारण वशात् रह भी गया तो निर्बल सन्तान देनेका तथा गर्भ गिरजानेका भी सम्भव है । एक बात परीक्षा से यह भी देखा गया है कि जिस स्त्री का मन पति से रुष्ट अथवा क्रोधित रहता है जब तक मन प्रसन्न न करेगी आधान न रहैगा और जिस स्त्री का मन परपुरुष पर लगा रहता है उसे भी निज पतिसङ्ग से प्राय आधान नहीं रहता जब उस परम प्यारे का संग होगा शीघ्र ही आधान रह जायगा । या पुरुष स्वयं गर्भाधान के दिनों को किसी कारण से त्याग कर अथवा विदेश से आया हो और ऋतुवती का दिन भी गत होगया हो तो भी गर्भाधान होसक्ता है । आधान रहने का दिन भी निश्चय तभी होगा जब सिर्फ मासमें एक ही बार प्रसङ्ग करेगा । गर्भिणी स्त्री यदि किसी रोग में ग्रसित हो और उसका यत्न न कियाजाय तो उसी रोग से गर्भ में बालक दुःख पाकर मरजाता

तभी रक्तश्राव होजाना रक्त की जघ्णता जानना चाहिये, जब तीन दिन से अधिक दिनतक रक्तश्राव होते देखे तो शीघ्र ही शोधक द्वारा उसको बन्द करने की चेष्टा करे। जितनी शोधधिया रक्तप्रदर की हैं वे सब उस शवश्या में काम-देसती हैं। च्योतिष शास्त्र में सिर्फ गणितमात्रमाननीय है य.युर्वेद वित् चिकित्सिकगण आवश्यक कार्यमें मुञ्चतांदि फलित चंगकी नहीं मानते।

दत्तात्रयो आदि कई ग्रन्थों में वंध्या की किकित्सा तथा निदान इस प्रकार से लिखे हैं कि एक समय पावती जी ने शिव जी से प्रश्न किया कि महाराज बाल रित्रयो के गर्भ ही नहीं रहता भी क्या कारण है। शिव जी बोले कि स्त्री लोग कः दोगों से वंध्या होती है उनमें भी कोई रित्रयोको तो जन्मावधि संतान नहीं होता अर्थात् जन्मबंध्या होती है, किसीके होते हैं और मर जाते हैं उसे मृतबंध्या कहते हैं, किसीके सिर्फ एक संतान होकर बन्द होजाता है उसे काकबंध्या कहते हैं, उक्त वंध्याये निम्नलिखित ६ दोगों से होती है प्रथम फूल (गर्भाशय) के मध्य में वायु भरजाती है। २ फूल के ऊपर मांस बृद्ध होजाता है। ३ फूल में कृमि होजाते हैं। ४ फूल वायुवेगमे धीलत होजाता है। ५ पुष्प दग्ध होजाने से। ६ पुष्प उलट जाता है, केषित् भूतदोष और ७वाँ अष्टम कर्मदोष मानते हैं। फूल में दोष प्राप्त होने का मुख्य कारण बालविवाह है। स्त्री पुरुष में परस्पर अप्रीति और असमय मैथुन है। हीटी स्त्रीको जो बड़ा पुरुष मैथुन करता है तो भी फूल जल जाता है। लक्षण-मासिकधर्म के बाद जब पुरुष रति करचुके तो पूछे कि तुम्हारा कौन अङ्ग दुखता है जो स्त्री घे कहे कि शरीर कांपता है तो जानना कि फूलमें वायु है, कटिमें दर्दकहे तो मांसवृद्धि जानना, पित्तुरियों में दर्द बतलावे तो फूल में कृमि जानना। छाती में दर्दकहे तो शीतल माथ व्यथा में फूल दग्ध और जांघोंमें दर्दहोना कहे तो जानना कि फूल उलट गया है। यदि कहीं दर्द न हो तो जानना कि पूर्वजन्म का दोष है।

जब देखे कि स्त्री के गर्भाशय का फूल जल गया है तो समुद्रफल, सेधा मोन और किञ्चिन्मात्र लहसुन तीनों को महीन पीस रुई के फादा में करके भग में रख दे अगर जलन मालुम हो तो निकाल डाले इसी तरह तीन दिन करे सोये दिन स्नान करके पति का अङ्ग करे निश्चय है कि गर्भाधान शक्य होगा। फूल में हवा भर गया हो तो, हींगको काले तिल के तेलमें पीस रुई

में तर कर भग में तीन दिन रखने से दोष नाश होता है । यदि फूल में मांस बढ़गया हो तो काखा जीरा, हाथी का नाखून और रेंडी का तेल तीनों को महीन पीस रुई में तर कर भग में रखे तीन दिन पर्यन्त चौथे दिन पुरुष का सङ्ग करे । ३ फूल में कौड़ा लगाही तो हड़, बहेरा, कायफल तीनों को साबुन के पानी में महीन पीस रुई के फाहा में तर कर भग में रखे तो कृमिनाश हो गभं रहे । ४ फूल घीतल होगया हो तो बघ, स्याह जीरा, असगन्ध तीनों को चौकिया सहागा के पानी में पीस फाहा तर कर तीन दिन पर्यन्त भगमें रखने से आराम होता है । ५ यदि गर्भाशय उल्ट गया हो तो कस्तूरी और केसर हीनों को पानी में पीस गीली बनाय भग में राखि । चतुर्थ दिन स्नान पति का सङ्ग करे आधा है कि आधान रहेगा ॥ ६

एक महाशय हजारी वाग से पत्रहारा निम्नलिखित बातें पूछा है उसेभी इसी स्थल में पाठक गणों के अवलोकनाय प्रकाश करते हैं वच यच हैं १३ रात्रि से १६ अन्त की रात्रि क्यों निषिध है यदि इन रात्रियों में आधान होजाय तो उसका क्या फल होगा । दूसरा अगर आधान के प्रारम्भ ही से स्त्री दो मास पर्यन्त रोगाक्त रहे तो उसकी पिकित्ता हीनेसे बालक को कुछ क्षेप होता है या नहीं (उत्तर) मासिकधर्म के क्षान्तर स्त्रियोंके गर्भाशय (पुष्प) का मुख खुल जाता है और प्रायः षोडश रात्रि पर्यन्त खुला रहता है तत्पश्चात् रक्त का मेल उसमें पुनः सञ्चित होना आरम्भ होता है इस कारणसे उस अवस्था में आधान नहीं रहता यदि किसी कारण वशात् रह भी गया तो निर्बल सन्तान देनेका तथा गर्भ गिरजानेका भी सम्भव है । एक बात परीक्षा से यह भी देखा गया है कि जिस स्त्री का मन पति से रुष्ट अथवा क्रोधित रहता है जब तक मन प्रसन्न न करेगी आधान न रहेगा और जिस स्त्री का मन परपुरुष पर लगा रहता है उसे भी निज पतिसङ्ग से प्राय आधान नहीं रहता जब उस परम प्यारे का संग होगा भीष्म ही आधान रह जायगा । या पुस्तक स्वयं गर्भाधान के दिनों को किसी कारण से त्याग कर अथवा विदेश से आया हो और ऋतुवती का दिन भी गत होगया हो तो भी गर्भाधान होसक्ता है । आधान रहने का दिन भी नियम तभी होगा जब सिर्फ मासमें एक ही बार प्रसङ्ग करेगा । गर्भिणी स्त्री यदि किसी रोग में ग्रसित हो और उसका यत्र न कियाजाय तो उसी रोग से गर्भ में बालक दुःख पाकर मरजाता

है अथवा तत्परो गृहित उत्पन्न होगा इसलिये बीमार गर्भिणी स्त्री की चिकित्सा सत् वैद्य द्वारा अवश्य करावे । गर्भिस्थित होने न होने के अनेकानेक कारण हैं फिर भी कभी प्रकाश करेंगे । चारोग्यदपण के प्रथम पद्य से जो प्रातःसूक्ष्णानाधारस्य शयनाति पर्यन्त यावत्कर्म ये क्रमशः प्रकाश कर स्त्रीप्रसंग के प्रकरण में ऋतुदान की भी व्यवस्था अपनी स्वल्प बुद्धानुसार साधारणतौर पर गाय गये, विश्वर पाठक गण को यदि किसी स्थल में कुछ भ्रमदायक अथवा अशुद्ध देख परे तो कृपाकर स्वयं शुद्ध करलें और हमें पत्रद्वारा सूचित करें ताकि प्रकाशित होनेवाले अर्हों में छप जाया करे ।

आगे हम में कुछ स्त्री प्रसङ्ग के विषय में लिख चुके हैं फिर भी अभी विषय को उठाते हैं पाठक गण उसे फाल्गुण मास का फगुण जान हंसै न उसके तात्पर्य को समझें कि सम्पादक क्या कहता है । आज कल देखा जाता है कि भारत के तीन भाग मनुष्य पर स्त्री गमनादि में रत हैं । इसमें शक नहीं है कि स्त्रीप्रसङ्ग में अति सुख है परन्तु क्षणमात्र के लिये पुनः अधिकांश आयु ऐसे दुःख से काटना पड़ता है कि जिसकी सीमा नहीं, मेरी यह राय नहीं है कि अपनी स्त्री से भी गमन न करे, मेरा तात्पर्य वैश्या आदि गमन पर है । क्योंकि आज कल ऐसे ही मनुष्योंकी संख्या अधिकतर है । उनमें भी कई भाति के लोग हैं जैसे किसी का चित्त किसी गृहस्थ स्त्री के प्रेम में फंसा है और उसीके पीछे लोकलज्जा त्याग पागल बना फिरता है इस कोटि में मुसद्द बेरामी और महंत आदि भी बद्धत हैं और दुर्गहों लोगों के कारण से वल्ले २ आदिमियों के घर के कामकाज करनेवाली चाकरनियां कुटनी बन गई हैं । यह कोई असत्य बात नहीं है जिनका चित्त गृहस्थियों में अटकता है वे उसके मिलने के लिये अनेक तोड़फोड़ के उपाय रचते हैं । दूसरे वैश्यागामी इनमें केवल भूखंडी नहीं हैं वल्लि अधिकांश ऐसे पड़े लिखे मनुष्य इस दुष्कर्म में लीन देख पड़ते हैं कि जिनपर अनाथ भारत की उन्नति निर्भर है लेकिन जब वे ही चारहीन होते जाते हैं तो भारत की उन्नति होचुकी । तीसरे गुदामैयुन करनेवाले इस कोटिमें सुसलमान और रामफटाका वाले अधिक हैं ।

अपनी स्त्री से भोग करने से जो अति होती है उससे सतीगुण अधिक अति पर स्त्री गमन करने से होती है कारण यह है कि जब पर स्त्री गमन करने की इच्छा होती है तो उसके साथही काम इतना प्रबल हो उपस्थित



होता है कि जिस कदर स्त्रीय स्त्रीगमन में वीर्य पात होता है उससे कई अंश अधिक शुक्र पर स्त्री संग में निर्गत होजाता है । धातु निकल जाने का यह बहुत ठीक कारण है कि जैसी इच्छाकी प्रबलता होती है उसीके अनुसार वीर्य भी खर्चलत होजाता है । (प्रश्न) पर स्त्री के साथ शीघ्रही कामोत्तेजित और अधिक वीर्यपात क्यों होता है ? ( उत्तर ) अपनी स्त्री नित्यसः समीप रहने से वीर्य प्रबल इच्छा नहीं होती जैसी पर स्त्री से होती है । इसका कारण यही जान पड़ता है कि नित्यसः चित्त लगे रहने से और दूरसे कभी कभी चक्षुद्वारा दृष्टि संग करने से निरन्तर कामाग्नि सुलगा करती है वस अकस्मात् प्राप्त होजाने पर शीघ्रही पति कामोत्तेजित हो अधिकार्य वीर्य निकल जाता है । ( प्र० ) किसी २ को पर स्त्री प्राप्त होने पर भी कामोत्तेज नहीं होता क्यों ? ( उ० ) इसका कारण डर है और बड़तेरों को यह होता है कि स्पर्श करते ही कपड़े में शुक्र निर्गत होजाता है । इत्यादि कारणों से प्ररीर को बड़ा ही अपकार होता है इस लिये पूर्णावस्था में प्रसन्नतापूर्वक विवाह कर उसीसे आनन्द करना चाहिये । ( प्र० ) यह सब बातें स्त्रीय स्त्री में क्यों नहीं होती ? ( उ० ) इसका कारण यह है कि अनायास की मिली हुई वस्तु पर कोई अधिक चिन्ता नहीं करता क्योंकि वह तो मन के चलायमान होतेही मिल सकती है । दूसरे पर स्त्री के प्रेम में अनेक प्रकार के शोक चिन्ता भी उत्पन्न होती है क्योंकि जिसके पानेमें कष्ट है अर्थात् जो वस्तु शीघ्र नहीं मिलसकती है उसके विषय में स्वभावता अधिक चिन्ता उपस्थित होती है यहां तक कि उसी प्रीति और गममें कितनों का अन्न जल छुटजाता है कितने लोकलज्जा कुटुम्ब का मोह छोड़ दिश देधान्तरों को भग जाते हैं अनेकानेक यासना भोग करते हैं इससे पर स्त्रीगमन में कुकभी सुख नहीं है । ( प्र० ) बाह्य आप क्या कहते हैं पर स्त्री में जो सुख है उस सुख का हाल वही जानसकता है जो एक बार भी अपनी रम्य सरोवर प्राणधारी के प्रेमरूपी भँवर में चकर खाया है "वन्दर क्या जाने अहररु का स्वाद" मला कन्दर्प विद्याहीन पुरुष इस सुख को जान सके हैं कभी नहीं ? ( उ० ) इस बातको हम भी मानते हैं कि सुख अवश्य मिलता है परन्तु यह सुख उन लोगों को भ्रमसे जान पड़ता है नहीं तो वास्तवमें दुःखके पतिरिक्त सुखका लेशमात्र भी नहीं है क्योंकि पर स्त्री गमन करने में पहिले तो यह भय लगा रहता है कि कहां देख न

ले अथवा कोई सुन न ले इत्यादि इन्होंने चिन्ताओं से ग्रहीत दग्ध होजाता है तो फिर जहाँ ऐसी चिन्तायें वर्तमान हैं वहाँ क्षणकालीन सुख क्योंकर सुख देसक्ता है कभी नहीं क्या तुमने रावणादि पर स्त्रीगामियों का वृत्तान्त कभी नहीं सुना है तो क्षणकालीन सुख के लिये जन्मपर्यन्त दुःखका भोगना मूर्खी का काम है। इस लिये बुद्धिमान लोग पर स्त्री को "मातृवत्परदारं पु" माता कहा है। (प्र०) अच्छा वैश्यागमन में तो दोष नहीं है क्योंकि न तो वह किसी की स्त्री है और न उसमें किसी प्रकार का मय तथा चिन्ता होती है किन्तु रूपके का खर्च है ? (उ०) वैश्यागमन में उससे भी अधिकार्थ वीर्य का नाश है क्योंकि शुक्राश्रयमें विषयसमय शुक्र सदा प्रस्तुत नहीं रहता, जिस समय मन में काम विषयकी चिन्ता उपस्थित होती है स्त्री को स्वयं अथवा पालिजन का उद्योग किया जाता है उसी समय वीर्याश्रय में घातु का घाना आरम्भ हो जाता है अर्थात् जिसके साथ जिसका मन जितना ही अधिक चलायमान होता है उतना ही भीघ्रता से शुक्र प्रस्तुत होकर निर्गत होता है तो पर स्त्री वा वैश्यागमन से मन में जेसी भारी चञ्चलता उपस्थित होती है वैसी हर समय की मिलनेवाली अपनो स्त्री प्रति उद्योग करने से भी वैसी चञ्चलता कदापि नहीं होती है तो वयही जान लीजिये कि जिसके ऊपर मन अधिक दो-लता है उसीके साथ अधिक परिमाण शुक्र भी निर्गत होता है और अधिक वीर्य के निकलने से ग्रहीत और मन भी अधिकतर निर्वल एवं निस्तेज हो जाता है। दूसरे वैश्यागमन से उपदंश (गरमी) और मूत्राघात (सजाक) वद (वाधी) भगन्दर आदि रोग उत्पन्न होते हैं जिसमें दुःख से अतिरिक्त लोकनिन्दा भी होती है। जैसे एक बड़े आदमी के पुत्र के गरमी निकली किसी वैद्य ने पारद संघटित शीपध खिलादिया कि जिससे उसका मुंह घा गया उससे थूका न जाय तो उसने अपने बाप से कहा कि बाप थूका नहीं जाता है उसके पिता ने उत्तर दिया कि बेटा तुमको जहान थूकता है एक तुमसे न थूका गया तो क्या झपा। तो देखिये वैश्यागमन से घन ग्रहीत लोक-लज्जा सबका नाश होजाता है। वैश्यागमन के विषयमें मृच्यकटिक नाटक में यह वद्वब ठीक लिखा है ॥

इह सर्व्वस्व फलिनः कुल पुत्र महादुमाः ।

निष्फलत्वमलं यान्ति वैश्या विहग भक्षिताः ॥

अयं हि सुरत ज्वालः कामाग्निः प्रणयेन्धनः ।

नराणां यत्र ह्ययते यौवनानि धनानि च ॥

अर्थात् कुलवालों के पुत्ररूपी बड़े वृक्ष जो सब प्रकार से फल फूल सत्ते हैं वह वेद्यारूपी पत्तियों करके भक्षण किये झुंघे निष्फल होजाते हैं यह कामरूपी अग्नि जिससे सुरत अर्थात् स्त्री सङ्गरूपी ज्वाला उठती है और वह प्रीतिरूपी लकड़ी से जलती है ऐसी अग्नि में मनुष्यों का रूप तथा धन खाहा होजाता है । किसी कवि ने कहा है ।

सोरठा-यह तन हरियर खेत, तरुणौ हरिणौ चरि गई ।

अजहँ चेत अचेत, अधपेटचरा वषाय ले ॥

फिर भी मनुष्य वेद्यामें लोन रहते हैं उनकी कामाग्नि तथा धनानि निरन्तर दग्ध करती है कारण यह है कि वह आज एक वेद्या पर आश्रित हैं और उसी की चिन्ता में लगे हैं फिर उसके मिलते दूर न हुई कि उससे भी चढ़बढ़ कर खूबसूरती में एक दूसरी दृष्टि पड़ी, वस अब उसकी चिन्ता में लगे इसी प्रकार निरन्तर दृष्टि नहीं होती और यावत् यौवन इसी दुःख से काटते हैं इससे वेद्यागमन को विद्वानों ने निषिद्ध ही किया है । एक वेद्यागामी राजा को एक पण्डित हमेशा निन्दा करते थे कि तुम वेद्या के पाप से इस लोक में दुःख भोगकर नरक में जाओगे । एक दिन राजा ने अपनी वेद्या से कहा कि आज रातको तुम पण्डित के घरमें जाओ और पण्डितके साथ किसी तरह रमण करो तो पण्डित फिर हमारौ कभी निन्दा न करे । राजा की आज्ञा पाय वेद्या अपनी शृङ्गार कर सज सजकर पण्डित जीके पास गई और कहने लगी कि महाराज आज श्रुपाकर मेरे साथ गमन करिये । पण्डित जी ने वेद्या से कहा कि अच्छा तुम अपने शरीर के बख्शो उतार कर अलगधर कर गमन होजाय, वेद्या नमः हो गई, पण्डित जी उसे नीचे से ऊपर तक निहार कर कहा कि जो २ वस्तु हमारी पण्डिताइन के हैं वही तुम्हारे में भी हैं उसे अधिक क्या तुम में है जो हम तुम्हारे साथ रमण करें तो यह मूर्खों का काम है जो अपनी स्त्री को त्याग वेद्या गमन करते हैं । वेद्या ने राजा से जाके यह सब वृत्तान्त सुनाया, राजा को ऐसी लज्जा आई कि वेद्या गमन करना छोड़ दिया यह बात बहुत सज्य और परीक्षित है कि वेद्यागमन में

सिवाय वृथा वीर्य नष्ट करने के और कुछ भी गुण नहीं है क्योंकि पुरुष  
 वेश्या को प्यार करते हैं और वेश्या रूपये को प्यार करती है तो परस्पर प्रीति  
 न ठहरी तो जहाँ परस्पर प्रीति नहीं वहाँ सुख कहाँ । अनेक पुरुषोंके सङ्ग  
 से वेश्या का कामानन्द नष्ट होजाता है सिर्फ मनके मोहने वाली जपरकी जो  
 कुछ सफाई और बनावट है वही देख लीजिये जिन महाशयको इस बातका  
 विश्वास नहीं किसी सत्य बोलने वाली वेश्या से कसम धरा के पूछो कि जैसे  
 पुरुष को तुम्हारे साथ प्रसङ्ग करने से आनन्द होता है वैसाही तुमको भी होता  
 है या नहीं तो वेश्या कहेगी कि चढ़ती जवानों में शायद चन्द्रोन्नत कभी र  
 होजाता था अब तो सिर्फ रूपये का आनन्द होता है प्रथम तो वेश्यागनन से  
 परस्पर आनन्द नहीं, दूसरे जब वेश्या को बुलाते हैं अथवा उसीके घर जाते  
 हैं तो रूपये वसूल करने तथा नित्यशः अप्राप्ति जान चार पांच वार प्रसङ्ग  
 करते हैं, तीसरे जब घातु में जप्यता पङ्कच जानेके हेतु स्तम्भनप्रति जाती  
 रहती है तो अफीम, चण्डू आदि नशा पीने लगते हैं जिसमें वीर्य और भू  
 जल भुग खाक होजाता है, चौथे जब पास रूपया न रहा तो घरकी वस्तु तथा  
 औरत का गहना तक लेकर देघाते हैं, पाँचवें गरमी सूजाक से पीड़ित हो  
 वैद्य, डाक्टरों के पास दौड़ते हैं अन्त में आप भी नरक भोगते हैं और अपने  
 कुटुम्ब को भी भोगाते हैं । शेष तीसरे खण्ड में ॥

### अति लाभदायक शिक्षा ॥

केवल पुरुष विषयक मनुष्य को उचित है कि वाद प्रसङ्ग के अवश्य दुग्ध  
 पिये, सबसे उत्तम तो यह है कि जिस रात्रि में स्त्रीप्रसङ्ग करना हो पूर्वही से  
 मिश्रीयुत अधावंट दूध रक्खा रहे और मैथुन के उपरान्त उठकर हाथ मुह  
 धोय दूध पी ले इससे मैथुन की हाररत जाती रहती है, वीर्य में किसी  
 प्रकार का दोष नहीं उत्पन्न होता है । यदि रात्रि में दुग्ध लाभ न हो तो  
 उचित है कि प्रातःकाल भौच दन्तधावन के बाद आध सेर टाटक गौ के दुग्ध  
 में मिश्री डाल पीजाय, मैथुन के सबेरे यह भी करना योग्य है कि उस दिन  
 काले तिल का तेल शरीर में मर्दन करके स्नान करे और दुग्ध भात मिश्री या  
 खीर या मोठा भात भोजन करे और दोपहर के दो तीन घण्टे तक शयन करे  
 इस क्रिया से मनुष्य कभी वीर्यहीन निर्बल पुरुषत्व रहित न होगा ।

मैथुन हमेशा रात्रि में एक बार करना उचित है सिर्फ वर्षाकाल में जब

कि आकाश अभयुक्त है और हिमऋतु में दिनमें भी मैथुन करसक्ता है परन्तु एक बार ।

वेद की पाशा तो यही है कि मनुष्य मासान्धमें स्वकीय ऋतुवती स्त्री के साथ गमन करे, मनु का भी बचन है ।

ऋतुकालाभि गामीत्यात् स्वादर निरतःसदा । ब्रह्मचर्यैव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥

इमेधा जो मनुष्य अपनी ही स्त्री से प्रसन्न और ऋतुगामी होता है वह ऋष्य ब्रह्मचारी के सदृश है । जो मनुष्य वृथा वीर्य नष्ट न करके निरन्तर उसकी स्थिरता रखता है वहीं पुत्रप बलवान, तेजस्वी और सम्पूर्ण उत्तम कार्यों का करनेवाला होता है, अन्यथा वीर्य नष्ट करने से आयु घट जाती है और अनेक प्रकार के रोग होते हैं, विशेष कर ऋष्य को तो अवश्यही अपने वीर्य की स्थिति और भोजन ह्रादन इस प्रकार रखना चाहिये कि वीर्य कभी खप में भी नष्ट न हो कारण यह है कि जितना ही वीर्य पुष्ट होगा उतना ही उनके लड़के अत्युत्तम रूप, लावण्ययुक्ति पुष्टि, बल और पराक्रमयुक्त होंगे ।

महजनों को उचित है कि अपनी स्त्री से प्रेम, प्यार और प्रसन्न करै उसके ऐसा बर्ताव रखे कि वह सर्वदा प्रसन्न रहे । क्योंकि ॥

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्राभार्या तथैव च ।

यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वैधुवम् ॥

जिस कुल में स्त्री से पुत्रप और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है उसी कुल में सर्वसौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं । जहाँ कलह एवं दानों में अप्रीति रहती है वहाँ ही दीर्घाय और दारिद्र्य वास करता है इससे स्त्री का प्रसन्न रखना विद्वानों की श्रेय है क्योंकि स्त्रियों को दुःख न हो, ऐसा मनु जीका भी बचन है ।

शोषन्ति यामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ।

न शोषन्ति तु यत्रैता वर्द्धन्ते तद्वि सर्वदा ॥

जिस घर में स्त्री शोकातुर होके दुःख पाती है वह घर वा कुल शीघ्र ही सत्यानाश होजाता है और जिसमें स्त्रियाँ आनन्द से प्रसन्न और प्रसन्नता से मरीझई रहती हैं वह घर और कुल सर्वदा बड़ता है । हे आर्यकुलाभिमा-

नियो यदि आपत्तोग सर्वे मन से देय का कल्याण एवं चञ्चल-चाहते हैं तो वैश्याओं के बाहरी जालमें फँसकर गृहणियों को योकातुर मत करो उन्हें, के साथ भोग खिलास करो, उन्हेंकी अच्छे २ आभूषण, और वस्त्र पहिनाओ फिर देखो तुम्हें कैसा आनन्द मिलता है, देख करके भी क्या शस्त्र बने, हो यह सामान्य अंग्रेजों का क्रिसे है ? हे ईश्वर दयानिधे हमारे आर्य मादर्यों की भी वृद्धि दे ।

मनुष्य प्रति कामातुर होने पर जाड़े के दिनों में तीसरे दिन, गर्मी में पन्द्रहवें दिन और वर्षाकाल में जब मेघ की गर्जना हो मैथुन कर सकता है क्योंकि स्त्रीप्रसंग की इच्छा हो तो कामके वेग को न रोकना चाहिये क्योंकि काम के वेग को रोकने से प्रमेह और सूत्रकृच्छ्रादिक बीमारियाँ, अङ्गमें वि-यिक्तता और पुरुषत्व की हानि होती है, इससे कामातुर होनेपर प्रसङ्ग करना उचित है ।

### कामातुर के लक्षण ॥

चित्त घबड़ाय, कहीं मन न लगे, बिना इच्छा ही किये उपस्थेन्द्रिय बली एवं कठोर हो प्रसन्न योग्य स्त्री को देखतेही समस्त शरीर सन्न होजाय और सूच्छा की प्राप्त हो तब जानना चाहिये कि यह कामातुर है उस अवस्था में उचित है कि पूर्वोक्त नियमित दिनों में अवश्य मैथुन करे । कोई यह प्रष्टा करे कि यदि उस अवस्था में स्त्री गर्भिणी या रोगार्ति हो तो ? दूसरी स्त्रीसे गमन करे, (प्रश्न) "मातवत्तरदारेषु" इत्यादि श्लोकों कास्त्रकारोंके वचन हैं कि पर स्त्री गमन न करना (उत्तर) दूसरी स्त्री से तात्पर्य है रोग रहित वैश्या अर्थात् कामातुर होने पर यदि स्वकीय स्त्री गर्भिणी या रोगग्रस्त हो तो नियोग या वैश्यागमन करलेना कोई दोष नहीं है कारण यह है कि यदि उस अवस्था में स्त्री लाभ न हो तो-शारीरक दया में हानि पङ्क व सती है (प्रश्न) ऐसा मत कहे वैश्या महापापघीला होती हैं उनके स्वर्गमात्रमें मनुष्य पापी होजाता है, पुनः "आयुः क्षतिर्वफलता दुपहास्यता च निन्दार्थं हानि लघुता विगतिः परकृति" वैश्यागमन से आयुकी नाश निष्फल वीर्य पतन, हँसी लोकादिन्दा, द्रव्यनाश और हलकई एवं पूर्वमें उत्तम गति नहीं होती (उ०) यह सामान्य वचन उनके लिये है जो पहचानिये उसीसे लिप्त रहते हैं, आपद् कालमें नियोग या वैश्यागमनमें पाप नहीं है क्योंकि ईश्वर की सृष्टि क्रमानु-

कूल स्त्री पुरुषका स्वाभाविक व्यवहार रुकची नहीं सक्ता शिवाय वैराग्यवानं पूर्ण विद्वान योगियों के । नित्यप्रति स्त्री के साथ एक पलंग पर सोना भी निषेध है क्योंकि वीर्य मानिन्द घी के है जिस प्रकार घृतपिण्ड अग्निताप से द्रव होजाता है तिसी प्रकार मनुष्य का वीर्य भी स्त्री के समागम अर्थात् सिर्फ अङ्ग स्यात् ही द्रवीभूत हो च्युत होजाता है । स्त्री से अलग रहने वाले पुरुष चिरायु और बली होते हैं और वे एकाकी बहुत शीघ्र बुढ़ापा नहीं होते, उत्तम है कि जिस दिन प्रसङ्ग करना हो एक पलंग पर शयन करै ॥

### स्त्री त्याज्य ॥

नित्तलिखित स्त्रियोंके साथ मैथुन करना शास्त्रमतसे कदापि न चाहिये, जैसे रजस्रला, अकामा ( जिस स्त्री का काम चैतन्य न हो ) मलिना ( मैली कुचेली ) अप्रिया, वृद्धा, रोगयुक्ता, अङ्गहीना ( लँगड़ी लूली, अन्धी आदि ) गर्भिणी, योनिरोगयुक्ता अर्थात् जिसके गर्भ, सजाक, या प्रदर की बीमारी हो, गुरुपत्नी, अशुपत्नी, कफोरिणी और जिसमें छल छिद्र हो, ऐसी स्त्री से रति नहीं करनी चाहिये क्योंकि रजस्रला के संग से दृष्टि आयु तेज और गर्भकी हानि होती है और रजस्रला के संगसे जो सजाक की बीमारी होती है उससे मगन्दर रोग होता है और आराम नहीं होता, वृद्धा के साथ आयु का नाश, गर्भिणी के सङ्ग से भ्रूणहत्या या गर्भपीडा, रोगिणी के सङ्ग बल का नाश, हीनाङ्गी, मलिना, वैरयुक्ता, अति दुबली, बन्ध्या और अकामा के संगसे घातुचीण रोग और मन मलीन होता है ।

दिशा प्रभाव लगा हो उसे रोक कर मैथुन करने से, प्रसंग में वीर्य को रोकने से और विषम सो कर अर्थात् स्त्री को ऊपर बैठा कर प्रसंग करने से बङ्गघा पथरी की बीमारी होती है ॥

ऊपर लिख चुके हैं कि स्त्री को ऊपर बिठाकर विपरीत रति करने से बङ्गघा पथरी की बीमारी होती है-यही नहीं परन्तु इससे और भी अनेक अपद्रव होते हैं यथा सुश्रुते शारीरक दो अध्याये ॥

ऋतौ पुरुषवहापि प्रवर्त्तेताङ्गनायदि ।

तत्र कन्या यदि भवेत् सा भवेन्नर चेष्टिता ॥

ऋतुवती नारी यदि पुरुषवत् अर्थात् पुरुष नीचे और स्त्री ऊपर बैठ कर

प्रसंग करे और यदि गर्भ रहजाय और जो कन्या उत्पन्न हो। तो उस कन्या की चेष्टा पुरुषकी भी होती है याने उसका बोलचाल पोषाक आदि सब पुरुष के से होंगे और यह भी सम्भव है ( जैसा कि कभी २ सम्वाद पत्र द्वारा सुना जाता है) मूख डाढ़ी में बाल आदि हों ॥

योभार्याया मृतौ मोहा दङ्गनेव प्रवर्तते ।

ततः स्त्री चेष्टिताकारो जायते पण्ड संज्ञितः ॥

जो पुरुष मदान्मत्तता से स्त्री की नाईं नीचे होकर प्रसंग करते हैं उसे उत्पन्न पुत्र खण्ड अर्थात् जनाना होता है उस लड़के के सम्पूर्ण व्यवहार स्त्री का सा होता है जैसा चटकना, मटकना, लहंगा पहिनना आदि दुर्गुण । यदि कोई यह कहे कि दोनों स्त्रियों के अभिप्राय तो एक ही से हैं याने पुरुष ही नीचे रहा तो फल भिन्न क्यों हुआ ? तात्पर्य यह है कि स्त्री बिना प्रेरणा के मद्से मूर्च्छित हो पुरुषवान् चेष्टायुत हो गमन करे तो निश्चय है कि रजसाधिक्य से कन्या ही उत्पन्न होगी और उसके सब आचरण और कुछ आकार भी पुरुष के से होंगे । उसी प्रकार पुरुष को भी जानना ॥

अभ्यन्तर परीक्षा करनेसे निश्चय हुआ है कि हैजा आदि संक्रामक व्युत्पत्ता रोगों से तत्काल मृत्यु तथा निरन्तर रोगी बने रहनेका मुख्य कारण वीर्यकी अशुद्धता है । यह तो सभी जानते हैं अथं धर्म काम और मोक्षकी प्राप्ति इसी देहसे होती है इसलिये देहकी रोगसे रक्षित और सुखी रखनेका उपाय करना सर्वसाधारणको उचित है वे उपाय क्या हैं कि विहिताचरण और पथ सेवन का परिचान ? विहिताचरण कौन है ? आयुर्वेदके मत से विवाह स्त्री प्रसङ्ग आदि । आज कल के लोगों का ध्यान इन विषयों पर बिलकुल नहीं है और स्त्रीप्रसङ्ग में क्या हानि और लाभ है और किस प्रकार करना चाहिए इसे तो बहुत ही कम लोग जानते होंगे यह कहते हैं “कोक पड़े बिग रति करे सो नर पशु समान” हम कहते हैं पशु तो अच्छे हैं सिर्फ रतिमास्त्र नहीं जानते गर्भोत्पादन की सामर्थ्य तो रहती है उनका सम्भोग प्रायः सफल होता है और आज कल के मनुष्य रतिमास्त्र न जानने के कारण वीर्य क्षीण ऐसे हो गये हैं कि जन्म भर नपुंसक और अपुत्री कहलाते हैं अन्त में न यह लोक सधे न परलोक अन्ततोगला किसी न किसी रोगमें ग्रस्त हो अकाल कालग्रस्त होजाते हैं । इसलिये बुद्धिमानों को उचित है कि वीर्य की रक्षा अवश्य करे ।



चरक मुनि कहते हैं जिस प्रकार अन्नादिक बीज बहुत पुराना होने या कच्चा रहने से तथा जल से भीगने या कीड़ों के खाने या आगमें भुन जाने से बिगड़ जाता है फिर वह जमता नहीं तैसेही मनुष्यों का वीर्य भी आस्र विरुद्ध व्यवहार से तथा और अनुविहित रति होने से सन्तान योग्य नहीं रहता यह अविचार राजा बाबुओंमें अधिकांश पायाजाता है जो बनिता और पुंयलौ के चर्म उद्घर्षण को मुख्य राजसुख समझते हैं जब वीर्य रक्षित होजाते हैं तो अन्त में बाबाजी की विभूति दूढ़ते हैं ॥

### शुक्रदोष ॥

निम्नलिखित कारणों से शुक्र अवश्य दूषित होजाता है । अतिशय स्त्री प्रसङ्ग, अति कसरत, असात्म्य सेवन, अर्थात् प्रकृति विरुद्ध आहारदि, अकाल (रत्नखला) प्रयोनि ( योनि भिन्न अन्यस्थान गुदा आदि तथा हस्तमैथुन ) गमन, इच्छा प्राप्ति में मैथुन न करना, अति खुराक, कसैला, लवण, अन्न और गरम चीज के सेवन से, अति वृद्धावस्था होने से, चिन्ता, शोक, भय, क्रोध बद्धकाल व्याधियुक्त रहने से मलमूत्र अवरोध एवं क्षयादि कारण से वायु कफ वीर्य बहनेवाली नसों में प्राप्त होके शीघ्र ही वीर्य को दूषित करते हैं सो दूषित शुक्र ८ प्रकार के हैं ।

फिनयुक्त १ पतला २ खुरा ३ बदरङ्ग ४ पूति ( दुर्गन्धि युक्त ) ५ बद्धत चिकना ६ दूधरी घातुपट्टि अर्थात् रक्त आदि घात से मिला हुआ यह ७ प्रकार घाटवां अवसादि याने ग्लानिकारक है, तन्मध्ये फिनिल पतला शुष्क और पिच्छिल वायु दूषित है इन घातुओं से गर्भ उत्पन्न नहीं होता है और पित्त दूषित शुक्र नीला दुर्गन्धि युक्त अति गरम होता है और घातुच्युत समय लिङ्ग मार्ग में जलन होती है, श्लेष्मा द्वारा रुद्धमार्ग शुक्र अतिशय चिकना होता है । अधिकांश स्त्रीप्रसंग से चीट लगने से क्षय से वेग रोकने से अति कुपथ्य करने से बद्धधा करके रक्तयुक्त या गठीला २ वीर्य लिङ्गमार्ग में रुक के कष्टसे निकलता है इसलिये चाहिये कि मनुष्य वीर्यरक्षा में निरन्तर तत्पर रहें ॥

### गर्भिणीगमन निषेध ॥

गर्भिणी सप्तमान्मासादुपरिष्ठादिश्रेयतः ।

निषिद्धात्वष्टमेमासे मैथुनं न समाचरेत् ॥

गर्भिणी स्त्री के साथ सहवास करना तो सर्वथाही निषिद्ध ऋषियों ने किया है परन्तु सातवें महीने से विशेष कर मैथुन करना निषिद्ध है । जैसे ऋतुस्नाता स्त्री से सम्भोग न करने से एक बालहत्या का पाप होता है वैसेही पूर्ण गर्भावस्था में प्रसंग करने से एक बालहत्या का पाप होता है ॥

वर्षाऋतु में छपटन और तेल मर्दन करना, शरीरमें माटी लगाकर कसरत करना, कूप का जल और दुग्ध पीना, घोड़े की सवारी करना बद्धत फायदा करता है । पूर्वकी हवा खाना, पानी में बद्धत भोगना, घाममें फिरना बद्धत खूबा और शीतल भोजन, रोज २ मैथुन, दिन में सोना और नदी का जल पीना कदापि न चाहिये । जिनका प्रण हमेशा गंगा जल ही पीनेका है उन्हें भी उचित है कि श्रावण भादों दो महीना न पियें क्योंकि वर्षाकाल में वन, पर्वत, वाग इत्यादि स्थलों से सड़े मांस लता पत्ती और भी अनेक प्रकार का मैला यहकर नदियों में आता है इससे वर्षा में नदी का जल विष समान होकर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, इसी लिये शास्त्रकारों ने लिखा है कि समुद्रगामिनी नदियों को छोड़कर सब नदियां वर्षाऋतु में रजस्रला होती हैं स्नान उनका जलसेवन उसी प्रकार निषिद्ध और हानिकारक है जैसे ऋतुवती स्त्री का सेवन—वर्षा में आकाशपतित धारा जल अमृत समान गुण करता है क्योंकि वर्षाकालमें आकाश की वायु अत्यन्त शीतल होनेसे वहां की निर्भल जलीय वायु सञ्चित है वह हिम होकर वृष्टि के आकार भूतल में गिरता है अतएव वह जल अधोपतित होतेही पूर्ववत् निर्भल व्यवस्था (परिष्कार जल) को प्राप्त होता है यह जल भभके से खिचेद्वय जल से भी उत्तम जल है इसलिये उक्त जल वर्षाकाल में पीना विशेषकर रोगियों को अति गुणकारी है ॥

### “वृष्टि का जल लेनेका सहज उपाय”

एक अच्छे साफ बड़े कपड़े को ७ । ८ हाथ के ऊंचे बाँध चार कोनों पर गाड़ उसीके ऊपर कपड़े को बांध देय और बीचमें कपड़े के ऊपर एक साफ रूंद रख और उस कपड़े के नीचे ठीक बीचमें एक मिट्टी का कलशा तिराईपर रखदेय वह शीघ्रही वृष्टिके जल से भर जायगा । परन्तु प्रथम २ । ३ पल जो वृष्टि पड़े उसे वायुस्थ घूळ “मैला” वा नाना रोगकृत जान त्यागदे तिसके बाद निर्भल जल ग्रहण करे यह जल सिर्फ दो या तीन दिनतक काममें आसता है ।

किसी कार्य की हानि वा उद्योग निष्फल होने से कौन ऐसा मनुष्य है जिसके चित्त में उद्विग्नता न होती हो, मनुष्य पर कीमीह्द आपत्ति क्यों न आन पड़े कभी धैर्यहीन न होना चाहिये, मनकी सर्वदा आनन्द में रखने वाला मनुष्य आयुमान होता है और उसके शरीर की शोकाग्नि कभी दग्ध नहीं करसक्ती है बुद्धिमानों का मन सर्वस्व नाश होने पर भी कभी शोक समुद्र में नहीं डूबता वे लोग परिणाम देखकर कार्य सिद्धि होने का उपाय करते हैं ।

मनुष्य को यह भी उचित है कि जैसे हीमक धीरे २ बाल्मीक (वाँसी) को बनाती है वैसे ही उपकारो जीवों को पीड़ा न देकर पर जन्म के सुखाय धीरे २ धर्म का सहाय करे । क्योंकि:—

नामुत्रहि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः ।

न पुत्र दारं न ज्ञाति धर्मं स्तिष्ठति केवलः ॥

परलोक में न माता न पिता न पुत्र न स्त्री न जात भाई सहाय करसक्ते हैं किन्तु एक धर्मही सहायक होता है । विचार करने का स्थल है कि मनुष्य अनेक उपाय ( मिथ्या भाषणादि महा पाप ) करके पदार्थ खाता है और सब कुटुम्ब आनन्द से भोग लगाते हैं चैन करते हैं, परन्तु टापभागो नहीं होते किन्तु अधर्म का कर्ता ही दोष का भागी होता है, फिर देखिये मरने पर मृतक शरीर की बन्धुवर्ग ले समयान में जा डेहे के समान भूमि में ढिाड़ कर पीठ दे बिमुख हो चले आते हैं कोई उसके साथ जानेवाला नहीं होता किन्तु एक धर्म ही उसका संगो होता है, हाय वे जैसे नर हैं जो ऐसे सही परम मित्रको त्याग करदेते हैं ! क्या यह नहीं जानते हैं कि मनुष्य अकेलाही जन्म और मरण को प्राप्त होता है और आप ही धर्मका फल सुख तथा अधर्म का फल दुःख भोगता है ॥

महाभारत के उद्योग पर्व में लिखा है कि मनुष्य कभी निकम्मा और धा-लसी न बने । सुख, लाभ, मान, बड़ाई आदि पा के कभी हर्ष में मग्न न हो और न दुःख, हानि, अपमान और निन्दा सुनके रज्ज और क्रोध करे क्योंकि अति हर्ष और शोक से शीघ्रही शरीर में रोग होजाता है ।

गृहस्थाश्रमियों को उचित है कि निम्न लिखित मनुष्य से सदा बचे रहें कभी उसका आदर न करें जेसा कि मनुजो ने कहा है ॥

गर्भिणी स्त्री के साथ सहवास करना तो सर्वथाही निषिद्ध ऋषियों ने किया है परन्तु सातवें महीने से विशेष कर मैथुन करना निषिद्ध है । जैसे ऋतुस्नाता स्त्री से सम्भोग न करने से एक बालहत्या का पाप होता है वैसेही पूर्ण गर्भावस्था में प्रसंग करने से एक बालहत्या का पाप होता है ॥

वर्षाऋतु में उपटन और तेल मर्दन करना, शरीरमें माटी लगाकर कसरत करना, कूप का जल और दुग्ध पीना, षोड़े की सवारी करना बद्धत फायदा करता है । पूर्वकी हवा खाना, पानी में बद्धत भोगना, घाममें फिरना बद्धत खखा और शीतल भोजन, रोज २ मैथुन, दिन में सोना और नदी का जल पीना कदापि न चाहिये । जिनका प्रण हमेशा गंगा जल ही पीनेका है उन्हें भी उचित है कि यावण भादों दो महीना न पियें क्योंकि वर्षाकाल में वन, पर्वत, वाग इत्यादि स्थलों से सड़े मांस लता पत्तों और भी अनेक प्रकार का मैला बहकर नदियों में आता है इससे वर्षा में नदी का जल विष समान होकर अनेक रोगों को उत्पन्न करता है, इसी लिये शास्त्रकारों ने लिखा है कि समुद्रगामिनी नदियों को छोड़कर सब नदियां वर्षाऋतु में रजसूला होती हैं स्नान उनका जलसेवन उसी प्रकार निषिद्ध और हानिकारक है जैसे ऋतुवती स्त्री का सेवन—वर्षा में आकाशपतित धारा जल अमृत समान गुण करता है क्योंकि वर्षाकालमें आकाश की वायु अत्यन्त शीतल होनेसे वहां ओ निर्भल जलीय वाष्प सञ्चित है वह हिम होकर वृष्टि के आकार भूतल में गिरता है अतएव वह जल अधोपतित होतेही पूर्ववत् निर्भल व्यवस्था (परिष्कार जल) को प्राप्त होता है यह जल भभके से खिचेहुए जल से भी उत्तम जल है इसलिये उक्त जल वर्षाकाल में पीना विशेषकर रोगियों को अति गुणकारी है ॥

### “वृष्टि का जल लेनेका सहज उपाय”

एक अच्छे साफ बड़े कपड़े को ७ । ८ हाथ के लंबे बाँस चार कोनों पर गाड़ उसीके ऊपर कपड़े को बाँध देय और बीचमें कपड़े के ऊपर एक साफ इँट रख और उस कपड़े के नीचे ठीक बीचमें एक मिट्टी का कलशा तिरपाईपर रखदेय वह शीघ्रही वृष्टिके जल से भर जायगा । परन्तु प्रथम २ । ३ पल जी वृष्टि पड़े उसे वायुस्थ धूल, “मैला” वा नाना रोगकृत जान त्यागदे तिसके बाद निर्भल जल ग्रहण करे यह जल सिर्फ दो या तीन दिनतक काममें आसता है ।

किसी कार्य की ज्ञान वा उपयोग निष्फल होने से कौन ऐसा मनुष्य है जिसके चित्त में उद्विग्नता न होती हो, मनुष्य पर किसीछ भ्रापत्ति क्यों न आन पड़े कभी धैर्यहीन न होना चाहिये, मनको सर्व्वदा आनन्द में रखने वाला मनुष्य आयुमान होता है और उसके शरीर को यौकान्ति कभी दग्ध नहीं करसक्ती है बहिमानों का मन सर्व्वस्व नाश होने पर भी कभी शोक समुद्र में नहीं डूबता वे लोग परिणाम देखकर कार्य्य सिद्धि होने का उपाय करते हैं ।

मनुष्य को यह भी उचित है कि जैसे हीमक धीरे २ बाल्मीक (वाँवी) को बनाती है वैसे ही उपकारी जीवों को पीड़ा न देकर पर जन्म के सुखार्थ धीरे २ धर्म का सहाय करे । क्योंकि:—

नामुत्रहि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः ।

न पुत्र दारं न ज्ञाति धर्म स्तिष्ठति केवलः ॥

परलोक में न माता न पिता न पुत्र न स्त्री न जात भाई सहाय कर सक्ते हैं किन्तु एक धर्मही सहायक होता है । विचार करने का स्थल है कि मनुष्य धर्मक उपाय ( मित्या भाषणादि महा पाप ) करके पदार्थ खाता है और सब कुटुम्ब आनन्द से भोग लगाते हैं चैन करते हैं, परन्तु टापभागी नहीं होते किन्तु अधर्म का कर्त्ता ही दोष का भागी होता है, फिर देखिये मरने पर मृतक शरीर को बन्धुवर्ग ले क्षयान में जा डेले के समान भूमि में छोड़ कर पीठ दे विमुख हो चले जाते हैं कोई उसके साथ जानेवाला नहीं होता किन्तु एक धर्म ही उसका संगी होता है, जाय वे कैसे नर हैं जो ऐसे सङ्गी परम मित्रकी त्याग करदेते हैं ! क्या वह नहीं जानते हैं कि मनुष्य अकेलाही जन्म और मरण को प्राप्त होता है और आप ही धर्मका फल सुख तथा अधर्म का फल दुःख भोगता है ॥

महाभारत के उद्योग पर्व में लिखा है कि मनुष्य कभी निकम्मा और आलसी न बने । सुख, लाभ, मान, बड़ाई आदि पा के कभी हर्ष में मग्न न हो और न दुःख, ज्ञान, अपमान और निन्दा सुनकर रज्ज और क्रोध करे क्योंकि अति हर्ष और शोक से यौगृही शरीर में रोग होजाता है ।

रुद्रस्यात्रमियों को उचित है कि निम्न लिखित मनुष्य से सदा बचे रहें कभी उसका आदर न करें जेसा कि मनुकी ने कहा है ॥

पापखिन्नो विकर्मस्वान् वैडाल इति कान् शठान् ।

हेतुकान वक्रवृत्तीन् च वाङ् मात्रेणापि नार्थयेत् ॥

( पाखण्डी ) भीतर तो कपट की कतरनी, दिखानेको ऊपरसे भेप बनाये है। जैसे कि आज कल कितने ईसाई, सन्यासी वने लोगो की भ्रष्ट करते हैं और कसाई पिखा सूत्र धारण कर ब्राह्मणों के भेप से सैकड़ों गोशों की ले जाते हैं, (विकर्मस्य) जैसे विद्वान ब्राह्मण लोग आज कल लोभ से ईसाइयों को संस्कृत पढ़ाते हैं, अपने धर्मखण्डन की व्यवस्था देते हैं, (वैडालवृत्ति) जैसे बिलार छिप और स्थिर रहकर ताकता २ भ्रष्टसे भूपि को पकड़ मार अपना पेट भरता है वैसेही आज कल सोना चांदी बनाने वाले और खड़का वाला देनेवाले बाबा जी लोग रकम लूट २ कर मजा चढ़ाते हैं । ( शठ ) अर्थात् झूठी दुराग्रही अभिमानी पाप जाने नहीं औरों का कहा माने नहीं जैसे हमारे निरक्षर सरयूपारी ब्राह्मण (हेतुक) कुतर्की व्यर्थ बकनेवाले जैसे आज कल के स्वधर्म हीन सिर्फ अंगरेजी बूके दिजातियों के छोड़के और स्वार्थ-परायण कोई २ सम्पादक गण जिसे चार पैसा मिले कौशाह कर्म भ्रष्ट अत्यंत क्यों न हो उसको तारीफ करने और काशी आदिक ब्राह्मणों को कहें कि वे मूर्ख हैं (बकवृत्ति) बकले की प्रकृति सभी जानते हैं वैसे आज कलके वैरागी और खाखी आदि बेला मूढ़ कुल छिद्र से लाखों रुपये ठग लेते हैं गांव खरीदते हैं, मुकद्दमा खड़ते हैं, गो भक्षकों को मालपुवा खिखाते हैं ऐसोंका सत्कार बाणोमात्र से न करना चाहिये ।

मनुष्य को चर्चित है कि रोज़ सबेरे उठकर माता पिता को प्रणाम करे कोई अतिथि विद्वान सन्यासी को अथवा अपने कुल जाति के किसी बृद्ध को देखे तो अवश्य प्रणाम करे क्योंकि ॥

अभिवादन शीलस्य नित्यं ब्रह्मोपसेविनः ।

षत्वारितस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशोवत् ॥ (१) मनुः

... जो मनुष्य सदा नम्र सुशील विद्वान और ब्रह्मों ( माता पिता आदि ) की सेवा करता है उसकी आयु विद्या, कौर्त्ति और बल धी चार सदा बढ़ते हैं, यह भी चाहिये कि वैर बुद्धि छोड़के सब मनुष्यों से मिल मुलाकात और सदा मधुर सुशीलता युक्त बाणी बोधे परन्तु कुली दुष्टों का साथ कभी न करे क्योंकि

जिस तरह काजल की कोठरी में जाने से दाग लग जाता है वैसेही दुष्टों के साथ में धर्मग्र पुरुष भी पापयुक्त होजाते हैं ॥

नाग्निष्मुखिनोपधसेन्न शान्नेच्छेत्तच्छिष्यम् ।

नामेध्यंप्रक्षिपे दग्नी नक्षपाटौ प्रतापयेत् ॥

अधस्तान्नोपदद्याच्च नचैन मपि लङ्घयेत् । मनुः आ० ४

अग्नि को मुख से न फूँकना (अग्निकण छड़कर नेत्र में जाने से तथा कपोलों का रक्त जपा होजाने से नेत्ररोग होजाता है ) अग्नि में बिछा आदि अपवित्र वस्तु न डालना ( वायु विष दूषित होजाती है ) पाँव न तपाना ( अति जाड़े के दिनों में) भी पादकी अग्नि में न तपावे इससे पाद दाह रोग होता है ) नङ्गी स्त्री को न देखना ( वैराग्यवान पुरुष भी कामी होजाता है ) पलंग के नीचे अग्निको न रखना ( प्रायः देखने में आया है कि खटिथि में आग लग गई है ) अग्नि को न लङ्घन करना और न पाँव से छूना (इससे नियय पेटों में अगिया बराही होजाती है ) नख से पृथ्वी लिखना शिर को हमेशा रुच रखना, वस्त्र रहित पलङ्ग पर सोना सूर्योदय और सूर्यास्त में सोना, हँस २ कर भोजन करना मलिन वस्त्र धारण क्रिये रहना घृत दुग्ध रहित रुच पदार्थ भोजन करना इत्यादि आरोग्य द्रव्य जन सदा त्याग करें । वज्रत दिन जीने की इच्छा करनेवाला मनुष्य कपाट खोल कर न सोवे, बड़े गृह में भी अकेला न सोवे, रजखला स्त्री से मापण न करे, रात को अकेला मार्ग में न चले, न वज्रत कालतक पर्वत में वास करे, कांसके पात्रमें पौर न धोवे, फूटे पात्र में और जिस पात्र में मन की प्रसन्नता न हो उसमें भोजन न करे, अति भोजन न करे, दिशा प्रेषाव न रोकें, बिना परीक्षा लिथे एका एकी किसी मनुष्यपर विश्वास न करलेय, विशेषकर रातको बिना जाने जल कभी न पिये भाँग बूटी और पान माता पिता मित्र टहलू आदि से अतिरिक्त पुरुषके हाथ से कभी न खावे, जिससे एक बार शत्रुता हुई हो उसे कभी अपना मित्र न जाने, केश भण्डा छूटा टूटा माटों के पात्र का टुकड़ा, बेनकर भूसा इन सर्वोपर न खड़ा रहे, वानर, न्योरा, बिल्ली और भेड़िया आदि दुष्ट जीवों को न पाले, कोप से अपने शिर और केश की प्रहार न करे, उपवास भी न करे, भोजन के उपरान्त बार.बार, चाँद रात्रि को और जो जलाशय जाना नहीं गया है उसमें स्नान न करे ॥

सम्र बढ़ाना चाहे तो भोग कम करे, जिसके निकल जाने में इतना सुख है उसके रोकने में कितना सुख होगा यह बात बिरले ही पुरुष जान सक्ते हैं। अगर चाहे कि बीमार न पड़े तो पेट भर न खाय और छाती की हमेशा रक्षा करें। इच्छत के साथ रहना चाहे तो ऋण न के और न किसीसे प्रश्न करे, यदि चाहे कि जो मुझ से कई वही हो तो झूठ न बोले। दुनिया का मजा चाहे तो मेहनत करके विद्या पढ़े। अगर चाहे कि हमारे कोई शत्रु न हो तो क्रोध न करे। दुनिया में सबसे मित्र बनना चाहे तो मीठा बचन बोले परन्तु सत्य बचन ही। यदि चाहे कि हमेशा आरोग्य रहे कभी किसी रोगमें ग्रस्त न हों तो आरोग्यदर्पण में प्रातस्स्नानाद्यारभ्य श्रयनान्त पर्यन्त जो कर्म मनुष्यों के लिये लिखे हैं उन्हें काम में लाये। अपने आँख और जिह्वा को निरन्तर अपने वश में रखो। अपना कपड़ा और अपना शरीर पवित्र रखो प्रति दिन रात्रि को सोने के लिये जब पर्यङ्क पर जाओ तो जो कुछ तुमसे दिन में किसी क्रिम का सम्पर्क हुआ हो तो ईश्वर से माफ़ी मांगो और शपथ करो कि पुनः ऐसा न करेंगे। यदि कोई सम्पर्क तुमसे हो तो भूल जाओ क्योंकि उसका स्मरण रखना अभिमान उत्पन्न करता है किसी की मज़ी में आकर अपने बित्त से बढ़कर काम मत करो नहीं पौछे पछताओगी। जो भेद कहने योग्य न हो उसकी कभी अपने मित्र से भी न कहो। अगर किसी से किसीका भला होता हो तो भांजी मत मारो और पक्ष बनके न किसीसे मिलो क्योंकि इससे बढ़ कर दूसरा पाप नहीं है। जब किसी पुरुष से और कोई पुरुष बात करता हो तो तुम कभी उनके बीचमें न बोलो क्योंकि लोग तुम्हें भूर्ख समझेंगे सूखे-की यह बड़ी पहिचान है जो बिना पूछे बोल चठता है। जिस समय कोई पुरुष कुछ खा रहा हो तुम कभी उधर न देखो। जिस मार्ग में तुम्हारे पिता पितामह चले हों उसी मार्गमें तुम भी चलो परन्तु जो सत्पुरुष पिता पितामह रहे हों, अगर दुष्ट रहे तो कभी उनकी राहपर मत चलो भूत पूर्व आर्यों के मार्ग पर चलो क्योंकि धर्मात्मा पुरुषों के मार्ग में चलने से दुःख कभी नहीं होता। विद्या पढ़ने का शौक रखते हो तो दुष्ट विषयी जनों का संग, महादि नसे का सेवन और वैश्यागमनादि असत् व्यसन त्यागकरो यदि होसके तो यथाशक्ति अन्न वस्त्र और पुस्तकादिसे "विद्याश्रियोंका उत्कार करो इससे बढ़कर संसार में और पुण्य नहीं है" "विद्यादानात् परं दानं न



भूतो न भविष्यति" जल, अन्न, गौ, पृथ्वी और सुवर्ण आदि मर्त्यलोकमें जितने दान हैं इन सब दानोंमें विद्या का दान अति श्रेष्ठ है यह जो आज कल राजा महाराजा सेठ साहूकार आदि प्रति दिन बुद्धि बल पराक्रमहीन होते जाते हैं क्यों ? विद्यादान न देकर कुपात्रों को दान देने से, कुपात्र कौन हैं ? महन्त, वैरागी, अंग्रेज़ और तीर्थों के पण्डे । किसी मित्र से जो वस्तु उसकी आवश्यक की जो जहांतक बने मत भांगो । और पुरुष वही मनुष्य कहा जासकता है जो विपत्ति के समय सन्तोष करे, हाथ रग करता फिरे ॥

### अहिंसापरमोधर्मः ॥

इसे ऐसा मत मानो कि गृह भूसे, तृथीक और गोजरों से भर जाय, खाट के खटमल और वस्त्र के चोलड़ों के मारने में भी दया लगे, व्याघ्रादि दुष्ट जीवोंके मारनेको हिन्सा नहीं कहते, उपकारी जीवों की रक्षा ( गोरक्षा ) में जहां तकहे धन लगाओ और परिश्रम करके गोरक्षिणी समास्थापित करो ।

आज कल के नवयुवकों ने यह एक सरल उपाय सोच लिया है और अपने तर्क ऐसा बांध लिया है कि बिना उसके घड़ी भर भी उनका काम चलना कठिन है देखिये जब उनको प्रसङ्ग में रुकावट ( स्तम्भन ) नहीं होती तो भी घड़ी कोई ऐसी भीषणि खा जेने का अभ्यास डाल लेते हैं जिससे उनकी मनो-वाञ्छा पूर्ण हो कितने लोग वीर्यस्तम्भन के लिये केवल गांग पथवा मद्य ही नहीं पीते किन्तु अफीम गांजा चण्डू भी सेवन करने लग जाते हैं और उन वस्तुओं का अपने तर्क ऐसा बन्धन और नेह लगा लेते हैं कि जिनका छूटना जन्म पर्यन्त असम्भव होजाता है यही द्रमा विपैली वस्तुओं की है जैसे कुचला, बचनाग, संखिया, धतूरा आदि ॥

विपैली वस्तुओं में कोई तो सङ्घिया सेवन करते हैं, कोई कुचला, कोई बचनाग, कोई धतूरा आदि वस्तु सेवन कर अपने शरीर का राजा जो सम्पूर्ण पुरुषार्थ का दिनवाला है उसको क्षणिक सुख के लिये अनुचित रीति से हार हार कर डालते हैं ।

कितने लोग बाबा जी के गण्डे पथवा तावीज पर ही अपना जीवन सम-भक्त हैं, कितने वैद्य जी की गोली पर ही अपना पुरुषार्थ मानते हैं, कितने मनुष्य तिल पथवा लेपन ( तिला ) पत्री आदि से सामाजिक चण्ड हैं वरुण की विगाड़ होते हैं परन्तु यह उनके सम्पूर्ण उद्योग और उनकी मनोवाञ्छा नि-

फल और निष्प्रयोजनीय है यद्यपि उनको उस समय औपधि चयवा नशीकी वस्तु सेवन के बल पर कुछ यथेष्टता जान पड़ती होगी और वैसा होना भी स्वाभाविक है कारण यह कि नशी की वस्तुओं का स्वाभाविक गुण प्रत्येक नशी चयवा और दूसरी औपधि के बलसे उस समय थोड़े काल पर्यन्त कुछ वीर्य रुक जाय तो कोई बड़े पायर्थ्य की बात नहीं है पायर्थ्य ही क्या जब अपने बल से कोई काम प्रत्यक्ष न हुआ तो दूसरे के बल से चयवा साधारण से कितने दिन तक काम चल सकता है। सरण रहे कि उपरोक्त उपायों से सिवाय ज्ञानि के लाभ कुछ भी नहीं है, लाभ उन लोगों को कुछ है जिनका जीवन संपूर्ण नहीं तो आधा अवश्य बीत चुका हो उनके लिये स्वयं वैद्यक शास्त्र में उक्ति युक्ति लिखी है और उन मनुष्यों को लाभ भी उपरोक्त प्रकार से दृष्टिगोचर होसक्ता है जिसमें किसी प्रकार की ज्ञानि नहीं जानी, परन्तु आज कल के नवयुवकों को उपरोक्त उपायों से लाभ केवल क्षणिक है अनन्तर ज्ञानि ही ज्ञानि है ।

प्रथम यह कि नशीली चयवा बिपैली चयवा दूसरी वस्तु जो वीर्यस्तम्भन के लिये खाई जाती है उससे जबतक उसका गुण रहता है तब तक तो सुख मालूम होता ही है यह सब कोई जानते हैं परन्तु उसमें विचारना चाहिये कि जबतक नशा (तरङ्ग) मनुष्य में रहती है उसकी गर्मी से धातु स्थान का सम्पूर्ण वीर्य पिघल कर मूत्र की थैली में इकट्ठा होरहता है और ज्यों २ प्रसङ्ग करिये त्यों २ वह पिघलता तो है ही परन्तु थैलीमें भी सब धातु पानी ही हो रहती है और जहां नशा का बल, किञ्चित् भी घटा तहां इकट्ठी जमी हुई धातु शीघ्र ही बाहर निकल पड़ती है फिर क्या जब बार बार प्रसङ्ग करने पर जितनी धातु गिरती है उतनी यदि एक ही प्रसङ्ग में वीर्य निकल जाय तो फिर शरीर का बल, नेत्रों की ज्योति, भ्रूख आदि कम न हों तो फिर क्या हो । और यह भी प्रत्यक्ष है कि उपरोक्त प्रकार जिस मनुष्य ने अपने तर्क बॉध लिये हैं उनको परीक्षा भी उपरोक्त वर्णन के अनुसार हो गई है अतएव मनुष्यमात्र को विशेष कर नवयुवकों को उचित है कि वीर्य स्तम्भन के लिये ऐसा अष्ट अभ्यास कधी छालने का साहस न करें उनको चाहिये कि प्रथम ही से वे अपने अमूल्य शरीर के राजा का रक्षण करने में आलस्य छोड़ दे जिससे पीछे पड़ताना और हाथ न मलना पड़े और यदि उनकी किसी वि-

श्रेष्ठ कारण से अधिक पुष्टता की आवश्यकता है तो शास्त्रीय बाजीकरण आदि रसायन क्रिया का सेवन सदैवों के उपदेश और सम्मति से करना उचित है ।

जो चाहे कि हम किसी के फन्दे में न फँसें तो प्रत्येक विषय की भीमांसा करने का अभ्यास उत्तम करो और प्रत्येक मनुष्य का सब पहिंचानो । आनन्द से अश्विना जीवन काटना चाहे तो बिना विचारे कोई काम न करो "अग्रधीची सदा सुखी" प्रथम शीचकर काम करने वाला सदा सुखमें रहता है ।

“शुष्क वैरं विवादञ्च न कुर्व्यात् केनचित् सह”

बिना प्रयोजन के वैर और झूठा बकवाद किसीसे मत करो इसमें लोक-निन्दा और अपने को भी लज्जाप्रद है । जब तक जिसकी परीचा न कर लो कदापि उसका सङ्ग न करो जिस प्रकार स्वर्ण की चार परीचा हैं ॥

“निर्घर्षणं छेदनं ताप ताडनै”

घिसना छेदना ताव देना और पीटना तिस प्रकार मनुष्य की भी चार परीचा करले ।

“कुलेन शीलैः गुणेन कर्मणा”

कुल शील गुण और कर्मसे यदि चेत उक्त चारों में पूर्ण परीचा होजाय तब उससे प्रीति मिलाप करना उत्तम होगा । सत्कर्म में जितना होसके परिश्रम करो जैसे गोरक्षा अनायालय इत्यादि । अपनी प्रतिष्ठा चाही तो जब सभा में तुम कोई बात कहो, सम्राण कहो ।

युवावस्था के दिन बड़े भयानक हैं, इनको सत्कर्म करना परम पुरुषार्थ है और जो युवावस्था में सत्कर्म नहीं करेगा वह फिर वृद्धावस्था में क्या करेगा, यह भूखों का कथन है कि हम वृद्धावस्थामें धर्म करेंगे । किसी मनुष्य से त्वीरी बढ़ा कर बात मत करो चाहे वह मित्र हो चाहे शत्रु जब तुम्हारी वैसे प्रकृत पड़जायगी तो हर एक से लड़ना पड़ेगा । मित्रों की सहायता और माता पिता की प्रतिष्ठा एवं धन पर ही भरोसा मत रखो वेदादि सत-विद्या तथा कार्य कालिक विद्याध्ययन कर अपने लिये भी उच्चता सम्पादन करो । विद्या से मनुष्य की बुद्धि बढ़ती है और यश का प्रकाश होता है । एवं अनुभव उसका दृढ़ होजाता है जो लोग विद्या के अनुरागी हैं उन्हें चाहिये कि नित्य संध्या के समय यह सोचें कि आजके दिन कितनी गई बातें निश्चय

भईं । इस भाषा से विद्या मत सीखी कि जिससे केवल द्रव्य वा सांसारिक सुख निनेगा वरञ्च अपनेको मनुष्य और बुद्धिमान बनाने के लिये विद्यासीखी यदि संसार में अपनी कौत्ति चाहे तो सन्तानको विद्या और विनय सिखाओ धन्य है उनके माता पिता को जो अपने शरीर पर अपने क्लेश सह कर भी सन्तानों को विद्या पढ़ाते हैं, वह कुल धन्य और वह सन्तान बड़ा भाग्यमान है जिसके माता पिता विद्वान हैं क्योंकि जितना मातासे सन्तानों को उपदेश और विद्या का लाभ होता है उतना किसी से नहीं, बड़ों का वचन है कि माता जन्मसे लेकर सन्तानमें जवतक पूरी विद्या न हो सुशीलता का उपदेश करे। सुश्रुत का मत है कि माता पिता गर्भाधान के कुछ मास पूर्वही से और माता गर्भाधान के पश्चात् भी मादक द्रव्य, मद्य, दुर्गन्ध लहसुन मान्सादि, खूब बुद्धि नाशक पदार्थों को छोड़ के जो यान्ति, चारोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को प्राप्त करे जैसे घृत, दुग्ध, मिष्ठान्न आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवनकरे कि जिससे रजवीर्य भी शीघ्र से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हो। प्रत्यक्ष है कि जैसा जिसका रजवीर्य होता है वैसीही सन्तान उत्पन्न होती है ॥

### धातृशिक्षा ॥

प्रथम खण्ड के भाग से ॥

पहिले बच्चे को जवा खिलाना अंगका परिचालन और बच्चे के शयनस्थान आदि का वयान करचुके हैं। अब जो निम्नलिखित बातें हैं उनपर स्त्रियोंको अवश्य ध्यान देना चाहिये ॥

बच्चे की कोठरी में चाग या दीपक इस ढबसे रखना चाहिये कि जन्मतुए की आँख उसकी ज्योति पर चमकने न पाये क्योंकि जन्मतुए बद्धधा चमकीली चीजों को इकट्ठा लगाके देखने लगते हैं इससे आँख सम्बन्धी रोग होने का डर रहता है और गर्म ऋतु में अर्थात् चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ इन चार महीनों में बच्चे की कोठरी में चाग कभी न रखे क्योंकि कोठरी अति गर्म होने से बच्चे की देहमें लाल र दाग पड़जाते हैं ॥

बच्चे को प्यार करना चुम्मा लेना हो तो ठीक बच्चे के मुखके सामने अपना मुख रखना चाहिये प्रायः गँवरदल स्त्रियां या पुरुष पीछे या बगल मेंसे भट्ट बच्चे का मुख थांभ अपनी तरफ कर चुमने लगती हैं इससे बच्चिये में दर्द और ऐंसावना हो जा सकता है ॥

जबतक बालक बर्ष डेढ़ बघ का न होजाय कभी अकेले सुलामा न चाहिये क्योंकि निरे बचपन की बय में विशेष कर जाड़े के दिनों में दूसरे की देह का दन्द (ताप) न पाने से सुखपूर्वक नौद बच्चे को नहीँ आती, जो स्त्री बहूत वेहाश सोती है। अर्थात् सो जाने पर यह न मालूम हो कि मैं कहां पड़ी हूँ और न लगाने से जल्द जागे उसे चाहिये कि एक हाथ की लम्बी और कलाई की बराबर मोटी तकिया सोती समय बीच में रख ले ताकि बच्चे का हाथ पैर न खबाय । प्रायः देखने में आया है कि बाजा २ स्त्रियोंके अलमस्त और अचेत सोने से बच्चे बिचारे नौचे दबकर मरगये हैं ॥

ऐसी २ दुर्घटनाओं का कारण मूल में दूध द्विके चट्ट का दोष है क्योंकि इतनी छोटो अवस्था में सन्तान होने लगते हैं कि माता खुद अपने ही शरीर की संरक्षण में अज्ञान रहती हैं तो फिर वह बालक का समाल और देख भाल क्या करसक्ती हैं ॥

बच्चे का मुख सोती समय कपड़े आदि से भूलकर भी ढका रहने न देना क्योंकि उस अवस्था में शुद्ध वायु श्वास के हरि फिफड़े के भीतर जाना बहूत उचित है अगर मच्छुड़, दंश आदि कीटों के काटने का डर हो तो बच्चे को मसहरी के भीतर लेटाये या मुखपर जालदार कपड़ा डाल दे । निद्रा लगती समय चेत करके बच्चों के बदन का कपड़ा मुझ करके गईन पर का तो अवश्य ढौला कर देना उचित है ॥

जो बालक आरोग्य होता है वह दूध पीने के अतिरिक्त समय में भी सोया ही करता है । इसमें कुछ शक नहीँ कि अधिक सोने से बालकों के शरीर में बलाधान और खम्ब्यता प्राप्त होती है और अच्छे छटपुट बलवान लड़के को भी कुछ काल अच्छी तरह नौद न लगनेसे दुर्बल और रोगी होजाते हैं इसो लिये अच्छा उपाय न करके यहाँ की चाण्डाल स्त्रियाँ नौद पाने के लिये बच्चों को अफ्रीम खिलाने लगती हैं जिससे कि बच्चा और भी दुर्बल होरौं २ करने लगता है और अन्त में उस मूर्खा माता के मुख में काखिख लगा यमाख्य को बला जाता है, इस बात का अनुभव किसको न हुआ होगा ? अच्छे पढ़े लिखे लोग तो अवश्य ही कहेंगे कि इस बच्चे को मृत्यु अफ्रीम ही से हुई है । यद्यपि बालकों को अधिक कालतक सोया रहना बहूत ही उत्तम है परन्तु किसी कारण वय अगर बच्चे को जल्द नौद न आती हो तो नौद लग

जाने के मतलब से कुछ चोपधि आदि देना अनुचित है कारण यह है कि बच्चीर्ण या पेट में पौड़ा से बच्ची को सुखनिद्रा नहीं लगती अतएव नौद लगती न देख के पेट साफ़ कर देना अत्यावश्यक है ।

निम्नलिखित बातें बच्चेवाली स्त्रियों को अवश्य याद रखना चाहिये । जैसे सन्तान के भयन का खटीला उद्भूत छिटा न होके फरहरा होना चाहिये । धात्री बच्चे का मुख अपने पेट में दबा के न सुलाये क्योंकि श्वास रुक जाने का डर है, ऐसा हुआ भी है । बालक पेटकीर्ण ( मुचके बन्ध ) न सोने पावे बच्चे को चित्त या करवैठ सुलाना उत्तम है ।

माता अपने सोने के पूर्व अवश्य याद करके देख लिया करें कि बच्चे का मुच कपड़े से फँसा तो नहीं है । बच्चे के सिर के नीचे एक नगही भी घति मुलायम तकिया ज़रूर होनी चाहिये परन्तु ऐसी बड़ी बेठड़ी न हो कि कहीं दबाव आदि के कारण उलट कर बच्चे के मुच पर आ पड़े जिससे श्वास रुकने का डर है, आरम्भ से तीन चार नहीने तक बराबर रोझमर्ण माता को उचित है कि बालक के मल मूत्र को देख के जान लिया करें कि वह मल मूत्र जैसा होना चाहिये वैसा ही है वा कुछ अन्तर है यदि कुछ अन्तर अर्थात् मूत्र कम करता या मूत्र करते काँखता या मूत्र में घति गर्माँहट हीखे मल अधिक और पतला फटा २ सा दुर्गन्धियुत या एक दो रीन जाता हो न हीखे तो तुरन्त चिकित्सा उपाय करें ॥

### बालकों की खाँसी की दवा ।

चतीस, नागरमोथा और मुलेठी इन तीनों की बराबर ले कूट कर खूब महीन चूर्ण करले माथा घाधी रत्तीसे १ रत्ती पर्यन्त है, बालकों की अवस्था माफ़िक मात्रा बना शहद के साथ दिन में ४ बार चटाने से लाभ होता है यदि बालक न चाट सके तो पहिले शहद में मिला बाद माता के दुग्ध में घोला कर पिहा दे, डाक्टर लोग प्रायः इपीकाकुषानां शहद के साथ चटाने की इते हैं और खिषिया कर डोमर्स पीडर भी कभी २ दे देते हैं लेकिन बालकों के हकमें यह दोनों चोपधियां हानिकारक हैं इपीकाकुषाना और हमारे देसी मदार की जड़ की छाल का चूर्ण, गुण में दोनों बराबर हैं और डोमर्स पीडर में चफ़ीम और इपीकाकुषाना आदि वस्तुयें मिली हैं, पर आज कल के लोग डाक्टरों की अन्तरि का अवतार मान लिया है ॥

श्रीतला ।

बहुत से रोग है जिनका यत्र यथायं न होने से वह रोग बढ़ कर प्राण हरण करता है परन्तु हैजा और श्रीतला की बीमारी यह तो यंत्ररहित रोगी को भीघ्रही यमालय पङ्कचा देती है ।

इस रोग का भी आदि कारण विष दूषित वायु है, देखा जाता है कि ऋतु के परिवर्तन में जिस तरह फसली च्वर या हैजा एक के होते ही नगर भर में फैल जाता है उसी प्रकार श्रीतला का भी स्वभाव है जहाँ एक को निकलीं तो उसके हेलमेक से और को भी चढ़वा के निकल पाती हैं वैद्यक में श्रीतला को मसूरिका और बिस्फोटक रोग भी कहते हैं और बङ्गालमें इसे बसन्त कहते हैं, यह रोग प्रायः लड़कों के अधिक होता है अच्छी तद्बीर और औषधि न करने से हजारी लड़के विचार विना मौत के मर जाते हैं। देखा गया है पर अफसोस यहाँ के अज्ञान हिन्दू लोग सिर्फ देवी देवता के भरोसे रह कठिन माता में भी दवा नहीं करते, कहते हैं देवी नाराज होजायगी वस इसी अज्ञानता से असंख्य लड़के अकाल काल प्राण देते जाते हैं, बङ्गधा नेत्रहीन या काने होजाते हैं और बहनोंके हाथ पैर लुप्त या टूट्टे होजाते हैं।

आज कल सरकार को तरफ से टीका लगाया जाता है और एतद्देशीय लोग अपनी बुद्धि बिहीनता के कारण इससे डरते हैं परन्तु यह कोई नई बात नहीं है प्राचीन लोगों की ज्ञानी सुना जाता है कि इस देशमें भी पहिले ( जब सरकार को तरफसे टीका लगाना नहीं जारी हुआ था ) माली बगैर टीका लगाते थे और उसे बड़ा लाभ होता था ।

साधारण लक्षण ।

विष दूषित वायु स्वस्थ शरीर में प्रवेश करने से प्रथम तीन चार दिन बालक को च्वर पाता है मुख सुखं रहता है घ्रास लगती है बाद शरीर में एक प्रकार छुद्द र फुन्सिया निकल पाती हैं और छः सात रोज में मवाद भर पाता है और फुन्सिया बड़ी होजाती है किसी २ को भयाङ्क च्वर भी बना रहता है रोग साध्य रहने से रोगी पन्द्रह सोलह दिन में आरोग्य हो जाता है यह रोग एक जन को दो बार नहीं होता और किसी २ को दोबार हुआ भी है।

१-साधारण श्रीतला को बीमारी में औषध न देय यदि कोई उपद्रव जैसे कि अधिक च्वर, बहुत रोगा, बदन भाचना नौद का न भाना बारम्बार

चौक उठना या अनर्थक बकना इत्यादि हो तो अवश्य चौपध करना चाहिये ।

२—रोगी को खूब ठण्डे मकान में रखने और दरवाजों में खस या लवासे की टट्टी लगा दे और कुल नौम की टेरियां बांध दे क्योंकि इस रोग में शीतल उपचार एवं निम्बपत्र का बन्धनवार बांधना अति हितकर है, लिखा भी है:-

शीतलासु क्रियाकार्य्या शीतलारचवासह ।

वधियान्निम्ब पत्राणि परितेभवनान्तरे ॥

शीतला रोग में रक्षा के अर्थ सब शीतल ही उपाय करना और घर को भीतर चौतरफा नौब के पत्ते बांधना उत्तम है दरवाजे में एक हीद पानी से भर कर रख दे और दरवाजा पानी से हर समय तर रखे ।

३—रोगी का विछोना सफेद और बद्धत मुलायम हो एवं मैला होने पर शोध ही बदल देना चाहिये ॥

४—जिस घर में रोगी हो वहां अग्नि और तेज रोशनी न रहनी चाहिये यही कारण है जो शीतला देवी को पूजनमें ज्वन नहीं करते परन्तु:-

कृमिपात भयाच्चापि धूपयेत्सरलादिभिः ।

विष दूषित वायु के निराकरणार्थ एषंबहतीर्जई माता में कृमि न पड़े इस वास्ते राल लोबाग वगैरह का धूप कभी २ रोगी के और समस्त घर में दूते रहना अति उत्तम है ।

५—कोई कतुथ सुखं बस्त्र धारण कर, पान खाकर, माथे में लाल टीका दे के या लालवस्तु ले के रोगी के सह में न जाय, कारण यह कि ऐसे रोगी को प्राण में सुख वस्तु की शमक न पड़नी चाहिये ।

६—यदि रोगी बालक, माताका दुग्ध पीता हो तो उस माताको हिर्ण मूंग की दाल जवा या गेहूं की रोटी, पुराने चावल का भात और गो का दुग्ध खिलाना चाहिये खेत या हरा वस्त्र पहिरे बहुत थम, क्रोध और उपवास न करे घरोर में तेल न जगाने कारण यह कि कदाचित् बच्चे को देह में तेल लग जाय क्योंकि:-

कुर्याद्गण विधानञ्च तैलादीन् वर्जयेच्चिरम् ।

इस रोगमें जेषा जोड़े का विधान है वैसा ही उपचार करना परंतु तैलादिकों का बहुत दिन बचाव रखना चाहिये ।



७—जब तक शीतला की बीमारी न आराम हो घर में पूरी कचौरी बरा मसाले दार कलिया आदि व्यंजन न बने न मद्य का प्रचार हो क्योंकि भूजन तलने की शब्द एवं गर्म महक से रक्त कोप को प्राप्त होता है ।

### अथ विस्फोटक ।

(बड़ी मात का कारण)—यह रोग, अति खट्टा तीक्ष्ण (मिर्चा) गर्म दाह-कारक, (धिरका) चार (राई) द्रव्य के खाने से अजीर्ण से घूप में रहने से, ऋतु के विपरीत होने से (जाड़े में गर्मी और गर्मी में जाड़ा) वातादि दोष कुपित हो चर्म में घुस यह रक्त को दूषित करके अथानक विस्फोटक रोग को उत्पन्न करते हैं, यदि उक्त कुपय्य धातु न किया तो माता को न हो के दुग्ध पीने वाले बच्चे को बड़ी रोग होता है परन्तु प्रायः देखने में आया है कि बच्चे को मसूरिका अर्थात् छोटो माता अधिक निकलती है ।

### बड़ी माता का स्वरूप ॥

अग्निदग्धानिभास्फोटाः सज्वरारक्त पित्तजाः ।

क्वचित्सर्वत्र वा देहे विस्फोटा इति ते स्मृताः ॥

जैसे कि भाग से लगे के फफोले होते हैं वैसे ही फफोले देह में एक जगह अथवा समस्त देह में रक्त और पित्त के विगाड़ से ज्वर सहित पड़ जाते हैं अर्थात् को बड़ी माता कहते हैं । वाताधिक्य में गिर दई फफोलों में दई और कुछ कालापन ज्वर घास और जोड़ों में दई होता है ॥

पित्ताधिक्य में ज्वर, दाह, चह दई पिपासा फफोलों का जल्द पकना बहना और रङ्ग में पीला एवं काल होता है । कफाधिक्य में की, अस्थि फफोलों में खाल और रङ्ग में पाण्डु, वेदना रहित और बद्धत दिनों में पकता है हृन्त में २ दोष के संचय मिसते हैं ॥

### त्रिदोष लक्षण ॥

जो विस्फोटक त्रिदोषज होता है सो बौध में गहिरा, किनारे लंबे कठिन अथपका दाहयुत लहामो लिये, हृष्या, वेधनी, अति सूच्छा, पीड़ा, ज्वर,

प्रलाप कम्पन और भ्रमकी इन लक्षण युक्त उक्त रोग बहूत कठिन होता है अर्थात् यत्र न होने से रोगी मर जाता है। रक्ताधिक्य और पित्ताधिक्य दोनों का लक्षण एक है ॥

उपद्रव ॥

हिकाश्वासोऽरुचिस्तृष्णा अङ्गसादोऽहृदिव्यथा ।

विसर्पञ्चरहृत्लासा विस्फोटानामुपद्रवाः ॥

जो विस्फोटक रोग त्रिदोषज है और इनकी श्वास, पियास अङ्ग प्रियलि हृदय में पीड़ा, विसर्प ( फफोले फटजाय लासा सरीखा पानी व है ) च्वर और जो मचलाता है। तो असाध्य जानिये, इस अवस्था में अच्छे वैद्य का काम है। विस्फोटक की चिकित्सा, छोटी माता का बयान और टीका लगाने का प्रकरण आगे लिखेंगे ॥

मसूरिका ( छोटी माता )

इसका भी आदि कारण वही है जो बड़ी माता का है। मसूरिका के पूर्व रूप में च्वर, खजुरी, शरीर में ऐंठन, अरुचि, भ्रम, त्वचा में सूजन, अङ्ग और नेत्र लाल होते हैं। प्रायः छोटी माता सरसों या राई के सरीखे दाने निकल कर पांच ही चार दिन में मुर्दाय जाती हैं। दोषों के अधिक कोप होने से अपने २ दोषानुसार मसूर के सदृश सुख पीले रूखे वीर्य वेदना युक्त कठिन एवं देर में पकने वाले होते हैं त्रिदोष में नीले रंगकी चिपटी बीज में गहरी बहूत काल में पकने और पीव बहने वाली होती हैं ॥

चर्मपीडिका माता ॥

ये माता औषधि के योग्य नहीं होती हैं। इसमें कण्ठ का अवरोध, तन्द्रा प्रलापादि अनेक उपद्रव होते हैं। एक रोमान्तिका नामक माता होती है। वे रोमछिद्र समान लंबी लाल रङ्ग की होती हैं।

और भी अनेक गतादि मसूरिका के लक्षण हैं परन्तु ग्रन्थ बदलाने के भय से सम्पूर्ण नहीं लिखा जा सकता ॥

असाध्य लक्षण ॥

प्रवाल (मूँगा) सदृश लाल, जामुन सरीखे काली, अलसी के फल के समान तथा खोहे की जाल के सदृश होने से कठिन चिकित्सा समझनी चाहिये । जिस माता के निकलने में खाँसी, झबकी, बेहोशी, तीव्र ज्वर, प्रलाप बेचेनी, मूर्च्छा, व्याघ्रा, दाह, घुमरी, मुख नाकसे रक्त गिरना, नेत्र अति लाल कण्ठ में धुरधुर शब्द, खाँस और अति च्वास हो तो जानना कि यह नियय मर जायगा ॥

मसूरिकान्तेग्रोफः ख्यात्कर्परेमणि वन्धके ।

तथासफलकेवापि दुश्चिकित्वाःसदाह्वयः ॥

माता के अन्त में किड़नी, पड़चा अथवा कन्धे में सूजन आवे तो असाध्य ही समझना ।

शास्त्र से प्रतिरिक्त परीक्षित असाध्य लक्षण--कई साल की परीक्षा से नियय हुआ है यदि माता के पाराम होने के बाद तीव्र ज्वर, अति प्यास, छाँफो, गले में दर्द दस्त पतला हो यदि उस अवस्था में सद्येय द्वारा यथायं चिकित्सा न होगी तो नियय है कि उसके यकृत (लीवर) में शीघ्र भीघ्र ही पा जायगी और चायर्थ नहीं कि किसी न किसी रंग में रक्त जमकर फोड़े होजाय । जत्र रोगी को पानी पीने में क्लेश होगा अर्थात् प्यास ही परन्तु जल समीप जाते ही अनिच्छा प्रकट करे तो झटकर है कि तीन चार दिन में रोगी मरजायगा । सन् ८७ में वद्वत से लड़के उक्त कारण से मरे हैं, डाक्टर लोग दीर्घीय चिकित्सा न जानने के कारण रोगियों की दया को अहरेहो द्वा द्व द्व के घोर भी गड़बड़ सड़बड़ कर डालते हैं अन्त में भी नहीं जान सक्ते हैं कि इस रोगी की मृत्यु का कारण ठीक क्या हुआ अर्थात् अपने स्वार्थ साधन से काम चाहे भारत बने या बिगड़े, रहे हकीम भी उनसे माता की बीमारी में वद्वत कम सहायता ही जाती है भी हिंदुओं के यहाँ धिलकुल ही नहीं और जिस किन्न के वैद्यों का आज कल प्रचार है वे लोग न तो किसी सद्गुरु के द्वारा सिखा पावे न उस शास्त्र का मर्म बूझें कि जिनसे इन महा कठिन रोगों की जानकारी और उनके आरोग्य करने की योग्यता प्राप्त हो-

शक्ति दक्षिणा या फीस देकर टीका लगवाती थी वही अब चङ्गेरेची टीका वालों को गोदगहरा के नाम से कह कर ऐसी छुणा रखती है कि सब लोग थोड़ा २ चन्दा करके टीकावालों को इस लिये राजी करते हैं कि वे उनके बालकों के टीका न लगवावें। इसमें विशेष कारण टीका से परहेज करने का यही है कि टीका के परिशेष में अधिक सुसम्मान होते हैं यदि अच्छे घग्मिष्ट पड़े लिखि हिंदू विशेष कर ब्राह्मण टीका के काम में नियत किये जाय तो यह काम पूर्णरूप से प्रचलित होजाय नहीं तो रंगीझघे कागजु सकारि देख लिया करे कारवाई कुछ थीरही होती है जिसको हम जानते हैं।

हमारे विचार में टीका दिखाना बहुत अच्छी बात है पर जिनसे न हो-सके १५ संख्या के जेखानुसार रोग का यत्र करो थीर माता पूज जाने के बाद कभी धोखा मत खाओ तुरन्त मूषल औषध द्वारा अबस्थानुसार (श्रीतल चौनी का चूर्ण १। २ रत्ती दो २ घण्टे में जल के साथ पिलाओ) चाभ्यन्तरिक ज्ञाता साफ करके तत्पश्चात् कुछ दिन पर्यन्त जैसे सरवत अनार, सरवत सन्दल, सरवत बमप्पा, सरवत नीलीफर, सरवत उन्नाव, अर्क गुलाब, अर्क धनिया, अर्क कासनी, या कामनी के पत्तों को कूट कर रस निकाल ली या फाड़ के उसमें मिथी डालकर पिखावे, रुधिर के साफ करनेमें इसके बराबर दूसरी औषध नहीं है परन्तु कामनी के पत्तों को घोना न चाहिये क्योंकि उसका असर जाता रहता है ॥

### माता की चिकित्सा ।

उपद्रव रहित माता में सेवाय बाह्य यत्र के औषध न करना चाहिये । यदि ज्वर हो तो खान न करना बहुत हवा में न रखना, कभी २ माँग का चूर्ण देह में लगा देना । माता के प्रारम्भ में तीन दिन होनी समय दो तीन दाना कालोमिष के साथ रुद्राक्ष की बासी पानी में घोट कर पिखावे जय देखि कि माता का जोर नहीं घटता है पिखाना बन्द कर देय । यदि माता सम-डती झरं न हीखे तो एक दो मदाम का पानी में भिगा कर देय । छिछला निकाल पानी में घोट कर पिखा देय या ऐगही पिखा देय, दिन में दो तीन दफे देने से वैठी हुई माता जल भर जाती है ।

अंगर रोगी बालक बहुत रीवे और अपने हाथों से देह खलुवावे और बदन नीचे तो पोस्ने के सूखे दो या एक फल को लपक कर एक मही के पात्र में रात की मिठा दे और सबेरे खूब मल कर छान ले और जरा सी मिथी मिठा कर पिला दे इसी प्रकार सबेरे भिजावे तो घांघ की पिलाये ।

बाले बच्चों के पैर के तलुवा और हथेरी में भी माता निकल आती है जिसके को तलुवा अधिक जलता है चाहिये कि चावल के धोवन से दिन में कईवेर तलुवे को भीष देय ।

पाक काल में सब मसूरियों को बायु सुखाता है तब हंहरण ( तरबोपध ) देना चाहिये, गुंघे मुलेठी, मुनक्का, मीठा अनार और मिथी संयुक्त दुग्ध फाड़ के उसी का पानी पिलाना इससे जल्दी पकतो है और वायु भी कोप नहीं करता परन्तु पाक देख लेना । अगर वायु कोप से पेट में दर्द पेट फूलना अथवा ऐंठन या कम्पन हो तो किञ्चित् सेंधव नोन युक्त मसूरस के साथ कुछ भोजन देना, थोड़ी सी बिजयधार को लकड़ी और खैर, सेर चाध सेर पानी में गरम कर छान ले और वही पानी पीने की देय और चाबदस्त लेने के लिये भी उसी जल को रक्खे । मुख में छाले पड़ गयेहों या मझीन २ फुन्धियां ( माता ) निकल आई हों तो जाई के पत्ते, मजीठ, दासहल्दी, सुपारी, चां-वला और मुलेठी इन सबकी समभाग के १६ हिस्से जल में घाघ कर कुली करावे यदि पति बालक हो तो खेत खैर सुपारी दोनों को पानी में पीस लेप कर देय ।

दगापूर्ना और मुंकेठी की पानी में घोट, उसे अधिक पानी में घोल कर रोज २ चस जल से रोगी की घांघों की सींचने से नेत्र नाश या फूली चादि पड़ने का भय नहीं रहता । यदि माता मजती हो तो बड़, पीपर, पाकरि, गूलर और आम इनकी छाल या पत्तों को खुश्क चूर्ण कर बुरकावे, किसी किसी का मत है कि जङ्गली कण्ठों की राख बुरकाना पति लाभदायक है । माता में कृमि न पड़े इसलिये कभी २ राख खोवान चादि की धूनी देना भी उत्तम है । अगर माता के जोड़े दूषित होजाय तो घीघ ही जोक लगवा कर रक्त निकलवा दे ॥

## श्रीतला की टीका वा छाप ( लिम्फ )

पूर्व में यह बात लिख चुके हैं कि पूर्वकाल में माछी लोग टीका लगाने से चर्षी का अनुकरण अब सरकार की ओर से होता है, इसमें यह नहीं कि टीका लगाने से माता का जोर घट जाता है और टीका लगाने से बच्चे को कुछ क्लेश भी नहीं होता है परन्तु अज्ञान बस लोग इससे डरते हैं सरकार की तरफसे भी प्रथम हिन्दुस्तानी के रीयानुसार टीका लगाया जाता था वह यह था कि चिकित्सक के दानेमें से जरासा चिप लेकर थलाका (नस्तर) की नोक से आरोग्य बालक के बाह्र में चर्म के अन्तर्गत प्रवेश कर देते थे बस जब थाला पड़ गया तो चर्षी का चिप लिया या जब दाना सुरभ्राय गया तो दिल्ली को उतार कर उसमें जरा सा पानी डाल महीन घोंट लें सा बना टीका के काम में लाते थे और अब भी कितनी जगह इसी तरह से टीका लगाया जाता है परन्तु प्रायः देखा गया है कि टीका लगाने पर भी कालान्तर में माता निकल जाती है ।

पचासो वर्ष गत हुआ होगा कि डाक्टर जेनर नामक एक अंगरेज ने गायन टीका का प्रकाश किया अर्थात् गोर्षी के थनों पर जो दाने निकलते हैं उसके चिप से टीका लगाना प्रचार किया और उसका नाम "वेक्सिनेसन" रखा अब अधिकतर सर्वत्र चर्षी से टीका लगाया जाता है और इस बात के लिये सरकारी कानून हो गया है कि जब बच्चा कुछ सयाना हो जाय तो उसके मा बाप उसे अवश्य टीका लगवा दें और बाज २ यह कहते हैं कि सिर्फ मुम्बई के लिये सरकारी कानून है अन्य देशों में ऐसा कानून नहीं है परन्तु गवर्नमेण्ट की ओर से टीका लगानेवाले हिंदू मुख्तयान दोनों जाति के लोग नियत हैं और जो कोई इच्छा प्रकट करे कि हमारे बच्चे को टीका लगा देतो तो वे नियमित लोग धर्मार्थ टीका लगा दें और २ हीर्षी में इसका अधिक प्रचार है । विलायतमें एक भी लड़के ऐसे न निकलेगी कि जिनके टीका न लगाया गया हो, इसमें यह नहीं कि टीका लगाने से बहुत अधिक लाभ देखा गया है और हिंदू लोग जो प्रायः चर्षी डरते हैं, कई कारण हैं प्रथम तो यह कि देवी अप्रसन्न होगी । दूसरे अशिक्षितों में पूर्वहीसे यह ख्यालात लगे है कि सरकार अपने मतलब ( जिसकी बाह्र से दूध निकलेगा उस बच्चे

अगर रोगी बालक बहुत रोवे और अपने हाथों से देह खजुवावे और बदन नोचे तो पोस्ने के सूखे दो या एक फल को लचल कर एक मही के पाष में रात को भिगा दे और सुबेरे खूब मल कर छान ले और जरा ही मिश्री मिला कर पिला दे इसी प्रकार सुबेरे भिजोवे तो घाम जो पिलाये ।

वाजे बच्चों के पैर के तलुवा और हथेरी में भी माता निकल आती है जिसे जो तलुवा अधिक जलता है चाहिये कि चांवल के धोवन से दिन में कईवेर तलुवे को सींच दें ।

पाक काल में सब मसूरियों को वायु सुखाता है तब हंघण ( तरपोषध ) देना चाहिये; गुचं मुलेठी, सुनझा, भीठा घनार और मिश्री संयुक्त दुग्ध फाड़ के उसी का पानी पिलाना इससे जल्दी पकतो है और वायु भी कोप नहीं करता परन्तु पाक देख लेना । अगर वायु कोप से पेट में दई पेट फूलना और एंठन या कम्पन हो तो किञ्चित् सैधव नीम युक्त मसूरस के साथ कुछ भोजन देना, थोड़ी ही बिजयघार को लकड़ी और खैर, सेर चाध सेर पानी में गरम कर छान ले और वही पानी पीने को देय और चाबदस्त लेने के लिये भी उसी जल को रखे । सुख में छाले पड़ गयेहों या महीन २ फुन्डियां ( माता ) निकल पाई हैं तो छाई के पत्ते, मजीठ, दासहल्दी, सुपारो, चां-वला और मुलेठी इन सबको सम भाग ले १६ हिस्से जल में छाष कर काली करावे यदि शक्ति बालक है तो खेत खैर सुपारो दोनों को पानी में पीस लेप कर देय ।

दशापूर्णा और मुकेठी को पानी में घोट. उसे अधिक पानी में घोल कर रोज २ छस जल से रोगी को चांखों को सींचने से निव नाथ या फूली चादि पड़ने का भय नहीं रहता । यदि माता बहती है तो बड़, पीपर, पाकरि, गूलर और चाम इनकी छाल या पत्तों को खुम्क पूर्ण कर सुरकावे, किषी किषी का मत है कि जइली कण्डों को राख सुरकाना शक्ति लाभदायक है । माता में कृमि न पड़े इसलिये कभीर राख खोबान चादि को धूभी देना भी उत्तम है । अगर माता के फोड़े दूषित होजाय तो शीघ्र ही जोक लगवा कर रक्त निकलवा दे ॥

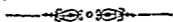
## श्रीतला की टीका वा छाप ( लिम्फ )

पूर्व में यह बात लिख चुके हैं कि पूर्वकाल में माली लोग टीका लगाते थे उसी का अनुकरण अब सरकार की ओर से होता है, इसमें शक नहीं कि टीका लगाने से माता का जोर घट जाता है और टीका लगाने में बच्चे को कुछ क्लेश भी नहीं होता है परन्तु अज्ञान बस लोग इससे डरते हैं सरकार की तरफसे भी प्रथम हिन्दुस्तानी के रीयानुसार टीका लगाया जाता था वह यह था कि चिकन के दानेमें से ज़रासा चिप लेकर थलाका (नस्तर) की नीक से आरोग्य बालक के बाहू में चर्म के अभ्यन्तर प्रविष्ट कर देते थे बस जब चावला पड़ गया तो उसी का चिप लिया या जब दाना सुरभाय गया तो दिखली को उतार कर उसमें ज़रा सा पानी डाल महीन घोंट लेई सा बना टीका के काम में लाते थे और अब भी कितनी जगह इसी तरह से टीका लगाया जाता है परन्तु प्रायः देखा गया है कि टीका लगाने पर भी कालान्तर में माता निकल जाती है ।

पचासो वर्ष गत हुआ होगा कि डाक्टर जेनर नामक एक अंगरेज ने गायन टीका का प्रकाश किया अर्थात् गीघों के थनों पर जो दाने निकलते हैं उसको चिप से टीका लगाना प्रचार किया और उसका नाम "वैक्सिनेसन" रखा अब अधिकतर सर्वत्र उसी से टीका लगाया जाता है और इस बात के लिये सरकारी कानून हो गया है कि जब बच्चा कुछ सयाना होजाय तो उसको मा बाप उसे अवश्य टीका लगवा दें और बाज २ यह कहते हैं कि सिर्फ मुम्बई के लिये सरकारी कानून है अन्य देशों में ऐसा कानून नहीं है परन्तु गवर्नमेण्ट की ओर से टीका लगानेवाले हिंदू मुख्तयान दोनों जाति के लोग नियत हैं और जो कोई इच्छा प्रकट करे कि हमारे बच्चे को टीका लगा देयो तो वे नियमित लोग धर्मार्थ टीका लगा दें और २ हीपों में इसका अधिक प्रचार है । विलायतमें एक भी लड़के ऐसे न निकलेंगे कि जिनके टीका न लगाया गया हो, इसमें शक नहीं कि टीका लगाने से बहुत अधिक लाभ देखा गया है और हिंदू लोग जो प्रायः डरते डरते हैं, कई कारण हैं प्रथम तो यह कि देवी प्रसन्न होगी । दूसरे अधिचिर्ता में पूर्वहीसे यह ख्यातात जमे है कि सरकार अपने मतलब (जिसकी बाहू से दूध निकलेगा उस बच्चे



की सरकार जेगी ) से टीका जारी किया, घग्गावल्लवी जो अयं मुसलमानों से छूने में छुणा करते हैं वे किस तरह अपने बच्चों को अपने टीका लगवाना पसन्द करेंगे कभी नहीं । प्रजावत्सल सरकार यदि दत्तचित्त से बच्चों को आरोग्य प्रदान करना चाहती है तो अवश्यमेव इस काम में सिर्फ द्राक्षणा ही भरती करे इससे फिर हिंदूमात्रको परहेज न होगा ॥



### टीका लगवाने के साधारण नियम ॥

१—जितना शीघ्र बच्चे को शीतला कराल रूपी परिष्ट से बचा लेने का उपाय पूर्व ही से करना शक्ति उत्तम है । यदि बालक आरोग्य और सबल हो तो शीघ्र ही मासकी अवस्थामें टीका दिला देना कोई अर्देना नहीं है क्योंकि बच्चे की अवस्था जितनी ही अधिक होती जायगी उतनी ही टीका का स्थान हाथों से गिखार बिखार लाखने का डर है और एक बार छाप लगा देने के बाद यदि सात वर्ष बीतने पर फिर टीका लगवा दिया जाय तो माता निकलने का खटका जन्म पथ्यन्तन होगा ।

२—खूब सावधानता से टीका ( प्रथम ही जांच लेय कि इस सूची से किसी रोगी बच्चे तो नहीं गिदे गये हैं इत्यादि ) लगाना उचित है, टीका देने के दो तीन दिन बाद तीन चार दिन तक बहुधा बच्चों को धीमा ज्वर, मुह शुष्क, रात में अल्प निद्रा और किसी २ को दस्त पतला बना रहता है छः सात दिन बाद टीका के चङ्ग और गरिष उमड़कर लाल हो जाता है और भीठी २ टपक भी होती है परन्तु तीन चार दिन के बाद आप आराम हो जाता है औषध करना उचित नहीं है ।

३—जिस में बच्चे टीका के स्थल को न मलने पावे इस लिये उनके चङ्गा या कुरता की पंजी डीली रखनी चाहिये, टीका के स्थानमें सूजन और दर्द बिषेप मालूम हो तो उसके चङ्ग और नारियल का तेल या मक्खन या घी लगा दे, टीका सूख जाने पर पपड़ी को हाथ से न उचारे आपसी आप सूख पर गिर जाने दिय पाकी का बंधाय रखना लाभ दायक है ।

## आयुर्वेद ।

यह अथर्व वेद का उपांग है । जैसे ऋग्वेदादिकों के उपांग घनुर्वेदादि हैं । ब्रह्मा जी ने सृष्टि के पूर्वही एक सङ्ग्रह अध्याय युक्त एक छल श्लोक आयुर्वेद बनाया, प्रथम, एकही भाग था मनुष्यों का अल्प आयुष्य बुद्धि, पराक्रम तथा वीर्य हीन देख ऋषियों ने निम्नलिखित नामोंसे छल भाग कर दिया ॥

१-शल्य ( अस्र चिकित्सा ) २-शालाक्य ( मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों के लक्षण और शांति ) ३-कामचिकित्सा ( ज्वरादि रोगों को शमन करना ) ४-भूत-विद्या ( यंत्र मंत्र बल दानादि उपाय ) ५-कीमार मृत्यु ( बाल रक्षण, घात्रो. शिक्षा ) ६-अगदतंत्र ( विष पीड़ित मनुष्यों की चिकित्सा ) ७-रसायन तंत्र ( शीघ्र बुढ़ापा न होने की विधि ) ८-बाजी करण तंत्र ( वीर्य सृष्टि तथा स्त्री समागम में अति आनन्द उत्पन्न होने के उपाय ) इसी को आयुर्वेद का अष्टांग कहते हैं, जिन्हें विस्तार सहित आगे लिखेंगे ॥

### आयुर्वेद की परम्परा ।

प्रथम ब्रह्मा जी ने आयुर्वेद को प्रगट कर दक्षप्रजापति जी को पढ़ाया, दक्षप्रजापति जी ने बड़े विद्वान मूर्य के पुत्र अश्वनीकुमार को पढ़ाया, यह महाशय वैद्यक के बड़े भारी पण्डित हुये, एक समय ब्रह्मा का शिर भैरव ने काट लिया था अश्वनीकुमार ने छोड़ दिया, तब से नीर प्रतिष्ठा हुई और यज्ञ में भाग पाने लगे । देवासुरसंग्राम में दैत्यों से घायल हुये देवताओं का घाय तुरन्त शच्छा कर दिया, इसी विद्याके बल से इन्द्र का भुजस्तंभ, पूषा के गिरे दांत, मग देवता के फूटे नेत्र और चन्द्रमा का लयरोग शच्छा कर दिया । भृगुवंशी स्वयंभुवशपी आंस के अंधे और अति सृह हे। मये ये अश्वनीकुमार ने उन्हें एक ऐसी

औषध का जल बनाय स्नान करा दिया कि यह जति सुन्दर कर्मान के समान नेत्र युक्त मने। हर रूप १६ वर्ष के युवा हो गये, अश्वनीकुमार से पढ़ कर इन्द्र ने आत्रेय मुनि को पढ़ाया, आत्रेय बड़े भारी वैद्य हुये जिन्होंने ने आत्रेयसंहिता नामक ग्रंथ रचा और अग्निवेश, मेघ, जातूकर्ण, पराशर, हारपाणि और हरीत को आयुर्वेद पढ़ाया, वे सब महाशय भी अपने २ नाम की संहिता और ग्रंथ रचते भये जैसे अग्निवेश रचित अ-जूननिदान, और हरीत रत हारीतसंहिता आदि ॥

### भरद्वाज मुनि ।

भरद्वाजसंहिता के देखने से ज्ञात हुआ कि एक समय हिमालय के चन्द्रिकटवर्ती स्थान में बड़े २ तेजस्वी स्वाध्याय में तत्पर ऋषिगण परस्पर विचार करने लगे कि धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष का मूल यह शरीर है और इसमें रोग होने से जप, तप, स्वाध्याय, धर्म ब्रह्मचर्य आदि सब नष्ट हो जाते हैं यहाँ तक की निरन्तर स्व शरीर रक्षा की चेष्टा रहित होने से शीघ्र ही कालप्रसूत होगा पड़ता है इसलिये शरीर का पालन मुख्य कर्तव्य है ऐसा सुन सब की तरफ से भरद्वाज मुनि इन्द्र लोक में गये वहाँ इन्द्र से आयुर्वेद का मूल तत्त्व प्राप्त कर लौट आये वन्हीं ने जाय्यावर्त के अनेक ऋषियों को आयुर्वेद पढ़ाया और भरद्वाज संहिता नामक श्रेष्ठ ग्रंथ बनाया ॥

### चरक मुनि ।

यह महाशय आत्रेय मुनि के पुत्र हैं इनका वृत्तान्त इस प्रकार लिखा है कि जब भगवान ने मत्स्यावतार ले घेदों का उद्धार किया उन्ही अवस्था में उक्त मुनि ने सांगोपांग आयुर्वेद पढ़ कर रोगार्त मनुष्यों के कल्याणार्थ मर्त्यलोक में अवका प्रचार किया और चरकसंहिता नामक एक ग्रन्थ बनाया इनको लोग शेष का अवतार भी कहते हैं ॥

## धन्वन्तरि ।

पुराणों से जाना जाता है कि धन्वन्तरि का जन्म समुद्र से हुआ है एक समय इंद्र ने भारत के प्राणी मात्र को रोगातुर देख धन्वन्तरि से कहा कि आप मनुष्यों के कल्याणार्थ काशी के राजा का तन धारण करें तब धन्वन्तरि जी ने इंद्र से पढ़ कर के काशी के राजकुल में जन्म ग्रहण किया और दिवोदास इस नाम से प्रसिद्ध हुये, यह महात्मा बाल अवस्थाही से विरक्त हो अनेक तपश्चर्या में प्रवृत्त हुये परन्तु ऋषियों ने इनको काशी के राज्यपद पर बैठाया, उक्त काशीराज बड़े भारी वैद्य हुये । कुछ काल के पश्चात् विश्वामित्र ने अपने पुत्र सुश्रुत से कहा कि हे वत्स दिवोदास काशी के राजा साक्षात् धन्वन्तरि हैं तुम काशी में जाओ। उनसे आयुर्वेद अध्ययन करके लोकका उपकार करो, सुश्रुत पिता की आज्ञा स्वीकार कर एक सौ ऋषियों के पुत्रों को साथ ले काशी में गये और अष्टांग आयुर्वेद अध्ययन कर सांगोपांग समस्त ऋषि पुत्रों को पढ़ाया और वैद्यों के उपकारार्थ सुश्रुतसंहिता अपने नाम का ग्रन्थ रचा, यद्यपि मनुष्यों के विविध कल्याण एवं देह रक्षार्थ अनेक ग्रन्थ पृथ्वी तल में विख्यात हैं परन्तु सुश्रुत जैसा निदान शारीरिक और अस्त्र निकित्सा आदि विषयों में सद्वाचस्पत्य और माननीय है ऐसा दूसरा नहीं इसके अध्ययन से घोरक मन्त्रन्धी समस्त शंका निवृत्त हो जाती हैं ऐसा लिखा है कि जिन वैद्यों का सुश्रुत नहीं जाता वे चोर हैं और राजा से मघ दण्ड पाने योग्य हैं ॥

## नाड़ीज्ञान ।

आयुर्वेदाभ्यन्ती (वैद्य) को अभ्यन्त रोग के पहिचान के लिये नाड़ी ज्ञान अवश्य होना चाहिये क्योंकि बिना नाड़ीज्ञान के रोग को साध्या-ज्नाध्य परीक्षा और रोगी के जीने मरनेकी अवधि नहीं नाछूग हो सकती

जैसे वैद्यकशास्त्र के जाननेवाले को विशेष कर नाड़ी को ज्ञान, हाकूर को विशेष कर जिह्वा और आंख की परिचान, हकीम को विशेष कर सूत्र परीक्षा में पित्त अधिक देना चाहिये । इसलिये विचार है कि अब हम अपने पाठकगणों को संक्षेप से वैद्यक के संपूर्ण अङ्गों को बतला दें कि जिसमें वे अपनी और अपने कुटुम्ब मात्र की चिकित्सा कर लिया करें किसी मूर्ख वैद्य या बाबाजी के धोखे में आकर घन और प्राण दोनों न गंवायें ॥

जीव धारियों के स्थूल एवं सूक्ष्म सब साढ़े तीन कोटि नाड़ी हैं वे सप्तस्त नाड़ी नाभि मूल में बंध बक्र ऊर्ध्व और अधस्विति हैं । एही सब नाड़ियां आपस में एक के साथ एक मिलकर इस शरीर के ऊपर भाग में जाल के समान बन्धी हैं जिसे अंगरेजी में (सेल्युलारटिसु) कहते हैं अपौरु एक प्रकार जाल सदृश कित्ती । इसी प्रकार मनुष्य के देह में साढ़े तीन कोटि रोग भी हैं और रोम (माल) की उत्पत्ति नाड़ियों की मल से ही हो सग्य नाड़ी मुख द्वारा घर्म (पसीना) बिन्दु श्राव होता है । नाड़ी तीन नाम से प्रसिद्ध है १ घनती से २४ हैं भोजन का सारभूत रस इन्हीं नाड़ियों के द्वारा बहन होता है इसमें इसे रस बाहिनी नाड़ी कहते हैं । से नाभि मूल हो के १० नीचे को गई हैं यात मल मूत्र, शुक्र, और अन्न रस नीचे पहुंचाना उनका काम है १० ऊर्ध्व गामी हैं से शब्द रस गंध स्वांस जंभाई उन्नत सुधा और तृया शक्ति इन सब को अपनी शक्ति से ताकत देती हैं और दो २ तिर्यग (टढ़ी) हो के फैली हैं । नाभीके मध्यमें सुपुत्रा नामक एक बड़ा नाड़ी है जिनमें कि संपूर्ण नाड़ियां जो एक के समान लिपटी हैं । दूसरी का नाम शिरा (भेदन) है वे सात ही हैं यह रक्त को बहन करती हैं इसमें रक्त बाहिनी कहलाती हैं । तीसरे का नाम स्रायु जिसे अंगरेजी में (नर्भ) कहते हैं मुख्य भी है हैं इनका काम है पसीना को बाहर करना और उसी मूल छिद्र द्वारा लेपन तैलमर्दन आदि पदार्थ शरीर में प्रवेश करते हैं ॥

## प्रधान चतुर्दश नाड़ी ।

हेहा १ पिङ्गला २ सुपुत्रा ३ सरस्वती ४ मारुणी ५ पूषा ६ हस्तिनिहा ७ यशस्विनी ८ विश्वोदरी ९ कुहू १० शङ्खिनी ११ पयस्विनी १२ मलम्बुषा १३ गांधारी १४ यही चतुर्दश नाड़ी हैं—तिगमें से १० नाड़ी निम्नलिखित १० वायु के साथ दशेन्द्रियों के मार्ग में बह्न करती हैं ॥

## दश वायु ।

प्राण १ अपान २ समान ३ उदान ४ व्यान ५ नाग ६ क्रम ७ कूकर ८ देवदत्त ९ घनंजय १० यही १० वायु इडा प्रभृति दश नाड़ियों में संचार करते हैं । नाभिका के वाम भाग में इडा, दक्षिण भाग में पिंगला और ब्रह्म रंध्र में सुपुत्रा है इसी तरह वाम नेत्र में गांधारी, दक्षिण में हस्तिनिहा, दक्षिण कर्णमें पूषा, वाम कर्ण में यशस्विनी, मुख में मलम्बुषा, कुहू और गुदा द्वार में शङ्खिनी इस प्रकार दश द्वार को आयय कर के दश नाड़ी स्थिति हैं ॥

## नाड़ी स्पर्शन विधिः ।

वेद्य रोगी के कूर्पर ( कलाई ) भाग को अपने वाम हस्त द्वारा दबा के और दक्षिण हस्त की अंगुलिप्रय उस के अंगुष्ठ मूल में वायुगति विधिष्ट नाड़ी को सर्वदा परिक्षा करे वेद्य का कर्तव्य—वेद्य भौचानन्तर प्रातस्संध्यादि कर्म में निवृत्त हो मुख पूर्वक आसन पर बैठ एकाग्र चित्त कर रोगी को मल मूत्र त्याग कराके नाड़ी का स्पर्शन द्वारा परीक्षा करे । पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ को नाड़ी देखे । इसका कारण यह है कि “स्त्रीणा मूढं मुखं क्रमं पुषां पुन रधो मुखः” स्त्रियों के नाभि में क्रम ( जो एक प्रकार की लहत् नाड़ी है ) का मुख ऊपर और पुरुष के अधोमुख है इस से स्त्रियों के वाम नाड़ी द्वारा परीर के मुख दुःख का ज्ञान होता है और पुरुष के दाहिने हाथ के अंगुठे की छड़ में जो नाड़ी चलती है प्रथम वायु की दूसरी पित्त और तीसरी कफ की जानना । वात की नाड़ी सर्प और जोक इत्यादि ज्ञान-

वरों की भांति तिरछी बांकी चाल से चलती है । पित्त कि कौशा हिरन और मेढक आदि की तरह फुदकती हुई चलती है । कफ की नाड़ी घंस और कबूतर की नाई धीरो चाल से चलती है जब रोग इन विकारों से होता है तो नाड़ी की चाल भी इन दोषों से मिश्रित हो जाती है जैसे वात और पित्त के विकार से जब रोग उत्पन्न होगा तो नाड़ी की चाल भी सर्प और मेढक को चालों से संयुक्त रहैगी इत्यादि और भी जानना । सन्निपात अर्थात् तीनों दोषों के मिश्रित होने से नाड़ी की गति तीतर और बटीर की चाल चलती है । ज्वर के कोप में नाड़ी गरम और जलदी २ चलती है । काम और क्रोध में नाड़ी बद्धत जलदी, भय चिन्ता और भोक को नाड़ी क्षीण ( धीरी ) मन्दाम्नि और धातु क्षीण वाले को नाड़ी अति धीमी चलती है । रक्त विकार वाले की नाड़ी गरम और भारी तथा आमातिसार, आदि उदर व्याधि वाले को नाड़ी लाई ज्वर भेसा के समान धीरी और भारी चलती है । अग्नि दीप्त वाले की नाड़ी जलकी और जलदी, आरोग्य, पुंस्य की नाड़ी चलवती भूख की नाड़ी चपल और भोजन किये ज्वर की नाड़ी स्थिर चलती है ॥

### प्रकृत्यानुसार नाड़ी ।

वात प्रकृत वाले को नाड़ी क्षिप्र और सूक्ष्म गति होती है, पित्त वाले की तप्त दीर्घ और अति शीघ्र बाहिनी होती है, कफ वाले की भारी और धीमी गति होती है । परन्तु सिर्फ नाड़ी ही के भरोसे न रहें; रोगी को अवस्था बलावल आदि उपरी दशा को देख लें जैसे कि दुर्बल, धातु क्षीण, दीर्घ रोगी और सुजाक वाले की नाड़ी अति धीमी चलती है, और कफ वाले की भी धीमी चलती है पित्त वाले और कठिनाहारे की नाड़ी एक सी होती है, किसी कारण से जब मनुष्य के थिर पर गरमो चढ़ जाते है तो वह विज्ञेय हो जाता है उस अवस्था में भी नाड़ी धीमी चलने लगती है, वैद्य लोग शीत को नाड़ी जान रस देना आरम्भ कर देते हैं सुतरां रोगी शीघ्र ही यमपुर को गमन कर जाता है वस उस समय अवश्य शोधक यंत्र ( लेंक्स ) आदि का अनुसन्धान करलेगा उचित है । इसी से प्रायः सर्वाङ्ग लक्षणों से अनभिज्ञ वैद्य धोका खाजाते है ॥

प्रातःकाल में नाड़ी स्तिग्ध मयी, मध्याह्न में उष्णा, सायंकाल में बेगवती और रात्रि में बेग रहित होती है यह स्वभावज गुण है ॥

### मृत्यु नाड़ी लक्षणम् ।

जिस रोगी को नाड़ी क्षण में बेग से गमन करे और क्षण में धीमी हो के बन्द हो जाय तो जानना कि सात रोज के अभ्यन्तर में इसको मृत्य अवश्य होगा ॥

आभ्यन्तरिक अतिशय दाह से यदि नाड़ी शीतल एवं अति मन्दगत हो तथा भीतर शीत होने से जिगफी नाड़ी उष्णा और बेगवान हो जाती है उसकी मृत्यु निश्चय होती है ॥

जिसकी नाड़ी की गति ऐसी मन्द हो जाय कि देखने से बिलकुल पता न लगे चाहे यह रोगी की इन्द्रियां सब चैतन्य हो बैठने उठने की शक्ति भी बनी हो परन्तु वह तीव्र प्रहर में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा, ऐसा हम ने कई एक रोगियों को देखा है ॥

पतिराःसन्धितासेदौ नष्टशुक्रस्ययोभवेत् । शान्यतेविस्मय-  
स्तस्य नक्षिच्चिन्मृत्युकारणम् ॥

(पतित) वृद्ध स्वप्न से गिरा हो, सन्धियों (जोड़ों) में चोट लगी हो, नष्ट शुक्र अर्थात् बीर्य रहित एतादृश मनुष्यों की नाड़ी मृत्यु सद्रूप होती है, परन्तु मृत्यु का कारण न जानना चाहिये ॥

### रोग रहित अपमृत्यु नाड़ी का लक्षण ।

शरीर में कोई रोग नहीं है और किसी कारण से मृत्यु हो रही है तत्समय नाड़ी सन्निपात सद्रूप हो जाती है ॥



## डाक्टरीय मतानुसारेण नाड़ीज्ञानम् ।

जन्मकाल में एक मिनिट में नाड़ी की गति १४० बार होती है, तत् ऊर्ध्व एक वर्ष पर्यन्त आरोग्य बालकों की नाड़ी १३० बार चलती है, उसके ऊपर द्वितीय वत्सर पर्यन्त एक मिनिट के मध्य में ११० बार चलायमान होती है, द्वितीय वर्ष के ऊपर तृतीय वर्ष पर्यन्त १०० बार गति विशिष्ट होती है, त्रि वर्ष के ऊपर सप्त वर्ष पर्यन्त एक मिनिट में ९० बार, तिसके ऊपर १४ वर्ष तक ८४ बार और चतुर्दश वर्ष के ऊर्ध्व त्रिंशत् (३०) वत्सर पर्यन्त ८० बार तथा पंचाशत (५०) वर्ष पर्यन्त एक मिनिट में ७५ बार नाड़ी प्रकंपमाना होती है, पचास वर्षके ऊपर अश्वी वर्ष पर्यन्त स्वस्थ मनुष्यों की नाड़ी की गति ६० बार चलती है तत्पश्चात् वयः और अवस्था क्रम करके उत्तरोत्तर नाड़ी की गति क्षीण होती है, उक्त अवस्थाओं में यदि उक्त संख्या से अधिक नाड़ी की गति हो तो गरमी जामना और न्यून हो तो सर्दी जानना चाहिये । डाक्टरी बिद्या में नाड़ीज्ञान का प्रकणं विस्तार पूर्वक नहीं है इसी कारण डाक्टरों के नाड़ी द्वारा रोग का पथार्थ ज्ञान नहीं होता है ॥

## रोग परीक्षा ।

पूर्व में नाड़ी द्वारा रोगों की परीक्षा तथा साध्य/असाध्य जानने की रीति लिख भाये हैं परन्तु सिर्फ नाड़ीही देखने से रोगों का पथार्थ ज्ञान नहीं होता इसलिये नेत्रादि अष्टांग परीक्षा भी संक्षेपसे लिखताहूँ जाशा है कि पाठकगण अवश्य इसे अवलोकन करके हमारे परिश्रम को सुफल करेंगे ॥

नेत्र परीक्षा—जात रोग वाले के नेत्र रुध मटीला तथा रक्त वर्ण और कुछ भीतर के दूबे हुये और तीव्र उधरादि रोगों में एकटकी लगाये देखते हुये होते हैं और जात प्रकृत मनुष्य की आंख प्रायः तेजाविशिष्ट हो

एक उज्वल और पुतली कृष्ण वर्ण होते हैं । पित्त रोग वालेके नेत्र पीत अथवा लाल रक्त सदृश किन्वा हरे रंग के होते हैं दाह युत और दीप देखने में यलेश होता है, पित्त निजाण वाले जन की आंखों में लाल २ हारे नेत्र बड़े कटीले और तारे अधिक कृष्णवर्ण होते हैं कफ कोषमें नेत्र विकृत हर समय में पानी भरा सा रहे श्वेत मन्दज्योति और तेज हीन होते हैं, इस प्रकार वाले की आंखें प्रायः श्वेत और बलवान होती हैं मिश्रित दोषों में मिले चुले रंग होते हैं और त्रिदोष ( सन्निपात ) में सब रंग मिल जाते हैं परन्तु रक्त वर्ण अधिक होते हैं । कमल रोग में नेत्र पीले हरदी के समान, हलीमक में हरे, मीह ज्वर में कुछ नीले, असाध्य तपेदिक ( यक्ष्मा ) में स्वत दूध के समान अधिक रक्त श्राव और हिजे में रक्तिन धूम्रवर्ण एवं भीतर को बैठे हुये होते हैं । हृदययंत्र की सूत्र और पित्त की क्रिया में व्यतिक्रम होने से उदररोग होता है । आम रोग में पलक बन्द करने में कष्ट होता है, मिरगीरोग में पलक कम्यत, फुस २ मस्तिष्क और हृदयके रक्तारोध से नेत्र फटे से बड़े हो जाते हैं, उभय नयन रक्त समान लाल होनेसे मस्तिष्क ( शिर ) में सून जम जाने का बोध होता है, शिर में अधिक रक्त उरण हो जाने से, सन्यास रोग ( इस रोगमें मनुष्य मरजाता है ) में एवं अहिफेन द्वारा विषाक्त होने से नेत्रों के तारा संकुचित ( सिकुड़ ) हो जाते हैं ॥

### जिह्वा परीक्षा ।

वात रोग में जीभ सागवन के पत्र के सदृश खर खरी सखी और फटी सी होती है पित्त में लाल किन्वा धूमर वर्ण होती है, कफ दोषसे लिपी मोदी और श्वेत रंग होता है, मिले दोषों में रंग मिला रहता है परन्तु सन्निपात में कुछ कालो हो जाती है, दोषों के कम कोष से जिह्वा का चान भी कम होता है । रक्ताधिक्य दाह वसतः जिह्वा लाल और लाल वर्ण एवं हिजा सूखा और खास रुक जाने में भीतल, कंठ के भीतर अति दाह

होने से कृष्ण वर्ण, यकृत घ्रीहादि आभ्यन्तरिक यंत्र की पीड़ा से मरण समय जिह्वा घाव युक्त होती है। आरोग्य पुरुष की जिह्वा हमेशा गीली और गुलाबी रंग लिये होती है ॥

## मूत्र परीक्षा ।

जो मनुष्य रात में पथ्य भोजन किया है और प्रातः काल जल न पिया है एवं प्रसंग मद्य पानादि किसी प्रकार का कुपथ्य रात में न किया है तो उसके मूत्र की परीक्षा बहुत उत्तम है। क्योंकि रात में कुपथ्य करने और प्रातःसमय जल पीने तथा मूत्र को अधिक काल तक धर रखने से प्रकृति विलीन मूत्र का रंग हो जाता है रोग का साध्याऽसाध्य तथा प्रकृति की परीक्षा नहीं हो सकती है और यथार्थ परीक्षा न करने वाले वैद्य को ब्रह्महत्या का पाप होता है, कदाचित् है "वैद्य चूके रोगो मारे वकील चूके सुभक्ति" इस लिये वैद्य को दत्त चित्त से मूत्रादिकों की परीक्षा करनी चाहिये ॥

## मूत्र लेने की विधि शिवसंहिता से ।

जब चार घण्टों रात वाकी रहै रोगी को उठाय के किसी स्वच्छ सफ़ेद कांच को सीसी में पहिली और पिछली थोड़े से धार को अलग कराय बीच की धार मात्र उसी सीसी में कराय काग से तंतुचण सीसो का मुख बन्द कर-दिय क्योंकि हवा लगने से भौ प्रभाव का रंग बदल जाता है। बाद उस सीसो को धूप में रख कर वर्ष आदि की परीक्षा करै। सिर्फ वात रोग से मूत्र नीलता युक्त लाल रङ्ग होता है, परन्तु स्वभाव की अति गरमी से भी उक्त प्रकार का रङ्ग हो जाता है, पित्त से पीलापन लिये लाल, कफ से फिन युक्त चिकना और खेतवर्ण होता है, रक्त विकार में रक्त सङ्घम और सन्निपात में कुछ कृष्ण वर्ण हो जाता है, रस धातु अपक रहने से मूत्र। काली किम्वा विज्री के रस तथा पासो के समान हर समय होता है। ज्वर की अधिकता से प्रायः मूत्र पीला और पुराने रोग में लाल हो जाता है। वात ज्वर में केशर के समान पीला पित्त

ज्वर में खच्छू पोला और कफ ज्वर में गाढ़ा तथा सफ़ेद रंग होता है । तीव्र सन्निपात ज्वर में मूत्र प्रायः कृष्ण वर्ण हो जाता है और वही असाध्य समझा जाता है । विशूचिका में मूत्र रुक जाता है मूत्र कृच्छ ( सुजाक की प्राग्रूप ) में जलन के साथ बूंद २ मूत्र होता है । बह्ममूत्र जिसे मूत्रातिघार भी कहते हैं उसमें मूत्र निर्मल ठंडा गन्ध और दर्द रहित सफ़ेद दिन रात में बह्मत बार होता है औघ्र चिकित्सा न करने से वही सोम रोग हो जाता है अर्थात् प्ररीर के रसादिक अंग जलवत हो सर्वदा निरन्तरं मूत्रमार्ग द्वारा बहा करता है । मूत्र कृच्छ मूत्रा घात ( सुजाक ) अशरी ( पयरी ) प्रमेह और स्त्री के प्रदर आदि रोगों में तो अवश्यमेव मूत्र परीक्षा करना वैद्यों को अतिश्रेय है । हर एक व्यक्ति को उचित है कि प्रति मास में निज मूत्र परीक्षा द्वारा बीर्य का दोषा दोष अवलोकन कर लिया करें क्योंकि परीक्षा द्वारा जहां तक सिद्ध हुआ है । वर्तमान समय में अधिकांश लोगों के मूत्र द्वारा घात जाता है पर उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं है । उसको तरकीब यह है कि प्रातः समय शीघ्र के पूर्व ही एक स्वेत कांच को सोघी में मूत्र कर सोघी में काग बन्द कर किसी जगह रख दीजिये । संध्या समय या दूसरे रोज प्रातः समय उस मूत्र युत सोघी को उठाय उजियाली की तर्फ देखि यदि घात जाता होगा तो अवश्य मूत्र के अधोभाग में सफ़ेदा वालाई सा या रुई के भुषा सा या दाना बिधिश्ट मट्टिमैले रंग का कुछ पदार्थ जमा सा दिख पड़ेगा ॥

### मल परीक्षा ।

वात रोग में मल (दस्त) घंघा भया, भूय वर्ण और रुसा होता है पित्त में पीला और पतला, कफ में स्वेत गाढ़ा और बहुत होता है दो दोषों में मिश्रित और तीनों दोषों के मिल जाने में दस्त काला, कस और कुछ उष्ण होता है । अति काला, अति पीला, अति स्वेत और अति लाल दस्त से जानना कि विनारी बढ़ी है रोग असाध्य होने का हर ही वैद्यों को उचित है कि उदर सम्यन्धी रोगों में अवश्य मल की परीक्षा करें । आमवात में दस्त कस होता है पेट फूला रहता है, नदि-

सार में अति पतला मल युक्त, हैजामें पानी के समान पतला मल रहित और ग्रहणी रोग में कच्चा अन्न सहित दस्त होता है, जिसके पेट में ऊम (केचुआ आदि) हो जाते हैं उसका भी दस्त पतला होता है परन्तु उमका जी भी मचलाता रहता है ॥

### वर्ण परीक्षा ।

घात रोगी अर्थात् जिन्हे वायु दोष से रोगोत्पन्न हुआ हो उसका शरीर रूखा, रंग धूमर, रोग वृद्ध में किञ्चित पीला होगा, पित्त रोगी का शरीर पीला तेल लगाया सरीखा, कफ रोगीका शरीर चिकना और स्वेत रंगका होता है मिश्रित रोगों में मिश्रित रंग जानना । किसी फिस्स का रोग क्यों न हो अधिक दिन बना रहने से शरीरका रंग पीला हो जाता है ॥

### स्पर्श परीक्षा ।

वायु दोष से रोगी का शरीर शीतल, कफ से शीतल और चिप-चिपा तथा पित्त से उष्ण होता है मिश्रित दोषों में मिश्रित जानना, ज्वर चाहे जिस दोष से हो परन्तु शरीर उष्ण ही होगा ॥

### आर्तव परीक्षा ।

स्त्रियों के द्वादश वर्ष वयस से ५० बत्सर पर्यन्त प्रतिमास में जरायु से योनि पथ द्वारा रज का रक्त निर्गत होता है स्वाभाविक मासिक रक्त का वर्ण शशा (सरगोस) के रक्त के समान अथवा लाही के रंग के भांति होता है विशुद्ध मासिक रक्त यदि बस्त्र में लग जाय तो धोने से छुट जाता है । प्रति मास के अन्त में चिकनहट, दाह, शूल बर्जित तीन दिवस स्थायी न बहुत अधिक न अति न्यून निःश्रुत आर्तव निर्दोष जानना, उपरोक्त प्रकार नियमित समय में मासिक न होने ही से स्त्रियों

को शारीरिक तो मानसिक विविध कष्ट दायक रोग उत्पन्न हो जाता है मासिक की शुद्धता से स्त्रियां आरोग्य प्रसन्न चित्त सब अङ्गों में बलवती बनी रहती हैं अतएव स्त्रियों के आर्तव का अनुसन्धान सर्वदा करना अत्यावश्य है ॥

### स्वप्न परीक्षा ।

यद्यपि यह बात बहुत सत्य है कि जाग्रत अवस्था में जो कुछ मनुष्य देखता सुनता है तज्जनित भासना निद्रा समय में वही प्रतीत होती है इससे स्वप्न कोई वस्तु नहीं है तथापि स्वप्न का फलाफल भी असत्य नहीं है । जो मनुष्य स्वप्न में देखे कि एक भयङ्कर मनुष्य अंगभंग शिर मुड़ाये लाल काले बस्त्र पहिने हाथमें फांसी या छुरी तलवार लिये किसी को मारता बांधता दक्षिण दिशाको लिये जाता है या चला जाता है, अथवा गद्दा कुंड भैंसा पर सवार है, तो स्वप्न दर्शक यदि आरोग्य हो तो रोगग्रस्त होय और रोगी हो तो मृत्यु को प्राप्त होय ॥

स्वप्न में ऊंचे से नीचे गिरा, जल में डूबा, अग्नि में जलता, विपत्ति में पड़ा, जलघर आदि के मुख में लीलता हुआ, दीपक और नेत्रों का नाश दीखे, य तिल या सुरा पिये, पकवान खावे, तिल या लोहा पावे, कुआं में गिरे, रसातल में चला जाय, कीचड़ में फंसे, नाचे नंगा हो कर लाल माछा शिर पर धारण करे, माता के गर्भ में प्रवेश करे ऐसे स्वप्न देखने वाला आरोग्य हो तो रोगी हो, और रोगी हो तो मृत्यु को प्राप्त हो । रात्रि के प्रथम प्रहर में स्वप्न देखने से उसका फल एक वर्ष में मिलता है, दूसरे प्रहर में देखने से ६ महीने में, तीसरे प्रहर में देखने से तीन महीने में और सूर्योदय वेला में स्वप्न देखने से दश राज में शुभाशुभ का फल मिलता है । दुस्स्वप्न देखने की शांति शास्त्रकारों ने इस भांति लिखा है, कि दुस्स्वप्न देख कर किसी से न कहे सबेरे स्नान करके वेद का पाठ करे । वेदाध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को स्वप्न और

तिल का दान देय तो दुस्स्वप्न नष्ट हो । यदि स्वप्न में देयता तीर्थस्थान मन्दिर राजा जीवित मित्र ब्राह्मण गौ यज्ञ देखे । तथा सैले जलमें पैरते अटारी पर्वत हाथी और घोड़ा पर चढ़ा दीखे एवं स्वप्न में शत्रु को जीते और स्वेत पुष्प भूक्ष्म बस्त्र मांस मत्स्य फल इत्यादि अगर रोगी दीखे तो आरोग्य हो, और सुखी दीखे तो धन प्राप्ति हो । जिन स्त्रियों का गमन (प्रसङ्ग) अयोग्य (दुर्लभ) है स्वप्न में उनसे गमन करे, मल लपेटा, मरता कच्चा मांस खाता और जोंक भवरी सर्प बिच्छू साखी इन्हें हमते देखे तो उन्नत है ॥

### दूत परीक्षा ।

चिकित्सक को इतनी बातों पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि जो रोगी का मनुष्य बुलाने को जावे तो उसकी चेष्टा, चिह्न, वर्ण, बस्त्र, वाद्य, समय, दिशा, वाहन, वेश तथा देश इत्यादि अच्छे प्रकार देख ले तथा रोग आराम करने को जावे, इनी से हठारे भूतपूर्व वैद्यों का यश अब तक दिखाता है ये लोग इन्ही लक्षणों से घर बैठे रोगी की दशा और साध्या साध्य बता देते थे ॥

यदि दूत (वैद्य को लेवा ले जाने वाला) सफेद बस्त्र पहिरे हुआ, गोरा स्वरूपवान, स्वजातीय, धीरज, बुद्धियुक्त, आभूषण पहिरे, मङ्गल पदार्थ हाथ में लिये पाप पयादे जपवा बैल घोड़े और पालकी पर सवार मन्तोषी और स्वतन्त्र तथा उपरोक्त लक्षण युक्त मनुष्य वैद्य को बुलाने को जावे तो वैद्य जान लेव कि रोग साध्य है और रोगी आराम हो सक्ता है । और वैद्य भी शुद्ध जगह पर पूर्वाभि मुख शान्ति रूप में बैठा हो । अङ्ग में पानीया युक्त मध्याह्न काल में अग्निमहीपण्य वैद्य के पास जाया हुआ दूत कल रोग के लिये श्रेष्ठ है, परन्तु पित्त रोगके लिये अशुभ जानना तथा रक्त पित्त शरीरार, प्रमेह और संप्रदोषी रोगमें जहां

पानी मन्था होय उस जगह पर दूत का मिलना श्रेष्ठ है, सुन्दर हवा चलते हुयेमें दूत जाया हुआ यातरोगी के लिये श्रेष्ठ है । पित्तरोगके वास्ते मयेरे, कफ रोग के वास्ते दोपहर को और यात रोग के वास्ते अर्धरात्रि को जाया हुआ दूत उत्तम जानना इससे अतिरिक्त अशुभ जानना ॥

### अशुभ सूचक दूत ।

बाल, बृद्ध, स्त्री देा तीन या चार मनुष्य एकट्ठे असभ्य बातें कहते नैश्रत्य आग्नेय अथवा दक्षिण से आते । शस्त्र पापाण भस्म हाड इनको हाथ में लिये तथा रोगी बहिरे दीन मलीन भूखे पिपासे पके अङ्ग हीन (काने इत्यादि) अधिक अङ्ग याले (छँगुणश्रादि) भ्रमित नेत्र विकार वाले (ऐँचाताने) मञ्जर आदि पर खवार कुंचेखर से बोलते भये पाखंडी लूले बोदे अङ्गयाले तिगका तोड़ते भये जलदी चलो २ ऐसे कहते हुये इत्यादि दूत निन्दित हैं इनके सङ्ग में बैद्यों को जाना योग्य नहीं है और भी अनेक लक्षण अशुभ दूतों के लिखे हैं ग्रन्थ बड़जानेके भय से नहीं लिखा ॥

### शरीर लक्षण ।

बुद्धिमान मनुष्यों को उचित है कि प्रतिक्षण अपने शरीर की समा-लोचना इस प्रकार किया करें कि जिन २ पदार्थों से शरीर स्थित है उन में से कौन २ से पदार्थ कम हो गये हैं कौन २ से बृद्ध हो गये हैं और कौन २ अपने मर्जादा पर हैं अर्थात् सम हैं । शरीर में असंख्य ऐसे २ आशय ईश्वर ने बना दिये हैं कि जिनके न्यूनाधिक होनेही से शरीर नष्ट भ्रष्ट होने का संभव है परन्तु विशेष कर यात पित्त कफ रस रक्त मांस मेद (चर्बी) मज्जा शुक्र धातु पुरीष (मल) मूत्र और पसीना और स्त्रियों के रज इन में जहाँ एक आध भी कमजादा हुये कि बिमारीआई इस लिये इनके सम रखने में सर्वदा चैतन्य रहै ॥



प्रत्येक देहधारी के छिमे वायु और अभ्यन्तर वायु की जड़रत है ऊपर की वायु जीव मात्र को चैतन्य रखती है और भीतर की वायु सब पदार्थों को गिज २ स्थानों में पहुँचा देती है क्योंकि ॥

पित्तपंगुकफःपंगु पंगवोमलधातवः । वायुनायत्रनोयन्ते  
तत्रगच्छन्तिमेधवत् ॥

पित्त कफ मल मूत्र रस रक्त आदि सातों घातु यह सब लंगड़े हैं वायु जहाँ इन्हें अपनी शक्ति से ले जाती है वहाँ वे मेघ के समान चले जाते हैं इसीसे वायु तीनों देहोंमें प्रचल है और सुश्रुतगदाशय जी ने वायु ही को प्राणियों के स्थित उत्पत्ति और विनाश का कारण माना है । वायुके प्रधान गुण सूक्ष्म शीतल रूत हलकी और चर है और शरीरके पाँच भागों में पाँच नाम से विख्यात है अर्थात् जो वायु मलाशय में है उसका नाम (अपान वायु) है अग्निस्थान में (समान वायु) हृदय में (प्राणवायु) कण्ठ में (उदान वायु) और सब शरीर में (ध्यान वायु) रहती है वायु के न्यूनधिक तथा कोप से सब विकार युत हो जाते हैं और वायु के शुद्ध रहने से सब शुद्ध रहते हैं ॥

वातक्षय के लक्षण सु० अ० २६ ।

वातक्षये मन्द चेष्टताल्पवाक्त्वमल्पहर्षो मूढ संश्रयाच । ज्व शरीर के भीतर की वायु कम हो जाती है तो ( मन्दचेष्टा ) शरीर ढोलो शिथिल और मन उदास रहता है अल्प वचन अल्प हर्ष संज्ञा नाश अर्थात् याद दास्त कम हो जाती है । पाठक गण ! सेवाय वायु बढ़नेके वायु का कम होना कम सुना होगा ॥

वात वृद्धि के लक्षण ।

वातवृद्धौत्वक्पापुष्यं काश्याकापुष्यं गात्रसफुरणं  
मुष्णकामिता निद्रानाशौल्पवलत्वं गाढवर्चस्त्वञ्च ।

वायु के अधिक हो जाने में खचा को परुपता कृशता सब शरीर फर-  
कना गर्मी की दृष्टा निद्रा नाश या निद्रा चषट जाना बल हीन और मल  
सूखा एवं थोड़ा होता है ॥

### वायु कोप के लक्षण ।

प्रायः बात प्रकृत वाले को कडुसा तीता कपायल रुच अन्न ( वाजरा  
यादि ) हिम अन्न (बासो चावल यादि) और सिरका खाने से उपवास से भय  
से कामदेव निकलने से बद्धत छल में पैरने से रुधिर निकलने से और वर्षा  
काल से अतिरिक्त दिनों में वाटर घेरे रहने से वायु कोप करता है । तब यह  
लक्षण होते हैं गिर कनपटी भौं छाती पीठ को रीर कमर हड्डो और जोड़ों  
में दर्द दिग्वा पेशाव कम होना पेटफूलना और बोलना जी घबड़ावे नींद न  
आवे नेत्रों में नशा सा बना रहै शरीर थकी और सूखी रहै इत्यादि उपद्रव  
होते हैं ॥

### वात प्रकृति के लक्षण ।

गिर के बाल महीन और कम शरीर दुर्बल तथा रुच बद्धत बकवाद  
करने वाला, मन चलायमान और आकाश चारी स्वप्न देखि तो वातप्रकृत छान-  
ना इस प्रकृत के मनुष्य विद्वान शास्त्रार्थ अधिक करता है और (सूख) डोकू  
एवं भागने वाला होता है और अस्त्र युद्ध में बड़ा बलवान होता है आजकल  
बद्धत कम शुद्ध प्रायु प्रकृति के लोग दिखलाई दिते हैं तांतियाभील जिस्का  
चर्चा प्रायः सम्वाद पत्रों में रहता है वे अक उसकी शुद्धवात की प्रकृति थी ॥

### डाक्टरी मत से वात प्रकृति के लक्षण ।

जिस्का शरीर दुबला मांसपेशी संपूर्ण कोमल औ पतला मुख खूबसूर-  
त केश साफ महीन और शलग २ एवं शरीर का रंग किञ्चित सुखीं लिधि  
सफ़ेद औठ पतला नेत्र उष्ण तीजे बिभिठ नाड़ी सूक्ष्म बेगवान मन के थोड़ी

सी वेगमें नाड़ी उत्तेजित हो जाय मस्तिष्क सद्यः समस्त स्थायुः पदार्थ गुण विविष्ट हो। स्थानात् वद्धत वद्धके ही अनुमान श्री कल्पनाशक्ति तीक्ष्ण प्र-  
थात् मज्जून बनाने में एकही हो विषय चिन्ता तथा किसी कार्य के लिये  
श्रीघ्नही तैय्यर हो जाय और सामान्य २ बातों में भी क्रोध अनाय तो उसे  
बातप्रकृति जानना । इस प्रकृति वाले को श्रेष्ठ द्रव्य खाने तथा सेवन से  
किसी प्रकार को पौड़ा आदि नष्ट होतो इसलिये अपनी प्रकृति शुद्ध रखनेके  
लिये बात प्रकृति वाला श्रेष्ठद्रव्य को सेवन प्रायः करे ॥

### वृद्धि तथा कोप वायुशमन, वर्ग ।

शरीर में तेल मर्दन करना तख्त पर सीना जपरी तेल चवा का बचा-  
ना गीता मार के स्थान करना फिर में तेल का पुवाड़ा देना, घो, नया उदं  
तिष्ठ गेहूं, मूंग, खाल धान, गुनगुना जल, गेंड़ा, सुभर, भैंसे, चिरण, सुर-  
गा, मंगर, कछुआ, रोहमछलो, आदि, जीर्णोंके मांस, गीमूत्र, पियाज, ल-  
हसुन, सुनझा, पका आम, आवला, भीठा अनार, कौया, जड़, पका ताड़ का  
फल, चिनी गौ का दूध, सैधव नैन, इत्यादि गुण वेदों ने पथ्य कहा है ॥

### पित्त ।

रस का रक्त करना प्रधाना समर्थ तेज बुद्धि उष्णता कारक पित्त है  
सा पांच-भेद से अग्नि कर्म करता है । प्रधान गुण पित्त के गर्भ हैं और  
पतला पीला नीला सत्तागुणों एवं रस उसका कटु है तीता है और ज-  
लने से सड़ा हो जाता है । शरीर के पांच स्थानों में रह कर पांच कर्म  
करने से पित्त का पांच नाम है पाचक, भाजक, रंजक, आछाधक, और  
साधक जो पित्त अग्नि के स्थान में अन्न पचाने के लिये रहता है सो  
जगिन से भी अधिक तेज और बिके तिल के समान है किसी २ ग्रन्थों  
में लिखा है कि शारी शरीर में अर्थात् एस्ती-जंठ आदि जीर्णोंके शरीर  
में कुछ बढ़ा है परन्तु मनुष्य-मात्र के शरीर में देश कालानुसार किञ्चित्

न्यूनाधिक तिल के समान है एवं कीट पतंगादिकों के शरीर में रोमाय सम होता है । सो पित्त का नाम (पाचक) है । जो पित्त तेल उषटन आदि जिह्व में लिपटे हुये पदार्थों को अपनी शक्ति से शोष लेता है उसका नाम (भ्राजक) है । और जो रस को रक्त बनाता है उस पित्त का नाम (रंजक) है । जो पित्त नेत्रों में रह कर रूप दिखाता है उसका नाम (जालोचक) है । और बुद्धि तथा धारणा चैतन्य रखनेवाला हृदय निवासी पित्त को (साध्यक) कहते हैं । पित्त के भी कम जादा और कोप से शरीर नाशक हैजा आदि उपद्रव खड़े हो जाते हैं ॥

### पित्तक्षय के लक्षण ।

“पित्तक्षये मंदाग्निता निष्प्रभत्वंच”

पित्त के कम हो जाने से अन्तम में मन्द गरमी और प्रभा नाश होते हैं ॥

### पित्त वृद्धि के लक्षण ।

पित्तवृद्धौ पित्तावभाषिता सन्तापः श्रौतकामित्व मल्प-  
निद्रता मूर्च्छा बलहानिरिन्द्रियदौर्बल्यं पीतविण्मूत्रनिवृत्तत्वंच ॥

पित्त के बढ़ जाने में शरीर का रंग पीला हो । जलन शीतल पदार्थों का चाहना अल्प निद्रा शिर में घुमरी और आंखों के सामने अंधियारा हो जाना बल हानि इन्द्रिय दुर्बल एवं नेत्र और मूत्र पीलेहों ॥

पित्त के कोप करनेवाले वर्ग ।

तिल शिरका शराब दही मखली बहुत तेज और गरम द्रव्य अति

सो बेगमें नाड़ी उत्तेजित है। जाय मस्तिष्क सब समस्त स्नायु, पदार्थ गुण विप्रिष्ट हैं। खालात बद्धत बढ़के हैं। अनुमान भी कल्पनाशक्ति तीक्ष्ण अर्थात् मज्जमून बनाने में एकही है। विषय चिन्ता तथा किसी कार्य के लिये शीघ्रही तैय्यर है। जाय और सामान्य २ बातों में भी क्रोध अजाय तो उसे वातप्रकृति जानना । इस प्रकृति वाले को शैत्य द्रव्य खाने तथा सेवुन से किसी प्रकार को पौड़ा आदि नष्टों हेतो इमलिये अपनौ प्रकृति शुद्ध रखनेके लिये वात प्रकृति वाला शैत्यद्रव्य का सेवन प्रायः करे ॥

### वृद्धि तथा कोप वायुशमन, वर्ग ।

शरीर में तेल मर्दन करना तख्त पर सेना ऊपरी तेज हवा का बचाना नीता मार के खान करना फिर में तेल का पुचाड़ा देना, घो, गया उद तिल गेहूं, मूंग, लाल धान, गुनगुना जल, गेंड़ा, सुपर, भैंसे, चिरण, सुरगा, मंगर, ककुशा, रेहमखल्लो, आदि, जौधोंके मांस, गीमूत्र, पियाज, लहसुन, सुनझा, पका आम, भावला, मोठा अनार, कैया, हड़, पका ताड़ का फल, चिनी गौ का दूध, सेंधव नैन, इत्यादि गुण वेदों ने पथ्य कहा है ॥

### पित्त ।

रस का रक्त करना पचाना समर्थ तेज वृद्धि उष्णता कारक पित्त है। सो पांचभेद से अग्नि कर्म करता है । प्रधान गुण पित्त के गर्म हैं और पतला पीछा नीला सतोगुणी एवं रस उसका कटु है तीता है और जलने से खट्टा है। शरीर के पांच स्थानों में रह कर पांच कर्म करने से पित्त का पांच नाम है पाचक, आंगक, रंजक, आठोचक, और साधक जो पित्त अग्नि के स्थान में जल पचाने के लिये रहता है सो अग्नि से भी अधिक तेज और निर्भे तिल के समान है किसी २ ग्रन्थों में लिखा है कि भारी शरीर में अर्थात् हस्ती कुंड आदि जीमोंके शरीर में कुछ घड़ा है परन्तु मनुष्य मात्र के शरीर में देश कालानुसार किञ्चित

करने से पित्त मिश्रित घमन हाथ पेट एवं पैर में जलन कभी २ खट्टी प्रकार जाने लगती है इसलिये उसे उपवास अथवा अधिक काल भिता कर भोजन करना अतीव अकर्तव्य है और अग्नि सेवन अथवा अग्नि के निकट भी न रहना चाहिये । ऐसे लोगों को दुग्ध सेवन अति श्रेयस्कृत है ॥

### वृद्ध तथा प्रकोप पित्त के शमन कारक वर्ग ।

घी, दूध, मिश्री, मक्खन, खोषा, सफेद पुरानाघावल, गेहूं, अरहर, चना, मूंग, जौ, मसूर, यासी माड़, धान का लावा, केला, कटहर, खीरा, मुनक्का, कोमल परधर, कुम्हड़ा, ककरो, करेला, अमर, भावला, कोमल ताड़के फल, छुहारा (औषधवर्ग) त्रिफला, पित्तपापड़ा, सताधरी, कुटकी, गोंध, निसेात, चन्दन, (बिहार) अच्छा शीतल बाग कुवारी का घर केशा और कमल के नवीन पत्तों की सेज कपूर और स्वेत चन्दनका लेप मित्र का मिलना प्यारी घातें तथा मनोहर रागों का सुनगा अच्छे नाच का देखना मन्द पयन जल का छिरकना चन्द्रमा की ज्योत्स्ना और नाना प्रकार की शीतल मिथि यह वर्ग पित्ताधिकारियों के लिये पथ्य कहा गया है ॥

### कफ ।

संधि बंधन शरीर में स्निग्धता रोपण, पूर्ण बल स्थिरता कारक कफ है पांच भेद से जल कर्म करता है । कफ का प्रधान गुण चिकना भारी स्वेत लसलसा ठंडा और मधुर है । परन्तु मिगड़ जाने पर चुनखरा हो जाता है कोई २ कफ को इलका कहते हैं इसलिये कि पानी पर तिरता है । इसका कारण यह है कि कफ स्निग्धता करके पानी में प्रवेश नहीं करता वास्तवमें गुरुही है । आमाशय माया कण्ठ हृदय और संधि इन्हीं पांचों स्थानों में कफ क्रमशः पांच नाम से (लेदन, रमेहन, रसन, अथ-

खटा, क्रोध घाम और अग्नि का भेगन (घ्रत) उपवास और जिन द्रव्यों के सेवन से दाह है। प्रायः इनसे पित्त क्रोषित हो जाता है ॥

### पित्त-कोप के लक्षण ।

घुमरी अन्तर दाह सूखाँ दस्त पतना पसीना त्वचा (गर्भ) में जलन जान तान बकना मुख नेत्र दिशा पेशाय और नख पीले नेत्र में नशा पियास मुख का स्वाद तीता अपवा खटा हो और सगस्त शरीर पके कोड़े के समान दूखें इत्यादि लक्षण पित्त कोप में होते हैं ॥

### पित्त प्रकृति के लक्षण ।

लघु शरीर बुद्धि तीव्र अधिक क्रोध पसीना अधिक शरीरसे निकले स्वप्न में अग्नि आदि तेज पदार्थ दीखे अकाल पछित अर्पात् बाल जल्द पकजाना साधारण लक्षण यह पित्त प्रकृत-वाले मनुष्य की जानना ॥

### डाक्टरी मत से पित्त प्रकृति के लक्षण ।

जिसका शरीर न अति स्थूल और न अति ह्रस्व । सांस पेशी सकल अधिक सख, उग्र मूर्ति, मुख श्री तेजस्वी एवं मुख मण्डल आंतरिक भाग प्रकाशित (दमकता हुमा चेहरा) बाल कड़े और काले नेत्र कृष्ण वर्ण कटीले, शरीर श्याम वर्ण रक्त घाही गाड़ी अधिक विस्तृत एवं शरीर के ऊपर भाग में रमें दृष्टिगोचर हों । स्वभाव समका अनेक गुण विशिष्ट क्या शारीरिक क्या मानसिक कार्य में दृढ़ प्रतिष्ठ हो उसे पित्ताधिक्य अथवा पित्त प्रकृति जानना ॥

इस प्रकृति के मनुष्य को प्रायः पांडु यकृत (लीवर) अजीर्ण रोग हो जाता है शरारत आदि नशे की यस्तु सेवन से रक्त प्रकृति के समान स्वभाव हो जाने का सम्भव है । प्रायः इस प्रकृति के मनुष्यों को घ्रत

दस्त, खजुरी और अमचि, खाना अच्छा न लगे, जिह्वा में कफ लपटा सा रहे जाड़ा लगे पेट भरा सा रहे मुख का जायका नमकीन और मुख की रंगत मफेद इत्यादि लक्षण होते हैं ॥

### कफ प्रकृति के लक्षण ।

मोटी बुद्धि स्थूल शरीर चिकने केश महाबल और स्वप्न में जल आदि वस्तुओं का अधिक देखे इत्यादि साधारण लक्षण कफ प्रकृति वाले कं होते हैं । शरीर का वर्ण पृथ्वी वर्ण निर्भर है जहां जैसा पृथ्वी का गुण होता है वहां वैसेही रंग वाले जीव होते हैं बात पित्तादि प्रकृति के अनुसार जो केषित आचार्यों ने शरीरके रंग का वर्णन किया है सो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता है क्योंकि जैसे बिलायतके मूसा आदि जीव सभी गौरांग होते हैं काश्मीर पंजाब आदि स्थल के भी जन प्रायः गारे होते हैं मद्राज के लोग मात्र काले होते हैं परन्तु प्रकृति भिन्न २ हैं तो हमसे स्पष्ट है कि त्वचा की रंगत पृथ्वी के गुण से बनती है ॥

### डाक्टरों मत से कफ प्रकृति के लक्षण ।

जिसकी शरीर मोटी और गोल मांसपेशी समस्त कोमल बाल नेत्र और शरीर श्याम वर्ण ओठ गारे रक्त बाही नाही सूक्ष्म और रक्त संचालन अल्प बोड़े शीत्य द्रव्य के सेवन से भी अङ्ग में दर्द होने लगे शरीरक वा मानसिक क्रियां शक्ति मृदु अथवा माधुर्य हो इत्यादि उसे कफ प्रकृति जानना ॥

कितने लोगों को सुरादि सादनक द्रव्य के सेवन से हृष्ट पुष्ट होते देखा गया है उसे भी कफ प्रकृति कहना चाहिये कारण यह है कि जिस की कफ प्रकृति है उसे अधिक नशा पान भी प्रयत्नतः हानि कारक नहीं



उम्बन, और श्लेष्म) स्थित हो शरीर को पुष्ट-रखता है निम्न प्रकार तेल चरबी आदि के संयोग से रथ की पहिया चलती है वैसेही कफ के संयोग से शरीर की हड्डियां स्नायु आदि बिना श्रम फिरा करती हैं ॥

### कफक्षय के लक्षण ।

श्लेष्मक्षये रुक्षतान्तर्दाह श्यामाशये तराशयशिरसां । शून्य-  
तासन्धि शैथिल्यं तृष्णा दौर्बल्यं प्रजागरणञ्च ॥

कफक्षय में रुक्षता अन्तर्दाह आमाशय अन्तराशय और शिर शून्य मालूम हो जोड़ जोड़ ढीले पियान शरीर दुर्बल निद्रा नाश यह लक्षण होते हैं ॥

### कफ वृद्धि के लक्षण ।

श्लेष्मवृद्धौ शौक्ल्यं शैल्यंस्थैर्यं गौरव भवसादस्तन्द्रानिन्द्रा-  
सन्ध्यस्थि विश्लेषश्च ॥

कफ के बढ़ने से मल मूत्र नेत्र और श्रंग में सफेदी शरीर में ठंडक और भारीपन, निद्रा अधिक, संधियां शिथिल उबकाई मुख से लार का गिरना ये लक्षण होते हैं ॥

### कफ कोप कारक वर्ग ।

दूध दही भारी नया और शीतल अन्न और शीतल जल अजीर्ण भोजन अति खट्टी बस्तु अति बैठना घी तिल मछली दिन के सोना इत्यादि वर्ग कफ को क्रोधित करते हैं और बसंत ऋतुमें तो अवश्यही ॥

### श्लेष्म कोप के लक्षण ।

शरीर भारी त्यचा जोदा शोष आलस्य अधिक निद्रा अधिक गाढ़ा

दस्त खजुी और अरुचि, खाना अच्छा न लगे, जिह्वा में कफ लपटा सा रहे जाहा लगे पेट भरा सा रहे मुख का जायका नमकीन और मुख की रंगत सफेद इत्यादि लक्षण होते हैं ॥

### कफ प्रकृति के लक्षण ।

मेाटी बुद्धि स्थूल शरीर चिकने केश महाबल और स्वप्न में जल आदि वस्तुओं का अधिक देसे इत्यादि साधारण लक्षण कफ प्रकृति वाले क होते हैं । शरीर का वर्ण पृथ्वी पर निर्भर है जहां जैसा पृथ्वी का गुण होता है यहां वैसेही रंग वाले जीव होते हैं यात पित्तादि प्रकृति के अनुसार जो केचित आचार्यों ने शरीरके रंग का वर्णन किया है सो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध नहीं होता है क्योंकि जैसे बिलायतके सूसा आदि जीव सभी गौरांग होते हैं काश्मीर पंजाब आदि स्थल के भी जन प्रायः गारे होते हैं मद्राज के लोग मात्र काले होते हैं परन्तु प्रकृति भिन्न २ हैं तो इससे स्पष्ट है कि त्वचा की रंगत पृथ्वी के गुण से बनती है ॥

### डाक्टरी मत से कफ प्रकृति के लक्षण ।

जिसकी शरीर मेाटी और गोल नांसपेशी समस्त कोमल बाल नेत्र और शरीर श्याम वर्ण ओठ गारे रक्त आही नाही सूक्ष्म और रक्त संचालन अल्प थोड़े शैत्य द्रव्य के सेवन से भी अङ्ग में दर्द होने लगे शरीरक या मानसिक क्रियां शक्ति मृदु अथवा साधूर्य्य हो इत्यादि उसे कफ प्रकृति जानना ॥

कितने लोगों को सुरादि सादनक द्रव्य के सेवन से हृष्ट पुष्ट होते देखा गया है उसे भी कफ प्रकृति कहना चाहिये कारण यह है कि जिस की कफ प्रकृति है उसे अधिक नशा पान भी प्रयत्नतः हानि कारक नहीं

होता परन्तु कफशः कफ को गूठ कर के अन्त में शरीर को भी गूठ कर देता है, इस लिये कफ प्रकृत विशिष्ट जन कदापि सादक द्रव्य सेवन न करें । ऐसे मनुष्य को जाड़े के दिनों में और वर्षा काल में कालौन का कपड़ा पहनना और साग सखेरे चाय पीना चाहिये और अन्न, दधि, माठा, घानी अन्न इत्यादि शैत्य कारक द्रव्य सेवन न करना चाहिये ॥

जिस प्रकार से हमारे वैद्यक शास्त्र में दो दोषों के लक्षण मिलनेसे द्वन्द्व प्रकृति कहा है और तीनों के लक्षण मिल जाने से त्रिप्रकृत कहा है उसी प्रकार डाकूरी में भी कहा है भेद इतनाही है कि हमारे यहां सिर्फ तीन प्रकृति प्रधान रक्खा है डाकूरी में चार अर्थात् एक रक्त, प्रकृत और भी कहा है जिसे नीचे लिखे देते हैं ॥

### रक्त प्रकृति के लक्षण ।

जिसका शरीर स्थूल या कृप हो बाल कड़े नेत्र नील वर्ण मुख चमकीला सुन्दर गुलाब के पुष्प के भाँति, चमड़ा कोमल और पतला नाड़ी वेगवान भी पूर्ण रक्तवाही नाड़ी त्वरित वेग से रक्त सञ्चालन, मनोवृत्ति सकल शीघ्र उत्तेजित और मन की गति स्थिर ओं चञ्चल हो उसे रक्त प्रकृति कहते हैं । जिस प्रकार खेत में बीज डालने से शीघ्रही अंकुर निकल जाते हैं तद्वरूप मद्यादि पान करने का फल इस प्रकृति वाला प्राप्त करता है और विचारी स्त्री को पुत्रादिकों से अनाथ कर अनति काल मध्य मेही जाय भी देह भाव से विमुक्त होता है । इस प्रकृति वाले को मद्य पान अति भोजन अत्याधिक स्त्री सङ्ग्राम करने से प्रायः सन्निवृत्त बलवान दाहुरोग और रक्त आधादि रक्तदोग हो जाता है ॥

### विचित्र प्रकृति ।

इस प्रकृत के तीन प्रकार के मनुष्य हैं प्रथम—जिसे पारद घटित बीषध अस्य परिमाण अर्थात् एक रक्ती भी खा लेने से मुख आ जाता है

अपवा मुख से राख बहने लगता है और उतनाही पारा या उस से कुछ अधिक भी खा लेने से दूसरे को कुछ भी नहीं होता ॥

द्वितीय—कितने लोग संसार में ऐसे देखने में आये हैं कि जिसे म-  
ण्डी अजा आदि का मांस फल और शाग प्राप्त खाने से अजीर्ण रोग हो  
जाता है और किसी २ को जिल्द की बيمारी हो जाती है ॥

तृतीय—और कितने ऐसे स्वभाव के मनुष्य हैं जिन्हें चारक औषध  
अर्थात् अजीर्ण खाने से विरेचक गुण याने दस्त आता है एवं विरेचक  
औषध ( एक्सम् साल्ट ) के खाने से मादक गुण याने नशा करता है ।  
ज्वरग्र औषध ( कुनाइन ) के सेवन करने से मुख मध्य में जो अन्यान्य  
स्थान में भी घाय हो जाता है । इसी प्रकार हर एक प्रकृत के लोग हैं  
कि एकाएकी अल्पज्ञ चिकित्सक प्रायः चीन्ह नहीं सक्ता इसी दोष के  
परिहार के लिये सरकार ने एक २ पारिवारिक चिकित्सक नियुक्त  
कर दिया है ॥

### श्लेष्म कोप वृद्धादि हारक वर्ग वैद्यक से ।

बमन लंघन आंखों में अङ्गुन देना स्त्री प्रसंग शरीरमें उबटन और  
रोल का नर्दन करना पानी कम पीना दांतून और कुल्ला देर तक करना  
हांथी घोड़े की सवारी अधिक कपड़ा पहनना अधिक परिश्रम तथा मार्ग  
चलना फुस्ती लड़ना नाश लेना गरम द्रव्य अधिक खाना पुराने घान  
साठी के घान चना सूंग कुरथी गरम पानी मरु देश के जानवरोंके मांस  
राई बैंगन गूलर लहसुन पिआज परवर केले का फूल अमीरुन्द नींबू  
कुटकी निसेत शहद का शरबत पीना जरा २ वा मद्य पीना त्रिफला  
का सेवन गो मूत्र अच्छा गरम घर इत्यादि गुण कषाधिकारियों के लिये  
हित कथा है ॥

## लक्षण ।

डाक्करी मत से प्रति उष्णधातु यह प्रकृति भी पित्ताधिक्य प्रकृति के भांति जानना सिर्फ इतना ही फर्क है कि इस प्रकृति वाले मनुष्य के चित्त में सर्वदा ( जो स्वप्नवत है ) अनेकानेक विषय प्राप्त होने की इच्छा उठा करती है और किसी कार्य की स्थिरता नहीं रहती जिसको क्षणिक बुद्धी कहते हैं इस प्रकृति के मनुष्य प्रायः पागल हो जाते हैं और गांजा चरस अफीम इत्यादि मादक द्रव्य सेवन करने से तो पागल होने में कुछ विलम्ब न जानना चाहिये ॥ :

जिसका जैसा शरीर का रूप रंग होता है वैसाही रोग भी उसे होते हैं जैसे जिसका मुख सुन्दर गोल, दात विकने और भिन्न भिन्न नेत्र सबुज आकाश वर्ण नेत्र पलक दोष, और जपर का मोठ स्थूल होने से प्रायः गण्ड-माला रोग होता है और जपर के समस्त लक्षण युत सिर्फ जपर के मोठ पतला होने से क्षयकाय होने का सम्भव है । और छाती दीर्घ मुख श्री सुन्दर, मोठ पतला और संघिस्थान के छोटी (गठोली शरीर) होने से मनुष्य बलवान होता है, और जिसकी छाती छोटी, मुख गोल, जपर के मोठ लंब संघि सकल बड़े होने से शरीर दुर्बल और कमजोर होता है ॥

श्री बाबू गिरने अनियमिताहार से आयुक्षय का कारण देखलाया है जो लोग बड़े बादमी हैं अर्थात् धन सम्पन्न हैं खाना पीना कपड़ा पहनना आदि उत्तम है, अनेक नौकर चाकर लगे हैं सेवाय नौकरों के क्या शारीरक क्या मानसिक किसी प्रकार का परियम नहीं करते केवल अनर्थ कारी आमोद प्रमोद एवं बह्विध सुखद सामग्री पान भोजन तथा अहोरात्र सेवना या नाच मुजरा देखना इत्यादि ऐसे मनुष्यों का जीवन थोड़े ही काल में अपने स्थान को त्याग देता है और जितने दिन वधा भी रहता है तो आरोग्य नहीं रहता है । संसार के देखने से पाया जाता है कि खिती करने वालों का सामान्य खाना पीना पहनना रहता है, वर्षा में भीजते हैं श्रीपत्तनों में धूप

सहते हैं तो भी आरोग्य और दीर्घ स्थायी होते हैं । शरीर तल्लभ चिकित्सक मर्यादों का परोक्षित कथन है कि खित्तिहारों की अपेक्षा बड़े मनुष्यों का जीवन काल अल्प और बड़े आदमियों की अपेक्षा राजा वा राजपरिवारस्य लोगों का जीवनकाल अति अल्प होता है । यह शरीर मानिन्द घड़ीके ही अगर घड़ी बन्द कर रख दिया जाय तो थोड़े ही काल में मरणा लग कर तमाम पुरजे खराब हो घड़ी सत्यानाश हो जाय गो वैसाही इस शरीर से बल के अनुसार काम न लेने से शरीर सत्यानाश हो जाती है परन्तु शक्ति से अधिक काम लेने में बही होता है ॥

### वीर्यज दोष ।

जिस प्रकार सन्तान पिता के धन आदि के उत्तराधिकारी ( पानेवाला ) होता है वैसाही माता पिता के रोगों का भी अधिकारी होता है । जिस के गण्डमाहा, क्षय, काश, खास कुष्ठ गठिया मृगी, लग्नाद वज्रमूत्र गरमो और प्रमेह होती उसके सन्तान के भी वही रोग होगा, कुष्ठादि रोग तो तोन पुस्त तक होता है, हिताहित विवेक शून्य पुरुष इन्द्रियापभोग में प्रवृत्त हो शरीर को नाग प्रकार के रोगों से असखी करते हैं और जो सन्तान उत्पन्न होता है उसे भी रोग भोगना पड़ता है ॥

अथ रस रक्त मांस मेद घृष्टी मज्जा शुक्र पुरीष मूत्र और स्वेद (पसोना)  
इन के घट बढ़ जाने के लक्षण । सुश्रुत सूत्र स्यान् अ० । १५ ॥

रसक्षये हृत्पीडा कम्पशून्यता तृष्णा च रसीऽति ।  
हृदयोक्तेदं प्रसिक्छापादयति ॥

आहार पच कर जो कुछ प्रथम शरीर में बनता है उसे रस कहते हैं वह रस कम हो जाने से छाती में दर्द कम्पन अह शून्य और पियास लगती है और बढ़ जाने में बमन और मुख से लार बहता है ॥

शोणितचयेत्वक् पारुष्यमम्लशीतप्रार्थना । सिराशैथिल्य-  
श्च रक्तारक्ताङ्गाचतांसिरापूर्णत्वञ्च ॥

शरीर में लोह के कम होने से चमड़ा सूखा खटा जायका शीत पदार्थ को चाप शीर नस ढीले हो जाते हैं रक्त वृद्धि में नसें लाल फूलो हुई तथा शरीर शीर आंख भी लाल होते हैं शोष यत्र न होने से जिल्द की विमारी हो जाती है जैसे सूजन दाह जलन बदन में फोड़े फुग्वी शरीर का रंग काला होजाना वात रक्त कोढ़ पौलपाव गण्डमाला दैह दुर्गन्ध यकृत प्रोक्षा विषर्प आदि । शरीर में रक्त एक प्रधान वस्तु है डाक्टरों ने अनुमान किया है कि जवान मनुष्य के शरीर में ८ पौंड ( ४ सेर ) से १० पौंड ( ५ सेर ) पर्यन्त रक्त शरीर विषय में है । शैयुन भलेगटोन साहब ने लिखा है कि पुरुष के शरीर में ३४॥ पौंड ( १७ सेर ) और स्त्री के शरीर में २६ पौंड ( १३ सेर ) रक्त है । रक्त का वजन जल को अपेक्षा कुछ भारी है रसायन विद्या के जानने वाले विद्वानों ने इस प्रकार तुलना किया है । एक पात्र में जल भरो यदि वजन में १० तोला हो तब उसी परिमित गन्धक का तेजाव भर कर वजन करने से १८॥ तोला होगा और उतना ही तेल भर कर तीले तो सिर्फ ८ तोला ( अर्थात् तेल पानी से हलका है यही कारण है जो तेल जल के ऊपर रहता है ) इस वजन को अंगरेजी में विशेष वजन कहते हैं । जिस पात्र में जल का विशेष वजन १००० तोला या रक्त होगा उसमें उतना ही रक्त १०५५ होगा विद्या की भी क्या महिमा है अणु से पर्वत तथा जीव से ब्रह्म पर्यन्त कौन सी ऐसी वस्तु है जो विद्या से न जानी जाती हो । जिस प्रकार डाक्टरों ने शरीर को गरमो सरही नापने को ताप मान यंत्र ( थर्मोमीटर ) निकाला है वैसाही जसोय द्रव्य का लघुत्व गुरुत्व जानने के लिये एक यंत्र बनाया है उसके भी अधोभाग में पारद है और नल में चिन्ह बने हैं तेल जल सुरा रक्त आदि कोई द्रव्य वस्तु हो उसमें डाल तत्क्षण वजन कर लिया जाता है डाक्टरों मत से रक्त के १००० भाग में ३ अति गाढ़ो वस्तु ( अण्डा ) है, १२७ भाग कण है, खर्दबीन के देखने से यह वस्तु वज्रत सो

छोटी २ नजर आवैगी इन में से बहुत सो सुखरंग को और सफेद रंग की है जो सफेद रंग को चोले हैं उनको सूरत दरबक्त बदला करती है और उक्त दोनों कर्णों में और चोले भी हैं जैसे नैट्रोजन हैड्रोजन आक्सीजन कोयला गन्धक लोहा आदि । ८० भाग लवणांश अर्थात् निमक का अंश है और ७५० लवण का अंश है परन्तु शरीर रोगाभिभूत होने से पूर्वोक्त तौल का न्यूनाधिक हो जाता है ।

### रक्त संचालन ।

शरीर के मध्य में ऐसा कोई स्थान नहीं है कि जहाँ रंगों के द्वारा रक्त न गहता हो । शरीर के किसी स्थान में सूक्ष्म सूची (सुई) द्वारा बिंदु (छेदन) करने से सब नाड़ियों से रक्त पात होता है इस से स्पष्ट होता है कि रक्त ही समस्त अंगों प्रत्यंगों को गिन्दा रखता है इसलिये पाठकगण को उचित है कि रक्त शुद्ध तथा सम रखने में अधिक दृष्टि करें । रक्त समस्त स्नायु शिराओं से घूम कर दिख में जाता है जिसका घृतांत बहुत है परन्तु इन स्थल में इन साधारण तौर पर घमान किये देते हैं । आदमी का दिल याई छाती से दो या तीन अंगुल नीचे रहता है (वैद्यक में इसे हृत्पिण्ड अथवा शोषक यंत्र कहते हैं) और किसी किसी का दिल दहिनी तर्फ भी देखने में आया है परन्तु बहुत कम । दिल के नजदीक कान लगाने से आवाज सुनाई देती है । इसी आवाज को हात्तर लोग लकड़ी का चोंगा लगा कर कान से सुनते हैं, दिल से सिर्फ यह बात जाहिर हो सकती है कि रक्त का गमनागमन कम जादा या रुक तो नहीं गया है क्योंकि दिल व शरीर रोगाक्रांत होने से जो स्वाभाविक शब्द बदल जाता है वह शब्द कैसा है सेवाम शबरई के दूसरे में सामर्थे नहीं है कि कह सके, दिल में से जो शब्द बोध होता है वह दिल के फेने और निकुड़ने से, कारण यह है कि जो दिल में घूम आता है तब निकुड़ जाता है और फेलेसे रक्त बाहर निकल जाता



है इसी से दिल एक २ किया करता है । जो रक्त छोटे बड़े रगों में सं-  
 चालन करता है वह रक्त प्रायः १ मिनट में १५० फुट पर्यन्त वेगवान है  
 इसी प्रकार जो रक्त मम रगों से धूम कर दिग में जाता है उसके जाने  
 जाने में दिल एक रात दिन में १००००० एक छत्र धारसे कुछ अधिक धार  
 भी संकुचित ओ प्रसारित होता है । और जितनों का मत है कि एक  
 मिनट में दिल ७० धार कड़कता है तो इस हिसाब से प्रति घण्टा ४,२००  
 धार एवं ४ से १ पल लक्ष ८ सौ धार होता है । यह काम या यज्जीवन  
 पर्या जाग्रतावस्था पर्या स्वप्नावस्था सुषुप्तवस्था कोई अवस्था पर्यो न हो  
 कभी बन्द नहीं होता दिन रात में धाम हृदय से इतना रक्त यद्दिगंत  
 अर्थात् निकल कर रगों में जाता है कि जिस के सुनने से एक शयम्भरा  
 मालूम होगा । अयुर्वेद पित विद्वानों ने निरूपण किया है कि जिस स-  
 मय प्रायः १३०० तेरा हजार पीयूष रक्त हृदय से भाएर हो तब जाके सब  
 शरीर में व्याप्त होगा । यदि प्रतिघार न्यूनाधिक १॥ श्रौंष (४॥१) तोला  
 परि मित रक्त हृदय से यद्दिगंत हो तब १००००० धार में १५१२०० औंस रक्त  
 होता है उसे १२ से भाग देने में १२६०० पींड रक्त होगा । इतना रक्त  
 जो अहो हृदय के भीतर है सो नहीं सिर्फ दिया रात्रि में इस कदर रक्त  
 का गमनागमन होता है । डाक्टरों का मत है कि रस से रक्त धन प्रथम  
 हृदय में जा तब ममस्त आशय और नाड़ियों में जाता है और सुश्रुनादि  
 ऋषियों का मत है कि "सखलवापोरसेा यरुतस्त्रीहानी रागमुपैति" जल  
 मय रस यकृत स्त्रीह्रा में जाकर रक्तभाय को प्राप्त होता है । श्रीमान्  
 पं० भयदत्त शास्त्री जी ने इन से प्रण्य किया कि रुधिर लाल वर्ण पर्यो  
 होता है ? (उ०) रसायन विद्या से इस प्रकार सिद्ध होगा कि रस शय  
 पित्त की तेज से पचता है तो कुछ अम्लभाव को प्राप्त होता है पुनः ग-  
 मनागमन की परिश्रम से गर्म हो कर रस लाल वर्ण हो जाता है वैसे  
 अंगूर जामुन इंसु आदि का रस प्रथम मधुर धूमिल रहता है तीन दिन  
 याद सहा अन्तमें तेज और लालरंग हो जाता है सुश्रुनकार ने लिखा है ॥

विस्त्रताद्रवतारागः स्पन्दनंलघुगारागः । भूम्यादीनांगुणा  
 क्षते दृश्यन्तेचाचश्राणिते ॥

अर्थात् रक्त में गन्ध ये पृथ्वी का गुण है, गीलापन जलका लालरङ्ग  
 अग्नि का गुण, घोड़ा गन्धल वायु का गुण और लघुना आकाश का गुण  
 है ये पञ्चभूतके गुण रक्तमें देताहैंदेतेहैं । एक यहमात प्रायः लोहोंके मुल  
 से सुनने में आती है कि ४० वर्ष के पश्चात् रक्त का घनना बन्द होजाता  
 है परन्तु आज तक मुझको किसी ग्रन्थ में यह लेख नहीं मिला यदि  
 किसी महाशय को मिला हो तो कृपा करके मुझे लिखें अति धन्यवाद  
 दूंगा । स्त्रियों के विषय में तो सुश्रुत का यह बचन मिलता है ॥

रसादेवस्त्रियारक्तं रजःसंज्ञम्पूवर्त्तते । तद्वर्षाद्विशाटूर्द्धं या-  
 त्तिपञ्चाशतःक्षयम् ॥

रसही से स्त्रियों का रक्त रज संज्ञक ( मासिकधर्म ) होता है सो  
 पारह वर्ष के ऊपर प्रगृहति और पञ्चाश वर्ष से क्षय हो जाताहै । अर्थात्  
 रक्त घनना बन्द हो जाता है ॥

## अन्भूत औषधियां ।

खिजाव ।

भूजा हुआ माजू जल ६ तोला, संगरामिख ( यह तांबे का मेल है  
 बनियों के दूकानों में मिलता है चिपटाकार टुकड़ा सा होता है वैसेही  
 लोहे का भी होता है परन्तु तांबे का अच्छा हाता है ) ६ मासा, नौसा  
 दर ४ मासा, तूतिया २ मासा, सेंधा निमक २ मासा इन सब को खरल  
 करके घोटल में रख लेय (माजू भूंगने की विधि) चूल्हे पर एक लोहेका  
 घरतन चढ़ाय उसमें छिद्र रहित माजू फल को रख नीचे धीमी आंच देय  
 माजू फल से धुवां निकलना आरम्भ होगा जैसाही धुवां बन्द हो फौरन

तबे से निकाल किसी घरतन से टांप देय जिस से राख न होने पावे रंग काला हो जायगा । "खिजाय लगाने की विधि" लगाने के छः घंटे पूर्व ही घोड़ी सी छाटी हरेँ की कुचल कर एक मिट्टी के घरतनमें भिजा देय बरू लगाने के रसी हरेँ के जल में उक्त घूर्ण की एक लोहे के पात्र में लोहे के छंटे से घोंट कर बालों में लगा देय, इसमें घांधने की जरूरत नहीं है दो तीन घंटे बाद धी हाले एकही दफे के लगाने में बाल काले हो जाते हैं यदि कुछ कसर रह जाय तो दूसरे दफे के लगानेसे सूयकाले हो जाते हैं, इससे बाल कड़े नहीं होते और न जिरद काला होता है ॥

### दूसरा (अंगरेजी) ।

यह खिजाय प्रायः अंगरेजी दवा खानों में टाई रुपयेको मिलता है और युरुश से लगाया जाता है "घनाने की विधि" १ नम्बर—काष्टिक (यह चांदी और एमिड से बनता है डाक्टर लोग जलाने का काम इसी से लेते हैं) ॥० औंस (१ तोला) भाफ का पानी यह जल डेग मभके से खींचा जाता है । ३ औंस (१॥ उँटाक) दोनों को हलकर एकसीसीमें भर काग बन्द कर दो । २ नम्बर सलफिडरेट भाफ पुटास ॥० औंस, भाफको पानी ३ औंस दोनों को हल कर इसे भी एक सीसी में बन्द करलो "लगाने की विधि" पहिले नम्बर वाली सीसी का जक युरुशसे या लकड़ी में रुई (तूली) लपेट कर रसी से पहिले बालों में लगावे, जब सूख जाय तब दूसरे नम्बर वाला जक दूसरी रुई या युरुश से लगावे, लगातेही बाल काले हो जायगे परन्तु दूसरे नम्बर वाले कक को सूय सावधानी से लगाना चाहिये क्योंकि बमड़े में छू जाने से जिरद काला पड़ जाता है और देर में छुटता है । इसमें सिर्फ जिरद बाल काले होने के और कुछ भी गुण नहीं है यह भी जैसा हमारे देशी खिजाओं से बाल काले होते हैं वैसा इसे नहीं परन्तु आज कल जिसे देखिये रसी से मुह काला करना पसन्द करते हैं ॥

## तीसरा ।

भूजा हुआ माजू फल आधपाय हरे छोटी आधपाय तांबे का बुरादा दो तोला, कौसीस, नीसादर, दक्षिणी नीला घोषा, और लवङ्ग एक २ तोला, (माजू फल भूजने की विधि) एक छोहे की कड़ाई में काले तिल का तेल इतना रहे की जिसमें माजू फल डूब जाय कड़ाही को चूल्हे पर घड़ाय आंच दे जब तेल खोल उठे तब माजूफल उसी में डाल देय परन्तु माजूफल छिद्र रहित हो जब माजूफल फट कर उतराय आवै फौरन निकाल ले और एक कपड़े के तले दवाय तेय ताकि उसमें तेल का अंश न रहि जाय, (बनाने की विधि) पावभर सूखे आंवले को अधकचरा कर एक मिट्टी के बरतन में सेर भर जल में रात्रिको भिगेय सवेरे जोश देय जब पावभर पानी रह जाय सूख मल कर छानले एक छोहे के दरल में प्रथम उसी आमले के जल से तांबे के बुरादे को सूख सहान घोंट ले जब बुरादा मानिन्द सुसमें के हो जाय तब माजूफल आदि, समय औषधियों को कूट कपड़छान कर उसी में डाल दे और बाकी आंमले के पानी से इतना घोंटे की लसलसाहट से लोड़ा चिपट जाय । (इस स्थल में खिजाव बनाने की परीक्षा मिल सकती है) यदि घोंटते २ लसलसाहट आगया तो जानना कि खिजाव सिद्ध हुआ और जो लसलसाहट न आया तो जानना कि बिगड़ गया । जब देखै की लस आगता और सूत्र घोंट भी गया है एक २ छटांक की बत्ती बना कर सुखा ले, (लगाने की तरकीब) जब लगाने की इच्छा हो पूर्वोक्त लेखानुसार आंवले का पानी बना उसी में बत्ती को घोंट बालों में लेप कर ऐरंड का पत्र अथवा जिस किसी का पत्र चाहे बांध दे बाद तीन चार घंटे के सोल कर धो डाले पहले दफे इसी प्रकार तीन रोज बराबर लगाने से बाल काले होंगे फिर पन्द्रह रोज सिर्फ एक दफे लगाना काफी है इस्से त्यचा फाला नहीं होता और न बाल फड़े हों । माजू का खिजाव बस इस्से बढ़ कर नहीं है ॥

## चौथा ।

नील, केतकी की जड़, फेले की जड़, घमरा, पिपावासा, अर्जुनशृङ्ग के फूल, कुसुम के बीज, कालानिल, तगर, कमल का सर्वाङ्ग, लोहचूर्ण, मालकगुनी अनार का छाल, गुर्घ, नील कमल का जड़, यह सब औषधों दे २ तोला त्रिफला १ पाव भांगरे (भृङ्गराज) का रस ढाई सेर कालेतिल का तेल आधसेर एक लोहे के पात्र में सब औषधियां में तैल आदि से भर कर मुख बन्द कर चारों तरफ घोड़ेकी लीद दे पृथ्वी में गाड़ दे बाद ४० रोज के निकाल फण्डे में छान अग्नि में पचाय लेय जब रस सब जल जाय, तैल मात्र रहि जाय परन्तु तैल सरा न हेने पावै क्योंकि विगड़ जाता है तुरत छान दोतल में भर कर रस देय । चौथे २ रोज इस तैल को बालों में लगावै और तीन चार घंटे के बाद हरे के पानी से गिर धो डाले यह नुसखा सुश्रुत का है हमारा आजमाया हुआ नहीं है परन्तु पूर्ण विश्वास होता है कि असत्य न होगा ॥

## शतावरि चूर्ण धातु पुष्ट पर ।

पच्छाही शतावरि, बड़ा गोसुरू, केवाड़ के बीजकी गरी, गुलसकरी (गेंगेरुमा भी कहते हैं) बरियारा के बीज, तालामखाना और सेमर का मूसरा (एक वर्ष से ऊपर का न हो) इन सब औषधियों को बराबर ले फूट कपरछान कर बराबर की मिश्री मिठा-किसी उत्तम पात्र में रस दे, देना समय अर्थात् प्रातः काल और संध्या समय भोजन के पूर्व ही १ तोला चूर्ण को मुख में रख पाव भर कच्चा गी से दूधसे उतार जायै, इस चूर्ण के सेवन से केशाहू धीर्य निर्मल और पतला प्यो न हो गया है। मिश्रय गाढ़ा और पुष्ट हो जाता है और प्रसङ्ग करने की अधिक इच्छा देती है, यदि प्रसङ्ग न कर के एक वर्ष पर्यन्त पण्य सहित इस चूर्णको सेवन करता जाय तो हस्ती के सपान बलवान और सत वर्ष की आयु प्राप्त हो और उसके धीर्य से उत्पन्न पुत्र सिंघ के समान हो ॥

## लिङ्ग स्थूल करने का लेप ।

मिर्च, मेन्हा नाग, चढ़ी पीपर, तगर, भटकटैया का फल किसी २ देशोंमें इंचे भंटा भी फड़ते हैं । छटजीरा, काठीतिल, फूट, जी, चरद, पीत चरसों जीर असगन्ध इन सब दवाइयों को बराबर ले कूट ऊपरछान कर शब्द में घोंटे गोली बना ले यह गोली मूखती कम है दसका कुछ छं-देशा नहीं है । किसी कारण से जैसे फोते के मूजन । नस की निर्यलता से या जति अल्प धातु होने से लिङ्ग दुबला हो जाता है तो कुछ दिन बराबर उक्त गोलीको भेड़ी या बकरीके दूध में घिसकर किञ्चित गुग्गुना कर सेती समय पांच छः मिनट रोज लिङ्ग (अग्र भाग छोड़) पर रखने से अवश्य कुछ मोटा हो जाता है । और स्त्रियोंके स्तनों पर मर्दन करने से यह भी कुछ बढ़ा और कठोर हो जाता है यह शार्ङ्गधर ग्रन्थकी दवा है परीक्षा में जो कुछ गुण देख पड़ा वह लिख दिया ॥

## तिला ।

यह तिला एक पर्यंत नामक ग्रन्थ का है अजमाने से कुछ गुण कर देख पड़ा इससे लिखते हैं । अकरकरहा, गालकङ्गुनी, काठातिल, क्वचिला गन्दाबिरोजा, जायफर, सूखी जोंक जीर घीरमहूटी यह सब एक २ तैला ले एक छंटाक चमेली के तेल में घोंट कर पाताल यन्त्र से तेल निकाल ले और कागदार सीसी में रख दे । रात को चोड़े काल लिङ्ग पर मर्दनकर ऊपरसे बंगलापान बांधदेय । इसी प्रकार पन्द्रह धीम रोज बराबर हस्तेगाल करनेसे यदि गीर्ष्य में किसी प्रकार दोष न होगा तर्क हस्त मैथुन आदि अप क्रियाओं से नस निर्यल हो स्त्रीवत्त्व ( नपुंसक ) हुआ होगा तो अवश्य फायदा करेगा ॥

पाताल यंत्र से तेल निकालने की विधि ।

एस यन्त्र को बियक में भूधर यन्त्र कहति हैं । एक आतशी सीसी

(यह सीसी मगिहारों की दुबानों में मिलती है अधिक आंच लग जाने पर भी नहीं फटती और सीसियां फट जाती हैं) दवा भर सीसी का मुख सौंठ या तार के पुंज से बन्द कर दे और सीसी पर ३ कपरीटी कर सुरा लेय । एक हीदे के पेंदी में सीसी के मुख बराबर छेद करे उनी छिद्र में चली सीसी कर रख दे और हीदे को घूरे पर गढ़ा सीसी के पेंदीतक जालू या राख भर ऊपर कंठे की आंच करे, और घूरे के भीतर एक दूसरी सीसी पूर्वोक्त सीसी के मुख में मिला कर रख देय मस ऊपरके आंच की गरमाइत से तेल निकल कर नीचे की सीसी में टपकेगा परन्तु आंच पर सूप ध्यान रखना चाहिये जादा आंच होने से तेल जल जाता है ॥

### चिकित्सा सन्मिलनी से ध्वजभंग की औपथ ।

विल्व पत्र का रस १ छंटाक, गो घृत १ छंटाक कमल के फूल की एक इंडी जला के पीस कर तीनों को एक पीतल के धरतन में मिला कर पी जायै, दधी प्रकार कई रोज प्रातःकाल पीने से नपुंसकपन जाता रहता है ॥

ग्रांडी एक तोला, कुचिला आधा दाना, कुपले को ग्रांडी में धिस कर अग्नि में गरम करके रात को पेडू (बस्ति) पर लेप कर ऊपर से पान आंच देय और सबेरे खोल देय इसी प्रकार दो तीन रोज करने से ध्वज भंग रोग (नपुंसक) आरोग्य होगा । सम्पादक का अज्ञसाया हुआ नहीं है ॥

### हिंवाष्टक चूर्ण ।

सो०, पीपर, मिर्च, अजमोदा, सेंधा निमक, स्याह जीरा, और सफेद जीरा, यह सब दो २ तोला होंगे को अग्नि में भूज लेय, सब कूट महीन चूर्ण कर लेय, इसका मात्रा १ मासा से ३ मासा पर्यन्त है ।

भोजन करते समय भोजन करने के पूर्व ही इस चूर्ण को घी में मान पण्डिसे कथल के साथ खाय जाय तब भोजन करे तो यथार्थ रूप से भोजनात्त परिपक्व हो अग्नि वृद्धि होती है ॥

### ताकतवर शराब ।

मिर्ची १० सेर, मुनक्का १ सेर, यमूल की छाल आध सेर, आंयला दे। छंटाक, मुण्डी दे। छंटाक, छरीला, जटामासी, अजयाइग, खस, तग, रोजपात, नागरमोथा, नरकचूर, चन्दन सफेद और मेहदी का बीज ढाई ढाई तोला, मूसली सफेद, मूसली स्याह, यहगन सफेद, यहगन सुख, बड़ी लायधी, इन्द्रगी, भीक, तोदरी जर्द, और सफेद, यह सब सब २ तोला, किसमिस पायभर, बदाम पायभर, छोहारा पायभर, मुनक्का पाय भर उक्त सब दवाइयों का अधिकता कर ५० सेर पानी में (जिस प्रकार से शराब का खमीर उठाया जाता है) मिगा कर सहाय लेप जब खमीर उठ जाय तब २॥ सेर गी का दूध और आधसेर संतरे का रस उभी में डाल देग भभके से जिस भांति मद्य खींचा जाता है खिंचया लेप । इस का मात्रा १ छंटाक से ३ छंटाक तक है जिन गह्राशयों को शराब पीने की शक्त है और सैकड़ों रुपया व्यर्थ अंगरेजी मद्य में गष्ट करते हैं, मिलायत से आये हुये स्वदेशी भाइयों को जात च्युत करने में तो शीघ्रही कटिबद्ध हो जाते हैं और आप घर बैठे मिलायत के नाशदानका पानी पी रहे हैं, प्यारे भ्रातृवर्गों रंगे चुङ्गे टीकटदार बोलों पर मत आशक हो अंगरेजी शराब पीने से मिश्रही धर्म का नाश होता है यदि आप लोगों को मद्यही पाम स्वर्ग की प्राप्ति है तो उक्त शराब को या इस और भी उक्त २ मद्य आप लोगों के लिये लिखेंगे, मजिस्ट्रेटी या तह सीलदारी में ॥, के कागज पर दरखास्त दे कर किसी कलवार (जो शराब चुभाने जानता हो) से अपने घर पर तैय्यार करवा ला और संध्या समय भोजन के पूर्वही कभी २ पी लिया करे। लोक निन्दा और आचार



भ्रष्ट होगा दोनों से बच जाओगे, पतुर वही अनुप्य कहा जा सकता है जो दोनों छोक की साधना करते हैं ॥

जो जीर्णज्वर या खांसी ज्वर चौथे दर्जे का असाध्य न हुआ हो, उस रोग में वैद्यों की अनुमति से मालतीघसंत आदि रस तथा डाक्टरों की हानि कारक (डाक्टरी औषध एतद्देशीय अनुप्यों के स्वभावके विरुद्ध है) औषधियां न देकर यदि दो मास पर्यन्त भिन्नलिखित औषधों का सेवन करावे तो हम शपथ सहित कह सकते हैं कि निश्चय समूल रोग नष्ट हो जायगा और यह भी कहते हैं कि यदि चेत इरसे कुछ उपकार न हुआ तो जान लेना कि यह रोग असाध्य हो गया है अथ आरोग्यता प्राप्त होना दुष्कर है ॥

### लाक्षादि तैल ।

लाख (पौपल वृक्ष की लाही) ३ सेर, कालेतिल का तेल १ सेर, दही का तोड़ ३ सेर, सौंफ, अमगन्ध, हलदी, दिवदारु, कुटकी, मुर्चा रेणुका, झूट, सुरेठी, सफ़िद चन्दन, मोथा और रासग (यह शरहर के वृक्ष के आकार पीत पुरुष युक्त एक वृक्ष होता है) ये सब एक २ तोला। प्रथम लाही को साफ कर १२ सेर पानी में लाही डाल एक बरतन में जोष दिव (उसी लाही में पाषपाव वैर का पत्र, - लोष २-तोला, - सञ्जी ६ भासा कुचल कर छोड़ दिव (जिस से कि सर्वांग सब क्लाय में आय जाय) जब तीन सेर जल रह जाय तब शीतल कर छान लीय, तत्पश्चात् एक पीतल या ताँबे की कढ़ाई में उक्त तेल डाल चूल्हे पर चढ़ाय उसी में लाही के पानी और दही के तोड़ तथा सौंफ आदि सर्व लिखित दवाईयों को भी मिलपर पानी में पीस भाई (गोला) कल्क (सुगदी) कर डाल मन्द आंचसे पचावे जब पानी बिलकुल जलजाय (पहचान यह है कि एक लकड़ो ऊपर के तेल में लगा कर आग में छुलाने से चुरचुरावट शब्द न होगा तेल जलने न पावे) औरन चूल्हे से नीचे उतार

कढ़ाई के पेंदों में पानी का पुचारा टि थोड़ा ही घीतल कर लेय और छान कर घीतल में भर काग बन्द कर रखदे । रोज सबेरे गरम ऋतु में ८ बजे जाड़े में १० बजे एक घंटे तक रोगी के समस्त शरीर में मर्हंन कर के यदि रोगी सबल हो तो ताजे कूप जल से स्नान करादे, अधिक निबल हो तो किंचित चप्पा जल से स्नान करावे यदि रोगी अनिद्रा प्रगट करे तो न स्नान करावे तपोदिक के अतिरिक्त इस तेल के मर्हंन से त्रिषम प्पर कास स्वास शंग दर्द खाल देह दुर्गन्ध ज्वर हड्ड फूटन आदि रुज धाराम होता है एवं गर्भिणी के शरीर में इस तेल का मर्हंन कर प्रत्यह स्नान कराने से गर्भ पुष्ट हो आरोग्य बालक उत्पन्न होता है ॥

### शितोपलादि चूर्ण ।

मिथी १६ तोला बंशलोचन ( जिसके भीतर नौला रंग हो ) ८ तोला छोटी पीपर परन्तु प्रथम एक दिन रात पीपर को गीदुग्ध में भिगा रखे फिर सुखायलेय चार तोला छोटी लायची के दाने दें। तोला तल १ तोला इन सब दवाइयों का कूट कपड़छान कर तीन २ मासे को पुड़िया बना लेय साम सबेरे एक पुड़िया को ग्रहद के साथ चटा कर ऊपर से छटांक या आधपाव कच्चा गज्ज का दूध पिला दिय, यदि रोगी को पतले दस्त हों तो इलायची को समूचा भंज कर सब दवा में मिलावे और ग्रहद के स्थान में सरबत अनार या सरबत नौलाफर दिय और दूध भी न दिय ॥

### सुंदिरादि वटी ।

खैर ४ तोला सेलधरौ ( सङ्गजरोहत ) २ तोला कपूर एक तोला इन तीनों औषधियों को बबूल के छाल घ्राय में घोट चने की बराबर गीलो बना घाममें सुखायलेय, जब खांसीपावे एकगीली मुखमें डाल चूसे । यदि शिरमें दद या पुसरी होतो हो तो चमेलो के तैल या नारियल के १ छटाक तेल में कपूर ४ मासे, बड़ौ लायची के दाने १ मासे शीतलचिनी २ मासे सब को खुब महीन पीस रोज शिर में मले । अधिक विपासा हो तो मुख में शीतल चिनी

के दाने या सूखे भावने के टुकड़े मुख में डालडाल कर चुड़की । पेट में दाह या जलन बोध हो तो धान के लावे का माड़ बना उस में मिश्री मिला कर पिलावै और पीत चन्दन अथवा सफ़ेद चन्दन को पानी में थोड़े से कपूर के साथ घिस कर छाती और पेट में लेप कर दिये । पुराने ज्वर में दस्त और पीशाब का अधिक खाल रखना चाहिये क्योंकि खुलासा दस्त न होने से शिर में गरमी हो का घबड़ाना और खांसो का जोर बढ़ता है तथा दस्त पतला अधिक और दिन रात में कई बार होने से रोगी शीघ्र ही यमालय को गमन करता है और प्रायः मूर्खों की चिकित्सा से मूत्र में जलन, रोध एवं मूत्र द्वारा घात का घाना इत्यादि दीप हो जाते हैं उस पर ध्यान न देने से एक भी औषध गुण कारक नहीं होती । यदि रोगी को दस्त अधिक आते हैं तो लघु गङ्गाधर चूर्ण या वृद्धत् गङ्गाधर चूर्ण दे अथवा बेल का सुरब्बा या दूसरगोल की भूसी में जरा सा मिश्री मिला के पानीमें घोल कर पिलावै कोष्ठवद में अर्थात् दस्त न आते हैं तो त्रिफला चूर्ण ६ मासा या हड़ का चूर्ण या सुरब्बा सेते समय खिला दिये । या जरा सा चंडी का तेल दूध में डाल कर पिला दिये मूत्र जल के या कड़क हो तो दध २ दाना शीतलचिनी को चूर्ण कर पानी के साथ दिन में चार पांच दफे पिलावै मूत्र परीक्षा में यदि धातु का घाना स्पष्ट हो तो पूर्वोक्त शितीपलादि चूर्ण के बराबर ताल-मखाने के बोज का चूर्ण मिला अथवा के साथ न चटा के सिरफ़ गी या बकारी के दूध के साथ देवे ॥

### पुराण ज्वरे पथ्यम् ।

अग्नि में प्रज्वलन लगाना, स्नान, नान सबेरे शुद्ध वायु सेवन, दाह शांत करने वाली औषधियों को छाती और नाचे पर लेप करना जैसे स्येत चन्दन, पीत चन्दन, कपूर, शीतलचिनी, खस सुगन्धबाला इत्यादि वस्तुओं को यथोचित न्यूनाधिक ले गुलाब के अर्क में घोट पेट छाती शिर तथा अन्य अंगों में भी जहां अति दाह (जलन) हो लेप करना अति लाभदायक है । एतने में मूंग तथा अरहर की दाह पुराने चावल

का भात, गेहूं या जवैकी रोटी एवं कुलंग, हरिण खरगोश अथवा बकरी के गांस का सादा जूय (जिन्हे अरुचि अथवा पहरेज हेावे न खावें) गौ तथा बकरी का दूध मयखन (नयभीत) अथवा ताजा गौ घृत, परबल, रागलीकी (कद्दू) नेनुमा मूली की जड़ और कोमल बीज रहित भांटे की सरकारी (भाजी) परिशुन जल (फिल्टर वाटर) अथवा स्वच्छ गङ्गा जल या अन्य पहलूी प्रकारों का जल । यह सब गण पुराने ज्वर वालों को सुश्रुत आदि मतों से अधिकंस पुराने ज्वर ग्रस्त रोगियों को आराम किया है इस्से इन लोकोपकारार्थे प्रकाशित कर देश हितैषियों तथा चिकित्सकों (वैद्य) से सविनय निवेदन करते हैं कि अवश्य पूर्वोक्त कथितानुसार प्राचीन ज्वरग्रस्त रोगियों की चिकित्सा करके मुक्तकों चिरबाधित और उपकृत करें । निस्सन्देह कह सक्ते हैं कि नियतकाल पर्यन्त में यदि चर्हुँक्त लिखित उपायों से कुछ लाभ प्राप्त न हो तो निश्चय जानना कि अब उस रोगी का आरोग्य हेाना अति दुष्कर है ॥

### अचार वटी ।

हरदी, दारुहरदी, मिर्च, आंवला, शोंट, इड़, चीता, कूट, पीपर, सेंधानान, एक २ तोला निम्बपत्र और नोंब परकी गुर्घं दो २ तोला मोषा ४ तोला, उक्त सब दवाइयों को कूट कपड़ छान कर शुद्ध जल में घोट कर घने की बराबर गोलियां बना छाया में सुखा ले यह पुणं मात्रा है, बालकों की अवस्था देख कर मात्रा घमा लेवे और बालकों को निर्फं दिन में दो या तीन मात्रा से अधिक न देय इन गोली को दिन में छः दफे अर्थात् दो २ घंटे में जल के साथ खिलाने से नित्य ज्वर अथवा तिजारी चौथिया और मूतिकज्वर आराम हेाता है । इसे पानी में घिस कर आंखों में आंजने (अञ्जन) से आंखों के सामने अंधियारा हेाता खरी के दूध से सोते में पलकों का घिपट जाना बकरी के दूध से नवीन फूली

तिल के तेल से रतींधी और केले के पानी के साथ आंखों में लगाने से आंखों से पानी का बहना बन्द होता है । स्वदेशीय मातृदिल भोजन पथ्य है । पाठकगण ! उचित है कि आप लोग अवश्य उक्त बटी को तैयार कर रोगियों को बांटिये भारत में देशीय औषध के प्रचार होने की यही एक साधारण उपाय है । जिन्हे इस के भी बनाने में आलस्य होवे ॥ का टीकट भेज यहाँसे एक डिब्बो जिस्में १०० गोली हैं मंगा लें ॥

ऊपर जो शतावर्ष्यादि चूर्ण धातुपुष्टाधिकार में लिखे जाये हैं उनमें अनुपान गौ का दूध लिखा है, कितने पाठकगण पत्र द्वारा पूछते हैं कि यदि गौ का दुग्ध लाभ न हो तो किसके साथ सेवन करें ? उत्तर, यदि गौ का दूध न मिले तो भैंस या बकरीके दूधके साथ सेवन करें यदि किसी का दूध न मिले तो भिन्न जलदी के साथ सेवन करें, रहा यह कि जलके साथ खाने से फायदा बहुत कम करता है । प्रायः ऐसे लोग हैं कि जहाँ जाठ दस रोज कोई किस्म की दवा खाया और फायदा न देख पड़ा फिर जल छोड़ देते हैं कहते हैं कि यह तो इनको फायदा नहीं किया बिचार करने का स्थल है कहीं जन्म भर का कोढ़ एक रबिबार में साफ हुआ है दूसरे और २ रोग नाशक औषधियों की अपेक्षा धातु चूर्णक औषध अधिक काल में गुण करती है कारण यह है कि धातु ४० दिन से कम में नहीं बनता इस लिये कम से कम धातु चूर्णक औषध ८० दिन पर्यन्त अवश्य खाना चाहिये । कोई रोग नाशक औषधियों न हो जब तक निम्नलिखित बातों का संयोग न होगा कभी गुण न करेगी अर्थात् देश, काल, अवस्था, प्रकृति, बलाबल, रोग और औषध का पूर्ण रूप से संयोग होनेही से आरोग्यता लाभ होती है यदि ऐसा न होता तो एक ही औषध से समस्त भारत का रोग नाराज होता क्यों हमारे भूत पूर्व वैद्यक एक २ रोगों के नाशार्थ असंख्य औषधियों का विधान देते । दीर्घ काली रोगियों के दीर्घ काल तक औषध खाने का विधान सुद

वैद्यक शास्त्रज्ञों में लिखा है पाठकगण स्वयं देख लें यह लिये सर्वसाधारण रोगग्रस्त यन्त्रु बर्गों को उचित है कि किसी भीपथ के सेवनसे यदि किसी प्रकार की हानि न देख पड़े (प्रकृति तथा रोग के विरुद्ध भीपथ से शीघ्रही नुकसान होता है) तो उस भीपथ को धरायर सेवन करते जाय अपने समय पर अर्थात् जिस समय यह भीपथ रोग से बलवान् होगी निश्चयही गुण करेगी ॥

### क्षुधासागर अर्क ।

अदरक का रस ३ पाय, घिउकुमार का रस आध सेर बंगला पान का रस आध सेर, कागजी नीबू का रस ३ पाय, जंभीरी नीबू का रस २ पाय लैंग यही लायची, पीपर छोटी, दालचीनी, कालीनिर्घ, जवाखार सज्जीखार, जीरा सफेद, जीरा स्याह, कालामोम, सांभरमोम और सेंधय मोम इन सब भीपथियों को महीन कुनल कर सब रस को एकत्र कर एक यही बीसी में अथवा किसी ऐसे मृत्तिका पात्र में जिस में कि कुछ रोज तक पानी भरा गया हो भर पात्र का मुख बन्द कर १५ दिन तक धूपमें रखे बाद उसे कपड़े में छान दोतल में भर कर रख दे और गहुरत पहने पर पिये । इसका मात्रा ३ मासा से २ तोला तक है इन अर्कों को देनां समय अर्थात् साम सधेरे पीने से अग्नि मन्द अग्नीर्ण और अनेक उदर व्याधि नाश होता है परन्तु जिसकी प्रकृति अतिगर्म तथा धातु की कोई किस्म की मिताही होगी तो प्रायदा न करेगा ॥

### एरंड पाक ।

खिला हुआ एरंड का बीज आधसेर, दूध ४ सेर, घी पायभर, चिनी ढाई सेर, सोंठ, पीपर, निर्घ, लैंग, छोटी लायची, तज, तेजपात, अस-गन्ध, सौंफ, रासन, तेजमल, शताधर, गदापूर्णा की जड़, खस कपूरकचरी यह सब भीपथ सया २ तोला जायकल १ तोला जावित्री और केशर

उः २ मासा (पाक बनाने की विधि) पिछले अङ्क में मैं लिख आया हूँ परन्तु साधारण रीति से फिर भी लिखे देता हूँ मयम दूध को कढ़ाई में चढ़ाय कर अँटे जय आधा दूध जलजाये तब रेंडीकी सूती को मिलपर पीस दूध में डाल देय और औटता जाय जब रोया हो जाय तो उस रोये को घी में भूँज लेय बाद चिनी की चासनी बनाय (जय चासनी ठंडी हो जाय) उसीमें रोया और सगस्त उपरोक्त काष्ठादि औषधियोंको फूट कपर छान कर मिला देय । बादाम पिस्ताकी गरी मुनक्का और किस-मिस आध २ पाय ले महीन कतर उसीमें मिला तीग २ तोले का लड्डू बना लेय । साम सवेरे एक मोदक खाकर ऊपरसे किञ्चित् उष्ण पायभर गी या बकरी का दूध पीने से गठिया लकवा अङ्ग दर्द पांडु रोग उदर रोग आंत वृद्धि आराम होता है बड़ाभारी गुण इसमें यह है कि कैवा हू को एबहु ष्यों न हो मोते समय एक मोदक खा कर ऊपर से गुनगुना दूध पी लेने से सवेरे मामूली दस्त सूय गुनासा आ जाता है ॥

### अफीम खानेवालों के लिये अफीम पाक ।

अफीम ३ तोला, दूध ४ सेर घृत आध सेर चिनी ढाई सेर, तज, तैजपात भागकेशर मिर्च लयङ्ग जायफल कंकाल आकरकरहा सफेद मू-मली स्याह मूसली केवालका बीज यह सब एक २ तोला शोंठ पीपल जाबित्ती और केशर उः २ मासा छोटी लायची २ तोला बग्गलीचम २ तोला, मोती जनवेधी ३ मासा कस्तूरी १ मासा चाँदी का बर्क ५० ताय (बनाने की विधि) अफीम का मात्रा खानेवाले पर निर्भर है चाहे जितना कम जादा रखे पहिले दूध को अधावट करै तब अफीमको पानी में घोल कर उसी में डाल देय जब दूध रोया हो जाय, घी में भूँज लेय बाद चिनी की चासनी बनाय उसी में रोया और सगस्त औषधियोंको फूट कपर छान कर उसी में डाल देय परन्तु मोती को गुलाब के अर्क में घोंट कर डाले और सामयिक मेधा आदि डाल के लपने बलायल के

अनुसार मात्रा बना ले एवं हर एक मोदकों पर चांदी के बर्त लपेट देय और द्वैतः समय अथवा एक समय दूध के साथ सेवन करै यह सर्द ऋतु का सुख है गर्म ऋतुओं में गर्म चीजों को निकाल डाले यदि अफीम खाने वाला उक्त विधि से पाक तैय्यार कर सर्वदा खाया करै तो कभी बीर्य्य हीन और दृढ़ न हो । इस मोदक के खाने से शीत युक्त खांसी दमा प्रमेह अतीसार और सर्वाङ्ग वायु नाश होता है और बीर्य्य स्तंभन होता है प्रायः लोग मजे के लिये अथवा रोग नाश के लिये अफीम खाने वा चण्डू पीने लगते हैं परन्तु उसका अन्तिम फल यह होता है कि रोग नाश तथा मजा न मिल के और रोग दृढ़ि हो जाता है समय शरीर की नाड़ियां संकुचित हो जाती हैं, स्मृति क्षान् बुद्धि भ्रष्ट और कुछ काल में मनुष्य निकम्मा हो जाता है इससे उचित है कि केवल अफीम न खा के अफीम पाकही बनाकर खाये और फिर कुछ रोज के बाद छोड़ दिया करै ॥

### भांग का पाक ।

भांग के खानेवाले भी आज दुनियां में कम न निकलेंगे । भांग के खाने से कुछ ऐसी हानि नहीं है कि शरीर नष्ट भ्रष्ट हो जाय जैसा की अहिफेन के खाने में होता है रहा यह कि शीत मिजाज वाले को कुछ घादी करता है उचित है कि शीत प्रकृति के लोग जाड़े के दिनों में संध्या समय भांग का पाक बना कर खावें । भांग १ पाय, गौ का दूध ५ सेर, ची भाघ सेर, तज, तेजपात नागकेशर काली मिर्च सूबा असगंध गदापुर्ना की जड़ केवाळ का बीज बरियारा की जड़ कीट्टाटोंटीकी जड़ ककई की जड़ सध एक २ तोला लौंग शोंठ पीपूर जायकल जावित्री और केशर द्यः २ मासा छोटी लायचीवंशलोचन और सींक, दो २ तोला ।

### बनाने की विधि ।

पहिले भांग को तीन चार पानी से सूध धो कर सुखा लेय, दूध



कों कढ़ाई में डाल औंटे लघ आधा दूध रह जाय भांग को सूय गहीन चूर्ण कर उसी में डाल खोधा कर लेय, खोधा को उसी घी में भूंग चीनी की चासनी बना उसी में खोधा और समस्त औषधियों को कूट कपर छान कर मिला अपने बल के अनुहार मोदक बना लेय । सांभ सबेरे अथवा सिर्फ सांभ को एक लहहू खा कर ऊपरसे दूध पिये तो प्रमेहादि समस्त धातु का रोग आराम हो और बल तथा अग्नि की वृद्धि हो । भांग और अजीम पाक विशेष कर उसीको फायदा कर सकता है कि जिसका निजाज शीत का है और उक्त नशा खाने का अभ्यास भी है ॥

### कामोत्तेजक चूर्ण ।

सफेद भूमली दिल्ली की, स्याह भूमली, शतावर, सदाफुल मिश्री, मालिन मिश्री, यह सब एक २ तोला, गड़िनन देनों दो तोला, देतरी देनों दो तोला, इन्द्रजय, सुरखारी का बीज, जावित्री, जायफल, जोंठ और कुलीजन छः २ मासा उक्त सब औषधियों को बलग २ कूट कपर छान कर एकत्रित कर चार २ गामे की पुड़िया बना ले सांभ सबेरे एक पुड़िया गहद के माप घाट कर ऊपरसे पाय भर दूध मिश्रीयुत पी जाय यदि गर्भ ऋतु हो तो दूध के परिवर्तन में गाजघां के अर्कमें मिश्री गिलाय कर पीना उत्तम होगा । इस चूर्ण को दो मास पर्यन्त सेवन करने से धातुहीन गहीन क्लोवत्य देय आदि आराम होता है और रति काल में आनन्दता प्राप्त होती है । आरोग्य पुरुषों के लिये वैद्यक शास्त्र में दो भांति के प्रयोग कहे हैं । रसायन और वाजीकरण, इन दोनों का यथायत्न व्यवहार भागे करेंगे । रसायन किसे कहते हैं "यज्जराय्यातिपि-प्यन्नि भेषजंतद्रसायनम्" जिन् २ औषधि और उपायों से मनुष्य वृद्ध (पुढ़ाप) न हो अर्थात् सत्तर अस्सी वर्ष पर्यन्त संपूर्ण इन्द्रियों कि शक्ति यथायत्न बनी रहे उसे रसायन वय स्थापन एवं कएय भी कहते हैं । रसायन प्रयोग वयस के पूर्व अथवा मध्य में आरोग्य जन को हो सक्ता

हे "नाभिश्चुद्धिशरीरस्य युक्तो रसायनेऽधिधिः" रोगी तथा अति धातुक्षीण शरीर रसायन नहीं होता यदि होता भी है तो रोग आराम के बाद एक वर्ष से ३ वर्ष पर्यन्त औषध के सेवन से । बाजीकरण उसे कहते हैं कि "यस्मात्तद्रव्यं भवेत्स्त्रीषु हर्षो बाजीकरं च तत्" जे। क्रिया और औषधियां स्त्री रति में आनन्द उत्पन्न करै । यह भी अति व्यवधान शील को बाजीकरण भी नहीं होता यदि चेत् हे। भी तो कुछकाल के औषध सेवन से होगा अन्यथा असम्भव है बाजीकर और रसायन पर अनेकानेक औषध हैं कि जिनके बनाने की क्रिया, खाने की विधि और गुण सुन कर पाठक गण चमत्कृत हो जायेंगे उमें आगे कहेंगे इस स्थान में हम सिर्फ दे। द्रव्य दिखलाते हैं सफेद मूसली ( रसायन ) और फेवाळ का बीज ( बाजीकर है ) सफेद मूसली बिल्ली की पाय आधमेर ले फूट कर खान कर तीन २ भासा की पुड़िया बना ले इसका मात्रा ३ भासा से १ तोला तक है जैसी जिसकी शक्ति है। साम सवेरे एक पुड़िया मुख में रख शीघ्र ही पाखं आध सेर गी के दूध से उतार जावे, चूर्णको टुचलावे न क्योंकि मुखमें चिपट जाता है । यदि इस चूर्ण के खाने से कोष्ठमृदु अजीर्ण आदि उपद्रव न हो निरन्तर पचा जाय तो जय तक सूप बीर्य्य बलवान पुष्ट और वृद्धि न हो खाना घन्द न करै एक वर्ष तक इसके खाने से बीर्य्य मदायली हो अनेक स्त्री गमन तथा बलवान पुत्रोत्पादन करने में समर्थ होता है । बाजीकर बनफेवाळ के बीज को छील गरी निकाल चूर्ण कर ले इसका मात्रा ४ भासा से दे। तोला तक है जैसी शक्ति है। मात्रा बना लेय साम सवेरे एक मात्रा खा कर ऊपर से निश्रीयुक्त दूध पी जाय जब तक पूर्ण रूप से लाभ न हो बराबर खाता जाय किसी दोष से रति शक्ति क्यों न जाती रही हो अवश्य इसे कुछ काल सेवन करने से पुरुषत्व लाभ होगा ॥

## प्रदर रोग की अपूर्व औषध ।

शुभ्र शन्दन जटामामी लोच सस पद्म केसर नागकेसर बेलकी गरी नागमेधाया मोंट हाहूवैर पाट्टी कुरैया की छाल इन्द्रजय अतीस युगा आंशुला रमयत आमकी गुठली की गरी जामुन की गुठलीकी गरी मोथरम कमलगट्टेकी गरी (कमलगट्टेके भीतर बीचमें एक हरीवस्तु रहती है उसे निकाल डाले) मजीठ छोटी लायची अनार का बीज श्रीर कूट इन सब औषधियों को दो दो तोला ले कूट कपर छान कर योतल में रख देय इसका मात्रा ६ मासा से दो तोला पर्यन्त है । (गाने की विधि) दो तोला साफ पुराने चावल को कुचलकर ३ छँटाक जल में भिजा देय और बाद एक घंटे के मलकर उसका पानी छान लेय उसी जल से उपरोक्त चूर्ण की एक मात्रा शिल पर घोंट कर १ मासा गहद डाल कर पी जावे इसी प्रकार दिन में तीन जगया दो बार पीने से निश्चय है कि १५ दिवस में रोग प्रायशः नष्ट हो जाय । इसी चूर्ण से रक्तप्राय भी बन्द होता है ॥

## काले साँप के काटने का इलाज बी० सी० से ।

साँप के पत्ते को सफ़ेद नाखून से उतार कर जमा करलेय और उस में साँप के पत्ते का दूध मिला कर घने को बराबर गीलियां बना ले जिसे साँप काटी उसे चाँधे २ घण्टे के बाद एक एक गीली खिलावे ६ गीलियों तक साँप के काटी हुए घादमी का मुख मोठा मालूम होगा सातवीं गीली कड़वी मालूम होगी और मरीज अच्छा हो जायगा ॥

## कस्तूरी की पहिचान ।

प्रायः जाड़े के दिनोंमें नेपालो तथा पहाड़ीमनुष्य नकलीनाभौ बनाके घहरों में जाके लोगों से ठग जाते हैं, माघ मास में प्रयाग में सैकड़ों इसी भाँति के ठग लोग पाते हैं और घोडा है के हजारों रुपय ले जाते हैं कुछ

प्रथागही में नहीं ऐसा ही हर एक भारीर मैलों में होता है और जो जिस वस्तु को पहचानता है वह उसे कभी ठगा नहीं जा सकता है । हिरण के नाभी की यह बद्धत उत्तम परीक्षा है कि पांच चार लहसुन के लवों को पत्यक्ष पर महीन पीस लसी के रस में एक विलस्य भर तागा तर कर उसे सूची ( सुई ) में विरोध नाभी में छेद कर छोरे को खोंष ले यदि उस नाभी के भीतर पसिल कस्तूरी होगी तो लहसुन की दुर्गन्ध जाती रहेगी कस्तूरी की सुगन्ध छोरे में या जायगी "खुले कस्तूरी की परीक्षा" अक्षर ठगलोग कोयले पादि वस्तुओं को महीन रवा कर बाद पसिल कस्तूरी को पानी में घोंट लसी में रवे को तर कर छाया में सुखा लेते हैं इसी प्रकार दोन पुट देने से पसिल कस्तूरी की भांति मद्धकदार हो जाता है बस मैलों में जाके उसे पाठ दस रुपये तोले के हिसाब से बेच पाते हैं । एक साफ़ पन्नि के पद्दारे पर एक रवे को रख दें और उसके धूम की सुगन्ध लिय यदि पसिल कस्तूरी होगी तो उसका धुवां पादि से अन्त तक मद्धकदार निकलेगा और नकली होगी तो प्रथम धूम सुगन्ध सक्षित बाद धूम ( धुवां ) रक्षित अथवा जो वस्तु भीतर होगी उसका मद्धक बोध होगा ॥

### कस्तूरी की उत्पत्ति ।

शुद्ध त्रिहीन नर हिरण के नाभि में चर्म की एक पोटरो सी होता है लसी में कस्तूरी पैदा होता है पहचान उसको यह है कि जिस हिरण के नाभी में कस्तूरी रक्षित है वह लसी के मद से चारो तर्फ बनें में पौधों को सूंघता फिरता है, कारण यह है कि उसको नाभि में से जो सुगन्ध प्रगट होती है तो उसे उस सुगन्ध का अपनो नाभि में न भाग हो कर अन्य वस्तुओं में भाग जाता है । लोग ऐसा कहते हैं कि उस हिरण के लंघा की पसिल एकही होती है इससे वह बैठ भी नहीं सकता रात को लच्छादिकों में लंठग कर से जाता है और बेहो हिरण बंधी के शब्द को सुन कर प्रसन्न भी होते हैं । अधिक लोग जो लद्योगी हैं, वन में जहां मद युत सृग को दिखा बंधी वजाते हैं और एक टही बांस के टिक में खड़ी कर देते हैं और उस बांस में

डोरी भी बांध देते हैं जब मृग टटो में उठग कर सो जाता है तब डोरी को खींचते ही टटो गिर जाती है और उसी के साथ मृग भी गिर जाता है वध वधिका मृग का पेट फार कर कस्तूरी को यैसी निकाल लेते हैं । हर एक गाभी में से ढाई तीन तोले से कम कस्तूरी नहीं निकलती जिनका मूल्य चालीस पचास रुपया होता है । इस प्रपञ्च का भी अद्भुत चरित्र है जब दो तीग रुपये की खालच में छोटी २ बच्चों को लोग मार डालते हैं तो जिन पशु की शरीर में इस कदर मूल्य निर्मित वस्तु है उसका जीवन जैसे बधकों से बच सकता है ॥

### कस्तूरी का गुण ।

इसका स्वभाव अति गरम, वातरुधिर नाशक, धातुसंग्रहक, यात्रीकरण अग्नि और बल वर्द्धक है मात्रा इसका अर्द्ध चावल से ४ चावल पर्यन्त है । प्रायः अमीर लोग जाड़े के दिनों में पान में डाल कर खाते हैं, खाने और पीने की तमाकू में इसे डालने से तमाकू बहुत उमदा गुण दायक हो जाती है, हर एक पुष्ट दवाइयों में भी इसे डालते हैं । परीक्षा से ठीक जानाजाता है कि शीत मित्राज वाले को रसकी अपेक्षा कस्तूरी अधिक गुण करती है ॥

### मृगनाभ्यादि वटी (कस्तूरीकी गोली)

कस्तूरी ६ मास, अनजिधी मोती १ तोला, जावित्री १॥ तोला, केशर २ तोला, आयकल २ तोला, छोटी छायची के दाने २ तोला अक्षरकरदा २ तोला, कडुकोल त्रिष २ तोला कपूर ६ मास, शुद्ध कुचला १ अथवा कुचले का रस (इस्टकनिया) ४ पायल, सेने का तर्क १० ताव घांटी के तर्क २० ताव

### वनाने की विधि ।

प्रथम मोती को घोंटने वाले खरल में डाल गुलाब के अर्क में ४

पहर घोंट ले । कुचला सोधनेकी रीति यह है कि एकबरतनमें कुचले को जल में भिगा दे और रोज उसका पानी बदलता जाय २१ रोज के बाद उसे छील उसका दूध निकाल महीन कतर घूर्ण कर लेय, द्रष्टिकनिया चाहे अङ्गरेजी दवाखाने से ले लेय, कुचला डालनेसे सिर्फ प्रसङ्गमें स्तम्भन होता है उसे न डाले तो कुछ अनदेशा भी नहीं है । सब दवाइयों को खरल में डाल २ तोला शक्कर और गुलाब के बर्कमें घोंट मटरके धराधर गोली बना छाया में सुखाय बीसी में बन्द कर रख देय । इस मटी की मात्रा चौथाई गोली से २ गोली पर्यन्त है जैसा जिसका बल हो गाया यना लेय । संध्या समय एक मात्रा खा कर ऊपर से दूध मिश्री पीने से बिषय में अति आनन्द और शक्ति बढ़ती है, परन्तु इस गोली के सेवन करने वाला तेज मिर्चा सटाई शाक धरमन मासी अन्न रुद्ध अन्न माजरा आदि न खावे ची दूध गलाई पुराने चावल का भात सेष मीठा अनाद पीड़ेकी गड़ेरी आदि अधिक फायदा करता है इससे अतिरिक्त इस गोली के खाने से कासखास यक्ष्मा लकवा गठिया और नपुंसक आदि रोग आराम होते हैं ॥

### केशरकी पहिचान ।

यह एक वृक्ष के पुष्प के भीतर का रस है, जैसे धरै के पुष्पके भीतर रस होता है इसके वृक्ष काश्मीर में होते हैं । ठग लोग मकली केशर भी बना कर बखर बेच जाते हैं, वे लोग केशर इस प्रकार बना लेते हैं, जैसे मुद्दे में जो बाल मद्दूश पदार्थ होता है जयवा धरै के फूलको उत्तम केशर को पानी में गाढ़ा घोंट कर उसी में तर कर छाया में सुखा लेते हैं इसी प्रकार पाँच चार पुट देने से केशर हो जाता है । असिल केशर की पहिचान यह है रङ्ग जर्दचमेली (किञ्चित् सुर्खी लिये पीतवर्ण) तीक्ष्ण-सुगन्ध, यज्ञ में हलका स्वाद में किञ्चित् त्वा और चावल भर केशर २० मिगट तक मुख में रखने से शिर में गरमी बोध हो इससे विपरीत नकल

जानना । गुण, गरम सुखाद् वायु रुफता नाशक शक्ति तथा बलको वृद्धि करता है । जाड़े के दिनों में प्रायः इसे पान के तथा और खाद्य वस्तु के साथ खाते हैं ॥

### सफेदचन्दनके तेलका पहिचान ।

यह तेल झिलापत से भी बन के जाता है और एतद्देशीय इतर बनाने वाले गन्धी लोग भी बना लेते हैं क्योंकि जितने प्रकार के इतर तैयार किये जाते हैं सब में चन्दन के तेल का पुट रहता है और जादेतर चन्दन का तेल सुनाक के रोग में अधिक काम जाता है, परीक्षासे जाना गया है कि सुनाक की बिमारी में और दवाइयों की अपेक्षा चन्दन का तेल अधिक फायदा करता है परन्तु जब असल पदार्थ नहीं मिलता तो गुण न कर अथगुण करता है फिर आज के जमाने में जैसे और २ बातों की तरफ़ी हुई है और होती जाती है वैसीही छल कपट झूठ विश्वासघात आदि की भी ऐसी उत्पत्ति हुई है कि कहीं पैर धरने को जगह बाकी न रही और समय के प्रभुवर की रूपासे बढ़ताही जाता है । खैर सफेद चन्दन के तेल की अमिल परीक्षा यह है कि एक सूख साफ सफेद कागज पर थोड़ा तेल लगा दूर से कुयले की भांश देखाभो फौरन तेल चढ़ जायगा जरा भी दाग न मालूम होगा और नकली तेल का दाग बना रहेगा ॥

### अरेजीइमलीकी चटनी ।

झिली इमिली २ सेर, मिरचा आधपाय, अदरख झिला हुआ आध पाय, लहसुन झिला आधपाय, दालचिनी १ छंटाक, करन (गरंक्त) एक पाय, किसमिस १ पाय, चिनी १ सेर, निसक टाई तोला, झिलायती मिरचा अंगूर का १ दोसल (बनाने की बिधि) प्रथम किसमिस और करन को सूख साफ कर पानीमें धो सुखा लेप और इमिलीका थोड़े पानी

में भिजाओ दे। घंटे के बाद मूत्र कर बीज फेक उसका गूहा ले लेय बाद इसके लाल मिरचा अदरक लहसुन और दालचिनी चारे चीजों को शिलपर सिरका दे कर सूय नहीं पीस लेय फिर सब चीजों को मै सिरका चिनी आदि एक कलईदार बरतन में डाल चूल्हे पर चढ़ाय मन्दाग्नि में पचाये जब सूय सुगन्ध जाने लगे तब उतार लेय और अमृत-याम या बड़े मुख के शीसे में भर कर रख देय यह चटनी बरसें रहती है, भोजन के समय या जब चित्त चाहे खाये । इस चटनी को छोट साहस्र तक खाते हैं ॥

### आंमकी चटनी ।

आंम कच्चा ७ सेर, चिनी साढ़े तीनसेर, सिरका अंगूर का दे। बेतल, लाल मिरचा २ छंटाक, बादाम की गरी १ पाव घनिया ७ पाव, किसमिस तीन पाव, अदरक छेड़ पाव, नमक छेड़ पाव, लहसुन २॥  
 तोला (बनाने की विधि) यह चटनी दे प्रकार से बनती है एकमें आंम के कतरे रहते हैं और दूसरा आंम को पीस लुगदीकी जाती है । पहिले आंम को छील नहीं कतर शिल पर पीस ले बाद इसके निर्धा लहसुन घनियां अदरक चारे को शिल पर सिरका में पीस ले और बादाम को नहीं कतर ले फिर सब चीजों को एक कलईदार बरतन में डाल चूल्हे पर चढ़ाय धीनी आंच से पकाये और करछुल से घराबर चलाता जाय जब देखे कि सूय पक गया सहक जाने लगी तब उतार ले और किसी कांच के पात्र में रख ले यह चटनी अति सुखाद अग्निवृद्धि गुण विशिष्ट होती है यह चटनी प्रायः बनी बनाई बीदागरेणों की दुकानों में भी रहती है, और इसे बड़े २ अंगरेज लोग खाते हैं ॥

### सुजाककी दवा ।

ऐसा कौन मनुष्य है जो इस रोग में ग्रसित न हो इसे वैद्यक में



सूत्रकृच्छ्र और सूत्रधात, हिकमत में सुग्राह और हाकुरी में गनेरिया कहते हैं जिसका स्पष्ट उल्लेख एवं चिकित्सा लिखेंगे निदान से लेकर बताईं तक इसकी औपध जानते हैं परन्तु जिस प्रकार हीजे की औपध आज तक उत्तम नहीं निकली वैसाही इस रोग की भी ॥

शीतलचिनी आधपाव, सेलखरी आधी छंटाफ, कलमी सारा १॥ तोला, फिटफिरी ६ मासा, गेरू सही ४ मासा, कपूर ३ मासा सब औपधियों को सहीम कूट कपरछन कर तीन २ मासे की पुड़िया बना लेय दिन में छः दफे अर्थात् दो २ घंटे पर एक २ पुड़िया मुँह में रख दूध पानी या सिर्फ आधपाव पानी से उतार जावै । आठ रोज इस औपध के खाने से पेशाब का जलन और मयाद का आना अवश्य बन्द होगा यदि आठ रोज में मयाद न बन्द हो तो इस औपध को भी खाने और निम्नलिखित पिचकारी भी लेवै, ऐसा देखा गयाहै कि बिना पिचकारीके नहीं आराम होता । गेरू सही २ तोला मेहदी की ताजी पत्ती २ तोला सफेद सुरमा २ तोला रसवत २ तोला इन चारों औपधियों को डेढ़ सेर पानी में सहीन घोंट पकाय लेय जब तीन पाव जल रह जाय छान कर दोतल में भर लेय और दोनेां समय इसी की पिचकारी लेवै ( पिचकारी लेने की विधि) जब पिचकारी लेना हो प्रथम पेशाब करे बाद एक चौकी पर उकुरु बैठ पिचकारी भर कर लिङ्गमार्गमें देय और तीन निनट तक लिङ्ग का मुह बन्द करे ताकि शीघ्रही जल गिर न जाय जब पिचकारी ले चुके तो आध घंटा तक पेशाब न करे इसी भांति तीन दफे सवेरे और तीन दफे सान को लेय पांच ही चार रोज में मयाद बन्द हो जायगा यदि इससे फायदा न हो तो यह पिचकारी लेवै ॥

विफला पाव भर नींब की पत्ती आधपाव घनियां एक तोला सफोम ६ मासा सब दवाइयों को सधकचरा कर डेढ़ सेर पानी में रात को भिजा दिय और जोस दिय जब आधा पानी रह जाय छान कर दोतल में भर लेय पूर्वोक्तानुसार आठरोज तक पिचकारी लेने से अवश्य फायदा होगा । पायः

लोग यह शक्य करते हैं कि पिचकारी लेने से मूत्रमार्ग का छिद्र बड़ा हो जाता है ? पिचकारी लेनेसे मूत्रमार्ग बड़ा नहीं होता परन्तु अधिक पिचकारी लेने से पीते में पानी उतर आता है ॥

अगर पेशाब रुक २ होता है या मूत्रमार्ग में कुछ पड़ गया है तो इस औषध का सेवन करे । कच्ची फिटकरी १ तोला कबाबचिनी २ तोला रेवचिनी १ तोला कल्ला, सैरा १॥ तोला छोटी लायचो के दाने १ तोला सब दवाइयां कूट कपर छन कर चार २ मासे को पुड़िया बना ले आधसेर गौ का दूध और सैर भर पानी दानों मिला एक मृत्तिका पात्र में रख दे और उसी के साथ दै २ घंटे पर एक २ पुड़िया खाय । पथ्य मूंग को खिचरी इस प्रकार तीन दिन सेवन करने से मूत्रमार्ग निरन्तर साफ हो जाता है । सुजाक रोग प्रायः तीन कारणों से होता है आतथक स्वप्न, दौष और बेश्यागमन परन्तु आजकल बेश्यागमन से यह रोग होते हुए अकसर देखा जाता है जब लोग बेश्या के पास जाते हैं तो उस समय यह नहीं जाना जाता कि इस के सुजाक है, परन्तु जब लिङ्ग योनि में पहुँचता है तो अतिगर्म अग्नि के स्पर्श से मालूम होता है चाहे कि मनुष्य उसी समय लखे भलग हो जाय तो उत्तम है नहीं तो दै तीन दिन के बाद मूत्रमार्ग में दर्द और पीब आने लगती है । इसे मैं प्रथमही स्पष्ट कर चुका हूँ कि एक औषध प्रत्येक व्यक्तियों की लाभ कदापि नहीं पहुँचा सकता है । थोड़े रोज हुए कि एक स्त्री जिस की उमर २५ वर्ष की थी दै वर्ष से खेत प्रदर रोग में ग्रसित थी जिसने हर एक डाक्टर हकीमों को दवा की परन्तु कुछ लाभ न हुआ अन्त में हमारे पास आई दै मास पर्यन्त मने भी अनेक औषध द्वारा उसकी चिकित्सा किया कुछ फायदा न हुआ तब एक साधारण औषध बना कर दिया कि लखे यह १६ दिवस में आराम हो गई । अकरकन्द और रतासु दानों को महीन कतर छाया में सुखा कूट कपर छन कर एक २ तोले की मात्रा बनाले, हर एक मात्रा में ६ मासा मिथो और तीन मासा वरगद का दूध मिला मुख में रख पाव भर गौ के कच्चे दूध से उतार जावे इसी प्रकार दानों समय १६ दिवस पर्यन्त सेवन करने से समूल रोग नष्ट दिखा गया ॥

किसी किसी को खप्ट दिापसे भी सुजाक का रोग हो जाता है सबव यज्ञ है कि खप्ट में काम बिलास प्राप्ति होने पर जहां वीर्य सखलित हुआ और न खांख खुल जाती है इस से वीर्य बाहर निकले से रुक कर सुजाक हो जाता है इसप्रकार से जिसे सुजाक हुआ हो उसके लिये यह औषध लाभ कारी है, दो तोले पलसी को रात में पाघसेर जल में भिगी दे और सुबेरे उसे खूब मलकर लुभाव निकाल कपड़े में छान दो तोला चिनो मिलाकर पौ जाये और गर्म चीजों से पदरेज करे पांच चार रोज में आराम हो जाय गा अगर इसी फायदा न हो तो इसे पिघे खीरे ककड़ी के बीज ४ तोला पलसी ४ तोला गीसुऊ ३ तोला विहौदागा ३ तोला बबुल का गींद ३ तोला घनिया ३ तोला इसरील २ तोला आवला सूखा २ तोला सब दवाईयों को मधकरा कर १० पुड़िया बांध ले एक पुड़िया रात को पाघसेर जल में भिगीदे सुबेरे खूब मल छानकर एक तोला चोनो मिला पीजावे इसी प्रकार सुबेरे भिगावे तो राम को मल छान कर चिनो मिला पिघे नियय है कि सात आठ रोज में विलकुल जाता रहेगा । अगर आठ रोज में पूर्ण आरोग्यता लाभ न हो तो यह दवा भी पिघे जावे औ निम्नलिखित पिचकारी भी लेवे । षड वहेरा आवला तीनो बराबर पावभर ले मधकरा कर रात को सेरभर पानी में भिगी दे प्रातः काल उसे छान एक मासा नौलाथोथा खूब मद्योन पौस मिला दे फिर इसकी चार पांच दिन तक दोनों समय पिचकारी लेवे अवश्य फायदा करेगा । खाने को मूड की दाल गेहूँ को रोटी पुराने चावल का भात घौ गौ का दूध उत्तम है । एक सुजाक भी इसी प्रकार का हो जाता है जैसे कि मफोम आदि स्थान को औषध खाकर एक रात में तीन चार बार प्रसङ्ग करे और हर बार बाद मैथुन के पेशाव न करे तो वीर्य की थोड़ी विंदु लिङ्ग के छिद्र में जम जाती है और सुबेरे तक घाव कर देती है । यह सुजाक बिना पिचकारी के आराम नहीं होता ॥

### पिचकारी की दवा ।

नौलाथोथा पीली फोड़ी दोनों अग्नि में भूज कर छः २ मासा

विलायती नील एक तोला तीनों को सूख महीन पीस दो सेर जल में घोंट कर बीतल में भर लेय अन्दाज के माफिक दोनों समय पूर्वोक्तानुसार पिचकारी लेवै । और उपरोक्त औषध का सेवन करै । अगर पेशाब में जलन अधिक हो तो यह औषध का इन्द्री जुलाब लेवै । शीतलचिनी, कलमी सेरा, सफेदजीरा और छोटी लायची यह सब दवा एक २ तोले सब को महीन पीस छान कर १६ पुड़िया बना ले दो २ घण्टे पर एक २ पुड़िया मुख में रख दूधपानी से उतार जावै इसी प्रकार दिनभर में पांच छः दफे पीवै और धोई मूंग की दाल और पुराने चानल का भात खावै मूत्र जलन जाती रहेगी ॥

### पिचकारी सब प्रकार क सुजाक की ।

रसघत फिटकिरी सफेदसैर और कपूर दो २ मासा सफेदसुरमा एक तोला इन सब औषध को आधसेर जल में घोंट कपड़े में छान दोनों समय पिचकारी लेवै तो सब प्रकार की सुजाक आरम हो ॥

### दूसरी पिचकारी ।

खानजिह्वा (कुत्ता का जीभ) एक, उसे अग्नि में जलाय कोयला कर ले तूतिया १ रत्ती, रसकपूर १ रत्ती, सफेदसैर ५ रत्ती, उक्त सब औषधियों को पावभर पानी में घोंट दोनों समय पिचकारी लेने से असाध्य सुजाक भी अच्छा हो जाता है ॥

### कुराकाटने की पिचकारी ।

मनुष्य के शिर के बाल दो तोला प्रथम उसे कतरनी से सूख महीन कतर ले और एक घाय भेड़ी अथवा घकरी के दूध में इतना खरल करै कि एक दिल हो जाय याद दोनोंसमय पिचकारी लेवै । जो पुराना सुजाक

होने से त्रिगुण्डिय के भीतर मांस ग्रन्थि पड़ जाती है जिसके बजे से मूत्र रुक जाता है और सर्वदा एक प्रकार का दर्द हुआ करता है । इस रोग को डाक्टर लोग इस्टिकचर अर्थात् मूत्रमार्ग छोटा हो जाना बतलाते हैं ॥

और जिसकी दवा सेवाय सलाई के अन्य नहीं है यह रोग इस पिचकारी से आरोग्य होता है । एक दो रोज इस पिचकारी के लेनेसे कुरा कट जाता है पहचान यह है कि मूत्र मार्ग से सूत्र निकलेगा, बाद दो रोज के निम्नलिखित पिचकारी लेवे ताकि चाय मूस जावे आधपाव त्रिफला, रसवत १ तोला सफेदसैर ६ मासा मुरदाशंख ६ मासा नींबू और इमली की पत्ती एक २ छटांक सब दवा की कूट कर रात को तीन पाव जलमें भिगा दे सवेरे जांस देय जब आधसेर जल रहजाय सूय मल कर छानले और देनेां समय चार पांच रोज तक पिचकारी लेवे ॥

### सुजाक पर अंजन ।

गौ के मछड़े का एक सींग पुरानी रुई में लपेट कर बत्ती बनावे और कोरे दीपक में रख कर उसमें रेड़ी का तेल भर देवे फिर उसे जला दे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रख कर काजल पारि और उस काजल को दोनों समय आंखों में लगाया करे खटाई और घादी पदार्थों से पहरेग करे तो सब प्रकार का सुजाक आराम हो ॥

### कामोत्पादक बटी ।

जायफल १ तोला, अकरकरहा १ तोला, सफेदचन्दन १ तोला, कड्डोळ १ तोला, खोटीखायची १ तोला, जावित्ती, फेशर, अफीम, लौंग, सींठ, दक्षिणी लज्ज, तेजपात, नागकेशर, और शुद्ध भांग ये छः २ मासा भी भांग का अक्षरक, शुद्ध विमरख, शुद्ध काला धतूर का बीज और कपूर तीन २ मासा, कस्तूरी २ मासा इस्टिकनिपा (कुचलेका सप्त) अंगरेजी

दवाखाने में मिलता है २ रत्ती । प्रथम अफीम और सिमरख को बरगद के दूध में घोट ६ छुहारे का पेट घीर उसका बीज निकाल उसीमें दोनों को भर होरे से कस कर बांध दे जिसमें कि सन्धि न रहे याद इसके १ पाय बरगद के दूध में खूब पका ले फिर छुहारे को निकाल होरा बलग कर सुखा लेय याद इसके उपरोक्त औषधियोंको कूट कपरछान कर पुस्ते के दुग्दी १ छटांक (पुस्तेका फल बीज समेत अघकघरा कर १ पाय पानी में गन्दाग्नि से पचाय ले जय एक छँटाक पानी रह जाय गळ कर छान ले) में छेहारे के घोंट चर्द की बराबर गोली बना लेय । इनारे औषध-चालप में भी तैपार हैं जिनकी इच्छा हो ॥ टिकट भेज ४० गोली मंगालें ॥

### खानेकी विधि ।

यह घटी पूरी मात्रा है कमजोर को बाधी गोली देना उचित है, गन्ध्या समय १ गोली खाकर ऊपर से अघावट वायुपर दूध में ६ मात्रा शर्द छोड़कर पी जाय, इससे प्रसङ्गमें दूनी तेजी और स्तम्भन होताहै । शीत वायु के कोप से उत्पत्ति रोग प्रमेह शरीर का दर्द, गठिया, शङ्ग का जकड़ जाना, प्रसाघात (लकवा) यद्युमूल खांधी स्वास उक्त विधिघट इस गोली के खाने से आराम होता है । यदि पांच चार रोज के सेवन से उपरोक्त रोगोंमें कुछ उपकार न होता जानना चाहिये कि यह विगारी सूग की गरमी से है । अगर गोली दोनों समय खिलाना चाहिये ॥

### लवणभास्कर चूर्ण ।

सैकड़ी सरतवे आजमाया है । समुद्र लवण (खारा नमक) ८ तोला कालानमक ५ तोला विषुनोग या अवाखार, सेन्धानोग, घनिषां, पीपर पिपरामूल कालाजीरा, तेजपात नागकेशर तालीस और अक्षवेत दोस्तोला मिर्च जीरा सफेद और सोंठ एक २ तोला, अगर का मुटा दाना ४ तोला

लायची छोटो ५ मासा दालचिनी ५ मासा । इन सब दवाइयों को कूट कपड़खान कर दोमल में भर रख दे या नीयू के अर्क में घोंट करवेडी की बराबर गोलो बना ले, घूर्ण की अपेक्षा बटी में अधिक गुण एवं घूर्ण दोई महीने में गुण रहित हो जाता है और बटी बयं पर्यन्त गुणदायक रहती है ॥

### खानेकी विधि ।

गुल्म, संयवली और उदर सूजनमें गी के गांठे के मङ्ग देना चाहिये अर्थात् १ मासा दवा मुख में रख गांठे से उतार जावे । गिलहरी, बांदी बवासीर, कठिजयत् आभातिमार बलगमी सांभी और स्वांस के रोग में यह घूर्ण गरम जल या शराब के साथ खाना उचित है । इसका माता १ मासा से ३ मासा पर्यन्त बालक को आधा मासा या जैसा बलाबल हो देना चाहिये ॥

### बृहत् हिंवादि बटी ।

होंग, जवाखार, मज्जीरार, (सोहा) सेन्धानेन, कालानेन, विहनेन, छोटी पीपर, पिपरामूल, चीता, मिर्च, कचूर, धनियां, इजिली, दुधियाबय, अजमेदा, पुइकरमूल, मोठ, करझ नी गरी, जीरा स्याह, बर पाड़ी, इन सब दवाइयों को एक २ तोला ले होंग को भुझ ले बाद सब को कूट कपड़ खान कर कागजी नीयू के अर्क में घोंट करवेडी बटी की बराबर गोलियां बना ले ॥

### खानेकी विधि ।

हृदय और गले की जलन एवं बिभूचिका (हैजा रोग) रोग में अर्क गुलाब के साथ, पेट के फूडन (पेट परासा नासून है) अंत वृद्धि और

आंन रोग में सर्प के अंक या क्लाप के साथ, पिलही वायुगोला, उदर शूल और ह्रिचकी रोग में गरम जल और मन्दाग्नि में सिर्फ साधारण जल के साथ दिन में दो, तीन या चारगोली खाना चाहिये अगर रोग प्रबल न हो तो सिर्फ दो दफे अर्थात् सांन सबेरे खाना काफी है । परीक्षा से ज्ञात हुआ है कि इस गोली के खाने वाला मनुष्य चाहे जहां का जल पिये उसे हैजे की भिन्तारी न होगी इससे उचित है कि हर एक गृहस्थ थोड़ी २ इस गोली को अपने पास अवश्य रखे ॥

### कृमि नाशक चूर्ण ।

रेवचीनी वायभिरंग और कबीला इन तीनों को बराबर ले महीन चूर्ण कर लो मात्रा १ भासा से ३ भासा पर्यन्त मात्रा सबेरे कांक कर ऊपर से पाव आघपाव गी का कच्चा दूध पी लेने से थोड़े ही दिनों में समस्त उदर व्याप्ति कृमि (केचुमा यनीरह) नष्ट हो जाते हैं ॥

### प्रातः ।

प्रिय महाशय !

इस मेरी विषारी औषधि को भी अपने अमृत सागर तुल्य ग्रन्थ में स्थान दीजिये ॥

सेण्ट, सर्प, जङ्गीरह, इन तीनों पदार्थों को सम भागले एक भाग भूग ढाली और दूसरा कच्चा रहने दे कूट कपड़खान कर उतगी ही कच्ची खांड मिला कर आधा तैला या कुछ ऊपर मात्रा बना शीतल जल के साथ भोजन के बाद या अन्त में खा ले तो आंन गिरना या आंन से रून का गिरना अवश्य बन्द हो जायगा ॥

पंडित रघुनाथ एक० ए० क्लार्क

घरेली काठेज



## अंगरेजी काली रोशनाई ।



माजू फल को पानी में भीटा कर उसमें कीसीस गिलाने से उसका रंग काला हो जाता है और फिटकिरी गिलाने से और भी उत्तम होगा और माजू फल को भीटाते समय किञ्चित मात्र लौंग डाल देनेसे स्याही बिगड़ती नहीं है इस क्रिया में माजू फल १ पाव जल डेढ़ सेर आधा जल जलजाय, कीसीस एक तोला फिटकिरी ६ मासा, लौंग ६ मासा उत्तम होगा ॥

### दूसरी विधि ।

इह बहेड़ा बांयला इन तीनों पीलों को घराबर ले अपकवरा कर ले। हे को कढ़ाई में घतुगुण जल में डाल भिगा दे दूसरे रोज बांघ दे जय आधा जल रहि जाय त्रिफला की चीयाई कीसीस डाल पांच चार दिग इसी तरह रहने दे मायू खान काम में लावे ॥

### तिसरी विधि ।

माजूफल का घूर्ण २ पींड कीसीस ५ पींड मयूल का गोद ४ भींस पानी १२ ग्यालन क्रियाशोठ अथवा आलततरे का तेल २ द्राम ॥

### चौथी विधि ।

माजू फल १२ पींड कीसीस ४ पींड गोद ३॥ पींड पानी १८ ग्यालन । ऊपर लिखी दो प्रकार की स्याही में जो पानी का भाग लिखा

है उसमें से चार भाग का तीन भाग अर्थात् तीन हिस्से पानी में पहिले गाजूफल को आग पर एक घंटा चढ़ाना चाहिये और गोंद का जो परिमाण लिखा है उससे दूने पानी में गला के मिलाना होगा याकी चौथाई पानी में कौसीस निसा के सब को एक संग मिला डालना और पीठे से आलकतरे का तेल देना ॥

### व्ल्यू ब्लेक काली नीली स्याही ।

कौसीस आधसेर गाजूफल डेढ़सेर, पानी दससेर कत्या एक छटांक नीला रंग आधी छटांक पीली पुड़िया का रंग (मजार में बिकती है) २॥ २ती । पहिले गाजूफल को पीस के दससेर पानी में भिगा रखे फिर आग पर चढ़ाओ जब गर्म-हो जाय तब कौसीस और कत्या डाल देय जब देखो की रंग खूब काला हो गया हो तब उतार के छान लो और आठ दश दिन उनी तरह रहने दो फिर दुबरी दफे छान के नीला रंग और पीला रंग मिला दो ॥

### श्रीनवलाक वा सवुज स्याही ।

पांच भाग गाजूफल के चूर्ण को २०० सी भाग पानी में मिला आग पर चढ़ाय के जलाओ फिर छान लो फिर पांच भाग कौसीस को चार भाग लोहे के चूर्ण के साथ मिला के उसमें आधा पाइन्ट नील और तीन भाग मलफिउरिक एसिड (गन्धक का तेजाब) मिला दो । यह स्याही लिखने के समय हरी दिखलाई पड़ेगी फिर काली हो जायगी ॥

### हरी स्याही ।

जंगाल १ छटांक, कमआफ टारटार (यह एक प्रकार का निसक है अंगरेजी दवा खान में मिलता है) आधी जटांक पानी सयापाय दोनों

चीजों के पानी में मिला के आगपर चढ़ा दे। जब आधा पानी रह-  
जाय तो छान लेय । यह स्याही बहुत उत्तम होती है कितने लोग इसे  
जंगाल के समाने नीला घोषा भी डालते हैं ॥

### लाल स्याही ।

ढांक अथवा पीपल की छाल को जरासा लोप और बेर की पत्ती  
हाल कर चतुर गुण जल में पकाओ जब चौथाई जल रहजाय ६ मासा  
फिटकिरी डाल दे ॥

### दूसरी विधि ।

बहुत लकड़ी एक छटांक, फिटकिरी आधी छटांक क्रिमआफ टार  
टार आधी छटांक इन तीनों चीजोंमें सेरभर पानी डाल आगपर चढ़ाओ  
जब पानी आधा रह जाय तब आधी छटांक टाक का गोद मिला दे।  
जब गल जाय तब पीने चार तोला रेवटी फाइड स्पिरिट और पांच  
मासा भर कचनियल का शर्क मिला दे। यह स्याही बहुत ही सुन्दर  
होती है ॥

### सुनहरी स्याही ।

सोने के बर्क को गोद के पानी में सूब महीन घोंटो और जरासा  
उममें रसकपूर मिला दे । इस स्याही से लिख कर किसी चिकनी चीज  
के घोंटने से शहर चमकीले हो जाते हैं यही तरकीब रुपहली स्याही  
की भी है इसमें चाहे रसकपूर न मिलाये ॥

आतशवाजी ।

नाम	शोरा	गंधक	कादना	लोहचूर्ण	लहसुन	तमालपत्र	बराही
धारुद	४ तोला	१० तोला	१२ तोला	"	१६ तोला	१६ तोला	आ. तो.
गुलरेश	१२	३	१२	६	"	"	"
नाभपाल	१ सेर	१ पाय	३ शर्करा	"	"	"	"
कलाधोर	१२ तोला	२ तोला	८ तोला	तोला ५	"	"	"
घजारा	१०	२	४	५			
करंज	४	४	८	३			
जूही	१४	२	४	५			

गुलरेश (कुलकर्णी) पट्टि से शोरा गन्धक और लोहचूर्ण तीनोंको मिला के सूख गहरीन पीसे। फिर लोहचूर्ण धारुद से कुछ मोटा अर्थात् धारुद की तरह पीस के मिलाओ और एक इञ्ची से दो इञ्ची तक के खोल में भर दो। इसके छुड़ाने से जतनीन तक फूटों का गजरा सा दीख पड़ेगा (जूही) यह आतशवाजी बहुत ही सुन्दर होती है इसकी धारुद सूख न पीन होना चाहिये ॥

फुलेल बनाने की सहज उपाय ।

सन्दूक के ढकने की तरह एक टीन का बरतन बनाओ, जिसके पेंदे में किनारे की तरफ एक सूराख रहै और उस सूराख में एक गल धाहर की तरफ लगाओ। सूख ताजे और खुगबू दार गुलाबके फूलकी पत्तियां तोड़ के उपरोक्त ढकने में बिछाओ (पत्तियों को धाक बाध इञ्ची से ले के एक इञ्ची तक होनी चाहिये) फिर उसमें घोड़ा सा तिलका तेल डाल दो जब पत्तियां तेल में अच्छी तरह भीग जाएं तब जिसके ऊपर और एक धाक पत्तियों की लगाओ और तेल डालो इसी तरह जितना तेल बनाना होय उतनीही धाक पत्तियों की लगाते जाओ और तेल डालते

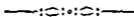
जाओ एक दिन तक तेन में पत्तियों को भीगने दो (एक दिन से ज्यादा नहीं रखना नहीं तो पत्ती सड़के तेल खराब हो जायगा) फिर काफी प्रेश में उस बरतनको रख दियाओ क्योंकि काफी प्रेशमें चीज सूख दियाई जाती है और तेन भी खराब नहीं जाता और नल के नीचे एक बरतन रख दो जब दियाओगे तब सय तेल उस नल के रास्ते से बरतन में चला आवेगा यह तेल बहुत मज्ज में और बहुत सुगंधुदार बनता है इस रीति से घेला नमेली आदि जिन फूल का तेल बनाना चाहो वही बन सकता है जितना ताजा और सुगंधुदार फूल होगा उतनाही तेल भी अच्छा बनेगा ॥

### कुलफी की बरफ ।

पहले घतूरे के फूलकी तरफ थोड़ीसी टीनकी चोंगी बना रखो जिसकी चौड़ाई की तरफ ढकना रहे और पतली तरफ से बन्द रहे यदि मलाई की कुलफी बनाना हो तो दूध को जला के भाड़ा कर लो और उसे चोंगी में भर के ढकने से बन्द करलो और आटेकी छेई ढकनेके चारो तरफ लगा दो जिस में ढकना खुल न जाय फिर एक छ्वांटी में बरफ के टुकड़े भरदो और उन चोंगीं को उसमें गाड़ दो बरफ के पाय थोड़ासा नमक भी मिला देना फिर उस छ्वांटी का मुख ढांक उसके चारी तरफ कम्बल लपेटो कम्बल में लपेट के ठण्डी जगह में रख दो । तीन चार घंटे बाद दूध जन जायगा । जब बरफ खानी होय तब उसमें से एक चोंगी को निकाल कर उसका ढकना खोलो और दोनों छ्वांटी से पकड़के रगड़ो अब उस में से कुलफी निकाल आवेगी यदि नींबू की बनाना होय तो चिनी को पानी में घोलके उसमें थोड़ा सा नींबू का रस मिला देना और दूध की जगह उसी को चोंगी में भर देना ॥

## घर के खर्च लायक थोड़ीसी साबुन ।

कार्बोनेट आफ सोडाको साफ जल में डालके सीपका या पत्यलका घूना मिलाओ, जब पानी दूध की तरह हो जाय तब आग पर चढ़ाओ थोड़ी देर बाद उसमें से थोड़ासा निकालो की २।४ बून्द नाइट्रिक एसिड पाने शेरिका तीजाय डाल के देखो कि उसमें बुलबुला उठता है या नहीं जब बुलबुला नहीं उठे उसी समय घरतन के भाग पर से उतार लो और एक दिन तक टका रहने दो, फिर ऊपर का खार अलग कराओ (परन्तु नावधान रहना जिसमें बहुत हवा न लगे) फिर नारियल का या तिल का तेल या दोनों का तेल मिला कर एक कढ़ाई में रख भाग पर चढ़ाओ जब तेल अच्छी तरह जल जाए उसमें ऊपर लिखी खारका पानी डालते जाओ और चलाते जाओ जिसमें जले नहीं जब गाढ़ी होने लगे तब थोड़ासा नीम डाल दो और चलाते जाओ इसी समय जो सुग्घूकी चीज डालनी हो सो भी मिला दो और उतार लो जब यह जग जाय तब गृहस्थ के रोज के खर्च लायक अच्छा साबुन बन जायगा ॥



## इंग्लैण्ड यात्रा की समालोचना ।

जब ब्राह्मणों को कौन पूछता है बहुत काल पर्यन्त ने आशा रखते आये कि जब ब्राह्मण लोग बिलायत जाने की व्यवस्था देने बन्त में जब देखा कि यह लोग घात, गदूरदर्शी, स्वार्थी, घब्रुट, और ऐसे अस्त्रीय चित्त के हैं कि कभी स्वप्न में भी बिलायत जाने को न कहेंगे और यही लोग हमारी उन्नति के बाधक हैं यदि इन लोग इनके आँसुओं को पहिने ही काट डालते तो अब तक बहुत उन्नति कर लेते । कहने का तात्पर्य यह है कि लाला रोशनलाल की पैरिटर हो के बिलायत से आये हैं

ने द्वीपान्तर घर्ती शत्रुओं से अत्यन्त उपद्रुत हो कर उनके जीतनेके लिये अपने पुत्र भुज्यु को सेना के साथ नावपर समुद्र में भेजा, जब यह नाव समुद्र में बहुत दूर पहुंची तो हवा से टूट गई, तब भुज्यु ने अश्वनीकुमारों की स्तुति की, उन्होंने ने सेना सहित भुज्यु को अपनी नावों पर बिठला कर तीन दिन रातमें पहुंचा दिया । इस्से भी समुद्र यात्रा सिद्ध होता है जिन्हें अर्थ में शंका हो ग्रन्थ देख लें ॥

भविष्य पुराण में भीम युधिष्ठिर के सम्याद में यह कथा लिखी है कि कांचीपुरी में रत्नसेन नामक एक राजा था उसके देश में देव स्वांगी नामक वेद वेदांग पारग ब्राह्मण था जिसकी स्त्री का नाम धनवती था उसके सात पुत्र और एक गुणवती नाम कन्या हुई एक दिन कोई भिक्षार्थी ब्राह्मण आया उसने गुणवती को देखकर कहा कि यह सप्तपदी में विधवा हो जायगी सो सिंहल में सोमा नाम एक धोविन है यदि वह तुम्हारे घर आवै तो उसका वैधव्य नष्ट हो जाय अर्थात् विधवा न होय । यह बात कह कर ब्राह्मण तो भिलाटन को गया, उसकी माता धनवती ने अपने लड़कों से कहा कि जो पिता माता का बात माने वह बहन के साथ सोमा (धोविन) लाने को सिंहल जाय । पुत्राकचुः ॥

अन्तरादुस्तरःसिंधुः शतये।जनविस्तरः । अशक्यंगमनंतत्र  
नक्षसागमनेवयम् ॥

लड़कों ने कहा यीथ में समुद्र बड़ा दुस्तर है, सौ योजनका विस्तार है हम लोगों में सामर्थ नहीं है कि वहां जाय, तब देवस्वामी लड़की का पिता बोला कि मैं सात लड़के वाला हो कर भी अपुत्रहूँ, तब छोटा लड़का शिवस्वामी बोला मेरे रहते कौन सिंहल द्वीप में जायगा उस बहिन के साथ वह सिंहल को चला गया यहां सोमा के घरके पास रहा फिर क्षण भर में सोमा ने दोनों को पार उतार दिया और कांची पुर

पहुंचे । जिस्का दृष्टान्त अब तक मौजूद है कि हिंदुओं में सप्तपदी के पूर्वही लड़कियों को धोबिन के घर सुहाग लेने को भेजते हैं । विचार करिये कि यदि समुद्र यात्रा का निषेध होता तो शिवस्वामी अपने ब्रह्मिन को लेकर वहां क्यों जाता । गर्ग संहिता द्वारिका खण्ड के तीसरे अध्याय में लिखा है कि, आनर्त नाम राजा सूर्य्य वंश में हुआ जिसके नाम से समुद्र में आनर्त देश है । दैवत उसका पुत्र चक्रवर्ती था, उसने कुशस्थली बना कर राज्य किया ॥

योमट्ट भागवत के अष्टम स्कन्ध के २४ अ० में सत्यव्रत राजा से भगवान ने कहा है—कि तुम सब भीषघ और बीज लेकर सप्त ऋषियों के साथ बड़ी नाव पर बैठ समुद्र में अश्वकार में ऋषियों के तेल से विचारोगे ॥

### भारत सारे १४ अ० ।

“कृष्णाज्जुनौ गतौलङ्का याज्ञीये घन साधने” ओ कृष्ण और अर्जुन यज्ञ के घन लेने को लङ्का में गये । पद्म पुराण के क्रिया विगसर में लिखा है तुम दुःख को छोड़ दे, मेरी बात सुने । समुद्र के पार पक्ष द्वीप में दौ-ब्यन्ती नामक पुरी इन्द्र की पुरी के समान शोभायमान है उस पुरी के राजा का नाम गुणाशर है उसकी स्त्री का नाम सुशोला और कन्या का नाम सुलोचना है सो न तुझारे समान सुन्दर और न उसके समान कोई सुन्दरौ है यदि स्वर्ग भोग की इच्छा करना चाहते हो तो उसे बियाह करे ॥

भारत के महा प्रस्थान पर्व का वाक्य है “क्रमेण ते ययुर्वीरः लौहित्यं सलिष्कार्णवम्” फिर वे क्रम से लौहित्य सागर (लाल समुद्र) को गये । इत्यादि अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि पूर्व समय में लोग किसी द्वीप द्वीपान्तर में या समुद्र पार जाना दाय नहों समझते थे और अब भी सेवाय एक विनायत के अन्य देशों में लड़ाज पर बड़ के बराबर ब्राह्मण सत्रियादि जाते हैं उन्हें कोई जात च्युत नहीं कर सक्ता । छोड़े दो रोग ज्ञेय कि मिय के युद्ध में हजारों हिन्दू गये थे, सब पर विदित है कि ब्रह्मा में सब तक हिन्दुओं को



पलटने पड़ी हैं, चीन के कई बन्दरों में हिन्दू रहते हैं मिर्च और कालेपानो बराबर हिन्दू पाते जाते हैं हाल ही में एक हमारे परम मित्र पं० रामसहाय डाक्टर जोकि आज कल आगरे में डाक्टरों करते हैं, सकुटुम्ब जहाज पर चढ़ के कालेपानो नामक प्रसिद्ध टापू में जा वहाँ से अपने स्वसुर को जो एक सु-कहमें में कैद कर के भेजे गये थे लाये। कलकत्ते से ६ दिन रात में वहाँ जहाज पहुँचता है। बिलायत जाने में २१ दिन रात लगता है। उन्हें कोई भी दीपों नहीं कहान जात बिरादरी के लोग उन्हें जात से प्रलग किया है ॥

अब निषिद्धक वचन सुनिये जिन्हें प्रायः दुरामिमानो पुराने नजीर के फकोर पोथाधारों जो मूल मंत्र जान सदा जिज्ञास में टुघलाते रहते हैं और जहाँ किसी ने पूछा महाराज बिलायत जाना चाहिये या नहीं ? भौघ्रही त-  
म्बाजू चर्चित कट, मुखसे लहरके समाग उगल देते हैं ॥

समुद्र यात्रा स्त्रौकारः कामण्डल विधारणम् ।

इमान्कलियुगेधर्मान् वज्यानाहुमनौषिणः ॥

समुद्र यात्रा करनेवाले का स्त्रौकार, कामण्डल धारण, इत्यादि धर्मों का अनुष्ठान कलियुग में वर्जित है। यह बृहन्नारदोंय पुराण का वचन है ॥

आदित्य पुराणे ।

द्विजस्याथ्वीतु नौयातुः शाधितस्यापि संग्रहः ।

समुद्र में नाव पर यात्रा करनेवाले द्विज को ग्रहण करके भी संग्रहण न करना ॥

निर्णय सिंधौ ।

आंगार दाही गरदः समुद्र यायो च कुण्डशय्य कूटकारी ॥

मकान चलाने वाला, विप देनेवाला, समुद्र में जानेवाला, कुण्ड (पिता के जोते दूसरे से उत्पन्न) के रखनेवाला और कपट करनेवाला ब्राह्मण आदि में भोजन के लिखे निषिद्ध है इसमें खण्डन मण्डन दीनों के वचने लिखे दिधे गये हैं इसमें अधिक प्रमाण मिलना कठिन है बुद्धिमान जिस पक्ष को बलौ समर्थ मानें ॥

# आरोग्य दर्पण ।

द्वितीयखण्ड ।

जिसमें

वेद्युदि गमन द्वारा सृष्टा क्षीय्यक्षय पर पूर्ण दृष्टान्त से  
सेकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करने पर्यन्त सृष्टा अनेक  
प्रकार की सिद्धभीषधियां नित्यकर्म आदि से  
पूरित हैं जिसको पं० जगन्नाथ शर्मा  
राजवेद्य ने सर्वसाधारण के  
उपकारार्थे बनाया ।

आयुर्वेदोक्त औषधालय

जालसेनगञ्ज-इलाहाबाद

"चारिनेकचन्दालय" प्रयाग में मुद्रित हुआ ।

सिवाय प्रत्यक्षतांके किसीको छापनेका अधिकार नहीं है

द्वितीयवार १९०० ] फरवरी सन् १९८८ [ ... मूल्य १॥ ]

# सूचीपत्र ।

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
वेश्यादिद्वारोंकीव्यंक्षणपर व्याख्यान	१	गर्भवती होने का लक्षण	३८
हस्तमैथुन निषेध	९	गर्भपुष्टकारक उपाय	३८
कामशास्त्र रहित गणन निषेध	१२	जोड़ा लड़का होने का कारण	४०
प्रसवेच्छा	१३	नपुंसक लड़का होने का कारण	४१
स्त्री अयस्या विचार	१४	सीगन्धिक नपुंसक	४१
ऋतुपरत्व प्रसङ्ग विचार	१५	कुम्भिक नपुंसक	४१
मैथुन निषेध	१८	ईर्षक नपुंसक	४२
मैथुन में समय	१८	निर्कृष्टि गर्भोत्पन्न	४३
प्रीति वर्णन	२०	स्वप्न मैथुन से गर्भोत्पन्न	४३
नैसर्गकी आदि प्रीति के लक्षण	२१	गूंगा आदि गर्भों के कारण	४४
परकीया लक्षण	२३	भगमें बालकके न रोनेका समय	४५
गहिरी प्रीति के लक्षण	२४	पूर्वकर्मोत्सार दुष्टि का होना	४५
परपुरुषपरत स्त्रियों के संकेत	२५	अदृष्टि नासिक लक्षण	४६
अलभ्य स्त्री	२५	व्यतीत ऋतु में मैथुन निषेध	४७
सहज प्राप्त स्त्री	२६	दौहद के द्वारा सन्तान के ल०	४८
पतिध्रुक स्त्री के लक्षण	२७	अस्वाभाविक जन्म का कारण	५४
स्त्रीणां वैराग्यहेतु	२८	मासभेद से अङ्गों का घनता	५५
स्त्री के धिगहने का लक्षण	२८	आठयां गर्हने का बालक क्यों ]	
सम्भोग समय के भेष	२९	नहीं जीता	५७
गर्भोधान विधि	३०	गर्भगतता प्रथम कौन अङ्ग घनता है	५८
उत्तम सन्तान करने की विधि	३१	रसात्म जन्य पदार्थ	६०
ऋतुदान काल	३३	गर्भ में पुत्रादि का पहचान	६१
सन्तानार्थ मैथुन विधि	३५	नपुंसक गर्भ के लक्षण	६१

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
डाकूरी मत से गर्भ का लक्षण	६२	डाकूरी से शोथ का गुण	१०६
गर्भवती स्त्री के त्याग कर्म	६३	पुटपाक विधि	१०७
योनिरोग	६५	हृदय दर्द पर हिरणपुट पाक	१०८
२० प्रकारके योनिरोग के लक्षण	६६	इन्फ्लूएन्जा की दवा	१०९
योनिकन्द रोग	६८	अंगुलीज्वरसे बचने की उपाय	१११
योनिरोगकी चिकित्सा	६९	धीव्यं नृत्य करेवाली औषधि	११२
योनिरोग पर उत्तम दवा	७०	कामेश्वर मोदक	११५
मासिक धर्म की चिकित्सा	७१	किशकिश मोदक	११७
योनिशूल की दवा	७२	बानरी चूर्ण	११८
बन्ध्या की चिकित्सा	७३	कामदर्दनों मोदक	११८
प्रदर रोग का निदान	७५	अफीम प्रकरण	११९
सोमरोग का लक्षण दवा	७६	अफीम का धर्म	१२०
सूत्रांतिसार	७७	डाकूरीमतसे अफीमका बयान	१२१
चन्दगादि चूर्ण प्रदर रोग पर	७८	हरदी के गुण	१२२
परीक्षित औषधियां	८०	दीपन पाचन आदि नाम	१२४
कश्मिक शोधन मारण	८१	हरितिकी का गुण	१२६
स्वेदप्रदर की औषधि	८३	जुलाब	१२८
डाकूरी से सर्पविष की चिकित्सा	८३	आन्हिक कर्म	१३२
सर्पदंश विषप्रकर्ण	८६	प्रातःकाल उद्यान	१३३
वैद्यक से सर्पदंशन की चिकित्सा	८६	उपवीत धारण	१३५
सर्पों की उत्पत्ति	८९	श्रीचे सृतिका लेपन	१३६
रक्त शुद्धकारक अर्क	९१	दन्तधावन	१३७
ब्रणराक्षस तैल	९२	स्नान	१३८
दियमज्वर पर निम्ब्याद्य चूर्ण	९२	तीर्थ स्नान	१४०
नारायण तैल	९३	भारत के उन्नति का वैद्यक ]	
हिमसागर तैल	९४	प्रथमअङ्क है उसपर व्याख्यान १से	१६
रूसे का पानी	९५	औषधों की विज्ञापन	१६
तिला	९७	प्रशंसापत्र	२७
यङ्गेश्वर बनाने की विधि	९८		
श्रीभाग्य शुण्ठीपाक	१००		
अमृतभस्मातक पाक	१०२		
केशरायसेह	१०४		

## आरोग्यदर्पण—तृतीय खण्ड ।

वेश्यादि गमनद्वारा वृथा वीर्य्य अपक्षय और शारीरिक हानि पर पूर्ण दृष्टान्त ।

दूसरे खण्ड में मैं हम विषय को भलीभांति दर्शाय चुका हूँ कि जब तक आर्य्यगण हस्तमैथुन वेश्यागमनादि द्वारा वीर्य्य के अपव्यय से परलित न होंगे भारत का कल्याण होना अति दुष्कर है, क्या यह मनुष्य जो अक्षयनीय अमूल्यरत्न सृष्टिकारक जीवन मूल को उन्मत्तों के भांति प्रतिदिन निरूपृही होके ऊसर भूमि में फेक रहा है अकाल मृत्यु से बच सकता है ? पुत्र वाग, धनधान, विद्वान और यज्ञवानोंकी कोटि में उसकी गणना होगी ? कभी नहीं । अल्प वीर्य्य ही होने के कारण आर्य्योवर्तों का राज्य मुसलमानों ने ले लिया और असंख्य भँकुआ ऐय्यासों को लीड़ी गुलाम बना के सर्वदा के लिये विचारे मिटे मिटाये कधरे कधराये हिन्दुओं के छाती पर आरा चलाने के लिये इसी भारत में छोड़ गये । मुसलमानों ने भी जब ढाल तरवार जुनाहों के गले में हाल आप दिन रात वेश्यागमनादि में लिप्त हुये और उधर माहटों के चिप पर घीर रस को अंतर्दशा प्राप्त हुई अथवा अंगरेजों के सौभाग्य देवता ने उनके द्वारा रास्ता साफ करा दिया कि बिना प्रयास अकंटक राज प्राप्त हुआ, जिसकी सौ धर्य से अधिक हो गये कि वीर्य्य रक्षाही के प्रताप से भारत का शासन कर रहे हैं, तो भी कितने अन्धों को नहीं सूझता कि जब तक अंगरेजी विद्या पढ़ किसी बड़े राज्याधिकार में प्रवृत्ति नहीं होते तबतक विद्याह नहीं करते क्योंकि अल्प वीर्य्य में बुद्धि विषय्यय रहती है और पूर्ण वीर्य्य की गनीया शक्ति अनुमति पदार्थ पर झटपट दीहती है ।

देख लो एक पक्षयाले नेडाल कांग्रेस के लिये फटिगहू हैं दूसरे लोग निपरीत कहते हैं कि यह न होना चाहिये । कांग्रेस अथवा मिलने

देशोपकारक कार्य्य होते हैं इनमें प्रथम बहुत परिश्रम और दीर्घ धूप करनी पड़ती है और बुद्धि शक्ति जो धीर्य के आधीन है यह साध्य देती है कि इस आरंभित कार्य्य में अवश्य भलाई होगी और इसका अन्तकाल अच्छा होगा सो जो लोग जितेन्द्रिय और धीर्य के अपव्यय से बँधे हुए हैं उनकी बुद्धि शक्ति किसी व्यापार अथवा पारमार्थिक कार्य्य को नहीं रोकती बल्कि और उत्तेजित करती है और स्वार्थ रक्षा के उपरान्त परमार्थ में भी उनका मन उरसुक रहता है और जो वेश्यादि गमन के द्वारा धीर्य का नाश कर चुके हैं या कर रहे हैं उनका उत्साह दिन प्रति दिन हट और हीन होता जाता है उन्हें आवश्यक स्वायं और लौकिक सुख जो लाम्पटता का अन्तिम प्रमोद है चित्त में बसा रहता है उससे उनके मन को अवकाश नहीं मिलता महर्षियों ने जो धीर्य बढ़ाने की अनेक औपधियां लिखी हैं वह केवल लाम्पट्य और तुच्छ विषयके लिये नहीं किन्तु मस्तिष्क शक्ति और अखण्डबल धारण और प्रबल साहस की वृद्धिके प्रयोजन से और ब्रह्मचर्य्य व्रत का भी यही अभिप्राय है कि प्रथम धीर्य्य रक्षा से विशोपाजर्जन होगा पश्चात् गृहस्थाश्रम आदि के प्रबन्ध में निपुण-ई होगी सो हमारे देश में शास्त्र के विपरीत ब्रह्मचर्य्य का प्रथमही लोप हो गया, साधारण जनो में तो अस्वायस्या के विवाह और धीर्यके नीचे गर्भाधान के द्वारा अल्प बीर्य्यता और मानुषी सृष्टि की दुर्बलता का विस्तार हो गया और धनवान तथा प्रभुता वालों का धीर्य्य वेश्या और व्यभिचारिणियों के हाथ बिक गया यहां तक नीयत पहुंची कि जन्मा-प्टमी रागनयमी आदि उपासना पर्व्व में भी वेश्याओं का हाव भाव कटाक्ष मुख्य पूजापचार समझा गया इस साल माघ मेषे में एक नाहक-शाही महन्ध के यहां महीनर भर यही मदन महीपति का डंका बाजता रहा सदैव बार धनिताओं के कटाक्ष से दरवार भरा रहता था धन देने की पूर्णता का प्रमाण इस समय वेश्या ही जिस के विषय भर्तृहरि राज श्रुति ने यह लिखा है—

“वेश्याधीमदनज्वाला रूपेभ्यनसनेषिता । कागि भिस्तग्रहयन्तेयीवता निधनागिप” ॥

दोहा ।

गनिका कनिका अगिन की रूप समिध मजबूत ।  
 होम करत कामी पुरुष धन यौवन आहूत ॥ १ ॥  
 बुद्धि विवेक कुलीनता तबही लो मन माहिं ।  
 कामवाण की अगिन तन जवलों भभकत नाहिं ॥२॥

भगवान् मनु ने भी लिखा है कि पर स्त्री, गमन से बढ़कर आयुर्वल का हरनेवाला कोई नहीं है "यथा-नातःपरमनायुष्यं परदारोपसेवनं" कारण यह कि बुद्धि ज्ञान पराक्रम का मूल कारण जो वीर्य्य है सो उसी के नाश और अपहरण की चेष्टा वेश्या लोग करती हैं जिस प्रकार भेदक औषधियां फुटकी आदि अंतर्द्वियों के मूल को दूँड २ के भेदन काती हैं ऐसे ही शुक्रतत्व को उत्तम करने और बाहर निकालनेकी विविध चेष्टा वेश्या लोग करती हैं लोग उसी को सुख समझते हैं यह नहीं सोचते कि नस नस का प्राण खींच लेती हैं-जैसा किसी महात्मा का बचन है:-

दर्शनात्हरतेचित्तं स्पर्शनात्हरतेवलम् ।

मैथुनात्हरतेवीर्य्यं वेश्याप्रत्यक्षराक्षसी ॥

भर्तृहरि जी लिखते हैं-संमोहयन्ति, मद्यन्ति, वि-  
 डम्बयन्ति, निर्भर्त्सयन्ति, रमयन्ति, विपादयन्ति, एताः  
 प्रविश्यसदयं हृदयंनराणां किंनाम वामनयना न समा-  
 चरन्ति ॥

बस बहुत लिखने से शङ्कारस के रसिक जन खिन्न होंगे पर क्या किया जाय शास्त्रकारों ने ऐसाही कहा है ॥

सोरठ-गनिका के मृदु ओठ, को कुलीन चुम्बन करै ।

नट भट चिट ठग गोठ, पीकपात्र है सवनको ॥

शुद्धारस के रसिक जन जो चाहें सो समझे हैं पर धातुक्षीणता और विषय लम्पटता दोषसे जो २ अथगुण और युराष्टयां उत्पन्न होती हैं उनकी गधाही अनेक पुराण और इतिहास दे रहे हैं देखिये ॥

“जब गुज्जोर के राजा को मुसलमानोंने रणमें जीता तो उस फौज के एक प्रधान मुसलमान सरदार खां ने चाहा कि गुज्जोरकी रानी अंति रूपवती है किसी उपाय से उसके साथ भोग करें उसके मिलनेकी तत्बीर और बन्धिसँ करने लगा एक दिन सरदार खां स्वयं रानी के महल में जा पहुँचा और अपने नौकर से उस रानीके दासी को बुलाके कहा कि तुम रानी से जाके बोलो कि सरदार खां आप की खातिर सुद मुलाकात के लिये तसरीफ लाये हैं ता. कि आप को खयाल न गुजरे कि हमारी किसी सूरत में तहफोर हुई, अब आप को क्यादः इसरार करना अवस है, अगर अब भी हमारी अरज़ को कबूल न करमाइयेगा तो उस यही समझिये कि आखिर को तो हमारे अस्त्रियार में हैं, मगर कोई काम सिलाफ मरजी के हेतमें लुप्त नहीं रह जाता आगे महारानी साहिबा को अस्त्रियार है। दासी जाके रानी से सब वृत्तान्त सुनाया रानी (शोकमें डूबकर मनही मन में विचार करने लगी) हाथ एक तो पतिके प्राण गये दूसरे यह सञ्छाधम मुझे अपनी स्त्री बनाकर रखना चाहता है क्या मुझे योग्य है कि क्षत्री वंश में जन्म ले के अपने प्राणप्यारे पति के बध करनेवाले की रमणी बन कर जीऊँ प्राण परित्याग करना उत्तम है परन्तु आर्यकुल धैरी सञ्छ की शय्या स्वीकार करना अच्छा नहीं दासी से कहा कि खां साहब से कह दो कि रानी आप से क्याह करना पसन्द करती हैं एक रात का अवकाश मिले कल खां साहब रंगमहल में पधारें। दासी ने आके खां साहब से कहा खां साहब अति प्रसन्न हो डेरे में पहुँचे थे कि रानी के महलों से अमूल्य जड़ाऊ आभूषणादि और रँगीले वस्त्र लेकर खजानची आया और खां साहब से कहा कि गरीब निवाज़ यह शादी की तज़र महारानी साहिबा ने भेजा है और निवेदन किया है कि कल आप इन्हीं वस्त्र आभूषणों को धारण करके रंगमहलों में पधारिये खां साहब ने कहा



बहुत अच्छा प्रातःकाल खां साहब गुम्बू कर बस्त्र आभूषण पहन सवारी पर बैठ महलों में गये रानी आदर पूर्वक सजी हुई मसनद पर बैठाया घोड़ेही देर गुगरा हीगा कि सरदार साहब के सकल शरीर में आग सी लग गई और मूर्च्छित हो गिर पड़ा चेहरा नीला पड़गया नीकरचाकर सब पधड़ा उठे रानी (जब देखा कि पूरा काम हो गया) खां साहब से कहा कि जो होना था सो हो गया यह बस्त्र जो आप पहने हुये हैं विप से रने हैं आप मेरी इज्जत लेनेपर तैयार हुये उसके-बदलेमें, मेरी और आप की मृत्यु एक साथ होगी इतना सुनते ही सरदारके गीकरोँ ने चाहा कि रागी को पकड़ लें रानी महल पर से कूदपड़ी और प्राण त्यागकर स्वर्गधाम का रास्ता लिया इधर खां साहब भी रोमे में पहुंच कर दीज्ञर का रास्ता लिया पर स्त्री गामियों का यही नतीजा सबको मिलेगा और मिलता है ॥

पाठकगण को तिनकौड़ी बायू कलकत्ता निवासी के दुर्भाग्यवसार छोटी अवस्था में फांसी पानेका हाल याद होगा कि जिसका आन्दोलन सन् ८६ के आप्यांघत्त भर के सम्वाद पत्रों में हुआथा । तिनकौड़ी नामक एक धनाढ्य बंगाली का पुत्र जिसकी अवस्था सिर्फ १४ वर्ष की थी मद्य के नशे में क्रोधातुर हो एक वेश्या (जिसे ५ हजार रुपया दे चुका था) को ३५ छूरी मारी जिसके कारण फांसी पाया, यह कोई नई बात नहीं है इसी प्रकार असंख्य आत्मघात रंड़ियों की बदौलत हुआ करता है क्योंकि वेश्या प्रसङ्गादि से अधिक शुक ध्यय जनित मन दुर्बल होने से स्वयं आत्महत्या करने की इच्छा कभी २ बलवती हो जाती है । हे प्यारे भ्रातृमणों ! पर स्त्री तथा वेश्या को विप के प्याले के समान दूरही से त्यागकरो और ऐसे इन्द्रियजित बनो कि अपनी स्त्रीके अतिरिक्त यदि चेत आप से अप्सरा (परी) भी आके गमनेच्छा प्रगट करै तो पं० लोलिम्बराज का अनुकरण करो तभी तुम्हारा कल्याण होगा और देश का मंगल कर सकोगे ॥

दक्षिणे, दक्षिण श्रीपुर नाम एक नगर या तिसमें श्रीचन्द नाम एक

राजा रहता था उसी नगर में लोलिम्बराज वैद्य भी रहते थे और वहाँ सकल कला कोसिदा सर्वाङ्ग सुन्दरी रत्नकला नामक बारांगणा (वेश्या) भी रहती थी उस वेश्या और उक्त राजा से दास्ती थी । एकदिन हमीर में राजा ने पूछा, हे लोलिम्बराज ! वेश्यागमनमें क्याफल है ? लोलिम्बराज ने कहा महाराज ! वेश्या महापाप शील होती है "आयुःक्षतिविफलता" आदि अनेकप्रमाण शास्त्रोंमें मिलते हैं इससे वेश्यागमनकरना कोईविद्वान् अच्छा न कहैगा । यह बचन सुन राजा सभाजन्यों को दिसर्जन कर अंतःपुर ( रत्नवास ) में जा रतों से जड़ित शय्या पर लेटगया परन्तु इस चिन्ता से कि कौन उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करे निद्रा न आती भई, रत्नकला ने पूछा हे स्वामिन आपको नोंद क्यों नहीं आती राजा ने कहा जिस उपाय से लोलिम्बराज वेश्यागमन करे वह विधि रही तो हमें नोंद आवै । यह हँस कर बोली कि आप चिन्ता त्याग आनन्द से शयन करें, हम करही इस कामको करेंगी । प्रातःकाल रत्नकला पलङ्ग से उठ अपने गृह में आय निज गृह द्वार को कदली खम्भ बन्दनघोर गन्ध मालय आदि अलङ्कारों से चमत्कृत कर संध्या समय दरवाजे पर खड़ीहो लोलिम्बराज की राह जोहने लगी । लोलिम्बराज के सभा में जाने का वही मार्ग था उस आही तो गये, रत्नकला को देख पूछा ( कि-मुत्सयमद्य ) आज क्या उत्सव है उसने कहा कि त्रिभुवन जननी भगवती का आज पूजन है हमारी इच्छा है आप भी चलिये दर्शन करिये । उसके सीठी बचन को लोलिम्बराज सुन देवी के दर्शनार्थ उसके साथ भीतर गये, दोनों को भीतर गयेहुये देखकर पूर्व शिक्षित दास ने केवाड़ा बन्दकरलिया, लोलिम्बराज भीतर भगवती की मूर्ति को न देख चन्द्र चिन्द्रकावत् पलङ्ग को निरीक्षण कर पूछा कि यहपलङ्ग किसलिये है ? रत्नकला ने कहा सम्भोगार्थ है, हमारी इच्छा थी कि आप को देवी दर्शन के बहानेसे यहां लाकर अपनी कामना पूर्ण करें । लोलिम्बराज ने भक्ति चित्त हो स्वधर्म विचार कर कहा कि मैं वेश्यागमन नहीं करता । ऐसा सुन वह विषादवती हो बोली "स्वागतां च स्त्रियं त्यक्त्वा भूषणहत्या मवाप्नुयात्" यह धर्म ग्रंथ का मत है इसलिये आपको सम्भोग करना उचित है । लोलिम्बराज ल-

जित हे।के धोले कि अच्छा तुम्हारे साथ वाणी करके रति करेंगे शरीर और मन करके नहीं ( मैथुन आठ प्रकार का होता है ) ।

**स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणं । संकल्पो-  
ध्यवसायश्च क्रिया निष्पत्तिरेव च ॥**

स्मरणं ( बारंबार चिन्तन करना ) कीर्तनं ( मुख अङ्गादि और उसके धोल चाल की बारंबार तारीफ करना ) केलि ( हँसी दिखनी करना ) प्रेक्षणं ( प्रेम से देखना ) गुह्यभाषणं ( गुप्त बात करना ) सङ्कल्प ( सम्भोग करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना ) अध्यवसायः ( किसी प्रकार प्रसङ्ग उससे अवश्य करें उसमें परिश्रमकरना ) और ( निष्पत्ति सम्भोग करना ) ऋषियों ने यह आठों को मैथुनही में गणना किया है । बस लोलिम्बराज ताम्बूलरस से ( भित्त ) देवालों में हँसी दिखनी का सम्बोधन सहित रात भर में १२० पद्य युक्त श्लोक बना के लिखवाला । प्रातःकाल राजा के सभामें पहुँचे ( राजा तो जानताही था ) पूछा महाराज रात कहाँ रहे ( लो० ) वेश्याके घर ( राजा० ) फलक्ष्यामिला ( लो० ) एक पुत्र हुआ ( राजा ) वह पुत्र कहाँ है ( लो० ) उसीके घरमें है जाके देख लो राजा जाके दिवालों में श्लोक लिखेहुये देख परम विश्रमयापन्न होगया और लोलिम्बराज से क्षमा मांगी ( लो० ) ने कहा हमने तो क्षमा किया परन्तु अब तुम ऐसा कभी किसी विद्वान के साथ न करना । कहने का तात्पर्य यह कि जो लोग अपने अमूल्य जीवन को आनन्द से काटना चाहते हैं वे कभी घृथा वीर्य नष्ट नहीं करते क्योंकि इन्द्रियों की संयमता यही शारीरिक बल है सो इस पर लोग बिलकुल ध्यान नहीं देते ॥

शाजकल वेरवा संसर्ग प्रभृति कारणों से देहमें शुक्र का भाग अत्यंत अल्प तथा दीर्बल्यादि अनेक दोष प्रायः देसे जाते हैं और धातु वृद्धि एवं पुष्ट होने के अर्थ दैटों के शरणागत हो अनेकानेक औषधों का सेवन करते हैं । इस तरह औषध सेवन करना असङ्गत है, यह हँस नहीं कह सक्ते हमारे कहने का प्रयोजन यह है कि जब तक मूल विषयों की ओर दृष्टि न दी जायगी अर्थात् जिन २ कारणों से उक्त दोष उत्पन्न होते हैं

पहलेही तत् विषय में सावधान न होकर अनर्थक औषध सेवन करने से क्या फल है ? कुछ भी नहीं । कारण यह है कि जैसे कोई धनवानं मनुष्य मूर्खता से बेपरिमान धन खर्च करने से थोड़ेही काल में त्रिम तरह एक धारगी दरिद्र हो ऋण रूपी ज्वाला में जलने लगते हैं और येही अप-व्ययी धनवान स्वयं सावधान न हो के खर्च किया हुआ धन स्वयं न कमानेसे अन्तमें सहस्रों चेष्टा करने पर भी ऋण परिशोधन तथा सम्पत्ति रक्षा में किसी प्रकार समर्थ नहीं होते और प्रायः देखा गया है कितने ऋणजाल में जर्जरित जन अन्तमें सब सुख विसर्जनकर दरिद्रों की भांति शाकान्न भोजन करके स्वकीय ऋण शोधन में कटिबद्ध हुये तथापि आशा सम्पूर्ण नहीं देखी गई । इसीतरह वे युवकगण वेश्यागतनादि में बेपरि-माण धातुनष्टकरनेवाले जिन्हें स्त्री प्रसङ्ग तथा संतानोत्पत्ति करनेकी पूर्ण सामर्थ्य थी, परन्तु अपरमित शुक्र नष्ट करते २ अन्त में एकवारगी धातु हीन एवं धातु दीर्घत्व तथा घञ्जभङ्गादि ( नपुंसक ) उच्छ्रित २ रोगा-क्रान्त हो (ऋणयस्त धनी पुरुषकी नाई) अपार दुःख भोग करते हैं और हजारों औषध सेवन करने से भी तज्जनित रोग से नहीं छूटते । इतनाही नहीं बल्कि वेश्या और परस्त्री के प्रेम में कितने समूल अर्थात् तन मन धन सुख सौभाग्य सब रसातल को चले जाते हैं—देखिये ॥

लङ्केश्वरी जनकजा हरणेन बाली तारापहारकतया  
प्यथ कीचकारव्यः । पाञ्चालिका ग्रहशातो निधनं जगाम  
तच्चेतसापि परदार रतिं न कांक्षेत् ॥

जानकी जी के अपहरण से रावण कैसी दुर्दशा के साथ मारा गया, तारा ( सुग्रीव की स्त्री ) के हरण से बालीकी मृत्यु हुई और द्रौ-पदी के हरण से कीचक का वध हुआ, अतएव बुद्धिमानों को चाहिये पर स्त्री गमन करने की इच्छा कभी मनमें भी न करें और भी देखिये पुत्रवा राजा उर्वशी अक्सरा की प्रेम रूपी फांसी में फसकर तहस नहस होगया इसलिये सत्पुरुष इस अमूल्य जीवन को क्षणिक सुख सम्पत्तार्थे विनष्ट करना नहीं चाहते ॥

## हस्तमैथुनादि निषेध ।

वेश्यादि गमन द्वारा जो कुछ अग्निष्ट इस शरीरको होताहै उसे मली भांति दर्शा चुके हैं, वैसेही बल्कि वस्से कुछ अधिक हानि और शरीरकी निर्मलता एवं अकाल मृत्यु हस्तमैथुन और गुदामैथुनसे होती है जिसका कुछ २ साल हम शारोग्यदर्पण के द्वितीयखण्ड में लिख भी चुके हैं ॥

इन दोनों कर्मों से लिङ्ग निर्बल, टेढ़ा अग्रभाग स्थूल और शक्ति हीन हो जाताहै । सुन्तेहैं कुरानमें कोई आयतहै कि सहम्मदने कहा है कि यदि स्त्री गर्भवती हो और पुरुष को कामकी इच्छा उत्तेजितहो तो यह गुदामैथुन करे, ऐसे पुरुष लखनऊ काशी आदि स्थानोंमें अधिक मिलेंगे । यद्यपि ऐसे २ अनाथार बन्द करनेको हमारी सरकार ने खास कानून जारी कर दिया है परन्तु जो फुसंस्कार बहुत दिनों से मूर्खों के दिल में जमा है एकाएकी छूटना सहा फठिनहै । इस स्थल में हमारी राय है कि यदि अपनी स्त्री गर्भवती हो और ६ मास से ऊपर हो उस समय यदि पुरुष भक्ति कामीन्मत हो (जिस्में प्रसंग ग करनेसे रोग होने का सम्भाव है) तो वेद की आज्ञानुसार नियोग करना उत्तमहै, अगाधे-सति किसी आरोग्य वेश्या से प्रसंग कर लेना अच्छाहै परन्तु गुदामैथुन करना पुरुष के लिये किसी हालत में अच्छा नहीं है । यह बात हम निस्सन्देह कह सक्ते हैं कि ऐसे २ दुष्ट कर्म प्रथम हमारे आर्य्य भाइयोंमें नहीं थे मुसलमानों के राज्यसे इसका प्रचार हुआहै और उन्हीं म्लेच्छों के साथ अधिक संसर्ग होने के कारण आर्य्य सन्तान यण भी उरु दुर्गुणों में परिपक्व और निपुण हो गये हैं ॥

हस्तमैथुन पहिले भी था प्रायः लोगों के मुख द्वारा अवण करनेमें आया है कि भगवान् विश्वामित्र ऋषि ने हस्तमैथुनसृष्टि को कियाथा परन्तु प्राचीन सत्ग्रन्थोंमें इसका कोई प्रमाण नहीं पाया जाता, लेकिन धर्मशास्त्र में इसके प्रायश्चित्त का विधान पाया जाता है और प्रायः

वैद्यक के सभी ग्रन्थों में गर्मी रोग होनेका ये कारण लिखे हैं (हस्ता-भिघातान्नखदन्त घातात्) हस्तभिघात (हस्तमैथुन) नख और दन्त के भिघात (घाजे २ कुकर्मा लोग लड़कों के मुख में लिङ्ग डालते हैं) से उपदंश रोग होता है इससे जान पड़ता है कि यह कर्म बहुत काल से प्रचलित है । हस्तमैथुन में लोगोंकी क्यों प्रवृत्ति हुई यह निर्णय करना कठिन है । इतना कह सकते हैं, एक तो पिताके स्वरूप और उष्ण वीर्य का दोष, दूसरे ठीक २ बालकों की रक्षा का न करना, तीसरे शिशुकाल से ही बुरे २ बालकोंका संसर्ग इत्यादि कारणोंसे मुकुलित वीर्यका मुख असमयमें ही खुल जाता है । यस लिंग स्थान में जहां किसी वस्तु का रगड़ लगा सुरसुरी धोष होने से एक प्रकार का आनन्द आना आरंभ हुआ तब उसे हस्त द्वारा शिशु का अग्रभाग खोलने और बन्द करनेकी इच्छा होने लगी । थोड़ेही काल ऐसा करनेसे वीर्य स्थलित हो जाता है । यस जहां एक दफे उक्त क्रिया से अति आनन्द मिला मूर्ख लोग उसीमें लिप्त हो जाते हैं और उसी मुख को अपने इष्ट मित्रों से कह कर उन्हें भी अव्यक्त रूप में गिरा देते हैं, यह नहीं जानते कि यही मुख हमको कुछ काल पाकर सर्वनाश करेगा । शरीर क्षीण बल वीर्य विहीन रमणशक्ति से दीन और मन मलीन कर देगा, शरीर निस्तूल, बुद्धिका इस शारीरिक और मानसिक स्फूर्ति नष्ट हो जायगी । हमको इस संसारमें जड़ पदार्थकी भांति होकर जीवन काटना पड़ेगा, हमको सन्तानरहित होने से दूसरे के बालकों को देख ललचाना पड़ेगा, जन्मभर वैद्य दकीर्णों की सुसामद करनी पड़ेगी ॥

कुछ दिन हस्तमैथुन करनेवाला बालक युवावस्थामें शुक्र मेह आदि रोगों से ग्रसित होता है । शीघ्र करते समय मूत्र के पहले या पीछे वीर्य का निकल जाना और स्वप्नदोष से भी पीड़ित होना, तथा प्रसंग में वीर्य का शीघ्र पात होना आदि उत्पात होता है । लिंग भी क्रमशः आकार में छोटा और निर्बल हो जाता है । गिर कमजोर, बिभारहीन और नेत्र भी कुछ ज्योतिहीन हो जाते हैं । एक अंगरेजी यंत्र है उसके द्वारा तरल वीर्य को देखने से जानागया है कि पतले वीर्य में छोटे २

रुमि पढ़ जाते हैं जिनका स्वरूप अण्डाकृति मस्तक और लम्बी पुच्छ वाले सूत्रवत् होते हैं ॥

केवल इतनेही लक्षणों पर निर्भर नहीं है, इस नीचवृत्ति क्षुद्र क्रिया हस्तमैथुन से इस शरीर को क्या २ हात्ति पहुंचती है और उसके द्वारा कौन २ सा दुःख भोगना पड़ता है, लेखनी में ऐसी पूर्णशक्ति नहीं है जो चित्र खींचकर दिखा दे परन्तु उक्त घृणित कर्म करनेवाले युवक गण उपरोक्त लेखोंको ध्यानदेके पढ़ेंगे तो आप ही उनके हृदय में चित्र खिच लायगी और धारंवार अपने कियेहुये दुष्कर्मोंपर पछतावेंगे और आशा है कि बहुतसे लोग जो अज्ञानतावश इस अमूल्यजीवनमूलमें अपने हाथ से कुल्हाड़ी मार रहे हैं चेत जायगे, और कितने चेतते भी होंगे । जयसे आरोग्यदर्पणमें हस्तमैथुन द्वारा शरीरनाशक दुरीलतसे वीर्यके सत्यानाश करनेका दोष और भविष्यतमें अनेक क्लेश होने का सम्भव दिखलाना आरंभ किया है तब से अनेक चिट्टियां उन युवकगणों की हमारे पास आई हैं और आती जाती हैं जो अज्ञानतावश होकर इस सत्यानाशी कार्य में लिप्त हो अपने अमूल्य जीवन को घृषा गँवाने में कटिबद्ध थे । वे लोग लिखते हैं । महाशय ! भवदीय रचित आरोग्यदर्पणको जिसमें हस्तमैथुन द्वारा वीर्यपात का दोष दिखलाया है पढ़कर पश्चात्ताप किया और शपथ किया कि आज से अब ऐसा दुष्टकर्म कभी न करूँगे परन्तु महाशय जो मैं इस काम को बहुत दिनों तक करता रहा उस कारणसे मैं इतना दुर्बल हो गया हूँ कि मेरे कमर में दर्द रहता है, पढ़नेमें चित्त नहीं लगता, कितनाहू रटते हैं परन्तु याद नहीं होता है, शिर कमजोर होगया है कलेजा कभी धक २ करने लगता है, मन उदास रहता है और बुरे २ ख्यालात् सूझते रहते हैं इत्यादि । इसकी कोई दवा लिखिये या आप के औषधालय में तैयार हो तो भेजें २० पारसल द्वारा भेजदीजिये ॥

पाठकगण, वे लोग उपरोक्त लेखों के अतिरिक्त और भी अपनी भीतरी रसोंको जो निरयस्क वीर्यपात के प्रभाव से उन लोगों को प्राप्त हुआ है लिखकर भेजते हैं, जिसका यथार्थ प्रकाश करना अनुचित जान

नहीं लिखा । इससे जान पड़ता है कि बालकों के दिलपर उस लेखका असर अधिक हुआ है, ईश्वर ऐसाही अच्छा असर मनुष्य के दिलपर पहुंचावे । इस इस लेख को मैं यहीं समाप्त करता हूँ । आगे कामशास्त्र के अनुसार स्त्री पुरुषों के लक्षण और जो वेश्यागमन में लिखे हैं और ऐसे चित्त के हैं कि उनके समझाने में विचारे आरोग्यदर्पणकी क्या ताकत है वे ब्रह्मा के उपदेश को भी न मानेंगे तो भी विवेकियों के उपकारार्थ यथा शक्ति कुछ लेख देता हूँ ॥

### कामशास्त्ररहित गमन निषेध ।

पाठकगण को याद होगा मैं इस वाक्य को लिख चुका हूँ "कोक पढ़े बिन रति करै सो नर पशू समान" जो मनुष्य कामशास्त्र के जाने बिना मैथुन करता है वह तद्विषयक सुख से वञ्चित हो शरीर से भी निकम्मा हो जाता है । हमें यह कहते शोक होती है कि आज भारतके प्राणी गण अत्यन्त रोग ग्रस्त क्यों हो रहे हैं ? कामशास्त्रके न जाननेसे, शायद लोग यह जानते होंगे और प्रायः यह भी कह देते होंगे कि कामशास्त्र तो विषयी पुरुषों का बनाया है । जैसे अपने आनन्द करने के लिये शाक्तमत ब्राह्मणों ने स्थापन कर लिया है, सो नहीं । व्यभिचारकर्म, परस्त्री गमन और अति विषयसेवन ये तो अवश्य लम्पट और कुत्सित पुरुषों के काम हैं परन्तु रीति पूर्वक स्वदार गमनादि में कामशास्त्र का ज्ञान बहुत उपयोगी है, क्योंकि कामशास्त्र स्त्री पुरुष के प्रसोद का बढ़ानेवाला है कि जिसकी क्रिया से उत्तम सन्तान हो सके हैं । अतएव उचित और प्रयोजन मात्र कामशास्त्र का ज्ञान और पाणिग्रहीता धर्म का सङ्गम शिष्ट सम्मत है । यह भी ठीक है कि जो जिसके गुण को नहीं जानता उसकी निन्दाही करता है । कामशास्त्र आयुर्वेद का अंतिम भाग है । अरिषियों ने जब देखा कि लोग अति कामातुर होकर अज्ञानता से अमूल्य रत्न और जीवन के रत्नस्व बीज को दूधा नष्ट करने लगे हैं उस समय आयुर्वेदको मयकर लोकोपकारार्थ कामशास्त्र एक जुदा शास्त्र ही बना दिया । उसीसे चुन कर पं० कोक जी निज नाम की संहिता



अर्थात् कोक नामक एक ग्रंथ बनाया, उसके आशय ले और लोगोंने भी छोटी २ पुस्तकें बनाई हैं फिर असपञ्च प्राणियोंके समझानेके लिये कोक सार नामक संक्षेप भाषा का ग्रन्थ बनाया है । संस्कृतमें पञ्चशायक और अनङ्गरङ्ग नामक दो ग्रन्थ बहुत प्रामाणिक और उपयोगी हैं जिसे चतुर्थे या पञ्चमखण्ड के आरोग्यदर्पण में शाङ्गोपाङ्ग लिखेंगे । जिसमें रतिप्रिय नर नारी के प्रयोजनीय साहित्योंका संग्रह किया है । औषधों और लक्षणों के विशेष विवरण जिस देशकी स्त्री की प्रकृति रति क्रियाके जिस अंग में जैसी होती है उसे भी बर्णन कर दिया है । कामशास्त्र में चार प्रकार के स्त्री पुरुषों के लक्षण और स्त्री पुरुषका परस्पर वर्ताव, कौन पुरुष किस स्त्रीके साथ और किस अवस्थामें विवाह कर सकता है, सत्य-शीला और दुष्टास्त्रियों का स्वभाव और उनके चरित्र और लक्षणद्वारा पट्टधान, निज स्त्री को बसीभूत रखने की विधि, कामदेव का वर्णन, स्त्रियों के कौन दिन किस अंगमें काम का वास रहता है, आसनविधि, रूप जीवन सम्पन्न बने रहने, सुन्दर सन्तान उत्पन्न करनेकी विधि, स्त्री अपने पति को किस उपाय से अपने बस में रख सकती है, स्त्रियों को शङ्कार करने की विद्या, यंत्र विद्या, तथा शिष्टविद्या सीखनेकी विधि और धीर्यादि पुष्ट करने के अनेकानेक उपाय और औषध लिखे हैं ॥

इस स्थलमें हम सिर्फ संक्षेप से स्त्री पुरुष की परस्पर प्रीति, व्यवहार और सहवास आदि प्रकरणोंको लिखते हैं जिनका याद रखना गृह-स्थाश्रमियों के लिये अति लाभदायक है ॥

## प्रसंगेच्छा ।

शरीरेजायतेनित्यंदेहिनांसुरतरुपहा । अव्यवाया-  
न्मीहमेदीवृद्धिःशिथिलतातनाः ॥

धीर्यं पुष्ट रहने से स्त्री के साथ प्रसङ्ग करनेकी इच्छा देहधारियों के नित्यप्रति होती है और गमनेच्छा होने पर न करनेसे प्रमेह (पातु रोग) मेद (शरीरका मोटा हो जाना) और सम्पूर्ण अंग शिथिल हो

जाते हैं । इसलिये अकस्मात् गमनेच्छा होने से गमन करना मनुष्यमात्र को जरूरी है ॥

किस अवस्थावाली स्त्रीके साथ कौन पुरुष और कैसे समयमें गमन करे सो दिखलाते हैं । यह बात तो सभी को याद रखनी चाहिये कि अपनी अवस्था से अधिक उमरवाली स्त्री के साथ मैथुन कभी न करे ॥

## स्त्री अवस्था विचार ।

वालेतिगीयतेनारी यावद्वर्षाणिषोडश । ततस्तुत-  
रुणीज्ञेयाद्वात्रिंशद्वत्सरावधि ॥ तदूर्ध्वमधिरूढास्यात्पंचा-  
शद्वत्सरावधि । वृद्धातत्परतीज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥

सोलह वर्ष की उमरवाली स्त्री को बाला, सोलह से यत्तीसवर्ष तक की अवस्थावाली को तरुणी, बत्तीसवर्षके ऊपर पचासवर्षतक की स्त्री को प्रौढ़ा और पचास वर्षकी अवस्था से उपरान्त उमरवाली स्त्री को शास्त्रकारों ने वृद्धा कहा है । अपनी अवस्था से अधिक उमरवाली स्त्रीके साथ सहवास करना तो निषेध है परन्तु वृद्धा स्त्रीके साथ तो कदापि प्रसङ्ग नहीं करना चाहिये । देखिये ऋषियोंने क्या कहा है ॥

वृद्धोपितरुणींगत्वातरुणत्वमवाप्नुयात् । वयोधिकां-  
स्त्रियंगत्वातरुणःस्थविरायते । आयुष्मन्तोमन्दजरावंपुर्व-  
ण्वलान्विताः । स्थिरोपचितमांसाश्च भवंतिस्त्रीपुंसयताः ॥

यदि वृद्ध पुरुषभी तरुण स्त्री (अपनी उमरसे कम उमरवाली युवा स्त्री) से गमन करे तो युवत्व धारण करे, अगर जवान मनुष्य युद्धीस्त्री से गमन करे तो वह भी युद्धी हो जावे । इसलिये वृद्धा स्त्रीके साथ कदापि गमन नहीं करना चाहिये । जो मनुष्य सर्वदा तरुण स्त्रीसे भोग करते हैं वे (आयुष्मतः) - जादा उमरवाले (मन्दजरा) अल्पवृद्ध, उत्तम

शरीर, सुन्दर वर्ण, बलयुक्त, बहुत दिनों तक जवान और मांस की सि-  
कुहन रहित बने रहते हैं। पाठकगण—हमारे इस लेख को कि तरुण स्त्री  
के साथ मैथुन करने से बुढ़ा भी जवान हो जाता है कहीं दृपकर अन-  
नर्थ न कर बैठना कि किसी तरुण स्त्री को देख के उसे प्राप्ति करने की  
कोशिस और बंदिसें ठान, कुटिनियों को मालामाल कर दो। यह सब  
महा अधर्म और पाप जनक कर्म हैं, गमन का युक्तायुक्त विधान आगे  
स्पष्ट लिखते हैं ॥

## ऋतुपरत्व प्रसंगविचार ।

निदाघशरदोर्वालाहिताविषयिणीमता । तरुणी-  
शीतसमये प्रौढावर्षावसन्तयोः ॥

गरमी (ग्रीष्म) शरद ऋतुओं में बाला स्त्री के साथ मैथुन करना  
विषयेच्छुकों को अतिलाभदायक लिखा है। जाड़ेके दिनोंमें तरुणी स्त्री के  
साथ, वर्षा और वसन्त ऋतु में प्रौढा के साथ गमन करना उत्तम कहा  
है। जो मनुष्य विषयी हैं और आरोग्यता भी चाहते हैं वे इसी वचनके  
अनुसार स्त्री प्रसङ्ग करें।

इस पर यह भी शङ्का होती है कि एक पुरुष को ऋतु २ में अदल  
वदल कर ४ स्त्रियां चाहिये, सो इसका उत्तर यह है कि यह वचन केवल  
एकही पुरुष के लिये नहीं है। तात्पर्य यह कि जिनकी बाला स्त्री है  
वे गरमी और शरद ऋतु में प्रसङ्ग करें और जिनकी तरुणी स्त्री है वे  
शीत समय में जिनकी प्रौढास्त्री है वे वर्षा और वसन्तऋतु में गमनकरें  
अन्य ऋतुमें नहीं। बाला आदि स्त्रियोंके साथ गमन करनेका और भी  
एक विशेष वचन यह है:—

नित्यंवासेव्यमानाहि वालावर्द्धयतेवलं । तरुणी-  
हासंयेच्छक्तिं प्रौढोद्भावयतेजरां ॥

बाला के साथ रीज र गमन करनेसे भी, बल बढ़ता है और तरुणी स्त्री से रीज र मैथुन करने से शरीरके बल हानि और प्रौढ़ा के साथ निरन्तर मैथुन करने से बहुत जल्द बुढ़ाई आजाती है ।

बाला स्त्री के साथ गमनकरनेका मुख्यसमय गरमी और शरदऋतु कहा है सही, पर यदि उसके साथ नित्यही गमन करे तोभी बल को बढ़ावेगी, परन्तु किसके बल को बढ़ावेगी ? तात्पर्य यह कि बली पुरुष के ही बल को बढ़ावेगी किन्तु किसी रोग से क्षीण पुरुष के बलको कभी नहीं बढ़ाय सकेगी और यह भी तात्पर्य है कि केवल बलको तो बढ़ावेगी परन्तु आगन्तुक रोगोंके प्राप्त होनेसे पूर्वोक्त रोगार्तों के रतिनिषेध की ही कोटिमें अपकारी है, इससे उत्तम यही है कि सर्वथा आरोग्यता चाहनेवाले पुरुष बाला के साथ भी उपरोक्त ऋतुओं में ही गमन करें, क्योंकि बीर्यरक्षाही एकप्रधान फल है जो समस्त आरोग्यताका कारण है ।

पाठकगणों के विवेचनार्थ उपरोक्त श्लोक का विशेष आन्तरिक अभिप्राय प्रगट करते हैं । गरमीमें वाःसाम्यन्तर की उष्णतासे और शरदऋतु में पित्तकोप से बीर्य तरल भाव में रहता है और यौवन के बढ़ाय के कारण बाला स्त्रीके रजमें रुक्षता और तरलता नहीं रहती, इससे भगवन्त उष्णभाष रहित रहता है । इसलिये गरमी और शरदऋतुओंमें बालाके साथ मैथुन करनेसे बलकी हानि नहींहोती और उक्तऋतुओंके अलावा बाला के साथ मैथुन बलवर्द्धक है । इससे यह सिद्धान्त ठहरा कि बाला स्त्रीही से मैथुन करना सर्व सम्मति है । शीतकाल में बीर्य गाढ़ा और शीतल रहता है, इससे तरुणी के साथ गमन करने से बीर्य अति शैत्यता से सब रास्तेमें कहीं नहीं रुकके बाहर निकल आता है । उसी तरह यर्षा और बसन्तऋतु में बीर्यकी बाढ़ होती है, उस अवस्था में प्रौढ़ा स्त्री के साथ भी गमन करना हानि कर नहीं है । परन्तु यह बात याद रखनी चाहिये कि कोई ऋतु क्यों न हो कम उमर का पुरुष अपने से अधिक उमरवाली स्त्री के साथ गमन करते र अवश्य बलबुद्धि हीन निस्सौज हो चोड़ेही दिनों में रोगग्रस्त हो यन्त्रालय की

रास्ता पकहेगा । वैसे ही छोटी उमर की स्त्री: यदि बड़े बूढ़े के साथ गमन करावे तो निस्सन्देह बहुत जल्द प्रदर रोग अथवा खांसी ज्वर (तपेदिक) से पीड़ित हो मर जावेग । भारतवर्षमें अधिक विधवा होने का भी एक प्रधान कारण यह विषय है—प्रायः इस देशमें विशेष कर उत्तमजातों के यहां छोटे २ लड़कोंका विवाह वही उमरवाली लड़कियोंके साथ होता है । और बाजी २ जगह देखनेमें आता है कि पुरुषों के विवाह पर विवाह होते जाते हैं और स्त्रियां मरती जाती हैं, इसके कारण दो हैं, प्रथम तो यह कि जिस पुरुषकी स्त्री मर जाती है उसका दूसरा विवाह वही नव दश वर्ष की बालिका के साथ होता है । पुरुष साठ वर्षका क्यों न हो जाय उसका व्याह दशही वर्षकी कुमारीके साथ होगा । दूसरे बहुत किस्मके ऐसे लोग हैं जो फुलीन नहीं हैं अथवा गरीब हैं वे लोग जवान हो जाते हैं विवाह नहीं होता, जब कुछ धनवान हुये तो धन दे कर छोटी २ लड़कियों के साथ विवाह करते हैं, यही कारण स्त्रियों के मरजाने का है । और योनिरोग तो अवश्य ही होता है । देखिये लिखा भी है ॥

**अतिकायगृहीतायास्तरुणयाप्रसिद्धनीभवेत् ।**

अति अल्प अवस्था की स्त्री के साथ यदि दीर्घ लिंग वाला मेषुन करे तो उससे उसकी योनि कमल अण्डा के माफिक लटक आर्ष से असिद्धी रोग है उससे सन्तान नहीं होते ॥

**मैथुन निषेध ।**

**अत्याशितोऽधृतिःक्षुद्धान्सव्यथाङ्गःपिप्राशितः ।**

**वालोवृद्धोन्यरोगार्त्तस्त्यजेद्रोगी चमैथुनम् ॥**

ऐसे पुरुषों के साथ चाहिये स्त्री गमन न करावे—जिसने अत्यन्त भोजन किया हो, धैर्य रहित अर्थात् जल्दीयाज हो जिसके शरीर में ददं हो, प्यासा हो बालक • याने कम उमर का हो, अथवा यह स्त्रीके उमर से बहुत अधिक उमरवाला हो और गरमी मुत्राक आदि रोगों से

पीड़ित हो, तो उस पुरुष को मैथुन नहीं करना चाहिये । यदि स्त्री आरोग्यता की इच्छा रखती हो, तो यह भी उक्त पुरुषों के साथ कभी भोग न करे ॥

यदि उपरोक्त लक्षण युक्त पुरुष मैथुन करे तो स्त्री को तो रोगिणी बनाही देगा लेकिन पुरुष को भी शुक्रकी दुर्बलता, वायुका कोप होगा और यदि रोगग्रस्त अवस्था में करे तो रोग की वृद्धि होकर मृत्यु को यथुत शरद प्राप्त होगा ॥

### मैथुन में समय ।

सेवेतकामतःकामवलाद्वाजीकृतोहिमे । प्रकामन्तु-  
निपेवेत मैथुनंशिशिरागमे ॥ त्र्यहाद्वसन्तशरदोःपक्षाद्-  
वृष्टिनिदाघयोः ।

अथसुश्रुते--त्रिभिस्त्रिभिररहोरात्रैः समयात्प्रमदां-  
तरः । सर्वेष्वृतुपुधर्मतु पक्षात्पक्षाद्ब्रजेद्वयुधः ॥

श्रुतु के अनुसार मैथुन करने की विधि आयुर्वेदविदों ने इस प्रकार कहा है कि हेमन्तश्रुतु में पुरुष बागीकर औषधों को सेवन करके रूप यौवन सम्पन्न स्त्रीके साथ रमण करे, शिशिरश्रुतुमें जब कामका वेग हो मैथुन करे, वसन्त और शरदश्रुतुओंमें कामकी संज्ञा होनेपर तीन २ दिन के बाद गमन करे, वर्षा और गरमी की श्रुतुओंमें पन्द्रह २ दिनके अन्तर में गमन करना चाहिये । सुश्रुत जी भी यही कहते हैं कि सम्पूर्ण श्रुतुओं में मनुष्य को चाहिये कि तीन २ दिनके अन्तर दे के और गरमीके दिनों

\* बहुत सी स्त्रियां पुरुषों की तरह जैसे पुरुषों को इस बात का विश्वास जमा है कि कामसिग औरत के साथ भोग करने से बल बढ़ता है वैसे ही स्त्रियों को भी विश्वास है कि लड़कों से मैथुन कराने से स्त्रियां बड़ो नहीं जातीं इसे प्रायः त्रिभिरात्रैः स्त्रियां कम उमर के सुन्दर बालकोंको खोज कर मैथुन कराती हैं ॥

में कामोन्मत्त है।नेसे पन्द्रहेदिन मैयुन करना चाहिये । कामोन्मत्त है।ने का लक्षण हमने द्वितीयखण्ड के आरोग्यदर्पण में लिख चुके हैं ॥

रुक्षाङ्गीवहुभोजनाचलमति र्गीतप्रियावातला । शै-  
लाम्भोनिधिपार्श्वदेशवनिता प्रायोभवेदीदृशी ॥ वर्षायां-  
कुसुमागमेचवहुशः सेव्यापरम्प्रीतिदा ॥

रुखे अङ्गुली की अर्थात् स्वेदादि रहित जिनके अङ्गुली है, सूय भोजन करनेवाली, युद्धिमान् गान जिन्हें अति प्रिय है और सात प्रकृति के लक्षण मिलते हैं एतादृश लक्षण युक्त पर्वतीय और समुद्र के किनारे के रहनेवाली स्त्रियां होती हैं । इन स्त्रियों के साथ वर्षा और वसन्त ऋतु में मैयुन करने से अति आनन्द मिलता है अर्थात् इन ऋतुओंमें रुक्म देश की स्त्रियां अति सुख देनेवाली होती हैं । यह जो भारतवर्ष के राजे महाराजे अनेक देश की स्त्रियों से विवाह करते थे यही कारण है किसी २ के सौ सौ दो दो सौ रानियां होती थीं इसका सबब भी यही है कि पूर्व समय के लोग विद्वानों से कामशास्त्र को अध्ययन करते थे ।

गुर्वाहारसुगन्धमाल्यवसना स्निग्धाङ्गरागादिभिः  
ध्यक्तग्रंथिरहनिशंचसकले गात्रेवहृत्युष्णतां । अम्भोज-  
प्रसरारुणोत्तमकरा शीतालयप्रेयसी ॥ सौराष्ट्राङ्गकलिङ्ग-  
सिन्धुयुवतीः कामंभवेत्पित्तला । हेमन्तेशिशिरैरैरनुदिनं  
सेव्यायथाकाक्षया ॥

भावार्थः—उत्तम पदार्थों के सूय भोजन करनेवाली, अंतर, कुलेल, पुष्पों के माला सुगन्धित वस्त्रों के धारण करनेवाली, दिन रात जिन को यही काम, शरीरको सुधारना, पान चाबना, गान गुहना, आभूषणों से अङ्गुली को सुशोभित करना इत्यादि जिसकी मांस पेशियां पुष्ट है, सम्पूर्ण शरीर बहुत खफीक उष्ण है, हाथ पैर के तलुए कमल के समान सुखे हैं और सर्वदा जिसे शीतल स्थान बगीचा आदि प्रिय है, स्तलित होने से जिसके धातु ( रज ) से कमल की सी गन्ध आये ऐसी भीराष्ट्र

देश, अङ्ग देश, और सिन्धु कश्मीर देश की पित्त प्रकृतियाली स्त्रियाँ होती हैं। इन देशवाली स्त्रियों के साथ हेमन्त और शिशिर ऋतु में बच्चाभर नैयुन करे, इन ऋतुओंमें यह स्त्रियाँ अत्यन्त सुखके देनेवाली होती हैं।

ज्ञेयंकोकिलकाकलीमृदुरवा नन्दैपिणीशीतला ।

निद्रालुश्चशरीरकोमलतनुः स्निग्धाननाश्लेष्मला ॥ वङ्ग-  
श्रीहरकामरूपतरुणी सुस्निग्धकेशोभवेत् । गन्तव्याशर-  
दिप्रदिष्टमदना ग्रीष्मेऽपिपुंभिवरैः ॥

मनोहर कोकिल के समान नीठी वस्त्रन बोलनेवाली, जिस की समस्त शरीर शीतल, आनन्द इच्छक (निद्रालु) नेत्र मद से घूर्णित हो प्रति कोमलाङ्गी, स्निग्ध मुखी, गोल गाल भरे, दीप्तवान जिसके मुख के देखतही काम अस्थिर न रहे उसे स्निग्ध मुखी कहते हैं। कफ प्रकृति युक्ता ऐसी यङ्गाल, सिलहट और कामरूप देश की स्त्रियाँ होती हैं इनके बाल भी बहुत लम्बे और काले धमर के समान होते हैं। इन स्त्रियों के साथ शरद और ग्रीष्म ऋतु में काम क्रीड़ा करने से जो सुख मिलता है यह सुख के समान स्वर्ग का भी सुख धूल है। क्या कोई इस बात का खपदन कर सकता है? पूर्ण यौवन प्राप्त काल में स्त्री पुरुष स्वतन्त्र प्रेमात्म्य हो अर्थात् अज्ञान अवस्था में माता पिता के द्वारा विवाह न हो के जवानी में स्त्री पुरुष दोनों के परस्पर प्रसन्नता पूर्वक विवाह हुआ हो और देशकालानुसार मदीकृत हो नैयुन करने में अक्षयनीय और जो अद्वितीय सुख है क्या उसकी वरावरी स्वर्ग का सुख कर सकता है? यदि स्वर्गीय सुख इसी सुख को कहें तो कुछ आश्चर्य न होगा।

### प्रीतिवर्णन ।

कोकसार के मत में नौ स्त्री पुरुष में चार प्रकार की प्रीति कह आये हैं, यथा:— नैमर्ग की श्रियया, समा, और अभ्याम की इन चारों के लक्षण हम प्रकाश करते हैं और उसके नीचे प्रकाश करने का मुख्य प्रयोजन यह है कि जब तक स्त्री पुरुष में परस्पर प्रीति न होगी तब तक नैयुन का जो पूर्ण आनन्द है वह कदापि लाभ नहीं हो सकता। जैसे घेश्यागमन में जिसे हम भलीभाँति आ० २० के दूसरे खण्ड में दिखला चुके हैं।



## नैसर्गकी आदि प्रीति के लक्षण ।

अभ्यासविषयासाध्यादम्पत्योः सहजातुया । सान्द्रानिगडभूताच प्रीतिनैसर्गिकीमता ॥

मालाचन्दनभोज्याद्यैर्विषयैर्वर्द्धितातुया । प्रीतिर्विषयजाप्रोक्ता समयोगेसमास्मृता ॥

आखेटदेवपूजादकेलिसंगीतकर्मसु । अभ्यासयोग्यावृद्धियातिसाभ्यासकीमता ॥

( अभ्यास विषय साध्य ) पासही विषय है जिसमें कोई तरदुत नहीं ऐसा स्वभावज प्रीति विवाह होतेही घोर बेबी के समान आपस में हो जावे जो छुड़ाने से न छुटे उसको नैसर्ग की प्रीति कहते हैं । यह प्रीति उची अवस्था में होसकती है जय १२ वर्ष से ऊपर उमरवाली स्त्री का २० वर्ष से ऊपर उमरवाले पुरुष के साथ विवाह हो, अन्यथा नहीं । जो प्रीति माला, अंतर, मिठाई, वस्त्र, आभूषण, अथवा कोई लालच वस्तु के लेने देने से प्रीति हो उस प्रीति को विषयजा प्रीति कहते हैं । समान योगों को करके अर्थात् स्त्री और पुरुष रूप से जीवन से, धन से तथा कुल आदि हर वस्तुओं से समान होने के कारण जो प्रीति भई हो उसे समा प्रीति कहते हैं ।

अब अभ्यास की प्रीति का वर्णन करते हैं । आखेट अर्थात् शिकार खेलने में जो प्रीति हो ( इससे मालुम होता है कि पूर्व समय में स्त्रियां भी शिकार खेलने जाती थीं अथवा पुरुषही कहीं शिकार को गया हो किसी स्त्री से प्रीति होवे जैसे सकुन्तला और दुष्यन्त की प्रीति ) तथा देव पूजन में ( जो प्रायः देखने में आता है कि मन्दिरों में नित्य २ देवपूजनार्थ स्त्री पुरुषों के जाने से किसी किसी से परस्पर बड़ी गहरी प्रीति होती है । यहां तक कि देवपूजन छोड़ पूनीस और यकील मुहारां की पूजा करनी पड़ती है ) केलि अर्थात् काम क्रीडा से ( जिसे पुरुष संज

पूँछुट अथवा अशुल या बांह के ऊपर के बच्चों को घारदार, सुधारना, बालों को आगे के तरफ छिटकाना, भीहोंको चढ़ाके तिरली-निगाहोंमें देखना, इत्यादि लक्षण परपुरुष के चाहने वाली स्त्रियों में देखे गये हैं । परन्तु यह लक्षण प्रथम प्रेम की सीढ़ी का है जब अधिक प्रेम बन् जाता है सिर्फ सहवान करना बाकी रहता है उस अवस्थाके लक्षण यह हैं जैसे—

प्रीतम प्यारेको देखके खखारकर धूकना, बहुत हँसना, या भीतगाना सेज से उतर कर अथवा बिछौने से सरककर पास भा बैठना, भङ्गों को तोड़ना, या जँभाई लेना, गरीब स्त्री है तो कुछ द्रव्य या वस्त्र आभूषण की याचना करना, स्त्री धनधान है तो उस पुरुष से कहना कि तुम्हारे शरीर पर अमुक गहना या वस्त्र बहुत बख्ते लगते हैं क्यों नहीं बनवा लेते हो अथवा कोई वस्तु या अपनी अँगूठी पहिरने को देना, उसे देख के अपने बालक का अथवा किसी सहेली का मुन चूमना, या अपने बराबर की स्त्री के साथ हँसी-दिल्लीगी करना, काम खजुवाना और पीठ पीछे अपने प्यारे की बड़ाई करना ॥

## गहरी प्रीति के लक्षण ।

इमांचविन्द्यादनुरक्तचेष्टांप्रियाणिवक्तिस्वधनंददाति ।  
विलोक्यसंहृष्यतिवीतरोपाप्रमाष्टिदोषान्गुणकीर्तनेन ॥ त-  
न्मित्रपूजातदारिद्रिपित्वंकृतस्मृतिःप्रोषितदोर्मनस्यम् । स्त-  
नोष्टदानान्युपगूहनंचस्वेदोऽथचुम्बनाप्रथमाभियोगः ॥

सीठी बचनों का बोलना, धनादि वस्तुओं से सत्कार करना, कैसा हू क्रीप में बैठी हो देखत ही प्रसन्न होजाना, उसके दोषों पर ध्यान न दे के इमेशा उसकी तारीफ करना, उनके मित्रों की खातिरदारी करना और वैरियोंसे अतिद्रोह रखना तथा अपने प्यारेके घोड़ीसी भी सत्कार को बहुत जानना और याद रखना, उसके परदेश में रहनेसे या परदेश जानेके नाम मुझेसे निहायत रजकारना, डाँसीका छूना, ओठोंका चुम्बन

और छपटा, लेना और बारंबार पसीने का आजाना आदि लक्षण अधिक  
दास्ती होने से प्रायः देखने में आते हैं ॥

## परपुरुषरता स्त्रियों के संकेत ।

रात्रीविहारजागररोगव्यपदेशपरगृहेक्षणिकाः ।

व्यसनेनात्सवाश्रसंकेतहेतवस्तेपुरक्ष्याश्र ॥

रात में घर के बाहर निकलना, कहीं अपने भाई बिरादरी के घर  
जावे तो प्रायः दिया जलनेके बाद अपने घर आवे, रतजनेमें अदृष्टदाय  
के और रात भर लागना, रोग के बहानेसे पड़े रहना और घीटा हकीम  
के घर दया कराने जाना, भोजन न करना, नीच की स्त्री तथा पुरुषों  
से घात भीत करना, इधर उधर की घातें पूछना इत्यादि परपुरुषरता  
स्त्रियों के लक्षण होते हैं, इन स्त्रियों के दूती दूत भी प्रायः नीच जाति  
के लोग होते हैं, लिखा भी है ॥

भिक्षुणिकाप्रव्रजितादासीधात्रीकुमारिकारजिका ।

मालाकारीदुष्टाङ्गनासखीनापितोदूत्यः ॥

भीख मांगनेवाली, बैरागिनी, टहलनी, बुढ़िया लड़कियां, धोबिन,  
मालिन, बुरे चालवाली स्त्री, सखी, और नाइन, परपुरुषरता स्त्रियां  
उपरोक्त स्त्रियों से दूती का काम कराती हैं, इन के द्वारा अपना  
हाल अपने प्रीतम के पास पहुंचाना और उनका हाल सुनना-याजी २  
स्त्रियां दूती कर्म में ऐसी पक्की होती हैं कि पतिव्रता स्त्री को भी पर  
रता बना देती हैं, और कितनों का तो घर कुटुम्बादि छुटाके आजन्म  
के लिये यश्या बना देती हैं ॥

## अलभ्या स्त्री ।

भर्तृस्नेहवतोदृढैकव्रन्तिताप्रेम्णाविहीनाभृशं सेर्व्या-  
भूरिसुतात्रपाभरयुतागुर्वादिभीतिस्थिता । प्रायेणार्थवती-

तथापरजनालापेविरक्तासदा निर्लोभाव्यभिचारकर्मणि-  
बुधैर्दुःखेनसाध्यास्मृता ॥

जो स्त्री अपने पति में अत्यन्त प्रेम रखती है, या एकही पुरुष में  
आसक्त हो, हर एक पुरुष के साथ प्रेमहीन हो, ईर्ष्या जिसमें अधिक हो  
और अधिक लड़केवाली, बहुत लजानेवाली, सास ससुर ज्येष्ठ आदि  
घर के बड़े पुरुषों से अधिक भय खानेवाली (अर्धवती) इसका अर्थ यह  
है कि धन की कांक्षा रखती हो । इस अर्थ से यह आपत्ति आती है कि  
प्रायः स्त्रियां धन की लालष से पर पुरुषरता हो जाती हैं इसका अभि-  
प्राय यह है कि ( अर्धवती ) अर्थात् धनवान हो, परपुरुष से वातचीत  
करने में निरन्तर लज्जित और निर्लोभ हो प्रायः ऐसी स्त्रियां व्यभिचार  
कर्म में कुटनियों करके नहीं फँसती हैं । उपरोक्त लक्षण युक्त स्त्रियों को  
देख दुष्ट पुरुष उनके मिलनेकी आशा न रखें, वे अधर्मियों करके प्राप्त  
नहीं हो सकीं ॥

### सहज प्राप्ता स्त्री ।

मार्गादिश्रांतदेहांचिरविरहवती मासमात्रप्रसूताग-  
र्भालस्याचनव्यज्वरयुततनुकात्यक्तमानापसन्ना । स्नाता-  
पुष्पावसानेनवरतिसमयेमेघकालेऽसन्ते । प्रायःसंपन्नरा-  
गामृगशिशुनयनास्वल्पसाधयारतेस्स्यात् ॥

भावार्थः—इतनी स्त्री अलबत्ता उल छिद्रयुक्त कुटनियों को अथवा  
बनुर, रूपवान्, धनवान् पुरुष को लाभ हो सकीं हैं । जैसे मार्ग से चक  
गई हो या मार्ग से भूलगई हो • बहुत दिनों की विरहवती या जिसे

\* एकदिन एक विषयी लाला हमसे कहनेलगी कि हम मुहर्रम के नवई  
तारीखकी १२ बजे रातकी चौक में रोयनी दिखने गये, जहाँ अधिक भौड़  
भाड़ यो दिखा कि एक बज्जत हचोन नवजवान किसी पच्छे मुसलमागके घर  
की औरत, अपनी संगकी औरतीसे छुट कर ब्याजल यो रूधर चघर घूमरही

अनेक दिनों से पुरुष से समागम न हुआ हो, महीना मात्र की प्रसूता हो गर्भवती ( लड़का होने की कुछ मास बाद और—५—६ मास तक गर्भ रहते स्त्रियों को मैद्युनेच्छा अधिक रहती है ) आलसयुक्ता, नवज्वरवाली, मानहीना, जो बहुत हसनेवाली हो, मासिक धर्म से ज्ञान कर चुकी हो, प्रथम २ यौवन का उमङ्ग उठा हो, वर्षों और बसन्त काल में तथा जिसकी अत्यानन्दा योगिनी हो, ऐसी स्त्री रति के अर्थ बहुत सहज में प्राप्त हो सकती है ।

### पतिध्रुक स्त्री के लक्षणा ।

नाभिपश्यतिभर्तारं नोत्तरंसम्प्रतीच्छति । वियोगे-  
सुखमाप्नोतिसंयोगे चातिसीदति ॥ शय्यामुपगताशेतेवदनं-  
मार्ष्टिचुम्बने । तन्मित्रद्वेषिण्यमानञ्ज्विरक्तानाभिवाञ्छति ॥

जो स्त्रियां अपने पति को नहीं चाहती उनके लक्षण इस प्रकार लिखते हैं । पतिके सम्मुख न देखना, इसके बोलना कौन कहे पति कुछ कहे अथवा कुछ पूछे तो उसकी बात का उत्तर भी न देवे, जब तक पति घर में रहे भुन २ करती रहे और मुख लटकाये रहे और जब पति घरसे

है । हमने उसे पूछा कि तुम कौन हो क्यों भटग तो फिरती हो उसने कहा कि हम संग से छूटगयी है अब घर कीसे जाय, हमने पूछा कि तुम्हारा घर कहाँ है, उसने कहा अमुक जगह पर है, हमने कहा कि तुम्हारा घर हम जानते है और तुम्हारे बाप से हमसे बहुत मुलाकात है चलो हम तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दें वह गिड़ गिड़ा की बोली कि बड़ो दगायत होगी—तब हमने उसे दो बार गलियों में घुमा के अपने घर पर लायी कहा ठहरो जरा पागो पीले तो धले तुम्हो यकगई है। यह थोड़ासी मिठाई खाके पागो पीलो पड़जे तो दूगकार किया और कहा कि जल्दी चलो हमको घर पहुँचा दो जब हमने इसरार किया और प्यार से चुम्कार के कहा प्रौरन राजी होगई और मिठाई खाया खुशी से बात बोल करने लगी—मानों बहुत दिनों की मुलाकात थी फिर तो कोई उजर उसे न रही उसके साथ हमने सहवास किया और उसे उसके घर पहुँचा पायी ॥

बाहर घला जावे तो यही प्रसन्न रहे और उसके घर में जाने में दुखी हो । पहले तो कभी अपने पति के साथ एक संग पलङ्ग पर सोवे नहीं यदि पलङ्ग पर जाय भी, कि तो सो रहे या करघट फिर जावे, अगर पति मुख चुम्बे तो क्रुट गाल पीछे डाले । पतिके मित्रों से शत्रुता रखना और पति के साथ उसे चाहे परन्तु वह नराजही रहे ।

## स्त्रीणां वैराग्य हेतु ।

कार्पण्यादतिमानरोगविरहोद्दोगादिपारुष्यतो मालिन्यासममज्ञतादिभयतःशोकाद्विरद्रादपि । भर्तृगान्तानुतादिभिश्चत्रपुपःकाठिन्यतःशङ्कना दीपाणांचवृथाप्रयान्तिवनितावैराग्यमुच्चैःसदा ॥

निम्नलिखित कारणों से प्रायः स्त्रियां उदाशील बनी रहती हैं— जैसे अत्यन्त रूपणता से (पति के अधिक मूल होने से स्त्री उदास रहती है) भति मान (जादा प्यार करने से ऐसी घमण्डिल हो जाती है कि हमेशा सानही मटका रहता है) पति के रोगी बने रहने अथवा व्यापार पुनर्पार्थ रहित होनेसे असम—अर्थात् असमानतासे नात्पर्य यह कि स्त्री पुरुष उमरमें, धौवनमें, कुल आदि में परस्पर बराबर न हैं। पति की मूर्खतासे, (भयतः) सास ससुर, ज्येष्ठ और पतिके अधिक करसे भी स्त्रियां उदाशील रहती हैं शोक से, दरिद्रता से, पति का देह अत्यन्त दुबला, हड्डीला, तथा अत्यन्त कठोर होने से, अत्यन्त शङ्का युक्त रहने से, और व्यभिचारादि निष्ठा दोष लगानेसे इत्यादि कारणों से स्त्रियों के मन में पुरुष की ओर से विरक्तता उत्पन्न होती है ।

## स्त्री के विगड़ने का लक्षण ।

पितृसदननिवासःसङ्गतेःपुंश्रुलीभिः प्रवसनमपिप-  
त्युर्वार्धकंसेष्यताच । वसतिरथचपुंभिर्दुष्टशीलैस्त्ववश्यम्  
क्षतिरपिनिजवृत्तेयोपितानाशहेतुः ॥

स्त्रियां नीचे लिखे हुये कारणों से प्रायः बिगड़ जाती हैं—सबंदा पित्त के घर में रहना ( पित्त के गृह में निहर और परदा रहित रहती हैं ) दुष्ट स्त्रियों के साथ बैठना चठना, उनसे मित्रता रखना, उनके साथ मेले ठेले में जाना, पति के परदेश रहने से, और उन पर किसी का दाव न रहने से, अथवा बुढ़े पति के होने से ( भला बतलाइये जो लोग अपने बुढ़ाई अवस्था में बाला के साथ विवाह करते हैं मुमकिन है कि यह बाला पतिव्रता हो ? कभी नहीं । बुढ़ों को चाहिये कि जादा उमरवाली विधवाओं के साथ विवाह करें ) पतिके अधिक ईर्ष्या करनेसे, तथा ऐसा पुरुषों में बैठ कर हँसी दिखानी करने से निज वृत्ति के लोप होने से स्त्रियां व्यभिचारिणी होती हैं । यह तो अक्षर देखने में आया है कि यदि अति रूपयती स्त्री किसी नीच कुल में अथवा किसी गरीब के घर में होने से व्यभिचारिणी हो जाती है ।

**सम्भोग समय के भेष यह है ।**

स्नातश्चन्दनलिप्राङ्गःसुगन्धःसुमनोन्वितः । भुक्तवृष्या-  
सुवसनःसुवेपःसमलङ्कृतः ॥ ताम्बूलवदनःपत्न्यामनुरक्ती-  
ऽधिकस्मरः । पुत्रार्थीपुरुषोनारी मुपेयाच्छयनैशुभे ॥

यह बात हमने दूसरे खण्ड में भली प्रकार दिखला दिया है कि पुत्रार्थी पुरुष ब्रह्मचर्य्य से रह कर अन्तु स्नाता स्वकीय स्त्री से सहवास करे । परन्तु उस समय केश धोष चाहिये से लिखते हैं (स्नातः) सुगन्ध तैलादि शरीर में सर्दन करके स्नान किये हो, चन्दन, कपूर, कस्तूरी आदि सुगन्ध द्रव्यों का लेपन और अंतर लगाये हो, प्रसन्न चित्त, धाँजीकर औषधों से दीर्घ्य को घनवान और पुष्ट कर रक्खा हो, सुवासित वस्त्र, आभूषण तथा पुरुषों को चरण कर मसालेदार पान का पीना चाह, अपनी आनन्द कादम्बिनी में अनुराग युन, कानोन्मत्त हो रहा हो, ऐसा पुरुष पुत्र की इच्छा करके सत्संपलङ्ग पर अपनी स्त्री के पास जाये । जितनाही आनन्द

युत. कामवान ही प्रसङ्ग करेगा वैसेही रूप यौवन, बल बुद्धि तेजः सम्पन्न सन्तान उत्पन्न करेगा ।

### गर्भाधान विधिः ।

यद्यपि गर्भाधान की विधि दूसरे खण्ड के भारोग्यदर्पण में लिख चुके हैं तथापि वैद्यक मत से इस स्थल में पाठकगणों के उपकारार्थ और भी लिखते हैं । गर्भाधान किसे कहते हैं ( गर्भस्याऽधानं धीर्व्यस्यापनं स्थिरीकरणं यस्मिन्नेन वा कर्मणा तद्गर्भाधनम् ) गर्भ का धारण याने गर्भाशय में धीर्व्य का स्थापन करना जिस कर्म से होता है उसे गर्भाधान कहते हैं जैसे बीज और क्षेत्र उत्तम होने और विधिपूर्वक बीज के बोने और उसे उत्तम प्रकार शौचने से अन्नादि पदार्थ मोटे घने और बलवान पैदा होते हैं उसी प्रकार उत्तम बलवान ब्रह्मचारिणी स्त्री पुरुषों के संयोग से सन्तान भी उत्तमही होते हैं और उसीके साथ यह भी है कि स्त्री पुरुष जिस प्रकार की चिन्तना करे उसी प्रकार सन्तान होगा। बृहत्संहिता में लिखा भी है "चित्तेन भावयति दूरगताऽपियं स्त्री गर्भं विभर्ति सदृशं पुरुषस्यतस्य" मैथुन के समय यद्यपि स्त्री दूर है परन्तु चित्त से जिस पुरुष की चिन्तना करेगी उसीके सदृश गर्भ धारण होगा, यही बात शरक से भी सिद्ध होती है "गर्भो पपत्ती तु मनः स्त्रियायजन्तुं ब्रजेत तत्सदृशं प्रसूते" इससे साधित होता है कि स्त्री पुरुष जैसे पुत्र और कन्या की कामना करें तद्दरूप जन पदों का चिन्तन करने से वैसेही सन्तान उत्पन्न कर सके हैं इसीलिये रजोधर्म से ज्ञान करके स्त्री को प्रथम पतिही का दर्शन करना लिखा है ।

### उत्तम सन्तान करने की विधि, सुश्रुत से ।

यदि स्त्री ऐसी इच्छा करे कि मेरे श्रेष्ठ पराक्रम बल बुद्धि युत उत्तम मिह के समान तेजस्वी सन्तान उत्पन्न हो तो रजोधर्म के चौथे दिन शुद्ध ज्ञान भर उस दिन से सात दिन पर्यन्त कुछ ज्यों को सहत घृत में मिलाय पकड़ा जिस भी के नीचे हो ऐसी श्वेत गी के दूध में भिजीय, चांदी



अथवा कामे के पात्रमें भर प्रातःकाल नित्य सेवन करे या पुराना साठी का चावल अथवा जौ के पदार्थों को पूर्वोक्त गौ के दही, शहद और घृत अथवा दूधही के साथ भोजन करे, नित्यप्रति सुवासित जल से स्नान करे, केशर कपूर और सफेद चन्दन गुणाय के अर्क में घोट अङ्गमें लेपन करे, सूय मुलायम सवेन बस्तु धारण करे, सुन्दर आसन पर बैठे, सुखद शोण पर शयन करे, सुन्दर सवारी रथ जोड़ीपर चढ़के अथवा उत्तम तुरंग पर चढ़के साम सदेरे आरोग्यकर वायु का सेवन करे, काम, क्रोध, लोभ, मोह मात्सर्य रहित रहे, उत्तम सजे हुये कमरे में रहे, हर समय चित्तके प्रमत्त रखे, सुन्दर, स्वरूपवान, चतुर और मीठी वचन बोलने वाली ऐसी सहेली अथवा टहलुइन पास रहे ( शब्द ) गान या मनोहर बोलने वाली चिहियों की आवाज (स्पर्श) तकिया आदि मुलायम पदार्थ चार-बार छूना ( रूप ) तस्वीर आदि देखना ( रस ) ताम्बूल अथवा कोई रस को चाटना ( गन्ध ) अंतर सुंघना इत्यादि सेवन करे, शान्तिशील एवं अनेक चिन्तनों से रहित हो सात दिन तक पति से भिन्न रहे, आठवें दिन शिर से स्नान कर योद्धश शङ्कार कर वेदानुसार संस्कार कर पति के साथ प्रसंग करे निस्सन्देह उत्तम, बली विद्वान् गर्भ धारण करेगी । पुत्रप को भी चाहिये ॥

ततोपरान्हेपुमान्मासं ब्रह्मचारीसर्पिःस्त्रिगधः सर्पिः-  
क्षीराभ्यांशाल्योदनंभुक्त्वा ॥

एक महीने पर्यन्त ब्रह्मचर्यव्रत धारण करनेवाला पुरुष सायंकाल को शरीर में घृत मर्दन करके सुगन्धित जल से स्नान कर घृत और दूधसे घनाया साठी चावल अथवा पुराने चावलों का खीर भोजन करके स्त्री के पास जावे परन्तु स्त्री खीर न खाके तैल और सरद का भोजन करे ॥

नारीतैलेनमापैश्चसमुपाचरेत् ॥

स्त्री, कालेतिल का तैल और सरद के पदार्थों को तथा (पित्तलैः) रुधिर के बढ़ानेवाले पदार्थों को भोजन करके पति के समीप जावे ।

इस स्थल में यह बात विचार करना बहुत जरूरी है कि स्त्री पुरुष जिस अवस्था में सन्तानोत्पत्ति करें, सो हम आ०६० के दूमरे खण्ड में लिख चुके हैं इस स्थल में बाग्भट्ट के मत से फिर भी दिखलाते हैं ॥

पूर्णपोद्गशवर्षास्त्रीपूर्णाविज्ञेनसङ्गता । शुद्धेगर्भाशयेमार्गे-  
रक्तेशुक्रेऽनिलेहृदि ॥ वीट्यवन्तंसुतंसूते ततोन्पूनाढयोः  
पुनः । रोग्यल्पायुरघन्योवा गर्भो भवति नैववा ॥

सो लह वर्ष की स्त्री, बीस वर्ष की अवस्था वाले पुरुषके साथ सह-  
वास करने से, शुद्ध गर्भाशय और गर्भाशय का मार्ग तथा रुधिर वीर्य  
पवन और हृदय के शुद्ध होने से स्त्री बलवान पुत्र को उत्पन्न करती है  
परन्तु सुश्रुत में १६ वर्ष की स्त्री और २५ वर्ष के पुरुष इसके नीचे अ-  
वस्था में गर्भाधान निषेध किया है ॥

अब हमको इस स्थल में पाठकगणों को चेत कराना बहुत उचित  
है कि जब तक शरीर में कुछ भी रोग रहे, मैथुन कदापि न करे और  
पुत्रोत्पादनार्थ मैथुन करने की इच्छा तो स्वप्नमें भी न लावे क्योंकि जैसे  
अग्नि के छोटीसी चिन्गारीपर फूसकास डालनेसे अग्नि प्रज्वलित होती  
है वैसेही योद्दासा भी शरीर में रोग रहनेसे यदि मैथुन करे तो वह रोग  
पर्यन्त के समान बड़ा और बलवान हो जाता है और रोगग्रस्त अवस्थामें  
पुत्रोत्पादनार्थ प्रसङ्ग करना तो सन्तान को माने आजन्मके लिये रोग  
रूपी जेहल में डालना है इसलिये जबतक शरीरको आरोग्य और वीर्य  
का सूव पुष्ट न देखे कदापि मैथुन न करे बाग्भट्ट में लिखा भी है ॥

शुद्धशुक्रार्त्तवस्वस्थं संरक्तमिधुनंमिथः स्नेहैःपुंसवनैः  
स्निग्धंशुद्धंशीलितवस्तिकं ॥

जिस पुरुष का वीर्य और स्त्री का आर्त्तव (रज) शुद्ध है और शरीर  
में कुछ भी रोग नहीं है उस अवस्था में दोनों परस्पर अनुराग युक्त  
(स्नेहैः) कलघृत कल्याणघृत आदि लोहोंसे देहकी लिपिकर, घसन वि-

रेचना द्वारा धातु को भी गाढ़ा एवं स्निग्ध कर तब पुत्रार्थं मीथुन करे ।

## ऋतुदान का काल ।

ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतस्सदा । पर्ववर्ज-  
ब्रजेच्चैनां तद्ब्रतोरतिकाम्यया ॥ ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणां-  
रात्रयः षोडशस्मृताः । चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्दि-  
गहितैः ॥ तासामाद्यांश्चतस्रस्तुनिन्दितैकादशीचया ।  
त्रयोदशीचशेषा स्तुप्रशस्तादशरात्रयः ॥

मनुजी महाराज ने भी ऋतुदान के समय का विचार अपने ग्रन्थमें इसप्रकार लिखा है कि मनुष्य को पाहिये हमेशा ऋतुकाल में अपनी स्त्री के साथ समागम करै सेवय अपनी स्त्री के घर स्त्री गमन करने की इच्छा मन में भी न लावै और पुत्रोत्पादन करनेवाला पुरुष पर्व तिथियों को जैसे अमावस्या चतुर्दशी अष्टमी आदि को छोड़के स्त्री के साथ रति कियाकरै स्त्रियों का स्वाभाविक ऋतुकाल १६ रात्रि का है अर्थात् रजोदर्शनके दिन से लेकर सोलह दिन तक ऋतुकाल कहा जाता है । उनमें से ४ रात्रि अर्थात् जिस दिन रजोधर्म हो उस दिन से लेकर ४ दिन तक प्रसङ्गकरना महा निन्दित है और जैसे चार रात्रि निन्दित है वैसेही ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि भी निन्दित है शेषरहे दश रात्रि वेही रात्रियां ऋतुदान के लिये श्रेष्ठ हैं ।

युग्मासुपुत्राजायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासुरात्रिषु । तस्मा-  
द्युग्मासुपुत्रार्थी संविशेदार्त्तत्रेस्त्रियम् ॥ पुमान्पुंसोधिके-  
शुक्रेस्त्रीभवत्यधिकेस्त्रियाः । समेपुमान् पुंस्त्रियौवा  
क्षीणोऽल्पेचत्रिपर्जयः ॥

पुत्रोत्पत्ति की इच्छा करनेवाले पुरुष युग रात्रि अर्थात् रजोधन से छठवीं आठवीं दशवीं और बारहवीं रात्रि इनरात्रियोंमें गर्भाधानकरै परन्तु उत्तरोत्तर रात्रि और भी श्रेष्ठ हैं अर्थात् जैसा छठवीं रात्रि में गर्भाधान करने से बलिष्ठ पुत्र उत्पन्न होगा उससे अधिक बलिष्ठ आठवीं रात्रिमें ऋतुदान करने से होगा उससे भी बलिष्ठ दशवीं रात्रि में होगा इसीप्रकार उत्तरोत्तर श्रेष्ठ जानना । जिनको कन्या उत्पन्न करने की इच्छा हो रजोधने के पांचवीं, सातवीं, नववीं और ग्यारहवीं रात्रिमें गर्भाधान करै और इसमें भी उत्तरोत्तर रात्रियों को श्रेष्ठ जानना चाहिये । पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के अधिक रज होने से कन्या उत्पन्न होती है । यदि पुरुष के वीर्य और स्त्री के रज दोनों बराबर हों तो लड़का पैदा होगा तो नपुंसक और कन्या घनध्या होगी । क्षीणवीर्य अथवा अल्प वीर्यसे गर्भका न रहना अथवा रहकर भी गर्भ का गिरजाना होता है । सुश्रुत जी भी कहते हैं ॥

एतत्तरोत्तरं विद्या दायुरारोग्यमेव च । प्रजासौभाग्य-  
मैश्वर्यं बलंचाभिगमात्फलं ॥

इस बात को हम दूसरे खण्ड में लिख चुके हैं कि रजोदर्श निवृत्ति होने में पुरुष स्त्री के साथ गमन करसक्ता है सो तीन दिन स्त्री वर्जित है । चौथे दिन से प्रसङ्ग का दिन गिना जाता है चतुर्थ रात्रि में गमन करने से आयुष्मान् और आरोग्य लड़का पैदा होता है, छठवीं रात्रिमें गमन करने से निस्सन्देह पुत्र उत्पन्न होता है, आठवीं रात्रिमें सौभाग्य यान्, दशवीं रात्रि में ऐश्वर्ययान्, और बारहवीं रात्रि में गमन करने से बलवान् पुत्र उत्पन्न होता है इसी प्रकार कन्या की इच्छा करनेवाला विषम रात्रियों में गमन करै और उत्तर २ वही फल होगा । इसी विषय में धारगह जी भी कहते हैं ॥

ऋतुस्तुद्वादशनिशः पूर्वास्त्रिस्रश्चनिन्दिताः । एका-  
दशीचयुग्मासुस्यात्पुत्रोऽन्यासुकन्यका ॥

अर्थात् रजोदर्शन से लेकर धारह रात्रि पर्यन्त स्त्री अंतुवती रहती हैं । अब इससे तीन ही दिन अंतुवती रहती हैं यह खगहन हो गया । इसका मतलब यह है कि तीन दिन रक्त आव अधिक रहता है उसमें गमन करना निषेध लिखा है क्योंकि उस तीन रात्रियों में गमन करने से गर्भाधान के रहने के अलावा स्त्री के भगके रुधिरकी गर्मी पुरुष के लिङ्ग द्वारा भीतर जा के रक्त के परमाणुओं को अत्यन्त उष्ण कर गमनागमन में बाधा डालती है और वीर्य को द्रवीभूत करती है वही गर्मी शिर में प्रवेश कर मनुष्य को बुद्धिहीन बलहीन कर देती है । रजो धर्मवाली से अत्यन्त प्रसङ्ग करने से सूत्रकच्छू, सूत्राघात, भगन्दर और उपदन्ध आदि असाध्य रोग उत्पन्न होते हैं इसलिये रजो धर्मवाली स्त्री के साथ कदापि गमन न करे ॥

यह बात जो वैद्यक शास्त्र में लिखी है कि विषम रात्रियों में गमन करने से कन्या और सम रात्रियों में गमन करने से पुत्र उत्पन्न होता है और उसका कारण यह दिखलाया है कि सम रात्रियों में स्त्री के रज कम रहता है और विषम रात्रियों में पुरुष के वीर्य कम रहता है परन्तु यह नहीं लिखा कि क्यों कम रहते हैं ? मालूम होता है कि यह सब बात वैद्यवरो ने अनङ्ग रङ्ग आदि कामशास्त्र द्वारा परीक्षा करके सिद्ध किया है ॥

### सन्तानार्थ मैथुनविधिः ।

पुत्रोत्पादन के अर्थ मैथुन करने की विधि वेद तथा आयुर्वेद में बहुत कुछ लिखी है सविस्तार लिखने में इसका बड़ा भारी एक ग्रन्थ ही जायगा और आजकल ऐसे विद्याहीन बल बिहीन लोग हो गये हैं चाहे वाजन्म पुत्र हीन रहें परन्तु विधिपूर्वक मैथुन कभी न करेंगे । तथापि हम पाठक गणों के उपकारार्थ कुछ मैथुन की विधि लिखते हैं । स्त्री पुरुष को चाहिये कि पूर्वोक्त रीत्यनुसार भाङ्गरादि कर्मों से निवृत्त हो सुन्दर आभूषण और सुगन्ध यामित वस्त्र धारण कर दश ग्यारह यजे

उस अवस्था में मनुष्य को उचित है कि पुनः पूर्वोक्त लेखानुसार स्त्री गमन करे और गर्भ रहने पर गमन कदापि न करे ॥

## गर्भवती होने का लक्षण ।

तृप्तिर्गुह्यं स्फुरणं शुक्रास्त्रावानुबन्धनम् । हृदयस्पन्दनं तन्द्रा तृड्ग्लानिर्लोमहर्षणम् ॥

गर्भ रहजाने का लक्षण याग्भट्टमें इस प्रकार लिखा है । चित्तप्रसन्न, शरीर में कुछ भारीपन, कोख का फरकना, वीर्य जो गर्भाशयमें गया है उसका न बहना तथा रक्तस्त्राव भी न होना, कलेजा धकड़ करना, नेत्रों पर आलस्य, पियास, खानेपर मनका न चलना और रोमोंका खड़ा होना इत्यादि लक्षण होने से जानना कि यह स्त्री गर्भवती होगई है ॥

## गर्भपुष्टकारक उपाय ।

लब्धगर्भायाश्चैतेष्वहःसुलक्ष्मणावटशुद्धा सहदेवा-  
विश्वेदेवामन्यतमाक्षीरेणाभिप्लुत्यत्रीं श्रुतुरोवापिविंदून्द-  
द्यात् दक्षिणेनाशापुटे पुत्रकामानतान्निष्ठीवेत् ॥

जिस दिन गर्भधारण किया हो विशेषकर उसीदिन अथवा तीनदिन के भीतर लक्ष्मणा घूटी या बरगद का सुमगा (कोपल) या पीले फूल की कगही या गुलसकरी अथवा सफेद फूल का बरियारा इनमें से कोई भी एक मिला जाय जिस गी के नीचे बखरा हो और दोनोंका एकही रंग हो उसके दूध में पीस पुत्र की इच्छा रखनेवाली गर्भवती अपने दहने नाशा में तीन या चार बून्द सिञ्चन करे अर्थात् नाश लेवे यदि वह गलेमें उतर आवे तो उसे धूके नहीं (दक्षिणे नाशा पुटे) इस लेख से सिद्ध होता है कि कन्या उत्पन्न करने की इच्छुक गर्भवती बाग नाशापुटमें सिञ्चन करे याग्भट्ट में लिखा है (पुत्रार्थं दक्षिणेसिंघे द्वानेदुहितृ वांस्तया) उपरोक्त लिखेहुये औषधोंमें गर्भधारण के लिये लक्ष्मणा घूटी एक प्रधान औषध

है प्रायः गयाजी की ओर पर्वतोंपर तथा उत्तरीय-पर्वतोंपर भी मिलती है । लक्ष्मणा का वृत्त यम तुलसी के समान बड़ा और आकृतिमें भी वैसाही होता है सिर्फ भेद इतना है कि लक्ष्मणा के पक्षपर पुष्प के रुधिर के समान लाल र छोटे जायजा होते हैं, पुत्रोत्पन्न करने की शक्ति इंश्वर ने इसी को दी है ॥

लक्ष्मणा को उखाड़ने की शास्त्रोंमें इसप्रकार विधि लिखते हैं कि शरद ऋतु में जब लक्ष्मणा फल पुष्पसहित होती शनिवार के दिन सन्ध्या समय पवित्र होके उसके चारों ओर खैर की लकड़ी की चार कीले गाड़ धूप दीपादि से पूजन कर निमंत्रण करआवे जिस समय हस्त मूल या पुष्य नक्षत्र के सूर्य हों उसदिन जाके जड़ी बूटी उखाड़नेका प्रसिद्ध जो मन्त्र है उस मंत्र से उखाड़ लावे और पीछे फिर कर न देखे और ऊपर लिखे अनुसार उसके जड़ को दूध में पीस-गर्भयती के नाक में सिञ्चन करे, गर्भाधान के न रहने के बहुत से हेतु हैं उन्हें और उसके रहने के उपाय आ० द० के चतुर्थखण्ड में लिखेंगे । इस समय गर्भके कुछ विकारों को दिखलाते हैं । जो गर्भाधान विधिपूर्वक किया जाता है उसका फल यह है ॥

एवंजातारूपवन्तः सत्ववन्तश्चिरायुपः । भवन्त्यृण-  
स्याभोक्तारः सत्पुत्राःपुत्रिणोहिताः ॥

विधिपूर्वक ऋतुदान करने से कन्या अथवा पुत्र उत्पन्न होता है वे रूपवान्, सत्वगुणविशिष्ट पूर्णआयु पर्यन्त जीनेवाले, अपने बाहुबल से पैदा करके खानेवाले, और भाता पिता को सुखदेनेवाले होते हैं और जो ऋतुदान अविधि किया जाता है वही गर्भ दोषसहित होता है अर्थात् गर्भ का न रहना, या रह कर गिरजाना, गर्भही में घालकोंका मर जाना अथवा लँगड़े लूले वेढङ्ग कुरूप नपुंसक सन्तानों का उत्पन्न होना इत्यादि इसलिये सुन्दर सन्तान उत्पन्न करनेकी इच्छा रखनेवाला अविधि गर्भाधान कदापि न करे ॥

## जोड़ा लड़का होने का कारण

बीजेन्तरवायुनाभिन्ने द्वेत्रीजेकुक्षिमाश्रिते । यमा-  
वित्यभिधीयेते धर्मतरपुरःसरौ ॥

रज बीर्य्य दोनों निकलकर जिस समय गर्भाशयमें जाता है यदि वह भीतर के वायु से दो भाग हो के रहजाय तो दो लड़का एक साथ उत्पन्न होगा और वह भाग रज बीर्य्य की ताकत या निकदार कम होनेसे हुआ होता लड़के जन्मतही मरजायेंगे । यदि एक भाग पुष्ट और दूसरा भाग अल्प होता उसमें से एक लड़का जीवित और एक मर जावेगा । अगर दोनों भाग पुष्ट होंतो दोनों जीवेंगे ऐसा बहुतेरों जगह देखने में आया है यदि उमी रज बीर्य्य की भीतर की वायु बिलकुल विभाग न कर सकी हो कुछ विभाग हुआ हो और कुछ एकही साथ मिला होतो दो लड़के होंगे परन्तु जुटे होंगे ऐसे लड़के भी कभी २ देखने सुनने में आते हैं । इसीप्रकार तीन चार बालक भी होते हैं, एकहीसाथ पुत्र कन्याओं का उत्पन्न होना रज बीर्य्य के नून्याधिक पर निर्भर है ॥

कुतो बिल्ली आदि पशुओं के जो अनेक बच्चे पैदा होते हैं उसका कारण यही है गर्भाशय में वायु कर के रज बीर्य्य का विभाग होना । एकही समय कई सन्तान होने के विषय में अनुमान से हमको यह ज्ञान पड़ता है कि इस कार्य सम्पादन करने में वायु स्वतंत्र नहीं है । क्योंकि यद्यपि खाली चूहे में वायु है परन्तु उसमें घी सहित पारा आदि वस्तु एकवारगी भर देने से वायु निकल जाता है यदि उमीमें गेहूं चना आदि भर देतो अवश्य खाली भागों में वायु बचा रहेगा इसी प्रकार गर्भाशय में बीर्य्य रज पूरा मात्रा एकही चार जाने से वायु निकल जाता है और बीर्य्य रज यदि गर्भाशय में कईवार कर के जाने से बीच में वायु रह जाता है इसी से कई लड़के होते हैं और इसका मुख्य कारण बीर्य्य का विकार है ।



**नपुंसक सन्तान उत्पन्न होने का कारण ।**

सुश्रुत जी पाँच प्रकार के षडह (नपुंसक) माता पिता के रज धीर्य दोष से उत्पन्न होने को दिखलाते हैं—जैसे ।

**पित्रोरत्यल्पश्रीर्यत्वादासेक्यःपुरुषोभवेत् । सशुक्र-  
प्राशयलभतेध्वजोद्वायमसंशयम् ॥**

गर्भोधान के समय माता पिता के अधिक कम धीर्य होने के सबब से जो गर्भोधान रहता है, उससे जो सन्तान उत्पन्न होता है यह भा-  
सेक्य नामक नपुंसक कहाता है उसका लक्षण यह है कि युवाअवस्था में,  
दूसरे मनुष्य के प्रसंग करने से जो धीर्य पात हो उस धीर्य को वह भा-  
सेक्य नामक नपुंसक भक्षण करे तब उसका लिंग उठे ।

**सौगन्धिक नपुंसक ।**

**यःपूतियोनौजायेतससौगन्धिकसंज्ञितः । सयोनिशेक  
सौगन्धमाप्रायलभतेवलम् ॥**

जिस स्त्री के योनि से मथाद जाता हो उसके साथ संभोग करने  
से जो लड़का पैदा हो वह सौगन्धिक नामक नपुंसक कहाता है । जब  
तक यह किसी अन्य पुरुषके लिंग को अथवा स्त्री के भग को न सँपेगा  
तबतक उसका लिंग चैतन्य नहीं होगा ।

**कुम्भिक नपुंसक ।**

**स्वेगुदेत्रह्यचर्याद्यः स्त्रीपुपुम्वत्प्रवृत्तंते । कुम्भिकः-  
सतुविज्ञेयःईर्ष्यकंशृणाचापरम् ॥**

जो मनुष्य पहले किसी पुरुष से अपनी गुदाभंजन कराये उसने  
उसका लिंग चैतन्य हो तब यह स्त्री के साथ प्रसंग करने लायक हो  
उसको कुम्भिक नपुंसक कहते हैं और कोई दूसरका जय इस प्रकार करते  
हैं कि पहले जो पुरुष अपने शिपिल्लिंग से स्त्री की गुदाभंजन करे

( अधिक प्रसन्नचर्य रहने से जो नपुंसकता होती है उसके दूर करने के यही उपाय है ) जब लिंग उदयान हो तब स्त्री के साथ प्रसंग करे आगे ईर्ष्यक नपुंसक का लक्षण सुनियेगा । कुम्भिक नपुंसकके उदयतिका कारण प्रस्थांतरों में इसप्रकार लिखे हैं । गर्भाधान के समय साता के विलोम मैथुन और पिता के अस्पृशीय के प्रभाव से कुम्भिक नामक नपुंसक लकड़ा पैदा होता है एक आचार्य कहते हैं कि गर्भाधानके समय कम रजवाली औरत के साथ अत्यन्त शिथिल बौर्यवाला पुरुष गमन करे और उस पुरुष से उस स्त्री की वृत्ति गर्भात् काम की शान्ति न हो पुनर्बार अथवा दूसरे पुरुष के साथ मैथुन कराने की इच्छा बनी रहे और वह मैथुन न होने पावे वीचही में-गर्भाधान रहजाय उससे जो सन्तान होगी वह कुम्भिक नपुंसक होगा ।

### ईर्ष्यक नपुंसक के लक्षण ।

दृष्ट्वाद्यवायमन्येपांढ्यवायेयःप्रवर्तते । ईर्ष्यकःसतु-  
विज्ञोयोद्ग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥

ईर्ष्यक नपुंसक उसे कहते हैं जो दूसरे मनुष्य को मैथुन करता देख कर आप मैथुन करने को उद्यत हो और जयतक अन्य पुरुष को मैथुन करता न देखे लिंग कभी प्रसंग करने लायक न हो । ईर्ष्यक पण्ड इस प्रकार जन्मता है कि गर्भाधान के समय स्त्री पुरुष किसी ऐसे कार्य में परायण हों जो सहने लायक न हो शोकातुर हर्ष रहित मैथुन करने से जो पुत्र हो वह ईर्ष्यक संज्ञक नपुंसक होगा ।

स्त्री चेष्टाकार पांशवां नपुंसक का लक्षण और स्त्री पण्ड के लक्षण अर्थात् जिस कारण से स्त्री नपुंसक होती हैं दोनों का हतान्त आरोग्य-दर्पण के दूसरे खण्ड में लिख चुके हैं इस स्थल में हम यह दिखलाते हैं कि उपरोक्त नपुंसकों के बीयं है या नहीं ।

आसेक्यश्चसुगन्धोचकुम्भीकश्चेर्ष्यकस्तथा । सरेत-  
सस्त्वमीज्ञेयांशुक्रःपंडसंज्ञितः ॥ अनयात्रिप्रकृत्यातु-  
तेपांशुक्रवहाःशिराः । हर्पात्स्फुटत्वमायान्तिञ्चजोद्धा-  
यस्ततोभवेत् ॥

आसेक्य, सुगन्धी, कुंभीक, और ईर्ष्यक इन चारों पंशों में तो वीर्य है परन्तु पांचवांपंश जो स्त्री कीसी चेष्टावाला नपुंसक है जिसका लक्षण आ०६० के २ खण्ड में लिख चुके हैं उनमें वीर्य नहीं है यदि कोई संका करे कि जब वीर्यवान है तो नपुंसक कैसे हुआ ? उसका मतलब दूसरे श्लोक से स्पष्ट हो जाता है । यद्यपि उक्त पंशों में भी वीर्य नहीं है तथापि ऊपर लिखे हुये चेष्टा करने से जैसे वीर्य भक्षण, योनि सूंचना, गुदाभंजन और अन्य पुरुष का मैथुन देखने से शुक्रनाही शिराहर्ष युक्त होकर फूलती है इससे भी लिंग चैतन्य होता है । यही नपुंसकता दोष स्त्रियों में भी होता है ॥

### निकृषट गर्भोत्पन्न ।

यदानार्यावुपेयातांवृषस्यन्त्यौकथञ्चन । मुञ्चतःशु-  
क्रमन्योन्यमनस्थिस्तत्रजायते ॥

जिस समय दो स्त्री अति कामातुर हो पुरुषके साथ मैथुन न करा के दोनों आपस में मिला कर भग से भग मिलाय कर दोनों अपने २ रज को त्याग करे उस अवस्था में यदि गर्भ रहजाय तो उस गर्भसे बिना हड्डी का लहका पैदा होगा, उस लहके का लक्षण यह होगा कि यह अपने हाथ पैर सकल घटीर न सके अन्य कोई उसके हाथ पैर को चाहे जिम और कुका दे क्लेश नहीं होगा ऐसे बालक अवश्य कभी २ देखनेमें आये हंगे परन्तु जीते नहीं ॥

### स्वप्न मैथुन से गर्भोत्पन्न ।

ऋतुस्नातातुयानारीस्वप्नेमैथुनमावहेत् । आर्त्तवं-  
वायुरादायकुक्षौगर्भकरोतिहि ॥ मासिमासिविबद्धेत् ग-  
भिण्यागर्भलक्षणम् । कललंजायतेतस्यावर्जितंपैतृकैर्गुणैः ॥

यह सब श्लोक मुश्रुत के शारीर स्थानके हैं । इसका अभिप्राय यह है (ऋतुस्नाता) जो स्त्री रजो धर्म से शुद्ध हुई हो और पुरुष से समा-  
गम न हुआ हो यदि वह स्त्री रजोधर्म के चार दिनके बाद और चार

दिन के भीतर स्वप्न में मीघुत करे और रज, स्थूलित हो, जाय तो उस समय उसी रज को वायु लेकर गर्भाशयमें स्थापन कर देता है । यह गर्भ भी गर्भिणी के समान नहींना २ बढ़ता है और उससे फलल भी उत्पन्न होता है परन्तु पिता के लक्षण रहित अर्थात् जो लड़का पैदा होगा वह एक मांस का पिख्व समान होगा क्योंकि फलल उसी को कहते हैं । इसके अलावा और भी पाप कर्मों से अनेक प्रकारके विकृत स्वरूपवाले स्त्रियों के सन्तान उत्पन्न होते हैं । जैसा कि सुश्रुत में लिखा है ॥

सर्पवृश्चिककूष्माण्डविकृताकृतयस्तुये । गर्भस्त्वेवं-  
विधास्त्वेतेज्ञेयापापकृतोभृशम् ॥

सांप, बिच्छू, कुम्हड़े के समान मांस का छोचड़ा ऐसे भयानक स्वरूपवाले, तथा अत्यन्त खराब खराब अंग वाले गर्भ, प्रसूता के पाप करने से होते हैं ॥

## गूंगा आदि गर्भों के कारण ।

गर्भावातप्रकोपेणदौर्हृदेचावमानिते । भवेत्कुब्जः-  
कुशःपंगुर्मूकोमिशिमणएवच ॥

गर्भाशय में वात के प्रकोप से और माता के दौर्हृद अपचार से अर्थात् गर्भाधान के बाद गर्भावस्था में धुरे आचरणों से गर्भ में बालक कुबड़ा, टेढ़ा, लंगड़ा, गूंगा और मिन्मिन धोलनेवाला होता है । इस स्थल में यह सन्देह हो सकता है कि यदि माता पिताही के अपचार आदि दोषों के कारण गर्भ ब्रिगड़ता है तो पूर्व संस्कार जानना सर्वथा असंगत है-? सो ठीक नहीं है । सुश्रुत ही में लिख दिया है (माधितापूर्वं देहेषु इत्यादि तथा अशुभैश्वपुराकृतेः) तात्पर्य यह है कि पूर्व जन्म के विपिदुर्कर्मों से गर्भाशय में वायु दुष्ट होती है ॥

गर्भ में बालक के मल मूत्र न करने का सत्रय ।

यद्यपि यह सन्देह तो सभी को उत्पन्न हो सकता है कि जब गर्भाशय में बालक की सम्पूर्णा इन्द्रियां धन गई और जीव संयुक्त हुआ तो वह

बालक गर्भाशय में दिशा पेशाव क्यों नहीं करता ? गर्भमें बालक के मल मूत्र न करने का कारण यह है ॥

मलाल्पत्वादयोगाच्च वायोःपक्वाशयस्यच । वात-  
मूत्रपुरीषाणिनगर्भस्थःकरोतिहि ॥

गर्भ के भीतर बालक के शरीर में मल बहुत ही अल्प होनेसे और पक्वाशय में वायु के भी अत्यन्त कम होने से बालक गर्भ में मल मूत्र और वात का परित्याग नहीं करता, इसी प्रकार गर्भस्थ बालक के न रोने का भी कारण समझना ॥

**गर्भमें बालक के न रोने का सबब ।**

जरायुणामुखेच्छन्नेकण्ठेचकफवेष्टिते । वायोर्मा-  
र्गनिरोधाच्चनगर्भस्थःप्ररोदिति । निश्वासोच्छ्वाससंक्षोभ-  
स्वप्नान्गर्भाधिगच्छति । मातुर्निश्वासितोच्छ्वाससंक्षोभस्व-  
प्नसम्भवान् ॥

गर्भाशय के मुख आच्छादित होने से और कंठ कफ करके वेष्टित होने से एवं वायुका मार्ग रुके रहने से, गर्भके भीतर बालक नहीं रोता और गर्भ के भीतर बालक का श्वास लेना, होलना तथा निद्रा आदि क्रिया माता के श्वासादि लेने से होती है, याने माता जो जो श्वासादिक चेष्टा करती है वही गर्भस्थ बालक भी करता है ॥

**पूर्व कर्मानुसार बुद्धि का होना ।**

भावितापूर्वदेहेपुसततंशास्त्रबुद्ध्यः । भवन्तिसत्त्वभू-  
यिष्ठापूर्वजातिस्मरानराः ॥

पूर्य जन्म में जिस मनुष्य का जिस विषय में अत्यन्त अध्ययन रहता है वेही गुण वर्तमान शरीर में भी होते हैं । जैसे जिस मनुष्यकी आत्मा पूर्व देह में जिस विद्या करके विशेष तन्मय रही होगी यह मनुष्य वर्त-

मान-देह में अवश्य उसी शास्त्र का जानने वाला होगा । इसी प्रकार चोरी, धूर्तता, लम्पटता आदि दुरे कर्मोंका अभ्यासी भी वर्तमान देह में तद्दुर्गुण बिशिष्ट अवश्य होगा । पूर्वदेह में जिनके सत्वगुण प्रधान थे वे वर्तमान देह में भी वैसेही गुणवान होंगे, तथा व्यतीत जन्म जाति के स्मरण रखनेवाले भी होते हैं ॥

गर्भाधान-स्थितिके पश्चात् जब तक स्त्री पुनः रजोयती देख न पड़े तब तक उसके साथ मैथुन न करे, ऐसा अनेक शास्त्रों में बचन मिलेंगे । दूसरी बात यह है कि प्रथम २ अथवा कन्या ऋतुगती न हो उसके साथ भी गमन न करे और ऋतु होने का समय जो सुश्रुत में लिखा है वही ठीक है ॥

**तद्वर्षाद्वादशात्कालेवर्त्तमानमसृक्पुनः । जरापक्वशरीराणांयातिपंचाशतःक्षयं ॥**

भोजन से खिंचा हुआ जो रस उससे उत्पन्न होनेवाला रज (मासिक रुधिर) बारह वर्ष के उपरान्त प्रगट होकर जैसे २ शरीर में रसादि बढ़कर शरीर बढ़ता है तैसे २ रज भी बढ़कर महीने महीने योनिद्वारा प्रवृत्त होता है और जब पचास वर्ष से ऊपर की अवस्था प्रारम्भ होती है तब युवावा होने के कारण क्रमशः रज नष्ट होने लगता है और ६० वर्ष की अवस्था होते २ बिलकुल नष्ट हो जाता है । इस स्थल में यह बचन देने का हमारा मतलब यह है कि प्रथम २ मासिक रक्त स्त्रियोंको बहुत कम होता है, यहां तक कि कितनी धर्मवती हो जाती हैं और रक्त नहीं देख पड़ता, कई महीनों के बाद कुछ २ मालूम होने लगता है । इस अवस्था में भी मैथुन करना नहीं चाहिये, क्योंकि गर्भ रहजाने से बालक का जन्म अति कष्ट से होता है इसलिये, जबतक सूख सुलासा मासिक होना प्रारम्भ न हो सन्तानार्थ मैथुन कदापि न करे । इसीलिये ऋषियों ने १६ वर्ष की अवस्था वाली स्त्री के साथ सन्तानार्थ मैथुन करने को लिखा ॥

**अदृष्ट मासिक लक्षण ।**

पीतप्रसन्नवदनांप्रक्रिन्नात्ममुखद्विजां । नरकामां-

प्रियकथांस्त्रस्तकुक्षयक्षिमूर्द्धजां॥ स्फुरद्भुजस्तनश्रोणिनाभ्यूरुजघनस्फिजं । हर्षैत्सुख्यपरांचापिविद्यादृतुमतींस्त्रियम्

जो स्त्री ऋतुमती होजाय और रक्तस्त्राव न हो उसके लक्षण सुश्रुत में इसप्रकार लिखे हैं । जिस स्त्री का मुख पीत ( यह पीतमुख कान्ति विशेष में जानना ) प्रसन्नतायुक्त हो एवं भात्म ( देह ) मुख और दांत रसीलेहों ( नरकाम प्रिय कथा ) मैथुन सम्यग्धी धार्तें अच्छी लगती हों कोख आंख और बाल विकसित याने कुछ फैले हों, बाहु छाती कमर नाभि पिंडरी जांघ और चूतड़ जिसके फरकें एवं प्रसंग कराने की अत्यन्त इच्छा होती हो तो जानना यह स्त्री ऋतुमती हुई है परन्तु रक्त की अल्पता के कारण यह नहीं देख पड़ता ।

**व्यतीत ऋतु में मैथुन निष्फल है ।**

नियतं दिवसेतांते संकुचत्यम्युजं यथा । ऋतौ व्यतीतेनार्यास्तु योनिः संत्रियते तथा ॥

जैसे फूला हुआ कमल अपने नियत समय में पहुंच कर संकुचित याने सिकुड़ जाता है वैसेही ऋतु के व्यतीत होने पर अर्थात् रजोधर्म होने के १६ दिन बाद स्त्री की योनि ( गर्भस्थान ) संकुचित होजाती है । उस अवस्था में मैथुन करना निष्फल है क्योंकि वीर्य गर्भाशय में नहीं जाता ।

गर्भवती होने के पश्चात् जो लक्षण होते हैं, पुत्र पुत्री और नपुंसक गर्भ रहने के प्रह्वधान, गर्भिणी स्त्री के उपचार अर्थात् गर्भयुक्त स्त्रियों को किस प्रकार रहना चाहिये । गर्भ के भीतर कौन महीनेमें बालक के कौन अङ्ग प्रत्यङ्ग बनते हैं इन सधों को आगे प्रकाश करेंगे । इस समय हम हम बात को दिखलाते हैं कि गर्भवती के दुःख होने से यही दुःख भीतर गर्भगत माल को होता है लिखा भी है ।

दोषाभिघातैर्गर्भियायोधोभागः प्रपीड्यते । ससभागः शिशोस्त्वस्या गर्भस्थस्य प्रपीड्यते ॥

बात पितादि दोषों करके कोई किस्म की विमारी गर्भिणी को हो और उसे शीघ्र शांत न किया जाय तो वही रोग बालक को हीगा याने बातादि दोष से तथा लकड़ी आदि के प्रहार से गर्भिणी का जो २ अङ्ग दुःखित होता है वहीं अङ्ग गर्भ में रहने वाले बालक का पीड़ित होता है । इसलिये गर्भिणी स्त्री को मारना या किसी प्रकार का शोक देना कदापि न चाहिये और जब गर्भिणी दीहदनी होजाती है उस समय स्त्री को अनेक प्रकार के सुख के द्वारा प्रसन्न रखना आयुर्वेद की सम्मति है । दीहदनी उस स्त्री को कहते हैं जिसके गर्भ में ४ महीने का बालक होता है ४ महीने में गर्भस्थित बालक के जीव प्रगट होता है इससे शब्द स्पर्श रूप रस गंध इन विषयों में बालक का मन चलता है और गर्भ के बालक का जो हृदय है वह मातृज है इसलिये चतुर्मास के ऊपर वाली गर्भिणी, स्त्री दीहदनी वाली कहाती है इस से गर्भिणी का हृदय मन्तप्त होने से गर्भ में जो बालक होता है उसका भी-हृदय सन्तप्त होता है । इसलिये गर्भवती-स्त्री का मनोर्धे पूर्ण न करना बहुत बुरा है । सुश्रुत जी कहते भी हैं ॥

दौहदविमानात्कुब्जंकुण्डलिखञ्जुजडं वामनं विकृता-  
क्षमनक्षं वानारीसुतजनयति । तस्मात्सायदादिच्छेत्त-  
दस्यैदापयेत् । लब्धदौहदाहित्रीर्व्यवन्तचिरायुपम्पुत्र-  
जनयति ॥

अगर स्त्री की दीहदेष्टा ( दीहद की इच्छा ) परिपूर्ण न होवे तो वह स्त्री कुब्ज, लूला, नपुंसक, वीना ( पर अङ्गुल का लम्बा मनुष्य ) ऐशाताना नेत्रवाला और अनेक रूप रङ्ग रोगवाले आदि ऐसे बालक नपन्न करती है । इसलिये चाहिये कि गर्भवती स्त्री जिस २ बात की इच्छा करे ( परन्तु वह इच्छा अत्याचारी न हो ) उसे अवश्य पूर्ण कर देना चाहिये क्योंकि जिस गर्भवती स्त्री की इच्छा पूर्ण होती है वह स्त्री दीर्घवान और दीर्घ उमर वाला सन्तान को पैदा करती है ।

इन्द्रियार्थास्तुयान् यान्साभोक्तुमिच्छति गर्भिणी ।  
गर्भावाधभयात्तास्तान्भिपगाहृत्यदापयेत् ॥ साप्राप्तदौ-



हृदापुत्रं जनयेत गुणान्वितं । अलब्धदौहृदा गर्भलभेतात्म-  
निवाभयम् ये पुयेष्विन्द्रियार्थेषु दौहृदे वै विमानता । प्रजा-  
येत सुतस्यात्तिस्तस्मिन्स्तस्मिन्स्तथेन्द्रिये ॥

गर्भवती स्त्री के इन्द्रिय को जो जो प्रिय हो, जैसे गान सुनना, उत्तमर  
गहना यस्त्र पहरने की इच्छा, दिव्य मूर्त्यादिकों का देखना, स्वादिक द्रव्यों  
का भोजन, सुगंध द्रव्य का सूंघना, धन उपयन आदि स्थानोंमें हवाखाना  
आदि, जिस बात की इच्छा प्रगट हो उसके घरवालों को चाहिये कि  
अवश्य पूर्ण करें, वलिक गर्भवती स्त्री से पूछते रहें कि आजकल उसकी  
तर्षियत किस बात को अधिक चाहती है, उसे पूर्ण करै क्योंकि गर्भवतीके  
इच्छानुसार सुख न मिलने से निस्सन्देह गर्भ की विकृति हो जाती है और  
इच्छा पूर्ण होने से गर्भवती उत्तम प्रकार के सन्तान को प्रसव करती है  
और अलब्ध दौहृदा गर्भवती के गर्भ को अथवा उसके खुदही शरीर को  
भय रहता है ॥

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यह पांच विषय हैं और उक्त पांचों वि-  
षयों के भोग करनेवाली पांच इन्द्रियां हैं कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और  
नाक । अगर गर्भवती स्त्री की जो इन्द्रिय अपने विषय को चाहे और वह  
न मिले तो गर्भस्थित बालक की भी उसी इन्द्रिय को पीड़ा होगी ।  
जैसे गर्भवतीको गान सुनने की इच्छा हो और वह न सुने तो गान (शब्द)  
के चाहनेवाला कान है, वह कर्ण न वृत्ति होने से गर्भवत बालकके कान  
को दुःख होगा इसी प्रकार सब इन्द्रियों को समझना ।

## दौहृदकेद्वारा सन्तान के लक्षण ।

सुश्रुत शरीरस्थान अध्याय ॥ ३ ॥

राजसन्दर्शनेयस्यादौहृदो जायते स्त्रियाः । अर्थवन्त-  
महामागं कुमारं सा प्रसूयते ॥१॥ दुकूलपहकौशेयभूपणादि  
पुदौहृदात् । अलङ्कारैरपि षण्णुत्रं ललितं सा प्रसूयते ॥२॥ आश्र-

मेसंयतात्मानं धर्मशीलंप्रसूयते । देवताप्रतिमायान्तुप्र-  
सूतेपार्षदीपमं ॥३॥ दर्शनेव्यालजातीनांहिंसाशीलंप्रसूयते ।  
गोधामांसाऽशनेपुत्रं सुपुष्टंधारणात्मकम् ॥४॥ गवांमांसे-  
चवलिनंसर्वक्लेशसहन्तथा । माहिपेदौहदाच्छूरंरक्ताक्षंलो-  
मसंयुतम् ॥ ५ ॥

जिस स्त्री की इच्छा राजा के देखनेकी हो वह स्त्री धनधान और  
पुण्यवान पुत्रको उत्पन्न करेगी ॥१॥ जो गर्भवती की इच्छा उत्तम २ सूतयस्त्र  
अथवा रोगी बस्त्र (पीताम्बर आदि) पहननेकी होतो वह निस्सन्देह ऐसे  
रूपवान् पुत्र को उत्पन्न करेगी जो उत्तम २ आभूषण और बस्त्रको धारण  
करनेवाला हो ॥२॥ जिस स्त्री को महात्मा-अपियों के स्थान देखने की  
इच्छा हो अथवा पवित्र देश स्थान में रहने की इच्छा हो वह धर्मज्ञ स-  
त्यवादी, दृढ़प्रतिष्ठ सन्तान को उत्पन्न करेगी ॥ ३ ॥ अगर गर्भवती स्त्री  
को शेर चीता आदि हिंसक जानवरों को देखने का मन हो तो निस्स-  
न्देह वह स्त्री दुष्ट प्रकृतिवाला हिंसक बालक पैदाकरेगी । यदि गोह के  
मांस (गोह विच्छेदपट्टा वा साहाके आकार एकप्रकारका बड़ा जानवर है)  
खाने की इच्छा प्रगट करे तो वह स्त्री अनि हठी और बहुत सेानेवाला  
बालक उत्पन्न करेगी ॥४॥ जो मांस खाने की इच्छा करनेवाली स्त्री सौह  
और कठिन दुःखों को भी सहनेवाला ऐसा पुत्र, तथा भैंस के मांस के  
खाने की इच्छुक स्त्री किसी से न हरनेवाला महा शूरीर, जिस के  
नेत्र भयङ्कर लाल २ और समस्त शरीर में बाल हों ऐसे पुत्र को उत्पन्न  
करेगी । इसी प्रकार अनेक खाने पीने के वस्तुओं पर गर्भिणी स्त्री के मन  
चलने से वैसाही रंग बिरंग के स्वरूप, प्रकृति, और चाल चलनका पुत्र  
पैदा होता है, जिस्का सबिस्तार वर्णन करने में बड़ाभारी ग्रन्थ हो जा-  
येगा, आपूर्वद विद्या के जाननेवाले इतनेही से अनुभव करसके हैं ॥

वाराहमांसात्स्वप्नालुशूरंसञ्जनयेत्सुतं । मार्गाद्विक्रा-  
न्तजंघालंसदाग्रनचरंसुतं ॥

जो दो हृदयवाली स्त्री धनशुभ्र का नांस खाने की इच्छा प्रगट करे (इच्छा प्रगट करनेसे मतलब है धारंवार उसी वस्तुकी वासना यनी रहे) तो स्त्री अधिक सेनेवाला बड़ा शूरवीर जोरणसे विमुख नहो; ऐसे रणधीर पुत्र को निस्सन्देह उत्पन्न करेगी । उक्त वाक्यों से जान पड़ता है कि नांस खानेका प्रचार पूर्व में भी अधिक था । और जो गर्भयती स्त्री चलने फिरने की इच्छा अधिक रखती हो वह बहुत चलनेवाला और हमेशा बगमें घूमनेवाला पुत्र को पैदा करेगी । इसी प्रकार धारहसोंग के नांस की इच्छुक, चक्षुष वित्तवाला और तीतर का नांस चाहनेवाली स्त्री हरपोक बालकको उत्पन्न करेगी । यद्यपि इस स्थलमें इसबातको नहीं लिखा कि नांस खानेकी इच्छा करनेवाली किन जातिकी स्त्रियां हैं लेकिन यह जाना जाता है कि शूद्र की स्त्रियां अशुभ नांस खाती थीं बहुत सी स्त्रियां गर्भावस्था में मही खपरा जादि चीजें खाती हैं और उन्हीं चीजों पर उनका सदैव मन रहता है इसी से वे स्त्रियां फुलप, दुबल, दरिद्र, पांडुरोगी, और जिस को पेट में केषुये हो जाय ऐसा संतान उत्पन्न करती हैं ॥

हममें सन्देह नहीं कि माता अपने गर्भिस्थित बालक पर अपने मानसिक विचार द्वारा बहुत कुछ अच्छा बुरा प्रभाव उत्पन्न कर सकती है, यह तो स्पष्टही है कि गर्भिणियों के चित्त में अकस्मात् भय शोकादि उद्वेग होने से शीघ्रही गर्भपात हो जाता है, या बालकको अत्यन्त क्लेश होता है और उस क्लेशका लक्षण उस बालकके उत्पन्न होने पर प्रत्यक्ष होजाता है । आत्म विद्या के एक बड़ेभारी विद्वान घोयोहाहम साहब अमेरिका ने दौइदिमी के विषय में कई बातें प्रत्यक्ष देख करके लिखा है कि एक स्त्री जब उसका ३ मास का गर्भ या अचानक एक जंगली रीठके यज्ञे को देखकर बहुत डर गई, उसका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि उसके गर्भ से बायला लड़का पैदा हुआ और स्याम होने पर रीठ के समान खेलता या वह लड़का १४ वर्ष तक जिया ॥

योस्टन नगर में एक गर्भयती स्त्री अचानक एक तोते से डर गई

का ध्यान जिस र. पर पड़ेगा बालक का कोई न कोई अङ्ग उसीके समान होगा । जैसे मैथुन के समय स्त्री जिस पुरुष को ध्यान में लावे बालक रूप रंग में उसी के समान होगा, यहां तक कि कोई व्यभिचारिणी उपपत्ति के साथ व्यभिचार करते समय अपने पति का ध्यान करे तो बालक उसी के सदृश होगा मानो उसका औरम जात बालक नहीं है । यही कारण बालकों के मसे, लांसण, कालेदाग इत्यादि का भी है और उक्त महाशय एक कारण अधिक काभादि का भी कहते हैं ॥

लड़कों को विकृताकार तथा घट मूरत होने का कारण माता का अनेक वस्तुओं पर ध्यान देने का है, गर्भिणियों को चाहिये कि यदमूरत मनुष्यों को ध्यान देकर न देखें और अदृश्य वस्तुओं पर इच्छा न प्रगट करें । कदाचित् देख भी पड़े तो उनको ख्याल में न लावें और सदा सूयमूरत तस्थीरं देखा करें ॥

### अस्वाभाविक जन्म का कारण ।

यह भी ईश्वरेच्छा से स्त्री पुरुष के सांसारिक और स्वाभाविक नियम उल्लंघन करने का पाप फल रूप है । यह फल स्वाभाविक रूपसे उत्पन्न हुये बालक पर होता है क्योंकि विद्वज्जनों का मत है कि माता पिता के पुण्य या पाप का भागी, उनका सन्तान होता है । बालक का यदमूरत अङ्ग भंग का होना मैथुन की आधिक्यता और न्यूनतापर निर्भर है जैसे कि मैथुनकी आधिक्यता से हाथ पैर में उंगलियों का अधिक होना और मैथुन की न्यूनता से एक हाथ या दोनों हाथोंका न होना अथवा उंगलियों का कम होना इत्यादि ॥

स्त्री के प्रकृति विरुद्ध मैथुन कराने से अन्तर अस्वाभाविक बालक उत्पन्न होता है । सन् १६०३ ईस्वी में इङ्गलैण्ड देश में एक ऐसा बालक उत्पन्न हुआ था जिसका शिर से कमर तक शरीर मनुष्याकार था और कमर से पैर तक सलोम कूकुर के समान था । विद्वानों के अनुसन्धान करने से जाना गया कि उस स्त्री ने कूकुर के साथ मैथुन कराया था ।

एक स्त्री के विप्रय में, लिखा है कि उसने मैथुन के समय, अधिक ध्यान से एक हवसी की तस्वीर देखी थी उसका बालक ठीक हवसी के समान हुआ ॥

इसलिये एक के दूसरा राजा हेनरी के राज्यमें एक स्त्री के लड़का हुआ जिसके दो शिर, दो मुख, चार हाथ, चार पांव दोनों शरीर पीठके तरफ जुड़े थे, बात करने के समय दोनों मुख एक साथ बात करते थे और दोनों मुख से एकसाथही हँसते और रोते भी थे; यह लड़का कई वर्ष, तक जीता रहा लेकिन उनमें से एक तीन वर्ष के बाद मरगया और दूसरा कई दिन तक उस मृतक देहको लेकर जीता रहा लेकिन उसके बोकसे और मृतक शरीर की दुर्गन्ध से वह भी मरगया ॥

सक नामक एक नगर में एक गर्भिणी स्त्री के मुख पर मांसके एक बिन्दु रक्त के पड़ने से उत्पन्न बालक को देखा गया कि उसके मुख पर एक नसा है । पाठकगण को उपरोक्त लेखोंसे अवश्य मालूम हुआ होगा कि अच्छे और बुरे रूप, स्वभाव के बालक का उत्पन्न होना माता के ध्यान पर निर्भर है यदि उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा हो तो दीहृदनियों के मनोर्थ को अवश्य पूर्ण करे । क्योंकि दो हृदयवाली गर्भिणी के इच्छा पूर्ण न करने से अथवा न्यून अधिक मैथुन करनेसे जो सन्तान होगा यदि वह विकृतस्वरूप न होगा तो आलसी बल विद्या बुद्धि हीन अवश्य होगा । इसके पश्चात् हम सुश्रुत से यह दिखलाते हैं कि गर्भगत बालक के कौन २ महीने में कौन २ अङ्ग बनते हैं ॥

## मासभेद से अङ्ग का बनना ।

तत्रप्रथमेमासिकललंजायते । द्वितीयेशीतोष्मानि-  
 तैरभिप्रपच्यमानानां महाभ्रूतानांसंचोतीघनःसञ्जायते ॥  
 तृतीयेहस्तपादशिरसाः पञ्चपिण्डकानिवर्त्तन्ते ऽङ्गप्रत्यङ्ग-  
 विभागश्चसूक्ष्मोभवति ॥

भावार्थः—जब स्त्री के गर्भाशय में गर्भ रहता है तो पहले महीने में पुरुष का वीर्य और स्त्री का रक्त दोनों समूहित हो कफ रूप कलल (पिण्डाकार) अवस्था को प्राप्त होता है । दूसरे महीने में शीत ( कफ ) गरमी, (पित्त) और वायु इन्हीं से विपक्ष पञ्च महाभूतों का शुक्र शोषितात्मक जो समूह बंध कुछ घना हो जाता है । तीसरे महीनेमें दो हाथ, दो पांशु; शिर यह पांच पिण्ड एकही समय में पैदा होते हैं सिर्फ पिंडाकारही नहीं बल्कि उसके महीने २ अङ्ग प्रत्यङ्ग भी उत्पन्न हो जाते हैं । जैसे हाथ पैर और शिर यह अङ्ग है और पैरों की उंगलियां तथा शिर के नाक कान ओठ आदि प्रत्यङ्ग कहते हैं । गर्भगत बालक के जितने अंग होते हैं उनमें से कोई माता के अंग से और कोई पिता के अंग से उत्पन्न होते हैं ॥

चतुर्थसर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरो भवति ॥

जो तीसरे महीने में सूक्ष्म अङ्ग प्रत्यङ्ग उत्पन्न हुये वे सब चतुर्थ महीने में अलग २ हो जाते हैं और इसी चौथे महीनेमें बालकका हृदय बनता है इसीसे गर्भिणी स्त्री चौथे महीनेमें दो हृदयवाली कहाती है परंतु चरक का मत है कि तीसरेही महीनेमें गर्भिणी स्त्री दो हृदिनी हो जाती है और चरक महाराज चतुर्थ मास का वर्णन इस प्रकार करते हैं ॥

चतुर्थमासे स्थिरत्वमापद्यते गर्भस्तस्मात्तदा गर्भिणी गुरुगात्रत्वमापद्यते ॥

चौथे महीने में गर्भगत बालक (स्थिर) पुष्ट होता है इसी समय से चौथे मास में गर्भवती की शरीर भारी हो जाती है ॥

पञ्चमे मनःप्रतिबुद्धितरं भवति । पष्ठे बुद्धिः । सप्तमे सर्वाङ्गप्रत्यङ्गविभागः प्रव्यक्ततरः ॥

पांचवें महीने में गर्भगत बालकका मन अर्थात् चेतना उत्पन्न होती

लगते हैं । इसी प्रकार गर्भकी भी उत्पत्ति समझिये, गर्भमें सब अणुयय एकही सांघ उत्पन्न होते हैं । परन्तु अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण देख नहीं पड़ते जब बड़े और मोटे हो जाते हैं सब अलग २ मालूम होने लगते हैं ॥

बालक के शरीरमें कौन वस्तु मातृज अर्थात् माता से और कौन वस्तु पितृज अर्थात् पिता से उत्पन्न हैं उसे प्रकाश करते हैं ।

पितृज--गर्भस्यकेशमश्रुलोमास्थि नखदन्तसिरा-  
स्त्रायुधमनीरेतः प्रभृतीनिस्थिराणिपितृजानि ॥

मातृज--मांसशोणितमेदोमज्जाहृन्नाभियकृत् प्ली-  
हान्त्रगुदप्रभृतीनिमृदूनिमातृजानि ॥

पिता के अंश से बालक के शरीरमें शिरके बाल, हाड़ी, मूख, रोम, नख, दांत, छोटे नस, बड़े नस, सब से बड़े नस, और वीर्य यह उत्पन्न होते हैं, माताके अंश से गर्भमें बालक के मांस, वीर्य, रक्त, चर्बी, मज्जा, हृदय, नाभि, पिलही, आंत और मलाशय आदि नरम पदार्थ उत्पन्न होते हैं ॥

## रसात्मजन्य पदार्थ ।

शरीरोवलंबर्णाःस्थितिर्हानिश्चरसजानि । इन्द्रिया-  
गिज्ञानविज्ञानमायुः सुखदुःखादिकञ्चात्मजानि ॥

रस की ताकत से गर्भगत बालक के शरीर की छद्दि, बल, स्वरूप और स्थिति अर्थात् गर्भ का ठहरजाना और हानि अर्थात् गर्भ का न ठहरना यह भी रसही से प्रगट होते हैं । तथा नेत्र कर्ण आदि इन्द्रि-  
घान विज्ञान (सूक्ष्म पदार्थज्ञान) आयुः सुख दुःख आदि यह सब आत्मा से उत्पन्न होते हैं ॥

## गर्भमें पुत्र कन्या और नपुंसक सन्तान होने की पहिचान ।

यत्रयस्यादक्षिणस्तने प्राक्पयोदर्शनंभवति दक्षिणाक्षिमहत्वञ्चपूर्वदक्षिणंसकथित्कर्मतिबाहुल्याच्च पुत्राममध्येपुद्रव्येपुदौहृदमभिधायति स्वप्नेपुत्रोपलभते पद्मोत्पलकुमुदाम्रातकादीनि पुत्रामान्येव प्रसन्नमुखवर्णाचभवतितान्ब्रूयात् पुत्रमियंजनयिष्यतीति तद्विपर्ययेकन्याम् ॥

जिस गर्भिणी स्त्री के दहिने छाती में प्रथम दूध देख पड़े तथा दाहिनी आंख कुल बड़ी मालूम हो, एवं दहना जांच गर्भके भारसे कुल उठा सा जान पड़े और जितने पुरुष संज्ञक द्रव्य हैं जैसे आम, केला, आमरूद, जनार अथवा घोड़ा हाथी आदि जीवोंमें अभिलाप हो तथा स्वप्न में सफेद कमल, लाल कमल, कुमोदनी और आवड़ा आदि पुष्पिष्ठ वाचक पुरुष और फल देखे एवं जिसका मुख सर्वदा प्रसन्न चमकीला रहै तो कहना कि यह पुत्र पैदा करेगी और उपरोक्त बातें सब उलटी होती जानना कि इस स्त्री के गर्भ से कन्या उत्पन्न होगी । योगगुरुजी इतना विशेष कहते हैं "पूर्वतत्पार्श्वचेष्टनी" और लक्षणोंके अलावा जिस स्त्री के गर्भ में पुत्र है वह स्त्री की सम्पूर्ण चेष्टा दक्षिण तर्फ रहै याने चलेती पहले दहिना पैर उठावे, सोने में भी प्रायः दहने करघट सेवे । इससे उलटी चेष्टा में गर्भगत कन्या जानना चाहिये ॥

### नपुंसक गर्भ के लक्षण ।

यस्याःपार्श्वद्वयमुन्नतं पुरस्तान्निर्गतमुदरं प्रागभिहितलक्षणञ्च तस्यानपुंसकमिति विद्वात् ॥

जिस गर्भवती की दोनों कोख ऊंचीसे मालूमहों और आगेकी ओर



पेट बराबर सायिक दस्तूर हो और जो ऊपर लड़की लड़का होने का लक्षण लिखे हैं वे न मिलते हैं तो जानना की इस स्त्री के पेटमें नपुंसक बालक है ॥

**यस्यामध्येनिस्त्राणीप्रभूतसुन्दरं सायुग्मंप्रसूयतइति ॥**

जिस गर्भिणी स्त्री का पेट बीच में कुछ खाली सा पड़ जाय जैसे जल का पात्र और चारों तर्फ ऊंचे हो तो जानना कि इसके पेट में जोड़ा लड़का है ॥

**डाकूरीमतानुसार गर्भ का लक्षण ।**

इस स्थल में हम संक्षेप से कुछ डाकूरी मत से भी गर्भगत बालक के लक्षणों का प्रकाश करते हैं । पुरुषका शुद्ध वीर्य और स्त्री का रज जब गर्भाशय में जमता है तो वही बारह तेरह दिन के बाद रक्त का एक गोला सा बन जाता है और उसी गोले में कुछ दिन बाद प्रथम दिवा बनता है और उसी गोलेमें सम्पूर्ण नसों महीन सूत के समान चारों तर्फ फैल जाती हैं । बाद उसके शिर बनता है और बालक के हाथ पैर नाक मुह आदि स्थानों के सब नसों तैयार हो जाती हैं । यदि वही पिण्ड पुत्र है तो तीस दिन में जितने अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं सब बन जाते हैं । अगर वही पिण्ड कन्या की है तो वही सब अङ्ग प्रत्यङ्ग पैंतालिसवें दिनमें बनैगे । चौथे महीनेमें लड़का हो चाहे लड़की बाल नख आदि सब निकल आते हैं । सातवें महीने का पैदा हुआ बालक जीता भी है परन्तु आठवें महीने का जन्मा बालक अयश्य मर जाता है उसका सबव यही दिखलाया है कि ताकत स्थिर नहीं रहती, नवें और दशवें का जन्मा हुआ बालक जीता है ॥

**गर्भ में लड़का लड़की हीने को पहिचान ।**

स्त्री के गर्भ में लड़का रहनेसे पेट दहने तर्फ फूला रहता है लेकिन यह भी बहुत अधिक नहीं कम फूला रहता है और वे स्त्री प्रायः

दहिना हाथ जमीन में टेककर उठती है और चलने में भी अक्षर दहिना पैर उठता है । गर्भ में पुत्र के रहने से स्त्रियों के दहनी छाती कड़ी और फुल सुख हो जाती है । आंख की पुनली के नीचे ली सफेदी है उसमें जो छोरे रहते हैं दहिने तर्फ नीले होजाते हैं और नसें देख पड़ने लगती हैं । कन्या गर्भ में रहने से उपरोक्त सब लक्षणों को उलटा समझना जैसे पेट का बायें तर्फ फूलना और अधिक फूला रहना और अक्षर थायां हाथ जमीन में टेक कर उठना, बाईं छाती का कड़ा होना थोड़ी ललाई लिये नेत्र के छोरे बायें तर्फ नीले हो जाने इत्यादि ॥

ग्रीस देश निवासी प्रस्टाटल नामक फिलासफर कहते हैं कि यह बात हमने कई भरतर्षे आजमाया है और बहुत सत्य है । गर्भवती स्त्री की छाती से दूध निकाल पानी में डाल दे अगर दूध पानी के नीचे वैसाही बैठ जाय जरा भी न फैले तो जानना कि इसके पेट में लड़का है अगर वह दूध पानी पर उतराने लगे या पानी के ऊपर फैलजाय तो जानना कि गर्भमें कन्या है और यह बात तो प्रायः देखने में आई है कि लड़का पैदा होने में माता को क्लेश कम होता है लड़की में अधिक ॥

## गर्भवती स्त्री के त्याजकर्म ।

भाष्यप्रकाश से ।

अतिव्यवायमायासं भारंप्रावरणंगुहं । अकालजागरस्वप्रकठिनोत्कटकासनम् ॥ शोकक्रोधभयोद्वेग वेग-अद्वाविधारणम् । उपवासाध्वतीक्षणीप्या गुहविष्टंभिभोजनम् ॥ रक्तनिवसनंश्वभ्रकूपेक्षांमद्यमामिषं । उत्तानशयनंयच्चस्त्रियोनेच्छन्तितत्त्यजेत् ॥ तथारक्तस्रुतिशुद्धि वस्तिमाभासतोऽष्टमात् । एभिर्गर्भःस्त्रेवदामः कुक्षीशुष्यांभ्रियेतवा ॥

बहुत प्रसङ्ग करना, अधिक मेहनत करना, भारी बोझ का उठाना, दिगक्रो मोना रातको जागना या समय से न सोना, सकुकरबैठना, शय्या

बहुत देर तक बैठे रहना, जादा रज्ज करना, शोक करना, डरना या डरने के स्थान में जाना मनमें ग्लानि लाना, दिशा पेशाब लंगा हो और दवा छुटता हो उसे रोकडोना, उपवास करना, और दूर तक पैदल चलना \* तेल, मिर्चा, खटाई, अचार, सिरका, आदि तीक्ष्ण, देर हजम, और कडज करनेवाले पदार्थों का भोजन, लाल बस्तों का पहनना ३ मढ़ाड़, धावली और कुयें का आकना, शराब पीना, मांस खाना, हमेसा चित्त सेना, इत्यादि कुपथ्य गर्भिणी स्त्री को चाहिये कि त्याग करे क्योंकि सक्त आचरणों से प्रायः गर्भ गिर जाता है। तथा फस्त खोलाना, जुलाय लेना, दवा खा के बसन करना और आठवें महीने के भीतर सक्ति कर्म अर्थात् पिचकारी से गुदा मार्ग द्वारा मलाशय में दवा पहुंचाना (आठवें महीने में सक्ति कर्म करना लिखा है) इसके अलावा भी जो स्त्री कईवार लड़का जन चुकी है और उसके जो अनुभव किये हुये पथ्य हैं उनको भी शिष्टा को मानना गर्भिणियों के लिये हित है। ऊपर लिखे हुये कुपथ्यों के करने से गर्भ गिरजाता या गर्भही में बालक मरजाता है इसलिये गर्भिणियों को पथ्य से रहना चाहिये ॥

इस स्थल में स्त्रियों के कुछ उन रोगों का बयान करते हैं जिसके समय से गर्भ नहीं रहता जैसे योनिरोग, प्रदररोग, आर्तवरोग आदि। जिसमें हम प्रथम योनिरोग को कहते हैं। स्त्रियों के योनि (भग) दोष प्रकार का रोग होता है ॥

\* हमारे इस देश की मूर्ख स्त्रियां पूरे गर्भ को धारण क्रिधि दो दो चार चार कोस पैदल गइ। नहाने दीखी जाती हैं, गर्भविस्था को कोन कही सोपर में भो एकादमी ऐतवार का व्रत करती हैं जब इन कुपथ्यों से गर्भ गिरजाता है पथवा बालक उत्पन्न हुआ मरगया तो घर को और मरे हुए पितों का श्राप दितो है ॥

३ लाल बस्तों के ललाई को समक नेत्रों के द्वारा भीतर जा के बालक को नेत्र को गरम करता है इसी क्रिधि समस्त समकोकी चौजे गर्भिणी स्त्रियों को देखना मना किया है ॥

## योनिरोग ।

विंशतिर्योनिरोगास्थुर्वातपित्तकफादपि । सन्नि-  
पाताच्चरक्काच्च लोहिताक्षयतस्तथा ॥ शुष्काचवामिनी  
चैव पण्डोचांतर्मुखीतथा । सूचीमुखीविप्लुताचजातघ्नी-  
चपरिप्लुता ॥ उपप्लुताप्राक्चरणा महायोनिककर्णिका ।  
स्यान्नन्दाचातिचरणा योनिरोगाइतीरिताः ॥

स्त्रियों के योनि में बीस प्रकार का रोग होता है उनके नाम यह  
हैं । घतजा, पित्तजा, कफजा, सन्निपातजा, रक्तजा, लोहिताक्षया, शुष्का,  
वामिनी, पण्डो, अन्तर्मुखी, सूचीमुखी, विप्लुता, जातघ्नी, परिप्लुता,  
उपप्लुता, प्राक्चरणा, महायोनिक, कर्णिका, नन्दा, और अतिचरणा  
यही २० रोग हैं ।

सुश्रुत आदि ग्रन्थों के मत से भी योनिरोग लिखते हैं क्योंकि नास  
में शार्ङ्गधर से और अन्य ग्रन्थों से कुछ भेद है । सुश्रुतादि में योनिरोग  
के नाम इस प्रकारसे लिखते हैं कि उदावृत्ता १ बंधया २ विप्लुता ३ परि-  
प्लुता और घातला यह पांचरोग वायु दोष से होते हैं । लोहिताक्षरा  
१ प्रस्त्रिणी २ वामिनी ३ पुत्रघ्नी और पित्तला यह पांच रोग पित्त  
दोष से होते हैं । अरयानन्दा १ कर्णिकी २ चरणा ३ अतिचरणा ४ कफला  
यह पांच कफ दोष से उत्पन्न होते हैं । पण्डो १ अश्लिनी २ पण्डो ३  
सूचिकत्रा ४ और त्रिदोषजा यह पांच सन्निपात अर्थात् तीनों दोषों  
से है । इसके उत्पत्ति का कारण सुश्रुतमें इस प्रकार लिखा है:-

विंशतिर्व्यापदोयेनेनिर्दिष्टारोगसंग्रहे मिथ्याचारे-  
णतास्त्रीणांप्रदुष्टेनार्त्तवेनच ॥ जायन्तेवीर्यदोषाच्चद्वैवा-  
च्चशृणु ताःपृथक् ॥

मिथ्याचार अर्थात् झूठकहना खाना प्रकृति विरुद्ध भोजन जैसे  
गरम मिठाज है और गर्मही भोजन करना, मिथ्याविद्वार जैसे दिन राम

मैथुनही करना इत्यादि कारणों से मासिक धर्म का रक्त गरम हो यो-  
निरोग उत्पन्न होता है और माता पिता के वीर्य दाय से जिस कन्या  
का जन्म हुआ है उसे भी प्रायः योनिरोग हो जाता है ।

**उदावृत्ता**—जिस स्त्री के मासिक धर्म अति कष्ट से हो, वेहू में  
पीड़ा रक्त का गांठ गिरे तो जानना कि उदावृत्ता है ।

**वन्ध्या**—जिसका मासिक धर्म शुद्ध और ठीक समय में न हो  
उसमें गर्भाधान नहीं रहता ।

**विप्लुता**—योनिरोग में, योनि के भीतर हमेशा एक प्रकारका  
दर्द बना रहता है ।

**परिप्लुता**—योनिरोग में मैथुनके समय योनि के भीतर अधिक  
पीड़ा होती है ।

**वातला**—योनिरोग में मासिक रक्त रुक हो जाने से जैसे कोई  
सुई छेदे ऐसा दर्द हो । यद्यपि उपरोक्त चारों योनिरोगों में भी वायु  
का कोप है तथापि वातला योनिरोग में दर्द अधिक होता है ।

**लोहिताक्षरा**—जिस योनि के द्वारा गरम र लोहू दाह सहित  
जारी हो उसे लोहिताक्षरा कहते हैं ।

**वामिनी**—जिस स्त्री की योनि पुरुष के मैथुन के बाद पुरुष के  
लिङ्ग द्वारा गिरा हुआ वीर्य और पात हुआ स्त्री की रज दोनों को  
बाहर निकाल दे उसे वामिनी योनिरोग कहते हैं ।

**संसिनी**—जिस स्त्री की योनि अधिक देर मैथुन के होने से,  
या लिंग की रगड़ से बाहर निकल आवे वह संसिनी योगि है, ऐसी  
स्त्री के गर्भ रहजाने से सन्तान बड़े मुस्किल से होता है ।

**पुत्रघ्नी**—(दूसरा नाम जातघ्नी) जिस स्त्री के मासिक रक्त गर्भ

**महती**—उस योनि को कहते हैं जो बहुत फैली रहे यह भी रोग है ।

**मूचिवक्त्रा**—जिस योनि की छिद्र बहुत छोटी हो वह स्त्री सिर्फ मूत्र त्याग तो करसके परन्तु मैथुन न करसके यह मूचिवक्त्रा योनि कहाती है ।

यद्यपि ऊपर कहे हुये चारो योनिरोग यातादि दोष से हैं तथापि जिस योनि रोग में तीनों दोषों के लक्षण पाये जाय वह सखिपातजा योनिरोग कहाता है ।

## योनिकन्द रोग ।

दिवास्वप्नादतिक्रोधाद्ध्ययामादतिमैथुनात् । क्षता-  
ञ्चनखदन्ताद्भैर्वाताद्याःकुपितायतः ॥ पूयशोणितसंकाशं  
लकुचाकृतिसन्निभं । जनयन्तियदायोनीनाम्नाकन्दस्त-  
योनिजः ॥

अत्यन्त दिन के सोने से, अत्यन्त गुस्से में बने रहने से, बहुत अधिक मेहनत कसरत करने से, दिन रात मैथुन करानेसे, योनि के छिल जानेसे और नख दांत आदिके लगनेसे, ( यदि कोई कहे कि भगमें नखसे चोट लगना तो कोई शक की बात नहीं है क्योंकि मैथुनके पूर्व अक्सर धिपयी गण चण्टों उसे अंगुलियों से टटोलते रहते हैं पर दांत कैसे लग सकता है ? यह भी कोई शंका नहीं है बहुत से ऐसे धिपयी निकलेंगे जो भग के जीभ और दांतों से चाटते है । यहां एक गांध में धड़े रहेश से उनकी यह आवृत्त थी कि जय तक भग के भीतर जीभ डालकर उसे घंटे दो घंटे सूख न आटै लिङ्ग प्रसङ्ग लायक न हो ) जो भग के भीतर घायहो उससे यातादि दोष स्वप्रकृत्यानुभार कुपित होके योनिके भीतर पीव और रक्त दोनों के समेट, बड़बड़ के फल के आकार ग्रन्थि ( गांठ ) उत्पन्न करता है उसे योनिकन्द रोग कहते हैं । यह योनिकन्द वाताधिक्य से रूग्ण और फटा सा, पित्त से ललाई लिये दाहयुक्त जिसके तकलीफ से ज्वरहो कफसे खाजयुक्त मोलधर्ष का और जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिले उसे सखि-पात से योनिकन्द जानना ॥

## योनि रोग की चिकित्सा ।

योनि रोग की चिकित्सा साधारण प्रकार से जो अजसूदा है सुश्रुत संहिता, चक्रदत्त और अनङ्ग रङ्ग कामशास्त्र आदि ग्रन्थोंके मतसे लिखते हैं जो सर्व साधारण अपने काम में ला सकें ।

ऊपर कहे हुये योनिरोगों में कई रोग हैं जो असाध्य हैं परन्तु चिकित्सा सय की हो सकती है और कईवार आराम होते हुये भी देखे गये हैं । प्रायः योनिरोग की दवाइयां इसप्रकार होती हैं, जैसे योनि में बफारा देना, तेल में रुई का फोड़ा तर करके योनि के भीतर रखना, गोली या बत्ती बना के योनि में रखना, पिचकारी देना, दवाइयों का पानी बना के भग को धोना इत्यादि और दवा भी खाने को दिया जाता है ।

जिस योनिरोग में खजुरी बहुत हो और मैथुन करने में गाय की जीभ सरीखी खरखरी मालूम होती हो तो उस रोग में हरदी, दारु-हरदी, और भटकटैया का फूल इन तीनों चीजों का बराबर बजन, छे पानी में महीन पीस लुगदी बनाय योनि में रखे और उहाँ दवाइयों की धुनी दे इसीप्रकार कई दिन करने से आराम होता है ।

घात करके जितने प्रकारके योनिरोग हैं उनमें गुरघ, त्रिकला और दातूनि की जड़ तीनों चीजों का काड़ा बना के उसीसे योनि को धोना और तगर भटकटैया का फूल, फूट, सेंधानेन और देवदारु इन सब औषधों को एक २ छटांक ले कुचल कर ५ सेर पानी में काड़ा बनावे जब एक सेर पानी रह जाय मलकर छान ले और कढ़ाई में एक पाय काले तिल का तेल डाल उसीमें उक्त काड़े को छोड़ मन्दान्नि से पचालेवै जब पानी जलजाय तेल मात्र रहजाय शीतलकर छानलेय उसी तेलका काड़ा वार योनि में रखे इसी प्रकार जब तक रोग समूल नष्ट न हो बराबर काड़ा रखता जावे ।

पित्तदोष से जितने प्रकारके योनिरोग हैं उन सबों में गरम उपचार कभी न करना चाहिये । शीतल दवाइयों को छेप, तथा धोना, और

फोहा आदि रखना अत्यन्त फायदा करता है, उसी प्रकार कफ दूषित योनि में शीतल उपचार न करके गरम उपचार करने से लाभ होता है जैसे पीपर, मिर्च, उरद, सोंफ, फूट और सेंधानोन इन सब औषधों को फूट पानी में पीस अंगुष्ठ प्रमाण बत्ती बनाय छाया में सुखायलेय। इस बत्ती को योनि में रखने से कफ सम्बन्धी योनिरोग अथशय आराम होता है ।

## योनिरोग पर धातक्यादि तैल, चरकसे ।

धातक्यामलकीपत्रस्रोतोजमधुकोत्पलैः । जंब्याम्र-  
मध्यकासीसलोध्रकट्फलतेन्दुकैः ॥ सौराष्ट्रिदाडिमत्वग्-  
उदुम्वरशलाटुभिः । अक्षमात्रैरजामूत्रेक्षीरेचद्विगुणंपचेत् ॥  
तैलप्रस्थापिचुंतस्मात्थेनौचप्रणयेत्ततः । कटीपृष्ठत्रिका-  
भ्यंगंस्त्रेहंबस्त्रिचदापयेत् । पिच्छलस्रावणीयोनिर्विप्लु-  
तोपप्लुतातथा । उत्तानाचोन्नताशूना सिद्धयेत्सरुफोट-  
शूलिनी ॥

धवपत्र, आवले के पत्र, कमलपत्र, कालासुरमा, मुलेठी, जामुन और आम की गुठली, कौसीश, लोध, कायफल, तेंदू का फल या छाया, फिट-किरी, अनार का छाल और गुलर के कच्चे फल इन दवाइयों को सवा र तोला ले सब को फूट कर ५१॥ एक सेर अढ़ाई पाव धकरी के सूख में पीस लुगदी कर एक सेर कालेतिल का तेल कढ़ाई में डाल उसीमें लुग-दी और जितना बकरी का मूत्र है उतनाही गौका दूध भी उसीमें डाल कर धीमी आंच से पकादेवै जब दूध बगैरह जल जाय तेल अकेला रह जाय अग्नि से उतार शीतल कर धोतल में भर के रखदेवै। इस तेल का फोहा योनि में रखने से तथा पीठ, कमर, पीठ की रीढ़ में इस तेल के मालिस करने से और इसी की पिचकारी योनि में देने से निस्तन्देह योनि से पीस का ग्रहणा, योनि का सूजन और घाय तथा विप्लुता, उपप्लुता, उत्ताना आदि योनिरोग अति दुर्द सहित भी आराम होता है। इस तेल के दवाइयों का तौल भाषा में श्लोक से कुछ फरक है पाठकगण संदेह न करें ।



घूँहे का मांस तेल में पका के उसका फोहा योनि में धरने से अथवा सूसे के मांस के भरता में सेंधा नोन मिला के भग में रखने से निस्सन्देह योन्यशं और योनिकन्द रोग आराम होता है लेकिन जयतक रोग समूल नष्ट न हो बराबर उसका फोहा रखता जावे ॥

## महता योनि की चिकित्सा ।

मदनफल मधुक कपूर प्रपूरितं कामिनी जनस्य ।

चिरगलित यौवनस्य च वरांगमति गाढंसुकुमारं ॥

मैनफल, मुलेठी, और कपूर तीनों को महीन पीस तंजैय के कपड़े में पोटरी बनाय भग के भीतर रखने से अतिकैली तथा ढीली योनि संकुचित और सुकुमार हो जाती है ॥

## मासिक धर्म की चिकित्सा ।

यद्यपि इस रोग होने का कारण ऊपर लिख चुके हैं तथापि सद्य स्थल में इतना कहना जरूरी है कि स्त्रियों के माह्वारी का बन्द हो जाना और भी बहुत से कारण हैं—जैसे अत्यन्त गरम प्रकृति होने के समय मासिक रूग का सूखजाना उसका लक्षण यह होगा कि शरीर दुबला, शरीर में गरमी मालूम होना और भी जो रूग कमी के लक्षण हैं वह भी पाये जाते हैं । चाहिये कि ऐसी अवस्था में पुष्ट और रक्त वर्द्धक औषधियां खिला के तत्र मासिक खोलने की चेष्टा करे । किसी को अति ठंडक पहुंच कर रूग गाढ़ा होके जम जाता है इससे भी मासिक रुक जाता है, किसी को योनि में घाव होके मवाद सूख जाता है उससे या योनि के रोगों के मुख बन्द हो जाने से भी मासिक धर्म का होना बन्द हो जाता है और किसी २ को अधिक मोटेपन से रुधिर निकलने के रास्ते बन्द हो जाते हैं । उक्त कारणों को और प्रकृति को आच्छी तरह देख माल के चिकित्सा करना वैद्य को उचित है ॥

इक्ष्वाकुवीजदन्तीचलागुडमदनफली करवयपट्टाहूः ।

सांस्नुकक्षीरैर्वर्त्तिर्योनिगता कुसुमसंजनो ॥

कड़ुई तूम्बी के बीज, अघाल गोटे के दूध की गड़ की छाल, यही पीपर, पुरानागुड़, मेनफल, दारू का कीट (गराव सिंच जाने के बाद जो कीट नीचे डेग में जन जाता है) और मुलेठी इग सब चीजों को महीन पीस घूहर के दूध में चोट लँगुलिया के घरापर बत्ती बना के छाया में सुवाप लेप । इस बत्ती को योनि में रखने से अनास्य रोग अर्थात् मासिक धर्म का न होना आराम होके स्त्री महीने २ ऋतुमती होने लगती है ॥

मालकांगुनी, राई, धिजपमार लकड़ी, दुधियाघच, इन सब औषधों को कूट कपड़छान कर तीन २ मासा की पुड़िया बना ले शाम सवेरे १ पुड़िया मुखमें रख शीतल जलसे उतार जावे इस प्रकार पांच सात दिन दवा खानेसे मासिक धर्म होने लगता है । अगर इस चूर्णको भी खिलावे और योनि में पूर्वोक्त बत्ती रखे तो बहुत शीघ्र फायदा होवे परन्तु यह चूर्ण गरम प्रकृति वाली को फायदा नहीं करता । गरम निजाज वाली को सून बढ़ाने की चेष्टा करे और योनि में उक्त बत्ती को रखे । जिस स्त्री के मासिक धर्म नहीं होता उसे नित्य मछली कालातिल, सरद और सिरका आदि खाना फायदा करता है ।

## योनिशूल की दवा ।

पिचुमन्दरसेनमिश्रितैः पिचुमन्दानिलशत्रुबीजकैः ।  
घटितांबटिकांभगान्तरे भगशूलप्रशमायधारयेत् ।

नाँव की निबेली और रेड़ी के बीज दोनों को नाँव के पत्तों के रसों में सूख महीन चोट कर अघला के समान गोली बनाय ले, इस गोली को योनि के भीतर रखने से योनि का दर्द बहुत शीघ्र आराम होता है । इसी प्रकार इन्द्रायण की जड़ और शोंठ इन दोनों को सूख महीन पीस बकरी के घी में चोट योनिमें लेप करनेसे योनि का दर्द तत्काल जाता रहता है । परन्तु जिस स्त्री के योनि में दर्द, गरमी सुजांफ आदि के कारण से होगा उसमें फायदा नहीं करेगा ।

घन्ध्या चिकित्सा ।

ऊपर कहेहुये योनिरोग में, और सात प्रकारके योनिफूलमें जो रोग होते हैं जिसके लक्षण आरोग्य दर्पण के दूसरे खण्ड में लिख चुके हैं उन रोगों में गर्भ नहीं रहता, तथा माता पिता के अत्यन्त धीर्य कमजोर हो जानेसे भी गर्भ स्थित नहीं होता, इन सब बातों का विचार करके घन्ध्या की चिकित्सा करना उत्तम है क्योंकि जब तक योनिरोग आदि आरामन होगा गर्भस्थित होना अति दुष्कर है । रत्नावली में घन्ध्या की चिकित्सा इस प्रकार लिखी है ॥

क्वाथेनहयगन्ध्यायाःसाधितंसघृतंपयः । ऋतुस्नाता-  
बलांपीत्वागर्भधत्तेनसंशयः ॥ पिप्पलींशुङ्गवेरञ्जमरिचं-  
नागकेशरं । घृतेनसहपातव्यंघन्ध्यापिलभतेसुतम् ॥

दो तोला नागौरी असगन्ध को गौके दूधमें पीस लुगदी बनाय एक पाव गौ का दूध और एक तोला गौ के घृत में पकाय ले बाद उस दूध को कपड़े में छान कर ऋतुस्नान करके चौथे दिन यदि स्त्री पिपै तो निश्चय गर्भधारण करे । इसीप्रकार छोटी पीपर, सोंठ, निरच और नाग-केशर इनका ६ मासा घूर्ण घी के साथ ऋतुस्नान के चौथे दिन चाटने से घन्ध्या भी सन्तान उत्पन्न करे । गर्भस्थिति के लिये वैद्यक शास्त्र में और भी अनेक दवाइयां हैं जैसे सोमघृत, फलघृत आदि जिसका कि वर्णन भा० २० के दूसरे खण्ड में कर चुका हूं कि जो घृत, स्त्री पुरुष दोनों के दूषित धीर्य को शुद्ध करके विद्वान तथा बलवान गर्भ को प्राप्त करता है ।

दत्तात्रयी में लिखा है कि तीन प्रकार की घन्ध्या होती हैं "जन्मघन्ध्या काकघन्ध्या मृतघन्ध्या च क्वचिरिस्त्रयः" एक जन्मघन्ध्या जिसके कभी गर्भ स्थित न हुआ हो, दूसरी काकघन्ध्या जिसके एक सन्तान हो के फिर गर्भधान न रहे, तीसरी मृत घन्ध्या अर्थात् लड़के हों और संरजायें । और इसकी चिकित्सा भी अनेक प्रकार की लिखी है ग्रन्थ अधिक बढ़ाने के समय से नहीं लिखते हैं । लेकिन गर्भ का न रहना मुख्य धीर्यदाय है

हमने कई बार स्त्री पुत्रपं के रज धीर्य की परीक्षा करके धीर्य शुद्ध करने की प्रथा खिलाया है। गर्भ-अवस्था रहा है और पूर्ण मांस में सुन्दर सन्तान उत्पन्न हुआ है ।

पुरुष के धीर्य की परीक्षा इस प्रकारसे करै एक फूलके फटेरेमें घोड़ा चण्डमल भर देय और उसीमें पुरुष अपने धीर्यको हाँटे यदि धीर्य एकद्वारगी-जलके भीतर चलाजाय, तो जानना कि यह धीर्य गर्भाधान करने लायक है और धीर्य घुँद २ करके पानी पर उतराने लगे या पानी पर फैलजाय तो जानना कि यह धीर्य गर्भाधान नहीं करसक्ता । यदि धीर्य न पानी के भीतरही जाय और न ऊपर उतरावे पानी के बीचमें जाके टहरजावे तो जानना कि इस धीर्यसे गर्भाधान होगा परन्तु सन्तान नहीं जियेगा । इसीप्रकार रज की परीक्षा करै एक गमले में घोड़े से सोआ के वृक्ष लगा दे और स्त्री से उस वृक्ष की लड़ में पेशाव करावे यदि वृक्ष मुस्कता जावे तो जानना कि इसका रज शुद्ध नहीं है और वृक्ष जड़ के तस घने रहें तो जानना रज शुद्ध है ।

जब देखे कि पुरुष के धीर्य में दोष है तो नीचे लिखी पुई औषध खिलावे जब तक धीर्य शुद्ध न हो ।

सफेद मूसली बन्धई की, सालमखाना का बीज, बीजयन्द्, गुलसफरी, कामराज, मखाना और सेमरका मूसड़ा इन सातों बीजोंको बराबर भाग से कुट कपरखान कर छः २ तासा की पुड़िया बनाय डेप, सामसधेरे एक पुड़िया मुख में रख पाय भर गी के दूध में २ तोला मिश्री और आधा तोला गी का ची हाल के पी जावे इसीप्रकार जब तक उत्तम बलवान धीर्य न हो दवा बराबर खाता जावे और तेल निर्घा खटाई सराय मांस स्त्री मसङ्ग आदि से पहरेन करे ।

स्त्री के रज शुद्ध करने के लिये यह दवा खिलावे । नागीरी असगन्ध, पञ्चाहीशतावर एक २ छटांक, यथूल का गोद ३ तोला, छोटी सायची १ तोला सयचीजों को महीन पीस कपरछाने करलेय इसकी मात्रा ३ भागा से एक तोला तक है सांस सधेरे दोनों समय गी के दूध से दवा खावे जब तक रज शुद्ध न हो और मद्यमांसादि गरम भोजन, और शीत औषध,

पुरुष-समागम आदि से पहरेज करै, जब देखे कि रज पीयें दोनों खूब शुद्ध हैं पूर्वोक्त विधिके अनुसार गर्भाधानकरै निस्सन्देह सन्तान उत्पन्न होगा ।

## प्रदर रोग का निदान ।

स्त्रियों के योनि के द्वारा रक्त अथवा धातु का जाना प्रदर रोग कहता है और प्रायः यह रोग ऐसे २ कुपथ्यों से होता है—जैसे प्रकृति के विरुद्ध अधिक सूखा गरम भोजन करना, शराय पीना, खाने पर तुरत फिर खाना, कच्चे गर्भ का गिरजाना, अति मैथुन करना, सवारी पर चढ़ के अथवा पैदल बहुत घूमना, अधिक शोच और उपवास अन्याय-व्रतों का रचना, असहन व्यक्त का उठाना, अधिक चोटसे पीड़ित होना इत्यादि कारणों से घालादि दोष करके चार प्रकार का प्रदररोग होता है ॥

असृग्दरं भवेत्सर्वं सांगमर्दं सवेदनम् । तस्यातिवृद्धो-  
दौर्बल्यं श्रमो भूर्छामदस्तृपा । दाहः प्रलापः पांडुत्वं तन्द्रा-  
रोगाश्च वातजा ॥

इसका सागान्य रूप यह है कि चारों प्रकार के प्रदररोग में शरीर ऐंठता है और सफ़ीक पीड़ा होती है । प्रदररोग के बहुत बड़ जाने से शरीर दुबला हो जाता है, बिन भेदमत्त किये शरीर चकीची सालूमहो यह मन हो कि लेटे रहो कुछ काम काग मत करो, शिरमें पुनरी और नेत्र में गरभी सालूम होना, पियास की आधिप्यता शरीरमें जलन, जी का चपड़ागा, शरीर की रंगत पीलाहै और सफेदी भावला, नेत्रों पर कपकी और भी घायु के अनेक उपद्रव्य हो जाते हैं ॥

## वातादि भेद से लक्षण ।

श्रामं सपिच्छा प्रतिमं सर्पाडु पुलाकतोय प्रतिमं कफा-  
त्तु । सपीतनीलासितरक्तमुष्णं पित्तार्तियुक्तं भृशवेगि-  
पित्तात् ॥ रूक्षारुणं फेनिलमल्पमल्पं वातार्तिवातात्पिशि-  
तोदकाभम् । सक्षौद्रसर्पिर्हरिताडवर्णं मज्जाप्रकाशंकुण्ठणं

त्रिदोषम् ॥ तच्चाप्यसाध्यं प्रवदन्ति तं ज्ञानं तत्र कुर्वीत भि-  
पक्चिकित्सा ॥

भाष्यनिदानसे आतादि भेदों करके लक्षण कहते हैं । जिस प्रदर रोग में कफ का कोप होता है उसमें योनि से, अर्ध की तरह अथवा भातके माह के समान पीला सफेद मिश्रित रंग का या कोदक घान के धोवन सरीखा घातु निकलता है । जिस प्रदर रोग में पित्त का कोप रहता है उसमें नीला, काला, पीला, लाल और अतिगरम पेट और वेहुमें दर्द हो के योनि द्वारा लोहू निकलता है । वायु दोष से प्रदर रोग में गुलाबी रंग का फेन सहित थोड़ा २ कमर और वेहु में पीड़ाहोके अथवा मांसके धोवन सरीखा योनि द्वारा घातु निकलता है और जिस प्रदर रोग में तीनों दोष मिले रहते हैं उसमें जैसे शहद और घी मिल जाने का रंग होता है उस रंग का या हरताल के रंग के समान अथवा चरबी की भांति दुर्गन्धि सहित योनि के द्वारा घात का मवाद निकलता है यह असाध्य है सैकड़ों वार औषध खिला के परीक्षा लिया है कुछ फायदा नहीं होता निस्सन्देह त्रिदोष युक्त प्रदर रोगवाली स्त्री मर जाती है इसलिये युद्धिमान वैद्य उस प्रदर रोग की चिकित्सा न करे ॥

## सोमरोग का लक्षण ।

भाष्यप्रकाश से ।

स्त्रीणामतिप्रसङ्गेन शोकाच्चापिभ्रमादपि । अति-  
सारकयोगाद्वागरयोगात्तथैव च ॥ श्रापः सर्वशरीरस्थाः  
क्षुभ्यन्ति प्रस्रवन्ति च । तस्यास्ताः प्रच्युताः स्थानान्मूत्रमा-  
र्गं व्रजन्ति हि ॥ प्रसन्नाविमलाः शीता निर्गन्धानीरुजाः सि-  
ताः । स्रवन्ति चातिमात्रं ताः सानशक्नोति दुर्वला ॥ वेगं-  
धारयितुं तासां न सुखं विन्दते क्वचित् । शिरः शिथिलता त-  
स्या मुखं तालुचक्षुष्यति ॥ मूर्च्छाजृम्भाप्रलापश्च त्वक्कूक्षा-  
चातिमात्रतः । भक्ष्यैर्भोज्यैश्च पेयैश्च न तृप्तिं लभते सदा ॥  
सन्धारणाच्छरीरस्य ताग्रापः सोमसंज्ञिताः । ततः सोमक्ष-  
यात्स्त्रीणां सोमरोग इति स्मृतः ॥

जिस प्रकार पुरुष को बहुमूत्र रोग होता है, और अधिक मूत्र द्वारा घात जाते २ मनुष्य मर जाता है । उसी तरह स्त्रियोंको सोमरोग होता है और यह भी ऐसा दुष्कर रोग है यदि प्रारंभमें उपाय न किया जाय तो फिर आराम होना कठिन होजाता है और कुछ दिनोंमें स्त्री गलकर मर जाती है । यह रोग स्त्रियों के ही होता है और इसके होनेका भी कुपण्य वही है जो प्रदर रोग में लिख आये हैं जैसे—अति मैथुन, अति शोच अधिक मेहनत आदि विशेष यह कि जुलाय के बिगड़ जाने और जहरीली वस्तु के खाने से सम्पूर्ण शरीर का रस रक्तादि तर पदार्थ और जल का अंश अपना २ स्थान छोड़ मूत्राशय में प्राप्त हो के योनिमार्ग द्वारा अनियमित समय में भी निकला करता है । यह जल के समान साफ, रंगरहित, शीतल, जिसमें कुछ भी गन्ध नहीं न किसी प्रकारका दर्द सर्वदा दिया रात्रि निकला करता है । यही बीमारी जब अधिक बढ़ जाती है तब स्त्री वेगकी नहीं रोक सकती अर्थात् पेशाब लगनेसे चटते २ कपड़े में भी हो जाता है इसे हर समय धोती भीनी रहती है । इस रोगवाली स्त्री के शिर में दर्द पुनरी, चक्कर, मुखका सूखना, वदन रुखा, शरीर कमजोर, खाने पीने की चीजों से तृप्ति नहीं होना घना रहता है । इस रोग में स्त्रीका रज आदि तर पदार्थ पानी सरीखा बहा करता है तथा उसके क्षीण होने से स्त्री के सोम रोग होता है ॥

## मूत्रातिसार ।

सोमरोगेचिरंजातेयदामूत्रमतिस्त्रवेत् । मूत्रातिसारं  
तंप्राहुर्वलविध्वंसनंपरम् ॥

जब स्त्री को सोमरोग बहुत दिनों तक घना रहता है तो अन्त में उसे मूत्रातिसार हो जाता है अर्थात् धारम्यार और अधिक निकदार से पेशाब आने लगता है और रोकने से रुकता नहीं इससे स्त्री का शीघ्र ही बल नाश हो जाता है और मर जाती है या कोई अति दुष्कर रोग उसके शरीर में हो जाता है ॥

## प्रदररोग की चिकित्सा ।

यह सब आयुर्वेद वेत्ताओं का मत है कि जितनी औषधियां रक्ता-  
तिसार, रक्त पित्त और रक्तज बाधाधीर के आराम करनेवाली हैं वे सब  
चारों प्रकार के प्रदररोगों को आराम करती हैं ॥

## परीक्षित औषधियां ।

दारुधरवी, रसवत, चिरायता, कूसा, नागरमोषा, बेलका गूदा और  
 शुद्ध भेलावां इन सब औषधोंको बराबर तोल दो तोला ले अपकवरा  
 कर एक पाव जल में एक मृत्तिका पात्रमें रात को भिजा देवे सुबेरे जाग्र  
 देवे जध एक छंटाक जल रहजाय उतार शीतल कर के छान लिय और  
 छः मास निश्री मिला के पी जावे, इसी प्रकार सुबेरे भिजावे तो शाम  
 को पकाय कर पीवे । यह पूरा मात्रा है यदि रोगी कमजोर या उमर  
 कम हो तो मात्रा भी कम कर लेवे । भेलावां की डिपुनी काट कर के  
 फेक देवे और उसे फाड़ कर धीज निकाल डाले पश्चात् शुद्ध कर लेय ।  
 खाने को गर्म चीजन देवे ॥

## चन्दनादिचूर्णं प्रदराधिकारे ।

चन्दनंनलदंलोध्रमुशीरंपद्मकेशरं । नागपुष्पंचविस्वं  
 चमद्रमुस्तञ्जशर्करा ॥ ह्रीवैरञ्जैवपाठाचकुठजस्यफलत्वचं ।  
 शृङ्गवेरंसातिविषाधातकीचरसाञ्जनं ॥ आम्नास्थिजंघुसा-  
 रास्थितथामीचरसेहभ्रवः ॥ नीलोत्पलंसमङ्गाचसूक्ष्मैला-  
 दाडिमोद्भवं ॥ चतुर्विंशतिमेतानिसमभागानिकारयेत् ।  
 तगडुलोदकसंयुक्तमधुनासहयोजयेत् । चतुःप्रकारप्रदरर-  
 क्तातिसारमुल्वणम् ॥ रक्ताशांसिनिहन्त्याशुभास्करस्ति-  
 मिरंयथा । अश्विनोःसम्मतोयोगोरक्तपित्तनिवर्हणः ॥

यह सुसखा हम शैवज्वरलावली से लिखते हैं जिसे अनेक बार अ-  
 जमाके देखा है जो निस्सन्देह प्रदररोग को नाराग करता है । सफेद-  
 चन्दन जटापासी, लोष, खस, कमलके फूलके भीतर का केशर न मिलने  
 पर कमलगट्टे की गरी, बेलका गूदा, नागरमोषा, निश्री, हाहूधिर, पाड़ी,  
 कुरैया की छाल, इन्द्रजव, धैतरासेंठ, अतीस, पथके फूल, रसवत, आम  
 की गुठलीकीगरी, जामुनके गुठलीकीगरी, मोचरस, नीलकमलका पद्याङ्ग न



मिलने पर कलंगगुह की गरी, तंजीर, छोटी लायरी और अनारकाफूल, इन सब चीजों की चोखी का समान भाग ले कूट कपरखान कर किसी कामदार यातल में रखदे । इस घूर्ण की मात्रा ६ मासा से दो तोला प-  
 योक्त है, इस घूर्ण को चोखल के धोवन और महतके साथ कुछदिन खाने से चारो प्रकार का प्रदरोग रक्तातिहार एवं रक्तग बाधासीर निस्सन्देह आराम होता है जिसतरह सूर्यके प्रकाश से अन्धकारका नाश होता है उसी प्रकार इस घूर्णके सेवनसे प्रदरोग का नाश होता है इस घूर्णको अश्विनी कुमार ने प्रकाश किया है इसके रक्त पित्त का भी नाश होता है । चावल के पोषण की क्रिया यह है कि आधी छंटाक पुराने चावल को पोड़ा कुचलकर जिसमें दो तीन टुकड़े हो जाय १ पाव ललमें भिजो दे घंटे दो घंटे के बाद सूख भलकर खानलेप और उसमें ३ मासा सहस मिलाके रक्त घूर्ण को मुखमें रख कपरसे चावल का पोषण पीजावे, अथवा चावल के पोषण में घूर्ण को घोट खानकर पीजावे इसतरह पीनेसे और भी जल्द कायदा करता है खानेमें गरम चीजों का पहरेज ॥

दो तोला अशोक छल की छाल को दूध में पका के मिश्री मिलाके दोनों समय पीने से रक्त प्रदर आराम होता है उसी प्रकार पके गुलर के फलों को सुखाय घूर्ण कर मिश्री मिलाय एक तोला के अन्दाज दोनों समय दूध के साथ अथवा पाणी के साथ खाने से रक्त प्रदर का कायदा करता है ॥

सफेद चन्दन १ तोला, खस १ तोला, कमलगुह की गरी ३ तोला तीनों को आधसेर चावल के धोवन में सूख नहीं घोंट छान कर दो तोला मिश्री मिला के दिनभर में कई गरतया करके पीनेसे और केवल दूध चावल मिश्री के भोजन करने से योनि द्वारा लोहू का जाना बन्द होता है । इसीप्रकार पक्का किले की खीमी को दूध में कई गरतया साग कर खानेसे योनि द्वारा लोहू का जाना बन्द होता है ॥

### प्रदर रोग में पथ्याऽपथ्य ।

साठी के धान का अथवा पुराने चावल का भात, मूंग मसूर और चना की दाल, गेहूं या जव की रोटी, गी या मकरीका दूध, भैंसका घी,

कटहर, केला, चीराई, परवर, पका कुम्भड़ा, कमलकानाल और लौकी की तरकारी । चिरींजी, अदरक, ताड़ का फल, अनार दोनों प्रकार के, छुहारा, सिंघाड़ा, आमला, तारियल, कसेरू, कैथा, ठण्डा जल आदि जितने प्रकार के शीतल पदार्थ हैं सब कापदा करते हैं. (अपघ्न) बहुत नेहनत करना, रास्ता चलना, धूप और भाग के सामने बैठना, दिशा पेशाब का रोकना. तमाकूपीना, मद्य मांस खाना, शोच और गुस्सा करना, गुड़ भांटा, तिल, उरद, सरसों, दही, सिरका, अचार, लहसुन आदि जितने गरम और क्षार द्रव्य हैं सब नुकसान करते हैं ॥

### सोम और मूत्रातिसार की चिकित्सा ।

भिन्हीकीजड़, सूखापिंडारू, सूखाआमला, विदारीकंद यह सब चार २ तोला उरद का चूर्ण, और मुलेठी दो २ तोला सबको महीन पीस छः २ मासा की पुड़िया बनाय लेप शाम सवेरे एक पुड़िया मुखमें रख पाचभर गी के दूध में मिश्री मिला के ऊपर से पीनेसे सोमरोग आराम होता है अथवा कुछ दिन बराबर दूधके साथ परछाहीं शतावर पीने से भी रोग आराम होता है । और ऊपर लिखेहुये चन्दनादिचूर्ण से भी सोमरोग आराम होता है । मूत्रातिसार के लिये यह दवा परीक्षित है ताड़ वृक्ष की जड़, खजूर वृक्ष की जड़, मुलेठी और बिलार्ईकन्द सब को सम भाग छे चूर्ण कर छः मासा के अन्दाज गी के दूध अथवा चावल के घोवन के साथ दोनों समय कुछ दिन बराबर सेवन करने से मूत्रातिसाररोग आराम होता है इस रोग में भी यही पथ है जो प्रदरोग के लिये कहा गया है । स्त्रियों के और रोगों का प्रकरण आरोग्यदर्पण के चतुर्थ खण्ड अथवा पञ्चम खण्ड में लिखा जायगा ॥

### परीक्षित औषधियां ।

वैद्यक के ग्रंथों में अश्वक की उत्पत्ति इस प्रकार लिखी है कि जब वृत्रासुर के मारने के लिये इन्द्र ने वज्र उठाया तब उसमेंसे चिनगारियां निकल आकाश में फैलकर पर्वतों के शिखरों पर गिरों उनसे अश्वक उत्पन्न हुआ सो जहां का पत्थल जिस रंग का वहां उसी रंग का अश्वक तब

अभ्रक मिनता है परन्तु विशेष कर. उत्तर के पर्वतों में उत्पन्न अभ्रक में बहुसत्व और सवों में अधिक गुणवान है ॥

### अथ अभ्रक के शोधन मारण की विधि ।

अभ्रक के दो भेद हैं खेताभ्रक और कृष्णाभ्रक, सेा रस बनाने के काममें काला अभ्रक लिया जाता है क्योंकि काले अभ्रकमें पारद है और सफेद अभ्रक में पारा नहीं है । यह काला अभ्रक चार प्रकारका है पिनाक-ददुर-नाग और यज्ञ (लक्षण) पिनाकका भाग में हालने से पत्रे खिल जाते हैं, ददुर भागमें हालनेसे मेढकके समान शब्द होता है, और नाग को भाग में हालने से फुफकार देता है ये तीनों अभ्रक खानेसे मृत्यु को देता है और यज्ञ नामक अभ्रक भागमें हालनेसे कुछ रूपान्तर अथवा शब्दादि नहीं होता किञ्चिन्मात्र फूल जाता है यही अभ्रक खानेके योग्य है इसका भस्म बुढ़ापा तथा मृत्यु का हरनेवाला है ॥

अशुद्ध अभ्रक कोड़, सयो, पांडु, हृदय पीड़ा, पसुरी में दर्द, देह का जकड़ना और अग्नि को मन्द करता है । इसलिये पहले अभ्रक को इस प्रकार शोध लेना चाहिये अभ्रक के खण्ड को छे कोयले के आंच में सूख लाल करे जब देखे कि अभ्रक खुरां हो गया है गौ के दूध में बुझाय लेंय और बाद इसके चीलाई के साग का रस ३ भाग नींबू का रस १ भाग दोनों रसों को एक पट्टल के पात्र में भर उसी में अभ्रक को एक दिन रात भिजा रखे दूसरे दिन जल में धोय हाथ से सूख मल कर उसके पत्रों को भिन्न २ कर देखे तब उसे धान्याभ्रक करे ॥

### धान्याभ्रक की विधि ।

उपरोक्त प्रकार से शुद्ध किया हुआ अभ्रक को घान में सुखाय खरल में सहन फूट लेय जितना कुटा भया अभ्रक हो उसका चीयाई समुचे घान छे दोनों को एक कम्बल में आंच तीन दिन रात पानी में बुधो रखे तीन दिन के बाद उसे हाथों में सूख गर्दन करे जिस्से कि अभ्रक मल छन के पानी में निकल आवे और अभ्रकमें जो कंकड़ पत्थल रहता

हे वह घात के साथ कम्बल के पोटरों के भीतर रह जावे । जो अभ्रुक  
उस के पानी में जा गया है उसे घोर करके जल बहाय देवे और अभ्रुक  
को घात में सुखाय लेय यही अभ्रुक मारण प्रकार में श्रेष्ठ होता है ॥

### मारण विधि ।

धान्याभ्रुकको मदार (जहाँ २ इंसे आक और अकीया भी बोलते हैं)  
के दूध में घोंट टिकरी बनाय सुखायलेय बाद उसे मदार पत्र में लपेट  
ऊपर कपरीटी कर गजपुट में फूंक देवे इसी प्रकार सात दफे मदार के  
दूध में घोंट और पत्र लपेट सगुट कर गजपुट में फूँके बाद उसी तरह  
बरगद के जटा के काढ़े में घोंट टिकरी बांध सुखाय बाद ऊपर से कप-  
रीटी कर गजपुट में फूँक देवे फिर कुमारीकन्द (घीकुमार) रससे खरल में  
घाट आंच देवे इसी प्रकार १०० गजपुट का आंच देवे यह ही पुट का  
अभ्रुक अन्य विधि अभ्रुक भस्मों से अति उत्तम बल वीर्य वृद्धि कारक है  
तथा सब से उत्तम अभ्रुक भस्म एक हजार आंच का होता है वैद्यक के  
अनेक ग्रन्थों में अभ्रुक फूँकने की अनेक विधि लिखी हैं परन्तु वही विधि  
सब से उत्तम और सरल है (अमृतीकरण) जितना अभ्रुक भस्म हो उतनाही  
गो घृत से दोनों काल चूरेहे पर रख इतना आंच देवे कि पात्र के अति  
उष्ण होने से घृत बल उठे अथ घृत जल के शान्ति हो जाय तो अभ्रुक  
निकाल काम में लावे ॥

### मारितस्य अश्रुकस्य गुणः ।

अश्रुकपायमधुरं सुशीतमायुष्करं धातुचिचर्द्धनं च ।  
हन्यात्त्रिदोषत्रयमेहकुष्ठं प्लीहादरग्रन्थिविषकृमींश्च ॥  
रोगान्हन्यात्द्रव्ययति अपुर्णैर्यवृद्धिं विधत्ते । तारुण्याद्दयं-  
रमयति शतं योपितां नित्यमेव ॥ दोर्घायुष्कान् जनयति  
सुतान् सिंहतुल्यप्रभावान् । मृत्योर्भीतिं हरति सुतरां सेव्य-  
मानं मृताभ्रम् ॥ १ ॥

यह गुण अभ्रक भस्म के अनेक ग्रन्थों में लिखे हैं। अभ्रक भस्म कसैला, सधुर, शीतल, आयुष्य का बढ़ाने वाला और धातु बढ़क है सक्रियात्, फोड़ा, धातु रोग, कोढ़, पिलही, मांसग्रंथि, विष दोष, एवं रुमि रोगको नाश करता है, उक्त रोगों के नाश के बाद शरीर को पुष्ट करता है और शीयं को ऐसा बढ़ाता है कि गित्य सैकड़ों स्त्रियों का संभोग करने को समर्थ होता है और जिनके सिंघ के समान बलवान तथा दीर्घायु पुत्र उत्पन्न करने की ताकत देता है एवं मृत्यु के भी मय से बचाता है। परन्तु यह नहीं लिखा कि कितने दिन के सेवन से उपरोक्त गुण लाभ होते हैं।

### स्वेत प्रदर की औषध ।

औरतों को चार प्रकार का प्रदर रोग होता है तिसमें स्वेत प्रदर अति कठिन रोग है इसमें योनि से कभी २ या सर्वदा निरन्तर गाढ़ा सा पानी निकलता रहता है। एक हलवाइन जिसकी अवस्था २८ वर्ष की थी बहुत दिनों से उक्त रोग में पीड़ित थी प्रयाग में उसने प्रायः छोटे बड़े सभी दकीम वीर्यों की दवा की, परन्तु किसी से कुछ भी फायदा न हुआ अन्त को हमारे औषधालय में आई हमने भी अनेक प्रसिद्ध औषधियां खिलाई लेकिन फायदा न हुआ तब एक साधारण औषध बनाके १ मास दिनों समय खिलाने से रोग समूल नष्ट हो गया तत्पश्चात् उधी औषध से कई एक रोगियों को आराम हुआ सो लिखते हैं।

भिंही (प्रसिद्ध सरकारी) की गड़ सुला के पाव भर। पिड़ाऊ (सुपनी भी कहते हैं) सूखा हुआ पाव भर दो। मो को कपर छान कर उः उः मास की मात्रा बना ले, याद भर नौ के दूध में एक तेरला शीशी मिला के एक पुड़िया मुख में रख उसी दूध से उतार जावे ऐसा ही राम सबेरे खावे, दूध न मिले तो दूध में जरासा मिश्री मिला के पानी से उतार जावे, तेल मिर्चा खटाई आदि गर्म चीजों से परहेज करे।

डाक्टरों मत से सर्प विष की चिकित्सा ।

एनीमेल पाइंजन (जीवविष) अर्थात् सर्पादि जीवों के काटने से

घिय से पीड़ित होना । अगर पागल कुत्ता, स्यार प्रभृति सर्पोंदि जहरीले जीव शरीर में जिस स्थान में काटे बहुत शीघ्र उसी स्थान के कुछ ऊर्ध्व भाग में कपड़ा या डेरे से सूख कर बांध देवे, बांधने के बाद देखे कि काटे हुये स्थान में आसुर धोष होता है कि नहीं और उसी स्थान का बाल उखाड़ने से कुछ र बाल उखड़ जाता है कि नहीं अर्थात् लोम उखाने से न उखड़े और दंशित स्थान में चुटकी काटने से बोध होय तो जानना की रोगी आराम हो जायगा (धागा बांधने से तात्पर्य यह है कि जो रक्त रोगों के द्वारा चारों तरफ घूम रहा है वह रक्त घिय के साथ मिल कर शीघ्रही हृदय में न जाय मिले) तो बहुत जल्द दंशित स्थान को नस्तर अथवा छूरी से छेदन कर कुछ रक्त निकाल डाले और घाय को गरम जल से धोके जहां तक जल्दी हो सके उसी घाय पर फाटिक घिस देवे और एक छोड़ा गरम करके घाय को दाग देवे लेकिन छोड़ा ऐसा लाल करे कि उस स्थान का घमड़ा घुर घुराय जाय याद निम्नलिखित औषध को पिलावे ।

लायकर, एमोनिया १ । २ ड्राम । ग्रांडी १ । २ औंस । टिचर-ओ-पियाई १ ड्राम । केफर-वाटर ६ औंस । इन सब औषधियों को एकत्रित कर, एक शीशी में भर १२ घिन्ट लगा दे, आधे घंटे पर या आवश्यक जानने पर दश २ गिनट के अन्तर पिलावे, और रोगी को बैठने किम्बा प्रथम २४ घंटा पर्यन्त सोने न देवे, दो मनुष्य रोगी के यगल के भीतर हाथ देके, इधर उधर टहलावे और सर्व का भय रोगी के चित्त से समाप्त बूझा कर हटावे प्रश्नात् नीचे लिखे अनुसार, एमोनिया लिनीमेंट तैयार करके घाय पर लगावे ।

लायकर, एमोनिया ४ ड्राम, टिचर-ओ-पियाई ४ ड्राम, ओलिभ-मा-यल ४ ड्राम, सब को एक में मिला घाय पर और घाय के चारों ओर मर्दन करे । यह मालिस घिन्टू, घरेँ आदि से काटे हुये स्थान में भी फायदा करता है । परन्तु पागल-सियार या कुत्ता काटने में पूर्वोक्त चिकित्सा अवश्य करना उचित है यद्यपि कूकुर काटने का जहर जल्दी असर नहीं करता, एक सप्ताह से लेकर ६ सप्ताह अथवा ७ सप्ताह में अथवा ३ मास से ६

मांस के मध्य में ही रोगी अकस्मात् जलाशय देख के डर जाता है और पानी पीने की शक्ति बिनष्ट हो जाती है और कुत्ते समान भूकने लगता है इस रोग को अङ्गरेजीमें (हाइड्रोफोरिया) कहते हैं । यद्यपि हम इस्का वर्णन कुत्ता काटने के स्थल में करेंगे तथापि हमें इस समय इतना कहना बहुत जरूरी है कि खान और स्नान दंशित रोगी को पहले सूख तेज जुलाब करा के असप परिणाम अफीम खिनाना आरंभ करा देना सय से उत्तम है एवं प्रति दिन शिर से खान और शरीर में घलाधान करना उचित है ॥

मनुष्य सृष्टि को विनाश करने की सामर्थ्य अनेक जीवादि पदार्थों में देखा जाता है सिंह व्याघ्रादि मनुष्य को मार खाते हैं सर्पादि दंशम तथा मादक द्रव्य के खाने से । बहुत से वृक्ष ऐसे हैं जिनमें से वायु निकल कर शरीर में लगने से मनुष्य मर जाता है परन्तु और जीवों को कम हानि पहुंचती है अन्य २ जीवों में भी आश्चर्यित गुण देखनेमें आते हैं जैसे सर्प के काटने से घीच्छू नहीं भरता और घीच्छू के डंक मारने से सर्प तद्वक्षण तड़फड़ा कर मर जाता है । कम मात्रा अफीम के देने से कूकुर नहीं मरते परन्तु उतनाही मात्रा कुबला खिला देनेसे कुत्ते भूंक २ कर मर जाते हैं मन्दर को किसी किसम का विष कैसाहू यस्तु के साथ मिला के देभो कभी न खायगे इत्यादि अनेक तिलिस्म हैं न मालूम परमात्मा ने किस २ अभिप्राय से ऐसे पदार्थों को उत्पन्न किया है ॥

आयुर्वेद में भी विष का दो भेद कहा है, स्थावर और जंगम । वृक्षादि से उत्पन्न विष को स्थावर और सर्पादि जन्तित विष को जंगम विष कहते हैं उनमें प्रथम सर्प विष की चिकित्सा और निदान लिखा है । सर्पों की अनेक जाति है तिसमें मुख्य नव जाति है उसमें भी तीन भेद हैं (भोगी) कण याने सर्प ये यालात्मक होते हैं इनके काटनेमें घात को कोप करके विष चंडता है (मण्डली) जिनके शरीर पर गोल २ गहे होते हैं पित्तात्मक हैं इनका विष पित्तात्मक है विष पित्त विकारकारक होता है (राजिल) उठे कहते हैं जिनके शरीर पर रेखा होती है कफा-

स्मक होते हैं रक्त विकार सहित इनका काटा हुआ विष चढ़ता है । इसके अतिरिक्त और भी विष युक्त अनेक सर्प होते हैं ॥

**सर्प दंश विष देशकाल भेद से असाध्य ।**

पीपलवृक्षके नीचे, देवालयमें, बांधीमें, संध्या समय और चौराहे पर काटने से तथा नख और मर्म स्थान में हँसा भया मनुष्य शीघ्र मर जाता है । अजीर्ण, प्रमेही कुष्ठी घायबाला अति-गरम मिजाजवाला बालक वृद्ध और अति दुर्बल को सर्प दंशन करे तो असाध्य जानना । ज्योतिष में लिखा है कि भरणी, मघा, आद्रा अस्लेखा मूल, कृत्तिका यह नक्षत्र और पञ्चमी तिथिमें सर्पसे काटा भया मनुष्य असाध्य होता है ॥

सर्प से काटे हुए विष में आठ वेग (लहर) आता है प्रथममें संताप, २ में देह कांपना, ३ में दाह, चौथे में विहोश हो के गिरना, ५ में मुँहसे फेन निकलना, ६ में स्कन्ध टूटना, ७ में जड़ीभूत होना और ८ में मृत्यु । प्रायः देखने में आया है कि सर्प दंशित मनुष्य के घाबने से निम्न पत्र की तिक्तता नहीं बाध होती है ॥

**आयुर्वेदीय मत से सर्प विष की चिकित्सा ।**

घाँघ पैर यगैरह किसी स्थान में सर्प काटे तो अति शीघ्र उसके किंचित कटु में खूब कसके छोरी से घाँघ देय और सलाफा से दाग दे जहाँ घाँघने की जगह न हो तो दंशित स्थान को छूरी से खीले, लाहे की शलाफा खूब लाल करके दाग देय और तूँधी आदि से हवा खींचे । एक स्थल में यह लिखा है कि जो सर्प काटे उस सर्प को तुरन्त पकड़ के दाँत से काटना अथवा एक मही के डेले को दाँत से काटने से जहर नहीं चढ़ता ॥

जय देखे कि जहर समस्त शरीर में फैल गया है तो हाथ पाद और गिरा का घेधन करना कारण यह कि रक्त के निकलने से विष निकल जाता है ॥



या दंशन के चारोओर तूंची लगाय के कुछ रक्त निकालना और विष नाशक औषधों का लेप करना दूध पानी पिला के घर घर घ्राण कराने से भी फायदा देखा गया है । जो फणवाले बड़े विषधर सर्प काटा हो तो जो आठ वेग पूर्व में हम कह आये हैं पहले वेग में उपरोक्त चिकित्सा कर फस्त देना, दूसरे में विषघ्न औषधों का घी दूध और कुछ शहद में मिला के पिलाना तीसरे में विष नाशक नश्य और अंजन लगाना, चौथे में दूध पानी पिला के औषधसे बमन कराना, पांचवें और छठवे वेग में शीतल उपचार करना या पिचकारी द्वारा कड़ा जुलाम देना और सातवें वेग में तेज अंजन तथा नस्तर से नस्तर में काकपद करके रक्त रहित भाँस डोलना, गभिणी बालक और बृद्ध इनके सर्प काटा हो तो फस्त न देके मृदु उपाय से विष दूर करना । बकरा आदि जानवरों के सर्प काटे होय तो मनुष्य के समान रक्त निकालना, बैल और घोड़े के दूना, भैंसे और ऊँट के तिगुना और हाथी के चौगुना रक्त काटना चाहिये । जिन मनुष्यों की प्रकृति अति गर्म हो रक्त न निकाल के शीतल उपचार करना ॥

रत्नावली ग्रन्थ में लिखा है कि मेघ की संक्रान्ति के आरंभ में एक मसूर और दो नाँबके पत्र खां लेय तो वर्षभर उसे विष का भय न हो ॥

कुछ दिन हुए कि मेरे भक्तान में एक ब्राह्मणी टिकी थी एक दिन उसे प्रातःकाल दक्षिण हस्ताङ्गुली में सर्प ने काटा और चलदिया, परीक्षा के लिये निम्न पत्र दिया गया आध पाव खागई मुख कडू न हुआ तत्र मालूम किया कि बड़ा जहरीला सर्पया खैर, चिकित्सा होना आरंभ हुआ कुछ फायदा न हुआअन्त में बेहोश होगई अँठ और नख काले पड़ गये मुखसे फेन बहनेलगा और मुख जकड़ गया लोगों को यह राय हुई कि रोगी दरवाजे पर लेटाय दीजाय और चारों तर्फ गुल करदिया कि सर्प के फाड़ने एवं दया जानने वाले आर्यै घिसाही किया गया बड़ी भीड़ लगी कितने फाड़ने फूंकनेवाले आये कोई कानमें मन्त्र पढ़के घिसाता है कोई जल के छिटे मारता है इतने में पुलिस के दूत, दरोगा साहेब भी आ पहुंचे कहा कि इसे अस्पताल भेजो । उन्हें समझा दिया गया ये भी

बैठ गये, एक मुसलमान जाति का कमाई भी खड़ा सब चरित्र देख रहा था उसने कहा भाई अन्त है, अपना २ करतब कर ले तो हम भी कुछ यत्र करें यह कोई न कहे कि हम यत्र नहीं करने पाये, सब लोगों ने कहा भाई सब उपाय हो चुके तुमसे भी जो कुछ करते बने करो उसने कहा अच्छा हम भाते हैं एक घनिये के दूकानमें कुछ सीदा लिया हाथ में मलते हुये आया और कहा कि दो आदमी इसका हाथ चांभो और दो आदमी पैर चांभो, कुछ चुकनी दिया कि उसे पानी में धोला कर पिला देओ, कहने के मुताबिक पिला दिया गया पांच मिनट के बाद कुछ हाथ में लिये था रोगी के नाक में हाल नाक चांभ लिया, रोगी पांच मिनट तक कुछ नहीं सनकी घाद तड़फड़ाने लगी मियां ने कहा खबरदार छोड़ना नहीं, चार मिनट के बाद मियांने कहा अब अथ छोड़ दो और मियां ने भी नाक छोड़ दिया, औरत उठ बैठी और कहा अब हम अच्छी हैं मियां ने कहा इसे पाव, आधपाव घी पिलाओ आराम होगा, सब लोग चले गये ॥

इसको अत्यन्त उदकगुठा बुझे कि यह औषध उससे जागकर लोकोपकाराने प्रकाश करें । यह तो हमको विदित होगया था कि यह मुसलमान घनिये के दूकान से नीसादर माल लिया था परन्तु उसने और किस चीज का मेल किया था मालूम नहीं । एक दिन उस मुसलमान को बुलाया उससे पूछा प्रथमतः उसने बहुत कुछ इनकार किया परन्तु अन्त में कहा अच्छा हम बताये देते हैं इसमें कुछ है नहीं तिनका ओंट पहाड़ है । कहा कि ३ मास नीसादर प्रथम पानी में धोला कर पिला दे और पांच मिनट के बाद घूना और नीसादर दोनों बराबर वजन में छः छः मास ले दोनों को एक में मिला पोटरी बना सुंघाये या जरा २ सा दोनों नाक में हाल नाक चांभलिय पांच मिनटमें रोगी ठठ खड़ा होगा । पायक गया जब से इस गहौषधि को सुना है कोई सर्प दंशित मनुष्य नहीं मिला कि सह्यासत्य की परीक्षा करें लेकिन निश्चय होता है कि यह औषध अयश्व सत्य है क्योंकि बिप रोग पर हाकूरी में अमोनिया (घूना नीसादर) प्रधान औषध लिखा है ॥

के पाद दांत निकलता है और इक्कीस दिन में तालू में बिय आजाता है, काटने के समय बिय त्याग देता है परन्तु फिर उसी पैली में बिय एकत्रित हो जाता है पच्चीस दिन का वच्चा सर्प जहरीला हो जाता है और ६ महीने में केबुल त्यागता है ॥

दो सौ बीस पैंर सर्पों के होते हैं परन्तु ऐसे मूढम बाल सद्गृह होते हैं कि देख नहीं पड़ते चलने के समय निकल आते हैं नहीं तो भीतर पेट में छिपे रहते हैं, इनके शरीर में पसुली और सन्धि (जाड़) यह भी २२० होती हैं । जो सर्प वे समय पैदा होते हैं उनमें कम बिय होता है और वे सत्तर वर्ष से अधिक जीते भी नहीं, जिन सर्पों के दांत लाल पीले नीले होते हैं उनमें भी बिय बहुत कम होता है और वे डरपोकने होते हैं ॥

सर्पों के एक मुख दो जीभ घसीस दांत और बिय से भरी चार हाड़ होती हैं उनके नाम मकरी, कराली, कालिरात्रि, और यमदूती है । मकरी हाड़ का चिन्ह भलि मूढम मस्तर सा, कराली काक पादनख समान, कालिरात्रि टकार भस्तर सद्गृह और यमदूती कुठ गहिराय गिये और सभ हाड़ों से छोटी होती है, इस से जिसको सर्प काटता है वह तत्क्षण मर जाता है संत्र मंत्र शीषध आदि कुछ काम नहीं करता । सर्पों की हाड़ों में सदा बिय नहीं रहता बिय के रहने का स्थान सर्पों के दहिने नेत्र के समीप है सर्प जब क्रोध करता है तब बिय नाड़ियों के द्वारा दाढ़ में पहुंच जाता है, अक्सर सर्प दबनेसे पूर्व धैरसे भयसे मदसे सुधा से बिय का वेग होने से और अपने वच्चों के रक्षा के लिये जीवों को काटते हैं । जो सर्प काटते ही पेट की ओर चलटा हो जाय तो जानना कि दबने से काटा है, जो चाय भली भांति न देख पड़े तो भय से, रेखा की भांति हाड़ लगे तो मद से, दो दाढ़ लगे तो घबहाने से और जिसमें दो दाढ़ लगे एवं चाय में रुधिर भर जाय तो बिय के वेग से काटा हुआ जानना इत्यादि और भी लक्षण इनके काटनेके हैं जिसे फिर कभी लिखेंगे ॥

### रक्त शुद्धिकारक अर्क ।

झाक की लह (गङ्गा किनारे कठार में होता है) रसयत, लसया, उन्नाय, मेंहदी का फूल, पित्तपापड़ा (सहतरा) पित्तपापड़ा का बीज, मेंहदी की पत्ती, सीधन का छाल, मुण्डी, छोटागोखुद्र, बर्ग सरफोसा, सिरसा का छाल, बकनार का छाल, गांधशा, बहेरा, गुलाबगुप्ता, सिरसा का छाल और कचनार का छाल ये सब तीन २ तोला बहिमन सुख, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, और नींबू का फूल दो दो तोला, घुरादा भावनूस अथवा भावनूस का छाल, यवून का छाल, बड़ाहड़, और नींबूका छाल पांच २ तोला अर्क मकोय एकसेर और अर्क कासनी एक सेर इन सब दवाइयों को अथकवरा कर डेग में एक दिन रात भिजा रखे दूसरे दिन थक यन्त्र द्वारा (डेग भमका) धारह सेर अर्क खींच ले ॥

### रोवन करने की विधि ।

सबेरे दोपहर और शाम को अर्थात् दिनमें तीन दफे आध २ पाव अर्क पीये और सात या आठ बजे सबेरे दो तोला मक्खन (मयनील) में ६ मासा उपरोक्त १ लेप का घूर्ण या जिस कदर मुनासिब समझे फेंट कर जहां तक चमके रोग हो लेपन करे और शाध चंटेतक या कुछ कम जितने देर में कि मक्खन पिघल कर शरीर में भोज जाय याद पोड़ी सी किसी रोत की मुलायम मृत्तिका उसी पर खूब मलकर खान कर डाले और पीछेसे कारवलीक सोप या अन्य सायुनसे मलकर फिर खान कर डाले सायुन न भी लड़े तो कोई हर्ज नहीं । रोवन के दो बार चंटे याद अथवा सन्ध्या समय उक्त तैल मर्दानके याद भी खान कर डाले न इच्छा हो न करे (परहेज) तैल मिर्चा सटाई सिरका मांस मद्य स्त्रीमसक शोष घूप अग्नि गुड़ बैंगन उड़द आदि चीजों का त्याग है, गेहूंकी रोटी, पुराने चायल का भात अरहर या मूङ्ग की दाल गी का दूध घृत मलाई लीकी कद्दू नेनुआ परवर पालकका साग इनकी तरकारी खावे । जब शरीरके दाग या मपहल या फोड़ा कुन्धी जो कुछहो बिलकुल मिटजाय तो लेप लगाना छोड़ देय सिर्फ तैल मर्दान और अर्क पीता जाय इसी

प्रकार एक नाम पर्यन्त श्रीयध सेवन करनेसे रोग समूल नष्ट हो शरीर कुन्दन के समान हो जाती है जब देखे कि उपरोक्त श्रीयधों को सेवन करते हुये दश वारह रोज हुआ और कुछ फायदा नहीं जान पड़ता तो कोई उमदा हलका जुलाब या प्रथम खण्ड में लिखे अनुसार हकीमी जुलाब लेके तब श्रीयध सेवन करना आरम्भ करे चमड़े पर लगाने का लेप जो हम ऊपर लिख आये हैं अगर पांच चार दिन उसके लगाने से लाभ न हो तो इस चूर्ण का लेप करे ॥

### खदिराद्यं चूर्णम् ।

पपरियासैर (सफेद खैर) आधपाय, चीकिया सोहागा २ तोला, राला धूप २ तोला, नैनुमा गन्धक २ तोला, कपूर २ तोला सब को महीन चूर्ण करले । थोड़े से चूर्ण को पानी में सूख महीन घोंट जहाँ तक शरीर में जोड़े फुन्सी या खाज हो छेप करदे और चार घंटे के बाद साधुन अथवा घेसन से मल कर पानी से धो डाले और बदन पोंछ कर २ नम्बर का तेल लगा दे इस प्रकार छोट दश रोज करने से बर्मे रोग नशराम होता है । इस चूर्ण से खाज, सेबुआ, अपरस, और उकथत रोग भी नशराम होते हैं ।

### त्रयाराक्षस तैलम् ।

पारा, गन्धक, हरिताल, सिंदूर, मैनसिग, लहसुन, तृच्छनाग, और ताम्र का सुरादा ये सब श्रीयध दो २ तोला ले पीली सरसों का तेल एक पाय, एक ताम्र पात्र में उपरोक्त दवाइयों के चूर्ण और तेल डाल ६ दिन तक घाम में रख छोड़े । इस तेल के लगाने से कफ विकार से दाद, खाज, लालमंडल, नमूर और विषचिंका रोग नशराम होता है ।

### निम्बाद्यं चूर्णम् त्रिपमज्वराधिकारे ।

निम्बपत्र (नींब के सूखे पत्ते) १० तोला, त्रिफला (हृद्यबहेडा आंबला) ३ तोला, त्रिकटु (शोठ पीपर मिर्च) ३ तोला, अजवाइन ५ तोला, लवण त्रय (कालानोम संपानोन बिहमोन) ३ तोला और जवाखार २ तोला

इन सब दवाइयों को कूट करपरखान कर चूर्ण बना ले । इसका मात्रा आधे मासा से तीन मासा पर्यन्त है । उक्त चूर्ण को प्रातःकाल और संध्या समय सेवन करने से एकाहिक अंतरा-तिजारी और चौथिया ज्वर छूट जाता है, ऐसा कई बार देखा गया है । पथ्य-भूंग की दाल पुराने चावल का भात गेहूं की रोटी और दूध मिश्री ।

### नारायण तैलम् ।

काले तिल का तेल १६ सेर, घेल स्रस की छाल, अंगेथ ( इसी को अग्निमंथि गनियारी या कहीं २ भरनी कहते हैं ) की छाल, (शयोनाक) सोनापाढी (पांहर) नीच की छाल, गन्ध प्रसारिणी, असगंध, छोटी भटकटैया, बड़ी भटकटैया, (बग भांटा) बरियारा की जड़ अतिथला, (ककही) गोखरू और गदापूर्णा की जड़ यह सब दवाइयां दश २ पल अर्थात् प्रत्येक औषध डेढ़ २ पाय तीन २ तोला चार २ मासा हुआ । मद्य दवाइयों को अघकचरा करके ६ सन १६ सेर पानी में रात को भिजा दे सवेरे जोसदेवे जय ६४ सेर जल रहजाय गलकर छानले तैल को कड़ाही में हाल चूल्हे पर घटाय मंदाग्नि आंच से उसमें थोड़ा २ काढ़ा दे के पचाये । जय दो सेर पानी जरने को रहजाय तब इन औषधों का कल्क बनाके उसी में हाल दे सेंफ, देवदारु काष्ठ, जटासासी, छरीला, दुधियायच, लाल चन्दन, तगर, कूट, छोटीलायची, पर्णी चतुष्टय अर्थात् सरियन, विधियन, वनवर्दी और वनभूंग, रासना, असगन्ध, सेंधानोन, और गदापूर्णा की जड़ यह सब दवा जाठ २ तोला महीन कूट पानी हाल शिजपर पीस लुगदी बना तैल में छोहदे और ऊपर से १६ सेर शतावरकर पचाये, यदि ताजा शतावर मिले तो कुशल कर रम निकाल हाले सूखी हो तो आठसेर शतावर को कुशल कर चौसठ सेर पानी में पकाये, जय १६ सेर जल रह जाय गलकर छान उसे तैल में हाल पचाये, जय थोड़ा जल रहजाय तब नी चयत्रा बकरी का दूध चौसठ सेर उसीमें पचाये जय दूध बिलकुल जल जाए, शयल तैल मात्र रहगया हो तो उतार ले घीतल में भर काग लगा दिये । इस तैल के पीने से विषजारी से और मर्दंग करने से लुंङ सर्वाङ्क

वायु घोड़ा हाथी और मनुष्य का भी रोग आराम होता है। इसके अतिरिक्त निम्नित्य, ठोड़ी जकड़जाना, दन्तरोग, गले का दर्द, जम्ब जिह्वा, अङ्ग का सूखना, पुराने ज्वर से दुर्बल, धातु की क्षीणता, घातज भण्ड वृद्धि, और अंत वृद्धि, इस तेल के मर्दन से निश्चय आराम होता है। हमारी राय में इस तेल को पीना उचित नहीं है।

### हिमसागर तैलम् ।

कासेतिल का तैल ४ सेर, सतायर का रस ४ सेर, पताल कुपमाण्ड का रस ४ सेर, आंयले का रस ४ सेर, सेमर के जड़ का रस ४ सेर, घड़े गोशुक्र का रस ४ सेर, नारियल का जल ४ सेर, और केले के वृक्ष का रस ४ सेर, गौ का दूध १६ सेर ( कल्कार्थ द्रव्य ) लाल चन्दन, सफेद चन्दन, तगर, कूट, मंजीठ, अमर, जटामासी, छरीला, मुलेठी, देवदारु, नख, हरे, बरियारा, लोध, मोषा, दालचीनी, छोटीलायची, तेजपात, नागकेसर छींग, जावित्री, कचूर, पोई का कल, हरदी यह सब दो दो तोला लेकर पानी में पीस कल बनाय ले प्रथम तेल को भाँच पर चढ़ाय तब कलक हाल ऊपर से घोड़ा २ सतायर आदि का रस डालता जाय जब सब कलक जल जाय सिर्फ तेल मात्र रहजाय तो उतार लेय यह तैल उष्णवायुमे जितने रोग हैं जैसे अंग दाह अंग सूखना शरीर से चिमनी का उड़ना लकवा गडिया आदि अनेक रोग आराम होते हैं यह अजमूदा है।

### अन्तर्दाह पर धान्यक हिम ।

प्रातःपर्युषितंधान्यंसलिलंसितयायुतं । अन्तर्दाहं-  
हरेत्पीतदुःखदुर्गार्चनंयथा ॥

रात में भिजाया घनिया प्रातः उसी जल में चिनी मिलाकर पीनेसे अन्तरदाह ऐसा नाश होता है जैसे भगवती के पूजन से दुःख नाश होता है ( धिधिः ) दो तोले घनिये को साफकर पावभर जल में एक मृत्तिका पात्र में रातमें भिजा एक महीन बखर से पात्र का मुख टाँप ओसमें रख

देवे और सवेरे मशंकर छान ले, २ तोला चिनी मिला के पी जानेसे पेट का जलन कलेजा थक २ करना शिर की घुमरी आदि आराम होते हैं । इसी प्रकार २ तोला त्रिफला मिजा सवेरे चिनी हाल के पीनेसे गले का जलन पेटका हर समय घुड़ २ करना कठग और नेत्र व्यथा आदि विकार शान्ति होता है और आधपाय त्रिफला-डेढ़ सेर जलमें रात को भिगाय सवेरे उसके जल से प्रत्यह नेत्र मुख और शिर घोनेसे समलघायु शिरकी घुमरी नेत्र का जलन दासों का जसद पकना और मातों का भूल जाना यह सब आराम होते हैं और उसे नेत्र और शिर सम्बन्धी रोग कभी नहीं होसक्ता परन्तु त्रिफला में तीनों चीजों को बराबर न लेने चाहिये । एक भाग बड़, दो भाग बहेरा और चार भाग आंवला त्रिफला कहाता है ।

### परोक्षित रूसे का जल ।

प्रत्येक बार अजमाने से देखा गया है अथवा फायदा करता है जड़ सहित रूसे के रूख को सुखा ले, जिस प्रकार लकड़ी जलायकर फुडला बनाया जाता है वना ले, रूसे की लकड़ी को जलाय देय जब देखे की सब जल गया धुआं नहीं है शीघ्रही उसके ऊपर एक यतन ढांप दे ताकि राख न होने पावे । याद उस कोयले को ले एक पानीसे साफ कर एक चढ़े में भर दे और चढ़े के पेंदी में एक छेद कर कपड़े की बत्ती घना ठसी में हाल दे, दो चढ़े खाली और भी छे एक के पेंदीमें छेदकर बत्ती घना के हाल दे जिस प्रकार गरम दिनें में शिय जी के ऊपर जल टपकाने को चढ़ा बनाया जाता है विसाही दो चढ़ा बगाले और तीनों चढ़ों को रखने के लिये लकड़ी का फार्म (जिसा कि अंगरेज लोग पानी छानने के लिये बनाये रहते हैं) बगयाय लेय, उसके ऊपर वाले चढ़े में पानी, बीच वाले चढ़े में कोयला और सब के नीचे चढ़ा खाली रहे । ऊपर के चढ़े से पानी कोयले वाले चढ़े में आयेगा और कोयले वाले चढ़े से जो पानी टपक कर नीचे गिरेगा वही पानी पीने लायक है । जब प्यासलगे वही पानी पीये और बीच आठवेंदिन कोयला बदल दिया करे इस पानी से किसाहू पुरानी खांसी व दमेका रोग हो आराम होता



है; परन्तु काँस, स्वास-रोग में जो पथ्याऽपथ्य है उसी पर चलना उत्तम होगा ॥

त्रिकले के स्वरस में ओदी हरदी का रस अथवा नीम्ब का रस और शहदे डाल कर पीने से कमल रोग नाश होता है ॥

निम्ब पत्र स्वरस-नींब के पत्ते का स्वरस १ तोला शहद ३ मासा दोनों को मिला कर पीने से अनेक प्रकार के पमे सम्यन्धी रोग आराम होते हैं । निम्बपत्र रस दो तीन बिन्दु नेत्र में टपकाने से नेत्रकी सुरखी कैसाहू पुरानी हो और जाला माड़ा फट जाता है ॥

तुलसी के पत्ती का स्वरस ६ मासा मिर्च का चूर्ण ४ रत्ती दोनोंको एकत्रित कर पीने से विषमज्वर (जो ज्वर जोड़ा देके आता है) आराम होता है, यदि एक समय के पीने में लाभ न दीख पड़े तो दिनमें तीन दफे पूर्वोक्त प्रकार-तुलसी पत्र स्वरस पीने से निस्सन्देह विषमज्वर छुट जाता है ॥

डाकूर लोग भी निम्ब को ज्वराधिकार में प्रायः देते हैं डाकूरी में निम्ब डाल पत्र और तेल भी काम में लाते हैं । क्रिया, बल कारक सङ्कोचक, रुमिनाशक और ज्वर में विलक्षण उपकार करता है । डाकूर फलिंस साहय ने इसे सिनकोना बार्क और आर्सेनिक के साथ परीक्षा करके देखा है वे अपने किताब में लिखते हैं कि हमने ६० ज्वरादि रोगी को सिनकोना प्रयोग करके ७ दिन के मध्य में ४६ जन को आराम किया और ३८ रोगी को आर्सेनिक प्रयोग से ६ दिन में २९ जन को आराम, लाभ पहुंचाया, परन्तु १३४ रोगी को निम्ब डाल प्रयोग से ६ दिन के मध्य में १०८ जन आराम हुये, इसके अतिरिक्त रोगान्त दुर्बलता में बल कारक हो-उपकार करता है । अथ देशी औषध का गुण डाकूरी औषध से अवश्य अधिक है इसमें सन्देह नहीं रहा ॥

टिंचर आफ निम्ब के बनाने की विधि ॥

निम्ब की भीतरी छाल २॥० औंस ( १॥ छटांक )

परोक्षित सुरा ( सिप्रट घाईन ) १ पीड ( माघ सेर )

शोरा का साररांगा भाषपाय और शुद्धताप की हरताल आध पाय दोनों को सरलमें डाल कागदी नीयू के रसमें एकपहर घोंटा गोला बनाय शराय सप्पुट में यन्दकर गजपुट में फूंक देय, जय शीतल हो जाय गोले को निकाल एक तोला फिर शुद्ध ताप की हरताल दे कागदी के रस में एक पहर घोंट पूर्वोक्त प्रकार सप्पुट यगाय गजपुट में फूंक देवे । इसी तरह प्रत्येक घोर एक २ तोला हरताल दे नीयू के रसमें घोंट १० गजपुट की आंच देनेसे निकल्य भस्म होगा । निकल्य भस्म उसे कहते हैं जो मित्र पञ्चक से भी न जीवे ॥

मित्र पञ्चक—घृतसहित गूगल पुंचघी और सोहागा इनको मित्रपञ्चक कहते हैं जिस धातु की कच्ची या पक्की की परीक्षा करनी हो उसकी भस्म में उक्त पांचो बस्तु मिलाय चरिया में धर कर गलाने से कच्ची धातु जी उठती है और जो निकल्य भस्म है कभी नहीं जीती । जो धातु मित्र पंचकसे जी उठे उसमें शुद्ध आंवला सार गन्धक समानभाग देकर पीकु-आर के रस में एक दिन सूब घोंटे और सप्पुट में यन्दकर गजपुट में फूंक दे तो निकल्य भस्म हो ॥

पूर्वोक्त प्रकार से भस्म किया हुआ रांगां पथ्य सहित कुछ दिनों सेवन करने से संपूर्ण प्रमेह मात्र रोग नाश होता है । वेग अंपनी शक्ति से दाह पांडु प्रमेह कृमिरोग को नाश कर बुद्धि पराक्रम और कांति को प्रकाश करता है । इसकी मात्रा दो चावल से इ रती तक है, सबसे संतान अनुपात है कि शहद के संग घोंट कर ऊपर से गी का दूध घलाया डाल के पीवे ॥

### सौभाग्य शुगठीपाक ।

इसे शुहाग घोंट भी कहते हैं; यह पाक प्रसूता स्त्रियों के लिये प्रति लाभकारी है । चाहिये कि बच्चा जनने के बाद स्त्रियों को अज-यादन घोंट गुड़ आदि न खिलाय इसी को बना के खिलावे तो बालक भी सारोग्य रहे और धात्रीके शरीरमें किसी प्रकारका रोग भी न हो ॥

शोंठ वैतरा	१॥ पाव	मेघा	१॥ तोला
यकरी का दूध	५ सेर	खस	१॥ तोला
घी गी का	१ पाव	नागोरीअसगन्ध	२ तोला
घिनी	२॥ सेर	सफेदचन्दन	१ तोला
दालघिनी	१॥ तोला	काला भगर	१ तोला
तेजपात	१ तोला	लैंग	१॥ तोला
छोटी लायची	२ तोला	शतावर	२ तोला
नागकेशर	१॥ तोला	सफेदमुचली	२ तोला
घनिपां	१॥ तोला	सेांठ	२ तोला
सफेदजीरा	१॥ तोला	पीपर	१ तोला
स्याहजीरा	१ तोला	निर्घ	१॥ तोला
शैफ	१॥ तोला	जायफल	१॥ तोला
अकरकरहा	१॥ तोला	सिंघाड़ा	२ तोला
जायत्री	१ तोला	कंकोज	१॥ तोला
विधारा	१॥ तोला	अजमोदा	१ तोला
कमलकहे की गरी	१॥ तोला	मुनक्का	१ छंटाक
त्रिफला	२ तोला	किसनिस	२ छंटाक
यरिभारा की जड़	२ तोला	अखरोट	२ छंटाक
विपरामूल	१ तोला	यदान	१ पाव
घाव	१ तोला	विस्ता	१ पाव
घीसा	१ तोला		

सय से प्रथम सेांठ को कूट कपरखान काठे और दूध को कढ़ाई में ढोटावे जय आषा दूध जल जावे उसीमें चुकी हुई सेांठ हाल देवे और करछुलीसे घराघर चलाता जावे जिसमें दूध जठै न । जब दूधका खोवा हो जावे कढ़ाई चूल्हे से उतार लेवे और खोवा अलग कर फिर कढ़ाई चूल्हे पर चढ़ाय घी हाल दे । जब खूब गरम हो जाय उसीमें खोवे को सूब भूंग लेवे, बाद साफ कढ़ाई में घिनी हाल घासनी बना ले और समस्त दवाइयों को कूट कंवरखान कर और मेवाओं को साफ कतर कर

अति शीत मिजाज वालों के लिये ।

केशरावलेहः ।

छोटी पीपर पूर्ण	१ पाय	कचूर	३ मासा
उत्तम केशर	२ छंटाक	शोंठ	८ मासा
गौ का दूध	३ सेर	घनिपां	१ तोला
गौ का घी	३ सेर	बंसलोचन	२ तोला
मिश्री	२ सेर	सिंघाड़ा	१॥ तोला
तन	१ तोला	कसेरू	१॥ तोला
पद्म	१ तोला	मोषा	१ तोला
छोटी लापनी	२ तोला	मोचरम	१॥ तोला
माणकेसर	१ तोला	विधारा	१ तोला
हिंग	१ तोला	देवदाक	१ तोला
पिपरामूल	६ मासा	तगर	१ तोला
नीला	४ मासा	जयाद्वय	६ मासा
जायफल	१ तोला	काला अमर	८ मासा
गानित्री	१ तोला	कमल गठ्ठे की गरी	१ तोला
शतावरी	२ तोला	श्री भांष का अश्रक	६ मासा
अमण्ड	१॥ तोला	पारदमंचटित कांतीसार	
बड़ा गोसुत	१॥ तोला	भस्म	४ मासा

पीपर का पूर्ण और केशर गूँधकर दोनों को दूध में पचायलेप जय सोया हो जाय घीमें भूजले और मिश्री की चामनी बना ले परन्तु चामनी बहुत गाढ़ी न हो गानिन्द बहुत कर रहे बाद अभी चामनी में सोया और ऊपरलिखित दवाइयों को कूट कपरछान कर मिला के चोंटले । इसका मात्रा ३ मासा में तोला पर्यन्त है बलानुसार मात्रा बना ले ॥

काश्मीरकावलेहोयं दुर्वलानां बलप्रदः ।

क्षीणेन्द्रिया नष्टशुक्रा बलमांसत्रिवर्जिताः ॥

अत्राय रहिता नात्र धानुवृद्धि करः परः ।

यह केशर का बखलेह दुर्बलों को बल देने वाला जिम मनुष्यों की इन्द्रियां कमजोर धातुक्षीण या शरीर दुर्बल और बलहीन हों या बद्ध रति शक्ति रहित हो गया हो उन्हें आरोग्य करता है परन्तु उष्ण प्रकृतिवालों के लिये लाभदायक नहीं होगा ॥

मेरी प्रतिष्ठा पाठकगण को अवश्य स्मरण होगा, ग्रन्थ का नाम सिर्फ प्रमाण के लिये दिया जाता है, विषय चाहे जिस ग्रन्थ का हो बिना परीक्षा के नहीं लिखा जाता ॥

जामुन, आम और आवला इन तीनों वृक्षों के पत्तियों का रस दो तोला शहद चार मास मिला कर दोनों समय पीने से बहुत दिनों का भांव लोहू का पड़ना शीघ्र आराम होता है । वैसाही बबूल के छालका स्वरस शहद मिला के पीने से पतला दस्त गाढ़ा होता है ॥

आर्द्रकस्वरसःक्षौद्रयुक्तोवृषणवातनुत् । श्वासका-  
साऽरुचोहन्तिप्रतिश्यायंव्यपीहति ॥

आदी को कुचल कर समका रस निकाल दो तोले रस में ३ मास शहद मिला कर पीने से शीत सम्यग्भी कोले (माघनजून) का सूखत दर्द दमा खांसी नाक का बहना आराम होता है आदी और शोंठ इन द्रव्यों का व्यवहार जैसा भारतवर्ष में है अन्य द्वीपों में नहीं ॥

आर्यावर्त में जाने जाने के कारण कुछ यिलायतमें भी शुष्क आर्द्रक ( शोंठ ) का प्रचार हो चला है पर बहुत कम और इसके गुण में लिख भी दिया है जिसे नीचे प्रकाश करेंगे पाठकगण को यह भलीभांति मालूम होगा कि आदी और शोंठ यह दोनों एकही वस्तु है गीले कन्दको आदी बोलते हैं सूखे को शोंठ, इसी हेतु से निघंटु में लिख भी दिया है ॥

येगुणाःकथिताःशुंठ्या स्तेऽपिसन्त्याऽर्द्रकेखिलाः ॥

जो जो गुण शोंठ के कहे हैं वेही सब आदी में भी जानना ॥

आदी का गुण गर्म तीक्ष्ण कटु और पचनेपर कुछ गीठा क्लृप्त तथा  
घात कफ का नाशक और क्षुधांकर है ॥

भोजनाग्रेसदापथ्यलवणाद्रकभक्षणम् । अग्नि-  
न्दीपनंरुच्यंजिह्वाकंठावशोधनम् ॥

भोजन के पहले आदी नोन का खाना अग्निदीप्त भोजन में रुचि  
जीभ और गले में जपटा हुआ कफ साफ होता है । परन्तु निम्नलिखित  
रोग तथा समय में आर्द्रक सेवन भावप्रकाश में निषेध किया है ॥

कुष्ठेपाण्डुमयेकृच्छ्रे रक्तपित्तत्रणेज्वरे । दाहेनि-  
दाघशरदोर्द्धैवपूजितमार्द्रकम् ॥

कोढ़ पाण्डु सुजाक प्रमेह रक्तपित्त फोड़ा घाय ज्वर और दाह इन  
रोगों में तथा गर्मी और शरत् ऋतों में आदी न खाना चाहिये ॥

मेठिरिया मेडिका से शुंठी का गुण ।

अंगरेजी में शोंठ को जिङ्गर कहते हैं । क्रिपा, उष्णकर उत्तेजक  
और वायुनाशक । अग्नि साहा सेवन से पाकाशयने-जलन मोघ करता  
है । चयाने से लारा निस्सरण अर्थात् राल का बहना और वायु प्रयोग  
में चर्मे में उग्रता प्राप्त होती है ॥ हाकूर टनबूग का वाक्य है कि लवीन  
नेत्ररोग में शोंठ स्थानिक प्रयोग अति लाभदायक होता है । उसका तेज  
टिङ्गर जैसे शोंठ का चूर्ण एक भाग और स्फिरिटवाइन दो भाग दोनों  
को एकत्रित कर कपाल में मालिश करे तो उससे पञ्चम त्राउ सम्पूर्ण  
उत्तेजित होने से उपकार होता है । पेट फूलन या उदर शोथ बसात्  
दर्द में शोंठ का टिङ्गर पिलाने से फायदा करता है और दस्ताघर औ-  
षध की उग्रता दमन के लिये प्रायः शोंठ तिला देते हैं ॥

हाकूर प्यारेरा कहता है कि शिर दर्द में शुंठी का पलस्तर शिर  
पर लगाने से बहुत फायदा होता है दांत के दर्द में शोंठ कथया जद-  
रख चयाने से राल बहकर दर्द कम हो जाता है । सम्पादक नर-संघकार

का यह भूल बहुत भारी है कि उक्त गुण प्रकृति विशेष पर नहीं दिख-  
लाया क्योंकि "यद्वायोपश्यं तत्पित्तस्यावध्यम्" जो शीघ्र वायुनाशक है  
अवश्य पित्तवर्द्धक या पित्तविद्धेयक होगा, बहुत कम शीघ्र है जो तीनों  
दीपों को समन करे । शुष्ठी पित्तरक्त प्रकृतिवाले को लाभकारी कदापि  
नहीं हो सकती ॥

**खड्गादिच्छिन्नमात्रस्य तत्कालं पूरितो व्रणः । गाङ्गेरुकी  
मूलरसैर्जायते गतवेदनः ॥**

शस्त्र आदि से कटे हुए घाय में यदि अभी समय आर्द्र गुलसफरी  
के जड़का रस निकालकर भरे तो शीघ्र ही दर्द जाता रहे । और कोई र-  
टीकाकार ने इसी श्लोक का अर्थ इस प्रकार किया है । शस्त्रके कटे घाय  
में यदि बरिधारा के जड़ का रस डाले तो शीघ्र ही घाय शुष्क हो जाय,  
परन्तु यह ठीक नहीं है । दर्द निस्सन्देह जाता रहता है ॥

**पुटपाकविधिः, शार्ङ्गधर से ।**

पुटपाकस्य पाकोयं लेपास्याङ्गारवर्णता । लेपं च द्वं-  
गुलं स्थूलं कुर्व्याद्वं गुलमात्रकम् । काश्मरीवटजम्वादिपत्रै-  
रावेष्टयत्ततः । पलमात्रोरसो ग्राह्यः कर्पमात्रं मधुक्षिपेत् ॥  
कल्कचूर्णाद्वाद्यास्तु देयाकोलमितायुधैः ॥

रोग नाशक तानी शीघ्र ही ले उसे शिन पर पीछ मोला घना से  
सिधपर सम्पारी, सरगद जामुन इन तीनों छत्तों में से किसी एकका पत्र  
क्यों न हो लपेट डारे से बांध एक कपरीटी कर ऊपर दो लंगुल की  
मुटाई माटी लपेट बाँधे से मोटे कण्ठों के बीच में धर कर फूंक देय कट  
ऊपर की मृत्तिका पक लाय • अग्नि से निकाल कुछ शीतल कर कोला

• यहां पर "लेपास्याङ्गारवर्णता" जय ऊपर की मृत्तिका ऊपर  
(अग्नि) के समान लाल हो जाय तब मोलेको निकाल ले यह उत्तम कार्य  
है क्योंकि अधिक ताप से रक्त भी जल जाता है इसी लिये चिकित्सकों  
में लाल मृत्तिका को अथपका कर लेना चाहिये ॥

सोड़ भीतर की लुगदी छे मोटे कपड़े में धर रूय मजकर रस निचोरि छे यस उसी की पुटपाक कहते हैं । पुटपाक के रस का मात्रा अर्धुं तोले से तीन तोला पर्यन्त है और उसमें शहद डालने की मात्रा १० मासा है यदि कोई चूर्ण अर्क आदि मिलाने की क्रिया लिखी होतो आधातोला छाले ॥

### कुरैयापुटपाक सर्वातिसार पर ।

कुरैया एक वृक्ष का गान है जिसकी खीनी में पन्द्रजव होता है । कुरैया की ताजी बाधपाय छाल छे गिला पर रख चावल के पोवन में घोंट कर गोला बना ले और उसपर जामुन का पत्र लपेट सूत्र से धांध फिर गेहूं का आटा खान के लपेट घाद दो अंगुल साठी लपेटे और बिनये कड़े की आंध में पका ले तत्पश्चात् अग्नि से बाहर कर गोला फोड़ ४ तोला शहद छाल दोनों समय पीने से बहुत दिनों का कांठन भी अतीसार रोग आराम होता है । चार तोला रस की मात्रा यह पचान ले लिये है ॥

उसी प्रकार ताजी बेल का पुटपाक तैयार कर ३ मासा मोघरस का चूर्ण मिलीय सातदिन दोनों समय खाने से कष्टसाध्य अतीसार आराम होता है ॥

पके अनार के पुटपाक से भी अतीसार आराम होता है ॥

### हृदय शूल पर हिरन शृङ्ग पुटपाक ।

हिरन के सींग की महीन २ टुकड़े कर शराय सन्पुट (दो ब्यालीमें बन्दकर) में धर ऊपर से तीन कपरीटी कर घाम में सुखाय १० सेर कड़े के बीच में रख फूंक देय जब शीतल हो जाय सन्पुट से भस्म ले कागदार गोशी में रख दे इसका मात्रा आधा मासा से तीन मासा पर्यन्त है । दो तोला गाय के घी के साथ रक्त भस्म दोनों समय पीने से हृदय शूल खाने का दर्द जिसे वैद्यक में उरश्चन कहते हैं पांच सात दिनोंके पिलने।



से निश्चय आराम होता है इस अपूर्व औषध से हमने अनेक रोगियोंका आराम किया है ॥

## तंडुलजल (चावलका धोवन) विधिः ।

कंडितंतंडुलपलं जलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् ।

भावयित्वाजलग्राह्यं देयंसर्वत्रकर्मसु ॥

तीन तोला साफ पुराने चावल को अधकघरा कर (घूर्ण न होने पावे) सवापाव पानी में सृक्तिका पात्र में रात को भिजा दे सधेरे मल कर छान लेय । आवश्यक कार्य में एकही घंटे भिजाकर जल लेलेना कोई अनुचित न होगा । यही जल सर्वत्र कर्मों में दिया जाता है ॥

## इन्फ्लिउञ्जा ।

अङ्गरेजी बुखार ।

सुन्ते हैं इस ज्वर का जन्म इटाली में हुआ है इटालीसे रूस, रूस से इङ्गलैण्ड, विजायत से आर्यावर्त्त में आगमन हुआ है । भारतमें कोई भी ऐसा मनुष्य है जिसे यह ज्वर न हुआ हो । यह एक प्रकार का सार्ध देशिक सर्दी मूलक ज्वर है, सर्दी मूलक से शीतज्वर न समझना, पित्त सम्बन्धी भीतरी गर्मी और ऊपरी सर्दी के संयोग से यह ज्वर आता है वलिक न्यूनाधिक तीनों दोष के लक्षण मिलते हैं ॥

कोई का मत है कि यह रोग विशेषकर विष दूषित वायु शरीर में प्रविष्ट होने से यह रोग उत्पन्न होता है । कोई कहते हैं कि (व्याक्टेरिया) नामक एक सद्भिजाणु के शरीर में प्रवेश करनेसे यह रोग होता है । कोई इस रोग को (स्पर्धा क्रामक अर्थात् छुतड़ा रोग कहते हैं और कोई कहते हैं कि यह स्पलेरिया से जन्म ग्रहण करता है जो हो चाहे जहाँसे आया हो अब तो समस्त भारतमें घनगजरी सदा राह है बालक वृद्ध युवा किसी को नहीं छोड़ता, जिसको जहाँ ही पाया घर पटका । किसी को दोही चार दिन में छोड़दिया, किसी को महीनों भुगया,

नगर कोई ज़राभी घूं किया तो फिर प्या यगालय का न भेगा तो मैं भू  
तो उसे अघप्रयही बना दिया ॥

## इन्फ्लुएन्ज़ा ज्वर का लक्षण ।

इसका आगमन एक सगान नहीं है । यह प्रकृति अवस्था बलाबल पर निर्भर है देखने में जाना गया है कि पहले थोड़ी इरारत मालूम हुई बाद हड्डियों में दर्द शिर भारी हांथ पांथ में ऐंठन, कुछ बमनेच्छा हो फिर ज्वर तेज हो जाता है । कभी-कभारे यदन में दर्द जुडान जारी होके तत्र ज्वर आया है ॥

## त्रिशेप लक्षण ।

तीव्रज्वर, हाडों जोड़ों और शिर में दर्द, हांथ पैर में फाटन विव-  
निपा (जी मचलाना) नाड़ी बेगयाग त्वचा में जलन और जिह्वा शुष्क  
होती है, कोष्ठबद्ध, या दस्त पतला, नाक बहना, खांसी, आंख लाल,  
नांद का न आना, अधिक पिपासा, पेट में दाह इत्यादि लक्षण होते हैं  
इससे अतिरिक्त प्रलापादि और भी अनेक उपद्रव होते हैं ॥

## चिकित्सा ।

प्रथम बलानुसार एक दो अथवा तीन दिन उपवास कराना, तीन  
दिन से अधिक उपवास बल हानि कारक होगा और तीन दिन तक  
कोई औषध न खावे बाद तीन दिन के निम्नलिखित द्वाय को दोनों  
समय पीवे ॥

धनिपा	२ तोला	मुसेठी	१ तोला
पदमाप	२ तोला	वज्राय	१० दाना
लाल चन्दन	२ तोला	मुगक़ा	१२ दाना
गुलबनपसा	२ तोला	गुब	२ तोला
हसरान	२ तोला	निम्य खाल	२ तोला

उक्त सब औषधियों को ली अघकचरा कर मात्रा बना ली, घृतिका  
पात्र में एक मात्रा दवा को पाखभर जल में हाल मंदाग्नि में पचावे जब

आधपाय से कुछ अधिक जल पचजाय अग्नि पर से उतार शीतल कर  
छ नासा-मिश्री; हाल के पिला देवे। इसी प्रकार दोनों समय काढ़ा पिला-  
वे और जब तक भूख न लगे खाने को न देवे। भूख लगने पर प्रथम  
साबूदाना, पानी में पका मिश्री मिला के खिलावे, या मूंग की जूस देवे  
क्योंकि एकधारागी पेट भर खालीने से दुबारा ज्वर हो जाता है। उपरोक्त  
काय को पांच छ दिन बराबर पीने से निस्सन्देह ज्वर गिर ददं निद्रा  
नाश अङ्ग वेदना यमन आदि भाराग होता है ॥

### इन्फ़िउज़ा से बचने की उपाय ।

इसमें सन्देह नहीं कि यह ज्वर ऋतु के परिवर्तन में सर्वदा हुआ  
करना है इसीसे इस ज्वर को ऋतु परिवर्तनीय या कुष्मार कार्तिक मास में  
होने से शारदीय ज्वर कहा जाता है रहा कि, जब की यह अधिक और  
मे सब देशों में एकधारागी केतगया और यूरोपीय चिकित्सकों ने इसका  
नाम इन्फ़िउज़ा रक्खा। उर्दू (डिकगनरी) में इन्फ़िउज़ा के नामे  
ओघा लिखा है हिन्दी में यक्ष्मारी की बिसारी कहते हैं ॥

इसे बचने की सहज उपाय यह है कि जिन समय ज्वर का आग-  
मन देश में आरम्भ हो निम्नलिखित नियमों को गीघड़ी धारन करने  
से इन्फ़िउज़ा के धाप को भी शक्ति नहीं है कि जो उसका एक बाल भी  
धांका करसके ॥

सय से प्रथम यह है कि जल बहुत विचार के साथ पिये, जैसे अनेक  
कूपों का जल पीना, तीन चार दिन का रक्खा हुआ जल, खालीपेट या  
सोते से शीघ्र ही उठकर या फल फलहरी खाके जल पीलीना। कहीं से  
पका हुआ आके जल पीना इत्यादि त्याग करे। एक कूप या नदी का  
जल छान के या जल को एक उषाल गर्म करके छान ले उन जल को  
भोजनान्तमें या आवश्यकमें थोड़ा २ पिये। भोजन सवेरे नीचजेके भीतर  
और रात को भाठ यत्ने करे। राग सात आठ प्रजे सवेरे गर्म जल से  
करे भोजन के उपरान्त या संध्या समय कदापि स्नान न करे। यदन में

कोई बमर जकर पहिरे रहे नग्न शरीर न रहे । खानेमें मूंग की दाल पुराने चावल का भात गेहूं जड़े की रोटी गी का दूध घी लीकी नेनुभा परधर की तरकारी सेंधानेन होना चाहिये ॥

तेल मिर्ची मांस शराब उर्द अलू भाटा बहुत गरम मसाला साग पात इत्यादि भोजन तथा जून कजून भोजन क्रोध शोक मैपुन रात का जागरण यह सब त्याग करे ॥

### वीर्य उत्पन्न करनेवाली औषधें और उपाय ।

तत्काल का दुहा गी का दूध जंतनी का दूध मिश्री पियाज दोनों बहमन तोदरी अरभी बादान पिस्ता इन्द्रजी नारियल कहीला केशर जेठी-मधु दालचीनी शतावरी अंसगन्ध सूब पका आम को खा के दूध पीना नीठा अनार सेब तालमखाना गुलसकरी लालधान उरद दूध गेहूंकी रोटी मक्खन घी बलाड़े छोटीलायची समय पर शीत भोजन मुलापस सेन प्राःतकाल वायु सेवन सुगन्धित तेल जग के खान करना, और प्रसन्न कारक बिहारों से वीर्य उत्पन्न होता है ॥

### वीर्य को गाढ़ा और पुष्ट करनेवाली औषधियां ।

सफेद मूषली स्याह मूषली एक वर्ष के सेमर वृक्ष का मूल सेमर का गोंद, गोंदबमूल कामराज बीजबन्द मखाना मोचरस पातालकुलहा यन्सलोचन शतावर कालीतिल अंसगन्ध सिंचाहा सालिबमिश्री लसेहा कृमीसस्तगी इत्यादि ॥

### हिकमत से प्रसंग की चाहना को बढ़ानेवाले द्रव्य ।

गी का घी गी अथवा भेड़ के दूध में छुहाहा पका के पीना एक वर्ष का बकरे का मांस मुर्ग तीतर बटेर गोरया का मांस मछली बदान का हेलुमा पिस्ता धिलगोजा सालब सक्ताकुन कुनीगन शकरकरहा गोखुल केवाक्यीज और बहमन शोंठ तगर कस्तूरीमोती अंगूर नारियलकी गरी शलगम गाजर मुरीकीजह प्याज और हार्ड के घीन किन्दक हठ्युस्तमना यूनीदान हाली दारकिनखिल खगलाप्रसफेद शोंठ उबना करकस मस-

यासा मायासुतर जिरजीर सुरंजान फिस्तक हिनयून के बीज इत्यादि लेकिन सिर्फ यही नहीं कि उपरोक्त दो एक द्रव्यही के खाने से विषय चाह सदृजाय इसके और भी उपाय हैं जैसा सुश्रुत में बाजीकरण विधि में लिखा है ॥

भोजनानिविचित्राणियानानिविविधानिच । वाचः  
श्रीत्रानुगामिन्यस्त्वचःस्पर्शसुखास्तथा ॥

यामिनीसेन्दुतिलकाकामिनीनवयौवना । गीत-  
श्रीत्रमनोहारिताम्बूलमदिराःस्रजः ॥

मनसश्चाप्रतीघातोवाजीकुर्वन्तिमानवम् ।

चित्र विचित्र भोजन ( दूध खीर मालपूषा मांस रोटी एवं सुगन्धित ममालों से घूपित दाल तरकारी भादि ) तरह २ के पीने के पदार्थ जैसे भर्क गुलाब केवड़ा खस पक्के अमार का रस पौंडूस इत्यादि । कानों को आनन्द देनेवाले अचन स्पर्श सुख ( जिम बाज के छूने में त्वचा को सुख मिले ) स्त्री कुषादि चांदनीरात नययोचना स्त्री मनोहर गान यात्रा पानका योंहा उत्तमशराम पुष्पों की माला और मन का अप्रतीघात अर्थात् जिससे मन को दुःख न हो वह कम से सय पुरुष के भीर्य युक्त और विषय चाह दृष्टि करने वाले हैं ॥

यहुतसे लोग ऐसे धातुक्षीण पुरुषार्थ विहीन हैं जो सूर्यदा इधर उधर से दया मंगा कर खाया करते हैं परन्तु उन्हें फायदा नहीं करता है और यह अक्षर कहा करते हैं कि हमने सबोंका दयाखाया कुछफायदा न हुआ मय फूँटे बिज्ञापन खपते हैं यह नहीं बिचारते कि सबेरा होतेही नेम लकड़ी की फिर पड़ती है दिन में दो घंटे भी आराम नहीं मिलते विषय चाह दृष्टि क्या पत्थर है। भीषण पथ्य के साथ सेवन करने से फायदा करता है ॥

कर्ममधुकचूर्णस्यघृतक्षीद्रसमाशिकं । प्रयुक्तैः प-  
यश्चान्नानित्यवेगःसनाभवेत् ॥

मुलेठी का चूर्ण दशमासा, गक्खन या गी का ताजा घृत दशमासा  
शहद पांच मासा इन सबों को एकत्रित कर घाट के ऊपर से गी का  
दूध मिश्री डाल कर कुछ दिन पीने से और उत्तम पथ्य रखने से वीर्य  
स्त्री प्रसङ्ग करने लायक निस्सन्देह हो जाता है ॥

## गरीबी लटका ।

अश्वत्थफलमूलत्वक् शृंगासिद्धंपयोनरः । पीत्वा-  
सशर्कराक्षीद्रं कुलिंगइवहृष्यति ॥ विदारोमूलकत्कंतु घृ-  
तेनपयसानरः । उदुम्बरमितंभुक्त्वा वृद्धोपितरुणायते ॥  
मापाणांपलमेकंतु संयुक्तंक्षीद्रसर्पिपा । अत्रलिह्यपयःपी-  
त्वा तेनवाजीभवेन्नरः ॥ क्षीरपक्वांस्तुगीधूमा नात्मगुप्ता-  
फलैसह । शीतान्घृतयुतान्खादित्ततःपश्चात्पयःपिवेत् ॥  
स्वयंगुप्तेक्षुरकयोः फलचूर्णसशर्करम् । धारोष्णेननरःपी-  
त्वा पयसानक्षयंत्रजेत् ॥

इन दवाइयों में कोई भी एक औषध गिणमानुसार पथ्य सहित  
तीन चार महीने निरन्तर सेवन करनेसे निस्सन्देह वीर्य पुष्ट हो साधा-  
रण क्लीयत्व नाश होता है ॥

पीपर वृक्ष जो गठीला और जिसमें लाही आदि कोई रोग न हो  
उसका फल जड़का छाल दुनगा और अतरछाल सब मिलाके दो तोला  
पावभर गी के दूधमें पकाय ले बाद छान उसी दूधमें घोड़ा सक्कर शहद  
मिला कर पीने से प्रसङ्ग करने का पुरुषार्थ बढ़ता है । या पीपर वृक्षके

फल आदि चारो चीजों को ले छायामें सुखाय कूट कपरखान कर एक र  
तेलाकी पुड़िया बनाले और नित्य सधरे एक पुड़िया दवा खाके ऊपर  
से पाख भाधसेर गी का दूध मिश्री युत पी जावे ॥

देा तेला ताजा पांतालकुम्हड़ा को शिल पर महीन पीस लुगदी  
बना लेवे, पाखभर दूध में एक तेला घी और एक तेला घिनी मिला  
लुगदी मुख में रख उसी दूध से उतार जावे । अगर एकघारमें सध लुगदी  
न निगला जावे तो देा तीन धार करके उसी दूध से उतार जावे तो  
कैसाहू बीर्य्य क्षीण क्यों न हो गया हो अवश्य कुछ काल सेवन करनेसे  
स्त्री का प्यारा बन सक्ता है ॥

उदं का छिलका दूर कर घूर्ण कर लेय । उदं का घूर्ण ४ तेला  
अथवा देा तेला घराघर के घी में सान घाट कर ऊपर से दूध मिश्री  
पीने से बल बीर्य्य का वृद्धि होता है ॥

गेहूं और केवाळ की बीज देा देा तेला दोनों को आधसेर दूध में  
मन्दाग्नि से पकावे जब मानिंद खीरके हो जावे देा तेला घी और चार  
तेला मिश्री मिला के खा जावे तो कभी बीर्य्य क्षीण न होय ॥

धनकेवाळ का बीज और तालमखाना दोनों को बराबर ले घूर्ण  
कर एक तेला अथवा छ मासा के अन्दाज खाकर ऊपरसे तत्काल दुहा  
दूध पीने से धातुक्षीण मनुष्य बीर्य्यवान होता है ॥

भांग खानेवाला बीर्य्य क्षीण बल हीन अथवा युद्धापा हो अर्थात्  
शीतल पदार्थों के सेवन से हानि पहुंचती हो उसके लिये यह मोदक  
राम बाण है ॥

## कामेश्वर मोदक ।

चूर्णांशंगगनंधनार्द्धविमलं गंधंचकुण्टामृता । मेथी  
मोचरसोविदारिमुसलीगोक्षुरकंचेक्षुरः ॥ भीरुश्रैवकसेरुकं  
यमनिकातालांकुरंधान्यकम् । यष्टीनागवलातिलामधुरि-

## धानरी चूर्ण ।

जो गवौन प्रमेह को दूर कर योग्य को पुष्ट करता है ।

वनकेषाख के बीज की गरी, तालमखाना का बीज, मफेद मुमली, उटङ्गन का बीज, मोचरम, उटकटेरा की जड़ का छाल, योजबन्द, बहु-  
कली, कमरकम शतावर, समुद्रशोप और मूखासिंपाहा सबको बराबर भाग  
ले महीन चूर्ण करले इसका मात्रा २ मासा से ६ मासा तक है चूर्ण की  
आधी निश्री चूर्ण में निला मुख में रख पाचभर गौ के दूध में पीजाये  
सिफं सवेरे अथवा दोनों समय खानेसे निस्तन्देह उपरोक्तगुण होता है ॥

## धातु पुष्ट पर मापादि मोदक ।

उरद की धुली हुई दाल का चूर्ण । गेहूं का सत्त, जव का सत्त, यह  
तीन चीजें एक एक पाव, साठी चावल का चूर्ण आधपाव, छोटीपीपल  
गो दुग्ध में शुद्ध चूर्ण एक छंटाक घी तीन पाव, चिनी ५१॥ सेर, प्रथम  
सब चूर्णों को एकत्रित कर घी में सूख भूँजे जब सुरखी आजाय और  
सुगन्ध उठनेलगे अग्नि पर से उतारलेय । चिनी की भासनी बनाय उसी  
भूंगा चूर्ण और बदाम पिस्ता किसमिस चिरीजी आध २ पाव कतर कर  
हाल दे और एक २ छंटाक का लड्डू बांध ले । सांभ सवेरे एक २ लड्डू  
खाकर ऊपर से दूध पीये । तेल मिर्च खटाई आदि गरम चीजों से यह-  
रेज रखे धातु गाढ़ा और पुष्ट हो और शरीरक बल की वृद्धि हो ॥

## अथ काम मर्दनो मोदक ।

तालमखाना का बीज, नागरीअसगन्ध, पच्छाहीं शतावर, मुलेटी,  
वनकेषाख का बीज की गरी, नागवला और अतिवला के जड़का छाल  
उक्त आठों चीजों को एक २ छंटाक ले फूटकर महीन चूर्ण करलेय चार  
सेर गौ का दूध से कढ़ाई में हाल चुावे जब एक हिस्सा दूध जल जाय  
उक्त आठों चीजों का चूर्ण उसी दूध में हाल दे और करछुल में चलाता  
जाय जब दूध खोवा के समान हो जाय अग्नि पर से उतारले, बाद  
कढ़ाई साककर डेढ़पाव घी हाल खोवाको सूख भूँजे जब सुरखी आजाय



और सुगन्धि उठने लगे, दो सेर चिनी की चामनी बनाय उसीमें खोधा और थोड़ा बहुत मेधा मिला के एक २ छंटाक के लड्डू बनाय ले सांभ सबेरे एक लड्डू खा कर ऊपर से दूध पीने से तृष्ट हुआ भी कामदेव उत्पन्न होता है, यह मोदक प्रायः आजमानेमें आया है तीन मास पर्यन्त सेवन करने से यथार्थवीर्य की ताकत क्लृप्त उठता है परन्तु गरम चीजों और स्त्री प्रसङ्गादि से पहरेज रखना होगा ॥

गुग्गुलाफलागोक्षुरकाञ्चवीजतथोच्चटांगोपयसाविपाच्य ।

खाजाहतशर्करयाच्युक्त पोत्वानरोहृष्यतिसर्वगात्र ॥

केवाल की बीज ६ मासा, बड़ा गोखरू ६ मासा, उदंगम का बीज ६ मासा तीनोंको महीन चूर्णकर १ सेर गौके दूधमें डाल मन्दाग्निमें पचावे जब एक हिस्सा दूध जलजाय अग्नि से उतार ले और शीतल होने पर मघाभी से खूब मधै और ३ तोला चिनी डाल के पीवे इसीप्रकार रोज ५ या ६ बजे संध्या समय पीने से वीर्य प्रसंग में अति हर्ष प्रगट करने वाला होता है ॥

### अहिफेन ।

भाषामें अफीम और अंगरेजी में (ओपियम) कहते हैं इसकी उत्पत्ति स्थान भारत भूमि है । आज भारत में अफीम खानेवाले चीपाई मनुष्य से कम न होंगे और इसको लोग कई प्रकार से सेवन करते हैं, गोली, घोल के, वश (यह शब्द हिकमत का है) चण्डू मदक इत्यादि । भूतपूर्व समय में सिंध्याय औषध विधि की सीकिया लोग नहीं खाते थे मुसलमानों के बजे में भारत में आज इसका बहुत कुछ प्रचार बढ़ गया है यहां तक कोई रोग क्यों न हो जब देखा की नहीं आराम होता है तो अफीम खाने लगजाते हैं, प्रायः विषयी लोग स्तंभन के लिये और बहुतसे लोग ताई भर खाते हैं लेकिन अफीम किस प्रकार किस योग के साथ और कैसे प्रकृतियाले को खाना चाडिये, यह न जाननेसे अक्टर अफीम खाने वाले निकम्मे और वे काम हो जाते हैं इसलिये हम पाठकगणोंके उपकारार्थ अफीम खाने की कुछ विधि लिखते हैं ॥

## अफीम की प्रथम विधि ।

आधी छँटाक अफीम को पाव भर पानी में घोलकर विलायटिंग-वेपर में अथवा बहुत गफ बस्त्र का दो तीन परत करके ढान लेवे तत्पश्चात् उसे धूपड़े पर चढ़ाय सन्दाग्नि में पचावे जब सूख गाढ़ा लेई के समान हो जाय अग्नि पर में उतार लेव और बन्सलोचन २ तोला, छोटी लायची का दाना १ तोला, अकरकरहा ६ मासा, यहिमनसुख ६ मासा छोट पीपर ३ मासा, कपूर ३ मासा, जायफल ३ मासा, जावित्री १॥ मासा, कस्तूरी ६ रत्ती, चांदीका बर्क २५ ताव, सोनेका बर्क ५ ताव सब दवाइयों को घूर्णकर उक्त अफीम में मिला अपने खाने के अन्दाज से गोली बनाले परन्तु कैनाहू अधिक खानेवाला हो ३ मासे अधिक न खावे और सर्व-साधारण के लिये आधे मूंग से ले कर चने बनावर गोलियां बनावे । एक गोली शाम को खाकर ऊपर से पाव भर दूध पका हुआ मिश्री या बताराग घालकर पीने से—शरदी मजला काम के शब्द लकषा कम्पथायु निर्गी कपलथायु सर्वांगददं मसूहें का सूजन, मुख दुर्गन्धि मुख से लार बहना जिगर की निर्बलता और शीघ्र बीर्य्य पात हो जाना इत्यादि रोगों को नाश करता है अगर मिजाज बहुत गर्म हो या रक्त-आदि का कुछ विकार होवे तो निम्नलिखित रूप से अफीम बना के खावे ॥

## अफीम की दूसरी विधि ।

आधी छँटाक अफीम को एक पाव अर्क गुलाब और एकपाव अर्क केवड़ा दोनों को एक में मिला उसी में अफीमको घोल विलायटिंगवेपर अथवा पूर्वाक्त प्रकार कहे हुये कपड़े में ढान अग्नि पर चढ़ाय धोनी आंच से पकावे जब अफीम शब्द के समान गाढ़ा हो जावे अग्नि परसे उतार नीचे लिखे हुये दवाइयों को मिला के गोली यांच लेवे । बंसलोचन २ तोला छोटीलायची के दाने १ तोला, मफेदचन्दन १ तोला, खस ६ मासा, शीतलचीनी ३ मासा, कपूर ३ मासा, चांदी का बर्क २५ ताव सब को महीन पीस रानी में मिला पूर्वाक्त प्रकार गोली बना लेवे इस

गोली को भी खाकर ऊपर दूध पीने से प्रथम बिधि के कहे हुये समस्त रोगों का नाश होता है ॥

### डाकूरी मत से अफीम के गुणाऽगुणा के लक्षण ।

डाकूरी मत में अफीम से अनेक औषधियां बनती हैं और अनेक रोगों पर अनेक बिधि से दी जाती है । अफीम का प्रत्यक्ष गुण है, मस्तिष्क उत्तेजक निद्राकारक, दर्द नाशक, थकाई को दूर करनेवाला, पसीना लानेवाला और मादक है । थोड़ी अफीम खाने से प्रथम उत्तकी गरमी समुदाय शरीर में फैलकर तब शिर में नशा पहुंचता है और पूर्ण मात्रा अफीम के सेवन से दशही १५ मिनट के बाद साधे में कुछ भारी पन, और शरीर चैतन्य बोध होती है किसी प्रकार दर्द थगैरह हो वह भी हलका हो जाता है, मनोवृत्ति, बुद्धि वृद्धि धर्म प्रभृति नादि समुदाय मानसिक धर्म उत्तेजित और प्रसारित होता है, बात बनानेवाली, बात करनेवाली, और बुद्धि धारण करनेवाली नादियां चलवती होती हैं, साहस, पराक्रम और चातुरी बढ़ती है, अनेक मनोरम पदार्थों का भ्रष्टा मालूम होना और सम्पूर्ण शरीर के जोड़ पुष्ट होते हैं परन्तु मद्यपान से शरीर की संधियां पुष्ट न हो के और शिथिल हो जाती हैं ॥

इस रूप अवस्थाके आध घंटाबाद अथवा तस्से कुछ अधिक काल के बाद निद्रा का समागम होने लगता है वह निद्रा सुषुप्ति के समान स्वप्न हीन ८ । १० घंटा पर्यन्त रहता है बाद अग्नि मन्दतादि उपद्रव होते हैं । अगर नींद लाने के लिये कम मात्रा अफीम खिलावे तो पूर्ण निद्रा न होके अर्द्ध निद्रा होगा और नाना प्रकार के स्वप्न देखेगा परन्तु वह स्वप्न सुन्दर मनेंहर और कहीं २ भय जनक भी होगा जैसे अति शोचप्रस्त मनुष्य को देख पड़ता है ॥

प्रकृति भेद से अफीम के गुण भी भिन्न देखा जाता है जैसे किसी को अफीम से उत्तेजन क्रिया अधिक हो, किसी को मादकता अधिक हो, किसी को कोष्ठबद्ध किसी का कोष्ठ परिस्कार हो, कम उमरवाले को अफीम अधिक नशा करता है, रोग विशेष खासकर दर्द रोग में कम

गशा होता है, सञ्चिकट मृत्यु अवस्था में अल्प मात्रा भी अफीम शीघ्र मृत्यु कारक होता है । इपेकाकूजानाके साथ अफीम पसीना खानेवाला और क्लोमिल संपटित कोष्ठघट्ट का नाशक होता है ॥

अफीम सेवन का अभ्यास करनेमें यदि मात्रा वृद्धि न हो तो शारीरिक अथवा मानसिक कोई विशेष हानि नहीं किन्तु अफीम की यह मोहनी शक्ति है कि प्रथम नियमित मात्रा किसी प्रकार रह नहीं मक्का क्रमशः अवश्य ही बढ़ता जायगा इसी से अफीम खानेवाला अन्त होने से आलस्य ग्लानि उदाशीनता नेत्रश्राव और जँभुभाई आने लगती है जब तक अफीम न खावे ऐसाही दशा रहती है ॥ शेवमघे—

### हरिद्रा ।

संसार में जिनकी बातें प्रचलित हैं और जो जो वस्तु अथवा द्रव्य दिन रात हम अपने काम में वर्त रहे हैं खापी रहे हैं वे सब किसी न किसी ऋषियों का अजमूदा है पृथ्वीभर में ऐसाही कोई देश बचा होगा जहां हरदी काम में न आती हो हम लोग पाक समय तरकारी दाल और मांस में हरदी डालते हैं यह तो माधारण हरिद्रा का व्यवहार है परन्तु हरदी को महत् उपकारी वस्तु जानना चाहिये । घैटक में हरदी को रजनी, गीरी, यरवणिनी, बर्णवती, निशा और बर्णविलासिनी कहते हैं । गुण में कड़वी, तेज, सूखी और गर्म है त्रिदोषनाशक त्यचारोग प्रमेह सूजन पांडुरोग फोड़े फुंभी को नाश करती है । राजवल्लभ ग्रन्थ में शोथरोग पर हरिद्रा को पानी में घिस कर लेप करने से शोथरोग नाश होना लिखा है । डाकूर लोग भी आज कल शोथरोग में हरिद्रा का व्यवहार करते हैं । इसमें कृमि नाश करने की एक आश्चर्य्य शक्ति है कि जिसे प्रायः ग्रामीण जन भी जानते हैं बालक के कृमि होने से स्त्रियां अक्तर कच्ची हरदी को गुड़ के साथ खिला देती हैं बंगाल में अनेक स्त्री पुरुष साधुन के तरह समस्त शरीर में छेपन करके खान करते हैं इस प्रान्त में भी विवाह के पूर्व लड़कों को हरदी तैल लगाते हैं इसमें

सन्देह नहीं कि तैल के साथ-अथवा कोई लेपन वस्तुके साथ हरदी को शरीर में लगा के स्नान करने से शरीरका वर्ण उज्वल सुन्दर शोभायमान होता है इसी से हरदी का नाम ऋषियों ने वर्णवती वर्णविलासिनी लिखा है ॥

हाकुरी किताबों को देखिये तो उसमें भी हरिद्रा के अनेकांश गुण लिखे हैं हाकुर नफिस साहय अपनी किताब में चर्म रोग पर हरदी को उत्कृष्ट सहीपथ लिखा है और किसी के मत में बहुमूत्र रोग में हरिद्रा अति उपकारी लिखा है ॥

विलायत के वैज्ञानिक हाकुर लोगोंने ने हरिद्रा के सहायता से एक प्रयोजनीक विषय परीक्षा करने के लिये उपाय निकाला है (टारमेरिक) नामक एक विलायती कागज है उसे हरदी में तर कर लेप अर्थात् हरदी को पानी में सूख सहान पीस कागजके चारोंतरफ लेपन कर छाया में वायु द्वारा सुखालेय । उस कागज को किसी वस्तु में डालने से यदि वह कागज लाल वर्ण हो जाय तो जानना कि उसमें क्षार पदार्थ है । हाकुर लोग प्रायः इसी उपाय से औषध अथवा कोई खाने की वस्तुहो, जल और मूत्र को परीक्षा कर लेते हैं कि इसमें क्षार पदार्थ है कि नहीं विख्यात हाकुर रईल साहय ने भी हरदी का बहुत कुछ गुण लिखा है हकीमी मत से भी हरदी का गुण पीड़ा शान्तिकारक और प्रमेह रोग का परम औषध लिखा है ॥

वैद्यक में लिखा है कि हरदी के घूर्ण को कच्चे आंघले के स्वरसके साथ खाने से प्रमेह रोग नाश होता है । यह तो प्रसिद्ध है जिस स्थान में चोट लगी हों हरदी को खूने के साथ जल में पीस गरम कर लेप करनेसे दर्द और शोथ आराम होता है । कुछ शारीरकही उपयोगी नहीं है हरदी में और भी अनेक गुण हैं । रोली भी हरदीही से बनती है हम लोगों के यावत शुभ कार्य हैं सर्षों में हरदी की आवश्यकता होती है । हरदी का गुण केवल रोग ही पर निर्भर नहीं है किसी रोगीके लिये विष है जैसे किसी प्रकार पहियाण के शरीर में १ हरिद्रा प्रवेश

करने से चड़ियाल शीघ्रही मर जाता है । अक्तर गिकारी लोग गोली के जगह हरदी को भर कर चड़ियाल को मारते हैं । हमने सुना है कि सर्प को हरदी की गन्ध अच्छी नहीं मालूम होती । गुलाब आदि वृत्तों के जड़ में हरदी का चूर्ण डालनेसे फूल में रुमि नहीं लगता । सड़ाघाव भी हरदी से साफ होता है । यही कारण है जो चर्मकार लोग चर्मके काम में हरदी का अधिक प्रयोग करते हैं । भांग को जरा सा हरदी के साथ घोंट कर पीनेसे जहर के समान मशा करता है ॥

### दीपन पाचन आदि नाम ।

वैद्यक के ग्रन्थोंमें बहुत से नाम ऐसे आते हैं जो बिना सुलासा किये कोष देखने से भी बोध नहीं होता जैसे दीपन पाचन समन और अनुलोमन आदि ।

### दीपन ।

जो औषध आंव को न पचावे परंतु अग्नि को दीप्त करे तिसे दीपन कहते हैं जैसे ( सैफ ) यह सैफ का विशेष गुण है लेकिन सैफ अपने साधारण गुण से पित्तघटक एवं ज्वर वायु कफ उदरशूल आंव और नेत्र रोग को नष्ट करता है । आनद्यात पांडु और यहणी रोग में प्रायः वैद्य लोग (तक्र) मांठा के साथ औषध सेवन कराते हैं यदि तक्र के बदले में सैफ के अर्क से लवणभास्कार आदि उत्कृष्ट चूर्ण सेवन करावें और पानी की जगह सैफ का अर्कही पीने को देवे तो बहुत अधिक फायदा करता है । एवं भांग को सैफ के संग घोंट कर पीने से भांग का उष्ण वायु घटके विकार जाता रहता है परंतु जो लोग सैफ का गुण नहीं जानते सैफ को शीत कारक समझ कर केवल भांग और मिर्चही घोंटकर पीते हैं सो उनकी भूल है इसे भांग प्रकर्ण में लिखेंगे ।

### पाचन ।

आंव को पाचन करे और अग्नि वृद्धि न करे उसे पाचन कहते हैं

जैसे (नागकेशर) यह प्रधानगुण है परन्तु नागकेशर खाज, बमन शरीर की दुर्गन्धि और अधिक पसीना आना, इन रोगों को नाश करता है ॥

और किसी दवा में दीपन पाचन दोनों गुण रहते हैं जैसे (चीता) यह गर्म है कटु है शीघ्र, कृमि रोग और बाँदी बघासीर को नाश करता है ॥

### समन ।

जो भीषण पेट शुद्ध करे और घटले मल को बाँध न सके परन्तु घड़े हुए दापों को समन करे उसे समन कहते हैं जैम (गुरुच) भारत के सभी स्थानों में गुहूचो मिलसक्ती है और प्रसिद्ध नाम इसका गुर्च या गिलोय है । यह गर्म और स्वाद में कटु है ज्वर, संक्षिपात, क्रमेह, घातरक्त, कोढ़ और पांडुरोग नाशक है बलकर तथा रसायन है । कोई रोग क्यों न हो गुर्च सब को समन करती है यही कारण है जो वैद्य लोग अक्षर गुर्च के के स्वरस में भीषण देते हैं । इसीको अमृता भी कहते हैं वैद्यक में इसकी उत्पत्ति यों लिखी है कि जब यानारों की सेना सहित श्री रामचन्द्र जी ने रण में रावण को मारा तब राक्षसों के हाथ से मारे हुए यानारों पर इन्द्र ने अमृत की बर्षा की तो अमृत के प्रभाय से सब यानार उठ खड़े हुए उनसे अतिग्लि जो पृथ्वी में अमृत की यूर्द्ध गिरा तिनसे गिलोय उत्पन्न हुई इसी से इसका नाम अमृता पड़ा है ॥

### धनुलीमन ।

जो भीषण अजीर्ण मलको पचावे और बंधे हुए मलको कोढ़के अर्धो-भाग से नीचे गिरावे यह धनुलीमन कहाता है जैसे (एडु या हरे) इसकी उत्पत्ति वैद्यक शास्त्र में दो प्रकार से लिखी है धन्वन्तरि आदि निघण्टों में तो यह लिखा है कि धन्वन्तरि महाराज हाथ में हरे लियेहुये समुद्र से निकले हैं और हरीतक्यादि निघण्ट में लिखा है कि एक समय इन्द्र स्वर्ग में अमृत पान करते थे उसमें कुछ यूर्द्ध पृथ्वी में गिरा उसी से हरीतकी

उत्पन्न हुई जिसके पृष्ण नाम सातप्रकार हैं जैसे बिजया, १ रोहणी, २ पूतना, ३ अमृता, ४ अमया, ५ जीवन्ती, ६ चेतकी, ७ ( लक्षण ) ॥

( १ ) जिसका तूथी के समान गोल आकार होता है वह बिजया कहाते है सब प्रकार की हड्डों में बिजया नाम हड्ड अतिश्रेष्ठ है किसी औषध के प्रकर्ष में किसी हड्ड का नाम खोल के न लिखा हो सिर्फ हरीतकी या हड्ड लिखा हो तो इसी को लेवे क्योंकि ग्रन्थों में इस हड्ड को सब रोगों में देना लिखा है ॥

( २ ) जो बिलकुल गोल न हो वह रोहणी है, जोड़ा फुन्सी और घाव में फायदा करती है इसीसे इसे ब्रणरोपिणी भी कहते हैं ॥

( ३ ) जिसके भीतर गुठली हो लेकिन बहुत मोटी गुठली न हो (छोटी हरी) वह पूतना है इसका प्रलेप आदि में योजन करना उचित है ॥

( ४ ) जिसमें बहुत गूदा हो वह अमृता कहलाती है दस्तावर है रोग कर्म में इसी को लेना उचित है ॥

( ५ ) जिसमें पांच लकीरें हों वह अमया है नेत्र रोग में अङ्गनाथ इसी को लेना चाहिये ॥

( ६ ) पीले रंग की जीवन्ती होती है, नाग लेने के तेल आदि में अधिक गुण दायक है ॥

( ७ ) जिसमें तीन लकीरें हों वह चेतकी दो प्रकार की होती है । एक सफेद रंग ६ अङ्गुल की लम्बी से कम मिलती है किसी किसी को उमके देखने छूने या सूंघने से दस्त होता है दूसरी १ अङ्गुल की लम्बी काली होती है ॥

( उत्तम हड्ड की पहचान )—जो हड्ड नवीन चिकना गोल भारी जल में डालने से डूब जाय वह बहुत गुणदायक होती है । (अन्यथा) जो हरी का फल तेल में १ तोला ८ मासा हो उसे भी जति गुणदायक समझना (हरीतकी का साधारण गुण) हरी का चबाकर खाने से अग्निवृद्धि होती है पीसकर खाने से मल शुद्ध होता है, अर्क खोंचकर



पीने से मोटी शरीर दुबली होती है ( परन्तु जिसे घातु की विमारी न हो) और भूजकर खाने से त्रिदोष का नाश होता है (अन्य प्रकार) हरीतकी भोजन के साथ खाने से बुद्धिबल और इन्द्रियों को चैतन्य करती है। भोजन के पीछे खाने से अन्न तथा पानी के दोषों को दूर करती है (अनुपान भेद से गुण) सेंधव अथवा सोंचर लवण के साथ खाने से कफ दूर करती है, मिश्री के साथ पित्त को और गुड़ के साथ घात को नाश करती है ॥

बाँजे बाँजे लोग हरी की बारी मंहीना खाते हैं उन्हें नीचे लिखित प्रकार पर खाने से अतिलाभ होगा जैसे, वर्षाऋतु में सेंधव लवण के साथ, शरदऋतु में मिश्री के साथ, हेमन्तऋतु में शोंठ के साथ, वसन्त में छोटी पीपल के साथ, ग्रीष्म में शहद के संग, और प्रावृत्ऋतु में गुड़ के साथ ॥

निषेध—मार्ग से अति चकित, अति दुबल, रूखा, कमजोर, पित्तरोग युक्त, गर्भवती, उपधासी और जिस के शरीर से रक्त निकला हो इतने प्रकार के मनुष्य हड़ न खाँय ॥

हरीतकी कल्प में हड़ का बहुत कुछ माहात्म्य लिखा है परन्तु संक्षेप रूप से यह बाष्प मनिदु है ॥

श्लोक—यस्यमातागृहेनास्ति तस्यमाताहरीतकी ।  
कदाचित्कुपितामाता नोदरस्थाहरीतकी ॥ १ ॥

अर्थात् जिसकी माता घर में नहीं है उसकी माता हड़ है कदाचित् माता खफा हो जाय पर पेट में पड़ी हुई हड़ कभी कोप को नहीं प्राप्त होती अर्थात् बिहार नहीं उपजाती ॥

अंसन और भेदन ।

जो भोजन किया हुआ पदार्थ अनपच होकर कोठे में लपटके रह गया हो (जिसे हिकमत में गोटे पर जाना कहते हैं) उसे कोढ़ कर जो अपच नीचे गिरावे उसे अंसन कहते हैं, जैसे अम्लितासकागूदा । यद्यपि

अमिलतासे के गूदे में कुछ जी मसलाना गुण है परन्तु मल फोड़कर नची गिरानेमें प्रधान औषध है जो मल बातादि दोषसे बँधाही या न बँधा हो या सूख गया हो। उसे फोड़ के जो अघोमार्गसे गिरावे उसे भेदन कहते हैं जैसे ( कुटकी ) यह प्रसिद्ध औषध है, गुण में शीतल तीती कहुं हलकी भेदनी कफ पित्तज्वर प्रमेह श्वाम कुष्ठ और कृमि रोग नाशक है और मुख का तीतापन नाश करनेमें भी कुटकी एकही है । बाजे २ ज्वर रोग वाले का मुख बहुत दिन तक कटु बना रहता है वह कहुआई कुटकी क्वाप से जाती रहती है जैसा कि लोलिम्बराज कवि ने परिहास पूर्वक कहुआई पन की चिकित्सा बतलाई है और एक श्लोक भी कहा है ॥

ममद्वयंविस्मयमातनोति तिक्ताकपायोमुखतिक्तताम्रः ।  
निपीडितोरोज सरोजक्रीपा योपाप्रमोदं प्रचुरंप्रयाति ॥

लोलिम्बराज कवि कहते हैं कि मुझे दो विस्मय होते हैं एक यह कि जिसका नाम तिक्ता अर्थात् कुटकी है उसके क्वाप से मुख की कहुआहट दूर हो जाती है दूसरे स्त्री लोगों के कमल के समान कोमल स्तनों के मट्टित होने से उन्हें बहुत अधिक दर्प होता है । इसमें विस्मय की बात यह है कि अति तीता तिक्ता से तीतापन का नाश करे और अङ्ग विशेष के पीडित होने से प्रमोद की अधिकता हो इसका कारण "विपस्य विपनीयधम्" दिखलाया है ॥

### रेचन (जुलाब)

मल दोषों से विशेष पक गया हो या न पका होय या कुछ दिन का सञ्चित हो जो औषध उसे अपने प्रधान गुणसे एकत्रित और पतला कर के नीचे बहावे उसे रेचन कहते हैं जैसे ( निशोय ) इस औषध पर पाठकगण को अधिक ध्यान रखना चाहिये क्योंकि रेचन कर्म में निशोय अत्यन्त गुणकारी औषध है सुश्रुतमें इसकी बहुत कुछ प्रशंसा लिखी है ॥

सुश्रुत सूत्र स्थानं ४४वां अध्याय— विरेचन औषधों में जह किञ्चित् जालवर्ण निशोय का (निशोयके जहका उल) कालों में (कोटीलोचका)

फलों में (हड़) तेलों में (ऐरण्ड तेल) दूधों में शूहर का दूध दस्त लानेमें श्रेष्ठ है । निशोत का मात्रा एक मासा से एक तोला पर्यन्त है, निशोत सेंधानान शीठ आदि के सङ्ग सेवन करने से वायु का, ऊख के रस या सीठे अनारके रस अथवा दूध के सङ्ग पीनेसे पित्तका और गुर्घ त्रिफला आदि औषधों के संग खाने से कफ रोग का नाश करता है ॥ श्लो—

### वमन ।

कच्चा पित्त और कच्चा कफ (जो कफ पित्त पक जाते हैं वे आप निकल जाते हैं) को जो औषध अपने बलसे ऊर्ध्वमार्ग अर्थात् फे कराने के द्वारा बाहर निकाले उसे वमन कहते हैं । जैसे (मैनफल) यह औषध फे कराने के लिये श्रेष्ठि उत्तम है । मैनफल गुण में उष्ण रूखा हलका फे लाने वाला, पीनस और फोड़ा फुन्सी रोग का नाशक है ॥

### शरीर शोधन ।

जो औषध अपने बल से कुपित मल, पित्त और कफ को कुपित-स्थान से छुटाय के उसे ऊर्ध्वमार्ग या अधोमार्ग से गिरावे उसे शरीर शोधन कहते हैं । जैसे (देवदाली) इसको कहीं २ चपरवेलि, या सेनैपाथेलि, यंदाली और यंदाल भी कहते हैं । दैत्यक में इतने नाम हैं । कर्कोटी, मरागरी, देवताही, वृत्तकोश और जीमूत । यह एक प्रकार की लता है, रोखमा के समान फल होता है उसमें भी दे। भेद हैं, एक चक्रगा दूसरा पीतवर्ण और खरखरा होता है किसी २ दैत्यक घन्पके टीकाकारोंने इसे यमकुरुई करके लिखा है देवदाली स्वाद में तीखी चरफरी है वमन कराने वाली कफ, वायामीर, शोष पांडु, रुमि और उवर को नाश करती है । इसके फल का गुण—उपरोक्त रोग नाशक वमन है अर्थात् मलों को पतना करके बहानेवाला है । दूसरा फल जो पीत वर्ण और खरखरा है उपरोक्त गुण के अतिरिक्त शिष का नाशक है । इस फल का एक परीक्षा हमने और लिया है, जिर में बलगन जम गया हो और नाशिका द्वारा पफ न निकलता हो। इसे पानी में भिजोप निचोड़कर रस निकाल नाम देने में सब कफ पागों होकर यह निकलता है लेकिन यह नियम कर

लेना चाहिये कि बलगम गिर में जमा है । पित्त कामला (कैवल) रोग में भी इसके द्वारा पीले रंग का दूषित पानी नाशिका के द्वारा बहाया जाता है ॥

### छेदन ।

जो औषध बँधे हुये कफ आदि के दोषों को अपनी शक्ति से फोड़ कर बाहर निकाले उसे छेदन कहते । जैसे अघाखार, शोंठ मिर्च और पीपर ॥

### लेखन

रस रक्त मांस आदि धातु और मल मूत्रादि, जो औषध इन्हें सुखा के शरीर को दुर्बल करे उसे लेखन कहते हैं । जैसे—शहद, गरम जल और यव । यही कारण है जो गर्म मिठाजवाले को शहद और गर्मजल का सेवन निषेध किया है परन्तु पाठकगण को इस बात का आश्चर्य होगा कि यव धातु शीघ्र है तो दाह रोग में ययमन्य (जी का सतू) पीने को क्यों लिखा है ? इसका कारण यह है कि ममस्त औषध परंरूप से गुणकारी होते हैं जैसे घीर्ष्य विपाक और शक्ति आदि कोई औषध रस से कोई घीर्ष्य से और कोई विपाक में गुण करते हैं जैसे बर्फ पीने में शीतल दाह नाशक है परन्तु विपाक में गर्म हो धातु को दुर्बल और मूत्राशय के जल को शुष्क करता है ॥

ग्राही—जिन औषधियोंमें दीपन और पाचन गुण दोनों हैं परन्तु अपने उष्ण शक्ति से कफ धातु और मल इनके रस को सुखावे उसे ग्राही कहते हैं । जैसे—शोंठ श्वेत जीरा और गज पीपर । इन तीनों औषधों का प्रयोग कफ, अतीसार और पड़थी आदि रोगोंमें करना उचित है ॥

स्तम्भन—जो औषधी रुखी और प्रकृति में शीतल तथा कषायल हो और पाचन शक्ति जिसमें बहुत कम हो परन्तु वातकृत अर्थात् वातकारी हो उसे स्तम्भन कहते हैं । जैसे कुरैया का छाल और सोहमपत्र । इस स्तम्भन शब्द को धातु स्तम्भन में न समझना यह मल स्तम्भन है

बहुते हुये मल (अतीसार) को जो घांघे उसे स्तम्भन कहते हैं । कुरैया को घोटक में कुटज कहते हैं कुटज वृक्ष दक्षिणमें बहुत होते हैं इस वृक्ष में लम्बी खीमी निकलती है उसके भीतर के बीज को इन्द्रजय कहते हैं । कुटज अतीसार रोग में प्रधान औषध है । हाकुरी में भी इस औषधका व्यवहार है स्पार्टिन में ( राईटिया एटिन्डिसेन्टेरिका कारटेक्स ) और अंगरेजी में ( कनेसाई वार्क कहते हैं ॥ ८१

रसायन—जो औषध मनुष्यको शीघ्र बृद्ध होने न देय अर्थात् जिस औषध को नित्यशा सेवन करने से जल्दी बुढ़ापा न होय उसे रसायन कहते हैं । जैसे—मुर्च, रुद्रवन्ती, गूगुल, और हरीतकी ॥ ८२

वाजीकरण—जिस औषध के सेवन से स्त्रियों के साथ मैथुनमें अधिक हर्ष उत्पन्न हो तिसे वाजीकरण कहते हैं । जैसे—धरियारा का जड़ गुलसकरी और केवाखवीज बीज्य में हर्षोत्पन्न करनेमें यह तीनों प्रधान औषध हैं ॥

शुक्रल—जो औषध धातु को बढ़ावे उसे शुक्रल कहते हैं । जैसे असगन्ध, दानों मूचली और शतावर, यह औषध बीज्यको बृद्ध और पुष्ट भी करते हैं परन्तु असगन्ध विशेष कर स्त्रियों के रज को अधिक बढ़ाता है । दूध, र्द और भांवल्ला वें भी धातु को बढ़ाते हैं उसी से रेतजन्य कहे जाते हैं ॥

बड़ी भटकटैया का फल स्त्रियों के धातुको रचन करता है, जाय-फल बीज्य स्तम्भक है, बीज्य शोषक बड़ाहड़ और तर्बूज है, विशेष हाल आगे मालूम होगा ॥

सूक्ष्म—शरीर के सहीन रोम मार्ग कूपों के द्वारा, संधवनीन, सहत निम्ब और पेरण्ड सैल देह में पैठते हैं इससे वे सूक्ष्म कहाते हैं, येही कारण है जो उक्त चारों औषध वातरोगाधिकार में श्रेष्ठ कहे गये हैं ॥

व्यवायि—जो द्रव्य पहिले समस्त शरीर के नाडियों में प्राप्त हो, तब उसका परिपाक होय तिसे व्यवायि कहते हैं जैसे भांग और अफीम ॥

विकाशि-वस द्रव्य को कहते हैं जो शरीर के मध्यन को ढीले करे और रसादिक धातु और शुक्र को क्षीण करे जैसे सुपारी और कोदों का चावल ॥

मादक-द्रव्य वह है जो बुद्धि को लोप करे और तमोगुण प्रधान हो जैसे मद्य आदि ॥

विष-व्यधायि और विकाशि हो छोटे २ नमों के द्वारा मद कृत अग्नि बर्द्धन (समस्त शरीर में ज्वालः करदे) मृत्यु कारक यह सब द्रव्य जिस औषध में (योगवाहि) संग पावे सगुण करे, जैसे संखिया और सींगिया आदि ॥

प्रमाथी-वे द्रव्य कहलाते हैं जो अपने से मंचित दोषों को आंतों से निकाल डाले जैसे मरिच और बच ॥

अभिव्यन्दी-जो द्रव्य अपनी चिह्ननता गुण करके रस याहिनी नादियों को निरोध कर शरीर को जड़ करे उसे अभिव्यन्दी कहते हैं । जैसे (दही) यद्यपि जीव भेद से दही के गुण और रूपान्तर होने से प्रकृत औरही हो जाती है तथापि दही अपने साधारण गुण से श्लेष्म प्रकृति वाले को दुर्गुणही है इसीसे शुकुत ने रात को दधि खाना निषेध किया है "रात को दही न खाना और न बिना घी के पिनी" ॥

### प्राह्निक कर्म ।

बहुत ही शार्प्य हैं जो आजकल अपने नित्य कर्मसे ऐसे श्रुत हो गये हैं कि जिसका कुछ कथन नहीं है । अभिनिवेश चित्त से ध्यान देकर देखते हैं तो भूतपूर्व ऋषियों के कहे हमलोगों के लिये यांचत् आचार हैं वे नियम आयु इप्पित सन्तान और धन वृद्धि करनेवाले हैं इस में सन्देह नहीं वेद के न जानने से आचार के छोड़ने से, भालस्य से मृत्यु आर्यों को मारने की इच्छा करती है । कारण यह कि आचार न पालने से मनुष्य अश्वायु होता है, सर्वदा रोग ग्रस्त रहता है मनु दीर्घायु ग्लानि

और शोकयुत रहता है इस लिये शारीरिक स्वास्थ्य लाभार्थे आचार पालन करना सध को उचित है ॥

**वसिष्ठः, आचारः परमोधर्मः सर्वपापमितिनिश्चियः ।**

वसिष्ठ जी कहते हैं कि आचार यह परम धर्म ऋषियों का मत है ॥

**पराशरः दक्षः ।**

चतुर्णामपिवर्णानां प्राचारीधर्मपालनम् । आचार-  
भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मपराङ्मुखः ॥ दुराचारो हि पुरुषो लोके-  
भवति निन्दितः । दुःखभोगी च सततं रोगी चाल्पायुषो भवेत् ॥

पराशर और दक्ष कहते हैं कि चारो वर्णों का आचारसे रहना धर्म है आचार से भ्रष्ट मनुष्य धर्म से दक्षित रहते हैं, दुराचारी पुरुष लोकमें निन्दित हमेशा दुःखका भोगनेवाला और शीघ्र मृत्युका प्राप्त होता है । हे । कोट पतलून धारी होटलमें महाप्रसाद खानेवाले इधर देखो मुन्हारे भूतपूर्व ऋषीगण क्या कहते हैं ॥

**प्रातरुत्थानकालः ॥**

वेद से लेकर पुरान तक में यही बचन मिलेगा मनुष्य को उचित है कि ब्राह्मण मूहूर्त (चारघड़ी के तड़के) से उठकर प्रातः स्मरण करे । विष्णु पुराण में प्रातःकाल का प्रमाण लिखा है ॥

**पञ्चपञ्चऊपःकालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्टपञ्चभ-  
वेत्प्रातस्ततासूर्योदयः स्मृतः ॥**

सूर्योदय से ५५ घड़ी पर ऊपःकाल (कितनी के मत से यही ब्राह्मण-मूहूर्त है) और यदुर्तों के मत में ऊपःकाल से एक घड़ी पूर्व ब्राह्मणमूहूर्त कहाता है अर्थात् ३ घड़ी सूर्योदय होने का रहे उसे ब्राह्मणमूहूर्त कहते हैं) ५७ घड़ी पर अरुणोदय और ५८ घड़ी पर प्रातःकाल होता है । सब

घर्षों को चाहिये कि ब्राह्मणमूर्त में ईश्वर का स्मरण कर अपने कृतकार्य को विचार कर तब शौच को जावे ॥

“ब्राह्मणमूर्तं यांनिद्रामः बलक्षयकारिणी” ब्राह्मणमूर्त की निद्रा बल के नाश करनेवाली है इसलिये स्वास्थ्य के चाहनेवाले जन अग्रिम उक्त समय में उठने का अभ्यास करें ॥

## स्वकरतलाद्यव लोकनम् ।

आचारप्रदीपे—कराग्रेयसतेलक्ष्मो प्रभातेकरदर्शनम् ।

अन्यञ्च—भारद्वाजमयूराणां चापस्यनकुलस्य च । प्रभाते दर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठे विशेपतः ॥ श्रोत्रियं सुभगां गां च अग्निमग्निचितितथा । प्रातरुत्थाय यः पश्येदापद्भ्यः स प्रमुच्यते ॥

हस्त के अग्रभाग में लक्ष्मी का ध्यान है इसके प्रातःकाल उठ हाथ देखे, भारद्वाज (खजुरीट) मेर, टिटहरी, और नेवरा, इन्हें प्रातःकाल देखना शुभ है यामभाग और पीठ पीछे देखे तो अधिक शुभ है । जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर यज्ञ करानेवाले, सुन्दर गौ यज्ञ के अग्नि का दर्शन करते हैं वह अनेक आपत्ति से छुटजाता है ॥

नागदेव जी कहते हैं प्रातःकाल पापी, दरिद्र, अन्धा, नकटा नरत, कैलाचाफल, यहेरा, कीवा, बिल्ली, मूग, नपुंसक और गदहा इन्हें न देखे यदि अकस्मात् देख पड़े तो पुनः आंख बंद करले ॥

ब्राह्मणमूर्त में उठ पूर्वोक्त पदार्थों को देख कर से तीन कुल्लीकर नेत्र की मूख को पधित हो के परमात्मा का ध्यान करे तब निम्नलिखित श्लोक को पढ़ के पृथ्वी में पाद धरे ॥

समुद्रवसने देवि पर्यतस्तनमण्डले । विष्णुपत्निनमस्तुभ्यं पादस्पर्शक्षमस्वमे ॥



## विण्मूत्रोत्सर्ग विधिः ।

पारस्कर गृह्यसूत्रे—तिष्ठन्नमूत्रपुरीषे कुर्यात्स्वयं-  
प्रशीर्णं न काष्ठेन गुदं प्रमृंजीत । विकृतं वा सोनाच्छादयात्  
मूत्रपुरीषे ष्ठीवनं चातपेन कुर्यात् ॥

खड़ा होके दिशा पेशाब न करे, जल का अभाव हो अथवा जल दूर  
हो तो जीर्ण घाम फूस से गुदा पोछ हाँसे तब जाके शौच करे । जयतक  
जल में शुद्ध न हो यस्त्र न पहरे, धूप में सूर्य के सन्मुख दिशा पेशाब न  
करे कारण यह है कि हस्ते प्रायः गिर में दर्द हो जाता है । घीघामन  
ऋषि कहते हैं (जलाशय से दश हाथ और तीर्थ नदियों से ४० हाथ त्याग  
के दिशा पेशाब करे (निषेध करनेका सव्य यह है कि प्रायः जलोंके समीप  
दलदल रहता है) पृथ्वी में तृण विच्छा के मूत्र पुरीष त्याग करे (बिना  
तृण के मूत्र बिन्दु से पाद अङ्गादि अशुद्ध हो जाते हैं) पराशर और यम  
महाराज कहते हैं सवेरे पश्चिम मुख दोपहर उत्तर मुख, संध्या समय  
पूर्व मुख, और रात्रिको दक्षिण मुख, बैठके दिशा पेशाब करे । अंधियारी  
रात में गृह में ही मल मूत्र त्याग करे यह मनु जी की राय है । हस्ते  
स्पष्ट होता है कि पहले समय में आर्यावर्त बिलकुल जंगल था प्रायः  
शौचनार्थ बाहर जाना पड़ता था ॥ "

## शौचे उपवीत (जनेउ) धारणप्रकारः ।

अङ्गिराः—मूत्रे तु दक्षिणे कर्णे पूरीषे वामकर्णके । उप-  
वीतं सदा धार्यं मैथुने तूपवीतिवत् ॥

पेशाब करने में दक्षिण और दिशा फिरने में बाग कर्ण में जनेऊ  
धारण करे और स्त्री प्रसङ्गमें यथायत्न रहे । सायणाचार्य का मत है कि  
यदि दिशा पेशाब करते समय कान पर जनेऊ चढ़ाना भूलजाय तो  
तवीन जनेऊ धारण करे । किसी २ ऋषियों का मत है कि मूत्र पुंगीष

दियों और वैद्यक का मत भी है । आ०१० के १ खण्ड प्रथम अंक में जो जो विधि दन्तधावन करने के वैद्यक मत से लिख आये हैं वही वाक्य मय ऋषियों के मत में पाये जाते हैं विशेष रूक सिर्फ इतना ही है जैसा विष्णुपुराण लिखा है, प्राङ्मुखस्य घृतिःसीर्यं इत्यादि पूर्व मुख दन्त-धावन करनेसे वृद्धि सुख और शरीर आरोग्य, दक्षिण मुख कष्ट, पश्चिम मुख हारि, उत्तर मुख गी स्त्री और कुटुम्बी का नाश होता है इस्से स्पष्ट हुआ कि पूर्वही मुख बैठ के दतूनि करना श्रेष्ठ है । व्यास जी के मत से प्रतिपदा अमावस्या पष्टी नवमी और रविवारके दिन दतूनि करनेवाला समकुल को दहन करनेवाला होता है । शुक्ल काष्ठ की दतूनि करना ऋषियों ने नियेध किया है ॥

### स्नान ।

स्नान करने की विधि तथा स्नान के द्वारा आरोग्यता प्राप्ति मान-सिक उत्पत्ति करना जैसा आर्यावर्त में है अन्य दीपों में नहीं है । वै-द्यक मत से स्नान करने का लाभालाभ प्रथम खण्ड में दिया है अब जो कुछ ऋषियों की राय स्नान करने के विषय में है उसे भी प्रकाश करते हैं । इसमें शक नहीं कि जो स्नान और निर्मल ब्रह्मादि से अपने शरीर को पवित्र नहीं रखते वे सबदा सन मलीन दुःखी विचार हीन आलसी और रोगार्त बने रहते हैं और उससे शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम कभी नहीं हो सकेगा ॥

स्नानात्पूर्वं भक्षणयोग्याः पदार्थाः चतुर्विंशतिर्मताः ।

इक्षुरापःफलमूलं पयस्तांबूलमौषधम् । भक्षयित्वा-  
पिकर्तव्याः स्नानदानादिकाः क्रियाः ॥

सब ऋषियों का मत है कि (इलु) जल या पैड़ा जल फल कन्द दूध तांबूल और औषध इन्हें भोजन करके भी अनुष्य स्नान दानादिक क्रिया कर सकता है परन्तु स्नान करके भक्षण करना अति उत्तम है ॥

## स्नानकालः ।

हेमाद्री—अरुणकिरणयुक्तां प्राचींदिशमवलोक्य-  
स्नायादिति ॥

याज्ञवल्क्यः—अत्यन्तमलिनःकायो नवल्लिद्रसमन्वितः।  
स्वत्येवदिवारात्रौ प्रातःस्नानंविशोधनम् ॥१॥

किञ्चित् सूर्योदय देख स्नान करना उत्तम है । याज्ञवल्क्य का यथन है कि नवल्लिद्र सहित अत्यन्त मैली यह शरीर है दिन रात रम आदि घातुओं का मल बहता रहता है उसके शुद्ध के लिये प्रातःकालमें स्नान करना उचित है ॥

गुणादशस्नानपरस्यसाधो रूपंचतेजश्चलंचशौचम् ।

आयुष्यमारोग्यमलीलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्चयशश्चमेधा॥

अपियों ने स्नान का दश गुण लिखा है । रूप तेज और बल की वृद्धि पवित्रता आयु तथा आरोग्यलाभ एवं (मल) शरीर की मलीनता और दुःस्वप्न का नाश और बुद्धिबर्द्धक है ॥

स्नानार्थेउक्तंजलम्—वाप्यांकूपेतडागे वा नदांवाचो-

ष्णवारिणा । प्रातःस्नानंसदाकुर्यादुष्णोनैवसदातुरः ॥

वृद्धमनुः—संक्रांत्यारविवारेच सप्तम्यांराहुदर्शने । आ-

रोग्येपुत्रमित्रार्थेनस्नायादुष्णवारिणा ॥

घावली कुआं तालाब और नदी में अथवा गरम जल से हमेशा सवेरे स्नान करना उत्तम है परन्तु गरम जल सिर्फ रोगियों को लिखा है अर्थात् जिन्हें अति-ठंडे दिनों में शीतल जल से स्नान करने से शरीरमें दर्द आदि वायु का बिकार होजाता है उन्हें गरम जल से स्नान करना नियेध नहीं है । मनु महाराज कहते हैं आरोग्यता पुत्र मित्र और धन

और मन को शुद्ध रखना (मनस्सत्येन शुद्ध्यति, मनः सत्यं योजने से शुद्ध होता है) तीर्थों का भी तीर्थ कहा जाता है ॥

मनोविशुद्धं पुरुषस्य तीर्थं वाचां यमस्त्विन्द्रियनिग्रह-  
स्तपः । एतानि तीर्थानि शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रतिबोध-  
यन्ति ॥

भावार्थः—मन की शुद्धता पुरुषों का तीर्थ मन्थ वचन और इन्द्रियों का अवरोध तप है यह सब शरीर से उत्पन्न तीर्थ स्वर्ग के मार्ग को दिखलाते हैं ॥

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानान् शुद्ध्यति । शतशो य-  
जलैर्घृतं सुराभाण्डमिवाशुचि ॥

भावार्थः—जिन लोगों का अन्तर्करण दुष्कर्मों से दूषित है वे तीर्थस्नान से भी नहीं शुद्ध होते जैसे मद्य पात्र से कहीं घड़े गङ्गाजल के घीने से भी नहीं शुद्ध होता ॥ शेष आरोग्यदर्पण के चतुर्थखण्ड में लिखेंगे—

## विशेष विज्ञप्ति ।

आरोग्य दर्पण के तृतीय खण्ड के लेख को अब हम यहीं समाप्त करते हैं । आरोग्य दर्पण के चतुर्थ खण्ड में प्रथम ज्वर चिकित्सा लिखे के जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि देशीय रीत्यानुसार ज्वरचिकित्सा न जानने की कारण तथा अंगरेजी दवाइयाँ खा खा की असंख्य प्राणी अकाल कालोंमें मर जाते हैं । वह ज्वरचिकित्सा परीक्षित प्रणाली हम ऐसे सुगमता से लिखेंगे कि सर्वसाधारण जन ज्वर रोग से स्वयं बचेंगे और अनेक ज्वरार्तियों को आरोग्य कर सकेंगे । उस रीति का ज्वर चिकित्सा नामक अपूर्व ग्रंथ आज तक देखने में न आया होगा । पश्चात् योगविद्या (आध्यात्मिकशक्ति उद्घोष) का आद्यापान्त वर्णन करेंगे कि जिसकी द्वारा अनेक जन अनेक प्रकार के अपूर्व लाभ उठा सकें जा बड़े २ महात्माओं को दुर्लभ है । तत्पश्चात् भूत पूर्व महर्षियों के अनुमान किये हुये दिनचर्या का बयान करेंगे । इस स्थल में "भारतान्नात का वैद्यक प्रथम अङ्ग है" लिखकर इस आयुर्वेदोक्त औषधालय में जो परीक्षित औषधियाँ हैं उनके सूचीपत्र लिखते हैं ।

आप लोगों का शुभचिन्तक

जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य

जानसेनगञ्ज

इलाहाबाद

## भारत के उन्नति का वैद्यक प्रथम अङ्ग है ।

इस विषय में हमें बहुत लम्बा चीड़ा लेख देना अभीष्ट नहीं है क्या पाठकगण नहीं जानते जैसा कि ऊपर लिखा हुआ है "थर्मोपकान मोक्षायामारोग्यं मूलकारणम्" फिर यह भी प्रधान २ छाताओं का वि-  
दित है कि प्रतिदिन भारत का द्रव्य विलायत (इक्वलिस्तान) को अक-  
पण रूपी नदी की अनेक धारा से बहा चला जाता है, उसमें से अधि-  
कांश धन बाहिनी धारा बही है जो अंगरेजी दवाइयों के मूल्य के द्वारा  
संचित होकर समुद्र पार की राह लेती है प्रायः देश हितैषी विद्वज लोग  
उसी द्रव्य के लिये उटपटाप २ धारो और अनेक कानफरंस (जातीय  
समाज) और भांति २ कमेटियां कर रहे हैं, उपाय शोध रहे हैं, देशी  
तिजारत शिष्य विद्या आदि का प्रचार कर रहे हैं तो बताइये बड़े २  
भारद्वाजादि महर्षियों की उपाजित वैद्यकविद्या आदि की और देशी  
औपधी जो लोगों के प्रकृति के अनुकूल गुण को देने वाली, पवित्र धर्म  
रखनेवाली, अति सस्ती सयंत्र सुलभ सहज में बनने वाली, आपका क्या  
बिगाड़े है जिसको आप लोग दिन प्रति छोड़ते जाते हो, यह नहीं  
सोचते कि उसके छोड़ने के साथ ही साथ हमारे अर्थ धर्म काम मोक्ष भी  
छूटते जाते हैं? अर्थ के मागे धन है तो वह धन जैसा कुछ हाकरी औ-  
पधी में लगता है उसे यही खूब जानता है जिसको वनसे काम पड़ता  
है । उस धन इस प्रकार पर पिदा हुआ जिसके साथही साथ पवित्रता  
भी जो धर्म का प्रधान अङ्ग है, नष्ट हो जाती है, क्योंकि शूकरादि अ-  
नेक मलिन और अखाद्य जन्तुओं की बर्षी और भांति २ के घृणित पदार्थ  
रचित मदिरा और आसय और अनेक सजल निर्जल रूप उन लोगों की  
बनाई हुई कि जिनके खान पान व्यवहार को स्मरण कर सच्चे धर्मगील  
को बमन की दशा आ जाती है । यह कौन नहीं जानता कि घृणित  
द्रव्य संयोजित मद्य से बनी हुई अंगरेजी औपधियां होती हैं जो पहले

कहीं स्वप्न में भी नहीं दिखलाई देती थीं और हाकुरों का कहीं नाम निशान भी नहीं था, तो क्या हम लोग रोग में मरही जाते थे? कभी नहीं। कितने बड़े कहते हैं "निर्वीजापृथिवी, निरीपध रसा" यहां की पृथिवी निर्वीज, हो गई और भीषधियों का रस जाता रहा, हम कहते हैं जरा आंख खोल कर मेटोरिया मेहीका को देखो, आधी भीषधियां, भारत बंधकी हैं और शारीरक विद्या और अस्त्र चिकित्साके भी मूल सूत्र इसी भारतभर्य से विदेश गये हैं। यह यूरोप के प्राचीन इतिहासों में स्पष्ट रूपसे लिखे हुये हैं, उन्हीं सब बातों को खूब फेरा के अंगरेजों ने परीक्षा पूर्वक प्रकाशित की है और अब उन्ही के द्वारा सत्तों रूपसे पर धीटे भारत से खींचे लेते हैं, क्या उक्त शोक उग लोगों के लिये चरितार्थ नहीं हो सका? उक्त श्लोक का अभिप्राय यह है कि पृथ्वी निबल हो जायगी अर्थात् जहां बड़े २ अलयान शूर और पैदा होते थे यहां निबल कायर कुपूत उत्पन्न होंगे क्योंकि पांच तत्वों में से पृथ्वी तत्व विशेष प्रधान है और सब का आश्रय भूत है और "निरीपधिरसाः निर्गता भीषधि रसाः येभ्यः" अर्थात् अशुद्धी २ संजीवनी भीषधियोंका रस जाता रहेगा लोग आसुरी चिकित्सा और असुर प्रिय पदार्थ के लालुप हो जायंगे क्योंकि "गीयामहत्वंगता" यदि कोई यह कहे कि यहां के वैद्य लोग मुखें हैं दो चार भाषा की किताब देव लिखा वैद्य बन गये, रोगी जहजम में जाय अपनी हथपत्नीता से थार पैसा पैदा कर लेना उनका मुख्य कर्तव्य है। तो हम कहते हैं कि इसमें विद्या और औषध का क्या दोष है राजा विदेशी ठहरा बड़ इस पर क्यों ध्यान देने लगे और न भारत में कोई ऐसा आयुर्वेद कालिज है कि जहां विद्यार्थी लोग पूर्ण रूप से शिक्षा पावें। अगर यह कहा जाय कि यथा राजा तथा प्रजा, मुसलमानोंके राज होनेसे हकीमीकी लक्ष्मी हुई अङ्गरेजी राजमें हाकुरी की इसी प्रकार जिसका राज्य होगा आयुर्वेदक तत् देशीय औषधों का प्रचार भी अवश्य होगा और होता ही है देखिये अभी जांट हफरिन की रानी श्रीमती लेडी हफरिन ने हाकुरी कण्ड में लाखों रूपये का चन्दा एकत्र कर गड़ें और उनका भार बर्तमान वाइसराय की लेडी सांहवा ने

अपने ऊपर लिया है और प्रत्येक प्रान्त के गवर्नर लफटेगट गवर्नर उस की वृद्धि में उद्यत हैं इस कार्य का प्रधान हेतु यह कहा जाता है कि संकलेही साह्या को हिन्दुस्तानी स्त्रियों पर दयाभाई है पर यह गूढ़ बात कोई नहीं कहता कि इङ्गलिस्तानी सहाश्यों (दवाइयों) के कारखानों पर अत्यन्त दया भाई है आज तक किसी लेडी को हिन्दुस्तान की असंख्य खुधातुर अनाथ अश्वलाओं पर दया न आई न उनकी मूर्खता के निवृत्त करने का विशेष प्रयत्न हुआ हां सर विलियम न्यूटन की शिक्षा पर अधिक कंटाक्ष पात किया था सो विलकुल डीला हो गया सारे खर्च की कसर सरिश्ते तालीम से निकाली जाती है फोस जाता है कि निर्दुनी के धालक विद्या के भी निर्दुनी बने रहें ।

ज़बरेदस्त का ठेगा सिर परें तो भी हम लोगों को सोचना चाहिये कि हुंकीनी औषधियों से हमें इतनी इतनी नहीं हुई क्योंकि उनमें प्रायः बनीपधियों के सेवन का प्रयोग है परन्तु डोकूरी औषधियों से जारैरिक नानसिक दौरेयता और धन धर्म को शरयोमाश हो रहा है ।

देखिये प्रथम तो अति हिम प्रधान या लखनादि देशी मनुष्यों की प्रकृतिके अनुकूल परीक्षित औषध इस घटक्रतु सम्पन्न देशीय मनुष्यों के स्वभावानुकूल नहीं हो सका है ।

दूसरे-प्रत्येक गीली दवाइयां भांति २ के शराय से और मलहम धौरह सुअर आदि की चूर्णों से तैयार होती हैं ।

तीसरे-औषध बनाने का यंत्र भरतन स्वान और किसतरह कौन २ चीजों के मेल से कौन औषध बनाया जाता है हम नहीं जान सके ।

चौथे-अङ्गरेजी दवाइयों का दाम बहुत अधिक है जहां तक जिस्से लेते बन पड़े चाहे उसमें दमड़ी की भी लागत न हो अच्छी शीशी और अच्छे २ टिकट चिपका देने से और आतुरता की तारतम्य से दाम वेही हिसाब बढ़ सका है

पांचवें-प्रायः अंगरेजी औषधों में ज़हर का मेल रहता है कि थोखे में जरा भी अधिक पी जाय तो रोगी को यमालय पहुंचना दूर



महीं है और ऐसा प्रायः देखने में आता भी है । अभी इलाहाबाद में एक बड़े भारी ओहदेदार का प्राण सड़क में लग गया उसी रंगी चुंगी शीशी के पीछे में ।

छठे—यह बिन्ध्य प्रान्तीय उष्ण प्रधान देश है और अनेक देशान्त-रीय-लोगों के यहां आने से इतना गर्म हो गया कि है शीत ऋतुओं में भी बिना कुछ ठंडी शीज खाये तदर दाह शांत नहीं होता । अंगरेजी दवा और व्यवहारों से यहां के लोगों का बल बुद्धि पराक्रम इतना कम-जोर हो गया है कि जिसका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति शिर की शून्यता से स्वयं सिद्ध हो रहा है वर्णन की कुछ भी आवश्यकता नहीं है ।

सातवें—यह घात तो प्रायः सभी जानते हैं तथा पुराणों के देखने से भी जाना जाता है कि भूतपूर्व आर्य्य सन्तानगण विषयी कम होते थे वही से वे लोग बलवान् पुरुषार्थी अधिक होते थे जब से मुसलमानों का राज्य हुआ संस्कृत विद्या का सूर्य अस्त हो गया हिन्दू मुसलमानों में मेल मुलाकात अधिक बढ़जाने के कारण देखा देखी एतद्देशीय लोग भी इतने विषयी हो गये कि आज के समय में वीर्य्य सम्पन्न बलवान् बिरलें पुरुष पाये जायेंगे ।

जो रहा सहा सो भी अंगरेजों की संगति और मेल मुलाकात से चुरट एकसा धन धरांडी गर्म दिनों में भी काले धनात का कोट पतलून से और होटल का महा प्रसाद इतना हमलोगों को धीर्य हीन कर दिया है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं उसी पर जहां अति तीक्ष्ण बिपैली अंगरेजी दवा सेवन हुआ कि पच्चीसही तीस बर्ष की अवस्था में यमपुर घास करने का अवसर मिल जाता है ॥

यह जो हमने लिखा है कि देशी औषधियों की अपेक्षा अंगरेजी दवाइयों के मूल्य बहुत अधिक हैं, उसका कारण दिखलाते हैं । आर्य्य-धर्म में अंगरेजी औषधियां नहीं तैयार होतीं और न बननेकी कोई भाशा है क्योंकि कलौमिल, ह्योरोफार्म आदि औषध बनाने के स्थान और यंत्रादि यहां निरूपन करने में कई लक्ष रुपयों का खर्च तथा विलास

से प्रकृषा कुशल चुरोपिपण धैर्यों का जाना असम्भव है और यहां घ-  
 नने से बहुत से भेद सुलजाय तो दाग भी घट जाय और जो भक्ष्या-  
 भक्ष्य अनेध्यानेध्या, मिश्रित वस्तुओं का मर्म प्रगट हो जाय तो बहुत से  
 रोगी कि जिनको परलोक का कुछ भी भय है उन औषधियों के मेधन  
 की अपेक्षा मरनेही को अच्छा समझने लगें, स्पष्ट है कि अंगरेजी दवा-  
 हियों का मुख्य स्थान विलायत है और मनस्त प्रधान औषध पुटाम,  
 आदि जो आज यहां पर २ में जारी है विलायत से बन के आते हैं ।  
 विचार करने का स्थल है कि विलायत में इसका कैसा कुछ कारखाना  
 होगा और कितने बड़े २ कल होंगे जिनके द्वारा हजारों भव दवाहवां  
 घड़ाघड तैयार हो जाती हैं और उन वस्तुओंका भेद अभी वही जानते  
 हैं कि जो उनको फूट खान गला के या मत्त निकाल के औषध के रूप  
 में करते हैं उनमें से बहुत सी चीजें ऐसी हैं कि हिन्दुस्तान में संत में  
 मिलती हैं केवल लेजाने में जो कुछ खरब पड़ता हो, और बहुत से  
 ग्रीष, जन्तु के तन् सस्त्रन्धी पदार्थ उसी विलायत में मिल सके हैं जो  
 पहिले मिट्टी के माल विकते हैं पर औषध बन जाने और टिकट के  
 चिपकाने पर सोने की कीमत का भी भात करते हैं बुद्धिमानोंके निकट  
 सोचने पर यह बात साफ जाहिर हो सको है कि यह वस्तु बहुत कम  
 कीमत और कम कदर और बेकदरवाली हैं फिर उन्हीं से कितने लोग  
 नफा उठाते हैं प्रथम तो सुद इंगलिस्तान के बड़े २ सीदागर जो हि-  
 न्दुस्तान के बड़े गहर कलकत्ता और बम्बईमें कोठी रखते हैं और किस  
 कदर नफा लेते हैं लिखा नहीं है \* फिर हर एक गहर के पीछवाले दू-

\* करीब ३ वर्ष हुये मैं श्री मुत महाराजा हुमरांव की चिकित्सा  
 करता रहा और उन्हीं के भाय कलकत्ते जाना पड़ा महाराजा साहब के  
 खास मुन्गी मुंठ रंगधीर प्रसाद जी के दांत बनवाने के लिये भाब में  
 मुझे भी कई अंगरेजी की दूकानों में जाना पड़ा पांच ठ: सी रुपये में  
 किसी ने दांत का चांजे (मूषप) कम न किया अन्त में बेचाई उत्तम दन्त  
 स्वर्ण निमित्त एक बङ्गाली महाशय ने १७५) में दिया ॥

में न रखते हैं बल्कि सैरातो अंगरेजी दवाइं बटवाया भी करते हैं • फिर कौन ऐसा शहर है जहां दश बीस हाकूर और दो चार अंगरेजी दवाइंखाना न हो, वस इसी से जान लीजिये कि आर्य्यवर्त में कैसा कुछ अंगरेजी दवाइयों का प्रचार है । इस समय २९ कोटि भारमवर्ष निवासिनी प्रजा है तिसमें ५ कोटि इक्कीसी और ३ कोटि वैद्यक की औपध खानेवाले होंगे १२ करोड़ अंगरेजी दवा के खातेवाले जानिये । हम कहते हैं २० करोड़ में मिर्फ एक करोड़ ऐसे मनुष्य हैं जो प्रायः अंगरेजी ही दवा खातेहैं यदि चेत पूर्वोपर मिना के प्रत्येक मनुष्य प्रत्येक मास में मिर्फ दो रूपये के औपध खाते होंगे तो एक रूपया प्रत्येक व्यक्ति का विलायत जाता है इस हिमाब से एक करोड़ रूपया सहीना और १२ करोड़ रूपया साल हुआ अर्थात् प्रति वर्ष कम से कम भारतसे अंगरेजी दवाइयों का दाम १२ करोड़ रूपया विलायत जाता है ॥

हे भारत देशहितैषियों भारत सुदशा प्रवर्तकों भारत के मित्रों आर्य्यसमाजियों ब्रह्मसमाजियों और हिन्दूसमाजियों क्यों आप लोग

\* काशी में सरकारी हास्पिटल के अतिरिक्त कई महाराजों के तर्फ से भी अंगरेजी दवाइयां बटती हैं बल्कि इसी विषय में चोड़े दिन हुये कि हमने विशुद्धानन्द स्वामी (जो काशी में एक प्रसिद्ध संन्यासी हैं जिसे भारतके प्रायः महाराजो मानते हैं) से कहा कि यह काशी परम पुष्यमई नगरी में प्रायः धार्मिक गण बास करने के अर्थ जाते हैं जल दोष से जहाँ बीमार हुये वही मद्यमिश्रित औषध उन्हें सेवन करना पड़ता है यदि आप ऐसे धर्मशील महात्मा चाहें तो राजाओं के ओर से एक आयुर्वेदिक औषधालय खोल दिया जावे तो बहुत कुछ धर्म की रक्षा हो सक्ती है उसका उत्तर यही दिया कि अंगरेजों का राज है तो जिसका राज उसी की विद्या कोई राजा हमारी क्यों सुनने लगे अब बतलाइये जब ऐसे २ महात्माओं की यह दशा है भांग अफीम का गोल खाने और लाखों रूपये राजों से लेकर मौज उठाने से काम चाहे भारत जहन्नम में जाय ॥

घोर निद्रा में सो रहे हों ? आप लोगों की इस पर दृष्टि क्यों नहीं पड़ती ? इसका आन्दोलन और विचार आप लोग क्यों नहीं करते हो ? इसमें केवल धन सम्बन्धी हानि नहीं है कि जिसको सब कोई जानते हैं, धरन धर्म सम्बन्धी हानि बड़ी भारी है हाय, आप लोग देवता और ऋषि मुनि की सन्तान होकर राक्षसी क्रिया और महा घृणित वस्तुओं से मिली हुई औषधियां कि जिनका नाम लेने और सुध करने से भी संशय हो जाय दान देकर खरीदते हो और कैसा दान कि धारं धार हनों को देना पड़ता है लोकल टैक्स के अनुसार हनों सब से रुपया लेकर शहरों और कस्बों में छोटे बड़े हस्पताल जारी हैं तिसपर भी हाकिम लोग दवाय हाल कर बड़े २ आदमियों से चन्दा लिया करते हैं क्या आप लोगों की जीभ में इतनी सामर्थ्य नहीं है कहे कि हम लोगों की चिकित्सा के लिये अच्छे २ वैद्य और हकीम नियत किये जाय कि जिनके औषध सेवग में हमारा लोक परलोक देने में अनता है इसके कहने से किमी को फांसी नहीं हो सकती, यह बात सब कोई जानता है इस धरान के मूल सिद्धान्त पर ध्यान दो बड़ी भारी हानि है वल्कि प्रकृति के विपरीति देवी सृष्टि के लोगों को आधुनी सृष्टि की औषधियों के सेवन में बुद्धि की मन्दता आयुबल की घटती शारीरिक पुष्टता का घिनाश होता जाता है जैसा कि ऊपर में लिख चुका हूं कि अति ठंडी विलायत की औषधियां इस गरम मुल्क वालों के स्वभावानुकूल गुणकारी नहीं हो सकती ॥

सोचने की बात है कि जिन हंस पक्षियों का आहार दूध और मोती प्रभृति लसत २ पदार्थ हैं उनके यज्ञों को घसुलों का भयवा गृहादि मलिनाहाली पक्षियों का भोजन दिया जाय तो कब उन्हें लाभ होगा, यदि इस लेख पर कोई तकं करे कि इस देश के वैद्य हकीम अगरेजी औषधियों को बढ़ाई द्वेषभाव और हाह बुद्धि में नहीं करते और न करने ? यह बात ठीक नहीं है सतत पदार्थ को कोई भी घुराई नहीं कर सकता और न हो सकती है हम न्याय पूर्वक कहते हैं केवल शारदीय प्यरही को देखिये जो कारण हमारे प्राचीन आर्य महर्षि गण निर्दोष

कर गये हैं वहे २ पण्डिताभिमानों इतरोपीय चिकित्सक गण अद्यावधि  
 सभी को सेवाय भेलेरियां फीयर के एवं कूर्डेनाईन व्यवहार के कणमात्र  
 अधिक कुछ कह सक्ते हैं ? हममें कोई सन्देह नहीं कि कूर्डेनाईन ज्वर  
 दमन करने में एक अपूर्व औषध है परन्तु इस पर आर्य्य मन्तान गण  
 को आश्चर्यित न होना चाहिये, यह तो आयुर्वेद ही कहता है "तिक्त-  
 द्रव्यंज्वरांजयेत्" अर्थात् कटु, चीज ज्वर को जंतता है तो कूर्डेनाईन के  
 सेवन से ज्वर छुटही गया तो कौन आश्चर्य्य हुआ लेकिन ज्वरादि कोई  
 रोग क्यों न हो अधिक तिक्त औषध का सेवन करना आयुर्वेद विरुद्ध है  
 और कूर्डेनाईन के सेवन से भारत की कैसी दशा हो रही है और उस  
 से फल की अपेक्षा अफल क्या है कोई भी दृष्टि नहीं देता है ॥

अति तिक्त द्रव्य के अधिक मात्रा व्यवहार से निम्न लिखित रोग  
 हो जाते हैं ॥

शरकामूत्र स्थान अध्याय २६ में लिखा है। अधिक तिक्त औषध के  
 खाने से वह तिक्त अपने रुक्षादिप्राय से रस रुधिर, मांस मेद अस्थि  
 मज्जा और शुक में रुक्षता और शिरासमूहों में खरता उपस्थित करता  
 है, शारीरिक बल नाश, रलानि मोह अथ मुख शुष्कता एवं अनेक बात-  
 रोग उत्पादन करता है ॥

यही दोष भाषप्रकाश के पूर्वखण्ड और सुश्रुतादि ग्रन्थों में भी पाये  
 जाते हैं। अगर कोई कहे कि शुक तारण्य धातु की दौर्बल्यता आदि  
 रोग भारतवासियों को कूर्डेनाईन के खाने से हुआ है इसका पुष्ट प्रमाण  
 उपरोक्त ग्रन्थों में कैसे हो सकता है ? क्योंकि हिन्दुस्तानी लोग लाल  
 मिर्चादि तीती वस्तु प्रचुर खाते हैं उसमें भी यही दोष होना सम्भव  
 है ? हम कहते हैं उसे न मानिये अधिक कूर्डेनाईन सेवन से यही म-  
 कल फुफल सम्बन्ध में, बिलापत और अमेरिका के प्रसिद्ध २ डाक्टरों ने  
 जो अपनी किताबों में परीक्षा पूर्वक लिखा है जिसे मैं संक्षेप से नीचे  
 लिखना हूँ उसे तो मानोगे ॥

ए० वी० गारड एम० डि० एफ० एस ने अपने पुस्तक के द्वादश सं-  
 स्करण २६ पृष्ठ में लिखा है कि अधिक मात्रा कूर्डेनाईन का सेवन

हृदय संबन्धी रुपा को जड़ता भाव करता है जिससे रक्त का गमनागमन अर्थात् कम होने में आक्षेप रोग मृत्यु पर्यन्त हो सकता है ॥

एम. डी. ने अपनी पुस्तक के ११ चाप्टर के ५९९ पेज में लिखा है कि कूईनाईन अधिक दिन सेवन करने से निम्नलिखित उदर व्यथा उपस्थित होती है जैसे पेट में उष्णता और भारी मालूम होना सूखी ओंकी आना या जी मथलाना यह क्या और भी प्रबल उदररोग हो जाता है।

कूईनाईन की रुपा संबन्ध में और घातों के अतिरिक्त यह विषय ध्यान देने लायक है कि जो कूईनाईन का विकार शरीर में व्याप्त हो पीथ २ में देखा गया है एवं स्पलेनिया बिध शरीर में जो संपूर्ण उपद्रव उपस्थित करे उसके द्वारा शरीर में रक्त का परमाणु कम और विकृत भायापन्न हो शरीर रक्त हीनता पांडु वर्णता, प्रभृति, रोग, सर्वांगिक दुर्बलता अन्त में शय्यागत की आरत दशा प्राप्त करता है ए, सी, काह, पार, खोपेट, एम, डी, पीएच, डी, एल, एल, ४, एडीसन २१७ पेज देखो ॥

कूईनाईन अधिक दिन सेवन करने से प्रसंग करने की शक्ति केवल घटती नहीं जाती किन्तु मैथुन शक्ति का एक भारी ह्रास हो जाता है और रात को स्वप्नावस्था स्वप्रदाय आय चेरता है, टी, एक, एलेन, एम, एमडी, तृतीय चाप्टर के २३२ पृष्ठ में देखो ॥

हीहा और यकृत क्षुब्ध एवं शय्य होता है हेनरी यक एम, आर, सी, एम, १०२ पृष्ठ में देखो ॥

रिचार्ड हिवजेस एल, आर, सी, पी, ने अपने ४०९ पृष्ठ में क्या लिखा है देखो ॥

अधिक कूईनाईन सेवन से दृष्टि में एक विलक्षण दोष उत्पन्न होता है यदा तक कि अंधे हो जाते हैं एवं शिरपीडा सूर्यावर्त शिर भारी होना और विनाश फूटता है ॥

इस स्थल में नीतिश देश वासी पुरुषों को विचार करना चाहिये कि अति इस प्रधान देशीय अंगरेज लोग जो शरीर से अति इत मद्य भांस खाने वाले और यलवान हैं जध उन लोगों का इति

पूर्वोक्त प्रकार पर हानिकारक है तो उष्ण देशीय क्षीण देही शाकान्न भोजी नाना प्रकार के शोच ग्रस्त आर्य्य सन्तानों को अधिक तर अव-  
गुण करता है इसमें अणु मात्र भी सन्देह नहीं है ॥

अन्त में हम अपने प्रिय देशी भाइयों से निवेदन करते हैं कि यदि आप लोग उक्त भयङ्कर विपद से उद्धार पाने की इच्छा रखते हो और अपना धन धर्म और अमूल्य जीवन को नष्ट न करना चाहते हो तो भूतपूर्व ऋषियों की परीक्षित उपदेश और नियमावली का पालन करो इसी में आप लोगों का कल्याण है ॥

पाठकगण, आप सत्य जानिये कि सनातन वैदिकधर्मके परम वैरी मजहबी तास्सुब से भरे हुये कहर अत्याचारी यवनो के राज्य होने से भी जो धर्म नष्ट नहीं हुये वे सब धर्म कर्म आज नातिष्ठ अंगरेजी राज में सिर्फ खिलायती अमेष्य दवाइयों के सेवन से धन और मानसिकशक्ति तथा शरीरक बल समेत प्रतिदिन धर्मकर्म नष्ट और निर्मूल होते जाते हैं, अंगरेजी औपधियों की बढ़तायत और गोरस की अल्पता ही का कारण है कि छोटे बड़े के तनमें प्रमेह और धातुर्घाण का इङ्का बज रहा है पन्द्रह सालह वर्ष की अवस्था में गाल चुचुक जाते हैं जिस देश के पुरुष लोहे के कवच (बस्त्र) अंगरेखे की भांति पहनते थे वहाँ अथ लोगों को अच्छे मजबूत गाढ़े मोटे सूत की धोती धोतक मालूम पड़ती है जो कई कोस घराघर दीड़े चले जाते थे सो उन्हें अथ बीघा दो बीघा चलने से भी मांस फूलती है लड़कों के शक्ति बाप दादे लोग सुद अपनी शक्ति हीनता के विचार पर शिवा देते हैं कि भैया पांस धीरे २-३ रक्खा करो कहीं गिर न पड़े। सब है कि निर्बल कुतिया को पूछ ही भारी पड़ जाती है ॥

कोई २ कहते हैं कि "औपधजान्दवीतीय वैद्योनारायणोहरिः" तो हमका यह अभिप्राय नहीं है कि जान यूँकर महा अपवित्र तन धन धर्मनाशक मलिन पदार्थ खा लिय और यह भी कोई प्रमाण नहीं है कि खाद्य अखाद्य वस्तु जैसे बिट्टा और महामांस की बनी हुई दवा बिना विचारे खानेवे "अकतव्यं नकतव्यं प्राणैः कठ गतैरपि" सो खाने योग्य

कभी नहीं रस सकते हैं हमारे लिये यही देगीय जड़ी यूटी अयस्कुर है जो हमारे प्रकृति के अनुकूल है। मनुष्य का जन्म पशु विकार से होता है जिस देश की जमीनी हवा जल पृथ्वी आदि के गुण हैं उन्हीके अनुसार मनुष्य का रंग अंग प्रकृति इन्द्रिय बोल चाल होता है ( जैसे ब्रिगायत और काश्मीर के मनुष्य गौरांग, मद्रास के काले, नेपाल के चपटे मुँह वाले उत्तरीय पहाड़ों में अश्र्वमुखयाले होते हैं और वहीं के मिट्टी में जो धान्यादि उत्पन्न होते हैं उन्हीं को खाकर वे लोग जीवन काटते हैं और बिमार होने पर वही देगीय जड़ी यूटी के सेवन से तन्दुरुस्त हो जाते हैं । देखिये पश्चिम के लोग प्रायः उर्द की दाल खाते हैं उन को कोस्र बट्टादि कोई बिकार उत्पन्न नहीं होता है पूर्ववाले एक दिन भी खावें तो बीमार हो जाते हैं परन्तु चावल रोज खाते हैं और पश्चिम के लोग चावल बहुत कम खाते हैं । इसका मुख्य कारण देश है पश्चिम में चावल की उत्पत्ति कम है पूर्व में उर्द कम होता है विसाही औषधों को भी जानिये । ईश्वर ने जिस देश में जिसे उत्पन्न किया है उसके शरीर रक्षा के अर्थ समस्त पदार्थों को भी वहीं उत्पन्न कर दिया है तो फिर हम लोग जान बूझ कर अपने धन धर्म को नाश करते हैं तो सिवाय मूर्खता के और क्या है ॥

अंगरेजी दवाइयों के खाने से धर्म नाश होने के अतिरिक्त एक यही भारी हानि और भी है कि जिसपर किसी देशीय चिकित्सक ने अब तक ध्यान नहीं दिया वह यह है कि अंगरेजी दवाइयों में अधिकांश औषध खड़ी (सलफ्यूरिक एसिड, टार्टरिक एसिड और साइट्रिक एसिड वगैरह) क्षारद्रव्य ( कार्बोनेट आफ सोडा आदि ) निमक ( पुटासादि ) और तीक्ष्ण ( लायकर आदि ) हैं और हेर फेर कर सब रोगों में प्रायः दवाइयों के साथ इन्हीं का योग रहता है और सोडा एसिड अर्थात् सोडावाटर लेमनेट का तो आज भारत में घर २ गंगा जल के समान बतौर हो रहा है और एसिड आदि याने अन्न क्षार तीक्ष्ण और लयण, धातु को दुबला सत्परीन और फाड़ कर बहानेवाले हैं और बीयोंही आमु का मूल है तो जिन औषधों से मूलही का नाश है उसके सेवन से



हम लोग आरोग्य और दीर्घजीवी कैसे हो सकते हैं ? कदापि नहीं इस विषय पर सर्वसाधारण धार्मिक जनों को अवश्य दृष्टि देनी चाहिये, अब पाठकगण इतनाही से जान सकते हैं कि हम को अंगरेजी दवा खाना चाहिये या नहीं ॥

### विज्ञापन

आयुर्वेदोक्त औषधालय जानसेनगञ्ज इलाहाबाद ।

त्रिवेणी जल से आयुर्वेद की प्रसिद्ध और पवित्र औषध बनायनाई पूर्ण घटी आसय रसादि जो कहीं न मिले यहां सीजिये सराब या नकली निकले प्रत्यक्ष करा देने पर १००) रुपया दण्ड देव ॥

इस कारखाने में औषध बनानेवाले ब्राह्मणादि उत्तम जाति हैं और जल के स्थान में अमृतोपम त्रिवेणी जी के धारा का गुंजाजल डाला जाता है ॥

जिन रोगियों को डाक्टर हकीमों की दवा साफकत न करती हो या उनके रोग का पता न लगता हो कि यह कौन रोग है वे लोग अवश्य हमें लिखें या हमारे पास आयें हम उनके रोग का नाम दवा क्यों फायदा नहीं करता कौन दवा से यह रोग कितने दिनों में आराम होगा रोग साध्य है या असाध्य अर्थात् अच्छा होगा या नहीं हम सब यतनाम देंगे । परन्तु चिट्ठी में इतनी बातें अवश्य लिखें कि रोगी स्वयं है या पुरुष और कितने दिन से रोग है शरीर का रंग कैसा है शरीर मोटी है या दुबली चलने फिरने की ताकत कैसी है खाना किस किस का साफकत करता है दिशा पेशाब कैसा और किस रंग का होता है पेशाब के साथ धातु का जाना या जल के पेशाब होना इत्यादि अगर कारुरा देख के लिखें तो और भी उत्तम हो । पेट में कड़ासन शिर में घुमरी जी मचलाना पेट में जलन कलेजा धक र करना इत्यादि और भी जो प्रत्यक्ष लक्षण हो लिखें इसके अतिरिक्त और अनेक शरीर

सम्बन्धी प्रणाली पत्र द्वारा पूछ सकते हैं । जथावत काई या जथाय के लिये टिकट रकम देवे नहीं तो जथाय बिरंग दिया जायगा ॥

### भूमिका ।

प्रायः लोगों के मुख से शिकायत सुनने में आती थी कि वैद्यक मत की औषधियां उत्तम और ताजी कहीं नहीं मिलती और यह तो सभी जानते हैं, बनियों के दूकानों में तो अक्तर सही घुनी दवाइयां मिलती हैं इस अभाव को दूर करने के अर्थ यद्यपि यह दूकान तीस वर्ष से जारी है परन्तु संपूर्ण कार्य लोगों के रुचि पर निर्भर है, जब लोगों के चित्त में यह असर पैदा हुआ कि इस देश के स्वभाव पर इसी देश की औषध अधिक गुणकर है क्योंकि जिस देश में जो रोग उत्पन्न होता है उसी देश में उस रोग की औषधियां भी उत्पन्न हुआ करती हैं और अंगरेजी दवाइयां सिर्फ बनावट मात्र प्रकृति विरुद्ध हैं और भारत से प्रतिवर्ष जो १२००००००० रूपया अंगरेजी औषधों के मुख्य विलायत जाता है क्यों जाय, जब हमारे प्रकृति के अनुकूल देशी औषध मौजूद हैं । दूसरे मांस नोली अंगरेजी दवाइयां शराब से और किसी रे गोली में सायुन पड़ती है और विलायती सायुन गोप सुअर आदि जीवों की चर्बी से बनती है तो जब तक हम देशी औषध से आरम्भ हो सकते हैं तो क्यों अपने धन धर्म को मांस करें । तब से हम लोगों ने भी दूढ़ प्रतिष्ठ हो उपरोक्त औषधालय की वृद्धि करना आरम्भ किया है । यहां सब प्रकार की औषधियां शास्त्रीय रीति और सुफाई से बनाई जाती हैं । जहाँ बूटी जिसका मिलना तो कठिन है वही लोग पीन्हते तक नहीं वे सब भिन्नो के द्वारा जंगली से भंगाई जाती हैं जिसे सरिखन पिचवन श्योनाक सिंभारि विधारी गुलसकरी दातूनि बिलाईकन्द ब्राह्मी सद्रवन्ती आदि इस लिये मांग जाने पर जंगली औषध भी भेज सकते हैं । लेकिन यह बात अवश्य याद रहे कि तैल वगैरह या अधिक दवा रेलमें भंगाने से बहुत कम महमूल में पहुंच जाता है और शीशी टूटने का भय नहीं रहता ॥

यदि कोश दो कोश पर भी रेल का स्टेशन हो तो स्टेशनका नाम और किस छैन में है अवश्य चिट्ठी में लिख दें ॥

## नियमावली ।

जिन महाशयों को चिकित्सापत्र के अनुसार सेंगाई हुई दवा माफकत न करे यह औषध लक्षणा संहिता लिखकर लौटा देनेसे दूसरी दवा भेजी जायगी परन्तु दवा के आने जानेका हांक सहसूल रोगीको देना होगा ॥

उचित है कि दवा का दाम पहले भेज दें वेल्यूवेलुल में सेंगाने से पोष्टकमीशन अधिक देना पड़ता है । पोष्टशाफिम द्वारा हांक सहसूल निम्नलिखित हिसाब से लिया जाता है एक पाव तौलमें है ( तो १) आधसेर का ॥ इसके उपरान्त फी आधसेर पर १) सहसूल लगता है शक होने पर तौल लें ॥

जो लोग चार आने की भीतरही दाम की दवा परीक्षार्थ सेंगाई और तैल न हो ॥ का टिकट भेज देने से उनके पास पैलीमें धन्द दवा प्रहृष्टः जायगी परन्तु टिकट ऐसे ढंग से धन्द करके भेजे कि ऊपर से दिखलाई न दे क्योंकि अद्वतर पोष्टमैत्र लोग निकाल लेते हैं ॥

जो महाशय पारसल में दवा सेंगाय के (बिना किसी ऐसे कारणके जिसे पारसल टूट गया हो) वापस कर देंगे यह महा पापी समझे जायगे और उनका नाम दगाधोजी की श्रेणी में रखा दिया जायगा । क्योंकि यह औषधालय देशीद्वार के लिये जारी हुआ है ॥

जगद्विख्यात नारायण तैल

इस तैल के मदन से या नाश देने से या गुदा में पिघकारी देनेसे लकवा आदि सब प्रकार के वायु रोग आराम होतें हैं एक पावका दाम ॥) हाकव्यय ॥)

विपगर्भतैल—शीत वायु रोग के लिये इस्ते बढकर अन्य तैल नहीं है यह तैल बहुत गर्म है जिसको अति शीतसे गठिया आदि घात

रोग हुआ हो या जोड़ों में दर्द या सूजन आगया हो। इस तेलके लगाने से बहुत जल्द आराम होता है पाव भर का दाम १) हाकव्यय ॥)

**मापादितैल**—रक्त विकार से हो या जीत से हो दोनों प्रकार के वायु रोग गठिया आदि आराम होते हैं और जिसका शरीर मूखगया हो या मूखा जाता हो थोड़े ही दिन इस तेल के लगाने से मोटा हो जाता है और लड़कों का मिठवा रोग भी छुट जाता है। पाव भर का दाम १) हाकव्यय ॥)

**लाक्षादितैल**—इस तेल के लगाने से कैसाहू पुरानी खांसी बुखार क्यों न हो बहुत जल्द आराम होता है पाव भर का दाम १) हाकव्यय ॥)

**कामलाक्षादितैल**—इस तेल के लगाने से शरीर में ताकत और धातु बढ़ता है और बदन का पीलापन जाता रहता है पाव भर तेल का दाम २) हाकव्यय ॥)

**चन्दनादितैल**—इस तेल के लगाने से शरीर में सुरखी आती है बल बढ़ता है शिर की गर्मी हाथ पैर का चलना उन्माद इत्यादि छुट जाते हैं पाव भर तेल का दाम १) हाकव्यय ॥)

**त्रिफलादितैल**—इस तेल के लगाने से बदन की खजुली जलन लाल र बहे पड़ जाना नशों में सुरखताइत होना खून बिगड़ जाना ये सब बहुत जल्द आराम होता है और जो खून की बीमारी पुटास सालसा आदि के पीने से न आराम हो तो इस तेल के लगाने से आराम होता है इस तेल से हजारों बीमार अरुहे हुये हैं एक पाव का दाम ॥॥) हाकव्यय ॥)

**अम्बूतदन्तारोगाशनि चूर्ण**—इस चूर्ण को दांतों में रगड़ने से दन्त-शूल दांत से रक्त आना दांतों में पानी का लगना हिलना और मुख की दुर्गन्धि निस्सन्देह जाती रहती है। एक डिब्बी का दाम १) हाकव्यय ॥)

**बृहत्प्रपामार्ग क्षार तैल**—इस तेल को साम सुबेरे ५ विन्दु कान में डालने से निस्सन्देह कर्णशूल कर्णश्राव कर्ण शब्द और थोड़े दिन का बहिरापन आराम होता है एक शीशी तैल का दाम १-) हाक व्यय।)

**व्याघ्रीतैल**—इस तेल के नाश लेने से किसीहू पीनस की बिमारी क्यों न हो अर्थात् जिसके नाक से मवाद और दुर्गन्धि आने लगती है एक पक्ष में आराम होता है दाम ॥) हाक व्यय।)

**कुमारकल्पद्रुल बटी**—अर्थात् ( मिठवा की गोली ) किसी बालक मिठवा रोग से क्यों न सूख गया हो अनुपान पत्र लेखानुसार इस गोली के खिलाने से बालक आरोग्य हो तैय्यार हो जाता है दाम ॥) हाक व्यय।)

### प्रमेहारि चूर्ण ।

आज कल आर्यावर्त में एक भी मनुष्य ऐसे न मिलेगा कि जिन्हें घातु की शिकायत न हो, बालक से बूढ़े तक इस रोग में ग्रस्त हैं, बहुतेरों को मालूम भी नहीं सिर्फ इतनाही कहेंगे कि हम इतना खाते पीते हैं घदन में नहीं लगता है, फिर घातु रोग यह ऐसा खराब रोग है कि शीघ्र यत्र न करने से जड़ थाम लेता है और कुछ दिन बना रहने से दूसरी बिमारी खड़ी हो जाती है जैसे नजला, जीर्णश्वर, तपेदिक खांसी, दमा, अतीसार, कोष्ठबद्ध, अग्निमन्द, नेत्र, दांत रोग इत्यादि और भी जितने रोग हैं सब घातु की कमजोरी से होते हैं। घातु दुर्बल होने का लक्षण यह बहुत ठीक है, कैसा ही समदा खाना खावे शरीर तैयार चिकना ताकतवर न हो, शरीर मोटा भी हो तो आलस्य से भरा रहे, भीतर खफकीफ गरमी धनी रहे, पढ़ने लिखने में चित्त न जमें, मन फिर मन्द और उदास रहे, जैसे बहुत रास्ता चलने में शरीर थक जाती है विसा ही शरीर ढीली और सुस्त कभी २ हो जाया करे प्रथम की की इच्छा कम हो, हो भी तो शीघ्रही वीर्यपात और आगन्द रहित हो, ऐसे लोगों का घातु भी कई प्रकार से जाता है जैसे दिशा के प-

हिले या पीठे गिरना, दिशा फिरते समय मल उत्तरने के लिये कांखने से सूत्र मार्ग से धातु का ढाक जाना, सूत्र भ्रंश हो जाना, स्वप्न दोष होना, या भ्रंश शीघ्र में सूत्रको एक दिन रात काग से बन्द कर रखने से सूत्र में जाला रसा या गदला नीचे जम जाना इत्यादि किसी प्रकार से धातु क्यों न जाता हो प्रमेहारिचूर्ण समूल नष्ट कर धातु छोड़ गाढ़ा करता है। अगर छ (सहीने से) रोग हो तो १ दिव्यी चूर्ण से आराम होता है १ वर्ष से हो तो २ दिव्यी चूर्ण से और ५ दिव्यी चूर्ण के खाने से कैसाहू पुराना धातु रोग हो आराम होता है। सुजाक आराम होने के बाद इस चूर्ण के खाने से फिर सुजाक नहीं उभड़ता। कैसाही दुबला मनुष्य हो यदन की हड्डी तक दिखाती हो ५ दिव्यी तक चूर्ण खाने से दूनी शरीर हो जाती है। मुख से या दिशा से रून का गिरना, सूखी खंसी का सदा घना रहना, नजला आदि जो धातु से सम्बन्ध रखते हैं उप आराम होते हैं तारीफ इसमें यह है कि इस चूर्ण के सेवन से दस्त कब्ज न हो के शरीर दस्त सुलाखा होने लगता है। १ दिव्यी चूर्ण का दाम (॥) डाक, नष्टमूल (॥) और (॥) नष्टमूल में दिव्यी चूर्ण का सक्त है चूर्ण खाने का विधान पत्र उपां हुआ दवा के साथ है ॥

### कामदेवचूर्ण ।

इस चूर्ण के सेवन करने से धातु अत्यन्त गाढ़ा और पुष्ट होता है। धातु पुष्ट करने वाला इसे बढ़कर अन्य औषध नहीं है। कैसाहू पतला पानी के समान धातु क्यों न हो गया हो ४० दिन के खाने से धातु गाढ़ा हो जायगा, इस शपथ पूर्वक कहते हैं चाहे अगर भी कुछ जादा होगई हो कभी लड़के नहीं हुये हो, अगर स्त्री पुरुष दोनों उ मास पर्यन्त परहेज सहित कामदेव चूर्ण का सेवन करे तो निस्तन्देह गर्भाधान रहेगा और ताकतवर लड़का पैदा होगा अगर फल पड़े तो १०० दण्ड देवे। अगर तीन दिव्यी तक इस चूर्ण को बराबर खाता जावे तो उसका वीर्य अत्यन्त गाढ़ा पतल के समान बजनी, कपूर के समान श्वेत, पात होने पर मोलाकार जमा हुआ जो विभाग करने से भी अलग

न हो और प्रसङ्ग में भानन्द का देनेवाला है। शत यह कि पथ्य से रहे एक दिव्या चूर्ण का दाम १) हाक महसूल ॥) दो दिव्या ॥३) महसूल में जा सकता है ॥

**नयनामृतसलाई**—घबसा लगाने की जरूरत जाती रही। यह सलाई अतीव श्रम से अनेक नेत्र गुणकारी औषधियों के स्वरस में संशोधन कर बरसों में बनायी है नेत्रों में केवल सलाई के फेरनेही से धुन्ध, माड़ा, जाला, आंसू का बहना खलुी और रतींधी जाती रहती है इस सलाई को प्रतिदिन एक दफे आंख में फेरने से आंख में किसी किस्म की बिमारी न होगी और कुछ रोग के अभ्यास में चक्षुष्य लगाना छूट जाता है। एक सलाई १० धप के लिये काफी है। हर एक सलाई में एक दिव्या अमृताञ्जन के दाम ॥५) हाकव्यय ॥) में कई एक सलाई जा सकती है ॥

**विशूचिकान्तक घटी**—अकं कपूर से भी बड़ करे यह बड़ी गुणदायक है निश्चय है कि यदि ऐजा के प्रारम्भ होतेही अनुपान पत्र लेखानुमार घटी खिला दिई जाय ( भाग्य की बात तो दूसरी है ) तो कभी ऐजे से रोगी न मरे। इस गोली से असंख्य विमार अरु छे छुये हैं चार्दिकिठ भी मौजूद हैं। ५० गोली का दाम ॥) हाकव्यय ॥)

**सुजाक की दवा**—कैसाहू, पुआता, सुजाक है २० रोज में प्रथम आराम होगा दाम ३) हाकव्यय ॥॥)

**कोष्टवट्टारि चूर्ण**—इस चूर्ण को रात्रि में सोते समय खाने से थोड़े खुलासा दस्त होगा २० गोली का दाम ॥) हाकव्यय ॥)

**आश्रय्यालकों की औषधि**—हजारों लड़के मरने से बच गये हैं इस दवा के खाने से पसुरी का चलना खासी बुखारि पेट में दर्द होगा इत्यादि जितने बालकों के रोग होते हैं आराम होते हैं, दाम ॥) हाक ॥)

**गर्भ चिन्तामणि रस**—जिन स्त्रियों का कष्ट गर्भ गिर जाता है उनके वास्ते यह अमृतही है। इस औषधि के प्रभाव से पूरे महीने

में आरोग्य लहका पैदा होता है परंच गर्भाधन से लेकर जब तक लहका पैदा न हो बराबर दवा खाना होगा पहरेज के साथ दाम १) डा० १)

**उदरशूलघ्न बटी**--यह उस पेट के दर्द को आराम करती है जो प्रायः लोगों को महीने दूसरे महीने चौबे छठे महीने बड़े जोर जोर से दर्द उठता है यहां तक कि मरने की नीयत आजाती है यह विमारी औरतों को बहुत होती है इस गोली के खाने से चार पांच घंटे में दर्द जाता रहना है एक शीशी दवा का दाम ॥) डा० १)

**कामोत्पादक बटी**--इस गोली को संख्या समय खाकर ऊपर से गर्म दूध पी लेने से शरीर में एक उत्तेजना आजाती है और प्रसङ्ग में कुछ स्तंभन और आनन्द होता है। परंच अति गर्म प्रकृत वाले को फायदा नहीं करती एक शीशी जिसमें ४० गोली हैं दाम ॥) डा० १)

**नपुंसकार बटी और तिला**--इस बटी के खाने से और तिला के लगाने से ४० रोज में पन्द्रह बीस वर्ष तक का नपुंसक जो नश मारी गई हो आराम होता है तेल से छाले आदि नहीं पड़ते पूर्ण मात्रा दोनों औषध का दाम २) डा० १)

**बुद्धिवर्द्धक अर्क**--इस अर्क के पीने से यातों का भूलना शिर का घूमना जो संभलाना आंखों के सामने अंधियारा होना पेट या छाती का जलना बुद्धि का भ्रम ये सब आराम होते हैं एक शीशी का दाम ॥) डा० १)

**अर्क खूनसफा**--यह अर्क मुण्डी आदि औषधियों से खींचा गया है इसमें सालसापरेला आदि से भी अधिक गुण है १ दोतल का दाम ॥) परन्तु यह अर्क रेतदार जा सकता है और ४ दोतल से कम न लेंगें ॥

**अपूर्व दाद की दवा**--निस्सन्देह इस सहायकारी देशी औषध के समान कोई अंगरेजी औषध भी ऐसा उद्य नहीं है कैसीहू



पुरानी दाद तमाम शरीर में क्यों न फैल गई है। ५ दिन के लगाने से मूल नष्ट हो जायगा और तारीफ इसमें यह है कि लगता बिलकुल नहीं। एक डिब्बी का दाम १) डाकव्यय १)

**अमृताण्वचूर्ण**—कैसाहू पुराना अतीशरों का अंध खून का दस्त हो इस चूर्ण के सेवन से अथवा आराम होता है यदि इस चूर्ण से आराम न हुआ तो फिर आराम होता मुश्किल है। दाम १) डाकव्यय १)

**खुष्क खांसी की गोली**—जिसमें मुश्किल से कफ आता है और खांसे २ मनुष्य धमन कर देता है कुत्तियों में पोड़ा होने लगती है और गर्मी से जो घबड़ा उठे इस गोली के सेवन से जाती रहती है। दाम १) डाकव्यय १)

**तर खांसी की गोली**—वह खांसी जिसमें बलगम आता हो इस गोली को मुख में डाल कर चूसने से आराम होगी एक डिब्बी का दाम १) डाकव्यय १)

**जूड़ीबुखार की अमूर्त घटी**—कैसाहू जाड़ा दे के बुखार घासों से क्यों न आता हो दैनिक (रोज २) अंतरा तिजारी और चौथिया शीघ्र ही छुट जाता है इसकी बहुत तारीफ करना निष्फल है सिर्फ अर्ज यह है कि जो बुखार कूड़ेनाईने आदि किसी दवा से न छुटा हो उस प्वर वाले को यह घटी अथवा खिनावे एक-डिब्बी जिसमें २०० सी गोली हैं १) डाक महसूल १) में ४ डिब्बी का सक्ती है जो लोग ५) को इकट्ठा मंगावेगे उनको ६) का याने २५ डिब्बी भेजी जायगी जो लोग इस गोली को धर्मार्थ बांटना चाहें उन्हें की डिब्बी ४) में दिया जायगा परन्तु ५) रुपये से कम न मंगावे ॥

**खड़बिन्दु तैल**—यह अमृताण्वचूर्ण है प्रायः लोग जानते हैं कि इसके माश-लेनेसे समलघामु गिर दई गिर का घूमना गिर धप २ करनी

गिर में जैसे कुछ चला रहा है या काटता है ऐसा मालूम होना आंखों का हमेशा खुल रहना या जलन मालूम देना आंखों से कम सूखना इत्यादि अवश्य आराम होता है। दाम: १ शीशी का ॥) डाकडपय १)

**मस्तिष्कवृद्धि तैल**—बहुत दिनोंसे आलौचना करते-२ यह मंहोपकारक गिर का प्यारा तैल तैय्यार हुआ है। यथा विधि इस तैल को गिर में लगाने से निश्चयः गिर:द्वयः-धुमरी-मस्तिष्क:शून्यता-ज्वर-नाइट आंखों के सामने अंधियारा हो जाना आदि और यावत् गिर के रोग हैं आराम होते हैं तथा मस्तिष्क सुशीतल और आंखोंकी ज्योति बढती है इसकी सुगंध अतीव मनोहर राजा महाराजाओं के सर्वदा लगाने योग्य है। विदेशी तैलों की अपेक्षा यह तैल भारतवर्ष में विशेष फल प्रद है। एक शीशी का दाम १) डाकडपय १) इकट्ठी १२ शीशी का दाम १०) डाकडपय २)

**पामारि चूर्ण**—कैसाहू खजुरी लगाने गरीर में क्यों न फैल गई हो चाहे गीली हो या सूखी इस चूर्ण के लेपन से शीघ्र ही आराम होती है दाम एक डिब्बी का ॥) डाक महसूल १)

**लेवणभास्कर चूर्ण**—यह प्रसिद्ध चूर्ण है प्रायः वैद्यकके ग्रन्थों में लिखा है तारीफ इतने यह है कि और चूर्णों की अपेक्षा सातदिन हैं स्वादिक है खाने से मन प्रमत्त होता है सम्पूर्ण प्रकार की उदर की बीमारी कैसाहू पुरानी क्यों न हो कुछदिन इस चूर्ण के सेवन करने से आराम हो जाती है अगर इतने आराम न हुआ तो फिर आराम होने में कठिन समझना एक डिब्बी का दाम ॥) डाकडपय १)

**चन्दनादि चूर्ण**—स्त्रियों के रक्त रोग पर अनुभूत औषध है मासिक रून का अधिक बनाव रहना या बिना मासिकके रक्त का जाना अर्थात् रक्त प्रदर रक्तसिंहार और सूनी बधाघीर की भी आराम करता है दाम ॥) डाकडपय १)

**महाज्वरांकुशे वटी**--यह वटी अति शुद्ध पारो, गन्धक, सों-  
गिया आदि तीक्ष्ण द्रव्यों से बनी है खाने में बिलकुल गरमी नहीं करती  
शीत पूर्वक ज्वर एकाहि अंतरिया तिजारी भीषिया चाहे जितने दिनसे  
आते हों एक सप्ताह के अन्दर निश्चय छूट जाता है एक शीशी जिस्में  
१०० गोली हैं दाम ॥) हा० १)

**अश्रक भस्म एक सौ आंच का**--यह रस का गुण गर्म नहीं  
है कैसाहू छोटी अवस्था के लोग इसे खावे यदि फायदा न करेगा तो  
नुक्तान भी न करेगा, विशेष कर वीर्य प्रमेह का नाशक धातु बर्तुक  
आयु बर्तुक है। जिस मनुष्य को धातु रोग हो और काँड़े दवा फायदा  
न करती हो और अवस्था भी ५० वर्ष से ऊपर हो तो इसी रस को खावे  
दाम की तोला ६) हा० १)

**क्षारादिवूर्णा**--यह चूर्ण अति सातदिल अनेक रोगों को हटाने  
वाला जैसे पेट का दर्द दाह वमन गले में जलन खट्टी हकार आना गले  
में कफ सूख कर लपट जाना इत्यादि अजीर्ण को तो पेट में जातेही  
भस्म करता है एक छिन्नी का दाम १) हा० १)

**परीक्षित चवासीर की दवा**--( तेल और चूर्ण ) इस चूर्ण  
के खाने और मसों पर तेल के लगाने से दोनों प्रकार के चवासीर रोग  
को फायदा पहुंचाता है दोनों का दाम ॥२) हा० १)

**पञ्चामृतकल्याणचूर्ण**--इस चूर्ण के सेवन से पेट का जलन  
हौलदिल ( कलेजा पक र करना ) जो चबहाना मन का उदास रहना  
अकस्मात् चित्त का हवाहेल होना हरना रात को भयानक र स्वप्नों  
का देखना बहुत घात भूलना घुमरी आंशों के सामने अंधियारा होना  
मलमूत्र जल कर होना इत्यादि आराम होते हैं गर्म दिनों में इसे प्राह  
रक्षक जानना चाहिये पूर्णमात्रा का दाम १) हा० १)

**काशविजयभैरां चूर्ण**--अथ किसी भीषण से सांसी बन्द  
इस चूर्ण का सेवन करे क्या तब भी सांसी बनी रहेगी दाम १) हा० १)

इस औषधालय में और भी अनेक प्रकार की वैद्यक मत से बनी हुई गोखियां, चूर्ण, अवलेह, आम्र, पाक, तैल, रस, शुद्धधातु, उपधातु, विष, उपविष तैयार रहते हैं और जो लोग वैद्यक मत से कोई दवा बनवाना चाहे अथवा सोना, चांदी, अग्निधातु, अथवा उपधातु, भस्म कराना चाहे पुकुर आने से बहुत सतृप्तता के साथ तैयार करके भेजा जायगा ॥

### हर एक शहरों में एंजेस्ट की जरूरत ।

जिन महाशयों को हमारे औषधों के एंजेस्ट होने की इच्छा हो पत्र द्वारा लिखा पढ़ी करने से ही हो सकता है ॥

मिनेजर वैद्यनाथ शर्मा  
आयुर्वेदिक औषधालय प्रयाग

### प्रशंसापत्र ।

महाशयो संसारिक जितने कम हैं जब तक प्रत्यक्ष नहीं देखे जाते लोग समझ विश्वास नहीं लाते पं० जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य इलाहाबाद में बीस पच्चीस वर्ष से चिकित्सा का काम करते हैं और कितनों बिनारों को आराम किया होगा करीब दस बारह वर्ष के लगभग हुआ कि हमारे लहके की बारात जूनी में माधोप्रसाद जी के यहां गई जैसा ही चारतें दरवाजे पर लगी कि दुगहा के भाई उदीलाल को महा घोर हुआ हो गया कि जिसका देख के हम सुद घबड़ा गये और पं० जगन्नाथ जी वैद्य को बुलाया उन्होंने बड़े साहम से रातभर में आराम कर दिया जिसका कि धन्यवाद हम अब तक देते हैं । हाल में हमारे सम्प्री ला० कन्हैलाल जी उदर रोग से ऐसे पीड़ित हुये कि जिसका दुःख यही जान सकता है जिसका वह दुःख दो अनेक उपाय किये कुछ भी लाभ नहीं देता गया अन्त में पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य जी ने एकही दिन रात में रोग समूल नष्ट कर दिया उस चमत्कार औषध और पं० जगन्नाथ जी शर्मा वैद्य को नारा तक धन्यवाद दिवाजाय पोहा है पाशा सि और

लोग भी जो हाकुरों को धन्वन्तरि का अवतार मान बैठे हैं अवश्य पं० जी की विद्या बुद्धि और औपध की चमत्कारी देख आश्चर्य करेंगे ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ ठाकुरप्रसाद वैद्य ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ महाननी टोला-प्रयाग ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीयुक्त वैद्यवर पं० गणेशाय नमः महाराज जी-

नमस्ते

मेरा पुत्र, बिना माता का जो दो वर्ष का था ऐसी बीमारी दस्त आदि में प्रसिद्ध हुआ और उस समय इसकी विद्या देख पत्थरका हिया भी दाहिम ज्ञा दरकता था कदापि आशा बचने की न थी और वैद्य हकीम हाकुर आदि भी जयात्र दिये बल्कि जन्मपत्नी देख योतिपियों ने भी निराश किया यास्तव में ऐसाही था याद इसके जव मैंने आप को तमान लक्षण रोग का लिखा और आपने जधी दवा भेजी बस औपधी खाते ही सारी बीमारी अल्प ही काल में जाती रही और तब से इस बालक को कोई रोग न हुआ पुष्ट खेलता बोलता आराम में है-इसका कहां तक धन्यवाद दूँ कुछ यही नहीं ॥

सावन सम्यत् १८४५ में मुझे ऐसी बीमारी रातों दिन हिचकी की हुई कि आशा बचने की न थी और वैद्य हकीम हाकुर जताई आदि जव न अच्छा करसके तब भी आपही ने इस पत्नी गर्ज को भी अच्छा किया तब से मैं आप की उत्तम शिक्षा ग्रहण कर गी मांस, मद्य, खोह दिया बल्कि हमारे खानदान के जो कि इस देहात में से रहते हैं इस कुरीति को दिखोजान से एकवारगी उठादिये शुभ ॥

आप का एक दास

सुदायत दारादानगर

इनाहायाद

लोहरडगा से

मिपत्रर-

अभ्रक सेवन करते हुए मास से अधिक दिवस भीते रोग में हिताहित बोध नहीं होता पर वीर्य तो अशुभ बलवान प्रतीत होता है। हमारे रोग दूर करने के निमित्त यदि आप दूसरी दवा तजवीज करेंगे तो भी हम अभ्रक को न छोड़ेंगे। १ तोला अभ्रक शीशी में घुंदा करके भेजिये पुड़िये में नहीं और मस्तिष्क बल्लम द्वारा हमको आनन्द अनुभव होता है दूसरे के हृदयस्थ नहीं करा सके कभी अवसर पाकर लिखेंगे ॥

पारमलपाने का उत्सोही

श्वेताभराय-रईस

सिकोई पालकोट लोहरडगा

श्रीयुत पं जी महाराज

महाशय !

जो चूर्ण आप से लाया हूँ खांसी पर रामधारा से गुण प्रगट किया है सो कृपा कर वही चूर्ण शीघ्र भेज दीजिये ॥

रामप्रसाद-दारागढ़

श्री ।

भैरवहानुमान श्रीपुत्र वैद्यराज-नमस्ते

आप की दवा के इस्तेमाल से बहुत फायदा हुआ और चूर्ण (अर्थात् नाशक) घंघासीर खतम होने पर है सो कृपा करके एक छिदिया पेट्टू-पेवुल पारमल द्वारा जल्दी भेज दीजिये तेल न भेजना। चूर्ण ने बहुत फायदा किया है और आप की चूर्णही काफी समझा जावे या तेल भी जरूरी है ॥

टीकम सिंह जवां हाकखाना

जिला अलीगढ़ अमृतसर पंजाब कटड़ा जैमलसिंह

१८ अप्रैल १० ।

प्रिय महोदय

“ आप की दाद की दवा से मरीज को बहुत फायदा भया आप दया करके ४ डिब्बी दाद की दवा और मेरे दो भेज दीजिये ॥ ”

पं हरप्रसाद असिस्टेंट सर्जन—पल्लवा

जौनपुर से ता० १७ । ४ । ११

श्रीयुत पं० जगन्नाथ शर्मा राजवैद्य महाशय जी नमस्ते ।

आपको कोटानुकोटि धन्यवाद है ईश्वर ने हम लोगों के उपकारार्थ अनेक चीजें बना दी है लेकिन दुष्ट पापी, लोभी मनुष्यों ने नष्ट कर डाला है आप सरीखे विद्वानों के हाथ लग जाने से अब दुनिया के उपकार होने में कोई संदेह नहीं है, आप की रचित आरोग्य दर्पण पढ़ कर बहुत प्रसन्न हुये और मेरा दिल बहुत २ ईश्वर को धन्यवाद दिया करता है जो आपने आ० द० में आचार घटी लिखा है उसे तैयार कर के बिना मूल्य बांटा करता हूँ तिजारी चौपिया ६ मोली से दूर होजाती है ॥

आप का रुपाकांक्षी

शीलसिंह शर्मा पोष्ट० बरहं जौनपुर

पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य ने हमें और हमारे परिवार को ४ वर्ष से दवा कर रहे हैं । हमने सब से उनका दवा और योग्यताका अनेकानेक परिचय पाया है । उन्हें बीमार का नाशी ही से नर्तक मालुम हो जाता है और बीमारियों के हलाक में प्रायः चमत्कारी दिखाते है । वैद्यक के अलावा उन्होंने बेंगला भाषा में मेटिरीया मेडीका आदि ग्रन्थों को भी अच्छी तरह से पढ़ा है । उनके दवाइयों के दाम भी बहुतही सस्ते हैं ॥

सारिणीचरणघोष

गयर्मेसिट पेनसेनर—इलाहाबाद

२६ अक्टूबर १९८२,

पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य ने बहुत दिनों में हमारी बहुत पुरानी झाल की उतकी, बीमारी आराम किया। हमने बहुत दिनों तक अनेक दवाइयों का सेवन किया लेकिन किसी से कुछ भी फायदा नहीं हुआ। आखिर में हमने उतकी इलाज किया और चौड़े ही दिन में हमारी झाल की दर्द और ललाई जाती रही। अब हम बिलकुल आरोग्य हैं ॥

मनमोहनलाल

२७ अक्टूबर १९८२

इलाहाबाद

२८ अक्टूबर १९८२

२९ अक्टूबर १९८२  
हमें अपनी तज्जुबा से कह सकते हैं कि कानपुर लखनऊ और बनारस में हमें जितने वैद्य मिले पं० जगन्नाथ शर्मा को हमने सबसे उत्तम पाया। चौड़े दिन हुए कि हमारी यह बीमारी हुआ था और यह बिलकुल ब्रह्मेश की उन्होंने दवा किया और भाष्य पढ़े ही में वह होश में आये और रोज में वह संपूर्ण रूप से आराम हो गई ॥

मोहनलाल

जागसेनगंज इलाहाबाद

३० अक्टूबर १९८२

३१ अक्टूबर १९८२

हमें पं० जगन्नाथ शर्मा के वैद्यक के लियाकत पर अपनी राय लिखने में बहुत मुग्गी है। करीब छ महीना से हमारे पिता जी कि ८० वर्ष के हैं ज्वर और खांसी से पीड़ित थे और कोई दवा से उनके फायदा नहीं मालूम होता था। अन्तिम में हमने उनके पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य जी से इलाज करवाया। उन्होंने ने ऐसा दिखलगा कि उनका दवा किया कि वह बिलकुल आराम हो गये। वैद्य जी निकल हमारे पिता जी को नहीं आरोग्य किया, बल्कि हमारे भाई की स्त्री को जो कि अंगरेज हाकूम के इलाज से भी मरणापन्न अवस्था में थी उनकी इलाज से आरोग्य हुई। हमने हमने यह गुण सर्वोपरि पाया कि वह मरीज पर अपना पूरा ध्यान



देते और मेहनत करते हैं - जो कि और २ घंटों में मुश्किल से पाया जाता है। यह हरवक्त रोगों के देखने के लिये मुंतेद रहते हैं और २ घंटों के माफिक सो भी नहीं हैं। उनके सोनने गरीब और धनवाने बराबर है ॥

कोट इन्स्पेक्टर - इलाहाबाद

ता० १४ अपरैल १८८७,

एन बहुत सुधी के साथ अपना राय पं० जगन्नाथ वैद्य के लिपाकत पर लिखते हैं हमारे छात्र फिदा हुसैन बहुत दिन से बुखार और छाती के जलन से पीड़ित था। यह बहुत दिन तक अंगरेज डाक्टरों का इलाज करता रहा लेकिन उसको कुछ फायदा नहीं हुआ। बीमारो बढती गई और उसकी बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। उधका माप निराश हो कर अन्त में पं० जगन्नाथ शर्मा से दवा कराना आरम्भ किया और इतना फायदा हुआ कि दूसरे ही दिन उसकी हालत बदल गई। उनका दवा बराबर होता रहा जब तक यह अच्छा न हो गया। सिवाय इसके हमने अपने पहेस में दवा करते देखा है और उर्नवेरे अपने काम में निहायत चालाक और लायक पाया ॥

सहस्रद जहूरहु सैनरिबर

गवर्नमेण्ट हाई स्कूल इलाहाबाद

हमारे दहिने पैर में हाथीपांव हुआ था और हमने उस बीमारी के आराम करानेके लिये बहुत हकीम डाक्टरों का इलाज किया लेकिन किसी से फायदा न हुआ। आखीर में हमने पं० जगन्नाथ वैद्य की दवा किया और हमको बहुत जल्द आराम किया। हम इन तजुबों से कह सकते हैं कि वह बहुत चालाक और लायक चिकित्सक है - पूर किस की मज्जु बीमारिया आराम कर सक्ते हैं ॥

इलाहाबाद

ता० १५-माघ

पं० एच पेटरीज

फायरसेन ई० आई० आर०-

ता० १ नवम्बर १८८०

वैद्यराज पं० जगन्नाथ शर्मा ने हमें दो दिन में हैजा से आरोग्य किया—वह हैजा इस कदर बियगड़ गया था कि हमें जीने का कुछ भी आशा नहीं था—हमने उनको अपने काम में बहुत हाशियार और चलाक पाया ॥

-नारायणराय कर्क इलाहाबाद

१ फरवरी १८८१

पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य ने हमारे लड़कों को हैजे की बिलारी में चिकित्सा किया इसमें कुछ सन्देह नहीं कि पं० जी अपने काम में बहुत लायक हैं ॥

कन्हैयालाल

ड्रफ्टमैन घोड़े इलाहाबाद

ता० ८ फरवरी १८८१

इस पाँच महीने से सुजाक के रोग से पीड़ित थे—अनेक हकीम और डाक्टरों के चिकित्सा कराने के बाद हमने पं० जगन्नाथ जी वैद्य की दवा किया और बहुत-थोड़े अर्से में आरोग्य हुये ॥

जगन्नाथप्रसाद कर्क

बहादुरगञ्ज—इलाहाबाद

ता० ८ मार्च १८८५

हमको यह लिखने में थड़ी खुशी है कि हमें पं० जगन्नाथ शर्मा वैद्य ने पुराने सुजाक से दो हमें बिना किसी तकलीफ के आराम किया—सिवाय इसके हमने अपने भाई की भी चिकित्सा उनसे करवाया जो कि खाँसी और बुखार से पीड़ित थे उनको भी पं० जी ने एक सप्ताह में आराम किया । जो कुछ हमने देखा और जाना पं० जी को अपने काम में बहुत चालाक और परिश्रमी और वैद्यक में पूर्ण पाया ॥

हमें यकीन है कि कोई आदमी जो कि पं० जी से चिकित्सा करवायेगा कभी निराश न होगा विशेष कर गरीब रोगी जिन पर यह अधिक ध्यान देते और परिश्रम करते हैं ॥

जगन्नाथ प्रसाद तिवारी  
पि० हयलु० ही० एकनामिनसै  
आफिस इलाहाबाद

ता० १६ अपरैल १८८१ ।

हमारी स्त्री को इस कदर एक सख्त बिमारी हुई थी कि हमें उनका जीवन का कोई भी भरोसा नहीं था हमने उनको आराम करवाने के लिये बहुत रुपया खर्च किया और अनेक डाक्टरों से इलाज करवाया लेकिन सब निष्फल हुआ। इस नाजुक मौके में हमने पं० जगन्नाथ वैद्य के नाम सुनकर उनसे अपनी स्त्री का इलाज करवाया और वह बहुत थोड़े दिन में आराम हो गई। यह बहुत यत्नवान और मरीजों के ओर ध्यान देते हैं—और उगकी दवाओं का फायदा पिलातेही मालूम हो जाता है ॥

युगलकिशोर  
इलाहवादा

८ नवम्बर १८८१ ।

पं० जगन्नाथ शर्मा ने हमारे लड़के का इलाज किया जिसे आमाशय कि बिमारी बहुत दिनों से थी पं० जी बहुत ध्यान से बिमारी का इलाज करते हैं ॥

हीरालाल—आर—एन—एस

इलाहाबाद

बरैली से ता० ११, १९११

महाशय

मुझे ३ वर्ष से आंख की बिमारी थी यहां आप की दूकानमें जयना-  
मृत सलाह कई आदमियों ने लिहा सधों को आराम होगया परन्तु  
हम को अब तक पूरा फायदा नहीं हुआ और कोई दवा होता भेजा ।

गोविन्दराम बजाज

बरैली

फतहगढ़ से

महाशय

आप ने जो चन्दनादि चूर्ण प्रदर रोग के वास्ते भेजा था वस्ते  
आराम हुई ।

पं० शिवानन्द नदसों पटवारी स्कूल

फतहगढ़

घांसधरैली से ता० २३ जुलाई

श्रीयुक्त वैद्य शिरोमणि महाशय पण्डित जगन्नाथ जी शर्मा पाला-  
गन, निवेदन यह है कि आप के अर्क खूनमफा का २० घीतल में ने  
पिया जो मेरे शिर और चेहरे के बालों की जघे में फुंसियां निकलती  
और खुजलाती थीं सो अब निकलना बन्द होगया मैं आप को बहुत २  
धन्यवाद देता हूं मैं ने डाक्टर अंगरेज और हिन्दुस्तानी वा हकीम  
यूनानी वगैरह का इलाज किया परन्तु कुछ फायदा न हुआ तो आप  
की दवा से आराम हुआ इसलिये आप अधिक धन्यवाद के योग्य हैं  
परमात्मा आप को यश कीर्ति लाभयुक्त करें ॥

आप का कृपाभिलाषी

ठाकुर लाखन सिंह वर्मा रईस

गु० सुपौली घांसधरैली

जिला हजारीबाग से

महाशय

आप का सुजाक का दवा भेजा हुआ मिला सा बहुत धड़ियाँ या  
उस्से तीन आदमी को आराम होगया बल्कि बड़ी शीशी में दवा कुछ  
बच भी गया है अब रुपा कर एक आदमी के लिये सुजाक की दवा  
वेल्सपेयुल पारसल में बहुत जल्द भेज दीजिये ॥

श्री शम्भूराम गनपतराम

गोमीआसा जिला हजारीबाग

—:—

मित्रवर आप का दवा धिपगर्भ तैल बहुत फायदायन्द् है इसलिये  
फिर एक शीशी पावभर का बी० पी० पारसल द्वारा हमारे नाम जल्द  
आपसी हांक भेजिये देरी न कीजियेगा दवा ठीक होने के समय हम  
उम्नेद करते हैं कि बहुत दवाइयाँ आप की दूकान से हम मँगावेंगे ॥

घन्य है एपों न फायदा हो जब कि वेद की रीति से घना है ॥

आप का कृपाकांची

बाबू रामसिंह—रेवती बलिया

हरदोर्ष से

महाशय नमस्ते

दाद की दवा आप का अत्यन्त उत्तम है मुझको उससे लगाने से  
अतिलाभ हुआ । दृष्टत्प्रपानागंक्षार तैल की भी एक शीशी वेल्सपेयुल  
द्वारा भेज दीजिये ॥

ऋत्यूलाल मजनलाल दूधे

भावनहरदोर्ष

फरुक्काबाद से

महाशय

पश्चात् तस्कार के विषय यह है कि शिवानन्द मिश्र की मार्फत जो दवा दस्तों की हम अपने वास्ते आप के यहां से अमृतार्णव नामक चूर्ण मंगवाया यह तो रातबान होकर हमारे उक्त शत्रु रोग को भगादिया अब इस समय दस्तों के बारे में हमका शिकायत बाकी नहीं है हमने दस्तों में बहुत एकीम व घैटों की औषधी सेवन की मगर किसी की औषधी से कुछ भी फायदा न हुआ अब आपको अन्तःकरण सेधन्यवाद देते हैं आप मुखार की दवा वेल्सू पेरुल द्वारा निम्नलिखित पते से भेज दीजिए ॥

बद्रीपनाद चौबे राईश-निवासी ग्राम

साधोनगर-फरुक्काबाद



आरोग्यदर्पण ॥

विविध वैद्यक विषयक सम्बन्धी अपूर्व पुस्तक

चतुर्थखण्ड

जिस्में आयुर्वेद मत से ज्वरचिकित्सा और आध्यात्मिकशक्ति  
प्रकाशार्थे योगशास्त्र का सम्पूर्ण अङ्ग पण्डित जगन्नाथ  
शर्मा राजवेद्य सम्पादक प्रयाग समाचार ने सर्व  
साधारणके उपकारार्थे रचकर प्रकाश किया

जगद्विरुयात

आयुर्वेदोक्त औपघालय जानसेनगञ्ज

(प्रयाग)

“धार्मिकयन्त्रालय” में मुद्रितहुआ ॥

सिवाय ग्रन्थकर्ता के किसी को छापने अथवा भाषा  
अदल बदल करने का अधिकार नहीं है ॥

द्वितीय धार १०००

मूल्य फी पुस्तक १॥)

सन् १९०१ ई०

# सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
ज्वर क्या है,	१	सन्निपात ज्वर की चिकित्सा	४०
ज्वरोत्पत्ति,	१	संज्ञानाश की उपाय,	४१
ज्वर होने का समय,	४	सन्निपात पर अंजन;	४४
ज्वर पूर्व रूप,	४	मूलां उपाय,	४४
वातज्वर लक्षण,	५	तेरहो सन्निपात की चिकित्सा,	४७
पित्तज्वर लक्षण,	६	विषमज्वर लक्षण,	५३
कफज्वर लक्षण,	६	तृतीयक ज्वर का भेद,	५५
ज्वर में लंघन विचार,	७	चातुर्थिक ज्वर का भेद,	५५
लंघन कराने का कारण,	८	प्रलेपक ज्वर,	५७
सन्निपात में लंघन,	१०	समगत ज्वर लक्षण,	५७
लंघन निषेध,	११	जीर्णज्वर,	५८
लंघन से उपद्रव,	११	वात बलासक ज्वर,	५८
अच्छे लंघन का फल,	१२	आगतक ज्वर,	५९
जल पान विचार,	१२	ज्वर के दश उपद्रव,	६१
जल गरम करने की विधि,	१३	ज्वर के साध्य लक्षण,	६२
गरम पानी के गुण,	१४	ज्वर के असाध्य लक्षण,	६३
ज्वर में घर का विचार,	१६	मन्घर ज्वर के लक्षण,	६४
दूध खाने की विधि,	१७	विषमज्वर की चिकित्सा,	६५
दूध देने का प्रमाण,	१८	शीत पूर्य ज्वर पर फाड़ा,	
औषध खिलाने की विधि,	२०	अर्क, अर्क गाजर	६५-६६
अपक्व ज्वर लक्षण,	२१	महा ज्वरांकुश,	६७
दया देने का समय,	२२	कुईनाईन विधि,	६९
वातज्वर पर वशाथ,	२३	ज्वर में मूलिका धारण,	७०
पित्तज्वर पर वशाथ,	२३	चीथिया की उपाय,	७१
दाह शमन उपाय,	२५	तिलांजलि,	७२
कफज्वर की चिकित्सा,	२६	ज्वर नाशक धूप,	७३
सन्निपात ज्वर के लक्षण,	३१	ज्वर नाशक दीप,	७४
१३ सन्निपात नामादि,	३३	जीर्णज्वर की चिकित्सा,	७५
साध्याऽसाध्य निर्णय,	३७	कोष्ठबद्ध पियास उपाय,	७४-७५
कर्षणूत,	३९	ज्वरान्ते पथ्यं,	७५



## ज्वर ।

भाषा में इसे बुखार, अङ्ग्रेजी में फिवर (Fever) और यूनानी में तप कहते हैं। ज्वर वह रोग है जिसका अधिकार देश मात्र पर सर्वदा सर्व काल में बनाही रहता है, किसी २ वर्ष में सर्व देशों में अथवा एक दो देशों में ज्वर का इतना भ्रंश वेग बढ़ता है कि मनुष्य मात्र को जड़ी भूत कर देता है उस समय लोगों की यह दशा होती है कि कोई किसी को पानी तक देने लायक नहीं रहता। इसके रोकने के लिये आयुर्वेदविद् विद्वानों ने तथा यूरोपीय चिकित्सकों ने अनेक उपाय और यत्र किया परन्तु कोई अत्यन्त उपयोगी तथा लाभ दायक यत्र न निकला और न कोई ऐसी औषधी किसी से निकाली जो मनुष्य मात्र के ज्वर को एक मात्र दूर कर देय। यही सबब है कि जो मृत्येक खण्ड के चिकित्सकों ने ज्वर कोही सब से बड़ा और भयानक रोग समझ कर अपने २ ग्रन्थ और चिकित्सा कर पुस्तकों में ज्वर का विस्तार और विशेष वर्णन और मतीकार लिखा है इस लिये अधिकांश आहकों के अनुरोध से आज हम भी भूत पूर्व आर्य चिकित्सकों के मतानुकूल ज्वर रोग की प्रधानता और पूर्व रूप, नाम, आदि कारण और परीक्षित चिकित्सायें लिखते हैं आशा है कि देशहितैपी गण अवश्य हमारे इस प्रसंगित वर्णन पर ध्यान देंगे और निम्नलिखित लक्षणों से पूरा २ निदान एवं चिकित्सा करके महा कराल ज्वर रोग ग्रसित रोगियों के दुःख को दूर करेंगे ॥

### “ज्वरोत्पत्तिः”

पूर्व काल के महर्षियों ने ज्वर को सब रोगों का स्वामी और रुद्र कोप करके माना है और इसी को मृत्युराज और प्राण नाशक ठहराया है और महादेव जी के उक्त अर्द्ध नयन से इस की उत्पत्ति लिखी है कि जिस के स्पष्ट खोलने से प्रलय होती है—

“ज्वरो रोगपतिः साक्षान्मृत्युराजोऽज्ञानोऽन्तकः ।

क्रोधो दक्षा ध्वरं ध्वंसी रुद्रोर्द्ध नयनोद्भवः ॥”

जैसा कि सुश्रुत में लिखा है ॥

सन्निपात (सरसाम) या एक प्रकार के तृतीय लक्षण युक्त जिवे अङ्गरेजी में (एपोप्लेक्सिस) कहते हैं हो जाता है और उस रोगको न थामने से रोगी बहुत जल्द मर जाता है, लेकिन वैद्य लोग इस पर बहुत कम ध्यान देते हैं यहाँ तक कि आम ज्वर पर (कच्चा बुखार) में भी उष्ण क्वाथ या रस देके पित्त विगाड़ देते हैं, हां, कुछ २-३ हकीमों का ध्यान इधर रहता है लेकिन वे भी पित्त में ठण्ठक अधिक पहुंचा देते हैं । जैसे मूढ़ वैद्य लोग शीतसे डरा करते हैं, कहीं शीत न आ जाय, वैसाही अज्ञान हकीम लोग भी गरम से डरते हैं कि कहीं गरमी शिर पर न चढ़ जाय, इसलिये ज्वर की चिकित्सा बहुत विचार के साथ करना चाहिये ॥

**ज्वर संप्राप्ति हेतु (ज्वर होने का सध्व)**

**मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषाह्यामाशयाश्रयाः ।**

**वहिनैरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यू रसानुगाः ॥**

(मिथ्याहार) ऋतु की मकृतिके विरुद्ध भोजन, जून कजून भोजन, विना भूख में खाना, भूख लगने पर न खाना, कच्चे फलों को खाकर पानी पीना चासी भात माठा या तेलका बरा खाना अथवा तेल दूध, दूध या दही मूली एक साथ में खाना इत्यादि (मिथ्या विहार) बहुत धूप में अथवा अग्नि के सम्मुख रहना वाद अति काल तक पानी में भीजना, वर्षा में बहुत बौद्धार में रहना, रास्ते से बहुत थके हुये आना तत्क्षण जल पी लेना या स्नान कर डालना, कभी छाया कभी ओष में सोना, जुखाम की रक्षा न करना, मर्मांत काल में स्त्री प्रसङ्गादि, इन्हीं सब कारणों से आमाशय में स्थित जो वातादिक दोष विगड़ कर रस धातु में मिल के जठराग्नि (जिस्से खाना पचता है) को बाहर निकाल ज्वर रोग को उत्पन्न करता है ॥

**“ज्वर पूर्व रूपम्”**

**श्रमोरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयन प्लवः ।**

**इच्छाद्वेषौ मुहुश्चापि शीतवाता तपादिषु ॥**

**जृम्भांग मर्दांगुस्ता रोमहर्षो ऽरुचिस्तमः ।**

अप्रहर्षश्च शीतं च भवंत्युत्पत्स्यति ज्वरेः॥

सामान्यतो विशेषात्तु जृम्भत्यर्थं समीरणात् ।

पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनन्दनम् ॥

निम्नलिखित लक्षण यदि किसी व्यक्ति में पाये जाय तो जानना कि उसे ज्वर आनेवाला है जैसे बिना चले फिरे थकाई मालूम होना, किसी बात में मन न लगना (विवर्णत्व) शरीर का रङ्ग और का और होना, अक्सर ज्वर के पहले शरीर का रङ्ग कुछ बदल जाता है। मुख के स्वाद, नेत्र में आंसू भरि आना (जैसे अभी सो के उठा हो) शीत, हवा और घाम कभी किसी को अच्छा लगे कभी बुरा मालूम हो, जँभुआई शरीरमें दर्द देह भारी, रोम खड़े होना या जाड़ा मालूम देना, अरुचि, आंख में गरमी, मन उदास और ठण्ड का लगना यह सब लक्षण उपस्थित हो या दो चार लक्षण कम भी हो निस्सन्देह यह लक्षण ज्वर आने के पहले होता है यह सामान्य लक्षण है ॥

अब विशेष लक्षण सुनिये—अत्यन्त जँभुआई और शरीर में दर्द वा पेंठन हो तो जानना कि इस को वातज्वर होगा। नेत्र में दाह कुछ शिर दर्द पित्त ज्वर आनेवाले के पहिले और अन्न पर अनिच्छा कफ ज्वर आनेवाले के पहिले होता है ॥

ज्वर का सामान्य रूप केवल इतना ही है कि पसीना का न आना, शरीर बहुत गरम, सम्पूर्ण शरीर जकड़ सी जाय या दर्द करे वस ॥

### वातज्वर लक्षणम् ।

वेपथुर्विपमो वेगः कंठोष्ठ मुख शोषणम् । निद्रानाशः  
क्षवःस्तम्भो गात्राणां रौक्ष्यमेव च ॥ शिरो हृदात्ररुक् वक्र  
वैरस्यं वद्धविट्कता । शूलाध्माने जृम्भणं च भवत्यनिलजे  
ज्वरे ॥

वातज्वर में इतने लक्षण रहते हैं। शरीर में कम्प, ज्वर, कभी बहुत जादा तेज हो जाय कभी कुछ कम हो जाय, गला, ओठ और मुख सूखे, नांद और धाँक न आवे, शरीर सूखी शिर धाँकी और हाथ पर बगैरह में

दर्द या फाटन हो, मुख का जायका खराब, कोष्ठवद्ध (दस्त न हो हो भी तो सूखा और थोड़ा सा) पेट में कुछ हलकी पीड़ा और पेट फूला सा रहे एवं जमुड़ाई आना, इतने सब लक्षण अथवा कुछ कम लक्षण होने से वातज्वर जानना ॥

### पित्तज्वर लक्षणम् ।

वेगस्तीक्ष्णो ऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः ।  
कंठो ह्य मुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥ प्रलापो वक्त्र  
कटुता मूर्च्छावाहो मदस्तृपा । पीत विण्मूत्र नेत्र स्वक् पै-  
त्तिके भ्रम एव च ॥

बुखार बहुत तेज हो, दस्त पतला, नींद कम, गला, ओठ, मुख और नाक इनके गरम भाग निकलें और वे सुर्ख हो जायं, पसीना बहुत आवे या कम आवे परन्तु कुछ न कुछ आता ही रहे, मलाप (बढ़वड़ाना, आनतान बकना) मुख कटु, वेहोशी पेट में जलन या समस्त शरीर में दाह, नेत्र में जलन या नशाता मालूम हो, पिपावा बहुत, दिशा, पेशाब, आंख और शरीर कुछ पीले मालूम दे और घुमरी, यह लक्षण पित्तज्वर वाले के होते हैं ॥

### श्लेष्म (कफ) ज्वर लक्षणम् ।

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यंता । शुक्ल  
मूत्र पुरीपत्वक् स्तंभस्तृप्तिरथापि च ॥ गौरवं शीतमुत्केदो  
रोमहर्षोऽतिनिद्रता । प्रतिज्ञयायोऽरुचिः कासःकफजेऽक्ष्णो-  
श्चशुक्लता ॥

अब कफ ज्वर का लक्षण कहते हैं । बहुत मन्द ज्वर रहे, देह चिप-चिपाय, आलस्य, मुख मीठा, मल मूत्र का रंग सफेद, शरीर जकड़ी सी रहे, जैसे खूब खाये हुये का पेट भरा रहता है वैसे पेट भरा रहे शरीर भारी, जाड़ा मालूम होना, जी मचलाना, रोम खड़े होना, नींद अधिक आना, नाक बहना, अरुचि, खांसी और आंख सफेद हो तो जानना कि कफ ज्वर है ॥

द्वन्द्वज्वर के लक्षण का श्लोक न लिख कर खुलासा रीति पर दिखलाये देते हैं कि जित ज्वर में कुछ वात ज्वर के लक्षण और कुछ पित्तज्वर के लक्षण मिले तो वात पित्त ज्वर जानना ॥

वात कफ ज्वर में—वात ज्वर और कफ ज्वर के कुछ २ लक्षण और जोड़ों में दर्द एवं शिर का जकड़ना यह विशेष लक्षण मिलते हैं ॥

पित्त कफ ज्वर—जिस ज्वर में मुख लसलसा और कहुआ नेत्र में भ्रांपी सी लगी रहै, बेहोसी, खांसी, पियास, कभी दाह कभी जाड़ा लगे उसे पित्त कफ ज्वर जानना । अब उपरोक्त कहे हुये ज्वरों की चिकित्सा लिख कर बाद सन्निपातादि के लक्षण लिखेंगे ॥

### ज्वर रोग में लंघन विचार ।

ज्वर चिकित्सा का पहला अङ्ग यही है ॥

तिसमें प्रथम लोलिब राज का बचन लिखते हैं ।

अधुना शृणुतन्विलंघनं ज्वरितानां प्रथमं प्रशस्यते ।

हेतन्वंगि, अधुना इदानीं, त्वंसृणु, ज्वरितानां ज्वरयुक्तानां, प्रथमं लंघनं उपवासं, प्रशस्यते, सप्त दश द्वादश दिनानि, वात पित्त कफ क्रान्तानां, (वातिकः सप्त रात्रेण दशरात्रेण पैत्तिकः । श्लोष्मिको द्वादशाहेन ज्वरपाकमुपैतिह) इति वाक्यात्, आदौज्वरीतुलंघनं कुर्यात् ॥

हे सुहृमांगि ! इस समय तुम सुनो ज्वर वाले मनुष्य को प्रथमही (ज्वरारम्भ) में लंघन (उपवास) कराना उत्तम है क्योंकि वातज्वर सात दिन में पित्त ज्वर दश दिन और कफ ज्वर बारह दिन में पचता है, इस बचन से प्रथम ज्वरवाले को उपवास करानाही अच्छा है ॥

अन्यच्च—ज्वरादौ लंघनं कुर्याज्ज्वर मध्येतु पाचनं—

सं० आ० द०—हमारे वैद्यों में ज्वर में उपवास कराने की परिपाटी ऐसी विगड़ी है जिसका कुछ ठिकाना नहीं, बरसों से ज्वर क्यों न आता हो वैद्यराज पहुँचतही डाँटेंगे कि खाने को क्यों दिया उपवास कराओ, रोगी

भूख से चिन्ता रहती है, कहाँ खबरदार अभी खाने को न देना, यह वायु की भूख है, वस पाठकगण, इतनाही में जान सकते हैं; वैद्य लोग आयुर्वेदविद् विद्वानों के लेख पर भी ध्यान नहीं देते हैं ॥

### लंघन कराने का कारण ॥

वाग्भट्टश्चाह—आमाशयस्थो हृत्वाग्नि सामो मार्गान् पिषाय  
येत् । विदधाति ज्वरदोष स्तस्माच्छंघन माचरेत् ॥

अस्यान्वयः—आमयुक्तोदोषः आमाशये स्थित्वा मार्गान् आ-  
च्छाद्य अग्निहृत्वा ज्वरविदधाति तस्मात् लंघनं आचरेत् ॥

चक्रदत्तः—तरुणतुज्वरं पूर्वं लंघने न क्षयं नयेत्, अन्यच्च—  
ज्वरितं पड़हेतीति लंघनं प्रति भोजितं ॥

लंघनार्थमुक्त सुश्रुतेन—शरीर लाघवकरं यद्द्रव्यं कर्मवा  
पुनः, तं लंघनं इति ज्ञेयं (कर्मोपवासः लघ्वाहारार्थे )

तथाच घन्वतरिः—ज्वराभिभूतः पड़हे व्यतीति विपक्व दोषः  
कृत लंघनादि । योभेपजं खादति वैद्यवर्ग्यो निः संशयं  
हंत्यचिरात्स रोगान् ॥ आदिशब्दात्परिपाक वारिपान  
निर्वात सदन वासादि ॥

भावार्थः—महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं कि, दोष ( वातादि ) आम में स्थित  
हो के जठराग्नि को, दांप और स्रोतों के मार्गों को, रोकता हुआ ज्वर को  
उत्पन्न करता है—इस वास्ते लंघन कराना उचित है । चक्रदत्त—कहते हैं कि  
तरुण ज्वर में प्रथमही उपवास कराने से दोष पंच जाते हैं और छ दिन ज्वर  
गत होने पर लंघन युक्त रोगी को पथ्य देना चाहिये । लंघन के विषय में  
श्री महर्षि सुश्रुत जी कहते हैं, कि जिस औषध से अथवा जिस कर्म से दोष  
पंचकर शरीर हलकी हो उसको भी लंघन जानना, क्योंकि जो फायदा लं-  
घन में है वही हलके भोजन में है—

यथा—ये गुणाः लंघने प्रोक्ता ते गुणा लघु भोजने—

धन्वतरि जी की राय है की ज्वर आये हुये छ रोज हो जाय और लंघन कराने से दोष पच गये हों उस समय औषध खिलाने से निस्तन्देह शीघ्रही ज्वर दमन होता है ॥

अन्यच्च—सर्वज्वरेपु सप्ताहं मात्रावत् भोजनं हितम् ।

अन्नकालेह्यभुंजानः क्षियते म्रियतेथवा ॥

संपूर्ण ज्वरों में सात दिन तक बहुत हलका भोजन देना क्योंकि भूख लगने पर भोजन न देने से रोगी कम जोर हो या मर जाय, इत्यादि अनेक ममाण मिलते हैं ग्रन्थ बढ़ जाने के भय से नहीं लिखा इन सब वचनों से ठीक साबित होता है कि बिना आद्योपांत विचारे रोगी को अधाधुन्य लंघन न करावै, भूख लगने पर हलका भोजन अवश्य देवै ॥

अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लंघना दिना ।

जो ज्वर रोगी, स्नेह पान और वमन विरेचन कराने लायक नहीं है उसको लंघनादि कराना, इस्ते स्पष्ट होता है कि यदि रोगी बलवान हो तो दोषाधिक्य देख के वमन जुलाव से मल निकाल कर ज्वर आराम करना चाहिये ऐसी अवस्था में उपवास कराना निष्फल है यदि उक्त कर्म लायक न हो तो दो चार दिन उपवास करा के दोष पचाय देना उचित है—

अन्यच्च—आनद्ध स्तिमितैर्दोषैर्यावन्तः कालमातुरः ।

कुर्यादनशनं तावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥

जब तक यात पुरीष ( हवा का छूटना दस्त का होना ) बन्द रहै और दोष बढे हों तब तक उपवास करावै याद उसके मिश्रित उपाय करना उचित है ॥

अन्यच्च—ज्वरस्य प्रथमोत्थाने लंघनं च दिनत्रयं ।

न देयं कथितंवारि न च भैषज्य द्वापयेत् ॥

ज्वर के आराम्भ में पहले तीन दिन लंघन करावै, न हाथ का जल

पीने को दे और न किसी किस्म की औषध खिलावे । जैसे जल के अधिक उद्वेग में मँढ़ बांधना उस की शक्ति को नहीं रोक सकता और क्रोध की तरुणावस्था में उपदेश और शान्ति कारक वचन क्रोध को अधिक भड़काता है ऐसे ही ज्वर की अति तरुणावस्था में औषध क्रिया उस के वेग को कई गुना बढ़ती है ॥

सं० आ० द० ज्वररोग में उपवास कराने का नियम सिर्फ वैद्यक शास्त्र में है यूनानी और डाक्टरी में इस का कुछ नियम नहीं है और वे लोग इस पर कुछ ध्यान भी नहीं देते हैं कौसाह्र ज्वर तेज हो रोगी के मांगने से पथ्य दे देते हैं इसी से वे लोग ज्वर रोग बहुत कम आराम कर सकते हैं ज्वर के आरम्भ में यदि ज्वर तेज बना हो तो दो-तीन दिन तक रोगी के मांगने से भी खाना न देना चाहिये लेकिन उस के वल को देख के, जब देखे की ज्वर धीमा हो गया और दोष भी कुछ पच गये हैं एवं रोगी भी खाने को जिद्द कर रहा है तो शाम को चाबूदाना या मूंग का जूस देवें । यह नियम सब से उत्तम है कि जब तक रोगी को खूब तेज भूख न लगे खाने को न दें । क्योंकि " नहिदोपक्षये कश्चित् सहते लंघनादिकम् " दोष के पच जाने पर उपवास आदि रोगी से नहीं सहा जाता शाम को जूस क्यों देय इस का कारण आगे दिखलावेंगे ॥

### सन्निपात में लंघन विचार ॥

त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा दशरात्रमथापिवा ।

लंघनं सन्निपातेषु कुट्यादारोग्य दर्शनात् ॥

तीन दिन, पांच दिन अथवा दश दिन सन्निपात में उपवास करावें जब तक आरोग्यता न दीख पड़े । कोई २ " आरोग्य दर्शनात् " का यह अर्थ करते हैं कि जब तक रोगी आराम न हो उपवास कराता जावे, यद्यपि पक्षम्यंत शब्द से ऐसा अर्थ हो सकता है, परन्तु ग्रन्थ कर्ता का अभिप्राय यह नहीं है, यदि यह अभिप्राय होती तो " त्रिरात्रं पञ्चरात्रं " वा ऐसा न लिखते इसका अभिप्राय यह है कि यदि दश दिन के भीतर ही कुछ फुरसत देख पड़े तो, पथ्य दे देय, क्योंकि उपवास कराने से, रोगी, कमजोर हो



बहुत उपवास कराने से बल का नाश ( कमजोरी ) पिपासा दिल दिमाग का कमजोरी, टकटका, अधिक निद्रा ( भ्रांप ) घुमरी, थोकाई और दमा आदि उपद्रव अति लंघन कराने से होता है। इस लिये बिना विचारे अधाधुन्ध लंघन न कराना चाहिये ॥

### सम्यक् लंघन का फल ।

ज्वरघ्नदीपनं कांक्षा रुचिलाघव कारकं । सृष्टिमास्तु  
विणमूत्रं क्षुत्पिपासाऽसहं लघुम् ॥ प्रसन्नात्मेन्द्रियं क्षामं  
नरं विद्यात्सुलंघितम् ।

लंघन कराने से दोष पचता है और दोष पचने से जब सब लाभ देख पड़ें तब जानना कि लंघन इस रोगी का अच्छा वन पड़ा है—जैसे अथो वायु खुले, डकार साफ आवे तथा दिशा और पेशाब खुलासा हो, भुधा लगने पर बिना खाये और पिपास लगने पर बिना पानी पिये रहा न जाय और शरीर हलकी मालूम हो, मन एवं इन्द्रियां सब प्रसन्न हों और शरीर डीली आसक्त हो जाय तो जानना कि इसका लंघन ठीक हो चुका है ॥

### ज्वर में जल पान विचार ।

चाहे कोई विमारी हो खास कर ज्वर और हैजा आदि विमारियों में बहुत जरूर है कि रोगी को साफ पानी ( परिष्कृत जल ) पीने को देय; क्योंकि अधिकतर यह रोग जल विकार से होता है, और यही सबब है जो वैद्यक शास्त्र में गरम पानी पिलाने को अधिक अनुरोध किया है, पानी गरम करने का कोई विशेष सबब नहीं है, पानी गरम करने से पानी के कीड़े मर कर पानी से अलग हो जाते हैं, और छान लेने से वह पानी कृमि रहित साफ और अग्नि वर्द्धक होता है। वैद्यक शास्त्र में जहां तक हमने देखा है नव ज्वर में शीतल जल का पान निषेधही पाया है। यथा ॥

दिवास्वप्नं व्यवयश्च व्यायामं शिशिरं जलम् ।

क्रोधप्रवात भोज्यानि वर्जयेत्तरुण ज्वरी ॥

दिनमें सोना, स्त्री प्रसङ्ग, मेहनत, शीतल जलपान, क्रोध, अधिक हवा का सेवन और भोजन नया ज्वर वाला रोगी त्याग करे ॥

अन्यञ्च—पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे ।  
आघ्माने स्तिमतेकोष्ठे सद्यशुद्धो नवज्वरे ॥ अरुचि ग्र-  
हणगुल्मः श्वासकासेषु विद्रधौ । हिक्कायां स्नेहपानं च  
शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥

पसुरी की दर्द, जुखाम, वात रोग ( सर्वाङ्ग दर्द आदि ) गलग्रह, पेट फूला हो, अग्निमन्द हो, शीघ्र ही जुलाब लिया हो, नये बुखार में अरुचि, ( भोजन पर अरुचि ) ग्रहणी ( दस्त से कच्चा अन्न गिरता हो ) वायगोला आदि, दमा, खांसी, विद्रधि (गोल या लम्बी एक तरह के सूजन शरीर में पड़ जाते हैं और वही सूजन पक भी जाता है उसे विद्रधि कहते हैं) हुचकी रोग और स्नेह पान में शीतल जल पीने को न देना चाहिये ॥

### जल गरम करने की विधि ।

दिन में पीने के लिये सूर्योदय में पानी गरम कर और रात में पीने के लिये सूर्यास्तमें पानी गरम करे । वर्षा और वसन्त में कूप (कुआं) जल, हेमन्त और शिशिर ऋतु में कूप अथवा साफ तालाब का पानी ॥

अभाव में सब ऋतुओं में कूप का जल लेवे क्योंकि कुंयें का जल पान किसी ऋतु में निषेध नहीं है इसलिये न मिलने पर कूपही का जल लेना । रोगी के पीने के माफिक जल लेकर चांदी अथवा मृत्तिकापात्र में गरम करे एक दो उफान आ जाय अथवा जितना गरम करना है गरम हो जाय तो पात्र को अग्नि पर से उतार ले और कुछ देर तक उठी पात्र में जल रहने दे जब जल स्थिर हो जाय और देखे कि मल नीचे जम गया होगा आइसो से दूसरे मिट्टी के बतन में चौपरता रख गफ कपड़ा पात्र के मुखपर देके तीन हिस्सा पानी छान ले और एक हिस्सा जो नीचे का मैला पानी है फेंक दे,

नहीं देते हैं, बरते हैं कि शीत करेगा यह उन की महा मूर्खता है क्योंकि "तृपितो मोहमायाति मोहान् माणं विमुञ्चति" पियाये को पानी न मिलने से विहोयी आती है और मोह से माण छूटने का मय है इस लिये पियाय लगने पर पानी अवश्य पीने को देय परन्तु थोड़ा २ जल पिलाना शास्त्रोक्त विधि है ॥

### ज्वर में गृहादि विचार ।

नवज्वरी भवद्यत्ना गुरुष्णा वसनावृतः । सामान्यतो  
ज्वरापूर्वं निर्वाते निलये वसेत् ॥

नये ज्वरवाले को याद करके कोई भारी वस्त्र से ढाँप देना । यद्यपि ज्वरवाला भारी वस्त्र के थोढ़ने से घबड़ावै गा लेकिन वस्त्र के थोढ़ने से कुछ भी पसीना निकल आने से ज्वर बढ़ने का भय जाता रहता है, अगर देखें कि भारी वस्त्र के उढ़ाने से रोगी बहुत घबड़ाता है और स्वेद बिलकुल नहीं निकलता तो भारी वस्त्र न उढ़ा के बिकर एक दोहर उढ़ाय दे और पित्त ज्वर वाले को और जिस के शिर में अधिक दर्द हो बहुत गरम और भारी कपड़ा न उढ़ावै । नव ज्वरी कहने से यह मतलब है कि पुराने ज्वर में रोगी को कभी कपड़े में ढाँक न रखना चाहिये ॥

यह सामान्य बात है कि बुखार वाले को हवादार मकान में न रखना, इससे यह मत समझना कि रोगी को एक अन्य कोठरी में बन्द कर देओ कि अच्छा भी आदमी घबड़ाकर मर जावै । रोगी को एक ताफ मकान में जिस्में बड़ा केवाड़ और शुद्ध वायु आने जाने के लिये खिड़कियां लगी हों, हां, यदि उन खिड़कियोंसे बाहरी अधिक हवा आती हो तो परदा डाल देवै (मवातसेवा) प्रथम ही कह दिया गया है कि रोगी को तेज हवासे बचाना चाहिये ॥

इस बात को खूब याद रखना चाहिये, अगर रोगी को बहुत गर्मी लगे और वह पंखा हाँकने को कहै और जिसके वारम्बार पसीना आता हो और उस पसीना के आने से ज्वर को कुछ भी फायदा न पहुँच कर उलटा रोगी सुस्त और कमजोर होता जावै तो, उसके गरमी, पसीना,

विहोशी शांति के लिये रोगी के मुखपर बराबर पंखा हांकता रहै कभी बन्द न करै । किस पंखेकी हवा देवै ममाणके लिये सद्ग्रन्थोंका इलोक लिखतेहै ॥

व्यजनस्थानिलस्तृष्णा स्वेदमूर्च्छा श्रमापहः । (व्यजनं खजूरीपत्रभवंश्रेष्ठं) तालवृंतभवोवातस्त्रिदोष शमनोमतः ॥  
वंश व्यजनजः सोष्णो रक्तपित्त प्रकोपनः ॥ चामरो वस्त्र संभूतो मायूरो वेत्रजस्तथा । एतेदोषहरावातास्त्रिगंधा हृद्यः सुपूजिताः ॥

पंखे की हवा पियास, पसीना, विहोशी और थकाई को दूर करता है । पंखा खजूर पत्र का अच्छा होता है, ताड़ के पंखे की हवा तीनों दोष को नाश करता है, बांस के पंखे की हवा गरम, रक्त पित्त को बिगाड़नेवाला है, चामर, कपड़े के पंखे, मयूरपंख और बेंत के पंखे की हवा, दोषों को हरने वाला, चिकना, दिल को ताकत देनेवाला और ऋषियों करके मशहनीय है ॥

### ज्वर रोग में दूध खाने की विधि ।

वैद्यक में तीन अङ्ग हैं निदान, निघंट, चिकित्सा—निदान पूर्व कारण को कहते हैं कि रोग किस सबब से होता है और उसका पूर्व रूप और साध्यासाध्य का विचार निदान से जाना जाता है और निघंट में औषधियोंकी उत्पत्ति लक्षण गुण विकार आदि वर्णन रहता है, निदान और निघंट यह दोनों मकरुण चिकित्सा के सहायकहैं—“चिकित्सा” यह शब्द “कित” धातु से बना है जिसका अर्थ है रोगों को दूर करना हटाना, भगाना, चिकित्सा यह बड़ा कठिन काम है क्योंकि जैसे किले में अथवा राज्य में दुशमन देखल कर लेता है तो उसका निकालना बहुत कठिन हो जाताहै उस अवस्था में राज नीति विशारद पुरुष—ताम, दाम दण्ड भेद, चार उपाय से शत्रु को निकालते हैं यह चारों उपाय किसे राजों के पास होते हैं किं जिसका राज्य समांग से पूर्ण रहता है जिसका विस्तार वर्णन नीति शास्त्र में लिखाहै ऐसा ही पूरी चिकित्सा यह वैद्य कर सकता है जो आयुर्वेद के समस्त अङ्ग और शाखा मशाखा के विज्ञान में दक्ष होता है और न केवल दक्षताही काम

देता है किन्तु सब प्रकार की सामग्री और सामान भी होना चाहिये जैसे नीति विशारद पुरुष किले से दुश्मन को निकालना चाहता है और निकालने की सब विधि भी जानता है पर उसके पास—साम, दाम, भेद, दण्ड चारों सामान नहीं तो कहिये किस तरह निकाल सकेगा अथवा सब सामान है पर उसको काम में लाने की क्रिया नहीं जानता तो भी वह शत्रु के हाथों में अशमर्थ रहता है—वस इसी दृष्टान्त के मूल पर सज्जनों को सोचना चाहिये कि चिकित्सा कर्म बड़ा सूक्ष्म और पूर्ण विद्या और शुद्ध बुद्धि के द्वारा ठीक किया जा सकता है जैसे शत्रु संकट में नीति विशारद लोग शान्ति के द्वारा अथवा कुद्व दे लेकर अथवा शत्रुओं के आपस में भेद उपना के शत्रु पक्ष को निर्बल करते हैं पर जब यह तीनों यत्र नहीं चलते तो अस्त्र शस्त्र के द्वारा लड़ते हैं कि जिसके लिये बहुत सामर्थ्य और साहस चाहिये यदि राजकीय युद्ध से रोग और चिकित्सा की लड़ाई का मिलान किया जाय तो प्रत्येक बात मिल सकती है परन्तु लेख बढ़ने के कारण वह नहीं लिखा जा सकता है पर ब्रह्मिमानों के निकट इतनाही उपदेश बहुत है कि चिकित्सा कर्म बहुत गंभीर और बुद्धि विद्या साध्य है इसमें कुछ सन्देह नहीं है कि चिकित्सा शास्त्र के न जानने ही से भारत की बड़ी हानि है, क्योंकि आरोग्यता ही जीवन का एक मात्र फल है और विधिवत आयुर्वेद के जाने बिना आरोग्यता की रक्षा नहीं हो सकती है । हमारे इस देश में वैद्य लोग बुखार में दूध खाने को नहीं देते चाहें ज्वर नया हो या पुराना, और डाक्टर लोग नये ज्वर में भी दूध खाने को बता देते हैं अब हम फिन की धातों पर ध्यान दें; किसकी सम्मति से ज्वर में दूध खिलायें अब हम को वास्तविक धर्म है कि कुछ वैद्यक शास्त्र देखें, खुने अपनी स्वास्थ्य रक्षा खुद करें ॥

### दूध देने का प्रमाण ।

कृशोऽल्पदोषो वीनश्च नरो जीर्णज्वरार्दितः । विंधा  
सुष्ठु दोषश्च रूक्षः पित्तानिलज्वरी ॥ पिपासार्तः सदाही वा

पयसा स सुखीभवेत् । तदेव तु पयः पीतं तरुणी हन्ति मानवम् ॥

इतने लोगों को दूध अमृत के समान गुण करता है । अति दुर्बल, अल्प दोष युक्त, दीन अर्थात् घबड़ाया हुआ या डरा हुआ, और जीर्ण ज्वर से दुर्बल ( पुराना ज्वर ) जित रोगी को दस्त न होया हो रूखा और पित्त वात ज्वर वाला, टूपा एवं दाह रोग वाले को दूध फायदा करता है और वही दूध नये ज्वर में पिया भया रोगी को मार डालता है ॥

अन्यच्च—जीर्णज्वरे कफेक्षीणे क्षरिंस्यादमृतोपमम् । तदेव तरुणे पीतं विषवत् हन्ति मानवम् ॥ धारोष्णं वा पया शीतं पीतं सद्यो ज्वरं जयेत् ।

पुराने बुखार वाले को और जिसका कफ सूख गया हो उसे दूध अमृत के समान गुण करता है और नये बुखार में पिया भया, दूध विष के समान रोगी को मार डालता है । धारोष्ण अर्थात् सद्यही का दुहा हुआ गरम दूध जो पृथ्वी पर न रक्खा गया हो अथवा शीतल दूध पीने से शीघ्र ही वह दूध ज्वर को नाश करता है । इस्ते स्पष्ट हुआ कि नवीन ज्वर में पांच सात दिन दूध न देना चाहिये बाद दूध पिलाना गुण दायक है इस में महर्षि सुश्रुत का भी वचन ममाण है ॥

### सूत्र स्थान अध्याय ४५

वातपित्त शोणित मानस विकारेष्वविरुद्धम् जाणज्वर कासस्वास शोषक्षय गुल्मोन्मादोदर मूर्च्छा भ्रम मद दाह पिपासा तृद्धस्ति पाण्डुरोग ग्रहणी दोषार्शः शूलोदावर्तान्ति-सार प्रवाहिका योनिरोग गर्भास्त्राव रक्त पित्त श्रमकृम हरं ।

वात पित्त रक्त और मन के विकार में दूध पिलाना मना नहीं है, तथा जीर्णज्वर जो चिरकाल से ज्वर न छूटा हो दमा खाँसी (शोष) शरीर का प्रति दिन सूखने जाना ( क्षय ) तपेदिक, गोला, उन्माद, बिहासी, घुमरी,

नेत्र में नसा सा बना रहे, शरीर में जलन होना पियाण हृदय का दर्द नाभि के नीचे दर्द होना, पांडु, ग्रहणी, वावासीर, पेट का दर्द, उदावर्त, अर्त्ताणार, प्रवाहिका, योनिरोग गर्भ का न ठहरना, रक्त, पित्त, यकाई (रूम) बिना परिश्रम किये शरीर का थकित हो जाना इत्यादि रोगों को दूध नाश करता है ॥

### ज्वर में औषध खिलाने का नियम ।

ज्वर में औषध देने का नियम लोग बिलकुल नहीं जानते ज्वर पका हो या न पका हो शीघ्रही दवा लिखा देते हैं इसी से ज्वर न छुट के दूना हो जाता है क्योंकि ॥

आमज्वरस्य निह्वानि न दद्यात्तत्र भेषजम् । भेषजं ह्याम-  
दोपस्यभूयो वर्द्धयतिज्वरं ॥ शोधनं शमनीयंतु करोतिविप-  
ज्वरम् ।

कच्चे ज्वर में औषध न देय क्योंकि आम (कच्चा) ज्वर में औषध देने से और भी ज्वर बढ़ता है, और कच्चे ज्वर में शोधन अथवा शमनीय औषध दे तो मानो ज्वर को विषम करना है इस लिये कच्चे बुखार में कभी धोखे से भी औषध न देय ॥

मृदोज्वरे लघोवेहे प्रललेपु मलेपुच । पक्वं दोषं विजा-  
नीयाज्ज्वरे देयं तदौषधम् ॥

जब देखे कि ज्वर कुछ धीमा हुआ है और शरीर हलकी हुई है तथा वातादिक दोष यथा स्थित हुये हैं तब जानना की अब दोष पचा है उस अवस्था में दवा देने से ज्वर का नाश होता है । लेकिन इस विषय को हकीम साहब और डाक्टर धावू बिलकुल नहीं जानते हैं, जाने कहां से, इस बात को तो हम कई स्थलों में लिखला चुके है कि वैद्यक विद्या देश काल पर निर्भर है, तो बिलायत और अर्ब देश की वैद्यक विद्या के बल से, इस देशवाले की चिकित्सा करना बिना इस देश की परीक्षा किये लाभ दायक हो सक्ता है ? कदापि नहीं, इस लिये डाक्टर हकीमों को भी वैद्यक शास्त्र पढ़ना चाहि ॥

अपक्व ज्वर लक्षण ।

सुश्रुत उत्तर तन्त्रम् अध्याय ३६

हृदयोद्वेष्टनं तंद्रा लालाश्रुतिररोचकः । दोषाप्रवृ-  
त्तिरालस्थं विबंधो बहुमूत्रता ॥ गुरूदरत्वमस्वेदो न पक्तिः  
शकृतोऽरतिः । स्वापः स्तंभो गुरुत्वं च गात्राणां बन्धि-  
मार्द्रवम् ॥ मुखस्याशुद्धिरग्लानिः प्रसंगी बलवान्ज्वरः ।  
लिंगैरेभिर्विजानीया ज्वरमामं विचक्षणः ॥

यद्यपि दोष पचने का यह पूरा साबूत है कि वात ज्वरादि में वात ज्वरादि के लक्षण कम न हुये हों तथापि अधिक चेत कराने के लिये फिर दिखलाया जाता है कि जब तक निम्नलिखित लक्षण ज्वर रोगी में पाया जावे तो जानना कि दोष अभी नहीं पचा उस अवस्था में औषध कदापि न देवे । जैसे-जिस ज्वर में छाती जकड़ी सी मालूम हो, नेत्रोंपर भ्रूपत्ती, मुख से लार गिरना या पंच्छा छूटना, अन्न पर अरुचि, बातादि दोषों का स्वाभाविक काम में अमृति हो, सुस्ती दस्त का न होना और मूत्र जादा होना, पेट भरसा मालूम हो तथा पसीना न आवे, कल न पड़े, नींद न लगे, शरीर जकड़ी हो या दर्द हो, अग्निमन्द, मुख का स्वाद खराब और बुखार खूब तेज हो तो जानना कि दोष अभी नहीं पचा । अगर कोई यह कहे कि बहुत लोग ऐसे कोमल मिजाज के होते हैं कि अन्न मर्दादि ज्वर के लक्षण से घबड़ाय जाते हैं, हाथ २ मचाने लगते हैं, वस उसी अवस्था में वैद्य लोग घबड़ाय के दवा देते हैं, तो उस समय उपद्रव शांत्यर्थ कोई औषध देय या नहीं ? (उ०) रोगी को अचेतन्य देख वैद्य का घबड़ाना शास्त्र सम्मति नहीं है अन्ततोगत्वा जब किसी मवल उपद्रव से रोगी को अत्यन्तही क्लेशित देखे तो ऊपरी प्रयोग से सिर्फ उस उपद्रव को शांत करे, दोष पचने की औषध न दे, यदि कहे कि बिना दोष पचाये उपद्रव कैसे शांत होंगे क्योंकि उपद्रव दोष के अङ्ग हैं (उ०) ठीक है विलकुल शांति नहीं हो सके है कुछ बेग क्रम हो जायगे और ज्वर में बिघ्न भी न होगा, जैसे अन्न दर्द में अन्न मर्दन क-



राना (वात नाशाय मर्दन) उस्ते दर्द निशेष न हो के क्लेश कम हो जायगा और इस्ते ज्वर में कुछ बाधा नहीं हो सक्ता, जैसे शिर के दर्द में दर्द नाशक लेप माथे में लगाना यद्यपि वह लेप बिना दोष पचे शिर दर्द समूल नष्ट नहीं कर सक्ता है तथापि हानि भी नहीं पहुँचाता इस लिये ऊपरी प्रयोग करना कोई हर्ज नहीं है परन्तु बिना दोष पचे दोष पाचनार्थ औषध कभी धोखे से भी न देवे। ज्वर रोग विशुद्धिका आदि रोगके समान भयंकर नहीं है यदि विचार सहित चिकित्सा की जावे तो ज्वर रोग से एक भी रोगी न मरे केवल भूल होने से ज्वर रोग में रोगी मर जाते हैं ॥

### औषध दान कालः ।

मृदौ ज्वरे लघो देहे प्रचलेषु मलेषु च । पक्वदोषं विजानिया  
ज्वरे देयं तदौषधम् ॥ दोषप्रकृति वैकृत्या देकेषां पक्व  
लक्षणम् । सप्तरात्रात्परं केचिन्मन्यन्ते देयं मौषधम् ॥  
दशरात्रात्परं केचिद्दातव्यं मिति निश्चिता ॥

ज्वर रोग में जो औषध देने का नियम औषधियों ने कहा है उसे दिखलाते हैं। जब सुखार धीमा हो और शरीर हलकी हो और देखे की वातादिक दोष यथा स्थित हो गये हैं उस अवस्था में दोष पचा जान कर औषध देवे। किसी २ विद्वान की राय है कि वातादि दोष जैसे ज्वर में बेगमान रहते हैं यदि उसमें फर्क पर जाय या उलटे हो जाय तब भी जानना कि दोष पच गये हैं औषध देना उचित है और भी किसी आचार्य्य का मत है कि सात दिन पीछे और किसी के मत से दश दिन पीछे ज्वर रोगमें औषध देने का काल है। परन्तु सिद्धान्त मत यही है कि ज्वर के आदि में लघन से दोष अवश्य ही पचैगा वर कुछ भी दोष पचा देखे क्वाथादि औषध देवे इसमें हमारी पूरी सम्मति है कि ज्वर रोग में बडी ज्वर्णादि न देके केवल क्वाथ पिलाना अत्यन्त लाभदायक होता है। परीक्षा द्वारा यहाँ तक देखा गया है कि यदि ज्वर रोगवाले को क्वाथादि कोई औषध न देके लघनादि ठीक उपचार सहित रखनेही से ज्वर रोग छुट जाता है, उपचार बिगड़ जाने से अमृत समान भी औषध पिलाने से ज्वर नहीं छुटता बल्कि बढ़ जाता है ॥

(अभया) बड़ा हड़ आधा भाग (जल) सुगन्धवाला १ भाग सब दवाइयों को ढाई तोला ले पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय क्वाथ पिलाने से विहोसी (शोष) गल-तालु जीम का सूखना (निदाघ) ग्रीष्म कलोष्मणा जनिता ज्वरोनिदाघः (वृद्ध) बारम्बार पियास का लगना (मलपर्न) अनर्थक वात बकना और बुद्धि भ्रांति इत्यादि उपद्रव युक्त पित्तज्वर शांति होता है उसी तरह (दुस्पर्शा) यवाका (ममदा) मियंगु-मियंगु मालकगुनी को भी कहते हैं, यहाँ पर मियंगु नामक फूल लेना (किरात) चिरायता, कुटकी (सिंहास्य) आरूखा (रेणुः) पित्तपापड़ा इन सब औषधों का काढ़ा में (शर्कयान्वितः पित्तयुक्तः) एक तोला मिथ्री या चिनी डाल के दोनों समय पिलाने से, पियास (दाहः) बन्दिस्पर्शवद्दुःखः—जैसा अग्नि से जलने से दुख होता है वैसाही जलन शरीर में होने को दाह कहते हैं इत्यादि उपद्रव सहित रक्त पित्तज्वर आराम होता है। यह हम मथही कह चुके हैं कि पित्तज्वर में दाह अधिक होता है पित्तज्वर अथवा कोई ज्वर दाह युक्त हो तो निम्नलिखित क्वाथ को पियावें ॥

जलजल जल वाहरेणु विश्वोपध शिशिरैः शिशिरं जलं  
शृतं स्यात् । सपदि सुखकरं सदा सदाहज्वर तृपियोज्य-  
मिदं नवज्वरेपि ॥

श्रीमता चरकेणाप्युक्तम्—मुस्त पर्पट कोशीर चन्दनो-  
दीच्य नागरैः शृतं शीत जलं दद्यात्पिपासा ज्वरशांतये ॥

(जल) खस (जल) सुगन्धवाला (जलवाही) मोथा (रेणु) पित्तपापड़ा (विश्वोपध) शोठ (शिशिर) लालचन्दन उक्त सब औषधों को समान भाग ले अधिकचरा कर ढाई तोला ले एक पाव जल में पकावें जब आधा रहै मल छान कर खूब शीतल कर अथवा उस काढ़े के पात्र को बर्फ पर रख देय १ तोला मिथ्री मिला के पिलावें एक ही दो रोज के बाद देखे कि दाह शांत नहीं होवा तो काढ़ा न पका के बर्फ रात को भिजा के ओठ में रख देय और प्रातःकाल मल छान कर १ तोला मिथ्री मिला के पिला देवें इसी प्रकार सवेरे भिजा के किसी शीतल स्थान में रख देय और राम को मल छान के

मिश्री मिला के पिलाने से अति पिपासा सहित भी-पित्त ज्वरे शांत होता है इसी पर चरक महाराज भी कहते हैं । नागरमोथा, पित्तपापड़ा, खस, लाल चन्दन, सुगन्धवाला और शोठ इनका काढ़ा बहुत शीतल करके पिलाने से पिपासा सहित पित्त ज्वर शांत होता है ॥

**दाह ज्वरे दाहशमनोपायाः ।**

**सुश्रुत उत्तर तन्त्रम् ॥**

दाहाभिभूते तु विधि कुर्याद्दाह विनाशनम् । मधु-  
फाणित युक्तेन निम्बपात्राम्भसापि वा ॥ दाहज्वरार्त्तं माति-  
मान् वामयेत् क्षिप्रमेव च । शतधौत घृताभ्यक्तं दिग्ध्याद्वयं च  
शक्तुभिः ॥ कोलामलक संयुक्तैः शुक धान्याम्ल संयुक्तैः ।  
अम्लपिष्टै सूशीतैश्च फेणिला पल्लवैस्तथा ॥ अम्लपिष्टैस्तु  
शीतैर्वा पलाशतरुजैर्दिहेत् । बदरीपल्लवोत्थेन फेनेनारिष्ट-  
कस्य च ॥ लिप्तेऽङ्गे दाहतृण् मूर्च्छासर्वथैव प्रशाम्यति ।

नया ज्वर हो अथवा प्राचीन हो जिस ज्वर में दाह अधिक हो उस दाह की चिकित्सा अवश्य करनी चाहिये । अगर रोगी कुछ भी बलवान् हों तो दो तोला निम्बपत्र को महीन घोट पाव भर जल में छान उसमें छः मासा शहद और दो तोला मंगरा सक्कर मिला के रोगी को पिला के तुरंत वमन कराना । या शतवार का धोया भया घृत को शरीर में मर्दन कराना । या धान जो गेहूँ तीनों को पाव भर ले एक सेर पानी में दो या तीन दिन भिजा रखना जब पानी खटा हो जाय पानी को छान लेय तब उसी पानी में जब का सत्तू बैर और आवले को महीन पीस सम्पूर्ण अङ्गों में अथवा जिन २ अङ्गों में दाह हो लेप करना, या बैर के पत्र को पानी में बांट पांच सेर पानी में घोल के मथना उसमें जो फन उठे उसे दाहजनित अङ्ग में लेप करना उसी प्रकार रीठे के फन का लेप करना इत्यादि उपाय से दाह, पियास और मूर्च्छा शांत होते हैं ॥

## दाह पर प्रह्लादन तैल ।

यवार्द्धकुडवंपिष्ट्वा मञ्जिष्ठार्द्धपलंतथा । अम्लप्रस्थ  
शतेन्निमिश्रं तैलप्रस्थं विपाचयेत् ॥ एतत्प्रह्लादनंतैलं ज्वर  
दाह विनाशनम् ॥

जब एक पाव, मंजीठ दो तोला, काले तिल का तेल १ सेर, दही का तोड़ २॥ मन । तेल को चांदी की कढ़ाई या कलईदार कढ़ाई में चढ़ाय जब और मंजीष्ठ को पानी में महीन पीस तेल में डाल दे और दही का तोड़ थोड़ा २ डाल मंदाग्नि में पचावै जब सब पानी जलजाय तेल मात्र रहजाय अग्नि से उतार द्यान बोटल में भर दे इस तेल को शरीर में लगाने से दाह ज्वर शीघ्रही शांत होता है । अंगर श्लोकानुसार ७॥ मन दहीका तोड़ डाल के तैयार करै तो एकही बार उस तेल के लगानेसे दाहज्वर शांत होता है ॥

हमारे कविवर लोलिम्बराज महाशय ने दाह के शान्त्यर्थ जो उपाय लिखे हैं, पाठकगणों के प्रवचार्थ उसे भी प्रकाशित करता हूं और काव्य का अर्थ भाषा में ललित नहीं होता इस हेतु से संस्कृतमें अन्वय लिखे देता हूं ॥

श्रीखंड मण्डित कलेवर वल्लरीणां मुक्ताफलाकुल  
विशाल कुचस्थलिनां । वैदग्ध्य मुग्ध वचसां सुविलाशिनी  
नामालिगनं सकल दाह मपाकरोति ।

श्रीखंडेति—विलाशिनी नामालिगनं सकलदाहं अपाकरोति दूरीकरोती-  
त्यर्थः कीदृशीनाम् श्रीखंडैर्मण्डिता कलेवर वल्लरीयाणां, श्रीखंडं स्वेतचन्दनं,  
कलेवर शरीरं, वल्लरीलता, तनुलतेत्यर्थः, मुक्ता फलैराकुलानि विशालानि  
कुचस्थलानियाणां, कुचस्थलो वक्षजः, वैदग्ध्यं चातुर्यं, तेनमुग्धवचसां ॥

भाषार्थः—यति रूपवती स्त्री षोडश वर्ष की जिनके कोमल अङ्ग और  
कठोर कुचों में चन्दन लगे एवं मोतियों के हार से कुच शोभित एवं जिसकी  
चातुर्यता भरी मन्द मुपुकानि मन को मोहित कर रहा है ऐसी स्त्रियों को  
अपने अङ्ग में लपटाने से महा दाह शांत होता है ॥

शय्यापल्लव पद्मपत्र रचिता वासोवयस्यैः समं कान्तरे कुसमस्फुरत्तरुवरे वीणान्वितं गायनम् । आलापाश्च शुकालिं कोकिलकृताः कान्ताश्चकान्ताः कथा वाताश्रमल बालक व्यजनजा दाहं निरा कुर्वते ॥

शय्येति—पल्लवा वा लक्षदाः विभक्ति विपरिणामे न योज्ये पल्लवो स्त्री किशलयामित्यमरः कदल्यादीना वा पद्मपत्रैः ( कमलपत्रैः ) रचिता शय्या दाहनिरा कुर्वते दूरीकरोति, वयस्यैः समंवासः वयस्यै समानं कालिकैः सहवास इत्यर्थः, कथंभूतं—कुशुमस्फुरत्तरुवरे मफुल्लपुष्पयुक्ते वृक्षे, कांतारो महावनं, कांतारो स्त्री महारण्ये इतिमेदिनी, वीणावाद्येन युक्तं गायनं (वीणाशितारलोके) शुकालि कोकिलकृता, आलापाः अलिपरिभाषणे इत्यस्यरूपं, शुकः प्रसिद्धः, अलिभ्रमरः कोकिलः पिकः आलापाः वचांसि, कान्ता नवीनान्यर्थः कांता मनोहरा कथा भरतादि ग्रंथोक्ता शृङ्गार भेदा, अमल बालक व्यजन जनिताः वाताः बालको वीरणमूलं खस इतिलोके, दाहं निराकुर्वते—प्रत्येकमसंबध्यते ॥

भावार्थः—कदली (केला) पत्र अथवा कमल पत्रोंका पलंगपर विद्याय उस शय्या परं दाह युक्तं रोगी को सुलाने से दाह शांत होता है ॥

(कान्तारे वासः) जो, वन मफुल्लित पुष्पों से युक्त वृक्षों से शोभायमान हो रहा है ऐसे वन में रखने से (कांतार महा जंगल और स्त्री दोनों का बोधक है परन्तु इस स्थल में महावन लेना ।) शितार हारमोनियम एवं वीन आदि वाजाओं करके संयुक्त गान भी दाह रोग को नाश करता है । तोता, कोयल की आवाज, भ्रमर गुंज, रूपवती युवा स्त्री का स्पर्श, मनोहर कथा और कहानियों का सुनना, नवीन खस के पंखे की हवा, पित्त ज्वर जनित दाह को नाश करता है ॥

शेष पित्त ॥

पित्त ज्वर शांत होने पर भी यदि कुछ पित्त का शेष देखे तो उसे शान्ति

कर दे क्योंकि कुष्ठ भी पित्त वाकी रहने से पुनः ज्वर होने का सम्भव है प्रायः पित्त रह जाने से विषम ज्वर हो जाता है उसे डाक्टरी में (इन्टर मि-टेन्ट फीवर) कहते हैं इस लिये शेष पित्त को शान्ति करना बहुत जरूरी है ।

हतावशेषं पित्तं तु त्वक्स्थं जनयति ज्वरम् । पिवेदिक्षु-  
रसं तत्र शीतं वा शर्करोदकम् ॥ शालिपट्टिकयोरन्नमश्री-  
यात्क्षीरसंप्लुतम् ।

जो पित्त शान्त भये पर कुष्ठ शेष रह के त्वचा में रह जाय तो वह पित्त निस्सन्देह ज्वर पैदा करता है उस अवस्था में उसे पौड़े का रस या चिनी का शरवत पिलाना चाहिये जब तक पित्त की शान्ति न हो ॥

वैद्यक न जानने के सबब से चिनी के शरवत आदि शीतल चीजों से इतना लोग डरते हैं, रोगी को कौन कहे आरोग्य भी पीनेमें डरते हैं कि कहीं शीत न आजाय देखिये भाव मकाश में क्या लिखा है ॥

### शर्करोदकस्य गुणाः ॥

जलेन शीतले नैव घोळिता शुभ्र शर्करा । एला लवंग  
कपूर मरिचैश्च समन्विता ॥ शर्करोदकं नाम्नै तत् प्रसिद्धं  
विदुषां मुखः शर्करोदकं माख्यातं शुक्रलं शिशिरं सरं ॥ वल्यं  
रुच्यं लघु स्वादु वात पित्तास्र नाशनम् ॥ मूर्छा छर्दि तृषा  
दाह ज्वर शान्ति करं परम् ॥

शीतल जल में साफ चिनी अथवा मिथी की शरवत बनाय उसमें छोटी लायची कपूर लवंग और काली मिर्च पीस के मिलाने से शर्करोदक ऐसा नाम पण्डितों के मुख द्वारा सुना गया है । यह शर्करोदक वीर्योत्पन्न कारक, उदर दाह निवारक और दस्तावर है बलकर, रुचिकर हलका स्वादिष्ट वात पित्त और रुधिर विकार का नाश करने वाला, बिहोशी शिर की घुमरी बमन पियास और दाह ज्वर शान्ति करने में परम श्रेष्ठ है । इसलिये पित्त शेष नाशार्थ चिनी का शरवत अवश्य पिलाना चाहिये ॥

और भी लिखा है ( शर्करा सहित नीरं कफ कृत्पवनापहम् ) सफेद शकर (चिनी) का सरबत कफ को घटाता है परन्तु वायु को नाश करता है, जिस ज्वर में कफ का कुछ लेश न हो और पित्त का महा-कोप हो तो उस अवस्था में मिथ्री का सरबत देना कदापि हानि कर न होगा, बल्कि शीघ्र ही रोगी को तबली होगी ।

### वात पित्त ज्वर पर फांट ।

मधूक पुष्पम्मधुकं चन्दनं सपरूपकम् । मृणालं कमलं  
लोध्रं गम्भारी नागकेशरम् ॥ त्रिफलां सारिवान्द्राक्षां लाजा-  
न कोष्णे जले छिपेत् । सितामधु युतः पेयः फांटो वा सौ  
हिमोऽथवा ॥ वातपित्त ज्वरं दाहं, तृष्णा मूर्च्छा रतिभ्रमान् ।  
रक्तपित्त मदं हन्यान्नात्र कार्यविचारणा ॥

यह फांट वातपित्त मिश्रित कज्व को और वातज्वर तथा पित्तज्वर को निस्तन्देह-आराम करता है । महुआ का फूल, मुलेठी, लालचन्दन, (परूपक) फालसा के जड़ का छाल, कमल वृक्ष की डंठी, ( न मिलने पर कमल-गटे का बीज ), 'कमलं' कमलगट्टा, लोध्र, खम्भारि, नागकेशर, त्रिफला, सारि-वन, मुनक्का और धान का लावा । इन सब दवाइयों को ३ तोला ले अध-कचरा कर अथवा कलई दार पात्र में एक पाव पानी एक मृत्तिका पात्र में खूब गरम कर अग्नि पर से पानी को उतार उसी में औषध को डाल कर ढांप देवें जब शीतल होजाय-मल के छान लिय और एक तोला मिथ्री २ मासा सहित ढाल के पीजावें अथवा हिम बना के पीवें अर्थात् दवा की रात में भिजा देवें सवेरे मल के छान कर मिथ्री मिला के पिये । इस फांट के पीने से वातपित्त ज्वर, दाह, पियास, मूर्च्छा ( बेहोसी ) ग्लानि, धुमरी, रक्तपित्त और नेत्रों में नशा सा-मालूम देना आदि सबों को आराम करता है ।

### कफ ज्वर की चिकित्सा ।

इस बात को खूब याद रखना चाहिये कि जब तक रोगी में ठीक २

चिर्भ्रमः ॥ परिदग्धां खरस्पर्शां जिह्वां स्रस्तांगता परा । घृ-  
वनं रक्त पित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥ शिरसो लुण्ठनं  
तृष्णा निद्रा नाशो हृदिव्यथा । स्वेद मूत्र पूरीपाणां चिरा-  
द्दर्शनमल्पशः ॥ कृशत्वं नाति गात्राणां सततं कण्ठ कूज-  
नम् । कोठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनं ॥ मूक-  
त्वंस्रोतसांपाको गुरुत्वमुदरस्य च । चिरात्पाकश्च दोषाणां  
सन्निपात ज्वरा कृतिः ॥

अर्थ—सन्निपात ज्वर में कभी जाड़ा लगे और कभी दाह मालूम हो; ह-  
ड्डियां, सन्धियों और शिर में दर्द हो, आंखों से आंगू बहें, नेत्र लाल या धू-  
मिल रंग के हों और भीतर को बैठे जान पड़ें, कानों में सनसनाहट एवं दर्द  
हो, गला सूखा और गले में कांटेसे पड़ गयेहों, भ्रूयुक्त, बेहोशी आनतान वकना  
स्वांसी, हांपी, खाने पर मन न चलना और घूमरी हो। जीभ ऐसा हो जैसा अग्निसे  
जल गया हो और छूने में खरखरी मालूम हो, संपूर्ण शरीर सुस्त वा ढीली हो  
जाय जो करवट लेने में भी आलस्य लगे, मुख से थूक ललाई लिये हुये कफ  
पित्त के सहित निकले, शिर में ऐसा दर्द या बेचैनी हो कि शिर को इधर उधर  
दिलाता रहै, पियास की आधिक्यता, नोंदका न पड़ना और छातीमें दर्दहो।  
पसीना बहुत कम निकले और दिशा पेशाब भी बहुत देर में और बहुत कम  
हो ललाई लिये। यहांपर पाठहै “कृशत्वंनात्रिगात्राणां” और कहीं २ पेसा  
भी पाठ मिला है “कृशत्वंचात्रिगात्राणां” अर्थात् शरीर बहुत दुर्बल होजाय  
(लेकिन देखने में दोनों आते हैं हमने कई सन्निपात ज्वरी को बहुत दुर्बल  
देखा है और किसी को अतिदुर्बल भी नहीं पाया) रोगी हरसमय कांखता  
रहे और पीत, काली अथवा लाल रंगके गोल २ चटे या फुंसियां संपूर्ण शरीर  
में निकल आवें विशेषकर कोखा और जांघोंमें। अच्छीतरह बोल न सके या  
बिलकुलही न बोलें न कानसे सुने और न आंखोंसे देखे और नाक कान एक  
जांघ, पेट भारी और फूला वा रहै और उत्तम चिकित्सा करने पर भी दोष  
बहुतदिनोंमें पचे इत्यादि लक्षण युक्त रोगीको सन्निपातज्वरी समझना। उक्त



संपूर्ण लक्षण उपस्थित होने पर अवाध्यही समझना चाहिये। यद्यपि सन्निपात रोग एक प्रकार का है परन्तु दोषों के न्यूनाधिक से तेरह भेद कहा है— जैसे एक २ दोष की अधिकता से, अर्थात् किसी सन्निपात ज्वर में वात का जोर अधिक रहता है, और वह इस वजे से मालूम होता है कि वात के जितने उपद्रव हैं स्वास, खांसी, घुमरी, आनतान बकना अंगों में दर्द, जमुआई अधिक आना इत्यादि होने से इसी प्रकार पित्ताधिक से शरीर में लाल २ दाने पड़-जाना, मुख पाक, अतीवार अंतरदाह आदि, कफाधिक से अंग की जड़ता, वाणी की स्तब्धता आदि इसी प्रकार लक्षणों की अधिकता से दोष की आधिकता जानी जाती है। इस तरह वातादि से तीन, द्वंद्वज से तीन, सन्निपात से एक तथा वातादि दोष के अधिक मध्य और हीन होने से सब तेरह भेद कहे हैं शास्त्रज्ञ वैद्य लोग तत्क्षण अनुमान कर लेते हैं। अब वैद्यों के नाम करण किये हुये तेरह प्रकार के सन्निपात ज्वर के नाम और लक्षण लिखते हैं ॥

### त्रयोदश सन्निपात के नाम ॥

सन्धिकश्चान्तकश्चैवरुग्दाहश्चित्तविभ्रमः । शीताङ्ग-  
स्तन्द्रिकः प्रोक्तः कण्ठकुब्जश्चकर्णकः ॥ विख्यातो भुगनेत्रश्च  
रक्तष्टीवीप्रलापकः । जिह्वकचेत्याभिन्यासः सन्निपातास्त्रयोदशः

सन्धिक १ अन्तक २ रुग्दाह २ चित्तविभ्रम ४ शीताङ्ग ५ तन्द्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भुगनेत्र ९ रक्तष्टीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ और अभिन्यास यही तेरह नाम सन्निपात के हैं। अब हम तेरहा सन्निपात के अवधि लिखते हैं कि कौन सन्निपात कितने दिवस तक रहता है ॥

### १३ सन्निपात की अवधि ॥

सन्धिके वासरः सप्तचान्तके दशवासराः । रुग्दाहे विंश-  
तिर्ज्ञेया बन्हाष्टौ चित्तविभ्रमे ॥ पक्षमेकन्तु शीताङ्गे इत्यादि ॥

उक्त तेरहो सन्निपात के आयु के दिन रेलाक में पूर्ण न लिखके भाषा

में लिखे देते हैं । सन्धिक सन्निपात की मर्यादा सात दिन है अन्तक के दश दिन, रुग्दाह के २० दिन, चित्तविभ्रम के २४ दिन, शीतांग के १५ दिन, तन्द्रिक के २५ दिन, कण्ठकुञ्ज के १३ दिन, कर्णिक के तीन मास, भुग्मनेत्र के ८ दिन, रक्तपीवी के १८ दिन, प्रलापक के १४ दिन, जिह्वक के १६ दिन और अमिन्यास के भी १६ दिन की मर्यादा है परन्तु यथार्थ रत्ता अर्थात् चिकित्सा न होने से रोगी तत्काल मर जाता है इस का कोई नियम नहीं है, उत्तम उपाय द्वारा रत्ता करने पर भी उक्त दिन पर्यन्त मर्यादा रहता है । अथ तेरहों सन्निपात के विशेष २ लक्षण लिखते हैं ॥

**संधिक**—सन्निपात उसे कहते हैं, जिस ज्वर के पूर्वरूप ही में संधि २ (जोड़) में वात पीड़ा की आधिकता, कफ, संताप, बलहानि और नोदन पड़े । इस ज्वर का वेग सात दिन रहता है और सातदिल चिकित्सा करने से आराम होता है ॥

**अंतक**—उस ज्वर को कहते हैं जिस में अति दाह, शरीर आग सी जली जाय, बिहोसी, शिर दुर्द कंपन, और हिचकी हो, इस ज्वर की अवधि दश दिन है लेकिन असाध्य है रोगी सुस्फुल से बचता है ॥

**रुग्दाह**—इस ज्वर का लक्षण यह है कि रोगी आन तान बहुत धके, ज्वर का जोर अधिक हो बिहोसी, घुमरी, जो वात पुछा ठीक २ जवाय न दे सके, कंठ और गले में दाह, पियास बहुत, कुछ २ खांसी और स्वास हो । इस ज्वर की मर्यादा बीस दिन की है, कष्टसाध्य है अर्थात् उत्तम चिकित्सा करने पर आराम हो ॥

**चित्तविभ्रम**—नाम ही से समझ सकते हो, जिस ज्वर के वेग से मनुष्य पागल हो जाय, कभी हंसे, कभी गाये, कभी नाचे, कभी रोवे और आन तान धकता रहे, इस बुखार की आयु आठ दिन की है उपाय करने से आराम हो जाता है, चिकित्सा होलदिल रोग के समान करना उचित है—

**शीताङ्ग**—समस्त शरीर वरफ के समान शीतल हो; देह कांपै, हाथ पैर सब ढीले हो गये हों किसी की बात न सुने, नेत्र में जलन, खांसी, वमन, और दस्त पतले हों, यह ज्वर पन्द्रह दिन रहता है ऐसा शास्त्रकारों ने कहा है परन्तु जल्द खून में गरमी न पहुंचाने से रोगी शीघ्र मर जाता है। यदि इसी ज्वर में अन्तस में अधिक दाह और पियास हो तो निस्तन्देह रोगी मर जायगा क्योंकि प्रायः ऐसा देखने में आया है कि भीतर अधिक दाह और ऊपर शीत होने से रोगी नहीं बच सका ॥

**तन्द्रिक**—ज्वर में अकसर रोगी एक टक निहारता है; शरीर बहुत गरम हो और वारम्बार गले में कफ आ जाय, जीभ में कांटे पड़जाय जीभ काली और मोटी हो जाय, दस्त पतले, फानों में दर्द, गला अत्यन्त खुष्क जो खोलने में तकलीफ हो, ऐसी विहोशी हो मालूम हो कि रोगी सो रहा है। यह ज्वर पच्चीस दिन में पीछा छोड़ता है वह भी यदि खर्चैय चिकित्सा करने वाला हो कहीं मूर्खों के हाथ लगा तो सच ही यमालय का रास्ता लिया ॥

**कण्ठकुण्डज**—इस बुखार में पहले ही गला रुन्ध जाता है और पानी पीने में रोगी को निहायत तकलीफ होती है, जैसे पागल कुत्ताके काटने के जहर से पीड़ित रोगी से पानी नहीं पिया जाता, वैसा ही कण्ठकुण्डज ज्वर वाले से पानी नहीं पिया जाता, एक घूंट पानी पीने से प्रायः छूटने का सा दुःख होता है, इस ज्वर में यद्यपि दाह, मोह, विलाप आदि और लक्षण रहित हैं पर गला का पकड़जाना इस ज्वर में विशेष लक्षण है। वैद्यों ने इस ज्वर को कट साध्य कहा है परन्तु असाध्य ही समझिये दश रोगी में एक दो आराम होता है। इसकी चिकित्सा नारायण तैल गले में मालिस करके अथवा राई के पलस्तर आदि से गला खोलने का उपाय बहुत जल्द करे, अगर किसी उपाय से गला का खुलना न जान पड़े तो गले में दो तीन जोफ लगाके खून निकलवाय देय और शीतल जल आदि

पीने को न देवे और न कोई बहुत गर्मही दवा देवे जहां तक हो किञ्चित् उष्ण गी का दूध अधिक पीने को देय ॥

**कर्णकज्वर**—इस ज्वर में रोगी कान का बहरा हो जाता है यह विशेष लक्षण है। प्रलाप, कण्ठरुन्ध, दमा, खांसी मुखसे लार का बहना आदि लक्षण रहते हैं। इस ज्वर की आयु वैद्यवरो ने तीन महीना लिखा है और अत्यन्त कठिनता से आराम होता है ऐसा कहा है। किसी २ रोगी को देखा भी गया है ॥

**भुगनेत्र**—इस बुखार में नेत्र टेढ़े हो जाते हैं, यह विशेष लक्षण है। तथा ज्वर की आधिक्यता, बुद्धि का नाश, मोह, प्रलाप, घम और कर्णों २ सूजन यह भी लक्षण होते हैं। इस ज्वर की आठ दिन की मर्यादा है परन्तु असाध्य है ॥

**रक्तहीवीज्वर**—इसमें जीभ अतिशय काली अथवा लाल, उसमें चकते पड़े गये हों जीभ तथा अंठ भी फट गये हों और उसमें रुधिर बहता हो यह विशेष लक्षण है, इस के अलावा बमन, पियास, मोह, पेट में दुर्द, दस्त पतला, हिचकी, पेट का फूलना, घुमरी, और चित्तघम आदि लक्षण होते हैं। रक्तहीवी दश दिन रहता है परन्तु रोग असाध्य है, चिकित्सा इस में बहुत गरम नहीं करनी चाहिये ॥

**प्रलापक**—यह ग्यारहवां सक्रिपात ज्वर है कि जिस में रोगी दिन रात चकताही रहे, अपनी घड़ाई को आँतें करे पवित्रता में चित्त राखे, हर एक प्राणी को चिन्ता करे, बुद्धि स्थिर न रहे और चित्त भरा व्याकुल रहे। इस ज्वर की अवधि चौदह दिन है परन्तु यमालय का रास्ता मत्त्येक समय निहारता रहता है ॥

**जिठक**—सक्रिपात उसे कहते हैं जिस में अति कठिन कंठक युक्त जिह्व होय, इस ज्वर में प्रायः रोगी बहिरा और मूला भी कासा है, स्वास

कास आदि और भी उपद्रव होते हैं । इस ज्वर की मर्यादा सोलह दिन और कष्ट साध्य है ॥

**अभिन्यास**—अथ तेरहवां सन्निपात का लक्षण कहा जाता है । रोगी के मुख पर चिकनाई हो, निद्रा अधिक हो, इन्द्रियां शिथिल बल का नाश और बोझा कम जाय एवं स्वास रुक २ के आये तो अभिन्यास ज्वर जानना, यह सन्निपात केवल मृत्यु तुल्य है । इस के आगे अथ तेरहो सन्निपात के साध्यासाध्य का निर्णय करते हैं ॥

### अथ साध्यासाध्य निर्णयः ॥

संधिकस्तंद्रिकश्चैव कर्णकः कंठकुब्जकः । जिह्वकश्चित्त  
विभ्रंशः षट्साध्याः सप्तमारकाः ॥

सन्धिक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्ज जिह्वक और चित्त विभ्रंश यह छ सन्निपात साध्य अर्थात् सत् वैद्य द्वारा देशकाल पात्र के अनुसार उत्तम चिकित्सा होने से आराम हो सक्ता है । अन्तक, रुग्दाह, शीतांग भुग्नदृक् रक्तटीधी, प्रलापक और अभिन्यास यह सात प्रकार के सन्निपात प्राण के हरने वाले हैं । हिकमत में सन्निपात को सरसाम कहते हैं और हाकुरी में सन्निपात का लक्षण प्रायः एपोलेक्स रोग में मिलता है और हाकुर लोग उसी के अनुसार चिकित्सा भी करते हैं इसी से सन्निपात प्रसिद्ध रोगी को कम आराम कर सकें हैं क्योंकि इस रोग में हांकुर लोग शिर पर धर्ष रसाते हैं और सन्निपात में शीतल जल से सिंचन करना निषेध किया है । लिखा भी है—सन्निपातेतु दाहार्तं यः सिंचेच्छीत वारिणा । आतुरःसकथं जीवेद्भिषग्या सकथंभवेत्" जो वैद्य सन्निपात के दाह में शीतल जल से सिंचन करता है अर्थात् शिर या छाती वगैरह में धर्ष या शीतल जल लगाता है यह वैद्य रोगी को कैसे आराम करेगा किंतु भारहालेगा उस को वैद्य कैसे कहना चाहिये । पाठकगण

को स्मरण होगा, पूर्व में हम लिख आये हैं कि ज्वर रोग में गरमी प्रधान रहती है उस गरमी से और मस्तिष्क से पूरा संबन्ध है उस पर ध्यान रखना चिकित्सक मात्र को जहूरी है ज्वर रोग में उस के निवारण के उपाय न कर के उलटी चिकित्सा जैसे आमज्वर (कच्चा बुखार) में दवा देना \* अथवा खाने को देना, या मर्यादा से अधिक छंघन कराना, यात पित्त ज्वर वाले को एकाएकी कोठरी के भीतर बंद रखना, या पियास लगने पर पानी पीने को न देना, अथवा गरम औषधियों का काढ़ा या रस खिलाना इत्यादि उदपटांग उपायों से ज्वर रोग में सन्निपात हो जाता है और इस रोग से घिरले रोगी आराम होते हैं देखिये लालिम्बराज क्या कहते हैं ॥

सन्निपातस्य कालस्य कश्चिद्भेदो न विद्यते । चिकित्सको जयेद्यस्तं तस्माकोस्ति प्रतापवान् ॥

सन्निपात रोग और काल (मृत्यु) में कुछ भी भेद नहीं है जो वैद्य उस सन्निपात को जीते अर्थात् अपनी अनुभव प्रक्रिया के द्वारा उस काल रूपी रोग से रोगी को बचावे तो उस से बढ़ कर संसार में और कौन प्रतापी है ॥

\*कपायं यः प्रयुञ्जतिनरानां तरुणज्वरे । तसुप्तं कृष्णसर्पं तु करायैण परामृशेत् ॥

जो वैद्य नये युवार में अर्थात् कच्चे ज्वर में काढ़ा आदि दवा पीने को देता है वह मूर्ख वैद्य मानों सोते हुये काले सांप को उंगलियों से छू कर जगाता है । तात्पर्य यह कि ज्वरारंभ में दवा खाने को देने से अथवा अन्य कुपथ्य के होने से सन्निपात हो जाता है जिस रोग से घिरलाही लोग बचते हैं ॥

## सन्निपात ज्वर में कर्णमूल ॥

सन्निपातज्वरस्यान्ते कर्णमूले सुदारुणः । शोथः स जायते तेन-कश्चिदेव प्रमुच्यते ॥

सन्निपात ज्वर के अन्त में कान की जड़ में खून जम कर महा दुख-दायक एक सूजन पैदा होती है, उस सूजन से ऐसा ही कोई भाग्यशाली हो तो आरोग्य होता है क्योंकि वह सूजन मनुष्य के मारने को होती है यह सूजन भी दुखार विगड़ने के कारण से होती है क्योंकि ज्वर में जब आभ्यान्तरिक घात-पित्त की गरमी अधिक बढ़ती है और अज्ञान वैद्य उसे शान्ति नहीं कर सके तो वही गरमी मस्तिष्क में पहुंच तत् सम्बन्धी नसों के खून को अत्यन्त उष्ण कर पतला कर देती है तब वही खून वहां से टोकर कर कान के नीचे नस में आ के जम जाता है उसे जो सूजन पैदा होती है उसी को कर्णमूल कहते हैं ( सन्निपात ज्वरस्यान्ते ) इस पाठ का तात्पर्य यह है कि ज्वर के अन्त में ही प्रायः कर्णमूल होता है, किन्तु ज्वर के आदि मध्य में भी कर्णमूल होता है जिसका प्रमाण देते हैं ॥

ज्वरस्यपूर्वं ज्वरमध्यतोवा ज्वरान्ततोवा श्रुतिमूलशोथः ।

क्रमादसाध्यः खलुकष्टसाध्यः सुखेनसाध्योमुनिभिःप्रदिष्टः ॥

भावार्थः—अगर सन्निपात रोग के पूर्व ही में कर्णमूल शोथ उत्पन्न हो तो असाध्य जानना, मध्य में कर्णमूल होने से कष्ट साध्य और अन्त में कर्णमूल होने से सुख साध्य जानना, यह घड़े २ वैद्यवरों का अनुमय किया हुआ है । सन्निपात रोग में कर्णमूल क्यों होता है उसका ठीक कारण यही है कि मस्तिष्क में जो रक्त है गरम होने से पतला हो के नीचे को आता है किन्तु कर्णस्य मूल नाड़ी के गाढ़ रक्त के सम्बन्ध से यह भी गाढ़ा हो के जम जाता है और उसी से कान के पीछे नीचे की तरफ फूल आता है, फिर रक्त ऊपर को नहीं जा सका इसी से वैद्यवरों ने

उसके निकाल देने की राय प्रगट की है । बहुत से मूर्ख वैद्य जो सुश्रुतादि ग्रन्थ को देखा सुना नहीं है डर से कर्ण का रक्त नहीं निकालते जिससे रोगी मर जाता है ॥

अहियापुर में एक प्रयागवाल के स्त्री को सन्निपात ज्वर यथात् कर्ण मूल हुआ और यहाँ के एक नामी वैद्य की चिकित्सा होती थी, वैद्य महाराज डर से अथवा और किसी विचार से उस रक्त को मोक्षण न करके टिंकर आइयोडिन लगाना आरंभ किया, वह भला आराम कथ हो सका था अन्त में एक डाकुर ने आ के चीरा, करीब दो ढाई सेर के भवाद निकला किन्तु जिपादा दिन होने से वह भवाद ऐसा सड़ गया था कि जिस के घिप से स्त्री मर गई । लिखा है:-

शांतेत्रिदोषे श्रुतिमूलजातः शोथस्य रक्तं प्रविमोचयेत्  
प्राक्, पश्चान्मुहुर्कटफलकृष्णजीरा विश्वाकुलथ्योत्भव  
लेपनंसत् ॥

त्रिदोष अर्थात् सन्निपातज्वरके शांत होने पर कर्णमूल में उत्पन्न शोथ से पहिले जलीका ( जोंक ) या नस्तर द्वारा रक्त निकाल बाद कायफल, कालाजीरा, शोंठ और कुरथी इन सबों को पानी में सूख महीन पीस के मोटा लेप करे या अपनी विचार से अन्य लेपादि लगावे, जोंक लगाने के उपरान्त एक दिन निम्ब पत्र बांध के तब कोई लेप लगावे ॥

सन्निपात ज्वर की चिकित्सा ॥

बुद्धिमान वैद्य को प्रथम ही यह निदान कर लेना बहुत उचित है कि १३ प्रकार के फड़े हुये सन्निपातों में इसे कौन सन्निपात है और इसे ज्वरारंभ ही में सन्निपात हुआ है अथवा अपथ्य से ज्वर विगड़ कर सन्निपात हुआ है । रोगी की प्रकृति अवस्था वल, देशकाल, इसके कोई प्रमे-हादि अन्य रोग तो नहीं थे या ज्वर के अतिरिक्त पूर्वोपार्जित अन्य रोग



भी उपस्थित है इत्यादि सब बातों को दया देने के पूर्व ही जांच लेना चाहिये क्योंकि बिना सब बातों को जांचे दया देना महा पाप है ॥

यदि अपथ्य से ज्वर रोग बिगड़ कर सन्निपात हुआ हो तो उसे लंचन नहीं कराना, हलका पथ्य देना जावे और बड़े हुये दायों को कौमल चिकित्सा से शांत करे, यदि प्रारंभही से सन्निपात हुआ हो तो विचार के साथ १८-११ पृष्ठ के अनुसार लंचन करावे, जल प्रकरणों को देय के गरम जल पीने को देय, सन्निपात रोगी को ऐसे मकान में रखना चाहिये जो बहुत साफ, सुलासा, जिसमें दो तीन दरवाजे हों, जादा हवा होंतो परदा टाग दे किवाड़ न बन्द करे और न रोगी के समीप बहुत भीड़ रहे अगर रोगी की होश हवास दुस्त हो तो वैद्य तीन, २ चन्दे पर अथवा दानों समय उस्के भीतरी दुख पूछं लिया करे और दीराड़ी चिकित्सा करे अगर बतलाने की सामर्थ्य जाती रही हो तो बड़ी युक्तिमानी के साथ चिकित्सा करनी चाहिये ॥

यदि रोगी की चैतन्यता जाती रही हो अथवा कण्ठ का अथरोच हो तो वैद्य इस बात की कोशिस सबसे पहले करे जिससे रोगी कुछ होश में आवे और गला खुले जिससे वह अपना मुँह दुख बयान कर सके । इस स्थल में यह जता देना बहुत ही उचित है कि बिना शर पर-अधिक गरमी पहुंचे न रोगी विहोश होता है और न कंठ बन्द होता है इस लिये मूर्च्छित रोगी की चिकित्सा रसादिक से कभी न करे अर्थात् रस साने को न देय ॥

### संज्ञानाश की उपाय ॥

कम्पःप्रलपनंयस्य संज्ञानाशश्चदारुणः । रसैश्वला-  
ववर्तैश्च कुलिङ्गैःशशतित्तिरैः ॥ तर्पणेप्राकपुराणेन सर्पिपाभ्यां-  
जयेन्नरं । बलारास्तागुडूव्याद्यैस्तैलैश्चपरिपेचयेत् ॥

जो सन्निपाती रोगी के शरीर में कम्पन अधिक हो, या किसी को न चीन्हें आनतान बन्ता हो अथवा दन्त्रियों की चैतन्यता मिलकुल जाती

रही ही उस रोगी को लवा, घटेर, चिड़ा, खरगोस और तीतर इनके मांस रस अर्थात् छुवा को पहले पिलाय के फिर समस्त शरीर में पुराने घी की मालिस करे अथवा बरियारा के जड़ की छाल, रासन और गुरख के काष से सिद्ध किया तैल को मर्दन करे। अगर इस क्रिया से मूर्च्छित न जाये अर्थात् संज्ञा चैतन्य न ही तो निम्नलिखित औषध का प्रयोग करे ॥

### मूर्च्छित सन्निपात पर लघु सूचिकाभरण रस ॥

विषंपलमितं सूतः शाणकश्चूर्णयेद्वयम् । तच्चूर्णं  
संपुटे क्षिप्त्वा काचलिसशरावयोः ॥ मुद्रां दत्त्वा च संशोष्य  
ततश्चुल्ल्यां निवेशयेत् । वन्हिं शनैःशनैः कुर्यात् प्रहरद्वय  
संख्यया ॥ तत उद्धारयेन्मुद्रामुपरिस्थां शरावकात् । संलग्नो  
यो भवेत्सूतस्तं गृह्णीयाच्छनैः शनैः ॥ वायुस्पर्शो यथा  
नस्यात्तथा कुप्यांनिवेशयेत् । यावत्सूच्यामुखेलग्नः कुप्यांनि  
यातिभेपजं ॥ तावन्मात्रां रसो देयो मूर्च्छिते संनिपातिनि ।  
क्षीरेण प्रस्थिते मूर्द्ध्नि तत्रांगुल्या च घर्षयेत् ॥ रक्त भेपजसं  
पर्कान्मुर्च्छितोपि हि जीवति । तथैव सर्प द्रष्टस्तु मृताव-  
स्थोपि जीवति । यदा तापो भवेत्तस्य मधुरं तत्र दीयते ॥

यह श्लोक शारङ्गधर के द्वितीय खण्ड का है। (विषं) शींगिया बूसी को मोटा तेलिया भी कहते हैं २ तोला (सूत) पारा ४ नासे दोनों को एक में मिला के सूख महीन चूर्णकर, दो रक्षाधी जिस में कांच का लुक हो (यह रक्षाधी सौदागरों के दूकानों में मिलती भी हैं) उस में चूर्ण को धर दूसरी रक्षाधी ऊपर से ढक पांच कपरीटी करके सुखाय लेप बाद निर्घात काठरी में उस प्याले को चूबड़े पर चढ़ाय दोपहर पर्यन्त बहुत घीभी आंच से पचाये, उस के बाद सम्पुट को ठंडाकर आइस्ते से रक्षाधी को भलग कर लव, ऊपर की रक्षाधी में जो पारा लगा हो, उसे निकाल छिपी

काँच की सीसी में रस काग से फीरन उस का मुख बंद कर दे, ताकी हवा न लगने पाये । मूर्च्छित रोगी का धीरे में बोहा सा शिर मुझाय महीन नस्तर । मार के जरा स्रु घाव कर देय जय उस में से रुधिर निकले, जितना सूचीका मुख होता है उतना सीसी में से रस लेके उस घाव में छोड़ उंगली से घिसे और घोड़े से दूध ले ये हाळे, वह रस रक्त से मिल भस्त्रिष्क में जाके जमे रुधिर और कफ को ठीक करता है-इस से मूर्च्छित जाग उठता है । उसी प्रकार सर्प दंशित (सर्प से काटा हुआ) मूर्च्छित (मरे के समान) के शिर पर उक्त रस का प्रयोग करने से आराम होता है । पूर्वोक्त प्रयोग द्वारा मूर्च्छित के जागने पर अथवा न जागने पर ताप आवै अर्थात् शरीर जादा गरम हो जाय या नाही देखने से भीतर गरमी अधिक बोध हो तो उसे पीछे का रस अथवा मीठे अनार का रस पिलावे । यदि दोनों चीजों में से एक भी न मिले तो गौ के ताजे दूध में मिश्री मिला के अथवा केवल मिश्री का शरबत पिलावे । भूत पूर्व बैद्यगण ऐसे ही ऐसे क्रियायों के द्वारा यश लाभ करते थे आजकल के धीरों में कठिन क्रियायों का प्रयोग करना तो दुष्कर हई है, यथायै औषध तक नहीं घना सक्ते तो रोगी कैसे आराम कर सकें ॥

### सन्निपात पर उन्मत्त रस का नस्य ॥

रसगंधौ समानांशौ घतूरफलजै रसैः । मर्दयेद्दिन-  
मेकंच तत्तुल्यंत्रिकटुक्षिपेत् ॥ उन्मत्ताख्यो रसोनाम नस्ये-  
स्यात्सन्निपातजित् ॥

पारा और आमलासारगंधक दोनों को समान भाग ले घतूर के फल के रस में एक दिन अर्थात् चार प्रहर घराघर खरल कटे उस फजली के घराघर त्रिकटु (शोठ पीपर मिचं) महीन पीस के मिलाये इस का नाम उन्मत्त रस है इस का मात्रा आधी रत्ती से दो रत्ती तक है इस रस को नाश देने से (सूचाने से) भी सन्निपात मूर्च्छित जागता है ॥

## सन्निपात पर अंजन ॥

निस्त्वक् जैपाल बीजं च दशनिष्कं त्रिचूर्णयेत् । मरि-  
चंपिप्यलीसृतं प्रतिनिष्कं त्रिमिश्रयेत् ॥ भाव्योजं वीरजै-  
र्द्रावैः सप्ताहं संप्रयत्नतः । रसोयमंजनेदत्तः सन्निपातं  
विनाशयेत् ॥

खिला हुआ शवालनाटे के बीज ४० नासा मिरच छोटीपीपर और  
पारा यह सब चार २ नासा ले के सबों को महीन चूरन कर खरल में  
हाल जंभीरी नौधू के रस में सात दिन छोटे पश्चात् सुराय के रस महीन  
चूर्ण कर किसी कागदार सीसी में रख दे । इस चूर्ण के अंजन देने से सन्नि-  
पात मूर्च्छित-जागता और सन्निपात रोग विनाश के प्राप्त होता है-

अगर कोई प्रश्न करे कि यहां पर मूर्छा किस रोग नहीं है सन्निपात  
रोग का उपद्रव है तो सन्निपातही का ह्रास वगैरह क्यों न देखे मूर्छा आप  
ही जाती रहेगी ? यह ठीक है, किन्तु यह बीजों का सिद्धान्त मत है, कोई  
रोग क्यों न हो जिस रोग में जो उपद्रव अधिक बढ़ा हो खासकर मूर्छा  
आदि जो शीघ्र ही प्राण हरण करने वाले हैं उन्हें विशेष चिकित्सा द्वारा  
जहां तक हो सके जल्द शांत करे । (शिशिर) अंजनादि पूर्वोक्त प्रयोग करने  
के पूर्व ही बीज को यह जांच लेना बहुत उचित है कि रोगी को वर्तमान  
रोग के पहले दुजाक, गरमी, प्रमेह, अंतीसार, गिररोग हीलदिल, उन्माद,  
रक्तजघयासीर, घृष्णा, वमन, धातुशोष और उष्णवायु आदि कोई रोग तो  
नहीं था अथवा वातपित्त प्रकृति युक्त मग्न निर्जल तो रोगी नहीं है यदि  
हो तो ऐसे रोगी के साथ उपरोक्त दवाइयों के प्रयोग न करके साधारण  
और मासदिल औषधों के द्वारा मूर्छा को दूर करे क्योंकि ऐसे रोगियों का  
मरिचक निहायत निर्दल रहता है अति उग्र औषधों के प्रयोग करने से  
रोगी के मर जाने का खौफ है । उपरोक्त रोग युक्त सन्निपात रोगीकी मूर्छा  
इस प्रकार दूर करे ॥

## मूर्छा की मातदिल उपाय ।

रोगी का शिर मुड़ाय देय अथवा बाल महीन कतराय देय कालेतिल का तेल १ छँटाक, अंगूर अथवा जख का शिरका जिसमें मसाला वगैरह कुछ न पड़ा हो २ तोला, पानी डेढ़पाव सबों को एक में मिला लेय और उसी में कपड़ा तर कर के शिर पर रखके जब कपड़ा सूख जाय फिर उसी पानी में कपड़े को तर कर ले और शिर पर रखके लेकिन कपड़ा डुवाते समय हरद्वार पानी को हिला के तेल पानी को एकदिल कर लिया करे । इसी प्रकार जब तक होश न हो बराबर रखता जायै, पानी चुकजाय उसी प्रकार दूसरा पानी तैयार कर लेय । चार पांच सेर पानीको ऐसा गरम कर लेय जो शरीर पर छालने से क्षेय न हो, उसी पानी को एक टोंटीदार बरतन में भर एक आदमी रोगी के पैर के गांठ के नीचे तरैरा देवे और एक आदमी आइस्ते २ पैर को धोवे, जैसे गाय दुही जाती है उस प्रकार धोवे नीचे से ऊपर को हाथ न लेजायै । पैर धोने के बाद पैर पोल के ऊनी या सूती हो मोजा पहनाय देय अगरे मोजा न मिले तो पैर में कपड़ा लपेट देय और घन्टा दो घन्टे के बाद खोल देय, इसी प्रकार दो तीन दफे करने से निस्तंदेह मूर्छा जाती रहती है । हमारे देशी वैद्य प्रथम तो ऐसी चिकित्सा जानते नहीं यदि कोई एकदम यां हिकमत का जानने वाला यह उपाय करे भी तो झट कह देंगे कि शीत आजायगी । हम कहते हैं दूध ची के कमी के वजे से, बाल विवाह से, मांस भक्षियों के इस देशमें अधिक भर जाने से, आरुफल देश की दशा ऐसी विगड़ गई है, कि समस्त भारत के लोग धातुहीन हो रहे हैं और धातु की निर्धलता के समय से अत्यन्त गरम दवाइयां लोनों को कम साफकत करती हैं, हम ३० वर्ष से चिकित्सा का काम करते हैं जितने सन्निपात रोगी साधारण मातदिल औषधों के प्रयोग से आरोग्य किया है उग्र और अत्यन्त उग्र औषध द्वारा नहीं ॥

## संधिक सन्निपात की चिकित्सा ।

नागरमोथा, देवदारु, गुरुच, रामन, शतायन, यह सब एक २ तोला ।  
रेव की जड़ का छाल, कचूर कुटकी ऊना की पत्ती और शीठ यह सब

छः मासा ले अथकचरा कर चार पुड़िया बनाय एक पुड़िया को एक स्रुतिका पात्र में पायभर जल डाल के घीमी आंचसे पकाये जब एक छँटाक जल रह जाय शीतल कर मल के छान लेय और एक मासा गहद डाल के पिलाय देय इसी प्रकार दोनों समय पिलायै ॥

जिस कमरे में रोगी हो उसके बाहर निर्गुण्डी, गूगल, पीली सरसों, निम्बपत्र और रालापुष इसकी धूनी देय । इस्से संधिक सन्निपात का नाश होता है ॥

संधिक सन्निपात में हलका लंचन कराना और पसीना न आता हो तो पसीना लाके शरीर हलकी करना और यथागु आदि का पच्य देना ॥

### अन्तक सन्निपात ॥

यद्यपि अन्तक सन्निपात त्याग करने को लिखा है क्योंकि यह सन्निपात मनुष्य को मारनेही के लिये आता है यद्यपि फण्ठगत प्राणवालों की भी चिकित्सा करना ऐसा शास्त्रकारों ने आजादी है ॥

यह का चकल, इसा की पत्ती, जमलतास का गूदा, देयदाठ, कुटकी, रासन, गुरख और फुलीजन सब को समान भाग ले अथकचरा कर एक २ तोला की पुड़िया बनायै पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलायै ॥

### अन्तक सन्निपाते रोटिका बंधन ॥

यह प्रयोग अनेक घैयों का अनुभव किया हुआ है । राई के चूण को लहसुन के रस में सान के रोटी बनायै और तबे पर रख घी का पुचारा दे के सँके बाढ़ गरमागरम शिर पर बांध देय और तीन चार घंटे के बाद खोल देय एवं दोपहर के बाद दूसरा तैय्यार कर के फिर बांधे, इस रोटी के बांधने से मनुष्य के अन्तक सन्निपात की मृत्युकारक ब्रथा निस्तन्देह दूर होती है । लेकिन यह बात याद रहे कि यदि रोटी बांधने से होस वाला रोगी न बरदास्त कर सकै अथवा होस रहित रोगी अपना शिर ऊटके तो रोटी १५ मिनट रख के खोल लेय और एक दके में कायदा न जान पड़े तो उसी रोटी

को ५ या १८ मिनट में फिर फिर पर रखे अगर रोटी सूख गई हो तो दूसरी रोटी तैयार करले किन्तु दश पन्द्रह मिनट से अधिक न रखे । अन्तक सन्निपात में गरम जल और मांस जूस इत्यादि पीने की देय किन्तु प्यरनाश कर्ता महासुतुञ्जय मंत्र का जप और शिवाचंन विद्वान् ब्रह्मणों के द्वारा अवश्य करावे क्योंकि अन्तक सन्निपात का आरोग्य होना अति दुष्कर है इसी से वैद्यों ने हार कर यह श्लोक कहा है ॥

भियग्भिरितिनिर्णीतं सन्निपातैतकाभिधे । भेषजंजान्-  
हवी नीरं वैद्यो गोधिन्द एवहि ॥

अन्तक सन्निपात में वैद्यों ने यह ठीक निश्चय कर के कहा है कि इस रोग में रोगी को भीषधी गंगाजल है और वैद्य विष्णु भगवान हैं ॥

रुग्दाह सन्निपात की चिकित्सा ॥

धलधर मलयजनागर सवालकेशीर पप्यंटेःक्षयितं ।  
यः पिवतिपयः सुशीतंशाम्यति रुग्दाहकस्तस्य ॥

नागरसेया, लालचन्दन, सेठ, सुगंधवाला, लस और पित्तपापड़ा इन सब दवाइयों को समान भाग ले कर अथकचरा कर के दो २ तोले की पुष्टिया बना ले पूर्वोक्त प्रकार से ३ माश। मिश्री डाल के दो।में समय काढ़ा पिलावे यदि रोगी के अन्तःकरण में दाह अधिक होती यह काढ़ा न दे के मित्र लिखित-काय पिलावे ॥

उशीर चन्दनोदीचय द्राक्षामलक पपंटेः । शूतं शीतं  
जलं ददांदाहत्तुज्वर शान्तये ॥

सुगंधवाला, लालचन्दन, लस, मुमझा बीज रहित, सूखाभावला बीज रहित और पित्तपापड़ा इन का काढ़ा-सूय शीतल कर मिश्री मिला के पिलाने से दाह पियास और बुखार शान्त होता है ॥

धूप, अमर, कचूर, सझकी, नख, तगर, नेत्रवाला सफेदचन्दन और राजा धूप सब को एक में मिला के किसी पात्र में रख दे और दिनमें कई दफे रोगी के सफान के बाहर धूनी देय । अगर रोगी के शरीर में दाह अधिक हो खास कर कपर का चमड़ा जला जाता हो तो इस लेप को तैयार करके समस्त शरीर में लेपन करे । वैर के पत्तों को दही में खूब महीन पीस के अथवा कपूर, सफेदचन्दन और नीम पत्र सब को दही में पीस लेप करे । यदि समस्त शरीर में दाह न हो सिर्फ हाथ पैर के तलुए में जलन हो तो उसी में लेपन करे और घान के लावा का घूष घना के उसमें कुछ मिथी और मासा दे मासां गहद डाल के पिलावै, या सावू-दाना गौ के दूध में पका के मिथी मिला के पिलावै । रुदासु ज्वर और पित्तज्वर की चिकित्सा एक समान जानना ॥

## चित्तविभ्रम सन्निपात की चिकित्सा ।

इस सन्निपात में विशेष लक्षण, विहीरी, किसीको न चीन्हना पागल सरीखा आनतान बकना, हँसना गाना रहता है । गंधार लोग इसी को भूत प्रेत की याथा समझ सतघँटों के द्वारा उत्तम चिकित्सा न कराके झाड़ू फूक में लग रोगी को यमपुरी की यात्रा करा देने हैं । चिकित्सक को चा-हिये कि साधारण प्रयोग द्वारा मूर्खों को प्रथम शांति करे लेकिन शिर में किसी प्रकार का विघ्न न पहुंचने पावे ॥

पथ्यापर्पटकटुका मृद्वीका दारुजलद भूनिम्बाः ।  
शम्याकपटोलशिवा द्वाधश्चित्तभ्रमंहन्ति ॥

बड़ा एडका बकूल, पित्तपापड़ा, कुटकी, मुनक्का, देवदारु, नागरमोथा, बिरापता, अमलतास का गूदा, पटोलपत्र (परवल का पात) और खुशूज आयलु सब को समान भाग ले २ तोला मात्रा का पूर्वोक्त प्रकार काढ़ा घना के पिलावै यदि रोगी के पतले दस्त आते हों तो अमलतास का गूदा और एड काढ़े से निकाले देय ॥



## चित्तविभ्रम पर अंजन ।

पीपर, कालीमिर्च, शोंठ, होंग, पीलीसरसों, हड़, बहेरा, आंवला, हल्दी, कंजा के बीज, दुधियावच और सेंधानोन सबों को एकत्रित कर मूट कपड़छान कर दकरा के सूत्र में खरल कर के गोली बांध ले और छाया में सुखाय ले । इस गोली को जल में पीट कर अंजन लगाने से चित्त विभ्रम, सृगी, भूतोन्नाद और शरदी से शिर का दर्द आराम होता है ॥

## शीताङ्ग सन्निपात की चिकित्सा ।

इस दुखार में विशेष लक्षण शरीर का अत्यन्त शीतल हो जाना, शरीर का कंपना और भीतर दाह रहता है और इसीका प्रथम शान्त करना श्रेयस्कर है ॥

मदार के जड़ की छाल, सफेद जीरा, त्रिकुटा ( शोंठ पीपर मिर्च ) भारङ्गी भटकटैयाका पञ्चाङ्ग, ककहासिनी और पुहकरमूल । इन सब दवाइयों को समान भाग लें, मात्रा १ तोला से २ तोला तथा पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावै । इसके पीने से शीताङ्ग सन्निपात, सूखा, श्वास और कफ वृद्धि इनका नाश होता है ॥

## शीताङ्ग पर धुरा ।

पित्तापहा, कुलथी, पीपल, घच, कायफर, कालाजीरा, खिरायता, चीता, कहुई तुम्बीकी बीज और हड़ इनका समान भ गले मूट कपड़छान करले । इस घूर्ण को देह में मलने से शीताङ्ग सन्निपात का नाश होता है ॥

## तान्द्रिक सन्निपात की चिकित्सा ।

इस ज्वर की स्पष्ट परीक्षा यह है कि हर समय आंखों के सामने अंधियारा मालुम हो या आधी पलक टपी रहे । इस ज्वर में शिर को तिलों के द्वारा तर रखें और निम्नलिखित दवाइयों का अंजन नेत्र में दें ॥

सेंधानिमक, कपूर, मैनसिल, छोटीपीपर इन चारों चीजों को पीछे

की लार और शहद में सहीन घोंट कर नेत्रों में अंजन लगाने से तन्द्रिक सन्निपात का नाश होता है ॥

काढ़ा ।

भांगीगुडूची, धनकण्टकारि हरीतकी, पौष्करनागराणां ।  
कृतः कपायस्त्रिदिनं निपीता घोरज्वये तन्द्रिकसन्निपातं ॥

भारङ्गी, गुर्च, नागरमेथा, भटकटैया की, पञ्चाङ्ग, हड़का बकला, पुष्करमूल और सोंठ इनका काढ़ा ३ दिन पीने से घोर तन्द्रिकसन्निपात नाश (आराम) होता है अगर यह काढ़ा अधिक गर्मी करे या प्यास की अधिकता हो तो इस काय को पिलावे । नीम पर की ताजी गुर्च ४ तोला, परवरका डाल पात २ तोला, रुसा की पत्ती १ तोला इन तीनों चीजोंकी अधिकचरा कर ४ पुडिया बनाले और पूर्वोक्त प्रकार शाम सवेरे काढ़ा बनाके पिलावे।

### कण्ठकुब्ज सन्निपात की चिकित्सा ।

इस दुखार में शिर का दद कण्ठ का अवरोध और सूखा विशेष कर लक्षण हैं इस उजर में निम्नलिखित काय को पिलावे । ( शृंग्यादि काय ) कंकड़ासिंधी, नागरमेथा, सुष्कभांवली, देवदारु, बड़ेडा और कुरेभा की डाल दो २ तोला, भटकटैया का पञ्चाङ्ग, रुसा की पत्ती और हड़का बकल एक २ तोला, कचूर, चिरायता, भारङ्गी, हल्दी कुटकी, पुष्करमूल चीता, कालीमिर्च, चाय, सोंठ, पीपल और कायफल इन सबों का समान भाग ले अधिकचरा कर डेढ़ २ तोले की पुडिया बना ले और पूर्वोक्त प्रकार दोनों समय काढ़ा पिलावे और किसी प्रकार का बलकारक घूस भी देता जावे कि जिससे रोगी का बलहीन न होने पावे और न कण्ठ सूखे ॥

### कर्णक सन्निपात की चिकित्सा ।

इस उजर में विशेष कर के बाहिरापन, मुख से लार का बहना, कान और गालों में पीडा इत्यादि होता है ॥

रास्त्राश्वगंधा घनकण्टकारी भार्गवचापौष्कररोहिणीनां ।  
 काथःकृतः शृंगभयायुतानां पीतो जयेत्कर्णकं सन्निपातं ॥

कर्णक सन्निपात में यह काढ़ा देने से प्रायः लाभ देखने में आया है, रासन, भटकटैया की जड़, असगंध, नागरमोथा, भारद्वाजी दुधियावच, पुष्करमूल, कुटकी, कफरासिंगी, और सूखा आवला इन सब चीजों को समान भाग ले डेढ़ तोले को मात्रा को पावमर जल में काथ घनाय दो मासा शहद हाल दोनों समय कई दिन पिलाने से निस्सन्देह कर्णक सन्निपात दूर होता है। वैद्य को यह भी उचित है कि यात पित्तादि दोषों को न्यूनाधिक देख के औषधियों की मात्रा को कम जादा कर देवे अथवा औषधको घटा बढ़ा देय बिलकुल किताब के भरोसे से दवा करना उत्तम नहीं है। कर्णक सन्निपात में कर्णमूल जरूरही होता है। उसमें इस लेप को लगाना अच्छा है ॥

कुलथी, कायफल, शोंठ, और सैंफ इन चारों चीजों को समान भाग ले पानी से खूब महीन पीस कुछ गरम कर लेप कर, इस लेप से एक दो दिन में कायदा दृष्टि गोचर न हो तो नीचे लिखे हुये लेप को लगावे। मेरू (लाल मृत्तिका) गोपुरु; शोंठ, कायफल और पुष्पवच सबोंको सिरका में खूब महीन गरम कर लेप कर, यदि इस्से भी लाभ न देख पड़े तो जलीफा द्वारा उस जगह का खून निकलवाय देय बाद इस लेप को लगावे। पीली सरसो, सेंधा नीम, वच, धुवां का करखा, शोंठ, हलदी सबों को पानी में पीस लेप करने से सूजन सहित व्रण नाराम होता है अगर गले में सूजन हो तो भी इस लेप के लगाने से आराम होता है। सेंधानेन और छोटी पीपल दोनों को गरम पानी में पीस नास देने से भी कायदा होता है ॥

### भुग्ननेत्र सन्निपातकी चिकित्सा ॥

इस ज्वर में दृष्टि का अंतरलापन और स्मरण शक्ति का नाश विशेष लक्षण है, इसी को प्रथम शोधन करना मुख्य काम है। अतिव्र में दिल दि-

भाग को शुद्ध करके स्मरण शक्ति को चैतन्य करना और अङ्गुल के द्वारा देही दृष्टी को ठीक करना चाहिये ॥

**श्रवलेहादि ॥**

भूनिम्बमाक्षिकत्रचा सहितचकुर्या ल्वहंकणोपण रसो-  
नक राजिकाभिः । नेत्राञ्जनञ्च लवणोत्तम पिप्पलीभ्यां-  
नस्यंवचा मरिचहृद्ग मधूकसारैः ॥

चिरामता, शहत, दुधियावच, छोटी पीपल, काली मिर्च, लासुन और राई इन सबों को समान भाग ले महीन चूर्ण कर एक एक मास की पुड़िया बना ले और दिन में दो या तीन दफे शहत में गोला करके चटावै । सेन्धा नोन और छोटी पीपल पानी से सूख महीन घोट अङ्गुल करे और वच, मिरच, हॉग, मुलेठी इन सबों को भीठे अनार के रस में महीन घोट नास देवै ॥

**रक्तष्टीवी सन्निपातकी चिकित्सा ॥**

X इस ज्वर में घूँक के साथ सून आता है और बमन भी हो जाता है यह विशेष लक्षण है ॥

पित्तपापड़ा, जवासा, रोहितपास इनका काढ़ा बनाय मिश्री मिला के पिलावै अथवा मुलेठी १ तोला, कतीरा नोद १ तोला दोनों को महीन चूर्ण कर २० पुड़िया बनावै और दिन में चार दफे अथवा छ दफे अर्थात् दो दो घंटे पर शहत के साथ चटावै । और कंकाल मिर्च को चूर्ण कर के नास देय इसे मुख से रुधिर का जाना बन्द होता है । यदि इस्से रुधिर न बन्द हो तो यह काढ़ा देय । नागरमोथा, पद्माप, पित्तपापड़ा, सफेदचन्दन, लालचन्दन चमेली की पत्ती, शतावर, मुलेठी, नीय की छाल और सुगन्धवाशा इन सबों को समान भाग ले दो तोला की मात्रा का काथ बनाय दो मास शहत डाल के पिलावै । इसी प्रकार दोनों समय

पिलाने से रक्तहीवी सन्निपात आराम होता है । इसे भी फायदा न देख पड़े तो यह काथ पिलावे ।

महुआ, मुलेठी, फालसा की छाल, लालचन्दन, तेजपात, देवदारु, और सागवन वृक्ष का फल अथवा छाल सब समान भाग ले दो तोला की मात्रा डेढ़पाव पानी में पकावे एक छँटाक पानी जल जाय मल के छान लेम और दो तोला मिश्री मिला के किसी बोतल में भर देय और दो २ घण्टे पर पिलावे । तथा दूध और अनार के फूल के रस की नास देवे ॥

## प्रलापक सन्निपात की चिकित्सा ॥

इस ज्वरमें अत्यन्त शिरमें दर्द, बुद्धिका नाश, और आन तान बकना विशेष लक्षण है । यह काथ पिलावे नागरसेया, सुगन्धवाला, पित्तपापड़ा, लालचन्दन, धी की छाल सबों को समान भाग ले पूर्वोक्त प्रकार काथ घना के दोनों समय पिलावे ॥

## जिह्वक सन्निपात की चिकित्सा ।

इस सन्निपात में विशेष लक्षण—रोगी सन्ताप करके महा ध्याकुल तथा कठिन कंठक युक्त जिह्वा एवं गूहापन आदि होता है । इसकी चिकित्सा रक्तहीवी के समान करनी चाहिये किन्तु जिह्वा को ऊपरी चिकित्सा से कोमल करना उचित है । और श्मिन्यास सन्निपात की चिकित्सा प्रलापक सन्निपात के समान करना इत्यादि ॥

सन्निपात ज्वर तथा साधारणज्वर के उपद्रवों (तृष्णादि) की चिकित्सा विषमज्वर एवं जीर्णज्वर आदि के लक्षण लिख के तत्पश्चात् लिखेंगे ॥

## अथ विषमज्वर लक्षणम् ॥

यः स्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यांतथैव च । वेग  
तश्चापि विषमो ज्वरः सविषमस्मृतः ॥

जो बुखार सरदी तथा गरमी करके अनियत समय में चड़े और उतरे जिसका वेग विषम हो अर्थात् कभी कम और कभी जादा हो जाय, उसको विषमज्वर कहते हैं। तात्पर्य यह कि प्रथम ज्वर वात, पित्तादि किसी किसम का आया हो और वह ज्वर कुपथ्यादि कारण से रसादि में बना रहा हो और ऊपर से मालुम हुआ हो, कि ज्वर विलकुल छुट गया कुछ काल के बाद पुनः ज्वर आजाय उसे विषमज्वर कहते हैं। इस ज्वर में एक प्रकार का बुखार शरीर में बना रहता है किन्तु मालुम नहीं होता ऊपरी विकार से वही ज्वर तेज हो जाता है, इस ज्वर में पित्त प्रधान है, लेकिन इस बुखार का कोई समय नहीं है जभी आजाय और यह ऐसा दुष्कर ज्वर है कि लोगों को घरसे नहीं छोड़ता यदि उचित औषध मिले तो एकही दिन में छुट भी जाता है। इस विषमज्वर का पांच भेद है जैसे:-

सन्ततः सततोऽन्येषु स्वतीयकचतुर्थिकौ ॥

सन्तत ज्वर, सततज्वर, अन्येषुः ज्वर तृतीयक ज्वर और चातुर्थिक ज्वर इन सबों के लक्षण नीचे प्रकाश करते हैं ॥

सप्ताहवाद्दशाहवाद्द्वादशाहमथापिवा । सन्तत्यायो  
ऽविसर्गीस्यात् सन्ततः सन्निगद्यते ॥ ग्रहारात्रिसततकौ  
द्वीकालावनुवर्तते । अन्येषु एकस्त्वहारात्रादिककालंप्रव-  
र्तते ॥ तृतीयकस्वतीयेन्हि चतुर्थेऽन्हि चतुर्थकः ॥

सन्ततज्वर-उसे कहते हैं जो सात दिन किन्वा दश दिन या बारह दिन तक एक समान ज्वर बना रह के उतरे सात दिन से वात प्रधान ज्वर दश दिन से पित्त प्रधान ज्वर और बारह दिन से कफ प्रधान ज्वर जानना चाहिये ॥

सततज्वर-एक दिन रात भर में दो बसत, चढ़ता और उतरता है ॥

अन्येषु ज्वर-एक दिन रात भर में एकही बार चढ़ता और उतरता है ॥

तृतीयक ज्वर-उसे कहते हैं जो तीसरे दिन ज्वर चढ़े अर्थात् जिस दिन ज्वर उतर गया उसके तीसरे दिन फिर चढ़े अर्थात् एक दिन बीच में खाली देके और इसी ज्वर को कोई अंतरिया और कोई तिजारी कहते हैं ॥

चातुर्थिक ज्वर-उसे कहते हैं जो बुखार दो दिन बीच में छोड़के चौथे दिन आवै जिसे लोक में चौथिया कहते हैं ॥

### तृतीयकज्वर का भेद ॥

कफपित्तत्रिकंग्राहीपृष्ठाद्वातकफात्मकं वातपित्ताच्छि  
रोग्राहीत्रिविधःस्यात्तृतीयकः ॥

तिजारी बुखार अगर प्रथम कमर के पिंठाही जहां तीन हाड़ है उस में दर्द होके अथवा उसे जकड़ के चड़े तो कफ पित्त से जानना, यदि पीठ में दर्द वगैरह होके उष्ण शीतल होके चड़े से वात कफ से और जो प्रथम शिर में दर्द वगैरह उत्पन्न कर के चड़े उसे वात पित्त से जानना चाहिये, जिस ज्वर में जिस दोष का अधिक कोप देखे उसी के अनुसार चिकित्सा करे ॥

विषम ज्वर में जाड़ा और गरमी मालुम होती है उसका कारण दिखलाते हैं । जो विषम ज्वर में वायु कफ के साथ मिल के ज्वर रोगों में बहती है तब ज्वर के प्रारंभ में जाड़ा मालुम होता है और बाद उस के जब वायु कफ से अलग हो जाती है अन्त में पित्त दाह पैदा करता है यही कारण है जो जाड़ा से ज्वर आने के अन्त में पियास अधिक लगती है । उसी तरह जब वायु-पित्त के साथ-रोगों में गमन करती है तब ज्वर के आरंभ में दाह और शीत होने के बाद यानी अन्त में श्लेष्मा अपने स्वभावज गुण से शीत उत्पन्न करता है और जाड़ा मालुम होता है । यह दोनों दाहादिक और शीतादिक ज्वर संसर्गों हैं अर्थात् द्विदोषज हैं, इन में शीत पूर्वक मुख साध्य और दाह पूर्वक कष्ट साध्य है ॥

### चातुर्थिक ज्वरका भेद ॥

चातुर्थकोदशयति प्रभावंद्विविधज्वरः । जह्वाभ्यांश्लै-

ष्मिकःपूर्वं शिरसो निलसम्भवः ॥ मध्यकायन्तु गृह्णाति  
पूर्वं यस्तु सपित्तजः । विषमज्वर एवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः ॥  
समध्येज्वरयत्यहन्यादावन्ते च मुञ्चति ।

चातुर्थि ज्वर दो प्रकार का प्रभाव देखाता है । जो चातुर्थिक कफ  
जन्य है सो पहिले पिहिरिन से चढ़ता है और जो वातोत्पन्न है सो शिरसे  
सुरू होता है । जो चातुर्थिक में पित्त प्रधान है वह मध्य शरीर अर्थात् पेट  
से चढ़ता है । एक प्रकार का विषम ज्वर और है जो चातुर्थिक ज्वर से  
विपरीत याने उलटा रूप से आता है यह कि बीच से दो दिन बराबर  
ज्वर घना रहता है और आदि का एक दिन अन्त का एक दिन छोड़ देता  
है । एक प्रकार का विषम ज्वर और कहते हैं जिसे किसी २ ग्रंथ में नरसिंह  
ज्वर नाम लिखा है ॥

विदग्धेऽन्नरसेदेहेश्लेष्मपित्तव्यवस्थिते । तेनाहुं शीतलं  
देहमहुं मुष्णं प्रजायते ॥ कायेदुष्टं यदापित्तं श्लेष्मा चान्ते व्यव-  
वस्थितः । तेनोष्णत्वं शरीरस्य शीतत्वं हस्तपादयोः ॥ काये-  
श्लेष्मायदादुष्टः पित्तं चान्ते व्यवस्थितम् शीतत्वं तेन गात्र-  
स्यादुष्णत्वं हस्तपादयोः ॥

शरीर में जब भोजन किया हुआ आहार का रस न पचने से (विदग्ध)  
जल गया तब कफ और पित्त दुष्ट होके कोप करते हैं उस अवस्था के ज्वर  
में आधी शरीर शीतल और आधी शरीर गरम रहती है ॥

जब पेट में पित्त दूषित होके प्राप्त हो और हाथ पांव में कफ रहे उस  
से जो ज्वर उत्पन्न हो उसमें पित्त से शिर से पेट पर्यन्त गरम रहता है और  
कफ से हाथ पांव शीतल रहते हैं । इसी प्रकार जब कोष्ठ में कफ दूषित हो  
और ( अन्त ) हाथ पांव में पित्त तब शिर से पेट तक शीतल और हाथ  
पांव गरम रहते हैं ॥



## प्रलेपक ज्वर का लक्षण ।

प्रलपन्निवगात्राणिघर्मेणगौरवेणच । मन्दज्वरविलेपी  
च सशीतःस्यात्प्रलेपकः ॥

जिस ज्वर में पसीना और शरीर भारीपन के वजे से शरीर के ऊपर का चमड़ा लिपासा अर्थात् ओढ़ा सा मालूम हो और ज्वर बहुत तेज न हो एवं जाड़ा मालूम हो उसे प्रलेपक ज्वर कहते हैं । सुश्रुत जी कहते हैं । (ज्वराश्चविषमाः सर्वेप्रायः क्लेशायशोषिणाम्) अन्तर करके जितने विषम-ज्वर हैं सब क्लेश सहनेवाले और धातुहीनवाले को होते हैं । पाठकगणको यह भी याद रखना चाहिये कि ज्वर बिना किसी धातु से अपना पूरा सम्बन्ध किये-अधिक दिवस पर्यन्त शरीर में रह नहीं सकता इस लिये जय देखे कि उत्तम औषध के भी योग से सुखार नहीं उठाइता तो निम्नलिखित लक्षणों में मिला ले कि यह ज्वर किस धातु में प्राप्त है उसे अलग कर देने ही से ज्वर जाता रहेगा । सो सात धातु है रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, (हाड) मज्जा, और शुक्र ॥

## सप्तधातुगत ज्वर लक्षण ।

रसगतज्वर—शरीर में भारीपन, जी का सचलाना, शरीर में आलस्य अरुचि और उदासीनता यह लक्षण रस गत ज्वर में होते हैं ॥

मांसगतज्वर—में विशेष लक्षण, पेट में ऐंठन, पियास, पेशाब और दस्तों का अधिक होना, भीतर दाह और बेचैनी होती है ॥

मेदगतज्वर—में अतिशय पसीना, पियास, विहोसी, आनतान यकना, घमन, शरीर में दुर्गन्धि, अरुचि, श्लानि और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं ।

रक्तगतज्वर—का लक्षण मुह से रक्त थूकना, दाह, विहोसी, घमन घुमरी, प्रलाप, शरीर में कुन्धियां या लाल र दांग पड़ना और पियास घोर होता है ॥

अस्थिगतज्वर—में हड्डी फूटन, कलन पड़ना, हाथ पांव का पटकना, घमन, दस्त और श्वास का फूलना यह लक्षण होते हैं ॥

मज्जागतज्वर—इसमें आंख के सामने अंधियारा मालूम होना, हुचकी, महाश्वास, खांसी, जाड़ालगना, घमन, अन्तर्दाह और ममंस्थान में दर्द यह सब महा असाध्य लक्षण होते हैं ॥

शुक्रगतज्वर—(मरणाप्राप्त्युपात्त शुकस्थानगतज्वरे) शुक्र गत ज्वर होने से मनुष्य निस्सन्देह मर जाता है । इसमें विशेष लक्षण अत्यन्त प्रसंगेहा और अकस्मात् वीर्यपात होते हैं ॥

उक्त सर्व धातु गत ज्वरों की चिकित्सा मुख्य यह है कि बड़ेहुये उपद्रवों को दमन करना तथा क्षीण धातुओं को बड़ा के सम करना और बड़े हुओं को घटा के सम करना जिसकी विधि कुछ आगे लिखेंगे भी । अब जीर्णज्वर के लक्षण कहते हैं ॥

### जीर्ण ज्वर ।

योद्वादशेभ्योदिवसेभ्यज्ज्वरं दोषत्रयेभ्योद्विगुणेभ्यज्ज्वरं ।  
नृणांतनीतिपृति मन्दवेगोभिषगभिरुक्तेज्वरएपजीर्णः ॥

जो बुखार बाहर दिन के उपर निरन्तर घना रहै विशेष करके घात ज्वर चौदह दिन के उपरान्त, पित्तज्वर बीस दिन के उपरान्त और कफज्वर चौबिस दिन के ऊपर घना रहै एवं बुखार बहुत तेज न हो किन्तु मन्द वेग से घना रहै उसको जीर्णज्वर कहते हैं ॥

जीर्ण ज्वर के भेद से एक ज्वर का लक्षण और कहते हैं ।

### वातबलासक ज्वर ।

नित्यमन्दज्वरोरुक्षः शूनःकृच्छ्रेणसिद्ध्यति । स्तब्धांगः  
श्लेष्मभूयिषी नरोवातबलासकी ।

घीमा ज्वर निरन्तर शरीर में बना रहै। शरीर रुखी, हाथ पैर या समस्त शरीर में कुछ सूजन, तमाम बदन में ददं अथवा शरीर के नसें जकड़ी सी मालूम हो कफ की अधिकता यह लक्षण-होते हैं और इसे रोगी बहुत मुस्किल से आराम होते हैं।

### अथ आगंतुक ज्वर के लक्षण ।

अभिघाताभिपंगाभ्यामभिचाराभिशापतः । आगंतुर्जायतेदोषैर्यथास्वंतं विभावयेत् ॥

आगंतुक ज्वर उसे कहते हैं जो बुखार मिथ्याहार मिथ्या विहार द्वारा न हो के अकस्मात् उत्पन्न हो जैसे अभिघात अर्थात् चोट लगने से (अभिपंग) भूतादिकों के लगने से • (अभिचार) मंत्र यंत्र तंत्र के योग से इस में भी वही बात है, अभिशाप अर्थात् गुरु ब्राह्मणादिकों के शाप से यथा दीप जो ज्वर होता है उसे आगंतुक ज्वर कहते हैं । भूत याधा से उत्पन्न ज्वर को लक्षण नीचे लिखते हैं ॥

• अखिल में भूत प्रेत कोई वस्तु नहीं है सिर्फ भय है, किसी कारण से क्यों न हो हृदय कंपित होने ही से ( हास्य रोदन कंपन ) इत्यादि उपद्रव उठ खड़े होते हैं उसी को अज्ञानी लोग भूत प्रेत की बाधा मानने लगते हैं और इस वजह से लोगों का विश्वास और भी जम जाता है कि इस प्रकार से रोग ऊपरी टोटका आदि उपायोंसे छुट भी जाता है यद्यपि यह सब उपाय वैद्य विद्या से संबन्ध रखते हैं जैसे ( घातोन्मादे त्रासनं ) जैसे घायु के उन्माद में (पागल) की भायनक तस्थीरं अथवा रूपोंको दिखलाना, घमकाना (यह भी हो सका है जैसे रोगी के सामने दीपक जला के माला फूल धुनी आदि दे के हाटना कि बतला तू कीन है इसे छोड़ दे नहीं तो तुम्हको आग में जला देंगे) विष रहित सपं से कटवाने का भय देखाना इत्यादि उपायोंसे (विषस्यविषमौषधं) जैसे ( मयात् घायु) हर में घायु विनष्ट जाता है वैसा ही हर दिखानेसे घायु शुद्ध होता है किन्तु अज्ञानात् लोगोंको विश्वास हो जाता है कि अशुक्र आदमी क्लाहने फूकने से आराम हुआ है । इस सेल से

भूताभिपंगादुद्वेगो हास्यरोदनकंपनं । केचिद्भूताभि-  
पंगोत्थं ब्रुवतेविपमज्वरं ॥

अथ भूताभिपंग ज्वर के लक्षण दिखाते हैं—जैसे चित्त का उच्चाट होना, हँसना, रोना और शरीर का कांपना और कितने आचार्य विपम ज्वर को भी भूत बाधा से उत्पन्न मानते हैं । मानने का कारण यह जान पड़ता है कि विपम ज्वर में खास कर तिजारी चीनिया आदि ज्वर यंत्र यंत्र टोटका आदि प्रयोग से भी छुट जाता है । इन सब लेखों से जाना जाता है कि पूर्व भूताचार्य पदार्थ तत्वज्ञान ( किमस्ट्रि सायन्स आदि ) में आम्बास कम रखते थे अथवा उसे याहियात समझते थे । तभी तो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सिद्ध धातों को भूत बाधा मान लेते हैं । यंत्र या कोई जड़ी घुटी हाथ की कलाई या बाहु, गले में बांधना ठीक रक्त के साथ उस का सम्बन्ध कराना है क्योंकि रोग पुराना होने से रुधिर के साथ उन का पूरा सम्बन्ध हो जाता है इसी से जल्द आराम नहीं होते आज फल के विज्ञान दशियों ने इसी लिये धिजुली की चीजें निकाली है कि जिस के पहरने अथवा बांधने से रुधिर, रोग से अपना सम्बन्ध छोड़ के विद्युत् के साथ कर लेता है ॥

हमें लोग नास्तिक न समझें क्योंकि यह हमारा कथन परीक्षित है, हम ने कितने रोगियों को आरोग्य किया है, उनमें से एक दो रोगियों का हाल इस स्थल में लिखे भी देते हैं ॥

जानसेनगञ्ज में सूर्यदीन ठठेरी का पुत्र जिसकी अवस्था २० वर्ष की थी दो यज्ञे रात को दोतलों के गिरने की आवाज से चौक उठा और डर कर प्रागल हो गया, तीसरे दिन दोपहर को सूर्यदीन हमको बुला ले गया, वहाँ हम जाके यह देखा कि चंद काढ़ने फूकने वाले इफाली लोग इफला बजा रहे हैं और यह लड़का अलग एक चटाई पर सफेद नई पोती और गले में फूलों का गजरा पहने बैठा है कहता है कि हम फलाने दरगाह के सहेद हैं, हमारे साथ बहुत पलटनें हैं देखो दे आदमी हमारा वह तार पर

## ज्वर के दश उपद्रव ।

श्वासेमूर्च्छाऽरुचिश्छर्दिस्तृष्णातीसार विडग्रहः ।

हिक्काकासेऽङ्गदाहश्च ज्वरस्योपद्रवादश ॥

१ (श्वास) अधिक हांसी या गले में फफूँ का घुरघुराहट अथवा सांस फफूँ से लिया जाय २ ( मूर्च्छा ) बेहोसी या अधिक सुस्ती ३ ( अरुचि ) खाना पीना अच्छा न मालूम हो अर्थात् किसी वस्तु का ज्ञापका यथार्थ बोध न हो ४ ( छर्दि ) यमन यानी कै होना अथवा जी मचलाना या मुख से पंछा छूटना ५ ( तृष्णा ) अधिक प्यास अर्थात् पानी से शांति न हो ६ ( अतीसार ) दस्त पतले होना ७ ( विडग्रह ) या दस्त बिलकुल ही न होना । ( हिक्का ) हुचकी का आना, रांसी और तमाम शरीरमें जलन मालूम होना यह दश उपद्रव ज्वर में होते हैं ॥

बैठा है । हम ने सब झाड़ने वालों को हटा दिया और लड़के को हांट के फटा कि लाओ हाथ तुम्हारी नाड़ी देखें उसने हाथ दे दिया, उस समय उस की नाड़ी की गति अति वेगवान थी जैसे तीव्र ज्वर वाले की होती है हम उसे घोमाइँड आक पुटासियम् पानी में घोला के पिला दिया और सबों को यहां से हटा दिया सिर्फ दो आदमी नियत कर दिया कि जय तक यह सो न जाय हाथ पैर धीरे २ दयाते रहा और यह उठ के भागने न पाये, यह लड़का आध घंटे के बाद सो गया और ५ घंटे शाम को जय वह सो के उठा तो हम उसे आरोग्य पाया ॥

सन् ८८ में हम श्रीमान् राजा साहा के छोटी रानी जी की चिकित्सा कर रहे थे, एक दिन की यात है कि राजा साहय के एक भयवाद् जिन का नाम याद नहीं है पर्वत पर तीसिल खराने गये और यहाँ डरकर पागल हो गये राजा के सिपाह छुटे उन्हें हूँद के पकड़ लाये और राजा साहय के मुसाहय पं० भगवान दत्त के दालान में बँठाया' चार पांच आदमी उन्हें चांभे से तै।भी उस का यादियात बकना, सीगों पर धूकना, दांत काटना आदि धंद नहीं था, राजा साहय की आज्ञानुसार हम और राजधानी के हाकर दोनों ने जाके उन्हें देखा और दोनों जने राजा साहय से आके बयान किया कि डर गये हैं और उसी से इन के शिर पर गरमी चढ़ गई

## ज्वर के साध्य लक्षण ।

बलवत्स्वल्पदोषेषु ज्वरःसाध्योऽनुपद्रव ।

जो मनुष्य बलवान है, और जिन के वातादि दोष स्वल्प हैं अर्थात् दोष बहुत बड़े नहीं है (उपद्रव से दोष बड़े हुये जान पड़ते हैं) और जो ज्वर के दृश्य उपद्रव ऊपर लिखे गये हैं उन में से स्वासादि कठिन उपद्रव न हो तो साध्य जानना । सुख साध्य उसे कहते हैं जो शरीर के बाहरी भीतरी कुछ भी उपद्रव न हो सिर्फ ज्वर मात्र हो वह सुख साध्य है । सुख साध्य ज्वर स्वल्प ही चिकित्सा से आराम हो जाता है ॥

जिस बुखार में भीतर दाह और पियास जादे हो, कुछ आन तान ब-कता हो, हांफी, घुमरी, शरीर में दर्द, पेट में शूल, पसीना न आता हो, न दस्त हो और न हवा छूटै उसे कष्ट ज्वर जानना इसीको वैद्य लोग अन्तरवे-गी ज्वर कहते हैं ॥

हे, राजा साहय ने कहा कि पंडित जी आप नहीं जानते इन को एक दो बार पहाले भी इसी तरह हो चुका है और बड़े २ क्राहने वाले आये हैं तब आराम हुए हैं, यह एक दफे पहाय पर लाल फंदाते से एक लाल इन के पिंजरे में फंदा और चौड़ी देर के घाद मांस का लोचड़ा सा घन गया यह देख पिंजरा फेंक भगे और धीमार हो गये और बड़ी मुस्किलों से आराम हुये । राजा साहय से हम ने कहा कि हमारे पास एक पलीता है यदि आप कहें तो उसे सुंघा के भूत उतार दें, राजा साहय ने कहा अवश्य आराम करना चाहिये । हम ने घूना और नौसादर को मिला के एक पोटरी बनाया और रोगी के पास आके बैठ गये और दो आदमियों से कहा कि तुम लोग थांभे रहो और सब लोग छोड़ दो हम ने एक हाथ से रोगी की चौटी थांभ के पूछा कि सच कह तू कौन है छोड़ के चला जा नहीं तो अभी महाबज्र पलीता सुंघाताहूँ तू जल जायगा इतना कह के नाक में पोटरी लगा दी (किसकी नाक है जो अमोनिया की भाँर एक मिनट भी बरदास्त कर सकै) वर फिर क्या बहादुर बोल उठे कि

अथ ज्वरस्य असाध्य लक्षण ॥

ज्वरःक्षीणस्यशूनस्यगम्भीरोदैर्घ्यरात्रिकः । असाध्यो  
बलवान्यश्चकेशसीमन्तकृज्ज्वरः ॥

अब असाध्य ज्वर का लक्षण लिखते हैं । जो मनुष्य बुखार में अति दुबला हो गया हो, सम्पूर्ण शरीर अथवा हाथ पैरों में सूजन आगयेहों, ज्वर पीछा न छोड़ता हो, शिर में चांद की जगह का बाल उड़ गये हों और बुखार के दुप्कर लक्षण मिलते हो तो असाध्य जानना ऊपर के श्लोक में जो गम्भीर शब्द आया है वह एक प्रकार का ज्वर होता है जिसे वैद्यक में गंभीर ज्वर कहते हैं, उसके लक्षण यह हैं जैसे अन्तर्दाह, पियास, अतिशय वातदोष से मल का विबन्ध तथा कास श्वास का प्रादुर्भाव हो उसे गम्भीर कहते हैं इसे भी असाध्यही समझना और भी ज्वरों के असाध्य लक्षण लिखते हैं ॥

असाध्य लक्षणानि ॥

हेतुभिर्बहुभिर्जातोबलिभिर्बहुलक्षणः । ज्वरःप्राणान्त  
कृदश्रुशीघ्रमिन्द्रियनाशनः ॥ योहृष्टरोमारक्ताक्षोहृदिस-  
ह्वातशूलवान् । वक्त्रेणचैवोच्छ्वसतितज्वरोहंतिमानवम् ॥  
हिक्वाश्वासवृषायुक्तंमूढंविभ्रान्तलोचनम् । सन्ततोच्छ्वासिनं

छोड़ दो मैं जाता हूं हम ने भी जोर से ताली पीटा कहा चल दे, रोगी चै-  
तन्य हो गया उसी समय वह दूध पिषा और घर में जाके भोजन किया इस  
क्रिया से लोग बड़े आश्चर्यित हुये किन्तु हम ने सब लोगों को वह पलीता  
बता दिया और शिक्षा दिया कि भैत की बाधा बिलकुल भूठ है सिर्फ  
हृदय में भय का समाजानाही भूत भैत का बाधा है, इसी तरह हमने सैकड़ों  
मनुष्यों को आरोग्य किया है और सबों का हाल रजिस्टर में दर्ज है किन्तु  
स्याना भात्र से नहीं लिखा ॥

क्षीणानरक्षयतिज्वरः ॥ आरम्भाद्विषमोयस्तुयस्यवादै-  
र्घ्यरात्रिकः । क्षीणस्यत्वातिरूक्षस्यगम्भीराहन्तिमानवं ॥

जो ज्वर बलवान हो और अनेक कारणों करके उत्पन्न भया हो और अपने मर्यादा के भीतर ही आंख कान आदि इन्द्रियों की शक्ति को नाश कर दिया हो वह ज्वर निस्तन्देह प्राण नाशक होता है ॥

जिस ज्वर में रोगी के वारम्बार रोम खड़े होते हों, नेत्र सुखें, छाती में दर्द, नासिका बन्द मुख से श्वास लेता हो तो जानना कि वह ज्वर रोगी को जल्द मारेगा ।

जो ज्वर रोगी, हुचकी, श्वास और पियास कर के अतिशय दुखित हो, संज्ञा रहित अर्थात् जिस के होस हवास दुरुस्त न हों, जिस के नेत्र बैठ गये हों या किसी को चीन्हता न हो और मुख से श्वास लेता हो तथा अतिक्षीण हो गया हो उस को समझना कि अब यह यमलोक की यात्रा करेगा ।

जो ज्वर आरम्भ काल ही से विषम हो गया हो और असाध्य के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हों ऐसा गंभीर ज्वर दुर्बल मनुष्य को नहीं छोड़ता अर्थात् मारता ही है । क्षीरपाणि महाराज के मत से एक प्रकार का ज्वर मंथर नामक होता है उस का लक्षण श्लोक न लिख के सिर्फ भाषा में नीचे प्रकाश करते हैं ।

### मन्थर ज्वरस्य लक्षणम् ।

प्रथम ज्वर उत्पन्न हो के तब सब निम्नलिखित लक्षण आ मिले अथवा अतीसारादि अन्य रोग में मिले अवश्य असाध्य जानना जिस रोग में ज्वर, पुमरी, वेहोसी, अतीसार, कै, पियास निद्रा का न आना, मुख लाल, तालू और जीभ सूखे तथा मुख पाक और कण्ठ में सरसों सरसों से फुंसियां हों इत्यादि लक्षण युक्त रोग को मंथर कहते हैं । इस का कारण विशेष कर सरस ज्वर में घी खाने तथा पसीना रोकने से होता है । हमारे हारीत मुनि कुछ औरही कहते हैं । जिस मनुष्य के ज्वर टफटफा, दांत और ओठों में श्यामता,



नाक, जीभ, मुख और कण्ठ में ललामी, नेत्र बक्रे के नेत्र के समान निकल आये हों ऐसे रोगी को जो सात दिनों में मोतियों की माला गले में न पहराये तो २१ दिन के भीतर उस के सम्पूर्ण अङ्ग में सरसों के समान छाले पड़ जायेंगे और मुस्किल से आराम होंगे ।

## विषमज्वर की चिकित्सा ।

यह विषमज्वर जो दिया रात्रि में सिर्फ एक घाट आता हो, या दूसरे दिन, तीसरे दिन अथवा चौथिया आदि हो इसमें बहुत पहरेज कराने की जरूरत नहीं है, इतना अवरय ध्यान रहे कि यदि कोष्ठबद्ध हो तो मुलायम रेचन दे देवे या ज्वर किसी औषध से न छुटे तो अन्त में स्नेहादि क्रिया के धाद देश काल के अनुसार धमन विरेचन करा देनेही से ज्वर निर्मूल हो जाता है ॥

अब जाहा दे के जो विषमज्वर आता है जिसे शीत पूर्व ज्वर कहते हैं उसकी उत्तम २ परीक्षित औषधियां जिनसे असंख्य रोगी आराम हुये हैं नीचे लिखते हैं ॥

## शीतपूर्व ज्वर पर काढ़ा ॥

भटकटैया (फटेरि या कंटकारि) धनियां, शोंठ, निम्ब वृक्ष परके गुरब ( गिलोय ) मोथा, पद्माप, लालचन्दन, चिरायता, पटील, (परवर का पत्र) रूसा, पुहंकरमूल, फुटकी, इन्द्रजय, नीम की अतर छाल, भारङ्गी, पित्तपापड़ा, इन सब दवाइयोंको हम वजन से अर्धकघरा कर दो तोला लेकर पावभर जल में रात को भिजा देय सवेरे जोस देवे जय एक छँटाक पानी रह जाय शीतल कर भल छान के पी जाय, इसी प्रकार सबेरे भिजावै सांम को जोस देके पिये यह पूर्ण मात्रा का ध्यान है, उमर कम हो अथवा रोगी कमजोर हो या रोगी के मिजाज में गरमी अधिक हो या गरमी अधिक पड़ती हो तो मात्रा कम कर देय । पथ्य-दूध भात अथवा मूंग की दाल पुराने चावल का भात, गेहूँ की रोटी, लौकी की तरकारी आदि । इस प्रकार दोनों समय पिलाने से कैसाहू पुराना विषम ज्वर हो छुट जाता है ऐसा कितनी धार

आजमाया गया है। अगर रोगी के पेट में (दाह) जलन हो गिर में घुमरी आदि वातपित्त के उपद्रव हो तो इस अर्क को पिलावे ।

## विषमज्वर पर अर्क ।

यह अर्क शीतपूर्वज्वर और उष्णपूर्वज्वर दोनों को आराम करता है तथा अन्तर दाह, घुमरी, जीमबलाना, हाथ पैर के जलन आदि को भी शांति करता है ।

घनियां, गाजवां के फूल, बर्गगाजवां ( गाजवां के पत्ते ) लालचन्दन, सफेदचन्दन, फासनी, खीरा ककड़ी का बीज, काहू का बीज, कुलफा का बीज, बर्गयनपसा (बर्ग पत्ते को कहते हैं) गुलनीलोफर, गुलाब के फूल, यह सब एक २ छंटाक, लौकी (घीया) ३ पाव पेटा (श्वेत कूसाण्ड) २ पाव, कपूर छ मांसा, घीया और पेटे को छोड़ और सब दवाइयों को ३० सेर पानी में रात को भिजा दे सबेरे घीया और पेटे को डुकड़े २ कर सब को डेगभभके में भर १५ सेर अर्क खींच ले । साम सबेरे और दोपहरको आध २ पाव अर्क उसमें जरासा मिश्री डाल के पिये । चोढ़े ही दिनों के पीने से विषमज्वर छूट जाता है पण्य वही जो ऊपर लिख आये हैं । यदि पन्द्रह दिन के पीने से ज्वर न छुटे तो इस अर्क को पिला के दो चार दिन फिर ऊपर लिखे हुये काढ़े को पिलाये । ज्वर आते २ रोगी निर्बल पड़ गया हो और ज्वर भी न छूटता हो तो ज्वर सूटने की दवा देता जाये और, जिसे रोगी का बल न घटे उपाय करे । अगर गर्म मिजज वाला हो तो यह अर्क पिलावे ॥

## अर्क गाजर ।

गाजर हड्डी और छिलका दूर किया हुआ १० सेर, फिस्सिस २ सेर दोनों को एक डेग में मूय २५ सेर पानी के डाल डेग का मुह ढांपके पकाये जिसे धुवां न निकलने पाये याद चार घंटे के डेग को उतार, शीतल कर लें और नीचे लिखी हुई दवाइयों को कुचल के उसी में डाल और ५ सेर

गौ का दूध हाल १५ सेर अर्क खींच लीये । दवा यह है । दालचीनी, गु-  
लाब के फूल नागरमोथा, धिजीरे का छिलका, चोवचीनी, यहिमन सफेद  
यह सब चार २ तोला सफेद चन्दन दो तोला । इस अर्क के पीने से मन  
प्रसन्न, जोहों में ताकत, धातुपुष्ट और मन चलवान होता है अगर मिजाज  
सर्द अर्थात् बलगमी हो तो इस घूर्ण को दोनों समय शहद के साथ चटावे ॥

बन्गालोचन ४ तोला, छोटीलायची २ तोला, सत्त गिलोय २ तोला,  
यहिमन सफेद १ तोला, छोटीपीपर शुद्ध ६ मासा, दक्षिणी तज ६ मासा,  
अकरकरहा ३ मासा, हमीमस्तगी ३ मासा सब को महीन घूर्ण कर डेढ़ २  
मासे की पुड़िया बना ले और शहद के साथ चाटे ॥

### विषमज्वरे ज्वारांकुशो रसः ।

ताम्रतोद्विगुणतालं मर्दयेत्सुपवारसैः । प्रपुटेत्भू-  
धरेशीते वज्रीक्षीरेणमर्दयेत् ॥ प्रपुटेभूधरेपश्चात्पंचगुंजा  
मितंभजेत् । आर्द्रकस्यरसेनैव सवज्वरनिर्कृतनः ॥ एका-  
हिकं द्वाहिकं च त्र्याहिकं चतुराहिकम् । विषमंचापि शी-  
ताढ्यं ज्वरं हन्ति ज्वरांकुशः ॥

शुद्ध ताम्रा से दूना शुद्ध हरताल लके फले के रस में घोंटके भूधरयंत्र  
में आंच देवे (भूधरयंत्र की क्रिया रस प्रकर्ण में लिखी है और वैद्य लोग प्रायः  
जानते भी हैं) शीतल होने पर निकाल के हेहुड़ के दूधमें घोंटके फिर उसी  
प्रकार भूधरयंत्र की आंच देय बाद निकाल महीन घूर्ण कर शीशी में रस  
देय । इस ज्वरांकुश की मात्रा एक रत्ती से पांच रत्ती तक है । दोनों समय  
अदरख के रस के साथ खाने से एकाहिक, अंतरिया, तिजारी और चौथिया  
ज्वर आराम होता है ॥

### महाज्वरांकुशोरसः विषमज्वरे ।

शुद्धसूताविषगंधः प्रत्येकंशाणसंमितः । धूर्तवीजं

## कूर्इनाईन ।

यद्यपि हमने आरोग्यदर्पण के दूसरे खण्ड में अनेक द्विपान्तर्रीय चिकित्सकों के मत द्वारा कूर्इनाईन का मलीमांति खण्डन किया है और यथार्थ में कूर्इनाईन से बहुत हानि पहुंचती है । ज्वर को छूटा देता है यह परीक्षित है किन्तु उसी के साथही लोगों का अन्धा लङ्घन लूला नपुंसक तक बना देता है, इसमें एक कारण और भी है कि डाक्टर लोग एतद्देशीय वैद्य विद्या के न जानने से यहां के मनुष्यों के प्रकृति से अपरचित रहते हैं । सब साधारण को ज्वर रोग में कूर्इनाईन और घड़ाघंड़ चिरायते का अर्क पिलाना शुरू कर देते हैं । बुखार तो जल्द छुट जाता है लेकिन कलेजे पर ऐसी गरमी जमजाती है कि धरसें नहीं हटती । लेकिन जिस प्रकार हमने कूर्इनाईन के द्वारा लोगों का असाध्य शीतपूर्व ज्वर छुटाया है पाठक गणों के उपकारार्थ प्रकाश करते हैं ।

ज्वर आने के दो घंटे पहले कूर्इनाईन को इसतरह देने से ज्वर छुट जाता है । कूर्इनाईन २ रत्ती, टाटारिक ऐसिड (इमलीका सत्त) १० रत्ती, मिश्री २ तोला । पहले मिश्री को पत्थल की कूड़ी में आधपाय पानी में सरयत घनाय उसी में कूर्इनाईन और इमली के सत्त को घोल के पिला देय अगर इमली का सत्त न मिले तो एक या दो नीयू का रस डाल दे । अगर पारी टर जाय तो दो तीन घंटे पर फिर पिलावे । जिस ज्वर का कोई नियम न हो जून कजून आवे तो उस में पूर्वोक्त प्रकार से कूर्इनाईन को दिन में तीन बार पिलावे, दोही तीन दिन में ज्वर नष्ट हो जाता है । सिंघाय तेल कच्चे फलों के और सयुपथ्य है ।

यिषम ज्वर, यंत्र मन्त्र टोटका आदि से भी नष्ट हो जाता है ऐसा अनेक बार अनुभव किया गया है । पन्द्रह अयया धीसा यंत्र को मङ्गल रविवार के दिन अष्टगंध से पीपल पत्र पर लिख कर लाल सूत्र में लपेट पुरुष के दक्षिण बाहु और स्त्री के याम बाहु में बांधने से ज्वर नष्ट हो जाता है । किन्तु यन्त्र लिखने वाला आचारशील ब्रह्मचारी, या कुमारी कन्या या पतिव्रता धर्मवती स्त्री होनी चाहिये ।

## ज्वराधिकारे मूलिका धारणम् ।

द्रव्यों में अनेक गुण हैं और उनका रक्त मांसादिकों के साथ ऐसा सूक्ष्माति सूक्ष्म सम्यन्व रहता है जिसका जानना बड़े २ विद्वान्दर्शियों को दुर्लभ है किन्तु सम्यन्व यथात् प्रत्यक्ष फल दर्शन होने से मान लिया जाता है कि अमुक औषधि अमुक रोग को नाश करती है और बहुत सी ऐसी भी दवा हैं जो अपने प्रभाव से कार्य सिद्ध कर देती हैं जैसे ( ज्वरं हन्ति शिरावद्वा सहदेवी जटायवा ) शिर में घांघी सहदेई की जड़ ज्वर को नष्ट करती है । यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है किन्तु अज्ञानी लोग ऐसे २ प्रमाथों को देख गुहकों के वशीभूत और प्रेत याघा मानने लगते हैं ।

## एकाहिक ज्वरे मूलिका धारणम् ।

काकजंघावलाश्यामा ब्रह्मदंडीकृतांजलिः । पृश्निप-  
र्यप्यपामार्गस्तथाष्टह्रजोऽष्टमम् ॥ एपामन्यतममूलं पु-  
ष्येणोद्धृत्ययत्नतः । रक्तसूत्रेणसंवेष्ट्य बहुमैकाहिकंजयेत् ॥  
श्रौलूकंदक्षिणंपक्षंसितसूत्रेणवेष्टयेत् । बन्धयेत्त्वामकर्णेतु-  
हरत्यैकाहिकंज्वरम् ॥ कर्कटस्यविलोद्धभूतमृदातुतिलकं-  
कृतं । एकाहिकंज्वरंहन्ति नात्रकार्याविचारणा ॥

काकजंघा जिसको चकसेनी और मरी भी कहते हैं, बरियारा, काली तुलसी, ब्रह्मदण्डी, कृतांजलि, पिठिवन, अपामार्ग जिसे चिचरा तथा लट-जीरा भी कहते हैं और भंगिरा इन आठो चीजों में से चाहे जिसे पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक पवित्र होके उखारि लावै और उसकी जड़को लाल सूत्र में लपेट कर हाथ या गले में बांधने से एकाहिक ज्वर जिसे अन्तरा कहते हैं दूट जाता है । घुग्घु चिड़िया के दहिने तर्फ का पंख सफेद धागे में लपेट के घाये कान में बांधने से अन्तरा ज्वर नष्ट हो जाता है । कर्कट अर्थात् फेकड़ा के विल की माटी का तिलक करने से भी एकाहिक ज्वर जाता रहता है ॥

## तृतीयज्वरे मूलिका बन्धनं ॥

अपामार्गजटाकल्यालोहितैःसप्ततन्तुभिः । वद्धावाररेवे-  
स्तूर्णज्वरं हन्ति तृतीयकं ॥ कर्णस्यमलजालेनवर्तिकृत्वांप्रय-  
त्नतः । ज्वालयेत्तिलतैलेनकज्जलंग्राहयेच्छनैः । अज्जयेन्नेत्र-  
युगलंज्याहिकंज्वरशान्तये ॥

अपामार्ग ( लट्जीरा ) की जड़ की रविवार के दिन उखाड़ के उसे सात तार के लाल धागे से बांध बांध या गले में बांधने से तिजारी ज्वरका नाश होता है । फान का सैल रुई में लपेट के घसी घनावे और कालीतिल के तेल से कज्जल पार के नेत्रों में लगाये तो तिजारी ज्वर का नाश हो ॥

## चातुर्थिक ज्वरोपायः ॥

चातुर्थिकोगच्छतिरामठस्य घृतेनजीणेन युतस्यनेश्यात् ।  
लीलावतीनां नवयौवनानां मुखावलोकादिवसाधुभावः ॥  
अखण्डितशरत्काल कलानिधिसमानने । चातुर्थिकहरं  
नश्यं मुनिद्रुमदलांबुना ॥

भावार्थाः—(रामठ) हींग को पुराने घृत \* में घोंट कर नाश लेने से चातुर्थिक ज्वर अर्थात् चौथिया बुखार कैसे नष्ट होता है जैसे ( लीलावती ) क्रीड़ा करनेवाली नवयौवना + स्त्रियों के मुख देखनेसे साधु पुरुषोंका साधु भाव (धर्मशीलता) नष्ट हो जाता है ॥

\* जीर्णघृतो दशधर्पादृद्धः—दश धर्ष के ऊपर होने से पुराना घृत कहा जाता है ।

+ नव (लक्ष्म) यौवनानाम्—प्रसूतानां—प्रसूतागतयौवना—नवयौवना स्त्री तभी तक कहाती है जब तक लड़का न हो, लड़का वाला होने से गत यौवना हो जाती है ॥

लोलिम्बराज वैद्य रत्नकला को समझा के कहते हैं कि हे शरतकाल के पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली (मुनिद्रुम) आगस्तवृत्तके पत्तों का केवल रस सूघने से याने नास लेने से चौथिया ज्वर नष्ट हो जाता है ॥

अन्यत्र—“वसतिशिरसि मेघनादभ्रुले, व्रजतितराधिपमेविल। सट्टे” हे विलास दृष्टे, मेघनाद मूल अर्थात् घौराई की जड़ को शिर में घांघने से विषम ज्वर शीघ्रही नाश होता है। सिर्फ मूलही की क्या बात है मन्त्रादिकों के काढ़ने तथा उतारा आदि करनेसे भी विषम ज्वर नष्ट ही जाता है और उसका कारण रक्त को रोग से सम्बन्ध छोड़ाना है ॥

### तिलजलांजलि ।

तन्वद्भिर्गङ्गात्तरतीर भूमौ ममारहाकोप्य सुतस्तपस्वी ।  
जलांजलिं तस्यकृतेददातु सैकाहिकस्यादादितेनुजन्मा ॥

भाषार्थः—गङ्गा जी के तट की उत्तर भूमि पर कोई पुत्र हीन तपस्वी मरा या उस तपस्वी को वह मनुष्य जिसे अंतरा दुखार आता हो यदि तिल के सहित अथवा सिर्फ जल की अंजलि दे अर्थात् उस तपस्वीके नाम तर्पण करे तो एकाहिक ज्वर जाता रहे। यही घघन दालभ्य में भी लिखा है \* (गङ्गायामुत्तरेतीरे अपुत्रस्तापसे। मृतः) । तस्मैतिलोदकंदद्यान् मुष्यते सन्ततज्वरात् ॥ तन्त्रान्तरेतु—यानरस्याकृतिंलिख्य पटिकायांपुनःशृणु । गम्य पुष्पाक्षतैधुपै रचयेत्तांमिषग्वरः) अन्य तन्त्रों में लिखा है कि राती से यानर के आकार एक मूर्ति लिखकर चन्दन अक्षत पुष्पादिसे पूजन करे और इस मन्त्र को पढ़े ज्वर। गमन समय में तो ज्वर का विनाश हो (मन्त्रः) ओं ह्रीं ह्रीं श्रीं सुग्रीषाय महाबलपराक्रमाय सूर्यपुत्राय अमित तेज से एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिक महाबल-भूतज्वर, भयज्वर, शोकज्वर क्रोध-

\* दालभ्य नामक एक बहुत प्राचीन स्तोत्र है उसके द्वारा सार्जन करने से विषमज्वरादि रोग छुट जाते हैं। हमारे पुराने पण्डित लोग तो उसका प्रभाव ऐसाही वर्णन करते हैं। कहां तक सत्य है नहीं कह सक्ते किन्तु इतना अवश्य कहेंगे कि मंत्र यन्त्रादि सर्वथा मिथ्या नहीं हैं ॥

ज्वर घेतालज्वराणां दहदह पचपच अयतर अयतर कलिहरय महावीर वा-  
नर ज्वराणां यन्थयन्थ ह्रीं ह्रीं हुं फट स्वाहा और भी लिखा है "समुद्रस्यो-  
त्तरेकूले कुमुदीनामद्यानरः । तस्यस्मरणमात्रेणज्वरोयाति रसातलम् ॥

### ज्वर नाशक माहेश्वर धूपः ।

हिंगुलदेवकाष्टं च श्रीवेष्टवृत्तमेव च । गंध्यास्योनि  
तथा ध्यामं निर्माल्यंकटुरोहिणी ॥ सर्पपनिम्बपत्राणि  
पिच्छाहि कंचुकं तथा । मार्जारविष्ठागोशृंगं मदनस्यफ-  
लानि च ॥ द्वेष्टहतीवचाचैव कार्पासास्थि तुपास्तथा ।  
छागगोमायुविट्चैव हस्तिवंतस्तथैत्र च ॥ एतत्सर्वं समा-  
हृत्य छागंमूत्रेणभावयेत् । उदूखलेतुसंकटत्र स्थापयेन्मू-  
न्मयेशुभे ॥ घ्राणमात्रेणधूपेयंदीयते यत्रवेश्मनि । नत-  
त्रसर्पास्तितन्ति नपिशाचानराक्षसाः ॥ एषमाहेश्वरो  
धूपः सर्वज्वरविनाशनः । एकाहिकं द्वाहिकं वा त्रयाहिकं च  
चतुर्थकम् ॥ एवमादीन् ज्वरान् सर्वान् नाशयेन्नात्रसंशयः ॥

हिंगुल, देवदास ( श्री वेष्ट ) - जिस् को इपुष, यंगदेश में सरल वृत्त  
और कही २ रालाधूप कहते हैं इसी से तारपीन तैय्यार होता है । घी गी  
की हड्डी रोहित घास बेलपत्र, कुटकी, पीलीसर्से, नाथ के पत्र, मुरले का  
पंख, सांप की केंचुल, बिलारका विष्ठा, गौ की सींग, मैनफल, छांट, भटकटैया  
और यही भटकटैया जिसे बनभांटा कहते हैं दोनों का पंचाङ्ग, यक्ष वेनुवर  
( कपास का धीज ) धान की भूसी, बकरी और सियार का विष्ठा, हाथी दांत  
इन सब चीजों को एक में मिला के बकरी के मूत्र की भावना अर्थात् उसी में  
सबों का तर कर के सुखाय लेय, याद खरल में कूट महीन कर के किसी  
अच्छे घरतन में रखदे और समय पर धूप देवे इस माहेश्वरधूप के प्रभाव से  
घर में सर्प पिशाच राक्षस रह नहीं सके और अन्तरा आदि सब ज्वरों का  
नाश होता है । धूप देते समय इस मंत्र को पढ़ें - ओं नमो भगवते रुद्राय  
उमापतये सम्पन्नाय नन्दिकेश्वराय स्वाहा । अपराजित आदि और भी अनेक  
ज्वर नाशक धूप हैं जिन्हें पांचवें खण्डमें बयान करेंगे । इस ध्यान से हमारे  
नवशिक्षित गण जो प्राचीन पुरुषों के इतिहासों को कभी नहीं देखा सुना



हे और न उनके हृदय में ऐसी शक्ति है कि जो स्वयं अनुभव कर सकें हों यदि कोई अंगरेज आं के लिक्चर में यही बात कहे तो निस्सन्देह प्रशंसा की बात समझी जायगी ।

## ज्वरनाशक दीपः ॥

छण्णोरगोन्मत्तबीजगन्धगोशृङ्गतैलजः । मृतकपर्पटवर्त्याच  
दीपःसर्वज्वरापहः ॥ छण्णसर्पवसां, धतूरबीजतैलं, वृषभ-  
शृङ्ग तैलं एभिर्मृतक वस्त्रवर्त्यादीपः सर्वज्वरापहः ॥

काले साप की चर्ची, धतूर के बीज का तेल, गन्धक और वेल के सींग का तेल सब को एकत्रित कर मुरदे के ऊपर के कपड़े ( कफकन ) की धती बनाय उक्त तैलों में दीपक जला कर गृह में रखने से सम्पूर्ण विषम ज्वरों का नाश होता है । यह क्रिया भीम विनोद ग्रंथ में लिखा है ।

## जीर्ण ज्वर की चिकित्सा ॥

जीर्ण ज्वर में दोनों समय गुच का काढ़ा पिलाने से बहुत फायदा देखा गया है अथवा शितापलादि चूर्ण को सहत में चटाप के ऊपर से गुच का काढ़ा पिलाने से और भी जल्द फायदा होता है । लाजादि तैल को मर्दन करने से भी लाभ देखा गया है ।

## उपद्रव शमनोपायः ।

ज्वर रोग में जो उपद्रव बड़े हों उन के शांति करने के उपाय अथ संक्षेप से प्रकाश करते हैं क्योंकि बड़े हुये उपद्रव अत्यन्त क्लेशदायक होते हैं बिना उन्हें शांति किये रोगी को चैन नहीं मिलता; इस लिये जिस प्रकार से शमन हों उसी तरह की चिकित्सा करना किन्तु इतना अत्यन्त ध्यान में रहे कि कोई क्रिया ज्वर का विरोधी न हो ।

## कोष्ठवद्ध ।

पित्ताधिकारी ज्वर में तो कुछ दस्त होता ही है, किन्तु वाताधिकारी ज्वर में तो मल मूल जाता है, और बिना मल उतरे ज्वर नहीं धिमाता इस लिये यह दया देना जरूरी है ।

बड़ा दड़का धकूल, हरीसभाप, शोठ, और कालानोन सबों को बराबर छे कूट ऊपर छान कर लेय उ माशा अथवा कुछ अधिक चूर्ण को रात में गरम

जल के साथ खिला देने से सबरे गुलाब दस्त आ जाता है । अगर मिर्जाज में गरमी अधिक हो तो दो तोला गुलाब का गुलकण्ठ और दो तोला चीरखिस्त दोनों को जल में पीस गुनगुना कर के पिलाय देय दस्त अवश्य होगा ।

## पिपासा ।

अगर रोगी को पिपास अधिक हो तो इस पानी को पिलाये । घान का लावा ४ तोला, धरोह ( धरगद के दूध में जो जटा सा लटकता है ) २ तोला, कमलगट्टे को गरी १ तोला, तीनों चीजों की पीटरी पानी में डाल दे और उसी पानी को पिलाये, यदि रोगी गरम पानी पीता हो तो गरमही जल में पीटरी को डाल दे अथवा धारम्यार शीतलचिनी को मुख में डाल के फुचले और जल से उतार जाये । अथवा आयला, कमलगट्टे की गरी, जूट, घान का लावा, धरोह सबों को धराधर ले महीन पीस शहदमें सान के गोली यांच लेंप, इस गोली को मुख में रखनेसे पिपास का अधिकता और मुख का सूखना नाश होता है । रोगी को शरीर में दाह की अधिकता हो तो पित्त ज्वराधिकार में जो दाह शान्तिकारक उपाय लिख आये हैं उन्हीं के द्वारा शान्ति करना ॥

## मस्तक पीड़ा ।

मूलेठी, हरदी, नागरमेधा, अनारका फल या छाल, अम्रवेत, काला सुरमा, तिलन्त्रीक, खस, तेजपात, कमलगट्टे की गरी, दालचिनी, नख, इन सब दवाइयों को महीन चूर्ण कर धिजीरा नींबू का रस, शहद और मधुसूक्त तीनों चीजों में महीन घोट ज्वरात मनुष्य के शिर पर लेप करने से शिर का दर्द, धिहोसी, जी का मचलाना, हुचकी और देह का कांपना यह सब शान्ति होते हैं । और जो मनुष्य पिपास और अन्तर दाह करके अत्यन्त पीड़ित हो तो धिदारीकन्द अनार, लोध, कैयका छाल नींबू का छिलका सबों को महीन पीस शिर पर लेप करने से शान्ति होता है । ज्वर चिकित्सा का शेष प्रकरण पञ्चम खण्डमें प्रकाश होगा अथ ज्वर के अन्तिम नियम को लिखते हैं ॥

## ज्वरान्ते पथ्यं ।

परिषेकावगाहांश्च स्नेहान् संशोधनानिच । स्नाना  
भ्यंगदिवास्वप्न शीतव्यायाम घोषितः ॥ नभजेतज्वरो-

सृष्टेयावन्नोत्रलवान् भवेत् । त्यक्तस्यापि ज्वरेणाशु  
दुर्बलस्याहितैज्वरः ॥ प्रत्यापन्नोदहेद्देहं शुष्कवृक्षमिवा-  
नलः । तस्मात्कार्यःपरीहारो ज्वरमुक्तेन देहिना ॥

ज्वर छुट जाने के बाद मनुष्य को चाहिये कि जय तक शरीर बलवान न हो जाय निम्नलिखित कर्मों से पहरेज रखे, जैसे—जल से शरीर को साँच-ना, बहुत पानी में रहना, या डुबी मार के नहाना, चूताति का पीना, शोचन करना, स्नान करना, उबटन तेल लगाना, दिन को सेना, बहुत शीतल प-दायोंका खाना, कसरत अथवा बहुत दौड़ घुप करना स्त्री प्रसङ्ग आदि । कारण यह कि जिस का ज्वर छुट भी गया है कुपथ्य करने से पुनः वही ज्वर रक्त मांसादि में घुस कर मनुष्य के शरीर को ऐसा दग्ध करता है जैसे सूखे वृक्ष को अग्नि, इस लिये ज्वर छुट जाने पर भी जय तक ताकत न आवे ज्वर नाशक उपाय करते रहना अगर ज्वर छुट जाने के बाद अरुचि अङ्ग की शिथिलता, धिक्कता और मलादिक दृष्टि हो तो शोचन उपाय करना, क्योंकि शोचन न करने से अन्य रोग उत्पन्न हो जाने का डर है और ज्वर छुट गया हो उसका कोई विकार भी दृष्टिगोचर नहीं होता किन्तु शरीर निर्बल है तभी उसको एकाएकी पौष्टिक द्रव्य (पाकादि) न सेवन करना चाहिये क्योंकि बिना धल आये अग्नि नहीं खुलती और बिना अग्नि के पौष्टिक द्रव्य न पचैगा बल्कि जठराग्नि नष्ट हो के ज्वर का पुनरागमन होना सम्भव है ।

हतावशेषंपित्तंतुत्वकस्यंजनयतिज्वरम् । पिवेदिक्षु  
रसं तत्र शीतं वा शर्करादकम् ॥

पित्त ज्वर शान्ति होने के बाद यदि बमड़े में कुछ पित्त का अंश रह गया हो तो उसे ऊप का रस अथवा चिनी का सरबत पिला के ठीक करना क्योंकि यह पित्त फिर ज्वर को उत्पन्न कर सका है ॥

आध्यात्मिक शक्ति ।

आध्यात्मिकशक्ति जिसका कुछ र यवान आरोग्यदर्पण के प्रथम और द्वितीय खण्ड में कर चुके हैं । उसको पढ़ के किसका चित्त चाहता रहा होगा कि हृदय धिदुयुत प्रकाशक सम्पूर्ण क्रियायें दृष्टिगोचर हों इसलिये हम अपने प्रिय पाठकगणों के मङ्गलार्थ योगाभ्यास का सम्पूर्ण सिद्ध अङ्ग जिस प्रकार वेरण्ड महाराज चण्डकपालि से वर्णन किया है प्रकाश करते हैं और आशा करते हैं कि लोग इसमें अभ्यास यशय के अपने जीवन को सुफल करेंगे ॥

## आरोग्यदर्पण प्रथम भाग उर्दू में ।

छप कर तैयार हो गया । श्लोक आदि संस्कृत देवनागरी अक्षरों में छपा है । देवनागरी के न जानने वाले अनेक उर्दू नवीसों के अवरोध से आरोग्यदर्पण उर्दू में छपवाना आरम्भ किया गया है जिसकी कीमत भी सबों के फायदेमन्द समझ कर १॥) न रख कर इसका भी ॥) कर दिया है यत्कि मय हाक व्यय समेत ॥

### कामशास्त्र का अपूर्व ग्रन्थ ।

जो आरोग्यदर्पण के सातवें खण्ड से छपना आरंभ होगा और दशवें खण्ड तक में इसकी पूर्ति होगी । आज हम वह कामशास्त्र की बात कह रहे हैं जिसे परे दूसरा ग्रंथही नहीं है । अनङ्क रङ्ग पञ्चशायक आदि यह सब संग्रहीत और आधुनिक बहुत लघु ग्रंथ है । आज जितने कामशास्त्र के नाम ग्रंथ के नोटिस छपे देख पड़ते हैं सब उटपटांग इपर उधरके चुटकुले निकाल छाप कामशास्त्र का भी नाम निशान मिटा रहे हैं पढ़नेवाले जानते होंगे वस यही काम शास्त्र है । कामशास्त्र जनाय वह शास्त्र है जिस में तीनोंलोक की चतुर्थता और कारीगरी भरी है । कामशास्त्र के जानने वाले अलम्य स्त्रियों को दासी और स्त्रियां पुरुष को दास बना सकती है । विषय गंभीर है विज्ञापन में सब विषय दिखलाना असम्भव है इसके भाव पढ़ने ही से मालूम होगा । कोई पूछे इस ग्रंथ का नाम क्या है सो पाठक गण स्वयंही पढ़ लेंगे तो अब तक प्रायः लुप्त था । अनुवाद अधिक हो गया है प्रत्येक भास या पत्र में तीन फर्में में छप कर निकलेगा । १२ किताब का दाम १॥) पेशगी भेजना होगा क्योंकि पूरे किताब का दाम १०) होगा जिन्हें ग्राहक धनना हो अपना नाम पूरा पता लिख भेजी ॥

पं० जगन्नाथ शर्मा राज वैद्य

प्रायुर्वेदोक्त धौपघाउय

प्रयाग

# सूचीपत्र ।

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
मन्तव्य	१	सुष्क खांसी की दवा	१४
विक्षिप्ति	३	जुकाम पर कायट	२६
जीर्णज्वर चिकित्सा	५	श्वसे।पद्रव	"
पुंगने ज्वर में पथ्य	६	मूच्छां चिकित्सा	२८
स्वर्णमोक्षतीक्ष्णन्त	७	चिकित्सा	२९
ममन्तमानिनी	८	अरुचि	३०
घासदि घृण	१०	यमन	३१
विष्यहयादि घृण	११	दिनकी	"
क्षीरघृत स्त्रीहाधिकार	"	शिरनेप	२२
जीर्णज्वरे दुग्धयोग	१२	ज्वर छूटजाने का लक्षण	"
पशुमूली क्षीरपाक	"	ज्वर छूटजाने पर परहेज	३३
चित्तादिक्षीर	१३	राजयक्ष्मा (जोष) रोग	३५
यधंगानविष्यती	१४	राजयक्ष्मा निदान	३६
जीर्णज्वरे दुग्धकेनम्	१५	राजयक्ष्मा संपाप्ति	३७
साक्षादि तैल	१६	यक्ष्मा का पुरंरूप	३८
पट्टक तैल	१८	त्रिरूपयक्ष्म के लक्षण	३९
दुग्धजल जमित ज्वर चिकित्सा	१९	पट्टरूपयक्ष्मके लक्षण	"
किरातादि घूर्ण	२०	शोकशोपि लक्षण	४०
ज्वर खांसी का उपाय	"	कराशोपि लक्षण	४१
हाखासी पर मोक्षी	२१	अप्यशोपि का लक्षण	४२
२२ कफार्द्रकर भवसेह	२२	व्यायमशोपि का लक्षण	"
सातोफनादि घूर्ण	"	रक्तशयशोपि और रक्तन के लक्षण	"

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
शर्बत अंजुवार	"	अथ द्राक्षारिष्ट	११४
शर्बत शतपत्रिका पाक	"	भांग्योदिघृतं वातकासाधिकारे	११५
यकृत	९५	क्षोरघृतं पित्तकासाधिकारे	११६
यकृत का निदान	"	व्योषाद्यंघृतं कफकासाधिकारे	११७
यकृत की चिकित्सा	"	विष्यलो घृतम्	११८
यक्ष्मा आदि रोगों पर मोती		पारद का कजली	"
का सेवन	९७	शृङ्गाराश्रकम् कासाधिकारे	११९
मोती की त्पत्ति	"	छाती पर कफ का सूखना	१२०
मोती शोधन	९८	लक्षणहार	"
मोती मारण विधि	"	शौद्या लटकने से खांसी	१२२
मोती भस्म का गुण	९९	अथ श्वामाधिकार	१२३
मूंगा की उत्पत्ति लक्षण	"	पूर्वरूप और संप्राप्ति	१२४
मूंगा के भस्म का गुण	१००	महाश्ववास का लक्षण	१२५
अथ कासरोगाधिकारः	१०१	उर्ध्व श्वाम के लक्षण	१२६
कासरोग का आदि कारण	"	द्विजश्वाम के लक्षण	"
घातादि खांसी का लक्षण	१०३	तमकश्वाम के लक्षण	"
अथ साध्याऽसाध्य लक्षण	१०५	प्रतमकश्वाम के लक्षण	१२८
खांसी रोग में पथ्य	१०६	श्वामकास	१२९
खांसी रोग में अपथ्य	१०७	श्वाम रोग की चिकित्सा	१३१
खांसी रोग की चिकित्सा	"	श्वामाधिकारे घृतम्	१३२
हकीमी काढ़ा	१०९	विस्वादिघृत	१३४
पित्तकास की चिकित्सा	११०	अन्यच्च घृत	१३५
कफ जगित खांसीकी चिकित्सा	१११	अथ भृङ्गराज तैलम्	"
नजला की खांसी की दवा	११२	कालेस्वरीरसः श्वामाधिकारे	१३७
मारिषादिघटौ	११३	बालक श्वामरोग	१३९
बभ्रुलारिष्ट	"	अन्य लक्षण सुश्रुत से	१४१

# आरोग्यदर्पण—पञ्चमखण्ड ॥

मन्तव्य ।

आयुर्वेद क्या वस्तु है, आयुर्वेदीय चिकित्सा हम लोगों के लिये अत्यन्त उपयोगी है, हाकूरी दवाइयां हमारे प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं और न कभी होना सम्भव है इत्यादि बातोंकी आलोचना आरोग्यदर्पण के प्रथम तथा द्वितीय आदि खण्डों में भलीभांति कर चुके हैं इस पांचवें खण्ड के आरोग्य दर्पण में सिर्फ इस कदर कहना जरूरी समझते हैं कि जब तक आयुर्वेदीय चिकित्सा का प्रचार भारत में न फैलाया जायगा, राजा महाराजा आयुर्वेदके उद्धार की ओर दृष्टि नहीं देगे भारत का कल्याण होना अति दुष्कर है और यह जो अंगरेजी दवा के प्रभाव से हमारे देशी राजा महाराजा सेठ साहूकार अमीर महाजन घोड़ी ही अवस्था में यम लोक की यात्रा करते जाते हैं बन्द नहीं होगा ॥

यह तो हमारे भारत का एक लड़का भी कह सकता है कि चिकित्सा शास्त्र के आचार्य अखनी कुमारादि अनेक महर्षि हुये हैं कि जिनकी रचित चिकित्साशास्त्रद्वारा भारतकी मन्तान हजारों पुस्तहापुस्तके आरोग्य और दीर्घायु हेतों आई है और हो सकती है, कहते हुये रोमांच हो तेई वेही पुस्तकें और उर्हीं दवाइयोंका प्रभाव कुछपहिले इस भारतवर्षमें कैसा प्रदीप्तमान था लिखा नहीं है आज वही चिकित्सा शास्त्र किम दशा को और दुर्गति को प्राप्त है सभ्यों में यह भी लिखा नहीं है ॥

वैद्यक की ऐसी दुर्गति क्यों है ? इस ओर राजाओं की दृष्टि न पहुँचने से, अंगरेजी राज और अंगरेजी शिक्षा प्रचार होने पर भी जब तक वैद्य और वैद्यक पर राजाओं की मीति थी, हरएक राजधानी में दो चार वैद्य और एक दो खोटा मोटा चिकित्सालय या कुछ २ सभाग था,

जब से राजा महाराजाओं ने वैद्यों को तिलांजुली ही दे दिया, देशी दवा खाने से कसम खा गये डाक्टरों की मान मज्जादा बड़ चली, दोनों समय चाय सोडावाटर एक्तावन सागपीन की रंगीली रंग में रंगीन हो गये, दुधपिये बच्चे तक कुईनाईन सिनकोना की घूटी पीने लगे जो कुछ रहा सहा तब से और भी रमातल को घम गया । रहे हनारे प्रभु घर अंगरेज महाराज यह क्यों ध्यान देने लगे, सोड़े दिन हुये यह आन्दोलन हुआ था कि देशी वैद्य एक नियम के द्वारा देशी लोगों की चिकित्सा करने से रोक दिये जायें अर्थात् जब तक यह सार्टिफिकेट नहीं प्राप्त कालें तब तक चिकित्सा न करने पायें, यद्यपि उसमें भी अनेक सन्देह उत्पन्न हुये थे कि कौन परीक्षा लेगा, किस प्रकार परीक्षा ली जायगी, जो लोग उत्तीर्ण नहीं होंगे उनको पुनः पढ़ाने के लिये कोई कालिज खुलैगा या जम्म के लिये निकम्मे कर दिये जायगे तथापि यह आशाबंध चली थी कि इसका कुछ परिशोधन अवश्यहोगा परन्तु "स्वप्र-लब्धं यथाधनं" के समान सब आन्दोलन गिट गया यदि कुछ काल प-र्यन्त इस वैद्य विद्या पर और भी ध्यान न दिया जायगा तो आयुर्वेद का भारत से समूल नष्ट हो जाना कोई सन्देह जनक बात नहीं है, सो धार्मिक देश हितैषी सत्पुरुषों को चाहिये कि इस ओर भी कुछ ध्यान दें और उसका सहज उपाय यह है कि आयुर्वेद के जानने वाले नत् वैद्यों को सहायता देकर उनकी औषधियों के मेघन से आरोग्यता लाभ कर उनके उत्साहित करें और अपने नव शिक्षित सन्तानों को जो इस ओर से उलट रहे हैं ध्यान दिलाना चाहिये ॥



## विज्ञप्ति ।

पाठकगण को स्मरण होगा कि हमने चतुर्थखण्डके प्रारम्भहीमें उबर रोग का प्राग्रूप निदान और चिकित्सा देश कालानुसार अनेक वर्षों में जैना परीक्षा से मित्र देखा गया सर्वसाधारण गणों के उपकारार्थ प्रकाश किया और उसका अङ्ग जो कुछ बाकी रह गया है इस पञ्चमखण्ड में उसे तथा अन्य २ विषय भी क्रमशः प्रत्येक मास के आदि में प्रिय पाठकगणों की सेवा में अर्पण करते रहेंगे । हम निस्सन्देहकहसक्तेहैं यदि सम्यक् रोग उसे पढ़ पूर्वापर विचार करके द्रव्योपाज्जनार्थ अथवा धर्मार्थ लोगों की चिकित्सा करेंगे तो अथशय देश का मंगल एवं वैद्यक का पुनरुज्जीवन होना कोई कठिन बात नहीं है । किसी को कुछ दया बता देना या चूर्ण बटी बनी बनाई दे देना लोग साधारण बात समझते होंगे लेकिन यह ऐसे जिम्मेदारी का काम है जो लौकिक पारलौकिक दोनों से सम्बन्ध रखता है याने दया देने वाले के हाथ में रोगी अपना प्राण अर्पण करता है तो कहिये बिना जाने बूझे अटकरपचू दया देने से रोगी की शारीरक दशा कुछ भी बिगड़ गई तो चिकित्सक इस बातके जिम्मेदार हुआ कि नहीं जो मूर्ख वैद्यों के लिये संसार में राजकीय दण्ड, लोक निन्दा आदि और पारलौकिक बिगति । सो है भिन्नबर्गों चिकित्साकर्म बहुनकठिन और जिम्मेदारीका काम है । इसी सबबसे मूर्ख वैद्योंकेलिये हमारे सुश्रुत महाराज ने बंधकरना लिखा है ॥

यस्तुकर्मसुनिष्णातो धाढ्याच्छास्त्रवहिष्कृतः । ससत्सु  
पूजांनाप्नोति वधमर्हतिराजतः ॥

जो वैद्य कर्म में तो निपुण है अर्थात् काढ़ा चूर्ण अवलेह आदि उ-  
नदा बनालेताहै या रोगीको ठीकसमयपर दवा खिलापिला सक्ताहै किन्तु  
शास्त्र को नहीं जानता केवल ढिंढाई से काम करता है यह विद्वानों में

मान प्रतिष्ठा नहीं पावता किन्तु राजा करके बंध करवे योग्य है अर्थात् ऐसे वैद्य को राजा सरवाय डाले ॥

सात्पर्य्य यह है कि बहुतसे लोग ऐसे किस्म के भी हैं जो वैद्यविद्या को नहीं जानते इधर उधर किसी से दो चार प्रकार की दवा मीस कर दवाकरनेलगतेहैं जहां बिचारेरोगीसे कहा कि तुम्हें हम तीनदिनमें चंगा कर देंगे "गरजमन्दा बावला होता है" झट बिस्वाग कर लेते हैं यह नहीं सोचते कि मूर्ख वैद्य के हाथ का औषध नहीं खाना चाहिये अन्त में धन प्राण दोनों से हाथ धो बैठते हैं । इसी लिये मूर्ख वैद्यों के लिये बंध की आज्ञा राजा को ऋषियों ने दिया है ॥

भेषजंकेवलंकर्तुं योजानाति नचामयं । वैद्यकर्मसचेत्कु-  
र्याद्बधमर्हति राजतः ॥

जो वैद्य बिकर दवा देना जानता है किन्तु यह नहीं जान सक्ता कि इस रोगी के भीतर कौन सी बिमारी है और यह किस धातु के साथ अपना पूरा सम्यन्त्र किये है, देश कालानुसार कौन दवा से आरोग्य हो सक्ता है ऐसा न जानने वाला वैद्य यदि चिकित्सा करे तो उसे राजा अवश्य फांसी देदेये । सो इस विषय में गवर्नमेंट का ध्यान न पड़ने से आज कल जिसे देखिये चिकित्सक का काम करने लगे इस्से हजारों मनुष्य बिना पीत के मर जाते हैं ॥

यद्यपि बिना शास्त्र के जाने चिकित्सा करना महा दुष्कर पापप्राप्त होना लिखा है किन्तु लोग लोभबस पापको कुछभीनहींसपक्ते और ब्रह्म-हत्यादि अनेक पाप किया करते हैं लेकिन जब राजा की ओर से दंड मिलता है तब कुछ मानते हैं क्योंकि धी में सुजर गी आदि की चर्चों मिलाने वाले हमारे हिन्दू भाई माइयारी ही लोग हैं, जुबाना पर जु-बाना देने जाते हैं परन्तु चर्चों मिलाने से बाज़ नहीं आते मुख्य कारण

यह है कि कभूर के नाफिक दंड नहीं मिलता, हमारे हिन्दू शास्त्र में लिखा है कि जो कोई किसीका नियम धर्म बिगाड़े राजा उमके शरीर में छेद कराके सब रुधिर निकलवाय लेय, वैसाही दंड इन अधर्मियों को दिया जाय तो स्वप्न में भी यह काम न करै । प्राचीन काल में यहां (आर्य्यावर्त्त में) पाप बहुत कम था ऐसा पुराणों में लिखा है उसका सबब यही मालूम होता है कि पाप करने वालों को एक तो यथार्थ दंड मिलता था दूसरे विद्या वृद्धि के प्रभाव से लोग पाप करने से डरते थे जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है ॥

प्रायश्चित्तं चिकित्सांच ज्योतिषं धर्मनिर्णयम् । विनाशा-  
स्त्रिणयात्रूयात्तमाहुर्ब्रह्मवातम् ॥

प्रायश्चित्त अर्थात् पापी पुरुषकेलियेचान्द्रायणआदि प्रायश्चित्त बतलाना (चिकित्सा) रोगी को आराम करने को दया खिजाना (ज्योतिष) ग्रहादिकों का फल तथा चौरादि प्रण्य बतलाना (धर्मनिर्णय) ब्रतादिकों का बतलाना एवं दाय भागादि का विभाग कराना इनकों जो विना शास्त्र के जाने कहता है उसको बड़े २ मुनीश्वरों ने ब्रह्म घातक कहा है ॥

### अथ जीर्णज्वर चिकित्सा ।

जीर्ण ज्वर का आदि कारण, निदान और कुछ चिकित्सा चतुर्थे खंड में लिख चुके हैं इस स्थल में पूर्ण रूप से चिकित्सा लिखते हैं । पाठक गण को याद होगा कि जो ज्वर २१ दिन व्यतीत होने पर शरीर में सूक्ष्म रूप हो कर बना रहै और टापतिज्जी मन्दाग्नि आदि उपद्रव को उत्पन्न करै उसे जीर्णज्वर अर्थात् पुराना ज्वर कहते हैं इस बुखार वाले को उपवास, यमन, जुलाब और गरम दवा का उपचार कदापि न करै क्योंकि पुराने ज्वर में श्लेष्मिका का रक्त गांवादि सब क्षीण हो जाते हैं और लंपन आदि कराने से और भी क्षीण हो रोगी के मर जाने का

हर रहता है । यदि ऐसाही बातादि कोई उपद्रव बड़ा देखे तो उसके दमन के लिये सिर्फ एकदे। लंपन चाहे भलेही करा दे । इस्में यशत है ।

जीर्णज्वरीनरःकुट्या नोपवासंकटाचन । ज्वरक्षीणस्यन-  
द्वितं वमनंनविरेचनं ॥ कामंतुपायसंतस्य निरूहैर्वाहरेन्म-  
लान् ।

पुराने बुखार वाले को उपवास, वमन और विरेचन नहीं कराना बल्कि उसके इच्छा पूर्वक गौ का दूध पिलाना और दस्त न होता हो तो निरूह वस्ति याने पिचकारी के जरिये से सञ्चित मल को निकाल देना चाहिये ॥

### पुराणज्वरे पथ्यम् ॥

मूंग अथवा अरहर की दाल, पुराने चावल का भात, गेहूं या जव्वे की रोटी, गाय बकरी का दूध घृत मातदिल और हलकी तरकारी, धनिया, सफेद जीरा, कालीमिर्च, बड़ीलायची आदि मसाला, यदि खांसी न हो तो आलूबुखारा, जरबम या आंखला कैचे की चटनी जीरा मिर्च पुदीना सेम्यानोन मिलाके देय और खांसी आती है। तो खटाई कोई भी नहीं देनी चाहिये । शीतल दवाइयों का उपचार, शरीर में उपटन आदि तथा औषधियोंका बनायाहुआतेलको शरीरमें लगाके स्नान करना, सफेद चन्दन, कपूर, केशर गुलाबजल में घिस कर अंग में छेप करना, पुष्पों का माला पहिरना, गंगाजल या पहाड़ी झरनों का जल या बामूद जल अथवा परिशुत जल ( फिल्टरवाटर ) का पीना शाम सवेरे शुद्ध वायु का मेखन, चन्द्र की चांदनी प्रियाका आलिङ्गन सब पुरानेउधर वालों के हित है ॥

## जीर्णज्वरपर स्वर्णमालिनीवसन्त ॥

स्वर्णसुक्तादरदमरिचं भागवद्द्व्यागृहीतं स्वर्णप्यष्टौप्रथम  
मखिलं मर्दयेन्मृत्तणेन । यावत्स्नेहोन्नजतिविलयं मर्दनदी-  
यतेसौ गुञ्जाहृदमधुमगधया मालिनीप्राग्वसन्तः ॥

शुद्ध सोने का बर्क (तथक) १ मासा, अनवेधी छोटों मोती दो मासा, मक्खुदा यादी शुद्ध सिमरख तीन मासा, काली मिर्च खिलका रहित चार मासा, शुद्ध खपरिया, इसको रसक \* और सङ्गमित्री भी कहते हैं आठ मासा, सबों को कुचल सूख महीन पीस एक तोला मक्खन और सय दवा को खरल में हाल एक प्रहर तक घांटे याद उसके कागदी नीबू के रस हाल कर घोटै जब तक मक्खन की चिकनई दवा से बिल-कुल न निकल जाय, बाद उसके तीन २ मासे की टिकिया बनाय के सुखाय लेय । इसका नात्रा एक रत्ती से ४ रत्ती पर्यन्त हैं । इस स्वर्ण मालती वसन्त को देनें समय एक मासा गुर्च का मत्त २ छोटौ ला-यची और एक रत्ती छोटौ पीपर मिलाय के सहत के संग घाटने से जीर्ण उधर का नाश होता है किन्तु खाने को कुछ दूध और रात में मलाई मित्री मिला के अवश्य देवे ॥

\* रस दो प्रकार का होता है १ दर्दुर यह मोटा दलदार, दूसरा कार-वेल्क नामक रसक पतला होता है । जो खपरिया रंग में पौलौ पत्रवान है सो उत्तम है । खपरिया शुद्ध करने की वैद्यक में अनेक विधि लिखी है, जिसे रस प्रकरण में लिखेंगे । खपरिया क्या वस्तु है इसको उत्पत्ति स्थान कहाँ है कैसे होती है अब तक किसी ग्रंथ में दृष्टि गीघर नहीं हुआ । लोग कहते हैं टकसाल घर में जिस्में सोना चाँदी गलाया जाता है उसी घरिया को खपरिया कहते हैं । नागार्जुन आचार्य कहते हैं कि काला पौला लाल खपरिया किसी २ पृथ्वी में दीख पड़ता है ॥

## वसन्तमालिनी ।

रसकयुगलभागं वल्लिजंभागमेकं द्वितयमपिसुखल्वे मर्द-  
येन्मृजणेन । भवतिघृतविसुक्ती निंबुनीरेण यावज्ज्वरहर म-  
धुकुल्यामालिनी प्रवसन्ता ॥ जीर्णज्वरेधातु गतेऽतिसारे  
रक्ताश्विते रक्तज्वेष्ट रोगम् । घोरव्यथेपित्तकृतेच दाहेवल-  
प्रदेा दुग्धयुतंचपथ्यं ॥ प्रदरंनाशयत्यासौ तथादुर्नाम सी-  
निता । विषमंनेत्ररोगं व गजेन्द्रमिवकेशरौ ॥

सेाधी खपरिया १० तोला, काली मिर्च ५ तोला दोनों को महीन  
पीस ५ तोला मक्खन डाल के एक ग्रहण चोटें बाद नींबू के अंके में  
घोटें जब तक मक्खन की चिकनई दूर न हो, अगर एक दो दिन के  
घोटने से चिकनई अच्छी तरह न निकलै तो टिकरी बना के सुखाय  
लेप और फिर नींबू के रस में घोटें इसी प्रकार तीन चार मरतवे घो-  
टने से बिलकुल चिकनई निकल जाती है । तीन २ मासे की टिकिया  
बना के सुखा लेप यह बसंत मालिनी काले रंग का होगा ॥

दूमरी रीति—अगर खपरिया अच्छा न मिलै तो उसकी जगह शुद्ध  
गस्ते का भस्म लेवै, किन्तु यह भस्म किसी औषध के द्वारा न हुआ हो  
पूर्वोक्त प्रकार उसे भी घोट कर तैय्यार कर लेप यह बसन्त मालिनी  
मफेद रंग की होगी, इसकी तामीर शीतल है, मात्रा एक रत्ती से चार  
रत्ती पर्यन्त इसको गुर्घ का सत्त छोटी लायधी और महत के सङ्ग  
घाटने से गरमी से उपश्र जीर्णज्वर, कैंसाहू पुराना हो आराम होता  
है । कुरिया के छाल के काढ़ा अथवा जवलेह के साथ घाटने से रक्ता-  
तिमार, रक्त पित्त से अथवा पीनस रोग से नाक के भीतर लोहू की प-

पही जमती हो तो यह वसन्तमालिनी सहत के साथ या आचले के सु-  
रक्षा के साथ स्वामे से निहायत फायदा होता है । इसके सहत के साथ  
चाट कर ऊपर से गी के कश्चे दूध में मिश्री मिला के पीने से रक्त वि-  
कार से या पित्त से अथवा धातुस्रय से उत्पन्न अन्तसकरण का दाह  
शान्त होता है । दो रक्ती वसन्तमालिनी और एक भासा रसवत दोनों  
को सहत में मिला के खाने से खूनी याथासीर से लोहू का आगा, गुदा  
की जलन आदि उपद्रव दूर होता है । इसके चिकने पाथर पर पानी  
से महीन घोंट आंखों में अञ्जन देने से धुन्ध, जाला, नाखूना, आंखों से  
पानी का बहना बन्द होता है और नेत्र की ज्योति बढती है ॥

जीर्ण ज्वर की गरमी से रोगी की शरीर रूखी हो जाती है उसका  
कारण वायु का कोप है ऐसी अवस्था में जब तक वायु शमन नहीं कि-  
या जाता बिमारी नहीं छुटती इसलिये वायुशान्ति होनेकेवास्ते घृत दुग्ध  
पान करावै क्योंकि जैसे जलते हुये घर में जल डालने से अग्नि की शां-  
ति होती है वैसेही रूखे शरीर में घृत दुग्ध के डालने से वायु की शांति  
होती है इसमें बचन भी हैं—“लघणेन कफंहन्ति पित्तंहन्ति ससर्करा ।  
घृतेनघातजानरोगाऽऽ सर्वरोगानमुदास्थिताः” नमक से कफ का नाश,  
मीठी चीजों से पित्त का नाश, वायु से उत्पन्न जितने रोग हैं घृत पान  
से शांति होते हैं और प्राचीन गुड़ मिश्रित औषधियों के द्वारा प्रायः  
सर्व रोगों का नाश होता है । यह सिद्ध हुआ कि पुराने बुखार ( जीर्ण  
ज्वर ) में घृत पान कराना श्रेष्ठ है किन्तु किस विधि से पिलाना हो  
कहते हैं ।

अगर बिमार बहुत दुर्बल बल हीन हो गया हो, खाना न पचता  
हो या दस्त पेटले आते हों तो आधा तोला घृत से प्रारम्भ करावै, दो  
घृत आधा तोला, सहत ३ भासा, मिश्री ३ भासा तीनों को एक में मि-  
ला के पहले ४ । ५ दाना गोल गिर्ब मुख में कुचल कर ऊपर से घृत  
पीजावै और उस समय पानी न पीवै । अथवा आधा तोला मक्खन

बराबर की मिश्री मिला के रोज सवेरे खिलाये और जस २ पचता जाय  
मात्रा बढ़ाता जाये । अगर रोगी का मल मूत्र गया हो तो आधपाव  
गरम पानीमें आधा तोला घृत और ३ मासा सेंधानोन डालके खिलाये ॥

### वासादि घृत ॥

वासांगुडूचीचिफलां त्रायसाणांदुरालभां । सक्तातीनक-  
षायेण पयसाद्दिगुडेनच ॥ पिप्यत्तेसुस्यसृद्धीका चन्दनीत्यन्त  
नागरैः । कल्कोक्ततश्च विपचेत् घृतंजीर्णज्वरापह ॥

जिस जीर्णज्वर वाले को खांसी सहित ज्वर बना रहता हो और  
शरीर सूखी जाती हो तो वासादि घृत खिलाये । बनाने की विधि-  
रुमा की पत्ती, गुरिच, त्रिफला, विषारा और जवाभा इन पाचों चीजों  
को एक २ छँटाक ले जधकचरा कर एक मृत्तिका पात्र में चार सेर पानी  
में रात को भिजा देय सवेरे पकावे जब चौपाई पानी रह जाय शीतल  
कर मल के खान लेय । गौ जधया बकरी का दूध २ सेर । छोटी पीपर,  
नागरमेधा, मुगङ्गाबीजरहित, लालचन्दन, कमलगट्टे की गरी बीघ में  
हरी पत्ती रहती है उसे निकाल डाले और वैतराशोंठ सधों को एक २  
तोला ले शिथ पर पानी डाल के सूख नहीन पीस लुगदी बनाय लेय,  
गौ जधया बकरी का घृत १ गेर रंगे की कलई की हुई कढ़ाई को चूल्हे  
पर बढाय घृत लुगदी दूध और काढ़ा को छोड़ घीमी भाँच में पकाये  
जब दूध काढ़ा यगैरइ समय जल जाय घृत पात्र रह जाय चूल्हे पर से  
उतार शीतल कर खान के असृतघान में रख दे इसका मात्रा उ मासा से  
देा तोला तक है । सवेरे रोगी को खिलावे ऊपर से पानी पीने को न  
देय गलेसे थिकनाई दूर करनेके लिये सेंधानोन जरा मा खिलावे या एक  
देा पान का घीड़ा खावे १५-२० मिनट के बाद पानी पीने में हर्ज नहीं  
है अगर रोगी को दोनां समय पूर्ण मात्रा घृत निविंघ्न पप जाय तो



और अधिक घृत भी पी सकता है यह बासादि घृत जीर्णज्वर को नि-  
स्तन्देह नाश करता है । अगर घृत पान से खांसी कुछ बढ़ जाय तो  
घृत पिलाना बन्द नहीं करना चाहिये खांसी शमन होने का भी उपाय  
करता जाय घृत पचन होने लगने पर खांसी स्वयं शान्ति हो जायगी ॥

### पिप्पल्यादिघृत ॥

यह घृत भी जीर्णज्वर को नाश करता है ऐसा कईवार अनुभव किया  
गया है । यदि उपरोक्त घृत पान करने से रोग में कुछ शमन न देखपड़े  
तो उसके बाद पिप्पल्यादि घृत अवश्य पिलावे रामभासरे पर बैठा न  
रहे । छोटी पीपर, लाल चन्दन, नागरमोघा, सुगन्धबाला, कुटकी, इन्द्र  
जय, आंवला, सरियन, अतीस, मुनक्का, भटकटैया का पञ्चाङ्ग इन सबोंके  
तीन २ तोला ले सबोंके अधिककरा कर पूर्वोक्त प्रकार पांच सेर जल में  
भिजावे दूसरे दिन काढ़ा बनाय गी या बकरीका घृत एक सेर, दूध ५२॥  
सबों के कढ़ाई में चढ़ाय मन्दाग्नि में पचा लेवे इस घृत का भी साखा  
यही है जो बासादि घृत का है । उपरोक्त दोनों घृतों की रोगी रोटी  
दाढ के साथ भी खा सकता है यदि अच्छा लगे तो ॥

### क्षीरघृत स्त्रीहाधिकारे ॥

अगर जीर्णज्वर को खांसी उबरके अलावा स्त्रीहा भी हो जिसे क-  
खुई, तिझी और सरघट भी कहते हैं तो इस घृत को अवश्य पिलावे ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचिन्नकानागरैः । ससैन्धवैद्यपलिकै  
घृतप्रस्यंविपाचयेत् ॥ क्षीरश्चतुर्गुणं दत्त्वा तत्सिद्धं स्त्रीहनाशनम् ।  
विपमज्जरमन्दाग्निहरं रुचिकरं परम् ॥

छोटी पीपर, पिपरामूल, घाय, चीता, वैतरा सोंठ और सैन्यानीन

इन पांशों औपशों को एक २ छँटाक ले पूर्वोक्त प्रकार काय बनाय एक सेर गी के घृत में चार सेर गी या बकरी के दूध के सहित मन्दाग्नि में उपाय घृत सिद्ध करलेय इसका भी मात्रा छ मासा से दो तोला तक है। यह घृत म्लीहा रोग, जीर्णज्वर विषमज्वर और मन्दाग्नि को नाश कर रुचि को बढ़ाता है ॥

### जीर्णज्वरे दुग्धयोगः ॥

क्षीणेकफज्वरेजीर्णञ्जल्पदोषोपिपासते। दाहार्तेतुपयोधा-  
ज्यन्तेनैवतुविषम्भवेत् ॥

क्षीणे खण्ड के ज्वर चिकित्सा में यद्यपि ज्वर में दूध खाने की विधि निषेध लिख पाये हैं प्रसंगवस इस स्थल में भी दुग्ध योग पुनः लिखते हैं ॥

जिसे प्रमेह या मूत्र रोग होके ज्वर रोग हुआ हो और वस ज्वर पुराना हो गया हो, अथवा जिस पुराने ज्वर में कफ सूख गया हो अथवा अल्प दोष होने के कारण पियास और दाह अधिक बढ़ा जाता उस रोगीको अवश्य दूध पिलावै चाहे भारीया दूध पिलावै या निम्नलिखित क्षीर पाक बनाके पिलावै फायदा निश्चन्देह करेगा ॥

### पञ्चमूली क्षीरपाक ॥

सर्वज्वराणांजीर्णानांक्षीरभैषज्यमुत्तमं। श्लासात्कासाच्छि-  
रःशूलात्पाश्वंशूलात्सपीनसात् ॥ मुच्यतेज्वरितःपीत्वापञ्चमू-  
लीशृतंपयः ।

जो जीर्णज्वरवाला रोगी अत्यन्त दुर्बल हो गया हो कि जिसे अत्यन्त दाह रहने पर भी बलगत बढ़ने अथवा पसुरी में दर्द होने का डर हो तो पंचमू-

ली चीर पिलावै । पंचमूली अर्थात् पांच वृक्ष की जड़ वन यज्ञ है सालपर्णी (सरिवन) पृष्टपर्णी (पिथिवन) दानों कटरी (छोटो भटकटैया, बड़ी भटकटैया) और बड़ा गींभुक्त इन पांचों वृक्षों की जड़ पांच तोला से अधकचरा कर एक सृत्तिका पात्र में आधसेर दूध और द्वा सेर पानी डाल के धौसो आंच में पकावै जब पानी जलजाय दूध अकेला रह जाय अग्नि पर से उतार शीतल कर छान लेय और उसी दूध को थोड़ा २ कर दिन भर रोगी को पिलावै, अगर फीका दूध पीने में रोगी असुचि प्रगट करै तो थोड़ीसी मियो दूध में मिलादिय । किन्तु प्रथम उपरोक्त विधि से सिर्फ आधपाव दूध तैयार करके पिलावै फिर जस २ पचता जाय क्रमशः बढ़ाताजावै । इस दूधके पिलाने से खास, खांसी, गिरदद, पसुरी का दद, जुकाम और पुराने ज्वर को फायदा होता है ॥



### शितादिक्षरि ॥

सिताज्यविप्रखज्जूरीनृहीकाभिःशृतंपयः । पृथ्वीचविल्व-  
वर्षाम्भूपयश्चोदकमेवच ॥ क्षीरावशिष्टतत्पीततद्विसर्वज्वरापहं ।

घोठ, छहारा और मुनक्का बीज रहित तीनों चीजों को पूर्वोक्त प्रकार तौलमें ले उसमें दूधको पानीकेसहित तैयारकर थोड़ोमियो और सहत डाल के पिलावै, इस के पीने से ज्वर का नाश, कोठ परिष्कार और मेद् में ताकत आती है । अगर मल पतला अथवा आम का लुण् उपद्रव हो तो यह दूध पिलावै । बेल की गरी २ तोला, घोठ ६ मास दानों को एक पाव गौ के दूध में एक सेर पानी डाल के पकावै जब दूध अकेला रहजावेतो थोड़ा २ कर के कई बार रोगी को पिलावै ॥

## वर्धमानपिप्पली ॥

त्रिद्वध्यापञ्चद्वध्यावासप्तद्वध्यायवाकणाः । गव्यक्षोरेणसं-  
 पिष्टःपिवेद्दशदिनानिह ॥ एवविंशद्विनैर्सिद्धंपिप्पलीवर्धमा-  
 नकम् । अग्नेनपांडुवातास्रकासस्वासरुचिज्वराः ॥ उदरार्शः  
 क्षयश्लेष्मवातानशयन्त्युरोगहाः ॥

यद्यपि यह वर्धमान पीपल का योग विशेष कर पाण्डुरोग पर है किन्तु  
 अनेक वार देखा गया है कि श्लेष्म युक्त जीर्ण ज्वर को भी नष्ट करता है ।  
 शुद्ध छोटी पीपल को एक २ तीन २ अथवा पांच २ कर के जैसे ताकत हो  
 अर्थात् जहाँ तक पच सके गरमो, दाह, जलन, पियास की अधिकता उत्पन्न  
 न करे, सेवन करे और उसके सेवन करने की दो विधि है, प्रथम यह कि  
 पीपल को गौ के दूध में पीस खुगही बनाय मुख में रख दूध से उतार जावे  
 अथवा पीपल को टुकड़े २ कर पाव आधपाव दूध में चौगुना पानो दे के  
 पकावे जब पानो जल जाय दूध मात्र रह जाय, पीपल निकाल के फिक दिय  
 और दूध पीजावे और कितने वैद्य पीपल भी खिला देते हैं यद्यपि उसका  
 खिला देना कोई हानिकर नहीं है किन्तु यह पीपल सत्त रहित है । पूर्वोक्त  
 प्रकार पीपर चाहे जिस रीति से खावे दस दिन तक बराबर बढ़ाता जावे ।  
 जैसे एक पीपल से आरंभ करे तो दूसरे दिन दो तीसरे दिन तीन, इसी प्रकार  
 अगर तीन पीपल से आरंभ करे दूसरे दिन छ तीसरे दिन नौ ऐसाही दस दिन  
 तक बराबर बढ़ाता जावे और दस दिन के बाद क्रमशः वैसाही घटाना आरंभ  
 करे इस प्रकार दोस दिन पर्यन्त निरन्तर पीपल सेवन से जीर्ण ज्वर पांडु-  
 रोग, खाँसी, खास, मन्दा र कफ का नाश होता है ॥

## जीर्णज्वरे दुग्धफेनम् ॥

गोदुग्धप्रभवं किं स्वाच्छागी दुग्धमथापि वा । भवेत्फेगुं चिदे ।  
पद्मं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ बन्धि हृद्भिः करं पथ्यं सद्यस्तृप्ति करं लघु ।  
अतिसारिग्निमांशे च ज्वरजीर्णे प्रशस्यते ॥

इस बात को हम कह चुके हैं कि जीर्णज्वरी रुद्ध रोगी को घृत अथवा दूध पिला के उसकी रुद्धता दूर करना नितान्त आवश्यकता है और इसी लिये कई क्रियायें घृत दूध को भी लिख दी गई हैं अब इस बात को दिखलाना है कि अधिक दिन शरीर में बिमारी के रहने से मेदा ऐसा कमजोर हो जाता है कि घी दूध को कौन कहे रोटी दाल का पचना सुखिल पड़ जाता है, दूसरे आज कल के हमारे सहयोगी वैद्यगण जीर्ण ज्वरी को सिर्फ कूखी आरहर की दाल और रोटी खिला के रोग आराम करने के पलट रोगी के आंत रक्त मेदादि को दूतना सुखा डालते हैं कि हजम होगा तो दूर ही देा तोला भी पन्न पेट में जाने से दस्त हो जाता है तो ऐसी अवस्था में रुद्धता निवारणार्थ सिवाय दुग्ध फेन सेवन कराने के अन्य उपाय नहीं । जब देखि कि रोगी निहायत निरंज और कमजोर हो गया है और अग्नि निहायत हृद्दर्जे की दुर्बल है, तो दुग्ध फेन पिलाना आरंभ करें जब दूध का फेन पचने लगै तब और पाक अथवा घत पिलावे ॥

दुग्धफेन बनानेकीविधि यह है कि जैसे भांग छागनेवाले भांगको देा लोटोंमें बारम्बार मिलातेहैं उसीप्रकार तातकालिकदुहा गी अथवा बकरी के दूध को देा लोटों में ले बारम्बार एकसे दूसरेमें ऊपरकी धारसे उड़ेले उममें जो फेग उत्पन्न हो उसे किमी यतन में निकालता जावे जब फेन शाना यन्द होजाय दूध अलग करदेय, दूधकाफेन दूध के मपने से भी नि

कल मक्ता है किन्तु मयानी के मथने से फेन के माग मक्खन ( घृत ) भी आ जाता है इसलिये मथन की अपेक्षा दूध को फेंट के फेन लेना उत्तम है । कम नहीं फेन में जरामा मिश्री डालके रोगी को पिलावे इसी प्रकार दोनों समय पिलावे यह दुग्ध का फेन त्रिदोष नाशक, रुचिकारी, अल्पवर्तुक, जठराग्निवर्तुक और एक प्रकार का पच्य है तथा शीघ्रही वृद्धि कर एवं हलका है । इस दूध के फेन को अग्निमन्द, अतीमार और जीर्णउत्तर में अवश्य पिलाना चाहिये ॥

### लाक्षादि तैल ।

लाक्षाढकंक्राययित्वा जलस्यचतुरादृकैः । चतुर्थांशशृतं  
नीत्वा तैलप्रस्थंविनिक्षिपेत् ॥ मस्त्वाढकांचगीदध स्तत्रैववि-  
नियोजयेत् । शतपुष्पांशुगन्धां हरिद्रादिवदारुच ॥ कटुकीं  
रेणुकांमूर्वां कुष्ठंमधुयष्टिकाम् । चन्दनंभुस्तंकरास्तां पृथ-  
क्कर्षपमाणतः ॥ चूर्णयेत्तत्रनिक्षिप्य साधयेन्मृदुवज्जिना । अ-  
स्याभ्यंगात्पुशास्यन्ति सर्वेऽपि विषमज्वराः ॥ कासश्लेष्मासप्रति-  
श्यायत्रिकपृष्टग्रहास्तथा । वातपित्तमपस्मार सुन्मादंयज-  
राक्षदान् ॥ कांडूशूलचदौर्गन्ध्यं गात्राणांस्फुरणंजयेत् । पुष्ट-  
गर्भांभवेदस्य गर्भिण्यभ्यंगतोभृशम् ॥

इस लाक्षादि तैल का गुण विषमउत्तर नाशक लिखा है और श्लोक में जीर्णउत्तर का नाम नहीं है लेकिन यह तैल जीर्णउत्तर को भी नष्टकरता है ऐसा बनेकबार परीक्षाकरके देखा गया है । बनेक ग्रन्थोंमें लाक्षादि तैल बनेक विधि सहित लिखे हैं किन्तु उपरोक्त औषधों के सहित यह तैल सध तैलों से उत्तम और गुणकर है ॥

पीपर की लाही तीन सेर १६ तोला छे के १२ सेर तीनपाय ४ तोला पानी में एक दिन रात भिजा रखे अगर मही के घड़े में भिजावे तो १ सेर पानी अधिक देवे दूसरे दिन गन्दासि से पचावे चौपाई जल बाकी रहै शीतल कर खान लेय, फाली-तिल का तेल तीनपाय चार तोला कड़ाई में हाल उसी में लाही का पानी और गौ के दही का तोड़ तीन सेर तीन तोला हाल के पचावे और निम्नलिखित औषधों की लुगदी बना के उसी तेल में हाल दे । सींक, असगन्ध, हृद्दी, देवदारु, कुटकी, रेणुका बीज, मुराँ, कूट, मुलेठी, सफेदचन्दन, नागरमोथा और रासन इन सब दवाइयों को छे पानी में सूय महीन पीस लुगदी बनाय तेल में हाल के धीमी आंघ से पचावे जय पानी सिक्कुल जल जाय तेल मात्र रह जाय अग्नि पर से उतार शीतल कर कपड़े में छान बोतल में भर कर रख देय । इस तेल को रोज सवेरे रोगी के समस्त शरीर में घीरे २ देा तीन घंटा तक मालिस करै अगर रोगी सबल हो और स्नान करने की इच्छा प्रगट करै तो तैल लगाने के एक घंटे के बाद स्नान करा देवे, अगर रोगी कमजोर हो शरीर पर जल पड़ने से जाड़ा मालूम होता हो तो स्नान न कराके बदन पोछ लिपा करै । इस तेल के लगाने से जीर्णोत्तर, विषमोत्तर, खांसी, खास, जुकाम, कनर पीठ का जकड़न, यात पित्त, मृगीरोग; उन्माद भूतबाधा, खजुरी पेट का दर्द शरीर की दुर्गंधता और अङ्गों का फरकना आदि नाश होता है इस तेल के मालिस करने से गर्भिणी का गर्भ पुष्ट होता है ।

अगर निम्नलिखित रूप से लाही का रस तैय्यार करके छाहादि तैल बनाये तो और भी अधिक गुण कर हो और सिद्धान्त ग्रंथों का मत भी यही है ॥

दशांशलाध्रमादाय तद्दशांशचस्त्रिंशकां । किंचिच्चवदरी  
पत्र वारिपोऽण वा मतं ॥ वस्त्रपुतारसोत्राद्यः लाहायाःपाद-  
तोपितः ॥

लाक्षादि तैल यह ज्वर रोग पर प्रसिद्ध तैल है और प्रायः सभी वैद्य इसे बनाते हैं परन्तु लाही का रस किस प्रकार निकाला जाता है इसे विरलाही लोग जानते हैं इसका कारण यह है कि एक दो पुस्तक पढ़ा इस वैद्य पत्र गये यह सब बातें अनेक ग्रन्थों के लघुलोकन से होता है । लाह का रस निकालने की विधि यह है कि जितनी लाह हो उसका दशवां भाग लोच लेवे और लोच का दशवां भाग सज्जी और शन्दाजन घोड़ी सी घैर की पत्ती । पहले लाही को एक दो पानी से धो डाले ताकी लाही का गरदा मैल निकल जाय और लाही में सोलह गुना पानी डाल के एक रात दिन भिजा रखे दूसरे दिन लोच वगैरह डाल चूल्हे पर चढ़ाय धीमी आंच से पचावे जब चौथाई जल रह जाय उतार कर कपड़े से खान लेय इस लाह के रस से लाक्षादि तैल बनाना उत्तम होगा ॥

जिस जीर्ण ज्वर में दाह अधिक हो दाह घैर के तलुवे बहुत जलते हों, गर्मी से बेचैन हो तो निम्नलिखित तैल को मालिस करे ॥

पट्ट तक्र तैल ।

सुवर्चिकानागरकुष्ठमूर्धा लाचानिशालोहितयष्टिकाभिः ।

सिद्धं हरेत्पट्टगुणतक्रपक्व तैलं ज्वरं दाहसमन्वितं च ॥

सज्जीखार, शोंठ, फूट, मूर्धा, लाही, हरदी, सफेदचन्दन और जेठी मधु इन सब दवाइयों को समान भाग करके एक सेर ले अधकधरा कर सोलहसेर पानी में रात को भिजा दे सबेरे अग्नि पर पकावे जब चौथाई पानी रह जाय मल के खान लेय और एक सेर काले तिल का तैल, और तैल से छ गुना गी का माठा या गी के दही का तोड़ (पानी) सबों को कड़ाई में चढ़ाय धीमी आंच से पचाय लेय जब तैल सिद्ध हो जाय खान कर दोतल में भर के रख देय, इसके मालिस करने से दाह ज्वर और



शीतज्वर अर्थात् जीर्णज्वरी को चाहे जलन मालूम होता हो अथवा जाड़ा मालूम होता हो दोनों शान्ति होते हैं ।

### दुष्ट जल जनित ज्वर चिकित्सा ।

बहुत दिनों का रक्खा हुआ जल के पीने से, रास्ते में ताछाव, कुण्ड, सोता के जल के पीने से; जिस जल में फूल पत्ती पड़ेके सह गये हों या मेहक आदि कीड़े पड़े हों उस जल के पीने अथवा उसमें स्नान करने से, धारम्भार बहुत जल के पीने से, अथवा कहीं से थका जाया हो अथवा बिना शान्ति कियेही अधिक जल पी लेने से प्रायः लोगों को ज्वर हो जाता है और जो लोग कोमल प्रकृति के हैं, जिनका स्नान पीना एक समय में अन्दाज से घन्टा हैं, हमेशा एकही कुआँ का जल जिसके पीने में जाता है उन्हें दूसरे देशमें जानेसे जुकाम या ज्वररोग प्रायः हो जाता है इस लिये विदेश जानेवाले को चाहिये कि रास्ते में जल बहुत विचार के लिये या निर्मली आदि चीजों से जल को रोज शुद्ध कर लिया करे अथवा निम्नलिखित औषध को खाता जाये तो जल का विकार न हो ॥

माहार्द्रक यवचारु पीत्वाचोष्णवारिणा । नानादेश  
समुद्भूतं वारिदोषमपोहति ॥

अदरत अथवा शीठ चार मासा, जयासार चार मासा, दोनों को एक में मिलाय दो मासा करे एक मासा सधेरे और एक मासा सामको गरम जल के साथ पीता जाये तो विदेश गमन के रास्ते में चाहे जहाँ का जल पीता जाये पानी का दोष न होगा ॥

भोजनादीनरैर्भुक्तं शुंठीराज्यभयोत्थितं । कल्कं तु भजते नि-  
त्यं नानादेशोद्भवं जलं ॥

शोठ, राई और हड़ का बकल तीनों को बराबर तीन चार मासा लेकर शिथ पर पानी के साथ पीस के लुगदी बनाय लेय, याद लुगदी को मुख में रख पानी से चतार जावै । इस लुगदी को जो मनुष्य हमेशा सोजन के पहले खाता रहै उसे किसी देश का जल बिकार नहीं करैगा यह अनभूत है । अथवा रोज सवेरे थोड़ी सी नींबू की पत्ती पीस के जल के साथ पीता जावै तो भी किसी देश के जल का बिकार नहीं होना । अगर दुष्ट जल के पीने से ज्वर आगया हो तो इस चूर्ण को सहित के साथ घाटने से निस्तन्देह ज्वर जाता रहता है ॥

### किरातादि चूर्ण ।

कटुचिरायाता, कालीनिशोय, नागरमोथा, वायुबिरंग, कूट और शोठ यह सब एक २ तोला, छोटी पीपल छ मासा सब को कूट कपरछन कर देा मासे की पुड़िया बनाय लेय दिन में तीन दफे पाने चार २ घंटे पर अर्पात्त सवेरे, दोपहर और रास को सहित के साथ घाटै तो दुष्ट जलजनित ज्वर रोग बहुत जल्द कारण हो ।

### ज्वर खांसी की उपाय ।

खांसी बहुत कारणों से होनी को जाने लगती है किन्तु ज्वर रोग में अधिक शीतल जल पीने से, शरीर में अधिक शर्द हवा के लगने से, लही चीजों के खाने से, अथवा बहुत अर्पात्त कलेजे पर शोष होने से खांसी जाने लगती है । क्षयकास का लक्षण जैसा आयुर्वेद में लिखा है यही सम्पूर्ण लक्षण जीर्ण ज्वर में जब कलेजे में शोष हो के खांसी जाने लगती है मिलते हैं फर्क यह होता है कि जीर्ण ज्वर होने के बाद खांसी जाने लगती है और क्षयकासमें पहले खांसी जाने लगती है पीछे ज्वर होता है ॥

साधारण उषर से लेकर जीर्णज्वर तक किसी ज्वर में खांसी हो तो

प्रथम इस बात को अवश्य विचार लेना चाहिये कि यह खांसी सुरक है या तर और उसका पद्विचान यही है कि सुरक खांसी में बलगम मुसकिलसे निकलता है, और पतला बलगम आता है। तर खांसीमें बिना परिश्रम खांसी आतेही बलगम अंठा का अंठा कूट से बाहर निकल आता है और खांसी बन्द हो जाती है। अगर तर खांसी आती होतो इस दवा को चटावे ॥

कासेकणाकणामूलं कलिद्रुमफलंरजः । सविश्वभेषजं-  
लिह्यान्मधुनावारुषारसं ॥

छोटीपीपल, पिपलामूठ, बहेराकाखिलका और वैतराशोंठ इन चारों चीजों को समान भाग ले महीन घूर्ण कर देा नासे की पुड़िया बनाय लेंय, एक पुड़िया में तीन नासा रूसे की पत्ती का रस और तीन नासा सहत मिंठा के चटा दे इसी प्रकार शाम सवेरे चटावे अगर रात को खांसी की तकलीफ अधिक हो तो नौ दस बजे रात को भी उसी प्रकार एक पुड़िया चटा देय अगर रूसे का रस न मिले तो केवल सहतके साथ चटावे और निम्न लिखित गोली को तैयार कर रोगी को चुसने देय अर्थात् गोली रोगी के मुख में पड़ी रहे ॥

तरखांसी पर गोली ॥

तुल्यालवङ्गमरिचाचफलत्वचःस्युः सर्वसमेानिगदितःखदि  
रस्यसारः। बव्यलवृक्षजकपाययुतंचचूर्णं कासान्निहन्तिगुटिका  
घटिकाष्टकान्ते ॥

लौंग, काठी मिर्च, बहेरा का छिलका तीनों को समान भाग लेय और तीनों चीजों के बराबर सूय साफ पपरिया कत्या अर्थात् जिंदे हाथीपांय कत्या कहते हैं लेय सबों को महीन घूर्ण कर बूड बूड कर

के काढ़े में सूख घोट कर मटरके बराबर गोली बना लेय जय सांसीजावे एक गोली मुख में डाल के चूसे इन्ही प्रकार दिन रात में एक रोगी १०-१२ गोली तक चूस सकता है किन्तु इस बात पर अवश्य ध्यान रहे कि बलगम सूखने न पावे । उपरोक्त अवलेह तथा गोली अगर रोगी को गरमी करै याने पेट में जलन मालूम हो, पियास बढ़े, गला सूखे तो अवलेह और गोली की मात्रा कम कर देय और इस अवलेह को बना के दिन में कई बार घटावे ताकि बलगम गीला बना रहे और निकलता जावे ॥

### कफार्द्रकर अवलेह ॥

हंगराज १ तोला, मुलेठी १ तोला, तुलसीखतनी ८ मासा, उन्नाय ३॥ तोला, और लुका ६ मासा इन सब दवाइयों को अपकृरा कर आधसेर जलमें रातको भिजादे, सबेरे मन्दाग्निमें पचावे जय आधापानी जलजाय शीतल कर मल के छानलेय और आधपाय मिश्री डालके अवलेह बनाय लेय दिन रात में रोगी को जरा २ सा कई बार घटावे । इस अवलेह के घटाने से कफ सूखने नहीं पाता । उपरोक्त यटी घूर्णादिकों के देने से सांसी में कुछ शान्ति न देख पड़े तो इस घूर्ण को बहुत के साथ दोनों समय घटावे । यद्यपि यह घूर्ण ग्रहणी रोग पर प्रधान है किन्तु सांसी और स्वास में भी इस घूर्णका सेवगकराके देसा गया है कि बहुत फायदा करता है ॥

### जातीफलदि घूर्ण ॥

जातीफललवंगीला पत्रत्वङ्नागकेशरम् । कर्पूरचन्दन-  
तिल त्वक्चीरीतगरामलैः ॥ तालीसपिप्पलीपथ्यां कृष्णवी-  
रकचिबकैः । शुंठीविडङ्गमरिचान् समभागानिचूर्णयेत् ॥

यावन्त्येतानिसर्वाणि क्षुर्याङ्गान्चतावतीम् । सर्वचूर्णसमादेया  
शर्कराचभिषग्वरैः ॥ कर्षमात्रं ततः खादेन मधुनाप्लावितं सुधीः ॥  
अस्य प्रभावात्ग्रहणी कासस्वासा रुचि क्षयाः ॥ वातश्लेष्मप्र-  
तिक्ष्यायाः प्रसमं यांति वेगताः ।

जायफल, लौंग, छोटीछायचीकेदाने, तेजपात, दालचिनी, नाग-  
केशर, कपूर, \* सफेदचन्दन, कालीलिह, बंसलोचन, तगर, सूखानांघ-  
ला, ताठीसपत्र, छोटीपीपल, बड़ेबड़कायकल, कालाजीरा, चीते-  
कीछाल, सोंठ, यायभिरंग, और कालीनिर्घ इन् सब औषधियों को  
समान भाग से कूट फपड़कर उतनाही अर्थात् सब घूर्ण के बराबर  
धुलीहुई भांगके घूर्णको मिलाय, सबोंके बराबर मिश्री मिलाय देय इसीका  
नाम जातीफलादि घूर्ण है इसका एक कर्ष † का मात्रा लिखा है और

\* कपूर के तीन भेद हैं जैसे चीनियाकपूर, पन्नकपूर आदि किन्तु  
शुद्ध कपूर लिखने से भीमसेनी कपूर समझना, लेकिन कहीं मिलता तो है  
नहीं—बजार में मामूली कपूर जो बिकता है उसी को खूब साफ निर्मल  
देख के लेलेय ॥

† वैद्यक शास्त्र में कर्ष के पर्याय १३ नाम लिखे हैं और वित्यक्ति से  
वे सब साधक समझ पड़ते हैं। जैसे अक्ष नाम भी कर्ष के हैं और अक्ष बड़े-  
डा को कहते हैं तो बड़ेडा के बराबर दवा के तौल कर्ष समझना इसीप्रकार  
( पाणितल ) गद्दारीभर ( तेंदुक ) तेंदू के फल के बराबर ( योड़सिका ) इ  
नांज से कर्ष का प्रमाण १६ भांसा का माना गया है। चाल कल इन्द्र  
कर्ष का मात्रा एक तोला मानते हैं किन्तु अप्रमाणिक है ॥

एक कर्ष १६ मासा का होता है ( जो वैद्य अनभिज्ञ हैं, किताबी नुसखा से रोगियों की दवा करते हैं उनसे रोग का आराम होना दूररहा और बिमारी बढ़ जाती है और अन्त में लोग वैद्य और वैद्यक की निन्दा करते हैं । क्योंकि १६ मासा के मात्रा में ४ मासा भांग हुआ सो जो कभी भांग नहीं खाते उनके लिये ४ मासा भांग बहुत अधिक है किन्तु जो एक एक मुद्दत से बिमार है जिसका दिल दिमाग निहृष्यत कमजोर हो रहा है ४ मासा उसके लिये किस कदर हानिकार होगा ? एक छोटीसी बुद्धि रखने वाला भी कह सकता है कि निस्सन्देह नुकसान करेगा ) इस चूर्ण की मात्रा एक मासा से ३ मासा पर्यन्त है और जो लोग भांग खाते हैं उन्हीं भी ६ मासा से अधिक मात्रा नहीं देनी चाहिये । इस चूर्ण की सद्यत के साथ, या सरबत गुलबनप्पा या सरबत उल्लाम के साथ चाटने से ग्रहणी, अतीसार, खांसी, स्वास, अरुचि, कफसर्द, घात कफ की वृद्धि और जुकाम आराम होता है । बहेरा का छिलका, अनार का छिलका, मुलेठी, सैर की हली मुठ में रख कर चूंसने से भी खांसी में फायदा होता है । दिन में कई बार गुदा में तेल लगाना भी खांसी को फायदा करता है ॥

### खुश्क खांसी की दवा ।

कतीरागोद २ तोला, गोद यमूल १ तोला, मुलेठी का चूर्ण १ तोला  
 बसलोचन १ तोला भीठीलीकीकीयीजकीगरी १ तोला सबों को महीन  
 चूर्ण कर तीन २ मासे की पुड़िया घना छेय, दिन में तीन दफे बराबर  
 की मिश्री मिलाय जरासा पानी हाथ के गीला कर दे। मांसा संहत  
 मिछा के चटायें और निम्नलिखित घटी तैय्यार कर चूंसने को देय ।

पपरिया कत्या १ छँटाक, खतनी के बीज २ तोला, गोंद बबूळ १ तोला, कतीरागोंद १ तोला, बहेरा का खिलका १ तोला मुलेठी २ तोला, कपूर ६ साठा । इन सब दवाईयों को सूख महीन चूर्ण कर बिहीदाना के लुभाव में महीन घोट के सटर द्वाबरा गोली बनाय ले, जब खांसी आवै एक गोली मुख में टाल के चूसे, एक दिन रात में एक रोगी ८-१० गोली तक चूस सक्ता है । गोली चूसने की रीति यह है कि गोली मुखमें पड़ी रहै फुचल कर खा न जावे, जिह्वा के रस ( थूक ) से गोली स्वयं पिघलेगी, जब २ पिघलतीजाय कुछ तो पीध उसका निगल जाय कुछ थूक दिया करै । इस गोली के चूसने से खांसी में छाती पर का जमाहुआ कफ पक के निकल जाता है और खांसी जाती रहती है ॥

अगर खांसी प्रतिश्याय याने नजने के साथ ही अर्थात् पहले जुकाम हुआ हो, इसमें भी लोग बिना समझे बूझे गरम दवा खिछा देते हैं यहां तक कि उसे बड़ी भारी सरदी समझ रसतक देदेते हैं जिसे कि छाती का कफ सूख गला सांघ २ करने लगता है और फिर भी बिना कारण समझे रस की बढ़ती कियेही जाते हैं अंततः गत्या उस बिचारे पराधीन रोगी को यमालय का रास्ता तका देते हैं ।

पाठकगण यह सब अमूल्य विषय जो हमने बड़े परिश्रम और तयुर्ब से हासिल किया है आप लोगों की सेवा में अर्पण करते हैं आशा है कि आप लोग इस ग्रन्थ के अनुसार रोगियों की चिकित्सा कर के अवश्य यश के भागी होंगे, सम्पादक को भी यश और धर्म के भागी बनायेंगे ।

याद रहै अगर जुकाम से ज्वर हुआ हो तो कोई गरम औषध न दे के निम्नलिखित एकीनी फान्ट को पिलाये ।

## जुकाम पर फाट ।

गुठयनपूसा, ६ मासा, मुलेठी ३ मासा, तुखनखतमी २ मासा, मुन-  
 छा ६ दाना, उन्नाथ ४ दाना और मिश्री १ तोला । आधपाय जल को  
 एक गिलास में खूब गरम करै जब उफान आनेलगे अग्नि पर से गिलास  
 को उतार ऊपर की सय दवाईयां कुबलकर मै मिश्री के उभी गिलास में  
 डाल के ढांप देय, जब शीतल हो मल के छान कर पिला देय; इसी  
 प्रकार दोनों समय पिलावे, छ सात दिन इस फांट के पिलाने से जुकाम  
 बिलकुल पघ कर आराम हो जायगा । बहुत से लोग जो इस बात को  
 नहीं जानते कि जुकाम के रोकने से शरीर को क्या हानि पहुंच सकता  
 है, जुकाम होतेही गरम दूध गुड़, या गुड़ अजवायन, अथवा अफीम  
 या सराय पीलेते हैं लेकिन इन चीजां के पीने से नजला रुक कर बल-  
 गम सूख के जाती और मस्तिष्क में छपट जाता है जिसे स्वास्वादि  
 धिमारी लोगो का हो जाती है इस लिये मनुष्य को चाहिये कि जुकाम  
 को गरम दवाईयो से कभी न रोकै ।

## \* श्वासोपद्रव ।

ज्वर रोग में प्रथम उपद्रव स्वास का है जो छाती पर कफ सूखजाने  
 से होता है । यह भी उपद्रव ऐसा दुष्कर है कि शीघ्र यत्न न करने से  
 शीघ्रही प्राण हरण करता है । प्राण हरण रोग तो बहुत से हैं परन्तु  
 जितना शीघ्र स्वास और हिचकी प्राण हरण करते हैं अन्य नहीं ।

+ छोटी पीपल, कायफल और ककड़ासिंही तीनों को समान भाग  
 ले नहीं चूर्ण कर एक भागा अथवा आधा मासा चूर्ण को सहत में  
 गीला कर के दिन रात में तीन बार चटाने से स्वास दब जाता  
 है । अगर बलगम का जोर बहुत अधिक हो और इस चूर्ण के चटाने  
 से एक दो रोज में स्वास दबा न देय पड़े तो ।



दत्तमृगमदचूर्णं गुंजैकञ्चार्द्रं करसेन । अपहरति शीघ्रमेव-  
श्वासं श्लेष्मील्लगत्वञ्च ॥

फस्तूरी आधी रक्ती अणया एक रक्ती को दो भांसे आदी के रस में घोट के पिला दे अगर रोगी कमजोर हो तो एकही दफे में न पिलावे एक २ चायल या दो २ चायल भर तीन चार दफे कर के आदी के रस में घोट के पिलावे अगर इसे भी स्वास दबा न देख पहुँ तो ।

घतूरमूलमादाय छायाशुष्कंप्रकल्पयेत् । तत्त्वचोधूमपा-  
नेनश्वासानश्रयतिसत्वरम् ॥

घतूर के जड़ की छाल को छाया में सुखाय तीन भासा के अंदाज पिलम में भर रोगी को धूमपान करावे, यदि रोगी धूमपान करने में असमर्थ हो तो न पिलावे । छाती को धुरा अथवा पोटली से सँक करे ।

उद्धूलनप्रकर्तव्यं शुंठीभांधोश्चवक्षसि । तेनसाम्यतिशीघ्रेन  
श्वासंपरमदारुणम् ॥

वालुकापुटकैःस्वेदोत्सवर्णवापियच्छति । श्वासकासेप्रकर्त-  
व्यंकफस्तम्भप्रवृत्तिये ॥

धैतराशोठ को तवे पर अधभूजा कर गहीन घूर्ण बनाय छाती पर मलने से बहुत जल्द स्वास दबा जाता है यदि शोठ के धुरा से न दये तो निम्निलिखित पोटली से सँक करे ।

भरभूजे के भार का घालू और सँधानेन दोनों को एकत्रित कर दो पोटली बनावे, एक तवे को जग्गि पर घर उसी पर पोटली को

गरम कर आर्इस्ते २ छाती गला और गले के रंगों को सेकें । यम अगर उपरोक्त उपायों से श्वास का दंयना दृष्टिगोपर न हो तो गरम दवाइयों का देना बिलकुल बन्द कर देना चाहिये क्योंकि इससे अधिक गरम दवाइयों के व्यग्रहार से निस्सन्देह रोगी मर जायगा, उन अवस्था में जान लेना चाहिये कि इसे श्वास का जोर सरदी से नहीं है बल्कि गरमी से है और उसे जुकाम और सुपक खांसी की चिकित्सा जो ऊपर लिख आये हैं उन प्रयोगों के द्वारा श्वास के युद्धि को शांति करे । ऐसी अवस्था में श्लोग छाती पर पलस्तर लगा देते हैं अथवा एक प्रकार का ऐन्टिमेन्ट है लिन्ट में लगा के चपका देते हैं । इससे भी कहीं २ लाभ देखने में आया है किन्तु श्वास के लिये यह उपाय जो ऊपर हम लिख आये हैं निहायत परीक्षित हैं बिना किसी विशेष कारण के निस्कल नहीं जाता है ॥

### मूर्छाचिकित्सा ॥

ज्वर का दूसरा उपद्रव मूर्छा है, मूर्छा विहोशी को कहते हैं, जिसके घेग से रोगी की चैतन्यता जाती रहे उसी को मूर्छा, मोह, विहोशी गफलत और असंज्ञता कहते हैं । यह भी उपद्रव ऐसा दुष्कर है ( प्राणै विमुच्यतेऽशीघ्रं मृत्यामद्यःफलाक्रियां ) कि यदि उसमें तत्काल सिद्धि दायक चिकित्सा न की जाय तो मनुष्य शीघ्र ही मरजाता है ॥

मूर्छा को संस्कृत में असंज्ञता कहते हैं ( असंज्ञतासंज्ञोपधातः ) अ संज्ञता उसे कहते हैं जिसमें संज्ञाका नाशहो । मूर्छा याने विहोशी अन्य रोगों के बढ़ने में भी होता है किन्तु ज्वर रोग की गरमी मस्तिष्क में पहुँचने से अकसर मूर्छा हो जाता है इसी को वैद्य श्लोग सीत में डूबा ससक्त रसों की भरती कर रोगी को यमालय पहुँचाय देते हैं । मूर्छावस्था में वैद्य को चाहिये की बड़ी युद्धिमानी के साथ चिकित्सा करके रोगीके प्राण की रक्षा करे क्योंकि जरा भी विपरीत चिकित्सा होने से रोगी बहुत जल्द मर जाता है ॥

इस स्थल में हमें यह भी बतला देना बहुत जरूरी है कि मूर्छा दो प्रकार का होता है, एक तो मस्तिष्क ( शिर का मध्य भाग ) का रून प्रथम गरम हो जाता है बाद श्लेष्माके साथ मिल के जम जाता है यह प्रायः सन्निपात ज्वर में होता है और उसका लक्षण यह है कि ज्वर होने लगता है और मूर्छावस्था में आंखें रून के समान लाल हो जाती हैं, आंखें बिलकुल ढपी रहती हैं अथवा कुछ खुली भी रहें, इसमें शीतल चिकित्सा जैसे शिर पर बरफ रखा देना अथवा शिर पर शीतल जल का धार देना मना है ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये जिसे रक्त बलगम से अलग हो अधोगामी रोगों में फैल जाय । दूसरा हृदय से बात पित्त की गरमी उठ कर मस्तिष्क में जाके भर जाती है जिससे रोगी भ्रमवेश हो जाता है ॥

### चिकित्सा ॥

प्रथम प्रकार की मूर्छा में जो सन्निपात रोग में अज्ञानादि लिखे हैं उन उपायों से हटाना अथवा निम्नलिखित अज्ञान लगा के रोगी को सचेत करना ॥

शरीषवीजंगी। मूत्रं कृष्णामरिचसैधवैः । अञ्जनं स्यात्पृषाधाय  
सरसीनशिलावचैः ॥

सिरसा के बीज, छोटी पीपर, काली मिर्च और सेन्धानेन एक रत्ती मैनसिल आधी रत्ती, लामुग का टुकड़ा दो चायल भर सघों को धि कने पत्थर पर गोमूत्र में सूख महीन काजलके समान घोंट रोगीके आंख में अंजन लगावे निश्चय है कि इससे रोगी चैतन्य होगा । लेकिन मूर्छा वस्था में खानेके लिये कोई गरम दवा नहीं देना चाहिये । छोटी पीपर का पूर्ण १ भासा शहद के साथ घटाना, मोठे अमर का रस पिलाना, अथवा मुनक्का, टोहारा, उस, नागकेशर, काठगहे की गरी सब दवा-

इयों को समान भाग ले क्वाथ बना मिश्री हालके दिनमें कई बार पि-  
लाने से कापदा देवा गया है ॥

जो सिर्फ गिर पर गरमी पहुंचने से सूखा हुआ हो तो उसे निम्न-  
लिखित उपायों से शान्ति करे ॥

अंगूर अथवा ऊस का सिरका जिसमें फुल मिला न हो २ तोला,  
गुलाबजल अथवा सिर्फ जल, १ पाय, रोगनगुल अथवा गरी का तेल दो  
तोला तीनो को एकमें मिला उसीमें एक सफेद कपड़ा तर करके गिरपर  
रक्खे और जब सूखजाय फिर भिजा दे, इसी प्रकार जबतक होश न आवे  
बराबर रक्खा रहे और सुंघने को हरा खीरा काटके या खस का अंतर  
सूङ्घने को देय अगर देखे कि कई दिनोंसे दस्त नहीं हुआ है तो मुलायम  
रेचन द्वारा अथवा पिचकारी के जरिये से बहुत जल्द दस्त करा दे  
ऐसी २ बिमारियों में मल मूत्र पर प्रयत्नही दृष्टि देनी चाहिये क्योंकि  
मल मूत्र में गरमी पहुंचने से भी मनुष्य को सलि, सूखा, प्रलाप, हृदक-  
म्प आदि उपद्रव उठ खड़े होते हैं और उन्हें साफ करने से निवारण  
हो जाते हैं ॥

अगर बहुत दस्त आने से सूखा हुआ हो तो बहुत शीतल उपचार  
न करे, नाभी पर गरम तेल मलै और सांधी चीज सुंघावे तथा दस्त  
बन्द करने का उपाय करे । अगर ह्रिचकी आते २ बिहोसी हुई हो तो  
मुठेठी मैनफल का पानी पिला के बमन करावे इत्यादि किन्तु ऐसी  
अवस्था में बिद्वान सत् वैद्य की सहायता लेना बहुत जरूरी है ॥

अरुचि ।

किसी चीज का स्वाद न मालूम हो उसे अरुचि कहते हैं यह सर्व  
साधारण ज्वर में हो जाता है और जब तक ज्वर पूर्णरूप से निर्गत नहीं

होता अरुचि नहीं जाती । अगर खांसी तेजी के साथ न हो तो कागजी नींबू में जरा सा कांछी मिर्च और काला नोन का चूर्ण भर आग पर भूँज रोगी को चटावै ॥

### वमन ।

रोगी के पीने वाले पानी में थोड़ा सा पुराना चायना भिजा दी आध घंटे के पश्चात् मल के छान ले और उसी जल को थोड़ा २ पिछावै इससे वमन बन्द हो जायगा, सायत इससे न बन्द हो तो कमल गह्वे की गरी एक तोला पायभर पानी में पकावै जय आधपाय पानी रह जाय मल के छान लेय और उसमें ६ मासा मिश्री मिला के दो २ घंटे पर पिछावै इससे जरूर वमन सूखी ओंकी का आना बन्द होगा ॥

### हिचकी ।

ज्वर रोग में हिचकी का आना आकाश यात्रा के लिये मानों यमराज का पुकारना है, ठीक हिचकी रोग वैसा ही है इसमें कोई संदेह नहीं है । वैद्य को चाहिये कि हिचकी प्रारम्भ होते ही चिकित्सा करना शुरू करै ॥

नीरेणसिंधुत्परजातिसूक्ष्मं नस्येतिनूनं विनहंतिहिक्वां ।

शुंठीहठाद्वासितयासनेता धूपेधवा हिंगुसमुद्भवश्च ॥

दो तोला पानी में तीन मासा निमक सूय महीन घोंट नाश देने से जपया ६ मासा शोंठ को आधपाय पानी में पकाय मल छानकर एक तोला मिश्री मिलाय उसे कईवार पिछाने से जपया होंग की नाक में धूनी देने से सिर्फ एकही प्रयोग जपया तीनों प्रयोग से हिचकी रोग का नाश होता है ॥

## शिर लेप ।

विशेषमपरंचात्र शृणुपद्रवनाशनम् । मधुकरजनीमुस्तं  
दाडिमञ्चाम्बवेतसं ॥ अंचनंतित्तिरीकञ्च नलदंपत्रमुत्पलं ।  
त्वचंब्याघ्नखंचैव मातुलुङ्गरसीमधु ॥ दिह्यादेभिज्वरार्त्तस्य  
मधुशुक्तयुतैशिरः । शिरोभितापसंमोह इमिहिक्वाप्रवेवधून् ॥  
प्रदेहानाशयत्येप ज्वरितानामुपद्रवान् ॥

सुश्रुत महाराज कहते हैं कि इसके आगे विशेष औषध ज्वर के उपद्रवों को नाश करनेवाली सुनों, मधुभा के घृत का फल या अंतर-डाल, हलदी, नागरमेया, अनार का फूल या डाल, अमलवेत, अनिठी की डाल, छरीला, बालखड़, तेजपात, कमलगहे की गरी, दालचीनी (व्याघ्नख) नख नामक सुगन्धद्रव्य, बिजौरा नींबू का छिलका इन सबों को ले महीन चूर्ण कर थोड़ा सा सहत और अंगूर अथवा जामुन का सिरका मिलाय उपर पीड़ित वाले के शिर और भाचे पर लेप करने से शिर की तीव्र पीड़ा, शिर का जलन, बिहोसी, यमन अथवा जी का मथलाना या मुख से पंटा छूटना, हिचकी और बदन का कांपना नष्ट होता है । इस अथ उपर के उपद्रवों की चिकित्सा समाप्त करके उपर छुट जाने के बाद क्या पहरेज करना चाहिये सो लिखते हैं ॥

## ज्वर छुट जाने का लक्षण ।

मधुत्वंशिरसःखेदा मुखमापाण्डुपाकिच । जवधूयात्रकां-  
चाच ज्वरमुक्तस्य लक्षणम् ॥

शरीर हलकी हो, गिर में खफीफ पसीना जध्यै, मुख की पियराहें या मलीनता जात' रहै मुख कुछे पंक जाय अथवा न भी पके, छोंक जायै, और भूख लगे तो जानना की उबर छुट गया ॥

ज्वर छुट जाने पर परहेज ।

परिपेक्षावगांश्चस्नेहान् संशोधनानिच । स्नानाभ्यङ्गदिवा-  
स्वप्न शीतव्यायामयोषितः । गभजतज्वरोत्सृष्टो यावन्नीबल-  
वान्भवेत् ॥ त्यक्तस्यापिज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः । प्र-  
त्यापन्नेदहेद्देहं शुष्कवृक्षमिवानलः ॥

आरना या घौछार से भीजना, नदी या तालावादि गम्भीर जल में बुझी लगाना, तेल घी का पकवान खाना अथवा स्नेहादि पीना, यमन विरेषणादि शरीर शुद्ध करना, सूख गिर से स्नान करना, तेल चपटन लगाना, दिन में सोना, अधिक शीतल पदार्थ का सेवन, कसरत और स्त्री प्रसंग आदि कर्मों से ज्वर छुट जाने के पश्चात् जम तक शरीर सूख बलवान न हो जाय परहेज करै क्योंकि ज्वर से छुटा दुर्बल मनुष्य को उपरोक्त अपथ्यों से पुनः ज्वर आके ऐसे दाप करता है जैसे सूखे वृक्ष को अग्नि ॥

यावन्नप्रकृतिस्थः स्यादपतःप्राणतस्तथा । ज्वरेप्रमोहीभ-  
वति स्वल्पैरप्यवचेष्टितैः ॥ निपण्णंभोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौ  
चकारयेत् । आरौचकेगात्रसांदि वैवर्धेऽङ्गमलादिपु ॥ शांत  
ज्वरोपिशोध्यऽस्यादनुबंधमयान्नरः ॥

इस लिये ज्वर से छुटे मनुष्य के जितने दाप हैं और बड़ से करने

स्वमाय में स्थित न हो उ तितने अहित पदार्थ का परिहार करना उचित है क्योंकि थोड़े भी यिरुद्ध चेष्टा अर्थात् बल से अधिक खाना पीना चलना फिरना आदि भी कर्म करने से ज्वर सहित विहेशी जाने लगती है इस लिये वैद्य को चाहिये ज्वर से छुटे रोगी को जब तक यथार्थ बलाघान न हो बैठेही रखे अर्थात् रोगी से कोई भी शारीरक काम न कराके उसे दोनों समय अग्नि दोष के अनुसार भोजन कराये और ऐसी बल कारक औषध दे जिसे मल मूत्र भी साफ हो जाये ॥

अगर अरुधि, वदन में दरद, मुख की पियराई, या रूखापन और शरीर का मैलापन ज्वर के छुट जाने पर भी बना रहै तो वैद्य को चाहिये कि फिर ज्वर होने के भय से उसके दोषों को शोधन करै ॥

नाजातुतर्पयेत्प्राज्ञः सहसाज्वरकश्चितम् । तेनसन्दूषिता-  
ह्यस्य पुनरेवभवेज्वरः ॥ चिकित्सेच्चज्वरान्सर्वान्निमित्तानां  
विपर्ययः । अमक्षयाभिघातात्थे मूलव्याधिसुपाचरेत् ॥

युद्धिमान वैद्य, ज्वर से दुबले हुये रोगी को उसकी इच्छानुसार एक बार किसी चीज से कदाचित् तृप्त न करै क्योंकि एक बारगी तृप्त कर देनेसे दूषित ज्वर उस मनुष्य को फिर हो जाता है । हमेशा निदानों के व्यतिक्रमों से सम्पूर्ण ज्वरों की चिकित्सा करै और खेदज्वर, क्षयज्वर, अभिघातज्वर, इन ज्वरोंमें वैद्यको चाहिये कि मूल व्याधि को दूर करै ॥

स्त्रीणामपप्रजातानां स्तन्यावतरणेचयः । रात्रसंशमनं  
कुर्व्याद्यथादीपं विधानवित् ॥

जिन स्त्रियों का बालक मर जाय और दूध के उतरने में जो ज्वर उत्पन्न हुआ हो उस ज्वर को आयुर्वेद विज्ञानदर्शी दोष अनुसार शांत करै । इति ज्वराधिकाराः समाप्तः ॥



इसके आगे अब हम राजयक्ष्मा रोग का निदान, कारण और चिकित्सा लिखते हैं । यद्यपि प्राचीन ग्रन्थोक्तानुसार ज्वर रोग के आगे अतीसार रोग का प्रकर्ण कथन करना उचित है लेकिन यक्ष्मा के अनेक लक्षण जीर्णज्वरादि में मिलते हैं और जीर्णज्वरादि के अनेक लक्षण यक्ष्मा में मिलते हैं इस हेतु से इस स्थल में अतीसार रोग का प्रकर्ण न दे के यक्ष्मा रोग का निदानादि लिखते हैं ॥



### राजयक्ष्मा (शोष) रोग ।

अनेकरोगानुगतो बहुरोगपुरोगमः । दुर्विज्ञेयोदुर्निवारः  
श्रीप्राव्याधिर्माहावलः ॥ संशोपणाद्रसादीनां शोषइत्यभिधी-  
यते । क्रियाजयकरत्वाच्च जयइत्युच्यतेपुनः ॥ राज्ञश्चन्द्रमसा-  
यस्माद्भूदेष किलामयः । तस्मात्तंरामयन्मेति केचिदाहु-  
र्मनीषिणः । रोगिपुराजतेयस्मात्तत्तायंरोगराडिति ॥

भाषार्थः—अनेक रोगों के पहले और बहुत प्रकार के रोगों के पश्चात् होने वाला, बड़ी कठिनता से जाना जाये अर्थात् जिसका निदान एकाएकी बहुत जल्द न मिल जाय, अत्यन्त दुःख से दूर किया जाय ऐसा महा बलवान शोषरोग मनुष्योंके शरीर में हो जाता है । यह रोग निरन्तर रक्त आदि सातों धातुओं को सुषाता है इस लिये शोष नामक रोग संज्ञा पड़ा है और सम्पूर्ण द्रवियों के कर्मों को क्षय करता है इस वास्ते जय रोग भी कहाता है । एक समय भड़े तेजस्वी प्रतापी चन्द्रगुप्त नामक राजा को यह रोग हुआ और उसे निर्मूल नष्ट करने में वैद्यों को अति परिश्रम पड़ा तब से वैद्य लोग शोष रोग को यक्ष्मा रोग

कहने लगे और सम्पूर्ण रोगों में उत्पत्त्य से विराजमान है इस कारण से रोगराज या राजरोग भी कहते हैं ॥

इतने प्रचलित शोथ रोग के पर्याय नाम हैं, जैसे शोथ, राजयक्ष्मां सर्प या कफसर्प, राजरोग, दिक् तपेदिक आदि ॥

### राजयक्ष्मा निदान ।

वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशानात् । त्रिदोषोजा-  
यतेयक्ष्मा गदोहेतुचछयात् ॥

जब यक्ष्मा रोग का निदान कहते हैं, निदान आदि कारण को कहते हैं, यानि जिन अपथ्यों से रोग उत्पन्न होता है उसे निदान कहते हैं । ( वेगरोधात् ) वेग १३ प्रकार के हैं जैसे मल, मूत्र, र्छीक, जंभुभाषं, आदि कि जिनहों के रोकने से उदायत रोग होता है लेकिन यहां अधो-  
यात मल मूत्र तीनहीं वेग का ग्रहण किया है । इस्तें भरद्वाज का वचन है ।  
“धातमूत्रपुरीषाणां क्षीणयाद्यैर्यदानराः । वेगनिरोधयेत्तेन राजयक्ष्मादि-  
संभवः” अनुष्य प्रायः किसी २ स्थान में भय अथवा लज्जा वस रेचित अधोयायु को रोक लेते हैं वैसेही मल मूत्र को भी कहीं २ रोकना प-  
ड़ता है किन्तु उस्से यक्ष्मा रोग होने का संभाव्य है ( क्षयात् ) धातुक्षय से यह धातुक्षय अतिमैथुनादि से होता है, बहुतसे विषयी कामोन्मत्ततासे दिनरात मैथुन क्रिया में छिन्न हो जाते हैं अन्तिम परिणाम उसका यह होता है कि यक्ष्मां रोग द्वारा यमालय को यात्रा करना पड़ता है ( ना-  
इसात् ) जो भार अथवा परिश्रम या कसरत अपने शरीर से करने लां-  
यत नहीं है उसे करना या लोभ वस दिन रात कामहीं में लगे रहना उसे साहसात् कहते हैं इस्से भी यक्ष्मा रोग होता है ( विषमाशानात् ) वि-  
षम भोजन उसे कहते हैं जैसे कधी कम कधी जादा, कधी सवेरे कधी  
दुपहर के भोजन करना, कधी खानही नहीं ( व्रण ) कधी कई बार तो-

जन करना । अक्षर औरतों को जो दिक् का आरजा हो जाता है वि-  
पम अशनही से उन्हें खाने पीने पर बिल्कुल लिहाज नहीं रहता और  
पुरूषों की अपेक्षा व्रत भी बहुत करती हैं । यह चार कारण तीनों दोषों  
करके यक्ष्मा रोग होने को घट्टावरो ने दिखलाया है किन्तु इसके अतिरिक्त  
और भी छः कारण हैं जैसे अतिशोक, अराशोपि, अध्वशोपि, व्यायाम-  
शोपि, उरक्षत और व्रणशोपि जिसके लक्षण आगे लिखेंगे ।

### राजयक्ष्मा संप्राप्ति ।

कफप्रधानैर्दाषस्तु रुद्धेपुरसवर्त्मसु । अतिव्यवायिनीवा-  
पि चीणोरेतस्यनन्तरा । चीयन्तेधातवः सर्वेततःशुष्यतिमा-  
नवः ॥

जब राजयक्ष्मा का संप्राप्ति अर्थात् शरीर के भीतर क्या विगड़  
कर शोष उत्पन्न करता है उसे दिखलाते हैं । प्रथम शरीरकी रक्षा या घ-  
नाघट रक्षादि अनेक वस्तुओं से है किन्तु शरीर में कफ प्रधान है । हम  
छागों का चलना, फिरना, बोलना तथा भीतर समग्र नस तथा आशयों  
का काम भी कफ की चिकनहट से होता है। सो यातादिक कुपित होने  
से यथार्थ कफ न घन के स्थान से कफ द्युत हो। मुख्यगर्भ से रेंघन होने  
लगता है, उस अवस्था में रस की बहने वाली नाड़ी बन्द हो जाती है,  
तब भोजन का रस न खिंच कर यहभी कफ हो जाता है इसके प्रतिदिन  
शरीर सूखता है । दूसरा अति मैथुन से जब बीर्य क्षीण होता है तो  
उसके क्षीण होने से दूसरे भी मांसादिक धातु क्षीण होने लगते हैं । इस  
वजे से मनुष्य गित्यप्रति सूखने लगता है, इस वही शोष वा यक्ष्मारोग  
कहाता है । लेकिन जहां तक हमने परीक्षा किया है अधिकतर धातु  
क्षीण से यक्ष्मारोग पाया है, खास कर जो लोग अत्यय में अतिमैथुन  
या हस्तमैथुन करते हैं उन्हें और जो माता पिता धातुतीक्ष्णवस्था में न-

यथा सुत्राक आदि धातु सम्यन्धी रोगातुरायस्था में गर्भ स्थापन करते हैं उस गर्भ से उत्पन्न पुत्र या कन्या को दश बारह अथवा सोलह घरघ की अवस्था में अवश्य यक्ष्मा रोग हो जाता है ॥

### यक्ष्माकापूर्वरूप ॥

श्वासांगसादकफसंस्त्रवतालुशोष वस्यग्निसादमदपीनस  
कासद्विक्ता । शोषेभविष्यतिभवन्तिसचापिजन्तुः शुक्लेचणोभ-  
वतिमांसपरोरिरंसुः ॥

जब मनुष्य को यक्ष्मारोग का आरंभ होता है तब निम्नलिखित लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं जैसे ( श्वास ) दम का फूलना (अंगसाद) अंगों की शिथिलता याने हाथ पैर निहायत ढीले और सुस्त ( कफ संस्त्रव ) कफ का गिरना ( तालु शोष ) गला सूखना या गले में कांटा खरीखा गड़ना ( घनि ) जी मथलाना या कै होना ( अग्निसाद ) भूख का न उगना, किसी २ को इस रोग में अधिक भूख वाला देखा है ( मद ) नेत्रों में नशा या मालुम होना ( पीनस ) नाक बहना याने जुकाम ( कास ) खांसी, किसी को सूखी खांसी आती है और किसी के खांसी में खांसते ही अंटा के अंटा कफ गिरपड़ता है \* (द्विक्ता) द्विचकी यह लक्षण होते हैं तथा उस मनुष्य के नेत्र सफेद ३ मांस खाने की इच्छा और मैथुन की चाह रहा करती है । किसी विमार में यह सब लक्षण मिलते हैं और किसी में कुछ कम किन्तु कम लक्षण से भी विमारी अवश्य समझी जायगी ॥

\* इस जगह दो पाठ है द्विक्ता द्विचकी घाना और निद्रा अधिक नींद घाना और दोनों लक्षण मिलते हैं ॥

† मांस खाने की इच्छा उभी मनुष्य को होगी जिसे पूर्व में मांस का खाद मिल चुका है ॥

## त्रिरूपक्षयके लक्षण ॥

अंसपाश्वर्भाभितापद्यसन्तापःकरपादयोः । ज्वरःसर्वाङ्गक-  
श्चेतिलक्षणंराजयक्ष्मणः ॥

त्रिरूपक्षय अर्थात् तीनों दोषों से जो साधारण यक्ष्मा के लक्षण हैं उसे कहते हैं । पन्धे और पसुरी में दर्द हाथ और पायों में दाह तथा सग्न शरीर में ज्वर से राजयक्ष्मा के लक्षण हैं । इतने लक्षणों से जानना कि यक्ष्मा अभी प्रथम दर्जे पर है अच्छा हो सक्ता है ॥

## पट् रूपक्षय के लक्षण ।

भक्तद्वेषीज्वरःश्वासःकासःशोणितदर्शनम् । स्वरभेदश्चजा-  
यंते पट्टपेराजयक्ष्मणि ॥

(शत्रुद्वेष) खानेकी कमी कही भोजन देखनेकी भी इच्छा न हो, ज्वर से शरीर तपता करे, दग फूले, खांसी, घूंक के साथ छोहू का गिरना और स्वर भंग अवाज का घैठ जाना, यहां तक यक्ष्मा दूसरा दर्जा समझना अच्छे २ सत् वैद्य के द्वारा कोई २ आराम हो जाता है किन्तु तीसरा और चौथे दर्जे का यक्ष्मा आराम नहीं होता ॥

सर्वैरहैस्त्रिभिर्वापि लिंगैर्मांसवलक्ष्यैः । युक्तोवर्ज्यश्चिधि-  
त्यन्तु सर्वरूपोप्यतोऽन्यथा ॥

हमारे भूत पूर्व वैद्यपरों ने उपरोक्त लक्षण युक्त तथा मांसादि क्षय को वासाध्य कहा है । ठिकते हैं सब लक्षण युक्त अथवा तीन लक्षण युक्त तथा मांस और यक्ष्मण लक्षण युक्त यक्ष्मा रोगी हो तो उसकी चिकित्सा न करना, किन्तु जो रोगी मांसादि क्षय रहित हो और रोग के संपूर्ण

उत्पन्न भी मिलते हैं तो उसकी चिकित्सा ईश्वर भरोसे पर करना क्योंकि यह ऐसा दुष्कर रोग है कि ईश्वर ही आरोग्य करे । लिखा है कि अजर सत् वैद्य यक्ष्मावाले को आरोग्य भी कर देय तब भी वह मनुष्य एक हजार दिन से अधिक न जियेगा क्योंकि हजार दिन के बाद फिर उसी रोग में ग्रसित हो मनुष्य इस असार संसार को परित्याग करता है । एक स्थल में लिखा है कि जो यक्ष्मा रोगी औषध से आराम हो जाय तो जानना कि उसे यक्ष्मा का रोग नहीं था । सो है मेरे प्यारे पाठक क्यों जहां तक हो सके धीर्य की रक्षा करो क्योंकि यक्ष्मा ही पर पण निर्भर है यावत् रोग है सब धीर्य क्षय से होते हैं । अथ एन धातु क्षयादि पट् कारण से जो यक्ष्मा होने को पूर्व में लिख जाये हैं उसके लक्षण सुश्रुत से दिखलाते ॥

### शोक शोषि लक्षण ।

प्रध्मानशीलः सस्तांगः शोक्शोषिपितादृशः । विनाश-  
क्रचयवृत्तौ विकारैरूपलक्षितः ॥

अति पिन्ता शोक करने से जो यक्ष्मा रोग होता है उसमें यह लक्षण होते हैं अंग का ढीलापन और धातुक्षयके बिना भी जो धातुक्षयके लक्षण हैं सब मिलते हैं । शोक यह है कि शरीर के रक्त मांसादि सभी को दहन कर देता है, जैसा किसी कवि ने कहा है "चिताचिन्ता समाख्याता ततोचिन्ता गरीयसी । चितादहति निर्जीव स्मृतीभोदहति चिन्तयः" चिता (जिस चुनी हुई लकड़ियों पर मुरदा रख के फूका जाता है) और चिन्ता (शोक, क्लिष्ट, रंजनादि) इन दोनों में कवियों ने समानत्व दिखलाया है और अन्त में चिता से चिन्ता को बड़ा माना है इस लिये कि चिता बिना जीव के शरीर को जलाती है और चिन्ता जीव मर्दित इस रूप से शरीर को दहन करती है तो भला कहिये जब

चिन्ता में ऐसी दाढ़कता शक्ति है कि बिना रोग ही रक्त मांसादि सभी को जला देती है तो इस स्थल में रोग एक नाम मात्र समझना चाहिये ऐसी अवस्था में (स्वयोनियतुं न द्रव्यायमेवप्रतीकारः) क्या होगा? चिन्ता को दिल से हटाना । यदि कोई सन्देह करे कि चिन्ता कारण है उसका कार्य यक्ष्मा रोग है और प्रायः स्थलों में कार्य दृश्यमान होने से कारण नाश हो जाता है तो चिन्ता कारण है उसका यक्ष्मा रोग हुआ और उसके लक्षण अंग शिथिलतादि उपस्थित हैं उसके ऊपर ध्यान देके सिर्फ नाशमान कारण का शांतिपाय करने से यक्ष्मा रोग का नाश कैसे होगा ? यद्यपि कारण नाशमान सा देख पड़ता है किन्तु आभ्यन्तरिक उसका दीप बजा रहता है इसलिये बिनाकारणके नाशकार्यका नाश नहीं होता, चिकित्सकगणों को चाहिये कि कारण पर ध्यान अवश्य रखा करे ॥

### जराशोषि लक्षण ।

जराशोषीकृषोमन्द वीर्यबुद्धिवलेन्द्रियः । कम्पनोरुचि-  
मान्भिन्न कांस्यपाचहतस्वरः ॥ छीवतिज्ञे प्रणाहीनं गौरवा-  
रुचिपीडितः । संप्रसृतास्यनासाक्षः शुष्करूचमलच्छविः ॥

एक प्रकार का यक्ष्मा युद्धापा होने से होता है जिसमें शरीर दुबली जाए घीर्य बुद्धि और इन्द्रियों का काम शिथिल, शरीर अथवा हाथ मुख का कंपना, खाना अच्छा न लगना और बीसा फूटा कसि का परतन बजाने से बजता है बीसा गले से शब्द निकलें, खांसते २ पसीना निकल आये, टपाकुल हो जायंती भी कफ न निकलै, शरीर में घोक्कापन, मुख का जायका खराब, मुख, नाक और आंखोंमें पानीका बहना, सूखा और रूखा दस्त का होना इत्यादि लक्षण होते हैं ॥

यह यक्ष्मा उस युद्धापे में बहुत कम होता है जो क्रमशः अपनी अवस्था पर जाके युद्धापा होते हैं खाम कर उस युद्धापे में होता है जो

जकाल लड़कें हुये हैं अधिक तर ४० वर्ष की कम अवस्था वाले की यक्ष्मा रोग होता है ॥

### अध्व शोषि का लक्षण ।

अध्वप्रशोषी स्वस्तांगः संभ्रष्टपरुषच्छविः । प्रसुप्तगात्राव-  
यवः शुष्कक्लोमगलाननः ॥

तीसरे प्रकार का यक्ष्मा रोग अधिक रास्ता चलने से होता है । जिसका लक्षण यह है, सम्पूर्ण शरीर का शिथिल होना, कान्ति शरीर की जाती रही, हाथ पैर शून्य हो जाय जाने चुटकी काटने से बोध न हो (क्लोम) जो पिपासा स्थान है वह और गला मुँह सूखता रहै इत्यादि ।

### व्यायाम शोषि लक्षण ।

व्यायामशोषीभूयिष्ठ मेभिरिवसमन्वितः । त्रिंशैरः क्षत-  
कृतैः संयुक्तश्चतविना ॥

अधिक कसरत या अन्य प्रकारकी मेहनत करनेसे जो यक्ष्मारोग है उसमें यद्युपा करके अध्वशोषी के लक्षण मिलते हैं और क्षत रोग के बिना जो उरक्षत रोग के लक्षण हैं यह भी मिलते हैं । कसरत करने की जैसी विधि प्रथम खण्ड के आरोग्य दर्पण में लिखी है उसके परिशिष्टाफ करने से निस्सन्देह यक्ष्मा का रोग होता है ॥

रक्तक्षय शोषी व्रण शोषी और उरक्षत के लक्षण ।

रक्तक्षयाद्देहनाभिस्तथैवाहारयंत्रणान् । व्रणितस्यभवेच्छोषः  
सचासाध्यतमस्त्वतः ॥ व्यायामभाराध्ययनै रभिघाताति-



मैथुनैः । कर्मणाचाप्युरस्येन वचोयस्यविदारितम् ॥ तस्योर-  
सिद्धतेरक्तं पृथःश्लेष्माचगच्छति । कासमानच्छर्दयेच्च पीतरक्ता  
सितारुणम् ॥ सन्तप्रवचाःसाऽत्यर्थं दूयनात्परिताम्यति ।  
दुर्गंधवदनाच्छासा भिन्नवर्णस्वरोनरः ॥

शरीर से छोहू के निकल जाने से अथवा अन्य किसी कारण यथात्  
रक्तक्षय से, अत्यंत भ्रंग दर्द से, भोजन के कुपथ्य से और ध्रुण (फोड़ा)  
या छे पुरुष के भी यक्ष्मा रोग हो जाता है यह अत्यंत असाध्य होता है  
अत्यंत कमरत करने से, थोका उठाने से, बहुत दिन रात पढ़ने से, चोट  
के लगने से, अत्यंत मैथुन करने से, छाती के जोर से जादा काम करने  
से जिमका हृदय फट जाता है । उसके फटे हुये हृदय में रक्त के साथ  
पीथ और फफ दौड़ता है और उसके खांसी में छोहू और पीला, काला  
छाल रंग का वमन होता है । उस रोगी का हृदय अत्यन्त गरम, पीड़ा  
से युक्त और कांपता है और मुत्र से दुर्गन्ध आती है और ऊपर को  
स्वास चलती है और स्वर भंग याने गला बैठ जाता है ॥

### मैथुन शोपि के लक्षण ।

व्यवायशोपीशुक्रस्य क्षयलिंगिरुपद्रुतः । पांडुदेहायथापूर्वं  
क्षीयंतेचास्यधातवः ॥

अति मैथुन करने से जो यक्ष्मा होता है उसके लक्षण यह है । देह  
की रंगत पीली हो जाय, और मात घातु जो हैं वे क्रमशः उलटे होते  
हैं जिसे धीरे से मज्जा, मज्जा से हड्डी और हड्डी से मेद इसी प्रकार स्व  
पर्यन्त क्षीण होता जाय तथा शुक्रक्षय के लक्षण भी मिठें शोपि के लक्षण  
आ० द० में लिख आये हैं ॥

## असाध्य लक्षण ।

महीशिनंक्षीयमाण मतीसारनिपीडितं । शूनमुष्को  
दरंचैव यन्निगंपरिवर्जयेत् ॥ शुक्लाक्षमन्नद्वेषार मूर्ध्वश्वास  
निपीडितं । कृच्छ्रेणवहुमेहतं यच्चाहतौहमाणवं ॥

जो राज रोगी भोजन अधिक करे और रोज २ दुबला होता जावे  
दस्त पतले, अहकोश और पेट पर सूजन होने से वैद्यकों ने असाध्य  
कहा है सुन्दर यश का चाहनेवाला वैद्य ऐसे रोगी को त्याग करे । जि-  
सके नेत्र सफेद, अन्न पर ग्लानि, ऊर्ध्व श्वास करके पीडित और प्रमेह  
सहित बहुत कठिन से धारभ्यार मूलता हो पृतादृश लक्षण युक्त यक्ष्मा  
रोगी को अवश्य मारता है ॥

## अथ चिकित्सा योग लक्षण ।

ज्वरानुबंधरहितं बलवंतंक्रियासहं । उपक्रमेदात्मवंतं दी  
प्ताग्निमक्लशंनरं ॥

जब जो यक्ष्मा रोग आराम होने लायक है उसका लक्षण कहते हैं ।  
जिस रोगी के शरीर में ज्वर का तपन न रहता हो, चलने फिरने की कुछ  
ताकत बनी हो, तेज दवा को सह सकता हो और पथ्य करनेवाला हो  
जिसको खाना पच जाता हो और बहुत दुबला न हो तो उसकी चि-  
कित्सा करना क्योंकि यहाँ तक प्रथम दर्जा है रोगी निस्सन्देह आराम  
प्राप्त हो सकता है ॥

## यक्ष्मा रोग में पथ्याऽपथ्य ।

यक्ष्मा रोग वाले के लिये प्रथम पथ्य लिखते हैं । पुराने धान का  
चावल, भणया माठी के चावल का भात, खिलका रहित मूंग की दाल,

संध्या समय भोजन के पहले थोड़ा सा थल कारक शराबका पीना, मांस खानेवालों के लिये जवान बकरे के मांस का जून और जिम रोगी का मांस-सूखता जाता-है उसे केवल मांस खाने वाले जानवरोंका मांस (जैसे गिद्ध आदि) जीरा के साथ बला के खिलाना हितकारी है । नी तथा बकरी का दूध, घी, मक्खन, तरकारी में केला, कटहर, परघर, आलू किन्तु रोज २ नहीं । रामनेनुआ, (ऋदूदू) और सहिजन की छीनी, फलों में पक्का केला, पक्का सूख मीठा आम, भाबला, छुहारा, मीठा फालसा, ताजा मारियल, मयीन ताड़ का फल और मुनक्का, मसाला में सौंफ, जीरा, कालीमिर्च, लौंग, दासचिनी और पिआज । कर्म-साम सधेरे हवा खाना, भीषणियों का बनाया उत्तम तेल शरीर में मर्दन करा के जाड़े में गरम जल से और गरमी में शीतल जल से स्नान करना, गरमी में खुले छत या मैदान में, जाड़े में पटे मकान में और बर्षा काल में हवादार कांठे पर सेना, चन्द्रमा की रोशनी में रहना, उत्तम सुगंधित पुष्पों का माला पहनना, गान सुनना, रूपवती स्त्रियों से हँसी दिखनी करना किन्तु संभोग नहीं करना इस प्रकार स्त्री भी रूपवान पुरुषों से । यदि शरीर की सामर्थ्य न थकी हो तो ध्यान, दान, देव पूजा और सिद्धान्त्रात्मणों का रोज २ सतकार करता रहै और कोई किसम का शारीरक तथा मानसिक परिश्रम न करै, रंज शोक फिकिर क्रोध मन से भुला दे यदि संसार में कुछ दिग जीने की आशा रखता है ॥

### अपथ्य ।

दस्त लाने की बहुत दवा खाना, दिशा पेशाब को रोकना, स्त्री प्रसंग करना, शरीर से पसीना निकालना, बन्द मकान में या जहाँ अत्यन्त गरमी पड़तीहो जिम स्थानमें पित्त अम्लसन्न हो वहाँ रहना, नेत्रों में रोज अंजन लगाना, बहुत जागना, किसी प्रकार का अधिक परिश्रम करना, रूखा अन्न जैसे माजरा जौमरी, आरहर घने का अर्धत आदि,

एक भोजन न पचा हो दूसरा भोजन कर लेना, अधिक पान का बीड़ा चथाना, फुम्हड़ा, सेम ककड़ी, कुलथी, उरद, लहसुन हींग छाल निरवा, खटाई अघार साग पात दही तेल की बनावई चीजे, निरका रैतुआ बहुत कटु वस्तु. इन सबों को क्षय रोग वाला पुरुष सावधानी से त्याग करै ॥

### राजयक्ष्माचिकित्सा ।

सर्वस्त्रिदोषजीयक्ष्मा दोषाणां तु बलावलं । परौ च्यावस्थि-  
तवैद्यः शोषिणं समुपाचरेत् ॥

चरक का मत है कि किसी किसम का राज यक्ष्मा हो मयड़ी त्रि-दोषज हैं इसलिये वातादिक दोषों का बलाबल विचार कर शोषवाले को चिकित्सा करना उचित है ।

बलिनां बहुदोषस्य पञ्चकर्माणि कारयेत् । यच्चिणः क्षीण-  
देहस्य तत्कृतं स्याद्विषोपमम् ॥ शुक्रायत्तं वलं पुंसां मलायत्तं-  
हि जीवितं । तस्माद्यत्नेन सरक्षेद्यच्चिणो मलरितसी ॥

अगर राजयक्ष्मा रोग वाला मनुष्य हो और उसके वातादिक दोष बढ़े हों तो बमनादि पञ्च कर्म अर्थात् स्नेह, स्वेद, बमन, विरेचन और पक्ति क्रिया द्वारा रोगी के शरीर को शुद्ध करना क्योंकि उत्तम प्रकार पञ्चकर्म कराने से सब प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं । यदि रोगी रक्त मांसादि से क्षीण हो तो उसे कभी पञ्चकर्म नहीं कराना चाहिये क्योंकि क्षीण देहवाले को पञ्चकर्म बियं के समान मारता है । इसका सबब यह है कि मनुष्यों का बल धातुके आधीन है और जीवन मल (दूस्) के स्वाधीन है [ इसी से प्रमेह और हैजा रोग में जीव जल्द मरजाते हैं ] तिस वास्ते यक्ष्मा रोगी के मल और बीर्य की रक्षा यंत्र से करनी चाहिये ।

## पञ्चकर्म ।

बलवान् रोगी हो जाने चलने फिरने की अच्छी ताकत हो, भोजन का यथार्थ परिपाक होना आदि ठीक हो और रोग के लक्षण मिलते हैं तो पञ्चकर्म अवश्य कराना ।

## स्नेहकर्म ।

स्नेह क्रिया की विधि अनेक प्रकार की है जिसे पञ्चकर्म में लिखेंगे इस स्थल में साधारण प्रकार से लिखे देते हैं । मनुष्य के रक्त या वायु बाहरी नसों में मेल घिपक जाता है जिसे रक्त वायु के गमनागमन में रुज पड़ता है, स्नेह क्रिया से सब मेल फूल जाते हैं और स्वेद कर्म द्वारा, वही सब मेल रोम मार्ग से बाहर निकल जाते हैं जिसे यमस्त नाड़ियां शुद्ध हो जाती हैं ।

यक्ष्मा रोग प्रायः त्रिदोषज होता है किन्तु जिस दोष को बढ़ा देसे उसी के शमनार्थ स्नेहपान् करावे ।

केवलपैत्तिके सर्पिर्वातकीलवणान्वितं । देयं बहुकफेवन्दि  
व्योमक्षारसमन्वितं ॥

यदि पित्ताधिक हो तो केवल घृत पान करावे, वाताधिक में ल-  
यण युत घृत पान करावे और कफाधिक में चीता, शोंठ, पीपर, मिर्च  
और जयाखार के साथ घृतपान करावे । उसकी तरकीब यह है कि  
पित्ताधिष्य में आधपाय गरम पानी में दो तोला घी डाल के पिलावे,  
वाताधिक में आधपाय गरम जल में दो तोला घी ६ मासा सँपानोन  
डालके पिलावे, कफाधिक में आधपाय गरम जलमें घी दो तोला, चीता  
१ मासा, शोंठ २ मासा, छोटीपीपर आधी, मिर्च १० दाना और जया-

खार ४ मासा सर्षो को महीन चूर्ण कर घृत समेत गरम जल में डाल के पिलादेवै ।

“शीतकालेदिवास्नेह मुष्णकालेपिवेत्तिश्चि”-शीतकाल हो तो दिनमें प्रातःकाल और गरम दिनों में दीपक जलने के बाद स्नेह पान करावै । अगर स्नेह न पचे तो थोड़ा २ कई बार गरम जल पिलावै । जिन को स्नेह पीने में रुचि न हो तो उभी स्नेह को गरम भात में मिला के खिलावै । अपथा भात के साथ भी जिन्हे न पसन्द हो तो निम्बिलि-खित स्नेह पान करावै ।

शर्कराचूर्णसंयुक्ते दोहनस्येष्टतेनुगां । दुग्धाक्षीरंपिवेट्रूजः

सदाःस्नेहनमुत्तमं ॥

यह बतैन जिसें दूध टुहा जाता हो उभी बतैन में घी और नि-श्री डाल के उसीमें गी के दुह के तत्क्षण गरमागरम उम दूध के पिला ने से तत्काल स्नेहन पाने स्नेह का काम होता है । इसी प्रकार पांच सात अपथा दश दिन जब तक उत्तम प्रकार से स्नेह न हो पान करावै, पाने को मुलायम खिचरी आदि खिलावै । स्नेह पान करने वाला बहुत मेहनत, फल फलहरी अतिशीतल पदार्थ का सेवन, दिशा पेसाय का रोकना, रात को जागना दिन को सोना, कफकारक और रूखे अन्न इत्यादि त्याग करै ।

स्नेह का फल ।

दीप्ताग्निःशुद्धकीष्टश्च पुष्टधातुर्दृढेन्द्रियः । निर्जरोवलवर्णा-  
दयः स्नेहसेवीभवेन्नरः ॥

स्नेह पान करने से अग्निप्रदीप्त, कोष्ठपरिस्कार, धातुपुष्ट, बल चतु-  
शाह की वृद्धि और शरीर का पीलापन नाश और मातादि यथा स्थान  
स्थित होता है । जय देखे कि स्नेहित रोगी का मल सिग्ध और अङ्गों  
में कोमलता तथा सिग्धता, शरीर हलकी और इन्द्रियां निर्मल यह  
लक्षण देखपड़े तो साधारण प्रकार से स्वेद क्रिया द्वारा शिराओं के  
मैल निर्गत कर देय । लेकिन यदि रोगी दुर्बल हो और निम्नलिखित  
लक्षण मिलते हों तो स्वेद कर्म नहीं करना, जैसे—प्रमेह; घाव, अतीसार,  
बमन, जीधूमना, शिरददं हीलदिल, अधिक पीयास । ऐसाही जरूरत  
जानपड़े तो मृदु स्वेद कराना ।

### स्वेद कर्म विधि: ।

सर्वान्स्वेदान्निवातेच जीर्णान्तेवाऽवचारयेत् । खेदाद्वातु-  
स्थितादोषाः स्नेहक्लिन्नस्यदेहिनः ॥ द्रवतांप्राप्यकीष्ठांतर्गत्वा  
यांतिविरेकतां ।

जितने प्रकार के स्वेद हैं सबों को निश्चात स्थान ( जिस घर में  
हया न जाता हो ) में करना चाहिये । स्नेहपान से सिग्ध हुए रोगी  
के त्वचा आदि और धातुओं में जमेहुये जो दोष हैं वे पतले होके कोठे में  
प्राप्त होते हैं वे ही सय पसीना से निष्कल जाते हैं ॥

### स्वेद ॥

स्वेद भी चार प्रकार का है हिन्दवा ज्ञान स्वेद प्रकरण में करिगे इस  
स्थल में यक्ष्मा वाले को जो स्वेद की जरूरत है उसे लिखते हैं । स्वेद  
कर्म इसलिये कराया जाता है कि जो स्नेह कर्म से शिराओं के भीतर  
का मैल फूल जाये हैं वे रोग मार्ग ( बाह के रास्ते ) होके निकल जाय

जिसे नसें के मुख खुल जाय जिससे प्रायः रोगी को सुस्ती, जकड़न, एँठन, भारीपन मालुन होता है न हो । एक बात इस समय हमको और कह देना चाहिये, वह यह है कि पञ्चकर्म में देा मत है, कितनों का मत है कि स्नेह, स्वेद, ब्रमन, विरेचन और बस्ति क्रिया क्रमशः कराना और केचित् आचार्यों का मत है कि "प्रथमं ब्रमनं पश्चाद्विरेक्यानुवासनं । एतानि पञ्च कर्माणि निरूहो नायनं तथा" पहले ब्रमन, फिर जुलाब, फिर अनुवासन, निरूह और नायन । इसमें हमारी सम्मति नहीं है क्योंकि इससे यथार्थ शरीर संशोधन नहीं होता क्योंकि शाङ्गधरमें साफ लिख दिया है:—

येषां नस्यं विधातव्यं वस्तिश्चापि हि देहिनां । शोधनीयाश्च  
येकेचित्पूर्वस्वेद्याश्च ते मताः ॥

नस्य अर्थात् नाक में दवा सुझाने के लिये क मनुष्य को, बस्ति कर्म याने पिचकारी देने के योग्य और जुलाब दिवाने के योग्य पुरुषों को पहले शरीर से पसीना निकलवाय के पीछे नस्य आदि दिवाने का प्रयोग करना उत्तम है । और यह सिद्धान्त है कि बिना स्नेह के स्वेद उत्तम नहीं होता तो इन्हीं सब बज्जुहातों से सिद्ध होता है कि शरीर शुष्यर्थे स्नेहादि पञ्चकर्म यही लाभदायक है ॥

द्रवस्वेद ॥

यक्ष्मा घाळे को सिधाय द्रव स्वेद के अन्य स्वेद कदापि न देय वह भी सूक्ष्म, कारण यह है कि अजीर्ण वाला, बहुत कमजोर, प्रमेह रोगी, घाव वाला अथवा जिसके मुख से रून जाता हो, बहुत प्यास से युक्त, जिसे दस्त पतले आते हों इत्यादि उपद्रव संयुक्त रोगी को स्वेद न कराया, सो यक्ष्मारोग बिना घातुरोग के होताही नहीं इसलिये बहुत सूक्ष्म स्वेद कराना चाहिये ॥



## साधारण स्वेदविधि ॥

जलमी, पीली सरसों, कुरपी, सोंफ, देवदारु, सफेद जीरा, अरण्ड कीं-जड़, सहिजन की छाल, असगन्ध, घेल की छाल, समालू की पत्ती और सेन्धानेन, उक्त सब औषधों को एक २ छंटाक से एक बड़े घड़े भर जल में रात को भिजा देय, सवेरे पकावे, घड़ा का मुख ढपा रहै जब पानी सूख पकजाय चूहे से उतार लेय जब घोड़ा गरम सहने लायक जल हो जाय, रोगी के समस्त शरीर में छाछादि अथवा नारायण तैल या कालीतिल का तैल मालिस करके निवात स्थान में जहां हवा का नाम न हो एक गहरी कठीती अथवा कोई चौकोन बाक्स जिसमें से पानी न बहै उसी में रोगी को बैठाप ऊपर से दोनों कान्धों से उसी काढ़े की महीन धार छोड़े उसी प्रकार एक दिन बीच में नागा दे के तीसरे दिन फिर स्वेद करै इसी तरह तीन या चार बार करै जब तक शरीर हलकी न हो ॥

शिरामुखैरे।सूक्ष्मैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् । शरीरेवलमाधत्ते  
युक्तःस्नेहावगाहने ॥ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाशनः ।  
शीतशूलाद्युपरमे स्तम्भगौरवनिग्रहे ॥ दीप्तिग्नौमार्दवेजाते  
स्वेदनाद्विरतिर्मता ।

इस अथगाहन स्वेद से सब नसें का और रोमें का मुख खुल कर शरीर की वृत्ति होती है याने नाड़ियों के मुप जो बालों के छिद्र हैं उस में अथगाहन का माप प्रवेश होके फिर रक्तादिकों के यहने वाली नाड़ियों में पहुंच कर शरीर को शुद्ध और मल को प्राप्त करता है । इन्हे बढ़कर दूसरा वायु नाशक उपाय नहीं है, जब शीत और शूल की शक्ति हो एवं शरीर का जकड़न और भारीपन जाता रहे, मूत्र का उतरना

और शरीर मुलायम हो तब स्वेद कराना बन्द कर देय और स्वेद कराने के पश्चात् रोगी के शरीर में हवा गही लगने पावे क्योंकि खुले हुये नसे में शीघ्रही हवाप्रवेश हो जाता है-किन्तु स्वेदके बाद रोगी के नेत्र और हृदय को केचड़ा जल या गुलाब जल से धो देना चाहिये ॥

सम्यक्स्त्रिंविमृदितं स्नानमुष्णांबुभिःशनैः । भोजयेचान  
मिष्यन्दि व्यायामंचनकारयेत् ॥

स्वेद कराने के थोड़ी ही देर पीछे रोगी के समस्त शरीर में तैल मर्दन करके गरम जल से शनै २ स्नान करा दे और कफ न पैदा होने पावे ऐसा भोजन करावे किन्तु परिश्रम किसी किसमका न करने दे ॥

### वमन ।

स्वेद कराने के दो तीन दिन के बाद वमन कराने की क्रिया करे अगर कफ पित्त मूत्रा हो तो पहिले उसे तर कर लेय तब वमन करावे, यदि बड़े हों तो उसी दिन वमन कराये किन्तु निम्न लिखित लक्षण युक्त रोगी को वमन न करावे जैसे—यकृत के लक्षण के अतिरिक्त रोगी को नेत्र से कफ दिखाता हो, पेट में कोई बिगारी हो, वस्तुतः दुबला हो, शक्ति हृद्धि, गर्भिणी स्त्री, बालक, शरीर में जोड़ा फुन्सी हो या मुँह से रुधिर गिरता हो या भाप ही वमन होता हो, दंस्त में कीड़े आते हों और भोजने की शक्ति न हो तो उसे वमन नहीं कराना चाहिये और यह जो लिखा है ॥

शरत्काले वसन्तेच प्रावृट्कालेच देहिनाम् । वमनं री-  
चनंचैव कारयेत्कुशलाभिपक् ॥

( शरत् ) कार्तिक एगहन ( वसन्त ) फाल्गुन और चैत्र ( मास )  
 आषाढ और आश्विन इन महीनां में चतुर वैद्य वसन करावै और जुलाय  
 देखै, सो यह नियम आरोग्य-पुरुषोंके लिये बांधा गया है जो सालियाना  
 जुलाय लिया करते हैं रोगियों के लिये नहीं क्योंकि रोगियों के लिये  
 समय परखा जाय तब तक रोगीही चल सके, रोगियों के लिये हर स-  
 मय हर महीनां जुलायदि देने के लिये शास्त्रकारों ने कह दिया है ॥

वसन कराने के एक दो दिन पहले मुलायम मूंग की खिचरी,  
 यथागू या दूध भात अथवा अन्य कोई कफ कृत पदार्थ भोजन करावे  
 और जिस दिन कै कराना हो उस दिन भी दो तीन घंटे पहले मूंग की  
 पतली दाल बना के पिलावे ॥

कफ का वेग अधिक हो तो छोटी पीपर २ मास। मैनफल ६ मास।  
 सेंधानान ६ मास। एक सेर पानी में जोस देव जब तीन पाय पानी रह  
 जाय मलकर छान लेय फुल गरम रहै तब पिला दे याद पिळाने दया  
 के रोगी को नोड़े मोड़ि के बैठायै जैसे कंट बैठते हैं अर्थात् कंट के  
 आसन बैठाय के तम कै करावे । रोगी चाहे गले में आंगुली डाल के कै  
 करै अथवा एरंड पत्र की डंडी गले में प्रवेश कर वसन करै क्योंकि बिना  
 किसी वस्तु से गले में सुरसुराहट पहुंचाये वसन अच्छी तरह नहीं होता  
 और एक आदमी शिर को और एक आदमी दोनों प्रसलियों को सह-  
 राता रहै । वैद्य यहां अवश्य मौजूद रहै क्योंकि सायत रोगी घमड़ाकर  
 कै करनेसे हिचक जाय क्योंकि अच्छी तरह वसन न होनेसे मुखसे छार गिरने  
 लगता है, हृदय में पीड़ा और कोष्ठ में सजुली होने लगती है तथा अ-  
 धिक वसन होने से भी पित्त, हिचकी, मिहोसी, जीभ निकलना, नेत्र  
 का चञ्चलपना, ठोड़ी जकड़ जाना, मुख से रुधिर चूंकना, कण्ठ में पीड़ा  
 आदि उपद्रव हो जाते हैं इस लिये वसन कराते समय वैद्य का रहना  
 बहुत साजगो है ॥

थोड़े दिन की बात है कि यहाँ ग्राहगंज में लाला बाबूहाल कोठीवाल  
 के छोटेदमाद लालाजोखईलालजी सवेरे सिर्फ भीतरी गर्मी निवारणार्थ वमन  
 किया, अधिक वमन होने से ठोड़ी जकड़ गई और जोभ घुस गई विज्ञाप हो  
 कर गिर पड़े, बाका बंद हो गया, लोग कोठो में उठा लाये, गौ दान होने  
 लगा, ब्राह्मणगण पूजन पाठ करने लगे वड़ा चाहाकार मच गया हमारे  
 बुलाने को कोठो का मुखार दीड़ा आया हम भी गये, देखा कि मो० फजले-  
 हसन सहर के एक नामी हकीम बैठे हैं कपड़े की दो मोटी वस्ती बनाये  
 छींक लाने के लिये नाक में प्रवेश कर रहे हैं और दो कपड़ा गुलाब में तर  
 कर छाती और पेट पर रखे हैं और वारम्बार गुलाब जल पिलाते हैं,  
 किन्तु गुलाब जल मुख में देत ही रोगी भन्वाकार हो जाता था हम भी बैठ  
 गये और लोगों से विज्ञाप होने का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि वमन  
 किया उसी के साथ ही विज्ञाप होकर गिर पड़े और बाका बंद हो गया,  
 हकीम से हमने कहा आप यह क्या करते हो, इनके थिर पर गरमी बढ़ने  
 से ठोड़ी नहीं जकड़ी, गले का नस ढोला करिये और जीभ में पानी लाइये  
 अधिक की होने से जीभ भीतर चली गई है। वैद्यों की चिकित्सा हकीमों को  
 कहां पसन्द, हकीमने कोठीके गुमास्ता मु० इनुमान प्रसादसे कहा आप वैद्यजी  
 को दवा कीजिये हमको दारागंज जाना है और यह रोगी तीन चार घंटे में  
 मर जायगा, कैसाह लोगों ने समझाया कुछ भी न सुना चल दिया, हमने  
 गुलाब जल की जगह उष्ण गौ का दूध पिलाना शुरू किया, गले के रंगों में  
 विषगर्भ तैल मर्दन कराय द्रव स्वेद करा दिया और थोड़ा सा नींबू का अ-  
 चार मगाय जैसा ही उसका गूदा मुखमें दिया कि भट रोगी बोल उठा और  
 कहा कि जरा सा यही दवा और खिलाओ, सब लोग अचंभेमें आ गये, रोगी  
 कहने लगा कि गुलाब जल मुख में देत ही मालूम होता था कि मानों पूरी

से किसी ने छाती को चाक कर दिया, बोलने को बहुत चाहते थे मुँह नहीं उठता था होस हवास हमारा सब दुरुस्तथा, जब से आप दूध पिलाना शुरू किया उखे कुछ चैन मालुम हेने लगाया इस अचार के खिलाते ही हमारा वाक खुल गया और हम बोलने लगे अब हम मजे में हैं । इसे पाठकगण मालुम कर सक्ते हैं कि चिकित्सा का कर्म करना सहज बात नहीं है कितने जुम्मेदारी का काम है कि यदि बिमारी पहचान में आ गई और ठीक दवा दिया गया तो रोगी जल्द अच्छा हो गया न समझ में आया तो रोगी को यमालय पहुँचा देना कठिन नहीं है इस लिये बिना शास्त्र का अध्ययन दवा करना महा हत्या का काम है ॥

**वमनान्तः प्रविष्टायां जिह्वायां कवलग्रहः ।**

अगर अधिक वमन होने से जीभ भीतर घुस जाय तो कवलग्रह अर्थात् खट्टे पदार्थ का गोला बना के मुख में दे अपघां रोगी के सामने बैठ के अन्य गनुष्य खट्टे फलों का खावे तो उनके देखनेसे रोगीकी जीभ में पानी छुंटे जिसे जीभ कोमल हो जाय ॥

**वमनपर पथ्य ॥**

वमन कराए हुये रोगी को तीसरे पहर जब तेज भूख लगे तब धुली मूंग और पुराने चावल का सूप या साबूदाना या जङ्गली देश के जीवों के मांस का सूप रुबि के अनुसार देवे और जिस दिन वमन करावे गरिष्ठ भोजन, शीतल जल, तेल की मालिस करना आदि वर्जित करे ॥

**उत्तमवमन के लक्षण ॥**

हृत्कण्ठशिरसांशुविं दीप्ताग्नित्वञ्चलाघवम् । कफपित्तवि-  
नाशश्च सम्यग्दान्तस्यचेष्टितम् ॥

अच्छी तरह घसन होगाने से यह लक्षण देव पड़ते हैं—हृदय, गला और घिर की शुद्धि अर्थात् कफ पित्त के उपद्रवों का पूर्ण रूप से शान्त होना, भूख का लगना, शरीर का हलकापन और कफ का नाश हो तो जानना चाहिये कि घसन अच्छा हुआ है । यह घसन कराने का साधारण नियम कहा गया है विद्वान लोग इसके अतिरिक्त भी अपनी बुद्धि मता के अनुसार देश काल अवस्था रोगी की प्रकृति की परीक्षा करके अन्य औषधियों के द्वारा अथवा उपायों के द्वारा घसन करा सकते हैं ॥

### विरेचनविधि ॥

घसान्ते विरेचनं याने घसन कराने के बाद दस्त छाने की दवा जरूर देनी चाहिये । यह बात हम पहलेही कह चुके हैं कि रोग विशेषमें सगप परखने की जरूरत नहीं है सिर्फ थोड़ी सी बुद्धि खरब करने का काम है. ये शास्त्रकारों ने लिख भी दिया है:-

स्निग्धस्त्रिन्नस्यवान्तस्य दद्यात्सम्यग्विरेचनम् । अवांतस्य  
त्वधःस्रस्ती ग्रहणीकादयेत्कफः ॥ मन्दाग्निगौरवकुट्या ज्जन  
येहाप्रवाहिकां ।

पहले स्निग्ध प्रायः फिर स्त्रिन्नस्य बाद घसन कराके जो जुलाब दिया जाता है वही उत्तम जुलाब होता है और जो लोग बिगा के किये जुलाब ले लेते हैं तो उनका कफ नीचे की जांके ग्रहणी को आरखादित कर लेता है जिससे अग्नि की मन्दता, देह में भारीपन और बड़ा भारी गतीमार का रोग होता है ये प्रायः देखने में भी आता है कि जो लोग अटकलपरछू जुलाब ले लेते हैं उनकी बिमारी और भी बिगड़ जाती है । प्रसङ्ग वन जुलाब के योग्य और अयोग्य रोगों को दिखलाते हैं ॥

## जुलाबके योग्य रोगी ॥

जीर्णज्वरोगरव्याप्तो वासरक्तीभगन्दरौ । अर्शःपांडूदरग्रंथि  
 हृदिद्रोगारुचिपीडिताः ॥ योनिरोगप्रमेहातां गुल्मप्लीहव्रणा-  
 र्दिताः । विद्रधीर्द्विस्फोट विषूचीकुष्ठसंयुताः ॥ कर्णना-  
 श्राशिरावक्त गुदमेढ्राभयान्विताः ॥ यकृच्छेधाक्षिरोगाताः  
 कृमिचारानिलादिताः । शूलिनीमूत्रघातातां विरेकाहान-  
 रामताः ॥

इतने रोगियों को जुलाब देना लाभदायक है (जीर्णज्वरी) पुराना  
 सुखार जीर्णज्वर और यक्ष्मा वालेको (गरव्याप्त) गहर खालिया हो या गह  
 रीली चीन्नोंके खानेसे अग्नि अगैरह जिसका बिगड़ गया हो, आत रक्तरोगी,  
 भगन्दर रोगी (अर्शः) आवासीरखाला, पांडुगेगो, उदररोगी, ग्रंथिरोगी जि-  
 सके हृदय में दर्द और खाना अच्छा न चालूम होता हो । योनिरोग से  
 पीड़ित स्त्री, प्रमेह रोगी, गुसन आदि उदर विकार से पीड़ित, पिलहरी  
 रोग खाला और जिसके शरीर में जोड़ा फुन्नी हो, विद्रधीरोगी, बमनरोगी,  
 (विस्फोटक) नासा की बिनारी खाला (विषूचिका) हैजा यहां पर लोग  
 समझेंगे कि जिसे सुदही दस्त जारी है उसे जुलाब देना कैसा ? इस  
 में जुलाब देने की बिधि इस लिये कहा है कि बिध दूषित मल मला-  
 शय में न रहजाय क्योंकि उनके रहने से अन्ततोगत्या रुचिर पानी है  
 के मलद्वारा निर्गंत होने लगता है ।

कुष्ठ रोग से पीड़ित । कान, नाक, शिर, मुह, गुदा, लिङ्ग,  
 रोगखाला, यकृत, शोथरोग, नेत्ररोग, कृमिरोग और वायुरोगखाला, शूल  
 याने उदर दर्द अथवा अङ्ग दर्दखाला (मूत्रघात) सुजाक रोगखाला  
 इन रोगियों को जुलाब देना लाभदायक है ।

## जुलाब के अयोग्य रोगी ।

वालवृद्धावतिस्त्रिगधः क्षतक्षीणोभयान्वितः । श्यांतस्त्वपार्तः  
स्थूलश्च गर्भिणी च नवज्वरी ॥ नवप्रसूतानारी च मदाग्निश्च  
मदात्ययी । शल्यार्दितश्चरूक्षश्च नविरिच्छाविजानता ॥

निम्नलिखित मनुष्यों को जुलाब नहीं देना चाहिये, जैसे—बालक, बुढ़ापा (अति स्त्रिगध) अति स्नेह पानयाता \* (क्षत क्षीण) कफ के साथ सूत या पीस जाने वाले को, भय युक्त तथा रास्ते से थका, अधिक पियास से दुखित, बहुत मोटा आदमी, गर्भिणी तथा ज्वर वाला, जल्दीही जिसके लड़का पैदा हुआ हो ऐसी स्त्री, जिसकी मुतलक भूख न लगती हो (मदात्ययी) नशीली चीजोंके खाने पीने वाला जिसके शरीरमें एथियार छने हों, (रूक्ष) जिसकी शरीर धातु क्षीण वायु के बढ़ने से सुख गई हो ऐसी लोगों को चतुर वैद्य कभी जुलाब न देवे यदि ऐसा ही अरूक्ष संमत्क पड़े तो सोते समय कोई मृदु रेशम द्रव्य खिछा के सवेरे एक दस्त करा दे । जुलाब तीन प्रकार का होता है । मुलायम, मध्यम और कड़ा, पित्त प्रकृति वाले को मुलायम, कफ प्रकृति वाले को मध्यम और वात प्रकृति वाले को कड़ा जुलाब देना वैद्य यों की सम्मति है किन्तु यक्ष्मा वाले को मध्यम जुलाब देना चाहिये क्योंकि यह रोग त्रिदोष जनित होता है ॥

\* इस स्त्रेह से पंच कर्मवाला स्त्रेह नहीं समझना यहां अति स्त्रेहसे तात्पर्य अधिक घृत तैल, स्त्रवा चरबो आदि से है मतलब यह है कि जादा विक्रमो चीज पीने वाले को यदि पचा गया तो समस्त नाड़ियों की और मज की शुद्धी भाप भी रहती है और न पचा तो दस्त जारी होता है यक्ष्णी कमजोर रहती है इस लिये जुलाब का निषेध किया है ॥



## मुञ्जिस ।

जुलाय के पहले सर्व साधारण को, प्रकृति के अनुसार मुञ्जिस जरूर देना चाहिये यद्यपि स्नेहादि कर्म से मल जुलायम रहते हैं तथापि अधो रचनार्थ मल को जांत से अलग करना बहुत उत्तम है ॥

इसी हेतु से हकीमों ने मुञ्जिस निकाला है और निहायत लाभदायक है । मुञ्जिस पिचाने से एक बड़ा भारी लाभ यह है कि यदि जुलाय प्रकृत के अनुसार न पड़ा, दस्त जैसा होना चाहिये न हुआ तो भी कुछ नुकसान नहीं होता इसी लिये अमीर लोग हकीमी जुलाय प्रायः पसन्द करते हैं और हकीम लोग इसका घमंड करते हैं कि हमारे यहां जुलाय देने की जैसी उमदा रीति है, वैद्यक और हाकूरी में नहीं है । जैसी युतानी जुलाय से रोगी के मल की सफाई होती है, चित्त प्रसन्न रहता है, बल नहीं घटता यह बात वैद्यक के जुलायमें नहीं है (आ० द०) हकीमों के इस बात को सर्वथा मिथ्या नहीं कह सकते किन्तु इतना तो अवश्य कहेंगे कि जिस बिमार से दया अधिक न पिया जाता है और कफ मित्राज वाले को हकीमी जुलाय कम गुण कारक है ॥

## यक्ष्मापर मुञ्जिस ।

खीरा का बीज १ तोला, गुलाय का फूल २ तोला, मुलेठी ६ मासा, सैफ ३ मासा उन्नाय १॥ तोला, मुनक्का बीज रहित २ तोला, इन सब दवाइयों को अधिकचरा कर ३ पुड़िया बनाले एक पुड़िया को गद्यापाय जल में रात को भिजा देय सवेरे गन्दाग्रि से पचाये कम डेढ़ छंटाक जल रहजाय मल के खान लेय और १ तोला मुलकन्द गुलाय, मुलकन्द न मिले तो आधा तोला मिश्री मिला के पिछाय देय, अगर मित्राज में सरदीयाने कफ के अधिक लक्षण मिलते हैं तो खीरा के बीज की जगह रेह की जड़ का खाल डाले और मुलकन्द की जगह २ मासा सेंधानान डाले

इसी प्रकार सबेरे तीन दिन मुञ्जिस पिलायै, और मूंग की खिचरी, या, मूंग की दाल पुराने चायन का भात घी डाल के खिछायै । बाद चौथे दिन पित्ताधिक्य प्रकृत घाले को आरोग्य दर्पण प्रथम खण्ड के ४३ सके में जो हकीमी जुलाब लिखा है पिलायै सिफं अवस्था और रोगी का मलाबल देख मात्रा को घटा बढ़ा लेना काफी है और क्रिया सब बही है । उन्हीके नीचे डाकूरी जुलाब लिखा है यह जुगाम भी निहायत उपदा और सब प्रकृति के लिये लाभ दायक है वैद्य चाहे तो पिला सक्ता है । एक एक दिन बीच में खाली देके जुलाब देय, जिस दिन जुलाब देय, उस दिन घृत रहित मूंगकी खिचरी खिछायै और निम्नलिखित अपघ्यों से बचावै ।

प्रवातसेवांशीताम्बु स्नेहाभ्यङ्गमजीर्णता । व्यायामसंमैथुन-  
चैव न सेवेतविरचितः ॥

तेज हया में रहना, बहुत शीतल जल का पीना, घी मलाई आदि का खागा, शरीर में तेल चपटन का महत्न करना, खूप पेटभर कर भोजन करना, किसी प्रकार का सेहगत कराना, और स्त्री प्रसङ्ग जुलाब के दिन कदापि सेवग न करै ।

खाली दिनों में अपांत जिस दिन जुलाब का नहीं है खिचरी या भात के साथ घी खाना निषेध नहीं है ।

श्लेष्माधिक्य प्रकृतिघाले को यदि डाकूरी जुलाब देना राय न पड़े तो यह जुगाम देना ।

पिप्यत्नीनागरसिंधु श्यामात्रिभृतयासह । लिहित्चौद्रेण-  
शिशरेवंसन्तेशधिरचनम् ॥

छोटी पीपल १ मासा, शोठ २ मासा, सेंधानीस ३ मासा, तिघारा

के जड़ की छाल ६ मासा और निशोत ६ मासा सब को महीन पीस एक छोला सहतमें साग के खिछादे और ऊपरसे घोड़ासा गरमजल पिला दे यह दवा पूर्णमात्रा है बलाबल देखकर चिकित्सक मात्रा घटा बढ़ा सकता है ।

### रेचन पर अभया मोदक ।

अभयामरिचंशुण्ठी विडंगामलकानिच । पिप्पलीपिप्पली  
मूलं त्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ एतानिसमभागानि दंतीचद्विगुणा  
भवेत् । त्रिवदष्टगुणाज्ञेया षड्गुणाचात्रशर्करा ॥ मधुना  
मोदकं कृत्वा कर्षमात्रप्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातः शीतं-  
चानुपिवेज्जलम् ॥ तावद्विरेच्यतेजंतु र्यावदुष्णंनसेवते । पा-  
नाहारविहारिषु भवेन्निर्यचणांसदा ॥

### अभया मोदक का गुण ।

विषमज्वर मन्दाग्नि पांडुकासभगंदरान । दुर्नासकुष्ठ  
गुल्माशी गलगंड व्रणोदरान् । विदाहप्लीहमेहांश्च यच्चाणं  
नयनामयान् । वातरोगंतथाध्मान' मूत्रकृच्छ्राणिचाश्म-  
रौम् ॥ अभयामोदकाच्चेति रसायनवराःस्मृताः । पृष्टपाज्ज्ञो-  
रुजघन कथ्युद्गुणंजयेत् ॥ सततंशीलनादिषु पलितानि  
विनाशयेत् ॥

(अभया) बड़ा हड़ जो पानी में डूब जाता है वरना नहीं डूबे

जो सब इन्हीं से बड़ा और दस्तायर होता है १ तोला, काठी निच १ तोला, वैतरा शोठ १ तोला, घायमिहंग १ तोला, भावला बीज रहित १ तोला, शुद्ध छोटी पीपर १ तोला, पीपलामूल १ तोला, दालचिनी १ तोला, तेजपात १ तोला, सोया १ तोला, जमालगोटे के जड़ की छाल (इसी को लोग दानूनि भी कहते हैं) २ तोला, निग्रीत चाहे काठी हेा या सफेद २ तोला, और मिश्री या चिनी ६ तोला । सब दवाइयों को कूट कपारुण कर ऊपर से मिश्री मिला सहन में सान के चार २ मासे की गौली बनाय लेव, यह पूर्ण मात्रा है, ताकत के अनुसार वैद्य मात्रा को घटा बढ़ा सकता है । प्रातःकाल एक गौली खा के ऊपर से शीतल जल पीने से दस्त आते हैं । शीतल जल इस जुलाब का लाग है, बीच २ में थोड़ा २ शीतल जल रोगी बराबर पीता जाय, गरम जल पीने से दस्त बन्द होता है इस लिये जब दस्त बन्द करना संजूर हो तो गरम जल भी लेवे । किन्तु मुज्रिस के बाद इस जुलाब का लेना बहुत अच्छा होता है । एक २ दिन बीच में खाती दे के यह जुलाब लेवे, अभया मोदक से निम्नलिखित रोग नष्ट होते हैं ॥

बिषमज्वर, संदाग्नि, पांडु रोग, खांसी, भगन्दर, सब प्रकारका कोढ़, गाला, बयासीर, गलगंड, फोड़ा फुन्सी, उदर रोग, दाह रोग, पिलही, ममेह, यक्ष्मा रोग (जिसके प्रकर्ण में लिख रहे हैं) और नेत्र रोग, घात रोग, पेटका फूलना, सुजाक एवं पथरी रोग, यहसब कारण होते हैं, अभया मोदक उत्तम रसायन है याने हमेशा इसी मोदकका जुलाब लिया करे तो यह गनुष्य जल्द सुढ़ापा न हो, इसके अलावा पीठ, पशुरी, गांप, पिंडरी, कमर और पेट इनके दर्द को अभया मोदक बहुत जल्द कारण करता है अगर इस मोदक के द्वारा गनुष्य अपने कब्रको सर्वदा दूर करता रहै तो बाल उसके बहुत जल्द न पके किन्तु यहां श्लोक के ठीक गाने हैं (सततंशोडनादेव पलितानि विनाशयेत्) निरन्तर इन मोदक के सेवन करने से सफेद बाल काठे हो जाते हैं यह बात असम्भव जान पड़ता है

दां मल साफ लाने के लिये अगर जुलाब न भी दे के अभया मोदक खिलाये तो कोई हर्ज नहीं है ॥

इसके अलावा और भी अनेक प्रकार के उत्तम जुलाब हैं जिन्हें मि-  
रेचन प्रकण में लिखेंगे ।

अगर जुलाब की तेजी मेदे पर पहुंचने से दस्त अधिक आवे या दस्त न रुके अथवा पेट में दर्द आदि संपद्रव हो तो देा तोला आंस के छाल को पानी में महीन पीस लुगदी बनाय दही में सान नाभी पर लेप कर देय और खानेको बकरी का दूध भात मिश्री या मूंग की खि चारी खिलाये और घोड़े से चावल के धोवन में मिश्री मिला के पिलाये और गुलाब जल अथवा जल से मारम्बर नेत्र मुख घोदिमा करें ।

जुलाब के देने से दस्त खुलासा न आवे अथवा जुलाब पचजाय तो बिना दस्त कराये रोगी को अन्य औषध न देय और घबड़ा के चुप चाप न हो जाय उसको सूव विचार करै कि जुलाब क्यों पच गया दस्त खुलासा क्यों नहीं आया ? अगर रोगी की प्रकृति गरम है और गरमही जुलाब दिया गया है इस कारण जुलाब नहीं हुआ हो तो गु-  
लकन्द गुलाब सीरखिस्त यगैरह शीतल जुलाब पिला के दस्त कराये और सरद मिजाज वाले को सरद जुलाब के देने से दस्त न आया हो तो हड़ सनाप यगैरह देके दस्त कराये अगर खुश्कीके यजे से न हुआ हो तो पुनः स्नेहपान या मुन्जिस अथवा आगवधादि क्षाप पिला के मज्ज को भीषा करै और उसको फिर जुलाब देवे । जुलाब देने के दो तीन दिन बाद तम वस्ति क्रिया याने पिचकारी की विधि प्रारंभ करे ॥

वस्ति कर्म ।

गुदा के भीतर पिचकारी देने को वस्ति कर्म कहते हैं, यह पंच

कर्म की गन्तिम क्रिया है इन क्रिया से मेदे की सफाई, वायु का नाश, दिल दिमाग में ताकत धातु और आयु की वृद्धि होती है । ये बस्ति दो प्रकार की है एक अनुवासन बस्ति, द्वितीय निरूहण बस्ति ॥

यःस्नेहैर्दीयते सस्यादनुवासन नामकैः । कषायक्षीरतैले-  
र्योनिरूहः सनिगद्यते ॥

जिसमें घी तैलादि स्नेह युक्त पिचकारी दिया जाता है उसको अनुवासन बस्ति कहते हैं और जिसमें काढ़ा दूध तैल इत्यादि मिश्रित करके पिचकारी देते हैं उसको निरूह बस्ति कहते हैं ॥

पिचकारी के जरिये से गुदा द्वारा मलाशय में जीपघ प्रवेश कर मल माफ करने की क्रिया डाकूरी में बहुत अधिक है । वैद्यक में भी है किन्तु वैद्य लोग पहरण के मारे किसी को अन्यायश्य पढ़ने पर भी पिचकारी नहीं देते और न अपने किसी शिष्य को सिखाते हैं कि उसी से काम लिया करे इसी से और भी वैद्य बिद्या प्रतिदिन नष्ट भ्रष्ट होती जाती है । पिचकारी की क्रिया ऐसी सहज है कि जरूरत पढ़ने पर अनुप्य अपने लिये आप खुद कर सकता है और आजकल कदम अधिक रहने के कारण लोग प्रायः पिचकारी अपने व्यवहार में लाते हैं । किन्तुने गरम जल से रोज मलाशय को धोते हैं । जुलाब लेने के बाद पिचकारी लेने से अवस्था की स्थिति आदि गुण जैसा की वैद्यक शास्त्र में लिखा है अवश्य होता है ॥

शरीरोपचयंवर्षं बर्लमारोग्यमायुषः । कुरतेपरिबृद्धिं च  
बस्तिःसम्यगुपासितः ॥

अच्छे प्रकार बस्तिबर्मे होनेसे शरीर पुष्ट और बलवान, चेहरेपर रौनक आरोग्यता और वायु भी वृद्धि होती है । सुश्रुत महाराज भी चिकित्सा स्याग के पैनीसर्वे अध्याय में लिखते हैं ॥

वीर्येणवस्तिरादत्ते दीपानापादमस्तकात् । पक्वाशयस्थोऽ-  
स्वर्गो भूमेरक्षीरसानिव ॥

जैसे आकाश में उदय हुआ सूर्य अपनी किरणों के बल से पानी को खींच लेता है उसी प्रकार पक्वाशय में स्थिर हुई बस्ति अपनी ताकत से पैर से मिर तक के दीपों को नाश कर देती है ॥

सकारांपृष्ठकोष्ठस्थान्वीर्येणलाड्यसञ्चयान् । उत्खातमू-  
लान्हरति दीपाणांसाधुयोजितः ॥

विधि पूर्णक दी हुई बस्ति (पिचकारी) अपने पराक्रमसे कफ, पीठ और कोठे में सञ्चित दीपों को नाश कर देती है ॥

दीपत्रयस्ययस्माच्च प्रकोपेवायुरीश्वरः । तस्मात्तस्याति-  
वृद्धस्य शरीरमभिनिघ्नतः ॥ वायोर्विपद्यतेवेगं नान्यावस्तीवर्त-  
क्रिया । पवनाविद्धतोयस्य वेलावेगमिवोदधेः ॥

यह शरीर के त्रय दीपों में वायुही प्रधान है और वायुही के यजे से कफ और पित्त भी विगड़ जाते हैं । जब वायु अत्यन्त बढ़ कर शरीर को नाश करने लगता है उस समय पिचकारी को उठाए कर कोई दूसरा कर्म ऐसा नहीं है जो उसे शान्ति कर सके । जिस प्रकार वायु वेग से उ-  
उलती हुई समुद्र की तरङ्गों को वेला के सिधाय और कोई नहीं रोक सक्ता, ऐसेही उस वायु को सिधाय बस्ति ( पिचकारी ) के दूसरी क्रिया नहीं रोक सकती है । सम्पूर्ण बस्तिक्रिया बस्तिप्रक्रियाके प्रकर्णमें लिखेंगे ॥

इस स्थल में इतना कहना बहुत जरूरी है कि पिचकारी किसी जानकार (जैसे डाक्टर या शिक्षित कम्पीटर आदि) से दिलाना उचित है। वाचिक अभ्यास पढ़ाने पर आरोग्य पुरुष स्वयं पिचकारी भी ले सकता है और प्रायः लोग पेट साफ रखने के निमित्त तथा योग साधन करने वाले अभ्यास रखते भी हैं ॥

यह हम प्रथमही लिख चुके हैं कि वस्ति दो प्रकार की है अनुवासन और निरुह । निरुह वस्ति के बिना अनुवासन वस्ति ठीक नहीं है क्योंकि जैसे पहिले नालियो में से फूड़ा निकाल कर फेकने से जल सुख से बढ़ता है, ऐसेही निरुह वस्ति के द्वारा नार्गं शुद्ध होने पर स्नेह वस्ति देने से वह चिकनाई सुख से सब स्थानों में पहुंच जाती है तथापि पञ्चकर्म द्वारा शरीर शुद्ध होगया है तो निरुह वस्ति की कोई जरूरत नहीं है इस लिये विरेचनादि करा के दो तीन अनुवासनवस्ति दे ॥

### अनुवासन वस्ति ।

विरेचनात्सप्तरात्रे गतेवातवलायच । कृतान्नायानुवास-  
स्याय सम्यग्देयोऽनुवासनः ॥ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रे नरेवस्तिं  
विधापयेत् । एतैर्हि विहितः स्नेहा नैवान्तःप्रतिपद्यते ॥ स्नेह-  
वस्तिर्विधेयस्तु नाविशुद्धस्य देहिनः । स्नेहवीर्यतयादत्ते देह-  
चानु विसर्पति ॥

जब जुलाय को दिये हुये सात दिन बीत जाय, रोगी बलवान हो जाय और चलने फिरने की ताकत आजाय और देखे कि अनुवासन देने की आवश्यकता है, तब उचित रीतिसे अनुवासन वस्ति दे (विधिः) वस्ति देनेके पूर्व रोगी को मल मूत्र त्याग करादे क्योंकि शरीरमें मलमूत्र



के रहने से स्निग्धता याने चिकनाई भीतर जाने नहीं पाती, इसी लिये स्नेह बस्ती अशुद्ध शरीर वाले को कभी न दे क्योंकि अशुद्ध रोगी के शरीर के मलही चिकनाई के भीर्य को खींच कर अनेक रोग उत्पन्न करते हैं ॥

यक्ष्मा रोगमें देने लायक अनुषासनवस्ति यह है—गधापुला का जड़, देवदारु, बरियारा की जड़, शतावर, लाल चन्दन, रासन, मैगफल, जेठी मधु, कमलगट्टे की गरी, मदुमनाख, मोषा, पित्तपापड़ा, खस, निशोष और सुगंधबाला, इन सब औषधों को दो दो तोला ले अचकचरा कर पांच सेर पानी में रात्रि को भिजा दे सवेरे चूसहे पर चढ़ाय आंघ देय जब चौथाई जल रह जाय, चूसहे पर से उतार शीतल होने पर मल कर छान लेय, बाद एक सेर काले तिल का तेल कड़ाही में से उसी काढ़ाके छाल धीमी आंघ में पकायै और तेल का चौगुना गौ का दूध सब को छाल धीमी आंघ में पकायै, जब काढ़ा और दूध मिलकुल जल जाय तेल मात्र रह जाय छान कर बोतल में भर काग लगा के रख देय इसका मात्रा दो तोला से ५ तोला पर्यन्त है, रोगी के बल के अनुसार मात्रा को थोड़े गरम जल के साथ नियोग करै और प्रकृति के अनुसार भोजन देय । सुश्रुत में अनुषासन वस्ति की बहुत कुछ प्रशंसा लिखी है ॥

(१) बस्ती से मूत्राशय और अंहकोश चिखने होते हैं । (२) से वस्तिष्क का वायु दूर होता है । (३) से बल और तेज बढ़ता है । (४) से रस (५) से रुधिर (६) से मांस (७) से मेदा (८) से मज्जा (९) से शुक्र चिखने और सब दोष दूर होते हैं । जो अनुप्य विचार के साथ १८ बस्ती लेता है वह सब रोगों से रहित महा बलवान हो कर १२० वर्षका जीने वाला होता है ॥

वस्ति क्रिया के पश्चात् शेष रोगों को निम्नलिखित दवाइयों से शांति करै ॥

इस बात को प्रथम ही लिख चुके हैं कि पंचकर्म यलवान रोगी को कराना क्योंकि क्षीण मनुष्य को पंच कर्म विष समान मारक होते हैं । कारण इसका यह है कि मनुष्यों का वल धीरे के अधीन है और जीवन मल के अधीन है इसलिये क्षीण रोगी के धीरे और मल की रक्षा यल पूर्वक करना चाहिये । इसी प्रकार औषध को भी जानना जितना यलवान औषध और मात्रा है यलवान रोगी के लिये दिया जाता है उरुधे जाधी मात्रा तथा वैसाही बली औषध क्षीणरोगीको जाधी देना उचित है विपरीति होने से लाभ की अपेक्षा हानि पहुंचना सम्भव है ॥



### लवंगादि चूर्ण यक्ष्माधिकारे ।

लवंगं शुद्धकपूर् र मेलात्वङ्कोशरम् । जातीफलमुशीरं च  
नागरं कृष्णजोरकम् ॥ कृष्णागुरुस्तुगाक्षीरो मासीनीलात्यलं  
वाणा । चन्दनंतगरंवालं कंकालंचेतिचूर्णयेत् ॥ समभागा-  
निसर्वाणि सर्वेभ्येर्घासिताभवेत् । लवगाद्यमिदंचूर्णं राजार्हं  
बन्दिदीपनम् ॥ रोचनंतर्पणं हृष्यं त्रिदोषघ्नवलप्रदम् । हृद्को-  
गंकंठरोगंच वासंहिक्कांचपीनसम् ॥ यक्ष्मायंतमकंश्वास  
मतीसारमुरःक्षतम् । प्रमेहारुचिगुल्मादीन्यहणीमपि ना-  
शयत् ॥

पञ्चकर्म के पश्चात् इस चूर्ण को जिस की विधि नीचे लिखते हैं, दोनों समय सहित, के साथ या गुलमगत्ता के सरयत के साथ पटा के ऊपर से आधपाव गौ का दूध में मिश्री मिला के पिलाये ॥

छींग ( शुद्ध कर्पूर\* ) माककपूर ( ऐला ) छोटी लामची ( त्वङ् ) कलमी लग्न अर्थात् पतली दालचीनी, नागकेशर (जातीफल) जायफल ( उशीर ) खस ( नागर ) वैतरा शोठ, कालाजीरा ( कृष्णागुरु ) काला जगर (तुगाक्षीरी) नीलकण्ठ यंसलोचन (मांसी) जटामाषी (†नीलोत्पल) कमलगट्टे की गरी (कणा) छोटी पीपर सफेद चन्दन (३ बाल) सुगन्धबाला और कङ्कोल इन सब दवाइयों को समान भाग ले कूट कपड़हन कर सब दवाइयों की आधी मिश्री मिलाय किसी अमृतभान अथवा कागदार मोतल में भर कर रखदेय । इस चूर्ण की मात्रा आधे मासा से २ मासा पर्यन्त है, इसको लवङ्गादि चूर्ण कहते हैं ( राजाहँ ) राजाओं के खाने योग्य है (यन्हिदीपन) अग्नि का खोलने वाला (रोचन) स्वाद को बढ़ाने वाला (तर्पण) हृदय की ताकत देता है ( वृष्यं ) शरीर को पुष्ट करता है त्रिदोष नाशक और बल का बढ़ाने वाला है (हृद्रोगं) छाती में दर्द या दिश पर घबड़ाहट मालूम होना (कंठ रोगं) गले में दर्द होना या गले में छाला घेरिह पड़ना, खांसी, हुचकी ( पीनसम् ) जुकाम याने नाक का बहना (यक्ष्मा) कफहई, तमक नामक स्वांस, अतीसार (उरक्षत) कफ के साथ रुधिर या मवाद का आना, प्रमेह, अरुचि मुसल ग्रहणी आदि रोग को यह चूर्ण नाश करता है ॥

\* भाफमें कपूर जमाय के शुद्ध किया जाता है जिसको क्रिया कठिन है उसे इस प्रकार में लिखेंगे इस स्थल में खूब सफ़ेद घोघु चढ़ने वाला कपूर लेना बह भी शुद्ध ही है ॥

† नीलोत्पल—कृष्ण कमल को कहते हैं, जहां कमल के किसी अंगका वर्ण न हो वहां कमल के फल ( कमलगट्टा ) को लेना चाहिये, बजार में मनें विक्रता है । यदि नीलकमल का फल न मिले तो माझूली कमलगट्टा बाजार से लेकर भीतर की गरी निकाल, उसके भीतर की हरी पत्ती रहती है किन्हीं दिव्योंकि उसमें दीप है ॥

इन चूर्ण के खाने से गरमी मालूम हो और आठ दस दिनके खाने से कुछ भी कायदा न मालूम हो। जैसी कि तारीफ ऊपर लिखी है तो व बेरे सिर्फे लवङ्गादिचूर्ण खावे और शाग को निम्नलिखित जातीफलादि चूर्ण को घटावे क्योंकि जातीफलादि में विशेष कर भूख को खोलना, खाना हजम करना, और दस्त की बيمारी को ठीक करना प्रधानगुण है ॥

### जातीफलादि चूर्ण ।

जातीफललवंगीला पत्रत्वङ्नागकेशरान् । कर्पूरचन्दन  
तिलैस्त्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ तालीसपिप्यलोपथ्या चित्रक  
स्थूलजीरकैः । शृंठीविरंगमरिचान् समभागानिचूर्णयेत् ॥  
यावत्येतानिसर्वाणि कुर्याद्भ्रंशं च तावतीम् । सर्वचूर्णसमादेया  
शर्कराचभिषगवैः ॥ कर्षमात्रं ततः खादेन्मधुनाप्लावितं सुधीः ।  
अस्य प्रभावाद्दृग्दृशी कासश्वासारुचिन्त्रयाः ॥ वातश्लेष्म-  
प्रतिश्यायाः प्रशमंयांति वेगतः ॥

जायफल, लींग, छोटीलासची तेजपात, दालचिनी, नागकेशर, कपूर, सफेदचन्दन, कालीतिल, बसलोचन, तगर बीजरहितमूखाभांवल, तालीसपत्र, छोटीपोपर, छोटीहरी, चीता (स्थूल जीरक) कर्लीजी, बैतराशोठ, चापविरंग और निरच । इन सब औषधियों को समानभाग ले कूट कपारखान करलेप और जितना सब चूर्ण तेल में हो उसी के बराबर धुली हुई भांग को महीन चूर्ण कर मिला दे और जितना भांग सहित सब चूर्ण तेलमें हो उतनाही मिश्री मिलादे । इस को जातीफलादि चूर्ण कहते हैं । शार्ङ्गपर जो इस चूर्ण का मात्रा एक कर्ष अर्थात् १० मास लिखा है किन्तु वर्तमान समय में जहां तक परीक्षा से बिदित

हुआ है कि इस कदर मात्रा विषय गह्वरी भांग छाननेवाले के यदि अन्य रोगी को दिया जाय तो सायत यमालय की रास्ता न पकड़े किन्तु तकलीफ निस्सन्देह भोगना पड़ेगा । इसका मात्रा आधा मासा से २ मासा पर्यन्त है । अगर गसा और गरमो न करे तो ४ मासा तक भी खा सकता है । इस चूर्ण को संध्या समय सहत में घाट के ऊपर से गुन गुना दूध मिश्री मिला के पिये ॥

जातीफलादि चूर्ण विशेषकर ग्रहणो, खांसी, श्वास, अरुचि, लई और मात कफ सहित जुकाम को बहुत शीघ्र आराम करता है और खोलता है । यक्ष्माधिकार में जो कुछ दवा इन लिख आये हैं और लिख रहे हैं, वे सब पंच कर्म से निवृत्त रोगी के लिये भी है और जिन्होंने पंचकर्म नहीं लिया उनके लिये भी मुफीद है । अगर यक्ष्मायालेका मल शुद्ध न होता हो अथवा कफ के साथ कुछ खून या रंगीन और दुर्गन्धित कफ गिरता हो तो निम्नलिखित अरिष्ट उपरोक्त दोनों औषधों के अलावा दिन में दो तीन बार और सोते समय पिलाये अथवा केवल अरिष्ट पिलाये ॥

### द्राक्षारिष्ट उरःक्षति पर ।

द्राक्षातुलार्धद्विट्रोणे जलस्यविपचेत्सुधीः । पादश्लेकपा-  
 देच मूतेशौतेविनिक्षिपेत् ॥ शुद्धस्यद्विगुणांतत्र त्वगेलामत्र  
 केशरम् । प्रियंगुमरिचकृष्णां विडंगंचेत्तचूर्णयेत् ॥ पृथक्-  
 पालोन्मितैभगि स्ततोभांडेनिधापयेत् । स्यापयत्वाततोमासं  
 ततोजातरसंपिवेत् । उरःक्षतंचयंहति कासश्वासगला-  
 मयान् ॥ द्राक्षारिष्टाह्वयःप्राक्तो बलहन्मलशोधनः ॥

सूख उमदा बड़े २ दानों का मुगझा कलकतिया तीन ५२॥ सेर ले भीतर का धीज निकाल ५२० सेर पानी में धीमी भाँप से पकावे जब घौघाई जल बाकी रहे घूरे पर से उतार शीतल कर, गल कर खानलेप पश्चात् ५२॥ सेर मिश्री और दालचिनी, छोटी लायची, तेजपात, नाग-केशर, त्रियंगुफूल और बायगिरंग चार २ तोला । काली मिर्च और छोटी पीप दे। दे। तोला सबोंको अथकषरा कर उक्त मुनयके के काढ़ेमें डाल एक मृत्तिकापात्र अथवा चिनीके पात्रको चन्दन अगर और कपूरसे धूपित कर उस में भर उसका मुख प्याले और मट्टी से बन्द कर ( जिस्मे हवा भीतर न जाय ) एक महीना तक ऐसे स्थान में रख दे जहां दिनमें धूप और रात में ओस लगे पश्चात् एक महीना के मल खान कर थोतल में भर लेय इसका द्राक्षारिष्ट कहते हैं, यह अर्क कभी बिगड़ता नहीं । इस का मात्रा छ मासा से दे। तोला पर्यन्त है । अगर उपरोक्त दानों चूर्णों को भी दिये जाय तो इस अरिष्ट को १२ बजे और ४ बजे दिन में और एक मात्रा से।ते समय पिखावे । यदि कफ-के साथ रक्त के छीटे मरापर आतेहैं तो एक २ मात्रा अरिष्ट दिनभर से छ दफे याने दे। २ घंटे पर पिखावे । यह अरिष्ट वरक्षतके अतिरिक्त बावासीर, उदावर्त, गुल्म, उदररोग, कृमिरोध, रक्तदोष, अनेक प्रकार के फोंडाफुन्सी, नेत्र रोग, शिर रोग, गलरोग इन सबोंको नाश करता है, अग्नि को खोलता और अन्न को पचाता है एवं दस्त सुलासा लाता है ८

### द्राक्षादि घृतं ।

प्रस्थमेकंतुद्राक्षातोमधुयष्ट्याःपलाष्टकं । चतुःप्रस्थेनक्षेपद्वा  
पादशेषंसमुद्धरेत् ॥ पलंयष्टीपलंद्राक्षा कणाचूर्णंपलद्वयं ।  
प्रदायसर्पिषःप्रस्थं पचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ॥ सिद्धेशीतेपलान्यष्टौ  
शर्करायाःप्रदापयेत् । एतंतद्राक्षाघृतंसिद्धंचतक्षीणेसुखावहं ॥

सुनझा बीज रहित १ सेर, सुलेठी डेढ़पाव दिनां को कुचल कर ५ सेर पाणी में रात को भिजा दिय, सबेरे जोस देवे जब चौथाई जल रहजाय चूल्हे पर से उतार शीतल कर छागलेय । बाद उसके सुलेठी और बीजरहित सुनझा दां दां ताले, छोटी पीपर ४ ताला तीनांका शिलपर पानीसे पीस लुगदी बना लेय, गौ का घी एक सेर किसी कलाईदार कढ़ाई में चढ़ाय तीनां दवाईयों की लुगदी और सुनझा सुलेठी का काड़ा दिनां को उसी कढ़ाई में डाल धीमी आंच से पकावे और ऊपर से ४ सेर गौ का दूध डालदे जब चुरते २ पाणी दूध सब छान कर घृत बनेला रह जाय चूल्हे, पर से उतार छाग समतवान चयवा घी को नदियां में रख दिय जिस रोगी को सिर्फ घी पिखाना हो तो उस घी में डेढ़पाव मियो पीस के मिला दिय अगर घृत को भोजन के साथ खिलाने को राय हो तो सिफे दाख रोटी के साथ देवे और इसी घी से दाख तरकारी बगैरह फेडक भी सक्ते हैं क्योंकि मामूली घी प्रायः रोगी को नुकसान करता है खास कर जिस यक्षावाले को खांसी अधिक रहती है कच्चा घी खांसी बढ़ाता है इसीसे वैद्यनाग छ्वर खांसी में घी खिलाना बन्द करदेते हैं लिखे रोगी के भीतर खड्को पहुँच कर शरीर सुखजाती है । हकीम लोग इसी डर से घी की जगह बहाम का तेल खिलाते हैं और उसीसे तरकारी बगैरह भी पकाते हैं ॥

### चन्दनादि तैलम् ।

चन्दनाख्युनखंवाप्य यष्टीशैलियपद्मके । मंजिष्ठासरलंदारु  
शट्येलापूतिकेशरं ॥ पत्रशैलंसुरामांसौ कंकीलंबनितांबुदं ।  
हरिद्रेंसारिवेतिक्ता लवंगाशुरुकुंभं ॥ त्वग्नेशुनलिकाचैवी  
भिस्तैलमस्तुचतुर्गुणं । लाचारसप्तमंसिद्धं ग्रहघ्नंवलवर्णकृत् ॥  
अपह्णारज्वरोन्माद कृत्यालक्ष्मोधिनाशम् । आयुःपुष्टिकरं-  
चैव वशीकरणमुत्तमं ॥ विशेषात्क्षयरोगघ्नं रक्तपित्तहरंपरं ।  
चन्दनाद्यमिदंतैलं नाम्नाख्यातंगवयो ॥

यों से क्षयीवालों को आराम होता कुछ न देख पड़े तो जान लेना चाहिये कि सप्त धातुओं में से जिससे यह शरीर रचित है अवश्य कुछ क्षीण हो गयी है क्योंकि धातुओं को क्षीण होनेकी से क्षयी रोग असाध्य हो जाता है। वैद्य लोग इन विषयों पर कम विचार करते हैं ॥

सप्त धातु यह हैं रस, रक्त, मांस, मेद, दृष्टी, गज्जा और शुक्र याने धीरे धीरे अपघात रज । इनके क्षय होने का लक्षण ग्रंथ बद्ध जाने के भय से झोकेों में न लिख कर पाठक गणों के बोधार्थ भाषा में लिखे देते हैं ॥

### रस क्षय लक्षण ।

रस के क्षय होने से अत्यन्त खुशकी, अग्नि की मन्दता, शरीर में कम्पन या शरीर का घर पशाना शिरमें पीड़ा, उदाशीनता, शकस्मात् रंज का होना और पुनरी होती है ॥

### मांस क्षय का लक्षण ।

मांस के क्षय होने से शरीर का अत्यन्त दुबला होना, बङ्गोंकी शिथिलता, नाँद का न आना अपघात अधिष्ठ, नाँद का आना, घातों का भूलना और घल का नाश यह उपद्रव होते हैं ॥

### मेदः क्षय की लक्षण ।

मेद के क्षय होने से शरीर धकी सी, मनका कहीं न लगना, बदन का टूटना, चलने फिरने की ताकत कम हो, स्वास अत्यन्त खाँसी, खाने पर मन का न चलना और न खाना हजम होना, इत्यादि लक्षण होते हैं ॥

### अस्थि क्षय के लक्षण ।

दृष्टी के क्षय होने में मन अति उदास, और धातु की कमजोरी, शक्ति होती है तथा मेदा क्षय के जो कुछ लक्षण हैं यह भी मिलते हैं ॥



## वीर्य क्षय के लक्षण ।

वीर्य के कमी हो जाने से विचार का ठीक न रहना, अकस्मात् रंज करना या रोना अथवा अधीर्य होना और यांभ्यार कटना की अथ बन नहीं जीवेंगे, हाथ पैर मुख वगैरहमें सूजन होना, रात में नींद का न आना धीमा ज्वर का बना रहना अथवा दाह का होना इत्यादि लक्षण वीर्य क्षय के होने में होता है ॥

## रस रक्तादि दृष्टि कारक उपाय ।

वैद्यों को तथा अन्य लोगों को जो साधारण चिकित्सा करते हैं उचित है कि निदान के ऊपर ध्यान अवश्य रखें । यत्ना रोग वाले के शरीर में यदि रस और रुधिर की कमी का लक्षण मिलते हैं तो जितनी दवादे वरमें रसरक्तका विरोधी कोई दवा न हो वल्कि जहांतक दृष्टिकारक औषध है जैसे गुरथ चाहे किसी औषध के योग में हो अथवा गुरुष का फास्ट या क्वाथ पिलाना या गुरथ का सत अद्दुख के रस के साथ घटाना रस रक्त दोनों को बढ़ाता है और कालीगिरची में पकाया हुआ गी का दूध अथवा पका हुआ दूध मिश्री सहित दश पन्द्रह दाग मोल मिर्च चाय पर रात्री में पीना फायदा होता है अनेक बार देखा गया है कि यह प्रयोग से निस्सन्देह रसों की वृद्धि होती है और रस रोग छुट जाता है ॥

## पथ्य ।

एक साल का पुराना नेहूँ का भूमी सहित घाटे की खमीर चठाकर रोटी अथवा लव की गूनी की रोटी, थाली संज्ञक पुराना चावल धैय जनों ने श्रेष्ठ कहा है-॥

### रक्त वृद्धि कारक उपाय ।

घृतदुग्धसिताञ्जीव मरिचानिचपिप्पली । पानंशस्तं मनु-  
ष्याणां रक्तवृद्धिकरं परम् ॥

यह योग दाह रोग में बहुत सरल और आसानी से हुआ है । घी, दूध, मिश्री, सहित और निच इन्हीं का पना बना कर पीना रक्त वृद्धि करने का श्रेष्ठ उपाय है । जिसे १ पाय गी का दूध पका हो या कच्चा हो रोगी के मिश्राज पर है उसमें ६ मासा सहित, दश मासा घी, एक तोला मिश्री २० दाना कालीनिच या आधी पीपर पीस के मिश्रा कर सबों को एकदिल कर सांन सबेरे चाहे किसी दवा के खिला कर ऊपर से पिना दे अथवा केवल उभोंको पिनाये यह योग अवश्य सूखे हुये रक्त को हरा भरा करता है ॥ पथ्य ॥ उपरोक्त पथ्य के अतिरिक्त सूङ्ग की दाल, सैधय गोम और मातदिल खान पान योगैरह ॥

### मेद वृद्धि कारक उपाय ।

जितने हलके अन्न याने जल्द अन्न होने वाले हैं मय हित है । मत्स्य, घी, दूध, मिश्री और नीटे सरपत योगैरह उत्तम है । कल्प सं-  
घ्नक एक प्रकार का शराम है जिसका अभाग आगे करेंगे किसी २ को बहुतही फायदा करता है । आंगल देश के जीवों का रस याने मुहवा पिलाना वैद्यवरों ने श्रेष्ठ कहा है किन्तु हमारी राय में जब किसी अन्न खान पान या दवा से लाभ न पहुंचे तो अन्तमें उपकारी पुरुषक आरोग्यार्थ नांस खिलाया अनुचित नहीं है । शितीपलादि चूर्ण सहितमें घटा कर ऊपर से पका पुशा मकरी का दूध मिश्री सहित साम सबेरे पिना-  
ना भी मेद को वृद्धि कर दाह रोग को आराम करता है ॥

### अस्थि वृद्धि कारक उपाय ।

पक्वानिघृतशस्तपि चौराणि विविधानि च । अन्नानि च  
मधुरानि सर्वाणि च प्रयोजयेत् ॥

अधिक दिग् गर्ह रोग रक्षने से अथवा जीर्णोत्थर में मनुष्यकी अल्पि  
याने हृद्यो पतली पड़ जाती है खास कर प्राय पैर कगर और पशुदियों  
की दृष्टियां जरूर पतली और कमजोर हो जाती हैं इसमें बनाया हुआ  
अनेक प्रकारके घी दूध, और अनेक प्रकारके भीठेभन्न और जांगल देशों  
के जीवों का मांस दित है ॥

### शुक्र वृद्धि कारक उपाय ।

शुक्रक्षयेप्रपाक्वानि रसानिचविशेषतः । नवनीतमघाचीरं  
मधुराणिच सेवयेत् ॥ कर्कीटीमूलपयसा विदारौकंदशाल्म-  
ली । सिताढ्यपानं च हितं शस्यतेमधुराणिच ॥

शुक्रों तथा में अच्छे २ प्रकार के सरसत दूध का निकाला हुआ म-  
खन, तत्काल का दुहा हुआ दूध, खीर मालपुंवा आदि घने हुये भीठे  
अथ कफरी के लडू की छाल, बिलारीकंद और सेगल का मूसरा मिश्री  
मिला हुआ दूध के साथ पिलाने से अत्यंत फायदा करता है अथवा  
भीचे लिखी हुई दवाइयों को भी को सिला कर उस भी के दूध को भी  
पिलाने से अत्यन्त फायदा होता है और तारीक इसमें यह है कि फिर  
रोगी को धातु बृद्ध कर औषध खाना नहीं पड़ता ॥

### अश्वगंधादि चूर्ण ।

मागीरी अश्वगंध १ छंटाक, शताघ्न २ छंटाक, मफेदमुसली ३ छंटाक  
तालमराना ४ छंटाक मखाना ५ छंटाक सेगर का मूसरा ६ छंटाक और  
चिनी आधमेर सय दवाइयों को फूट कपर छान कर उसीमें चिनी मिला  
अमृतवान में रख देय पड़िछे आधी छंटाक सवेरे और आधी छंटाक सांन  
को आधमेर की एक रोटी मनाय रोटी को मल कर उसी में एक माता  
दवा और आधपाय शकर मिला छिलाय देय बाँपया खानी में मिला  
दिया करे किन्तु सानोंमें जयका भूसा और कालसी की खरी रहे उसी में

दूध मिला दे और उस गौ को दोनों समय घेत भर सानी लिखावे, गौ भूखीन रहने पाये और गोशालोंमें खास उभ जगह जहां गौका मुख्य रहता है एक बड़ी डली सेन्यानीन की तार में बांध कर लटकाम देस ताकी गौ मृत्तिका बगैर कौई चीज न चाट कर जय दृष्टा हो उभी नोन की डली को घाटा करै इस्ते गौ का हागगा दुमस्त रहता है और मृत्तिका आदि चीजों के घाटने से जो गौ के दूध में एक प्रकार पैदा होता है वह न होगा ॥

दस दिन दवा खिलाने के बाद उस गौ का दूध रोगी को पिलाना शुरू करे और उसके पिलानेकी रीति यह है कि दूध दुधकर भूमिमें न रखवा जाय उभी समय दूधमें थोड़ा मियो मिला रोगी को पिला देस इसो तरह दोनो समय दूध दिनों तक पिलाने से अल्प बीर्य जमित चई रोग को बड़ा फायदा होता है । चईके अतिरिक्त प्रमेह, मूषाघाव दिन दिमाग को कमजोरी, शिर रोग आराम हो धातु अधिक पुष्ट होता है । धातु बढ़ाने और धातु को अति बलिष्ट करनेका इस दूधसे बढ़ कर दूसरा उपाय नहीं है अगर मनुष्य इस रीति से दवा खाकर हमेसा दूध पोता रहै तो कभी कमजोर न हो और एक सौ बीस वरस तक जीने वाला हो ।

हमको जहां तक आयुर्वेदके ग्रंथोंसे प्रमाण मिले हैं वही पाया गया है कि प्रायः यक्षा रोग धातुक्षीण होने से होता है वह भी अकाल पतित बीर्य से तो अक्षर होता है सो पाठकगण अवश्यही कम अवस्था वाले को इस रोग में अमित देखते होंगे वह भी स्त्रियों को और भी अधिक । उसका सबब यह है कि एक तो कम अवस्था में व्याधी जातो हैं काम कलां को शान्तही नहीं किसे कहते हैं तभी पति के घर आना पड़ता है इश्वरीचा से कहीं पति भी कमसिग हुआ तो जाग बची तौभी सास गन्दको मिडकी लपटसे दुर्बल हुई जातो है और कहीं पति जवान हुआ अथवा द्वितीयदतीय विवाहित हुआ तो उसको रोग टूडनेकी जरूरत हो नहीं पड़ती रातमें पतिको प्रसन्न करना, दिन में अपारानो का काम करना, सास गन्दके हात गाळी से खाली न

रहना, खाने पीने का कोई इंतजाम नहीं कभी-दिपहर को कभी माम को यही सबब है जो एक २ पुरष के चार पांच सादो-हेती जाती है, सादो पर सादो करते जाते हैं स्त्रियां मरती जाती हैं । हरौत महाराज यक्षाका निदान इस प्रकार कहते हैं ।

चतस्रयाच्छ्रमाहापि सहस्रोपप्लवाट्पि । व्यवायाति प्रसङ्गे  
न तथा रूचाति सेवनात् ॥ तेन संक्षीयते गात्रं ज्वरो मन्द  
श्च जायते । ज्वरान्तेजायते शोफो मलविट्चातिमूत्रता ।  
अतिसारश्च भवति भक्षणैनातिशेषते । फासतेष्टीवतेऽत्यर्थं  
शोषश्चक्षुस्तेभृशम् ॥

( चत ) उरुचत अथवा अधिक दिखनेकमजोर होने से ( चय ) प्रसेद या प्रदर अथवा धातु पतला और कमजोर होने से अपनी ताशत से अधिक परिश्रम करने से, अत्यन्त प्रसंग करने से, खूब्रा भोजन करने से, मनुष्य कमजोर होजाता है और वही कमजोरी वनो रहने से भीतर थोड़ा २ घौमा प्वर होने लगता है तथा उभी प्वर के वजे से मनुष्य बहुत दुबला हो जाता है अन्त में सूजन और दस्त पतला होने लगता है किसी २ को मूत्र बहुत बढ़ जाता है और थोड़ा भी खाया हुआ नहीं पचता, अत्यन्त खांसी तथा बलगम अधिक निकलने लगता है । और भी कहते हैं ।

व्यायामयानसुरता गतिपौडिताङ्ग रोगिण्यवा ब्रह्मनिपी-  
डितक्षोणदेहात् । त्राधातिशोकानशनादि भयोपवासैः सं-  
जायते च मनुजस्यमहागदेऽयम ॥

हरौत महाराज अपने शिष्यों से कहते हैं कि हे पुत्र सुनो चारहेतुओं कर के निखन्देह यह यक्षा रोग होता है जैसे—भोजन कम कसरत अधिक करना, दिनरात असवारो पर बैठ कर चलना, अधिक प्रसंग करना और बहुत रास्ता चलना इन चारों कारणों के पलावा भी फाड़ा फुन्धियों का अधिक दिन बना रहने से क्षोण देह होने से तथा क्रोध, शोक, लंघन, भय, व्रतभादि के करने से मनुष्य के शरीर में यक्षा नामक महान रोग होता है ।

कोई विमारी क्यों न हो पहरेज कराना बहुत जरूरी है और खास कर बड़े २ रोगों में जैसे यक्ष्मा जलोदर आदि कि जिस की उत्पत्तिही असाध्य लिख दिया गया है उम्में तो पहरेज अवश्य ही कराना चाहिये क्योंकि बहुत सी बिमारियां हैं कि उस रोगी का चित्त उन्हीं चीजों के खाने पीने पर चलेगा कि जो चीजें उस रोग के बिरोधी हैं हारीत महाराज यक्ष्मा के विषय में लिखते भी हैं ।

यद्यदाहारमिच्छेद्दानरंवारराजयक्षिमणम् । तस्यत-  
स्यास्यलाभेन क्षीयन्तेतस्यधातवः ॥

यक्ष्मा रोगवाले को जिस २ भोजन पर इच्छा चलती है उसी २ भोजन से उस रोगी की धातुक्षीण होती है इसलिये यक्ष्मावाले का मन जिस २ चीजों पर चले उन चीजों का सेवन न करने पावे । जहां तक होसके खाने को वही चीज देवे जिसे धातु बढ़े और उसकी गन्भी, हटै लिया भी है ।

यदन्नंयत्समाहारं यादृशंप्रतियाचते । तत्तस्यचप्र-  
दातव्यं मधुरंघनमेवच ॥

जो जो अन्न आहारादि यक्ष्मा रोगवाले को दिया जाये यह मधुर और घन होना चाहिये क्योंकि मधुर और घन पदार्थ से धातु घनता है ॥

यक्ष्मा रोगवाले की उमर ।

सज्जीवेश्चतुरोमासान्पण्णमासंवावलाधिकः । उत्कृ-  
ष्टैश्चप्रतीकारैः सहस्राहंतुजीवति ॥ सहस्रात्परतो-

नास्ति जीवितं राजयक्ष्मिणः । गतं प्राणौजोवीर्यश्च  
 क्षीणश्च विकलेन्द्रियः ॥ न भवेत्पुरुच्छ्रायो याप्यरोगश्च  
 मुञ्चति । यस्तदायाससम्पन्नो भूयोऽपिकासिना भवेत् ॥  
 तस्य प्राणापहारी स्याद्राजयक्ष्मनि दारुणः । त्रिभिर्मा-  
 सैश्च षण्मासैर्वर्षैश्चापि त्रिभिः पुनः ॥

हिकमतवालों ने यहमा याने तपेदिक की आयु की नयांदा इस प्रकार बांधा है कि दो दर्जे तक आराम हो सका है, तीसरे दर्जेमें कष्ट साध्य और चौथे दर्जे में असाध्य माना है, जो आराम नहीं हो सका है और यह चारो दर्जे लक्षणों पर निर्भर रक्खा है किन्तु आयुर्वेद नतावलम्बियों ने इस प्रकार लिखा है । राजयहमा रोगवाला जिसके सम्पूर्ण लक्षण मिलते हों चार महीने तक जीता है, यदि चेत रोगी कुछ थलवान हुआ तो छ महीने तक जीता रहा, यदि चेत रोगी कुछ थली भी रहा और सद्द्वैयों के द्वारा उत्तम चिकित्सा होती रही तो यहमा रोगवाला एक हजार दिनों तक जी सकता है अन्वधा नहीं । राजयहमा रोगवाला एक हजार दिन से अधिक इसलिये नहीं जी सकता कि उतने दिनोंके उपरान्त प्राण, बल, बीयं यह सब क्षीण हो जाते हैं और इन्द्रियां सब विकल हो जाती हैं । और यह यहमा रोग जो धारम्यार घटता बढ़ता नहीं, एक समान बना रह के उत्तम दवा के योग से थोड़ा २ घटने लगता है और फिर नहीं बढ़ता यह रोग याप्य होता है अर्थात् उत्तम चिकित्सा होनेसे आराम होजाता है । तथा जो यहमा रोग धारम्यार सांसीसे युक्त हो जाता है याने कभी सांसी कम होगई कभी फिर तेज होगई इसी तरह बलगम श्रान्त कभी बन्द होगया या कम श्राने लगा और कभी फिर बढ़ गया यह यहमा का रोगी तीन महीने अथवा छ महीनेसे अधिक नहीं जीता रहता अयश्य प्राणका नाश होता है । अमृत पान कराने

से भी प्राणकी रक्षा नहीं होसकती क्योंकि अबधि का उल्लंघन करने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है दूसरे यत्ना आदि महान रोग पूर्वोपार्जित अत्यन्त दुष्कर्मों के द्वारा होते हैं । लिखा भी है—

कुष्टंचराजयक्ष्माच्च प्रमेहोग्रहणीतथा । मूत्रकृच्छ्रं-  
शमरीकास अतीसारभगंदरौ ॥ दुष्टं व्रणं गंडमाला पक्षा-  
घातोक्षिनाशनं । इत्येवमादयोरोगा महापापोद्भवाः-  
स्मृताः ॥

कोढ़ रोग, राजयक्ष्मा, प्रमेह, संग्रहणी, सुजाक, पथरी, खांसी, अ-  
तीसार और भगन्दर, नसूर, गण्डमाला, लकवा, आंखों का फूट जाना  
यह सब रोग महा अर्थात् बड़े २ पाप करने से होता है । यह सब रोग  
जो ऊपर कहआये हैं प्राणके साथ जाते हैं आराम भी होगये तो जड़ नहीं  
जाती कुपथ्य बस फिर उभड़ आते हैं अन्ततोगत्या अपने भयंकर लक्षणो  
को प्रगट कर मनुष्यके प्राणको हरण करते हैं यह महा पाप यह हैं जैसे-

देवानांप्रकरोतिभङ्गमथवा भूणस्यसन्तापनं । गो  
- पृथ्वीधरविप्रवालहनन मारामविध्वंसनम् ॥ सोयं-  
स्थानविनाशनंच कुरुते स्त्रीणांवधं योनरस्तस्यैतैर्गुरुक-  
र्मभिः क्षयगदो देहापहारीमहान् ॥

जो पुरुष देवताओंके मूर्तिको तोड़ डालता है अथवा अनादर क-  
रता है, जीओंको सन्ताप देता है अर्थात् सतायता है, गौ, राजा, ब्राह्मण  
और बालको की जो हत्या करता है, किसीके घाग यंगीपा उजाड़ता है  
किसी अपि महात्मा गरीब दुखियोंके स्थानको विनाश करता है और



स्त्रियोंके मार डालता है ऐसे २ दुष्ट कर्म करने वाले को प्राण हरण करने वाला महान्क्षयी रोग होता है। इन कहते हैं पापों का प्रत्यक्ष फल शरीरमें अनेक रोगोंके द्वारा दुःख का भोगना देर पड़ना है यदि यह भी न होता तो देशरको लोग और भी न मानते।

## यक्षमारोगे अमृत प्राशन घृतं ।

शतमूलारसंप्रस्थं गुडूचीकल्कप्रस्यकम् । हरीतकी  
शतानांच कुटजस्यत्वचातुलां ॥ निष्काथयचपृथक्केन  
पुनश्चैकत्रमिश्रयेत् । दावीप्रलेपनं कृत्वा गुडानां शत-  
पञ्चकम् । सिताचामलकीचूर्णं त्वगेलाचित्रकंशठी ॥  
द्राक्षाकुप्टंशिलाजिञ्च शिलाभेदस्तुतालकं ॥ योज्यं-  
तत्राक्षमानेन भक्षयेच्छुद्धसर्पिषा । तस्योपरिपिवेत्क्षीरं  
भोजनञ्चततःपरम् ॥ राजयक्ष्मीलभेत्सौख्यं पाण्डुका  
मलकाञ्जयेत् । अतीसारंघिनश्च्यति वलेनागवलो  
भवेत् ॥

ताजे शतावरीका रस ६४ तोला अगर शतावरी ताजी न मिले तो काय बनाके रस लेय गुरिचका फलक ६४ तोला, एकसा बड़े हड़का बकल कुरैयाकी छाल ४०० तोले इनको अठगुना जलोंमें अलग २ काढा बनावे पचात् सबों को एकत्रित कर पुनः अग्निपर चढ़ाय धीमी आंशसे पचावे जय पचते २ इतना गाढ़ा होजाय कि करतुल में चपकने लगे तब ५५ साफ सफ़र अथवा चिनी ठोड़ कर अच्छी तरह पकालेय बाद आंघला,

दालचिनी, छोटी लायची, धीता कपूर, मुनक्का फूट, शुद्धशिलाजीत पा-  
पाणभेद और हरताल भस्म इन सबों को दश २ मासाले कूट, कपड़ लान  
कर उसीमें मिला असृतवानमें रखदेय । इसका मात्रा ६ माससे तीन  
तोला तक है । साम सधेरे मात्राकी आधा गोघृत अथवा मिक्खन मिला  
कर उसके ऊपरसे गौ का दूध मिश्री मिला हुआ पीनेसे तथा उसके थोड़ी  
देरके बाद सीठी चीज भीजन करनेसे राजयक्ष्मा य छेको सुख लाभ होता  
है अर्थात् उक्त रोग से छूट जाता है इसके अतिरिक्त पांडुरोग कामला  
अतीसार रोगका नाश होता है और बल पुरुषार्थ बढ़ता है ॥

इति क्षय रोग निदान चिकित्सादि विषयः समाप्तः ॥

## अथ उरःक्षत ।

अब इसके आगे हम उरःक्षत रोगका बयान करते हैं क्योंकि उस  
रोगके लक्षण यक्ष्मा रोगमें मिलते हैं और आरोग्य न होनेसे उरःक्षत या  
ला भी हजार दिन से अधिक नहीं जीता । रहा यह कि जितना शीघ्र  
यक्ष्मा वाला दुर्बल बलहीन होजाता है तितना शीघ्र उरःक्षतवाला नहीं,  
यदि चेत् मुखसे सून अधिक आने लगा तो अतिशीघ्र मर भी जाता है ॥

## उरःक्षत होने का कारण ।

धनुपायन्यतोत्यर्थं भारमुद्धहतोगुरुम् । युद्धमानस्य  
बलिभिः पततोविपमोच्चतः ॥ वृषंहयंवाधावंतं दम्भं  
चान्यंनिगृह्णतः । शिलाकाष्टाश्मनिर्घातान् क्षिपतो-  
निघ्नतःपरान् ॥

उरःक्षतरोग उसीको होता है जो मनुष्य अपनी आत्माको बल से अधिक बल करता है उसकी छाती फटजाती है अर्थात् ( लंका ) जिसे शोधक यंत्र कहते हैं जिसके द्वारा होके समस्त शरीर में रुधिर जाता है उसका स्थान हृदय है जहां पर धक धक हुआ करता है वह नस फट कर मुख से रून आने लगता है वही जल्द उन्नत उपायों द्वारा उस फटे हुए नस को न पुराने से पक जाता है और उसीमें से मवाद होके मुख के राह से गिरने लगता है और फिर नहीं पुरता अर्थात् नसूर हो जाता है इसीको उरःक्षतरोग कहते हैं इसमें और यक्ष्मा में बहुत कम भेद है । वैद्यों को सब से प्रथम उचित है कि रोगकी परीक्षा सूख करलेय तब चिकित्सा करे । मनुष्य के यकृत जिसे डाकुरी में ( लीवर ) और हियमत्त में ( फलेजा ) कहते हैं उसमें भी विकार पहुंचने से मुख से रून या मवाद आने लगता है जिसका दयान आगे करेंगे, जिस वजे से उरःक्षत होता है प्रथम उसे कहते हैं । धनुषादि जो मनुष्य धनुष घड़ाने आदि में अति परिश्रम करता है, अथवा भारी योद्ध लेके चलता है, अपने से अधिक जोरवाले से कुस्ती लड़ता है, टेढ़े मेढ़े जगह से और ऊंचे से गिरता है, पोड़ा बिल आदि दौड़ते हुये, जानवरों को जो पकड़ता है, जो लकड़ी पतल, ईंट, भारी चीज हाथ में लेके फेकता है अथवा दूसरे को मारता है उसके छाती में सदा पहुंच कर छाती फटजाती है और जिन्हें इन सब बातों का अभ्यास है अर्थात् रोज २ उसी काम को करते हैं उनको उरःक्षत नहीं होता क्योंकि उनको अभ्यास पड़जाता है यदि इस तरह हो जाये तो सैकड़ों योद्धा उठानेवाले मजदूर अपनी ताकत से दूनी भारी योद्ध उठाले जाते हैं । फौजी सिपाहियों को युद्ध में हाथही से पन्दूख चलाना पड़ता है, भाला फेकना पड़ता है सबी को हो जाया करे, सिर्फ दिलके कमजोर, मुलायम, कभी उस काम को न करनेवाले, एकाएकी उक्त कामों के करने से उरःक्षत रोग होजाता है ।

इसी तरह बहुत जोरसे पढ़नेसे अथवा गानेसे बहुत दूर तक अति

शीघ्रताके साथ चलनेसे बड़ी पाट वाली नदी को तैरकर पार करनेसे घोड़ेके साथ दौड़नेसे अथवा दूरसे कूदनेसे या नारा हाकनेसे बहुत जल्द २ नाचनेसे और किसी तरह छातीमें घोट लगनेसे उरःक्षत रोग होता है ।

जो मनुष्य रूखा तथा थोड़ा भोजन करके जादा मैथुन करता है अर्थात् उत्तम खाने पीनेको समय पर नहीं खाता, दिवारात्रि मैथुनासक्त रहता है उसकी छाती अति पीड़ित होती है उसके मुई छेदने अथवा फटनेसरीखे छाती फटने लगती है पसलियोंमें दर्द होने लगता है अंगसूखने और कांपने लगता है बस क्रमशः धीर्घ्न बल घर्ण और जठराग्नि हीन होने लगता है पश्चात् प्वर शरीर में पीडा मनमें उदासी दस्त का पतला होना अग्नि मन्द खाना फा न पचना खांसनेसे दुर्गन्धयुक्त पीला गठीला रक्त सहित कफ गिरने लगता है तब वह रोगी बहुत दुबला और निस्तेज होजाता है ।

## उरःक्षत का असाध्य लक्षण ।

उरोरुक् शोणितेच्छर्दिः कासोवैशेषिकः क्षते ।  
क्षणेश्वरक्तमूत्रत्वं पार्श्वपृष्ठकटिग्रहः ॥ (अन्यच्च) अल्प  
लिंगस्यदीप्ताग्नेः साध्योवलवतो नवः । परिसंबत्सरो-  
याप्यः सर्वलिंगं विवर्जयेत् ॥ परं दिनसहस्रंतु यदि जी-  
वति मानवः । सुभिपग्भिरुपक्रांतस्तरुणः शोपपीडितः ॥

अब उरःक्षत के असाध्य लक्षण कहते हैं जिन लक्षणोंसे जाना जाता है कि यह रोगी अब नहीं जीवेगा ।

मुखसे बराबर रून का गिरना याने रून का बमन होना खांसी अत्यन्त तकलीफ अधिक क्षीणताके कारण पेशाब के साथ रक्त आना

पशुलियों में दर्द, पीठ और कमर का जकड़ना इन लक्षणों से उर को असाध्य जानना और भी कहते हैं । जिस रोगी के लक्षण कम मिलते हैं, अग्नि तेज हो, भूख लगती हो खाना हजम हो जाता हो और थोड़े ही दिनों का रोग हो तो आराम हो जाता है और एक वर्ष पीछे कष्टसाध्य और सब लक्षणों के मिलने से असाध्य हो जाता है यदि किसी अच्छे सद् वैद्य की चिकित्सा हुई तो वह रोगी एक हजार दिनों तक जीता रहेगा अन्यथा मृत्युही सम्भक्तिये ॥

## अथ चिकित्सा ।

भूत पूर्व वैद्योंका यह सिद्धान्त मत है कि अगर उरःक्षत रोगी सन्तुप्य शोक, चिन्ता, क्रोध करना, स्त्री प्रसंग पराये को देख के जलना आदि कर्मों को त्याग देय और मन को प्रसन्न रखना पवित्रता से देय पूजन, ब्राह्मण अतिथियों का सत्कार, भगवत् भजन, वेद वेदान्त पुराण इतिहासादि ब्राह्मण के मुख से सुननेसे रोग यलवान नहीं होने पाता ॥

यहमारोग में जो जो दवायें लिखी हैं वे सब भी प्रकृति देश कालानुसार उरःक्षतवाले को फायदा कर सकती हैं ॥

## उरःक्षत पर गुलादि बटी ।

गुलापत्रत्वचोद्राक्षा पिप्पल्यर्धपलपृथक् । सिता मधुकखर्जूर मृद्वीकाश्चपलोम्भिताः ॥ सचूर्ण्यमधुना युक्ता वटिकाश्चप्रकल्पयेत् । अक्षमात्रास्ततश्चैव भक्षयेद्विदिनेदिने ॥ क्षतक्षयंज्वरंकासं श्वासंहिकां वमिभ्रमं ॥ मूर्छामदंतृपांशोपं पार्वसूलमरोचकम् । झीहा

नमाद्यवातंच रक्तपित्तज्वरंक्षतं ॥ एलादिगुटिकाहंति  
वृष्यासंतर्पणीपरा ॥

छोटीलांबी, तेजपात, दालचिनी घींग रहित मुनक्का, दूधसे शुद्ध किया छोटी पीपर यह सब आधा २ पल अर्थात् दो दो तोले, मिश्री, नुलेठी, खजूर, कायफल, और किसगिस यह सब चार २ तोले, सबों को सूत्र मंहीन चूर्ण कर आधे २ तोले की गोली बनाय लेय, यह पूर्णमात्रा है, अवस्था के अनुसार मात्रा घटा बढ़ा सकते हैं । इस गोली को देनें समय खाकर ऊपरसे चकरी अथवा गी का ताजा दूध मिश्री मिला हुआ पीने से उरःक्षत रोग आराम होता है इसके अलावा लिखा है । क्षयी, ज्वर, खांसी, स्वास हुचकी, वमन, घुमरी, भूछां, मद, पित्तशोष, पाशवं शूल, अरुचि, ह्रीहां, आद्यवात और रक्त पित्त ज्वर आदि नाश होता है यह औषध कामोद्दीपन है । हनने जहां तक परीक्षा लिया है और रोगों की अपेक्षा उरःक्षतको कुछ दिनें तक लगातार पथ्य सहित सेवन करने से अवश्य आराम करता है । उरःक्षत रोग का पथ्य वही है जो राजयक्ष्मा रोग में कह आये हैं । उरःक्षत वाले को सरबत अनार, सर-यत उदाय, सरबत गुलधनप्ला आदि और भी तर पदार्थों को जो सूत्र को शीतल और शुद्ध करनेवाले हैं सेवन कराये, दूध और मिश्री जहां तक हो पिलाये ॥

अगर सूत्र का वमन होताहो और अनेक जतन करनेसे न रुकता हो तो एक तोला फिटकिरी को एकसेर पानी में धोल अगर दरफ मिलता हो तो उसी पानीमें डाल सूत्र शीतल कर उभी जल में कपड़े को भिजा कर छाती पर रखे और जधं कपड़ा मूराजाय फिर भिजालेय और पीने को बिहीदाने का लुआय निकाल मिश्री मिला के एक २ चम्मच पन्ध्रह २ बीस २ मिनट पर पिलाये जय तक सूत्र का आंगा घन्द न हो और समस्त शरीर में नारायन तैल, अथवा मारुादि तैल या कामलास्तादि-

कृतेतत्र निःक्षिपेदौषधंभिपक् ॥ सितोपलाचतुःप्रस्थं  
 चातुर्जातंपलंपलं । मृद्धीकापट्पलंचैव क्षिप्त्वामधुपला  
 ष्टकम् ॥ धारासत्वंतवक्षीरी श्वेतजीरंपृथक्पृथक् ।  
 नागंवंगपलाद्धैच सर्वमेकत्रकारयेत् ॥ कर्पूरंवल्लमात्रंच  
 दत्त्वास्थाप्यसुकुंभके । भक्षयेनिष्कमात्रतु प्रातरेवहि  
 पथ्यभुक् ॥ जीर्णज्वरेक्षयेकाले अग्निमाद्येप्रमेहके ।  
 दिनरात्रिज्वरेचैव शिरारोगप्रशंस्यते ॥ प्रदरेरक्तजान् रोगान्  
 कुष्टाशांसिचनाशयेत् । नेत्ररोगान्सुदुष्टाश्च तथासर्वा-  
 न्मुखेस्थितान् ॥ नाशयेन्नात्रसंदेहो मंडलस्यचसेव-  
 नात् । महाकुमारीपाकोयं भरद्वाजविनिर्मितः ॥

शत पत्रिका अर्थात् यह सेवती पाक भारद्वाज मुनिका बनाया हुआ  
 है । जो कुछ दिनों तक पथ्य सहित सेवन करने से उरक्षत और यक्ष्मा-  
 रोग दोनों को आराम करता है । सून बन्द होजानेके बाद अथवा कुछ र  
 सून का छीटा आता भी रहै तो भी इस पाक को पांच छ सहीने तक  
 बराबर सेवन करता रहे ।

सेवती का एक हजार फूल, ताजा हो तो निहायत उत्तम है न  
 मिले तो सूखा फूल ले, डेढ़ पाव ची में सूख भूँजे, जब सुखी पर आ-  
 जाय उसे अग्नि पर से उतार लेय और अढ़ाई सेर मिश्री की चासनी  
 बनाय उसी में फूल को मिलाय याद निम्नलिखित चीजों को कूट कपड़  
 छानकर उसीमें मिलाय देय । दालचिनी, तेजपात, छोटी लायची, नाग  
 केसर यह सब तीन २ तोला, मुनक्का १८ तोला सहित २४ तोला गुरिष

का सत्व तथाशीर और सफेद जी० यह सय डेढ़ २ तोला । यदि उत्तम निहायत शुद्ध रांगे का भस्मअर्थात् बंगेस्वर और सीसे का भस्म याने नागेस्वर मिले तो यह भी एक २ तोला डाल देय किन्तु जिस रोगी के मिजाज में गरमी अधिक हो पेटमें जलन हो उसको दवामें रस न डाले क्योंकि सियाय हानिके लाभ होना अति दुस्कर है । साक कपूर एक मासा डालें क्योंकि जिस दवा की मिकदार अधिक है जादा कपूर डाल देने से इतना कहुआ हो जाता है कि रोगी बहुत कठिनतासे खाता है । सब दवाइयोंको एकमें मिला घृत पात्र अथवा अमृतवानमें रख देय । इस का मात्रा ३ मासा से ६ मासा तक है बल के अनुसार देनें समय खाकर ऊपरसे दूध मिथ्री पीनेसे उरक्षत और यत्ना देनें आराम होते हैं ऐसे तो लिखा है पुराना बुखार, क्षयी खांसी, मन्दाग्नि प्रमेह रात दिन बना रहने वाला ज्वर शिर दर्द प्रदर रक्त सम्यन्धी रोग कोढ़ वायाशीर नेत्र और मुख इन सब रोगोंको यह पाक एक मण्डल अर्थात् उनचास दिन में आराम करता है ॥

इति उरक्षत रोग समप्तः ॥

अथ हम यकृति जिसे टाकुरीमें लीगर और हिवमत में कलेजा कहते हैं उसका बयान करते हैं यह मनुष्यके दहिने भाग पशुलियों के नीचे होता है इसमें अक्षत पुराना ज्वर खांसी होनेसे यत्ना और उरक्षत रोग में भी वरम (शोथ) आजाता है और कलेजे पर वरम होनेसे उपररक्त रोग असाध्य होजाते हैं, सबय यह है कि कलेजे पर वरम होते ही यत्न न करनेसे शीघ्र उस में मवाद आ जाता है और वही मवाद अथवा उसीमें से जरा २ सा खून कफके साथ मुखसे गिरने लगता है उसीको हकीम लोग सिल की बिमारी कहते हैं । हमारे वैद्य शास्त्र में इसका बयान बहुत कम है यिक इतना लिख दिया है कि जो लोहाकी दवा है वही यकृत की दवा है और बंगसेनमें फुल निदान भी लिखा है । यथा—



मन्दज्वराग्निःकफपित्तलिङ्गै रूपद्रुतःक्षीणवलोत्ति-  
पांडुः । सव्यान्यपार्श्वैर्यकृतप्रदुष्टे ज्ञेयंयकृदात्युदरं  
तथैव ॥

शरीर में धीमा ज्वर का बना रहना, भूख का न लगना, कफ पित्त का कोप रहना, बल का घट जाना, शरीर का रंग पीला होजाना तब जानना कि दक्षिण पशुरी के नीचे यकृत विगड़ गया है अर्थात् इसमें विमारी हुई है ।

प्रेह्याद्दृष्टाःक्रियाःसर्वा यकृतःसंप्रकल्पयेत् । का-  
र्य्यश्चदक्षिणेवाहौ तत्रशोणितमोक्षणम् ॥

जो जो क्रियायें तथा औषध ग्रीहा अर्थात् पिलही आराम करने की हैं वही सब यकृत रोग में कल्पना करना चाहिये और दक्षिण हाथके रक्त मोक्षण याने फस्त खुलवादेय । फस्त खुलाने की विधि हिस्नतमें भी है, इलाजुलगुरवा में लिखा है । सिल फेफड़े के घाव को कहते हैं, इस रोगवाले को ऐसा ज्वर आवे जो कभी न उतरै, कभी खांसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी दिन २ क्षीण पड़ता जाता है । यद्यपि यह रोग असार्थ्य है परन्तु इसलिये कि रोगी शीघ्र न मरजायै, वासलीफ का फस्तखोले फिर ज्वर और खांसी का यत्न करे । यह रोग जैसा कठिन है वैसाहो हमारे पुराने ढांचे के वैद्य उससे अनभिज्ञ भी हैं, बिलकुल नहीं जानते हैं कि फलेजा किस चिड़िया को कहते हैं । अगर रोगी कहे भी कि हमारे पेट में दहिने तरफ दर्द होता है और दहिने करघट लेटने में अधिक खांसी आती है तो आजकल के वैद्य कहेंगे कि तुम्हारे पेट में मल जमगया है ॥

## यकृत ।

यकृत यानी जिगर, जिसको अंगरेजी में लीवर कहते हैं मनुष्य के शरीर में सब से बड़ा यंत्र है कि जिसके बिगड़ जाने से मनुष्य को इस संसार में पादस्थित रखना महा दुष्कर हो जाता है अगर उसे हम मनुष्य का जीवन अथवा प्राण कहें तो अनुचित न होगा । यह जिगर मनुष्य के दहिने तरफ पसुलियों के नीचे चौड़ाई में ४ इञ्च लम्बाई में १० या ११ इञ्च मोटाई में तख्तीनीन २ इञ्च का यह यंत्र है, जो तेल में एक सेर नौ छँटाक अथवा एक सेर दश छँटाक है उमर और शरीर की मोटाई अथवा दुबलेपन के हिसाब से छोटा बड़ा भी हो सकता है । इस का रंग भूरा अकसर मुरसी या किसी कदर ज़रदी मायल होता है । और कभी स्याही मायल भी हो जाता है लकपन में बैजनी रंग और मुलायम, घुड़ापेमें अकसर फीका और पीले रंग का होता है, इस में दो पर्त हैं और दो किनारे हैं । ऊपर का परदा कुबड़ा और सामने को फुका है, नीचे के तरफ आड़ा और पीछे को धूमिल नज़र आता है । यकृत का मुख्य दो काम है पित्त और रुधिर को बनाना याकी हाल शारीरिक स्थान देखने से मालूम होगा ।

## यकृत का निदान ।

यकृत का मूशन अथवा उसमें मयाद पड़ जाना यकृत के छूने से मालूम हो जाता है । दहिने तरफ पसुली के नीचे दयाने से कड़ा मालूम हो और दयाने से रोगी को कुछ दर्द मालूम हो, दहिने करवट लेटने से रोगी को तकलीफ हो अथवा रांभी अधिक हो और जब यकृत को दयाने से रोगी को जोड़ा सा दूराने का दर्द मालूम हो तो जानना चाहिये कि यकृत में मयाद आगया है ।

## यकृत की चिकित्सा ।

चिकित्सक को चाहिये की पुराने ज्वर रांभी में यकृत की परीक्षा

अवश्य करै क्योंकि जब तक कलेजे पर शोथ नहीं होता, खांसी, ज्वर को आराम करना कोई कठिन बात नहीं है किन्तु शोथ होनेही से असाध्य हो जाता है । जब देखे कि शोथ नयोन है और रोगी भी बलवान है और उमर १६ वर्ष से अधिक है, शीघ्र दहिने, हाथ में फस्त, गुलापादेय और निम्नलिखित दवाइयों का लेप सूजन पर लगावै तथा रोगी को सूव पहरैज के साथ रखै ।

सुपारी गुनाय का फूल, सफेद चन्दन, घिरायता यह सब चार-२ मासे, जी का मैदा १ तोला कपूर ३ मासा सबों को सिरकेमें सूव महीन पीस दिनमें तीन दफे कलेजे पर लेपकरै और जब चांहे गरम जलसे धो डाला करै यदि फस्त न खोलावै तो भी इस लेप को लगावै ॥

अगर कलेजे पर सूजन गरमीके बजे से हो, उसकी पहिचान यह है कि यकृत में जलन हो या रजुरी मालूम हो, टोने से गरम लगे तो इस लेप को लगावै कपूर रुसा मस्तगी, तेजपात तीन २ मासे गेरूमही, गुल वनपसा गुलाव के फूल सफेद चन्दन, सूसा धनिया, छ छ मासे सबोंका जलमें सूव महीन पीस दिन में तीन चार दफे लेप करै ।

अगर यकृत का सूजन सरदीसे हो उस की पहिचान यह है कि सूजन सख हो छूने में शीतल मालूम हो किन्तु यह परीक्षा कर लेना चाहिये कि पसीना निकलने से तो शीतल नहीं मालूम होता यदि हो तो इस लेप को लगावै ॥

यालछड़, सुगंधयाला और दालचिनी पांच २ मासे, केशर दो मासे सबों को बावूने के तेल में पीस के दिनमें तीन दफे आइस्ते २ यकृतपर मर्दन करै और अधिक बढ़ी हुई बीमारी में किसी सत्वैद्य की भी राय लेवै क्योंकि चिकित्सा का काम बड़ा नाजुक है जरा भी चूकने में रोगी का प्राणान्त हो जाता है । दूसरे यत्ना आदि रोग ऐसे कठिन हैं कि उत्तम दवा से तो शच्छे होतेही नहीं, कहीं अनाड़ी के हाथ में पड़े तो गीप्रही परलोक यात्रा कर जाते हैं आप लोग सत्य जानिये, वर्तमान समय में जहां तक हमने परीक्षा लिया है एक हिस्से रोगी रोगसे मरते हैं और दो हिस्से अटकलपचू प्रकृति विरुद्ध औषध के व्यवहारसे मरते हैं इसलिये चिकित्सा कर्म बड़े सावधानी से करनी चाहिये ॥

## यक्ष्मा आदि रोगोंपर मोतीका सेवन ।

और रसों की अपेक्षा मूंगा और मोती यह दो वस्तु अच्छे हैं और गुणकारी भी हैं रसों में बड़ा भारी दोष यह है कि उत्तम रस प्रकृति के अनुसार पड़ा तो अमृत के समान गुण करता है और विपरीत में विष के समान मनुष्य को मार डालता है । मोती मूंगे में यह बात नहीं है प्रकृति विरुद्ध होने पर भी अधिक कोप नहीं करते ॥

### मोती की उत्पत्ति ।

शुक्तिःशंखोमजः क्रोडफणीमत्स्यश्चदर्दुरः । वेणुश्चा-  
ष्टौसमाख्याता सुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥

जवाहिरातके जानने वाले विद्वानोंने मोतीकी उत्पत्ति आठ तरह से लिखी है । सीपी से १ शंखसे २ हाथी से (जिसे गजमुक्ता कहते हैं) ३ सुअरसे ४ सर्पसे ५ मछलीसे ६ मेढकसे ७ और बांससे ८ और सय मोतियोंकी पहिचान भी शास्त्रोंमें लिखे हैं ग्रन्थ बढ़जाने के भय से नहीं लिखा । जो मोती रङ्गमें फीकी, टेढ़ीमेढ़ी, चिपटी ललाई लिये मछली के आंखके समान, रूखी, ऊंधी और नीची ऐसी मोती न पहरना चाहिये और न खाने लायक है ।

जो मोती नक्षत्रके समान चमकीली गोल, चिकनी, मोटी, छिद्र रहित, चन्द्रमाके समान खेत निर्मल वजन में भारी यही मोती दामी हैं धारण करने तथा खाने लायक है निर्दोष मोतीकी परीक्षा वैद्यकशास्त्रने इस प्रकार लिखी है ।

लवणक्षारक्षोदिने पात्रेगोमूत्रपूरितेक्षिप्तं । मर्दित-  
मपिशालितुषैर्य दविकृतंमौक्तिकंजात्यं ॥

एक पात्र में आधसेर गो मूत्र और आधी छंटाक सांभर नैन डाल उसीमें दो पहर मोती को दोला यन्त्र के विधि से लटकाय देय पश्चात् निफाल चावल की भूसी में डाल के मले और पानी से धो डाले यदि मोती का रूपान्तर न हो तो उस मोती को शुद्ध जानना वही मोती साने लायक है ।

## मोती शोधन ।

मोती को अग्निमें तपाय २ कर सात बेर घीकुम्भा के रसमें और ७ वार घीलाईके रसमें युक्तावे अथवा एकही चीजमें युक्तावे तो शुद्ध हो यही मोती मालतीवसन्त में भी डाले,

हकीम लोग मोती को गुलाब या केवड़े के अर्क में सिर्फ ४ पहर चोटायके चूर्णकर लेते हैं और यही रोगी को खिलाते हैं और यही चाल सर्वत्र फैली है न कोई परीक्षा लेता है और न कोई शोधन करके भस्मकता है यही कारण है कि जो रोगियों को कायदा नहीं करता ।

## मोती मारण विधि ।

शुद्ध मोती ४ तोला, शुद्ध पारा ६ नासा और शुद्ध आंवलासार गन्धक ६ नासा पहले गन्धक और पारे को मिलाकर कजली करै पश्चात् उसी मोतीमें डाल कर घीकुमार के रसमें सूय महीन चोटै ४ पहर तक खाद मोला यनाय शरावसम्पुट में रख कर निही कर गजपुट में चूक देय स्यांग शीतल होनेपर मोती के भस्मको कांचकी में रख लमें

गन्धक और पारा उड़ जाता है इस भस्म का मात्रा २ चावलसे १ रत्ती तक है मोती को लोग सोना भाखी की तरह भी फूकते हैं ।

## मोती भस्म का गुण ।

मौक्तिकंसमधुरंसुशीतलं दृष्टिरोगशमनंविषापहं । रा-  
जयक्ष्मपरिकोपनाशनं क्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनं ॥

मोती का भस्म मधुर और शीतल है नेत्र रोग विष रोग और राज यक्ष्मा उरःक्षत आदि रोगों को नाश करता है धातु की कमजोरी और बलकी कमजोरी को दूर करता है ।

ऋफपित्तक्षयध्वंसी कासस्वासाऽग्निमान्द्यजित् ।  
पुष्टिदंष्ट्रप्यमायुष्यं दाहघ्नंमौक्तिकंपरम् ॥

ऋफ पित्त कफक्षयी खांसी स्वास अग्निकी मन्दता को नाश करता है पुष्टिकर शरीरमें तैयारी लानेवाला तथा उमर को बढ़ाता है ।

## मूंगा की उत्पत्ति लक्षण ।

मूंगे का वृक्ष समुद्रमें लालरंग का होता है उसी से मूंगा उत्पन्न होता है । पके कुंदरू फल के समान लाल गोल, चिकना, घमकदार, छिद्र रहित मूंगा अच्छा होता है । वही मूंगा पहरने और खाने लायक होता है और जो मूंगा रंगमें पीतलके समान, अथवा फीके रंगका, टेढ़ा मेढ़ा, बारीक; छिद्र सहित, रूखा और कलीस रंग का मूंगा अच्छा नहीं होता, ऐसे मूंगे को न पहरना चाहिये और न खाना चाहिये । आज कल के वैद्य लोग बिना शुद्ध किये डाली अथवा मूंगे की जड़को भस्म करके रखते

रहते हैं और अखिल मूंगे के भस्म के नाम से वेच कर लोगों को ठगते हैं क्योंकि मूंगा और मूंगे की डाली का रंग एकही समान होता है सिर्फ गुण और भावमें फर्क है अच्छा मूंगा २) तोलीसे कममें नहीं मिलेगा और मूंगे की जड़ ४) सेर अर्थात् तीन पैसा तोला विकता है । पीसी दवा और मुण्डा योगी के घिरलाही लोग पहचान सक्ते हैं, आज के समय में धर्म का डर तो नहीं रहा रोगी चाहे मरे या जिये यहां तो पैसा पैदा करने से काम-दूसी तरह लोग सीपी को भस्मकर मोती भस्मके नाम से बेचते हैं, लोगों को नुकसान करने से वैद्यक नाम और भी डूबा जाता है ।  
 "मौक्तिकस्य विधिप्रोक्तः प्रयालेपि तथा विधिः"

जो जो विधि मोती शुद्ध करने और फूंकने की हैं वही क्रियायें मूंगे की समझनी चाहिये और वही खाने की भी विधि है ।

## मूंगा के भस्म का गुण ।

प्रवालमधुरसाम्लं कफपित्तातिदोपनुत् । वीर्य-  
 कान्तिकरंस्त्रीणां धृतेःमंगलदायकं ॥ क्षयेपित्तास्त्रका-  
 सघ्नं दीपनंपाचनंलघु । विषभूतादिशमनं विदुमनेत्र-  
 रोगहृत् ॥

मूंगा—मधुर, खटा, दीपन, पाचन तथा हलका, वीर्य और कांति को बढ़ानेवाला; एवं स्त्रियों को धारण करने से मङ्गल करता है । कफ, पित्त, त्रिदोष, यक्ष्मा, रक्तपित्त, खांसी, विषदोष और उन्मादादि दोषों को दूर करता है ॥

यति यरुत रोगः

## अथ कास रोगाधिकारः ।

यका रोग समाप्त करनेके बाद अब हम खांसी रोगका प्रकरण उठाते हैं क्योंकि इस प्रबंध में हम उन्हीं रोगों का ध्यान करना चाहते हैं जो खासकर धातु से सम्बन्ध रखते हैं । खांसी यह रोग भी ऐसी कठिन है, यदि कुछ दिन भी गफलत करे तो इसे पीछा छुटना कठिन पड़ जाता है । लोग मिसरा कहते हैं (रोग का घर खांसी और लड़ाई का घर हां-सी) क्योंकि बिना धातु से सम्बन्ध खांसी रह नहीं सकती । जुकाम वगैरह से लोगों को खांसी आने लगती है अगर धातु शुद्ध है तो बिना दवाके छुट जायगी, किन्तु धातु के विकार सेही खांसी जड़ पामती है अज्ञान लोग धातु पर ध्यान नहीं देते खांसी की दवा गर्म शर्द खिलाते जाते हैं और खांसी जावज्जीवन पीछा नहीं छोड़ती इसलिये हम पाठकगणोंके उपकारार्थ देशकालानुसार कासरोग का निदानादि कारण और चिकित्सा लिखते हैं ।

### कांस रोग का आदि कारण ।

धूमोपघाताद्रजसस्तथैवव्यायामरूक्षान्ननिषेवणाश्च ।  
 विमार्गत्वादतिभोजनस्य वेगावरोधात्क्षवथोस्तथैव ॥  
 प्राणोह्युदानानुगतःप्रदुष्टः संभिन्नकांस्यस्वनतुल्यघो-  
 पः । निरेतिवक्त्रात्सहसांसदोषो मनीषिभिःकासइति-  
 प्रदिष्टः ॥

२०३५।

यह श्लोक भरद्वाज संहिता का है मुख और नाक में धुआं लगने से अथवा धूरि गरदा नाक मुखमें हो के ठमका लगने से अथवा कसरत



सते समय गरमी मालूम होना और कड़ुआ कफ का निकलना यह लक्षण होते हैं ।

कफ की खांसी में मुख में कफ लपटा रहता है, यह मालूम होता है कि गले में कफ भरा है, गिर में दर्द शरीर में भारीपन, भोजन अच्छा नहीं मालूम होना, शरीर में दर्द या शरीर जकड़ी सी मालूम हो, गठे में खजुली अथवा शरीर में खजुली मालूम हो और अत्यन्त खांसने से गाढ़ा कफ निकलता है ।

क्षयकास के लक्षण और क्षतकास के वही हैं जो यक्ष्मारोग में और उरक्षत रोगमें लिख आये हैं दुबारा लिखनेका कोई प्रयोजन नहीं, ग्रन्थकारों ने खांसी प्रकरण में क्षयकास अर्थात् यक्ष्मा रोग क्षतकास याने उरक्षत रोग जिसे ऊपर लिख आये पुनः मैनिदान आदि कारणके लिख डाला है किन्तु यातसय वही है ग्रन्थ बढ़जानेके भयसे हमने नहीं लिखा ॥

एक प्रकारकी खांसी कौद्या की कमजोरी अर्थात् कौद्या लटक जानेसे होती है । कौद्या और भी कारणों से लटक जाता है उसमें भी खांसी आने लगती है और कमजोरी के वजसे खांसते २ भी कौद्या लटक जाता है और लड़कों का कौद्या प्रायः गिरजाता है, उसमें हर समय गला सरसराता रहता है और खांसी आती रहती है, उस रोगी को खांसी जरा भी चैन नहीं लेने देती या मालूम होता है कि गले में कुछ रुका है । कौद्ये पर ध्यान न देकर लोग खांसीकी दवा देते जाते हैं किन्तु खांसी और बढ़ती जाती है, इसके अतिरिक्त रोगों में भी खांसी हो जाती है जैसे-

पाण्डुरोगेतथायक्ष्मे गुल्मेवातिक्षतक्षये । शोफार्श-  
सांप्रतिश्रयाये चावश्यंकाससम्भवः ॥ वालानांजायते  
कासो धात्रिवैकल्ययोगितः ॥

पाण्डु रोग में, यक्ष्मा (आगे लिख चुके हैं), रोग में, गुस्मरोग में, चोटलगने, धातु क्षय में, सूजन रोग में, घघासीरमें और जुकाममें अवश्य खांसी आने लगती है तथा धात्री अर्थात् माता के कुपथ्य से बालकों के भी खांसी आने लगती है ।

## अथ साध्याऽसाध्य लक्षणम् ।

इत्येपक्षयजःकासः क्षीणानादेहनाशनः । साध्यो बलवतावास्या द्याप्यस्त्वेवंक्षतोत्थितः ॥ नवोक्ता-  
चित्तिद्वयोतामपिपादगुणान्विता ॥ स्थविराणांजरा-  
कासः सर्वोऽप्यःप्रकीर्तितः । त्रीन्पूर्वान् साधयेत्सा-  
ध्यान् पथ्यैर्याप्यांस्तुयापयेत् ॥ पूयाभमरुणंश्यावं हरि-  
तपीतनीलकं । निष्टीवेच्छ्वासकासात्तौनजीवतिहतस्वरः ॥

अथ कास रोग का साध्य और असाध्य लक्षण लिखते हैं । जो खांसी यक्ष्मासे होती है वह तो बड़े बलवानके भी देहको नाशकर डालती है, कदाचित् बलवान पुरुषके अग्न्यादि प्रयत्नके कारण साध्य हो किन्तु पूरे विश्वास लायक नहीं है । इसी प्रकार उरःक्षत रोगसे भी उत्पन्न खांसी को जानिये, अगर यह दोनो रोग याने राजयक्ष्मा और उरःक्षत नवीन हैं और वेद्यादिक चारों चरण \* युक्त हैं तो शायद रोग छुट

\* वेद्यादिक चारों चरण यह है (भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगीपाद चतुष्टयम् । गुणवत्कारणञ्च यं विकारस्योपशान्तये ॥) (भिषग्) वेद्य जो शास्त्र और देश काया का जाननेवाला है प्रथम पैर है । (द्रव्य) उत्तम औषधी जो प्रकृति के मुवाफिक है अथवा रोगी धनवान है वेद्य जिस औ-

जाय, जो बृद्धमनुष्योंके खांसी होती है जिसे जराकाम कहते हैं यह भी आपही समझिये जो प्रयत्न यातादि देवों करके तीन प्रकारकी खांसी कहें आये हैं सो साध्य हैं अर्थात् उत्तम चिकित्सा करनेसे छूट जाती है और पाप्य हैं उन्हें यथार्थ पथ्यसे रखना चाहिये । जो खांसी वाला पीय सरीसा, लाल काला हरित, पीला और नीले रंग का कफ सूकता हो स्वास फूलता हो और गला पड़ गया हो ऐसा खांसी वाला धिमार कभी जी नहीं सकता ॥

जुकाम से उत्पन्न जो खांसी है वह जुकामके शुद्ध करनेसेही आराम हो जाती है, अगर जल्द यत्न न किया जाय तो यह भी असाध्य हो सकती है ॥

## खांसी रोग में पथ्य ।

जब तथा नेहूँ की रोटी, सांठी तथा पुराने चावल का भात, उरद मूँग और कुरधीकी धुली दाल जिसमें छिलका न हो, परवर, नेनुआ खरबूजा, केला आदि की तरकारी, बधुआ मकोई चौपतिया और कोमल

घस को बनाने चयवा मँगाने की इच्छा प्रगट करे शोधन भा जाय यह दूसरा पैर है । रोगी के पास रहने वाला वह भी ऐसा लायक हो कि जो वैद्य वतलाय जाय उस क्रिया में चावल मात्र फरक न पड़े और न रोगी का मुलाहिजा करे कि जो रोगी मांगे वही चीज मँगो के खिला दिय यह तीसरा पैर है । और रोगी, रोगी भी केषा हो ( वैद्यभक्तोजितेन्द्रियः ) वैद्य में भक्ती हो, हृदय में विश्वास कर लेय कि यह हमको अवश्य शारीर्यकर देंगे और वैद्य जो खाने पीने का बता दे उससे रती मात्र अपनी मन मौजी न करे यह चौथा पैर है यह चारो पैर एकत्रित होने से असाध्य रोग भी साध्य हो के शाराय हो जाता है और इगके बिना चिकित्सा कम नहीं हो सक्ता है ॥

मूलीका साग, खूब मुलायम भांटाका भरता, गी और बकरीका दूध घी और मलाई अर्थात् दूधके ऊपरकी मोटी साढ़ी (यालाई अथवा दूधके ऊपरकी मोटी मलाई साम को मिश्री गिला के खाना और ऊपरसे पानी न पीना खांसी को बहुत जल्द आराम करता है इसी प्रकार सधेरे मासन मिश्री का खाना भी बहुत फायदा करता है, खांसी की बिमारी में पुराना घी खिलाना लिखा है किन्तु इसमें हमारी सम्मति नहीं है क्योंकि पुराने घी से गलेमें जलन होने लगती है । साम को भोजनके साथ प्रकृति के अनुसार शराब पीना हुक्का पीना खटाई में बिजौरा नॉवू की अथवा कैथेकी घटनी मसालामें शोंठ, अदरक, मोलमिर्च, सफेद जीरा, छोटी लायची, लहसुन और पियाज खांसी की बिमारी में जल बहुत साफ और शुद्ध पीना चाहिये कुयें का जल जिसमें बहुत लोग पानी भरतेहैं उसे गरम करके उत्तम रीतिसे छानकर अथवा ताजा पानी पिये दिनमें सेना, शहद घाटना धान का खाया खाना हलके पेट रहना खांसी रोग के लिये पथ्य है ॥

## खांसी रोग में अपथ्य ।

दिशा मार्गमें पिचकारी लेना सुंघनी सुंघना घाम और आंघ के सामने रहना गरदा गुब्बार और धुयेंमें रहना बहुत रास्ता चलना स्त्री प्रसंग करना कबूज करने वाली तथा बिदाही अर्थात् जो चीज खानेसे छाती पर जलन होती है और जितने प्रकारके रूखे अन्न हैं जैसे बाजरा आदि इनको न खावे दिशा पेशाब डकार खांसी और छोक इनके वेगों को रोकना मछली, विरुद्धअन्न, खराबजल, खांसी रोग वाला त्याग करे ।

## खांसी रोग की चिकित्सा ।

प्रथम हस्त खांसी रोगकी साधारण दवा लिखते हैं जो सर्व साधारण जन बना सके हैं ॥

विभीतकंघृताभ्यक्तं गोशकृत्परिवेष्टितं । स्वन्नम-  
ग्नौहरेत्कासं धुवमास्यविधारितं ॥

बहरे पर घी चुपरके ऊपरसे गौ का गोबर लपेटके आग में पकाय फिर उसको निकाल साफ करके रखते जब खांसी आवै एक टुकरा मुख में डाल कर चूसे और पप्य से रहै तो अथस्य खांसी जाती रहैगी ॥

शठोश्रृंगीकणाभर्गी गुडवारिदयासकैः । सतैलेर्वात  
कासघ्नो लेहोऽयमपराजितः ॥

फचूर, फकराशिंगी, छोटी पीपर भारंगी साफ गुड़, नागर मोथा और जवाभा इन सब दवाइयों को कूट कपरछान कर उसमें गुड़ मिला देय, इसका मात्रा २ मासा है, काले तिलका तेलमें सानके देनेों समय अथवा तीन समय चाटनेसे वातज खांसी अर्थात् सूखी खांसी जिसमें बलगम नहीं आता आराम होती है यदि तेल पसन्द न होतो शहदके साथ चाटे किन्तु गुड़ न मिलावै ॥

लोग तेल का नाम सुन्तेही चकृत होंगे कि खांसीमें तेल चाटना यह कैसी बात है । वातज खांसी जब पुरानी होजाती है बिना तेल घी पिये आराम नहीं होती, शिव प्रसाद नामक एक फायस्य जिसकी उमर चौबीस पच्चीस बरसकीथी तीन बरससे उसे खांसीकी बिनारी रही कोई हकीम धैर्य हाकूर न छूटाहोगा उसने सर्वोंकी दवाइयांकी किसीके दवासे फायदा न पहुँचा अन्तमें हमारे पास आया हमने भी चार महीने तक सैकड़ों तरहकी दवा खिलाई किसी से कुछ फायदा न पहुँचा अन्ततो गत्या हमने पिप्यत्पादिघृत यनाके पिलाना शुरुकिया २ महीनेमें पिलकुल खांसी जाती रही चार महीने तक बराबर घी पिलानेसे उसकी दूनी गरीर होगई जिसे चार बरस हुये आरोग्य है ॥

घातज खांसीमें अलसी का तेल पीना बहुत फायदा करता है किन्तु लोगोंसे तेल पिया नहीं जाता तेल पीने वालेको दूध नहीं खाना चाहिये ॥

## हकीमी काढ़ा ।

जा घातज खांसीको निस्तन्देह फायदा करता है । गुलबनप्सा ६ मासा हन्सराज ६ मासा मुलेठी ३ मासा खतर्नी का बीज ३ मासा अलसी ३ मासा उन्नाय ३ दाना सबोंको श्रधकचराकर मिट्टीके बर्तनमें एकपाव पानी में पकावै जब डेढ़ छंटाक पानी रह जाय मल छानकर ३ मासा मिश्री और तीन मासा शहद डालके पी जावै इसी प्रकार दोनां समय पीनेसे १५ दिनमें खांसी जाती रहैगी अथवा जबतक खांसी न आराम हो पीता जावै ॥

घातज खांसी वालेको शाम को बलाई मिश्री अथवा दूधके ऊपर फी मोटी साढ़ी मिश्री मिलाकर खानेसे बहुत फायदा करता है जैसे सब प्रकारके पुरानी खांसी रोगमें साखत मिश्री ।

रोग दोनां समय गुदा पर किसी प्रकारका तेल हो मलना खांसी रोगमें फायदा करता है ॥

केलेके पंक्की छीनी में आधी पीपर अथवा पांच चार दाना गोल निर्ध गड़ कर ओसमें रख देय और सबेरे छील कर पहले पीपर को साके ऊपरसे छीनी को खाजाय या पीपर को खाय एक अनुप्य दल के अनुसार उसी तरह दो तीन छीनी तक खा सकता है । यह योग पित्त खांसी को भी आराम करता है ॥

## पित्त कास चिकित्सा ।

द्राक्षामधुकरवर्जूरं पिप्यलीमरिचान्वितं । पित्तकास  
हरं ह्येतच्छिद्यान्माक्षिकसर्पिणा ॥

बीज रहित मुनक्का मुलेठी और बीज-रहित छोहारा तीनों बीजों के समान भाग २ तोलाले आध पाय पानीमें पकावै जब आधी छटांक जल रहजाय सूख मलके छान लेय छोटी पीपर आधी और गोल मिर्च ५ दाना महीन पीस उसीमें मिलाकर चाटनेसे पित्तकी खांसी आराम होती है । इसी प्रकार दोनों समय चाटना चाहिये दवा चाटकर ऊपर से पानी न पिये पित्तकी खांसी में कीठी बीज खाना फायदा करता है यदि पित्त अधिक बढ़ा हो तो मुलेठी का काढ़ा पिलाके धमन करा दे जिससे पित्त सब निकल जाय और मुन्जिस देके मुलापन रचन द्वारा दो चार दस्त करादे तो औरभी उत्तम हो ॥

वासकरस्वरसःपेयो मधुयुक्तोहिताशिना । पित्तश्ले-  
ष्मकृतेकासे रक्तपित्तेविशेषतः ॥

पित्त कफ जनित खांसीवाला और रक्त पित्तवाला अगर दोनों समय रूसे की पत्ती का रस २ तोला, शहद ६ मासा दोनों को मिला के चाटे और सूख पथ्य से रहे तो आरोग्य हो । उसी प्रकार दिन में दो या तीन दफे चाटना चाहिये । यह बात चिकित्सक को हर समय ध्यान में रखना चाहिये कोई किस की दवा किसी प्रकृति के लिये क्यों न हो, रोगी से हमेशा पूछता रहे कि तुम्हें दवा गरमी तो नहीं करती अगर रोगी कहे कि यह दवा हम को गरमी करती है अर्थात् गला सूखता है और पेट में जलन होती है तो उस दवा का देना फौरन बन्द कर देय क्योंकि जो दवा रोगी को गरमी करेगी उस दवा से फायदा नहीं होगा ।

## कफ जनित खांसी की चिकित्सा ।

वलिनं वमनेनादौ शोधितं कफकासिनं । यवाद्भिः  
कटुरूपैः कफघ्नैश्चाप्युपाचरेत् ॥ स्वरसंश्रृंगवेरस्य  
माक्षिकेण समन्वितं । पाथयेच्छ्वासकासघ्नं प्रतिश्याय-  
कफापहं ॥

कफकास वाला अगर बलवान है तो उसको प्रथम लयण द्वारा व-  
मन कराये के कफ को निकाल देय और खाने को जवका भात अथवा  
जवे की रोटी, फडुआ, रूखा और कुछ गरम पदार्थ जो कफ का नाशक  
है खानेको देय । अदरख का ताजा रस दो तोला और शहद ६ भासा  
दोनोंको एकमें मिला के पिलावे इसी प्रकार दोनों समय पिलाने से और  
पथ्य सहित रोगी को रखने से, श्वास, खांसी, जुकाम और कफ का नाश  
होता है ॥

मनःशिला लितदलं च दर्या उपशोषितं । सक्षीरं धूम-  
पानं च महाकासनिबर्हणं ॥

शुद्ध मैनशिल को पानी में पीस के घेर के पत्तों पर लेप कर छाया  
में सुखाय, चिलिम में भर उसका धुआं पीके ऊपर से गौ का दूध मिश्री  
मिला कर पीने से कफ जनित कास रोग आराम होता है । अगर इसके  
पीने से शिर में घुमरी या शिर में दर्द अथवा जो भवलाये तो न पीये ।  
या बहुत थोड़ा २ पीने का अभ्यास करे । इसी प्रकार छोटी हरी को  
चिलिम में पीकर ऊपर से दूध मिश्री पीने से और दिन में कई दू  
विहीदाने का लुआव और मिश्री पीने से सय प्रकार की खांसी  
होती है ।



## नजला के खांसी की दवा ।

अगर नजला पुराना हो गया हो और खांसी पीछा न छोड़ती हो तो जातीफलादि चूर्ण जो पञ्चम खण्ड के ७० पेज में लिख आये हैं दोनों समय शहद के साथ अथवा सरबत उन्नाव या सरबत गुलबनपसा के साथ घाट कर ऊपर से मिश्री सहित उष्ण दूध पिये या कुछ दिनों तक नीती का सेवन करे, और सूत्र पथ्य से रहे क्योंकि नजले की खांसी मनुष्य का पीछा बहुत दिक्कत से छोड़ती है खांसी अधिक उमर में जब नजले से खांसी आने लगती है ऐसी किसीको छोड़ती है। ऐसी अवस्था में लोग अफीम खाने लगते हैं और सिवाय अफीम के दूसरी दवा है भी नहीं जब देखे कि रोगी की उमर चालीस, पचास से अधिक है और अनेक दवा दे के चक गये खांसी पीछा नहीं छोड़ती उस समय आ० द० खण्ड के पेज में जो अफीम बनाने की क्रियायें लिखी हैं तैय्यार कर के बहुत कम मात्रा रोगी को देना आरंभ करे और दूध अधिक खिलावे, अगर रोगी पथ्य से रहेगा तो अवश्य खांसी की विमारी जाती रहेगी और थोड़ेही दिनों में रोगी रिष्ट पुष्ट हो जायगा ।

अगर थोड़ेही दिनों की खांसी हो चाहे नजला भी जारी हो निम्नलिखित दवा को कुछ दिनों तक पथ्य सहित खाने से निस्सन्देह फायदा होगा ।

बंसलीचन १ तोला, छोटीलायची १ तोला, गुर्च का सप्त १ तोला, तीसुर ६ मासा, गोद बबूल का ६ मासा, छोटी पीपर ६ मासा, दालचीनी ३ मासा, रुमीमस्तगी ३ मासा, सब को महीन पीस चूर्ण करलेय इसका मात्रा १॥ मासा से ३ मासा तक है शहदके साथ अथवा उक्त सरबतों के साथ दोनों समय घाटकर ऊपर से यह जुगांदा को पिये । गुलबनपसा ६ मासा, उन्नाव ४ दाना, मुलेठी ३ मासा और मिश्री ६ मासा चारों चीजों को पांचभर पानी में पकावे जब आधपांच रह जाय मल डान कर पी जाये, कुछ दिनों तक बराबर इस दवा को सेवन करने से नजले से उत्पन्न खांसी जाती रहती है ।

यद्देहदृ का बकुल १ तोला घहेरा का बकुल २ तोला मूरा आवला  
बीज रहित ४ तोला छोटी पीपर २ तोला सबों को महीन चूर्ण करलिये  
इस चूर्ण को अन्दाज माफिक दो समय अथवा तीन समय सहत के साथ  
चाटने से खांसी, श्वास और ज्वर का नाश होता है । यह चूर्ण दस्त का  
लानेवाला और अग्नि को जगता है ।

### मरिचादि बटी ।

मरिचकर्ममात्रस्यात्पिप्यलीकर्मसंमिता । अर्द्धकर्मो  
यवक्षारः कर्मयुग्मंचदादिमम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंयुज्याद-  
ष्टकर्मगुडेनहि । शाणप्रमाणगुटिकां कृत्वावक्रेविधार-  
येत् ॥ अस्याःप्रभावात्सर्वेऽपि कासायांत्येवसंक्षयम् ॥

मरिच १ तोला छोटी पीपर १ तोला, जवाखार आधा तोला,  
अनासदाना दो तोला इन सब दवाइयों को चूरण आठ तोले साफ  
गुड़ में सान प्रार २ मासे अथवा दो दो मासे की गोली बनाय ले, जय  
खांसी आवै एक गोली मुख में डाल कर चूसे, इस गोली के चूसने से सब  
प्रकारकी खांसी नाश को प्राप्त होती है अथवा खदिरादि बटी जो आर  
दो में लिख चुके हैं उसको भी चूसने से खांसी जाती रहती है ।

### वव्वुलारिष्ट ।

तुलाद्वयंचवव्वूल्यश्चतुर्द्रोणेजलेपचेत्तुलाद्रोणशेषे  
रसेशीतेः गुडस्थत्रिलुलाक्षिपेत् ॥ धातकीपोडशपलां  
कृष्णांचद्विपलांतथा । जातीफलानिकंकोल मेलान्व-

कूपत्रकेशरम् ॥ लवंगमरिचंचैव पलिकान्युपकल्पयेत् ।  
 मासंभाण्डेस्थितस्त्वेष वव्वुलारिष्टकोजयेत् ॥ क्षयकुष्ट-  
 मतीसार प्रमेहस्वासकासनुत् ॥

यह वव्वुलारिष्टशारङ्गधरकाहै कर्ष्यारका परीक्षितहै, सईसे जो खांसी  
 है अथवा धातुके सबय से यदि खांसी आतीहो तो अवश्य फायदा होगा ।  
 वव्वूलक्ष्म की अंतरालाल ८ सेर ले अधकघराकर अठगुने जलमें पकावे जब  
 चौथाईजल रहनाय शीतलकर उसी में १२ सेर साफ गुड़ डाल देय घवका  
 फूल १ सेर छोटीपीपर ८ तोला, आयफल कंकाल छोटीलायची दालचिनी  
 तेजपांत नागकेशर लिंग और निचं ये सब चार २ तोले इन सबोंको एक  
 मही के चिकने घड़ेमें डाल परई और मृत्तिका से मुख बन्दकर १ महीना  
 पर्यन्त सुले स्थानमें जहां दिनमें धूप लगे रातमें ओस में रखे १ महीने  
 के बाद उसे खानकर बोटलमें भरदेय इसका मात्रा ६ मासासे दो तोला  
 है दिनमें दो दफे अथवा तीन दफे पीनेसे कफसईसे खांसी कुष्ठमतीसार  
 प्रमेह श्वास और अनेक प्रकारकी खांसी आराम होती है किन्तु खास  
 कर प्रमेहसे अथवा यत्नासे उत्पन्न खांसीको नाश करता है ॥

### अथ द्राक्षारिष्ट ।

द्राक्षातुलाद्धिद्रोण जलस्यविपचेत्सुधीः । पादशे-  
 पेकपायेच पूतशीतेविनिःक्षिपेत् ॥ गुडस्यद्वितुलांतत्र-  
 त्वगेलापत्रकेशरम् । प्रियंगुमरिचंकृष्णां विडंगंचेत्त्रि-  
 णयेत् ॥ पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततोभाण्डेनिधापयेत् ।  
 स्थापयित्वाततोमासं ततोजातरसंपिवेत् ॥ उरःक्षतं-

क्षयंहन्ति कासश्वासगलामयान् । द्राक्षारिष्टोहयःप्रोक्तो  
बलरुन्मलशोधनाः ॥

मुनक्का धीज रहित २ सेर २० सेर पानीमें बुद्धिमान् धीमी आंघ्रिसे पचाये, जब घीयाई जल बाकी रहे तब शीतल कर छान लिये । उसमें गुड़ ८ सेर लिखा है लेकिन साफ गुड़ ४ सेर छाले, दालचिनी छोटीपपर और वायभिरंग यह सब चार २ तोले पूर्णकर छाल पूर्वयत् मृत्तिका पात्रमें एक सहीना पर्यन्त धर रखै पश्चात् छानकर घोलमें भर देय, इसका भी मात्रा ६ मासासे दो तोले पर्यन्त है । इस द्राक्षारिष्टके पीनेसे उरःक्षत और क्षयीसे उत्पन्न खांसी श्वास, गले का दर्द गला सूज आना या बैठ जागा आदि रोग नाश होते हैं । यह द्राक्षारिष्ट बलको बढ़ाता है और मल को शुद्ध करता है ॥

भांगर्यादि घृतं वात कासाधिकारे ।

भांगीकलकैर्घृतञ्चाथ पचेद्दधिचतुर्गणे । भांगीरसं  
द्विगुणितं वातकासहरंपरम् ॥

एक पाय भांगी यदि तांजी मिले तो अति उत्तम है नचेत् सूखी भांगी एक पावले कुचलकर रातको पानीमें भिजादे सबेरे सिलपर पीसे लुगदीकर एक कढ़ाई (जिसमें रंगेकी कलई हो) उसमें एकसेर घी और घीसे चौगुना दही का पानी और भांगीकी लुगुदी तीनाके एकत्रितकर धीमी आंघ्र से पकाये ऊपरसे पुनः भांगी का दूना रस डाले । यहांभी उसी तरह समझिये यदि तांजी मिले तो कुचल कर रस निकाल लिये नचेत् सूखी भांगी आधसेर ले कुचलकर १६ सेर जलमें रातको भिजावे सबेरे धीमी

## पिप्पली घृतं ।

यह घृत बनाने में बहुत सहज है और सब प्रकार के नई पुरानी खांसी को आराम करता है, यह निहायत परीक्षित है। लोटी पीपर एक पाव बकरी के दूध में पीस कर लुगदा बनालेय, गोघृत २॥ ढाई सेर बकरी का दूध १० सेर तीनों को कढ़ाई में चढ़ाय धीमी आंच से पचाय कर घृत तैय्यार करलेय, इस घृत के सेवन से सब प्रकार की खांसी आराम होती है। अगर पचजाय तो रोगी इस घृत को चार तोले तकपी सकता है। इस बातको हम फिर भी कहते हैं कि घी के ऊपर पानी धोखे से भी न पिये पथ्य यही है जो ऊपर लिख आये हैं।

## पारद की कजली ।

कई रोगियोंके आराम होनेसे सिद्ध हुआ है कि जिनकी अवस्था अधिक है और बहुत दिनोंसे खांसी को विमारी घेरे है तथा शीतल पदार्थों के सेवन से या शीत स्थान में रहनेसे खांसी अधिक होजाती है। जिनके कफ अधिक गिरता है लेकिन भीतर दाह गरमी नहीं मालूम होती है गरम चीजोंके खानेसे फायदा मालूम हो। उस रोगीके लिये पारदकी कजली अमृत है, जिन्हे लखरत हो और के न बना सकें तो किसी वैद्य से बनवाके रोगीको खिलायें और रसोंको पपेचा यह पारदकी कजली निश्चायत उत्तम है। इसके बनानेकी विधि यह है ॥

कलांशंव्योपसंयुक्तं शुद्धगंधविमर्दयेत् । अरत्निमात्रे  
वस्त्रेतद्धिप्रकीर्यविवर्जयेत् ॥ सूत्रेणवेष्टयित्वाच यामं-  
तैलेनिमज्जयेत् । धृत्वासदशतोवति मध्येप्रज्वालये-  
ध्रतां ॥ हुंतोनिपतितोगंधो निर्दोषःकांचभाजने । तां-

द्रुतिंप्रक्षिपेत्पात्रे नागवल्यास्त्रिविन्दुकान् ॥ चलेनप्र-  
मितंशुद्धं सूतेन्द्रं च विमर्दयेत् । कासश्वासंचशूलानि-  
गृह्णीयादपिदुर्धरं ॥ आमंविशोपयत्याशु लघुत्वंप्रकरो-  
तिच ॥

शुद्ध भावलाभार गन्धक १६ तैला लेकर उसमें एक तैला (व्योष) थोड़ा पीपर और मिर्च मिलाके खूब महीन खरलकरे पथात् सवाहाय सफेद कपड़ा ले उसी पर गन्धकको फैलाय दिय और लपेटकर बत्ती बनावे और डीरेसे खूब लपेट दिय ताकि दवा न गिरने पावे पथात् उसी बत्तीको पहरभर काले तिलके तेलमें भिजा रखै पीछे एक तरफसे चोमटामे पकड़ दूसरी तरफसे जलावे और बत्तीके नीचे एक कटोरा कांचका रखदे उसमें जो तेल टपकके गिरे उसे लेकर सीसीमें धरे जितना वह तेल हो उतनाही थथवा उसका पाधा संस्कार किया हुआ पारा थथवा शुद्ध सिमरख का निकाला हुआ पारे को ले काला खरल जिसमें पत्थल न छूटताहो थथवा चिनी के खरलमें डाल जितने पहरमें सुन्दर कजली हो जाय बराबर धोतता रहै । जब देखे कि निश्चन्द्र कजली होगई है कागदार सीसी में रखदे । इस कजली का मात्रा ४ चावलसे दो रत्ती तक है । इस कजली को दिनों समय सड़के साथ चाटनेसे खांसी खास और शूलरोग प्रसाध्य हो तो भी पाराम होते हैं तथा आमरोग को दूरकर थथ कजली प्ररीरको जलकी करती है ।

इस कजलीके खाने वाला बहुत नमकीन पदार्थ खड़े पदार्थ सागपात तेलमिर्चा आषाढ इही आदि न खावे स्त्री प्रसंग न करे रास्ता न चले और पिचकारो इन सब वस्तुओंकी त्याग करे ॥

शृंगारामुकम् कासाधिकारे ।

जिस रोगको पवस्या ४० वर्षसे अधिक है और निजाज भीतल है

अर्थात् गर्भ-बीजां से प्रायदा होता है उनके लिये यह अभक्त अत्यन्त लाभ  
दायक है ॥

शुद्ध जूया अभक्त मस हजार पांच का अथवा सो पांचका ४ तोला;  
कपूर, जायफल, सुगन्धवाणा गज पोपल तेजपात चौग जटामाषी तालीसपत्र  
दालचिनी, नागकेसर, कूट, और धवका फल, यह सब चार २ मासे बीजरहित  
हड़, बहेरा, भावला, मोठ, पीपल, मिर्च प्रत्येक छ छ मासे छोटीलायचोके  
दाने और जायफल पाठ ८ मासे सबों के। खूब महीन चूर्णकर पश्चात् शुद्ध  
भावलासारगंधक ८ मासे शुद्ध पारा ४ मासे दानों के ८ पहर घोट कजली  
कर उसमें मिला पश्चात् सबोंके जल में घोट चनेके बराबर गीली वगाय  
छाया में सुखाय लिय इसका खोराक एक गीलीसे ४ गीली तक है इस गीली  
को घाम सबेरे दानों समय खाकर ऊपर से पान और अदरक का रस एक  
तोला अथवा दो तोला पिये अन्त में थोड़ा जल पिये इस गीली के सेवन से  
पुरानी खांसी खास उदर रोग आदि कठिन विमारियां शराम होती है ।  
वैद्यक में तो इस बटो की बहुत कुछ तारीफ लिखी है जैसे—

ह्न्यादामाशयोत्थान् कफपवनकृतान् पित्तरोगान्

शोषान् । वल्योवृष्यश्चयोगस्तरुणतरकरः सर्वरोगेप्र-

शस्तः ॥ पथ्यंमांसैश्चयूपैर्घृतं परिलुलितैर्गन्धदुग्धैश्च

भूयः । भोज्यंथोज्यंयथेष्टं ललितललनया दीयमानं-

मुदायत् ॥ शृंगाराभिण कामीयुवतिजनशतः भोगयो-

गादतुष्टः । वर्ज्यंशाकाम्लमादौदिनं कतिपयचित्स्वेच्छ-

याभोज्यमन्यत् ॥ दीर्घायुःकाममूर्त्तिर्गतिवलिपलितो

मानवोऽस्यप्रसादात् ॥

आमाश्रयके विकारसे उठे जितने रोग हैं, कफ, वात और पित्त करके जितने रोग हैं वे सब इस बटीसे नाश होते हैं । बल पुरुषार्थवद् क और ब्रह्मसे सावान बनाने वाली यही बटी है । इस दवा को सब रोगों में देना उत्तम है । इस पर मांसका दूध, गौ का घृत और दूध पथ्य है इसने अतिरिक्त और भी प्रकृतिके अनुसार उत्तम भोजन किसी रूपवतीस्त्री से बनवाय कर खावे । इस गीलीके खाने वाला पुरुष सौ स्त्रियों के साथ सहवास करने से भी संतुष्ट नहीं होता । इसका सेवन करने वाला प्राक और खटाई कुछ दिनों के किये त्याग देवे और सब प्रकृतिके अनुसार भोजन करे तो वह पुरुष दीर्घायु हो और कामदेवके समान दिव्य भूतिमान हो और उसके बाल कभी सफेद न हों इत्यादि तारीफ लिखी है किंतु इतना तो हम चवस्य कंठ सक्त हैं कि श्रोत मिजाज वालीसौ पुरानीखांसी में यह बटी निखन्दे ह फायदा करती है ॥

## छाती पर कफ का सूखना ।

खांसी रोगवाले के छाती पर कभी २ गरम श्रौपधों के अथवा गरम शीजोंके भोजन करने से कफ सूख कर जम जाता है कि जिसे रोगी को खांसने में तकलीफ होती है छाती पर कफ का चरचर शब्द होता है और कफ मुसकिल से निकलता है और छातीसे कफ छूटते समय छाती में दर्द होता है ऐसी अवस्था में उस रोगीको कोई गरम श्रौपध अथवा गरम दस्तु खाने को न दे जब तक कि बलगम छाती से छूट कर मुण अथवा दस्त से बिलकुल निकल न जाय क्योंकि ऐसे समय में थोड़ा भी गरम दवा खिलाने से रोगी यमालय का रास्ता लेता है । अज्ञान वैद्य लोग ऐसे रोगी को भी प्रायः रस खिलाकर मार डालते हैं । ऐसी अवस्था में चाहिये कि निम्नलिखित दवाइयों से बलगम को साफ करे ।

## लवणक्षार ।

संधानेन आधपाय सांभर नोन आधपाय कुतिहा नोन आधपाय



अजवाइन आधपाव सुहागाआधपाव इन सब चीजों को १ मिट्टी के बर्तन में भर कपरीटी कर सुखाय हाथभरका गढ़ा खोद बीचमें नेंदिया और चारों तरफसे कण्डा देकर फूंक दे शीतल होने पर उसमेंसे निकाल महीन चूर्ण कर बोतल में रख दे और दिनमें कई दफे चार २ रत्ती खावे इससे बलगम ढीला होकर निकल जायगा यदि एक दो दिन इस औषध के सेवन से लाभ न हो तो फौरन दवाको छोड़कर निम्नलिखित औषधका सेवन करे। पावभर गेहूँकी भूसी लेकर आधसेर पानीमें १ घंटे तकभिजा के मलकर छान ले उसी पानीमें छिला हुआ दश बदाम और आधा तोला बबूल का गोंद और १ तोला मिश्री डालकर धीमी आंच से पकावे जब आधा पानी रहजाय तो उसी पानी को एक २ चम्मच कई दफे करके पीवे इसी प्रकार दोनों समय इस हरीरा को बना कर दो तीन दिन तक पीने में उाती पर का कफ छुटकर निकल जाता है अगर इससे भी लाभ न हो तो १ तोला अलसी और १ तोला मिश्री दोनों को डेढ़पाव पानीमें पकाय मल छानकर एक २ चम्मच दिनमें कई दफे करके पिलावे जब तक कफ उाती से बिलकुल साफ न हो जाय रोज २ इसी तरह तैय्यार करके पिलाता रहे।

## कौवा लटकने से खांसी।

अगर कौवा लटकनेसे खांसी हो, उसका लक्षण यह है कि हर समय गलेमें खांसीकी सुंघसुंघी लगी रहती है और यह सासुल होता है कि जैसे गलेमें कोई चीज अटकी हो। ऐसी अवस्थामें सिवाय कौवा उठाने के अन्य उपाय नहीं हैं।

माजूफल, बंशलोचन, छोटी लायची के दानें तीनों को बराबर ले महीन चूर्णकर उसीसे कौवे को उठावे अथवा टिंचरस्टील याने तोहे का अर्क, अंगरेजी दवारानों में मिलता है फोहेमें बोरकर कौवे में लगाने

से भी झटका हुआ कौवा उठ जाता है, सैकड़ों बार परीक्षा लिया गया है किन्तु यह ब्राह्मणादिकोंके जिये उत्तम नहीं है इससे कि वह स्फिरिट अर्थात् शराबसे बनता है ।

एतयाके दिन कौवेकी पीठ लेकर कपड़ेमें बांध बालकों के गलेमें बांधने से बालकों का कौवा उठ जाता है, तथा दो चार दिन इसी तरह कौवा उठाने से भी उठजाता है, प्रायः स्त्रियां उठा देती हैं ।

## अथ श्वासाधिकार ।

खांसी रोग के बाद अब हम श्वास रोग का प्रकरण उठाते हैं । खांसीके बाद श्वास रोगके कथन का मुख्य प्रयोजन यही है कि कुछ दिनों तक खांसी बनी रहनेही से श्वास रोग होजाता है, दूसरे श्वासके कारण भी सब यहीहैं जो यक्ष्माके हैं । तीसरे धातुगुद्गु और अवस्था पूर्ण रहनेसे श्वास रोग नहीं होता, धातुकी दीर्घव्यता रहने पर, किसी कर्म अथवा खाद्याखाद्य द्वारा दिलपर सुष्की पहुंचनेहोसे रोग होजाता है । पाठकगण, श्वास रोग प्रायः युद्ध पुरुषों में जिनकी धातु स्वयं कम हो जाती है, और गांजा, चरस घणू आदि नशाओं के खाने बालोंमें कि जिनकी धातु, अत्यन्त हृदयमें सुष्की पहुंचनेसे सूख जाती है, देखते होंगे । आयुर्वेदके किसी २ ग्रन्थोंमें खांसी रोगके पश्चात् हिचकी रोगका बयान करके तब श्वास रोगका प्रकरण उठाया है उसका कारण यह है कि हिचकी और श्वास रोगका आदिकारण एक माना है और दोनों रोगों को असाध्य कहा है । लिखा भी है---

धैरेवकारणैर्हिक्का बहुभिःसंप्रवर्तते । तैरेवकारणैः-  
श्वासो घोरो भवति देहिनां ॥ विहाय प्रकृतिं वायुः प्राणो-  
ऽथ कफसंयुतः । श्वासाय तूर्ध्वगो भूत्वा तं श्वासं परि-  
चक्षते ॥

यह सुश्रुतका बचन है-जिन २ कारणों करके मनुष्यको हिक्का अर्थात् हिचकी रोग होता है । उन्हीं २ कारणों करके मनुष्यको श्वास रोग भी होता है । हृदयस्थ प्राण वायु जिस अवस्थामें कफ युक्त होके अपने स्वभाव को याने जो उसका निजकाम है उसे परित्याग करके ऊर्ध्वगामी होता है अर्थात् ऊपरकी चढ़ता है, बस उसको बाहर निकालनेके लिये जो मनुष्य को बारम्बार मुख खोलना मूंदना पड़ता है उससे एक प्रकारकी ह्रांफी आने लगती है उसी को वैद्य लोग श्वास (दमा) रोग कहते हैं । यद्यपि श्वास रोग एकही प्रकार का है किन्तु निदानदिकारणों करके पांच प्रकार का कहा गया है । यथा—

महोर्ध्वच्छिन्नतमक क्षुद्रभेदैश्चपंचधा । भिद्यतेस-  
महाव्याधिः श्वासण्कोविशेषतः ॥

महाश्वास १ ऊर्ध्वश्वास २ छिन्नश्वास ३ तमकश्वास ४ और चुद्रस्वासाद्य  
यत्र पांचश्वास महा व्याधिः किंतु पश्चिममें है एकही श्वास । इसमें ३ श्वास  
पंचाध्य १ कठ साध्य और एक साध्य है सो लिखा भी है—

क्षुद्रःसाध्यतमस्तेपां तमकःकृच्छ्रउच्यते । त्रयःश्वा-  
सानसिद्धयन्ति तमकोदुर्बलस्यच ॥

जब तक श्वासके और भी समस्त लक्षण प्रत्यक्ष नहीं होते रोग साध्य  
रहता है और बह साधारण रोग समझा जाता है किंतु सब लक्षण उपस्थित  
होतेही साध्याऽसाध्य का निर्णय होजाता है जैसे चुद्र श्वास साध्य और  
तमक श्वास कठ साध्य और बाको तम श्वास रोग असाध्य है ॥

पूर्वरूप और संप्राप्ति ।

प्रायूपंतस्यहृत्पीडा शूलमाध्मानमेवच । आनाहो-  
वक्रवैरस्यं शंखनिस्तोदएवच ॥

यदास्रोतांसिसंरुध्य मारुतःकफपूर्वकः । विष्वग्ब्रज-  
तिसंरुद्धस्तदा श्वासान्करोतिसः ॥

प्रथम २-जब मनुष्य को श्वासरोग होनेवाला होता है तो निम्न-  
लिखित लक्षण उपस्थित होते हैं जैसे—हृदय में कुछ दर्द या भारीपन  
मालूम हो जैसे बलगम जमा हो, पेट अथवा शरीरमें दर्द, पेटका फूलना  
अथवा यह मालूम हो कि पेट भोजन से खूब भरा है अथवा पेट के नसे  
तन जाय, मुख का स्वाद फीका और कनपटियों में दर्द का होना यह  
श्वास होने के पहिले होता है, इसी को प्राग् रूप कहते हैं ।

श्वास की संप्राप्ति अर्थात् श्वास रोग शरीर के भीतर कैसे अपना  
घर करता है उसे लिखते हैं, प्रथम प्राणवायु कफके साथ मिलजाता है  
पश्चात् उसी की सहायता से अन्न और जल के बहनेवाली नाड़ियों को  
रोकलता है और आप उस कफ कर के रुके भये नाड़ियों में चारों तरफ  
फिर कर उर्दुगामी हो के निकलने लगता है अर्थात् श्वास को उत्पन्न  
करता है इसी का नाम संप्राप्ति है ।

## महा श्वास का लक्षण ।

निम्नलिखित पाँचों श्वासों के लक्षण श्लोकों के द्वारा न दिखला  
के सिर्फ भाषा में लिखे देते हैं । उसका कारण यह है कि एक २ लक्षणों  
का कई २ श्लोकों से पूरित किया है और इतने श्लोक किसी को उप-  
स्थित रह नहीं सके क्योंकि प्रथम तो श्लोकोंको रटन कर कंठाग्रकरना,  
दूसरे सर्वदा उपस्थित रहने के लिये पाठ किया करना बहुतही कठिन  
है, सिर्फ आशय हृदय रहना चाहिये-सा भाषा के द्वारा यामूची हो  
सक्ता है इसलिये हम श्लोकों को न लिख कर सिर्फ भाषामें लिखते हैं ।

मिस मनुष्य का प्राणवायु शब्द करता हुआ ऊर्ध्वगति को प्राप्त

होता है उस श्वास से मनुष्य बहुतही दुखी होता है, वह श्वास कैसा चलता हुआ मालूम होता है जैसे कुछ दिनों का गीओं के साथ समागम न करनेवाला मस्त सांड श्वास लेता है, वैसाही महाश्वास वाले रोगी का श्वास फूलता है, उस अवस्था में उस रोगी का पठित शास्त्र, विज्ञान शास्त्र आदि सब विमृति हो जाते हैं, और नेत्र और मुख फैल जाता है, दिशा पेशाव कम उतरता है, स्वरसंग मन की उदासी और श्वास शब्द दूर से सुन पड़ने लगता है । यह महाश्वास के लक्षण हैं यह श्वासवाला रोगी बहुत कम जीता है ।

### ऊर्ध्वश्वास के लक्षण ।

यह श्वासवाला रोगी ऊपर को लम्बी श्वास लेता है और वह श्वास नीचे को नहीं खींच सकता अर्थात् पेट में वायु नहीं समाता है कारण यह है कि ऊर्ध्वश्वास वायुके अधिक क्रोशित होने से होता है । उस रोगी के नेत्र स्थिर नहीं रहते ऊपर को इधर उधर देखता है, शरीर में दर्द मुख का सूखना, बेचैनी अधिक होती है, और जब श्वास नीचे को रुक जाती है तब रोगी भूखित हो जाता है, ऐसाही बारम्बार होने से वह रोगी उसी श्वास से प्राण को परित्याग करता है ।

### छिन्नश्वास के लक्षण ।

जो मनुष्य इन्द्रियों से शिथिल हो रहि रहि के स्वास लेता है और हृदयादिक मर्मस्थानोंमें फाटने या उदने मरीखा दर्द हो श्वास लेते में, जिस दर्द के वजे से श्वास न लिया जाय, पेटका फूलना, पसीनाआना यदहीशी का होना, नाभी के नीचे बस्ति अर्थात् पेट में अति दाह, नेत्रों में पानी सा भरा रहना, शरीर शिथिल तथा क्षीण होना, एक नेत्र लाल, मुख का सूखना, चेष्टा का घटल जाना, कुछ आन तान बकना इन सब लक्षणों के संयुक्त छिन्न श्वास वाला रोगी व्याकुल हो के शीघ्र ही प्राण बिसर्जन करता है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं जानना ॥

### तमक श्वास के लक्षण ।

जब प्राण वायु अपना मार्ग छोड़ के कुमार्गों हो के नाडियों में प्राप्त होता है तब गरदन और शिर को जकड़ि के कफ को बढ़ाय पी-

नस जिसे नाक बहना कहते हैं उस रोग को पैदा करता है । तब वह प्राण वायु उस पीनस सम्यन्धी कफ से रुका गया कंठ पुरपुर करता है और अत्यन्त असहन दर्द जो सहने लायक नहीं है ऐसा दर्द प्राणस्थान जो हृदय है होके यह श्वास उत्पन्न होता है । तब वह रोगी उस श्वासके वेग से व्याकुलता तथा कष्ट एवं त्रासको प्राप्त होता है जैसे अथाह जल में डूबते हुये को सहाई नौका न पाने वाला जन । धारम्भार श्वास का रुक जाना, खांसते २ धारम्भार मूर्छित हो जाना, छाती से कफ न छुटने की अवस्था में अति पीड़ित होना, कफ गिर जाने पर क्षण मात्र को आराम मिलना, सर्वदा गले में खसखसाहट बना रहना, और श्वास फूलते अवस्था में धोलने में कष्ट होना, नौदका नहीं आना (संभव यह है कि लीटे पर उसकी पसुरियोंको वायु धरकर जकड़ लेता है) तब रोगी कंठ उठ बैठता है तो चैन मिलता है, इसी से श्वास वाले सामने बड़ी तकिया धर उसी पर छाती को आड़ कर अपने समय को काटते हैं



जिनका चित्र यह है) नेत्रोंका कंचा रहना, मस्तक में पसीना का आना, मुख सूखता रहना, श्वास फूलते समय जैसे हाथी पर बैठा हुआ पीलवान हालता रहता है वैसेही वह रोगी हालता है । प्रायः तमक श्वास भेषोंके उठनेसे, पानी धरनेसे, ठंडे भकानमें रहने से और शीतल तथा कफकारक पदार्थोंके सेवनसे बड़ता है • यह तमक श्वास कष्टसाध्य है किंतु नयीन अवस्था में उत्तम चिकित्सा होने से आराम भी हो सक्ता है ॥

सुरदावादमें सुश्री रामगलाल नामक एक कायस्थ रहते हैं और उन्हें वृद्धत दिनों से श्वास रोग नजला के बजे से है, कुपय्य बस कभी २ सभड़ पाता है । उनकी विमारी सभड़ने से एक सप्ताह लक्षण मिलता है, जिस दिन सभड़नेको खास सभड़ता है वह कहते हैं कि आज के तीसरे दिन त्वादल उठेगी और पानी बरसेगा वैसेही होता है याने कई बेर देखा गया है पाकाब साफ

## प्रथमक श्वास के लक्षण ।

जो तमकश्वासके लक्षण ऊपर कह पाये हैं वही रोगी यदि ज्वर और मूर्च्छा करके युक्त होय तो उस श्वासको प्रथमक श्वास जानना और किसी र का मत है कि नाकमें थो मुख में धूरि गरदा के छाने से, अंजोर्ण से, अधिक देर तक पानीमें भीजनेसे तथा उदावत अर्थात् मलमूत्रादि वेगों के रोकनेसे प्रथमक श्वास उत्पन्न होता है, यह श्वास शीतल उपायोंसे शांतिरहता है क्योंकि प्रथमक श्वास वाले को भीतर ऐसा गरमी मालुम होता है मानों किसीने उष्णस्थान या अंधियारेमें बन्द कर दिया है । प्रथमक श्वास जाला गरम औषधोंके उपचारसे शीघ्रही यमालयके रास्तेको वैद्यराज के यमको गाते हुये सुशोभित करता है ॥

यदि कोई पूछे कि वैद्यराजके यमको क्या गावेगा सुनिये भ्रातृ कलके प्रायः लंठाधिराज वैद्य लोग निदान तो विचारते नहीं किसी तरहका श्वास क्यों न हो। भौंका भौंक रसोकी गुड़िया चटातेही छांयगी जिससे रोगी सर्वदा के लिये पारोख होजाता है । हमारे आयुर्वेदमें श्वास रोगका निदान यही तक कहा है किंतु डाक्टरोंमें कुछ अधिक कहा है इस लिये इस स्थलमें हम कुछ डाक्टरी मतानुसार भी श्वास का निदान कहते हैं ।

हे वादल कहीं नाम मात्रके नहीं देख पड़ते किंतु आकाश वादलोंसे आच्छादित होनेके तीस दिन पूर्वही उठता है इस से मालुम होता है कुछ आमार मेषोंके उभी दिनसे होता है किंतु सूक्ष्म होनेके कारण अथवा अधिक दूर रहने के कारण देख नहीं पड़ते । बस पाठकगण इसी उदाहरणसे समझ सकते हैं कि वाद्य पंचतला का पारोरिक पंचतलोंके गाय कितना घनिष्ट सम्बन्ध है इसीसे वज्रत विमारी हैं जो समयानुसार खर्ये उठा करती हैं और शान्त होती हैं ॥

## ASTHMA (श्वसासकास)

डाक्टरों में इस रोग का बयान इस प्रकार लिखा है । इस रोग का विशेष चिन्ह यह है कि इसके उपस्थित समयमें श्वास बड़े कष्ट से लिया जाता है और जब श्वास दब जाता है श्वास लेने में कुछ कष्ट नहीं होता, यह रोग पांच प्रकार है ।

१ Humoral Asthma or Bronchial Ftuex ( वायु पथार्द्र श्वासकास ) यह रोग कुछ दिनों तक श्वास नली दाह सहित रहने से पुनः भरती पहुँचने से उत्पन्न होता है । इस श्वास का लक्षण तमक श्वास के साथ प्रायः मिलता है ॥

२ Congestive Asthma ( रक्त पूर्ण श्वास कास ) इसका लक्षण प्रायः उरःक्षत रोग के साथ मिलता है ॥

३ Spasmodic Asthma ( दर्दयुक्त श्वासकास ) इसी को स्नायु सम्बन्धीय श्वासकास कहते हैं इसका सबब यह है कि वायु स्नायुओं में घुस कर नसों को खींचता है वस उन नसों में दर्द होने से ही श्वास खाँसी होती है इसी से उक्त नाम पड़ा है ॥

४ Hay Asthma ( टण्णाघात श्वासकास ) यह रोग वायु नली अत्यन्त शुष्क होने से होता है अथवा सड़े घास का भाफ नाक में जाने से यह रोग होता है ॥

५ Hysterie Asthma ( गुल्म श्वास कास ) यह रोग अस्मर स्त्रियों के गुल्म रोग होने से होता है अर्थात् औरतों के रक्त गुल्म कुछ दिनों तक बने रहने से खाँसी श्वास रोग ही जाता है ॥

वायु पथार्द्र श्वासकास अर्थात् वायु वाहिनी स्नायुमें भरती पहुँचने से जो श्वास रोग होता है उसका संक्षेप से विवरण करते हैं ।



इस रोगके प्रारंभ के समय प्रेटमें बोझा मालुम होना, चेहरा का रंग फोका, तन्द्रा धिर दह होता है। संघा को मालुम हो जैसे कोई छाती ककड़ दिया है इस प्रकार श्वास लेनेमें कष्ट मालुम हो और श्वास धीरे २ लियाजाय एवं गलः सांय २ करे और सूखी खांसी आवै और जैसे चेहरा सुरभाय जाता है और श्वास लेनेमें इतना कष्ट होता है कि जैसा हमने चित्र दिया है, विना उसी तरह जूधे रोगी क्षण मात्रको चैन नहीं पा सकता है क्योंकि श्वास लेते २ प्रेटके नसे खिंच जाते हैं, मांस पेशी भयानक रूप से काम करने लगते हैं। किसी २ रोगी को सड़सा भई रात्रि समय में भी उक्त लक्षण सहित श्वासकास उठ खड़ा होता है जिसे एका एक घबड़ाकर उठ बैठता है।

छातीके ऊपर अंगुलियोंके अग्रभाग द्वारा आघात (ठोकनेसे) करने से टपटप ऐसा शब्द बोध होता है। किन्तु यही रोग जब कठिन रूप से प्राक्रमण करता है तब बोध होता है परन्तु इसी रोगके प्रथम अवस्थामें छातीमें कान लगा कर सुने से श्वास नहीं में वज्रविधि घड़घड़ाने का शब्द मालुम होता है पहले टकटक ठकठक एवं सांय २ तथा श्वास पंथमें जैसे कोई वस्तु घिसता हो बोध होता है ॥

शरीरके अन्तरस्थ इन्द्रियोंमें हृदय आंत आदि पीड़ितावस्था के निदान जाननेके सिर्फ एकही उपाय है एक तो छाती पर अंगुली ठोककर और कान लगाकर शब्द सुनना सिवाय इसके और नाड़ी आदिसे यथार्थ बोध करना वज्रत कठिन है।

डाक्टरलोग श्वास रोग में निम्नलिखित रीतिसे विमारी की परीक्षा करते हैं और इस प्रकारसे परीक्षा करगं वज्रत उचित है क्योंकि श्वास रोग छातीसे होता है और छातीमें अनेक भाग्य हैं जो श्वास रोग में विपरीत गुण वाले तथा अकृत एवं बलहीन होजाते हैं उन सर्वोका हाल नाड़ी के द्वारा नहीं मालुम हो सकता। इसमें कोई सन्देह नहीं कि डाक्टरोंमें रोगी का निदान वज्रत अच्छी तरह विधि से शिखा है और डाक्टर लोग उसी

तरह परीक्षा भी करते हैं डाक्टरों दवा का भी दायक काम होता है इस में दय कारण है ।

अंगुलियोंके अग्र भाग द्वारा ठोकनेसे अथवा एक छोटोसी पतली लकड़ीका टुकड़ा लेके छाती पर धरकर उसके ऊपर अंगुलियोंसे ठोके अथवा बाधे हाथकी अंगुलियोंको धरकर ऊपर से दाहिने हाथ की अंगुली द्वारा आघात करने से एक शून्यमय वा टप टप शब्द श्रवण गीचर होता है । जिस तरह खुलले बांस के ऊपर अंगुलियों के ठोकने से शब्द होता है उसी प्रकार शब्दानुभव होता है, तथा समस्त इन्द्रियादि पीड़ित होनेसे उपरोक्त शब्द का परिवर्तन हो जाता है जिस तरह बाहु वा जांघ के ऊपर ठोकनेसे शब्द होता है उसी तरह शब्द होने लगता है इत्यादि और अनेकशः परीक्षा है जिसे डाक्टरों प्रकरण में पूर्ण रीति से लिखेंगे ।

## श्वास रोग की चिकित्सा ।

सर्वेषु श्वासरोगेषु वातश्लेष्मनिवर्हणं । विदधीत  
विधिं विद्वानादौस्वेदं मृदुं ततः ॥

अथ श्वासकी विमारी में पहले मृदुश्वेद अर्थात् शरीर से हलका पसीना निकलवायके पश्चात् वात और कफ नाश करने का उपाय करे ।

(प्रण) इस श्लोकमें जो प्रथम पसीना निकालने का बयान किया है इसका क्या मतलब है रोग के प्रारम्भ में पसीना निकाला जाये या चिकित्सा के प्रारम्भ में किन्तु इस श्लोक का तात्पर्य यह है विदित होता है कि चिकित्साके प्रारम्भमें प्रथम हलका पसीना निर्गन्त द्वारा शरीर को हलका और कफको पतला कर लेय तब वात और कफ नाश करने का उपाय करे । यही आज कल के धैर्योंकी राय भी है ॥

(उत्तर) आपका कथन भी ठीक है किन्तु इसमें यह आपत्ति आन पड़ेगी कि अधिक दिनों तक श्वास खांसी बने रहने से रोगी का रक्त सांसादि सब क्षीण हो जाते हैं, और रक्तादि शोषावस्था में स्वेदकर्म निषेध कर दिया गया है कारण यह है उष्णादि कृपा द्वारा जो कोई प्रयोग किया जाता है उसे सहन करने वाला रक्तादि स्वसधातु है जब वेही सब कम हैं तो सहन कौन करेगा उस अवस्थामें स्वेदादि क्रिया से रोगी को मूर्छा आना संभव है और मूर्छा से रोगी मर जाता है। स्वेदाध्याय देखो इस लिये रोगके प्रारंभ कालमें स्वेद करना उचित है ॥

(उत्तर) इस लिये कि आभ्यन्तरिक समस्त नाड़ियों में और छाती पर कफ जम जाता है और उस कफ के जमने से श्वास के नली का रास्ता जिसमें हो के वायु गमन करता है रुक जाता है, इस लिये रोगी को धारम्यार श्वास लेना पड़ता है। स्वेद से कफ पतला पड़ जाता है और वात श्लेष्म नाशक औषध के देने से वही पतला बलगम दस्त के राह निकल जाता है। वात कफ नाशक औषध यह हैं। जैसे—

१. काकराशिंगी, वैतराशींठ, मिर्च, छोटीपीपर, हड़, बहेड़ा, और आंवला यह तीनों बीज रहित, भटकटैया का पञ्चांग, भारंगी, पुष्कर-मूल और पांचों नोन सबों से महीन चूर्ण कर तीन मासा अथवा छ मासा दोनो समय गरम जल के साथ पीने से बलगम छुट श्वास रोग शांत होता है इसके अतिरिक्त यह चूर्ण हुचकी, श्वास, रुद्ध श्वास, खांसी और अरुचि रोग नाश करने में एकही है ॥

## श्वासाधिकारे घृत ।

हमारे आयुर्वेदीय ग्रन्थों में श्वासाधिकार में घृत का प्रकर्ण बहुत अधिक दिया है और जहाँ तक परीक्षा द्वारा देखा गया है, अन्ततोगत्वा दमे की बيمारी में घृत अधिक फायदा करता है, क्योंकि श्वास रोब दो

कारणों से कठिन और असाध्य हो जाता है । एक तो छाती पर कफ सूख कर जमजाने से, वह कफ सूख कर ऐसे मजबूती के साथ छाती में चिपक जाता है जिसका एकाएक उस स्थान से फुटा देना सहज दया का काम नहीं है । उसी कफ के गांठ को कितने गवार लोग छाती में छिपकिली तथा उसी आकार अन्य जानवरों का पैदा होना बतलाते हैं तथा उसकी दवा भी ऐसी २ तेज लोग बना कर रोगी को देते हैं जो रोगी बरदास्त न कर सका तो अपने जीवन से मानो हाथ धो चुका, हां उस श्वास रोग में घृत पिलाने से बहुत लाभ देखा गया है । दूसरे, श्वास रोग में जब यकृत अर्थात् लीवर बढ़ जाता है अथवा कड़ा हो जाता है उस अवस्था में भी श्वास रोग अति दुष्कर हो जाता है किन्तु घृत पिलाने से इसमें भी फायदा देखा गया है, इसलिये इस स्थल में हम कुछ घृत का बयान करते हैं । एक प्रकार का घृत सर्व साधरन के प्रकृतिके तुल्य हो नहीं सका, इस हेतु दो चार जो उत्तम २ फायदे मंद घृत हैं उसे लिखे देते हैं ।

कासेश्वासेचहिक्कायां हृद्गेचापिपूजितं । घृतं-  
पुराणंसंसिद्धं मभयाविडरामठैः ॥

सांसीरोग, श्वासरोग, हिक्की, और हृदयरोग इन सब रोगों में अभया कहें बड़ाहड़, विड कहें विडनोन जिसे मनियारीनेान भी कहते हैं और रामठ कहें होंग इनसे सिद्ध किया हुआ पुराना घृत श्रेष्ठ अर्थात् लाभदायक है ॥

विधि—बड़ाहड़ जो जल में डूब जाता हो उसका बीजा निकाल के आधसेर लेय उसे ४ सेर जल में क्राय बनाये जब आधा जल रहजाय, पानी छान लेय, कलईदार कट्टाई में एक सेर एक बर्य के ऊपर का घी छोड़ और उसी में हड़ का पानी डाल धीमी आंच से पकाये जब सूख

पकै लगे तब आधपाव मनियारीनोन और एक तोला अधभूँजी, उत्तम होंग उसी में डाल पका लेवे जब पानी सब जल जाय घृत मात्र रह जाय, अग्नि पर से उतार शीतल कर छान अमृतवान में रख ले इसका मात्रा एक तोला से १ छँटाक तक है रोगी अपनी ताकत के अनुसार दिनों समय पिये, ऊपर से पानी न पिये, पान लायची वगैरह खा लेवे तथा इस ची को भोजन के साथ दाल भात तरकारी आदि चीजोंमें भी मिला के खा सका है, यह घृत आजमाया है कुछ दिनों तक लगातार बराबर इसे बना २ के पीता जावे । प्रथम २ घृत पीने से खांसी अथवा श्वास उभर आता है उससे यह न समझना चाहिये कि घृत जुकसान करता है उसको पीता जाय छोड़े नहीं श्वास दबाने के निमित्त कोई बटी जो ऊपर लिख आये हैं अथवा मुलेठी, खैर, अनार या बहेड़ा का बिलका मुख में डाल कर चूसै ॥

## विल्वादि घृत ।

सौवर्चलाभयाविल्वैः संस्कृतवानवघृतं ।

जिस श्वास वाले रोगी को दस्त पतले आते हों वह कालानोन, हड़ और बेल से सिद्ध किया हुआ नये घृत को पिये । इस घृत के बनाने की विधि यह है, ताजा घृत गौ का १ सेर, छोटे बेल की गरी १ पाव, हड़ आधपाव और कालानोन एक छँटाक । विल्व और हड़ को अठगुने जल में काय करै जब चौथाई रहै मलछाल घृत में डाल धीमी आंच से पकावे जब आधा पानी जल जाय तब नोन छोड़ देय और धीमी आंच से पचाता जावे । पानी सब जल जाय घृत मात्र रहजाय छान कर अमृतवान में रखदेय और पूर्वोक्त विधि से कुछ दिनों तक बराबर सेवन करता जावे ।

## अन्यच घृत ।

हिंसाविडङ्गपूतीक त्रिफलाव्योपचित्रकैः । द्वि-  
क्षीरंसाधितं सर्पिश्रतुर्गुण जलान्वितं ॥ कोलमात्रैः  
पिवेत्तद्धि श्वासकासौघ्यपोहति । अर्शांस्यरोचकं-  
गुल्म शकृद्भेदंक्षयंतथा ॥

बालउड़, बायदिरंग, जंगीहरै, त्रिफला अर्थात् हड़ बहेरा आयला  
शोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपल और चीते का छाल सबों को एक २  
उँटाक ले अथकचरा कर १२ सेर जल में रात को भिजा देय सबेरे प-  
कावै जब ३ सेर जल रहजाय नलकर छान लेय। तीन सेर ची को छानने  
पर चढ़ाय उस तीन सेर काढ़े का पानी डाल धीमी आंच से पचा-  
ना शुरू करै और ३ सेर गौ का दूध ३ सेर बकरी का दूध इसे भी डाल  
के पचावे सबों के पश्चात् ४ सेर जल और छोड़ के पचा कर घृत तैय्यार  
करलेय इस घृत को भी पूर्वोक्त प्रकार सेवन करने की विधि समझना  
चाहिये । इस घृत के सेवन से दमा खांसी कुछ दिनों में अवश्य आराम  
होती है । इसके अतिरिक्त बावासीर, अरुधि, गुल्म, टूटकर दिशा का  
आना, और कफ क्षर्द को भी यह घृत हटाता है ऐसा कई बार देखा  
गया है ।

## अथ भृङ्गराज तैलम् ।

पाठकगण इस नाम को सुनकर चमत्कृत होंगे, कि जहां खांसी में  
खाने को कौनकहै तेल मुख पर नहीं धरते तहां खांसी में तेल पीने की  
विधि दी जाती है ? यह सब ये समझी है हां तीव्र ज्वर में तेल की  
चीज रा लेने से निस्सन्देह खांसी श्वास की बीमारी ही जाती है,

यदि ऐसा होता तो श्वास रोग में डाक्टर लोग मछली का तेल क्यों पिलाते । मछली के तेल के विधानपत्र में लिखा है कि इस तेल को तीन बरस तक बराबर पीता रहै । हम कहते हैं भृङ्गराज तेल को छही महीने पथ्य सहित पीकर देखें श्वासरोग को जड़ से उड़ा देता है या नहीं ॥

तैलं दशगुणो सिद्धं भृङ्गराज रसे शुभे । सेव्यमानं यथा  
न्यायं श्वासकासोद्वयपोहति ॥ सुश्रुत उत्तरतंत्रम् ॥

काले तिल का तेल १ सेर को कढ़ाई में चढ़ाय १० सेर भृङ्गराज अर्थात् भांगरे का ताजा रस थोड़ा २ डाल के पचा लेय जब स्वरस जल जाय तब उतार कर छान लेय इसका मात्रा-६ मासा से दो तोला तक है, अपने बलाबल के अनुसार दिनमें दो या तीन दफे पिये । यदि यह देखे कि छाती पर प्रलगम बहुत सूबा है किसी तरह नहीं निकलता है तो कालेतिल के तेल की जगह अलसी के तेल में भृङ्गराज तैल तैयार करै । इस तेल को बराबर पीने से निस्सन्देह श्वास छांसी आराम होती है, अथवा ॥

हरिद्रां मरिचं द्राक्षां गुडं रास्त्राकणां शठी । लिह्या-  
त्तैलेन तुल्यानि श्वासात्तौहितभोजनः ॥

हरदी, कालीमिर्च, मुनक्का, गुड़, रासन, छोटीपीपर और कपूर-कचरी सबों को समान भाग ले महीन चूर्णकर दो मासा या तीन मासा चूर्ण को काले तिल के तेल या अलसी के तेल में मिला के घाटने से भी श्वास को नाश होने को कहा है । किन्तु इसे ऊपरवाला तेल उत्तम है ॥

श्वासाधिकारमें कुछ रसों की प्रकृति जो जाननीय थी। उग्र है इस स्थल में लिखते हैं। इस्में सन्देह नहीं। यदि सब पदार्थ उत्तम फलजाय और लालय त्याग द्रव्य खर्च कर उत्तम रीति से रस तैयार किया जाय तो शैत्यप्रकृति के तथा शैत्याधिकार रोगाक्रान्त आंतुरों के लिये अमृतही समझना चाहिये और विषनिश्रित अतितीव्र शीघ्रकार्यकारिणी अंगरेजी औषधियोंसे सहस्र गुण अधिक लाभदायक होता है किन्तु आजके समय में न उत्तम धातु उपाधुतु मिलते हैं और न यत्न दूटियां मिलती हैं कि जिनके स्वरसके प्रभावसे कठिनसे कठिन धातु भी निघन्द्र भस्मी भूत हो जाते थे सो न यह समय रहा और न वह चीजें रहें सिर्फ ठगबिद्यई रह गई, न धर्मका ख्याल और न ईश्वरका हर धार पेना पैदा कर पेट भरने से काम पाया रस तैयार करना रोगियों को सब अक्षर संसार के दुःख से निर्मुक्त करना लोगों के हाथ रह गया।

## कालेस्वरोरसः श्वासाधिकारे ।

वंगलोहंतथातास्र मभ्रकंपारदंमतम् । गन्धकंताप्य-  
दरद्री दिव्यंजातीफलंतथा ॥ सूक्ष्मैलादालचीनीच केशरं-  
त्रिपकंसृत्तं । धूर्तवीजं वज्रैपालं टंकरांचसमंमतं । रुर्वैभ्य-  
स्त्रिगुणांस्यासं क्षिपत्राचूर्णीकृतंभिषक् । वृपायामार्गनि-  
गुंयडी भंगभृंगरशेनच ॥ मर्दयेद्दिनमकैकं रसःकालेस्वरो  
भवेत् । एकगुंजंद्विगुञ्जव बलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् । कासं-  
श्वासंनिहन्त्यासु कफरोगंचदारुणं ॥

यह कालेस्वरोरस निहामत उत्तम है यदि सब चीजें उत्तम मिल जाय  
प्रथम किसी साक्षर वैद्य जो हस्तक्रिया से चेतन्य हो उसके द्रव्य खर्च



कर बनाया जाय तो श्लेष्माधिक्य श्वास रोगके लिये अमृत की जरूरत नहीं है (कालेस्वर की विधि) दश आंच का बंगेस्वर, कान्तीसार भस्म, ताम्बेस्वर, सी आंच का अभ्रक, चन्द्रोदय, शुद्धआवलासार गन्धक, सुवर्ण-माक्षी का भस्म, शुद्ध मकमूदाखादी सेमरिख इन मयों को २ मास ले करल में खूब गहीन चूर्ण कर रमदेय पश्चात् लिंग, जायफल, छोटी लायरी, दालचीनी, नागकेशर और शुद्ध सोंगिया, शुद्ध धतूरे का बीज शुद्ध जवालगोटे का बीज तैल रहिन, और शुद्ध सोहागा उपरोक्त बीजों के समान ली और मयों की भांजी शुद्ध छोटी पीपर ले चूर्ण कर एक एक दिन गुना के पत्ती के रस में लिपरी के रस में निर्गुण्डी के रस में भांग के रस में और सोंगिरा के रस में भाषना देने से कालेस्वर रस तैय्यार होता है । एक रक्ती अथवा दो रक्ती बलावल के अनुसार महान के माघ रोगी को देनेमें समय घटाने से कफ जनिज कासश्वास रोग शीघ्रही नुष्ट होता है । वायु पित्त जनिज श्वास रोग में यदि अज्ञान यथात् दे दिया जाय तो यही रस रोगी को काल के समान मारता है ।

अज्ञान समय के अनुसार इस रस की मात्रा १ चावल से ६ चावल तक है यहा देना चाहिये इत्यादि और भी अनेक औषधियां हैं जो देय काल, अवस्था और रोग के बलावलके अनुसार दिया जाय तो लाभ हो सक्ता है किन्तु यह बात ध्यान देने लायक है कि दवा को शीघ्रता के साथ परिवर्तन करना अच्छा नहीं होता क्योंकि श्वास रोग प्रथम तो यह आपही दुष्कर है, दूसरे कुछ काल पर्यन्त लगातार औषधि न खाने से, दवा का पूरा असर रोग पर नहीं होना, हां यदि किसी औषधि से कुछ हानि बोध हो तो प्रकृति बिहृद्द जान शीघ्रही त्याग दे तथा कभी-२ आयुर्वेद विज्ञान दशियों से बिमारी के विषय में राय लेता रहे ।

## बालक श्वासरोग ।

इसी के मायही हम आज बालकों के श्वास और खांसी रोग का भी निदान और चिकित्सा लिखते हैं कारण यह है कि सयाने मनुष्यों की भपेला बच्चों का यह रोग बड़ा भयानक और दुष्कर होता है हिन्दुस्तान में औरतों के अज्ञानता वशात् श्वास और खांसी रोग में हजारों लड़के बिना भीत के मरते हैं क्योंकि बच्चों का रोग माता की मदद रहे भी से होता है और लड़कों के बिमार होने पर औरतें अपने मदद रहे भी पर तो ध्यान देती नहीं क्लाह फूक माता भयाना में पड़ जाती हैं और अटकपशू अताइयों की दयाइयां देने लगती हैं इस्से अफतर लड़के अकाल काल प्रास हो जाते हैं । लड़के खांसी श्वास होने से हांकन लगते हैं, यम फिर क्या जहां बच्चों का पेट दखलते देखा जाना कि पशुरी चल रही है शीघ्र ही उनके मारने की तद्वीर में लग जाती हैं, इसलिये उन बच्चों के प्राणरक्षार्थ इस स्थान में हम काश्मियास का प्रकरण लिखते हैं ।

पाठकगण आप निस्सन्देह समझिये । काश्मिय स रोग से आज भारत के लाखों बालक बिनाभीत के मरते हैं और जो बच जाते हैं किनी आपूर्व विज्ञानदर्शी के मरुक्त से अथवा अने भाग्य से, जिस प्रकार अनेक मनुष्य विप खिला देने से भी बच जाते हैं अर्थात् नहीं मरते उसी प्रकार बालकों को समझिये क्योंकि याक्य रहित बालक विचारों का प्राण माता पिता और चिकित्सक के हस्तगत रहता है । यह अपने मुख से अपने तकलीफों को बयान नहीं कर सक, और सिवाय रोने के न प्यास लगने पर पानी और न भूख लगने पर खाना मांग सका है आपही विचारिये ऐसे अवस्था में रोग के विपरीत दवा खिलाने से बालकों को कैभी तकलीफ होती होगी और किस मकट से उनका प्राण निकलता होगा । क्योंकि बच्चे सिवाय रोने के कुछ कह नहीं सकते इस स्थान में बच्चे का रोना, निस्सन्देह काटेजने जानवरों के चिन्नाहट को चरितार्थ करता

हे—जैसे फाँटे जाते समय धकरियाँ में में करती हैं और कसाई उनको चापूली आदत समझ कर उनके चिल्लाने पर ध्यान नहीं देता और खूरी रेतवा जाता है, शायद वे यही कहती हों। एक हग भी यिनागुनाह के क्याँ मारते ही हम ब्रेकमूर हैं, तुमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, परमेश्वर तुमारा भलाकरेगा तुम हमें छोड़दो लेकिन कसाई धकरियों की बालों न समझने के कारण कुछ भी ध्यान नहीं देता और इल्द उसकी खतम कर देता है। उसी तरह बच्चों की हालत समझिये, बच्चों का रोना लोग चापूली आदत समझते हैं और न समझने के कारण अटकलपरचू जी जी में आता है दवा खिलाते और ब्रह्म करते जाते हैं।

हाय २ जब हम कभी ऐसी दशा में बच्चों को देखते है तो छाती फटजाती है और सिधाय ईश्वर से प्रार्थना करने के कि हे दयानिधि, कृपामागर तू बालकों के मुख दुःख जानने और उनके अनुकूल आरोग्य-तार्थ औपधि देने तथा ब्रह्म करने की बुद्धि सबों को क्याँ नहीं दी, क्या तुम्हें यह बात पसंद है कि भारत के अमंख्य जन सन्तान रहित कहलायें और अपनेको वृथाजीवन तथा हतभागी समझें और कुछ नहीं सूझना।

पठकगण हमारा कथन आप बहुत सत्य समझिये बालक रोग नि-कित्सा हग भिन्न लिखनेवाले थे किन्तु अगली साल अमंख्य बालकों को प्रमाण काज ग्राम होने से चित्त न चंगा और इसी स्थल में बालकों के स्वास रोग की चिकित्सा लिखने की लेखनी उठ लड़ी हुई।

इस साल अर्थात् सम्यत् १९५२के आठरी और ५३के आदिमें जितने महङ्के चेचक (माता) और श्यास रोग से मरे हैं शायद ही कभी मह-प्रलय के समय मरे हों ॥

देखिये यह बहुत मोटी बात है कि भीतर गर्मी रहने से शर्द दवा और भीतर शरदी होने से गर्म दवा रोगी को देना चाहिये। गरमी रहने से गमे दवा, शरदी रहने से शर्द दवा देने से रोग बढ जाने एवं

रोगी के मृत्यु का कारण होता है, अगर कोई कहे कि (विषस्यधिपनी-  
पथं) विष का विषयही औषध है, गरमों गरम दवा से हटता है और  
यद्यपि में मूर्खों की बुद्धि भी ऐसी ही होती है । यह बचन विशेष रोग  
में जैसे जल में मेकना और बड़े घाघ में मोन भर देना, यह बचन सर्व  
साधारण रोगों में संचटित नहीं होता ॥

बच्चों के भीतरी गर्मी शरदी जाननेको ऐसे ती अनेक लक्षण हैं किंतु  
सर्षों से सहज लक्षण यह है कि पेशाब करते समय मूत्रको ह्रासपर रोक  
लेने से, अगर पेशाब गरम हो तो गरमी समझे और शीतल हो तो शर्दी  
समझे जहां तक गरम शरद मूत्र पार्थि उसी के अनुसार निकिरसा करे ।  
इस स्थल में एक बात और जता देने की जरूरत समझते हैं यह यह है  
कि शरद मुस्क और शरद अतु में प्रयः लोगों का मूत्र कुछ उष्ण होता  
है, यहां मूत्र कं निकदार पर भी ध्यान देना चाहिये, गरमी रहने से  
पेशाब गरम और बहुत कम होगा और शरदी होनेसे मूत्र बहुत होगा  
इसी प्रकार दिशा का भी जानना चाहिये, गरमीसे दस्त पतला या कम  
और शरदी से गाढ़ा और अधिक होता है ॥

## अन्य लक्षण सुश्रुत से ।

अङ्गप्रत्यङ्गदेशेतु रुजायत्रास्यजायते । सुहुर्महुः स्पृश-  
तितं स्पृश्यमाने च रोदति ॥ निमिलिताक्षोर्मूर्च्छिस्थे शिरो-  
रोगेनधारयेत् । वस्तिस्थे मूत्रसङ्घातो रुजातृप्यतिमूर्च्छति ॥  
विण्मूत्रसङ्घेवर्षं च्छर्द्याध्मानान्त्रकूजनैः । कौष्ठेदोषान्-  
विजानीयात् सर्वत्रस्थांश्चरोदनैः ॥

बालक के जिस स्थान में दर्द होता है उसी स्थान को वह बार-  
बार छूता है यदि ठीक स्थान पर हाथ नहीं पहुंचता तो इशारा उसी

तर्पण का रहता है, अगर कोई उस स्थान को छू ले तो रोने लगता है ।  
 जब बालकों के गिर में दर्द होता है, तब वह अपनी आंखें बन्द कर  
 लेता है । यस्ति (पेट) में घीमारी होनेसे मूत्र बन्द हो जाता है अथवा  
 कांख कर मृतता है और इन रोगोंमें सूत्रा लगती है और बेहोशी अर्थात्  
 लड़के सुस्त हो जाते हैं । यदि बालक का मूत्र बन्द हो जाय मुख मुक्त  
 जाय, पेट फूल आये, पेट में गुड़गुड़ शब्द हो तो जानना कि पेट  
 में कोई रोग हुआ है अथवा मल रुक गया है और सम्पूर्ण देह में रोग  
 होने से लड़के बहुत रोते हैं ॥

## श्वास रोग का लक्षण ।

नाक का बहना, या नाक का सूज जाना और पपड़ी जम जाना,  
 खांसी आना, छाती और गले में कक का शब्द होना, हांकना और पेट  
 का उद्वलना (रसी को गयार लोग पसुरा का चलना बतलाते हैं और  
 गरम र दया देके बच्चों को मार डालते हैं जिसका यथान हम आरोग्य  
 दर्पण के प्रथम खण्ड में कर चुके हैं) मुख सूजना, पानी पर ज्यादा रुजू  
 होना, पयहाना, चौक उठना यदनपर कपड़ा फा न रखना आंख निकाल  
 देना, बेहोश हो जाना इत्यादि लक्षण होते हैं ॥

## बच्चों को भयानक यह क्यों है ।

बालकों के लिये यह दुष्कर रोग क्यों होता है उसका विवरण  
 यह मनुष्यों की अपेक्षा यह रोग बच्चों को भयानक इस वजह से होता है  
 कि श्वास लेनेकी नालियां बच्चों की बहुत ही छोटी होती हैं और खांसी  
 के वजह से बहुत जल्द फेफड़ोंके भीतर प्रदाह पहुंच जाता है । बड़े मनुष्य  
 की श्वास धमनी इतनी बड़ी होती है कि फेफड़ों तक श्वास का दोष  
 बहुत कठिनतासे पहुंचा है । जब बच्चों के फेफड़े तक यह रोग पहुंचता  
 है तब बड़ी तकलीफ होती है क्योंकि यारीक आयु में रक्त भर जाता

है जिस्से बच्चों का श्वास रुकने लगता है जिस्से भीत का हर है । बयान  
 कर चुके हैं कि इस रोग में पहले लड़कों का नाक बहता है जिमको  
 जुकाम कहते हैं अगर उसी समय जुकाम पकाकर साफ कर दिया जाय  
 तो कोई अंदेशे की बात नहीं है, यहाँ तो भूखों में जहाँ बच्चोंकी नाक  
 बहती जाना कि महाबज्र शरदी ने आघेरा धुनाधुन गरम चीज देना शुरू  
 कर देते हैं । बाद खांसी आने लगती है और खांसती समय एक फ़टका  
 सा लगता है और बेहली बढ़ती जाती तथा प्पर भी होने लगता है  
 और धीकनी सी श्वास जल्दी २ चलने लगती है तथा बरघा पेटके द्वारा  
 श्वास लेने लगता है यही कारण है जो श्वास लेने में पेट फूलता और  
 दबता है और मलूम होता है एक बच्चे वा दम निकलने चाहना है ।  
 खांसते समय मुख लाल हो जाता है, मुख बाय देता है और सुस्त हो  
 कर आंस फाड़ देता है, कभी कुछ लासेदार कफ भी मुख पर आ जाता  
 है किन्तु यच्चे घूरना नहीं जायते फिर निगल जाते हैं, खांसते २ कभी  
 कै भी हो जाती है जिस्से बच्चों को कुछ चैन मिलता है । भीतर प्पर  
 बढ़ता है किन्तु आंभी और श्वास के तकलीफ के सयबसे शरीर परीनेसे  
 तर हो जाता है जिसे गवांगदल शरदी का जाना समझते हैं । इस  
 में बालकों की भूख घट जाती है, दूध पीने वाली दूध नहीं पीते तालू  
 सुक्य हो जानसे साता का स्तन मुखसे दबा नहीं मकत और मारे प्वास  
 के यहाँ तक अरुचि हो जाता है कि स्तन मुख में लगा देनेसे बच्चे मूख  
 हटा लेते हैं । जब बीमारी बढ़ जाती है तो श्वास आंभी से विश्राम  
 नहीं मिलता और बच्चा थोड़े ह। देर में निबल पड़ जाता है, चेहरा  
 पीला, होठ सूखा, मुख फटाहुआ और श्वास लेती समय नपुये फूलते है  
 और श्वास मुश्किल से लिया जाता है और जो भीतर से श्वास आता  
 है अपूरत और कठिनता से आता है यस ऐसी अवस्था में अज्ञान लोग  
 यदी हुई शरदी समझ कर और भी गरम दवा खिला देते हैं, जितना  
 ही गरम दवा दी जाती है उतनाही श्वास और बढ़ता और बढ़ेही

आती जाती है तथा बच्चा पसीने से ढूँया जाता है अन्ततोगत्या मुँहों में प्रसित हो बच्चा प्राण को परित्याग करता है ॥

## रोग घटने का लक्षण ।

जब बालक आराम होनेवाला होता है तो न-ही की गति धीमी, शरीर की सफ़ा (भीतरोंपर) न्यून तथा श्वास कष्ट और धींकनी सी श्वास का चलना बन्द होती जाती है. खांसी देर देर में आती है नोंद भरपूर और भूखभी लगने लगती है। यश्चा चैतन्य और खेलने लगता है ॥

## चिकित्सा और यत्न ।

त्रिविधःकथितोवालः क्षीरान्नोभयवर्तनः । स्वा-  
स्थ्यंताभ्यामदुष्टाभ्यां दुष्टाभ्यारोगसम्भवः ॥

दवा करने के पहले चिकित्सक को अवश्य जान लेना चाहिये कि बालक किस अवस्था का है क्योंकि बालक तीन प्रकार के होते हैं । एक तो केवल दूध पीनेवाला, दूसरा दूध और अन्न खानेवाला, तीसरा केवल अन्न खानेवाला होता है तहां बालक को शुद्ध दूध और अन्न मिलने से आरोग्य रहते हैं तथा अशुद्ध याने दूध महित मिलनेसे रोगी होते हैं । क्योंकि जिस कारण से रोग उत्पन्न है जब तक उस कारण के शान्त का उपाय न किया जायगा रोगका छूटना अति दुष्कर है जैसे बालक माता का दूध पीता है तो माताको दवा न देके सिर्फ बालकही को दवा खिलाना सम्भव है कि बालक आराम हो इमलिये सबसे प्रथम यह देखना चाहिये कि यश्चा माताकी बदपरहेजीसे धींकार हुआ है या उसको ठीक खाना नहीं मिला । माता की बदपरहेजी दुग्ध परीक्षा और पूहने से मालूम हो सता है ॥

क्षीरयस्यौषधंघ्रात्र्याः क्षीरान्नादस्यचोभयोः । अ-  
न्नादस्यशिशोरेव प्रदद्यात्कुशलोभिपक् ॥

यह वचन आत्रेयसंहिता की है इनका सिद्धान्त मत है कि जो बालक केवल दूध पीता है तो उस बालक को दवा न खिला के दूध पिलानेवाली माता अथवा दाई को दवा देना चाहिये ॥

(प्रश्न) यदि बालक सिर्फ गौ या बकरीका दूध पीता है तो ऐसी अवस्था में बच्चे को दवा दे या बकरी गाय को दवा पिलावे ॥

(उत्तर) प्रथम तो गौ या बकरी का दूध पीनेवाला बच्चा बीमार नहीं हो सकता क्योंकि गाय बकरियां आदि जीवों के दूध शुद्ध रहते हैं, उसका मुख्य कारण यह है कि उन लोगोंका खाना पीना मनमौजी नहीं है, बंधे अन्दाज या समय के घास पात पर निर्भर है, हां दूध पिलाने का नियम ठीक न रहने से, जैसे—दूध पकानेवाली दाएनी (नँदिया) सूख सांज धो कर सांधई न गई हो, या अप्रमाण दूध पिलाया गया हो तो निस्सन्देह बालक बीमार हो सकता है—यदि उक्त कारण दृष्टिगोचर न हो तो धात्री दुग्ध परीक्षा की भांति गवादिके दूध की परीक्षा कर लेवे जिसका ययान सविस्तार वर्णन बालचिकित्सामें करेंगे, अगर दूध दूषित जान परे तो उनके भी दूध को औषध द्वारा शुद्ध करे । जो बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो तो बालक और बालककी माता दोनों को दवा देवे और जो बालक अन्नदि खाता हो माता का दूध न पीता हो तो केवल बच्चा ही को दवा देवे । आजकल के वैद्यों का ध्यान माता के दूध पर बिलकुल नहीं रहता फोकाफोक बच्चों ही को दवा देना आरंभ कर देते हैं इसे बच्चा शीघ्र ही मृत्युमुख हो जाता है । इस स्थलमें अधिक ध्यान न कर श्वानरोगपर दो बार औषध बच्चों को उपयोगी लिखते हैं जिसे अतंत्र्य बच्चे आरोग्य हुये हैं पश्चात् उन



रोगों का घर्षण करेंगे जो धातु से पूरा सम्बन्ध रखते हैं और जिनकी चिकित्सा अति दुष्कर है ॥

केवल दूध पीनेवाले बच्चेको श्वास कासादि रोग हुआ हो तो बच्चे को बहुत गर्म स्थान में ढांप कर न रखी और न उसके शरीर में शरदी ही प्रवेश करने पाये पूर्वोक्तानुसार जिस प्रकार भूतद्वारा बच्चेकी भीतरी गर्मी शरदी जाम परै उसी प्रकार स्थानादि का इन्तिजान करै और दूध पिछानेवाली दाईं को निम्नलिखित काय पिलावे। गुलबनप्सा ६ मासा, मुछेठी ४ मासा, उन्नाथ ६ दाना, अलसी ४ मासा, इन सबों को अच्छे चरा कर एक पाय पानीमें एक तोला मिश्री डाल कर पकावे जब आध पाय पानी रह जाय, मल खान कर, किचिन्मात्र गुनगुना रहे जैसे लोग चा पीते हैं उसीतरह दाईंको पिलावे, इसी प्रकार दाने समय काढ़ेको पिलाना चाहिये अगर शरदी अधिक बोधहो तो एक मासा छोटीपीपर का चुणै शहद के साथ घाट कर ऊपर से काढ़ा पीवे खानेको मातदिल चीजे देवे, तेल मिर्चा खटाई, अचार दही, रायता आदि गरम और बादी चीजोंका खाना, उपवास करना, आग तापना, झोच करना आदि त्याग करे। अगर बालक माता का दूध भी पीता हो और कुछ ऊपर से अन्न भी खाता हो तो उपरीक्त काढ़े में से आधा चम्मच जैसी बालक की अवस्था हो बच्चे को भी पिला दे और बाकी दाईं पी जाये, यदि बच्चा मा का दूध न पीता हो सिर्फ अन्नही खाता हो तो उसी पूर्वोक्त काढ़े को बालक के अवस्थानुसार मात्रा घटा के तैयार कर के पिलावे आठ दश दिन के दवा सेवनसे रोग नष्ट हो जायगा। ऐसे तो अनेक औषध हैं किन्तु इस औषध से असंख्य बालक आरोग्य हुये हैं, यदि इस प्रयोग से फायदा कम बोध हो तो किसी अच्छे लायक वैद्य हकीम को भी दिखला देय, किन्तु हम साहस पूर्वक कह सकते हैं कि इस्से बढ़कर बच्चोंके श्वास कास रोग पर बहुत कम औषध हैं बाकी रोगों का प्रकरण बाल

चिकित्सा खण्ड में लिखेंगे । इसके पश्चात् अब हम प्रमेह का प्रकरण प्रकाश करते हैं जो आज समस्त भारत को अपने आधीन किये है ॥

## प्रमेहरोग ।

आस्यासुखंस्वप्नसुखंदधीनिग्राम्योदकानूपरसाःप-  
यांसि । नवान्नपानंगुडवैकृतंच प्रमेहहेतुःकफकृच्चसर्वम् ॥

अब हम प्रमेहरोग होने का कारण अर्थात् जिस वजसे मनुष्य को प्रमेहरोग होता है उसे दिखलाते हैं (आस्यासुखं) जिनको बैठा रहना ही परम सुख मानलूम होता है, सिधाय बैठनेके चलना, फिरना अधिक काम काज करने में चित्त न लगना (स्वप्नसुखं) सोना ही जिनको बैकुण्ठ के सुख को भी हतास करनेवाला है अर्थात् कोई काम काज या किसी का हर न हो तो दिन रात सोता ही रहै अथवा शयन में अनेक रूपवती धारयिलाशिनियों के साथ रमण करना, जिनकी अयस्या कम होने के कारण धीर्य उत्तेजित हो रहा है, उस अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति की धारस्यार कन्दर्प की गरमी शान्ति करने की इच्छा यनी रहती है, उस अवस्था में मनोरमणी के अभाव में मनुष्य रात को स्वप्न में स्त्री प्रसंग करता है और धीर्यपात हो जाता है जिसको स्वप्नदोष कहते हैं ॥

(प्रश्न) इस श्लोक के अन्त पद में लिखा है कि (कफकृच्चसर्वम्) समस्त कफकारी पदार्थों के सेवन से प्रमेहरोग होता है और यह परीक्षित है कि घातविचकारी द्रव्य यानी अति उष्ण द्रव्य सेवनसे निस्तपहेह स्वप्न दोष होता है तो परस्पर विरोध हुआ ॥

(उत्तर) कफकारी द्रव्य प्रायः प्रमेह के कारण होते हैं किन्तु इनका अन्तिम परिणाम प्रमेहरोग का हेतु समझना चाहिये, दधि का अति से-

वन, घान के रहनेवाले भेड़ बकरी आदि जीव, जल के संचारी मछली कछुआ आदि जीव और अनूप अर्थात् जल के सन्नीप अथवा जल के किनारे रहनेवाले जीव जैसे हंस, यतक, चकड़े चकवा आदि ऐसे जीवों के मांस रस माने सुर्या, दूध, नया अन्न, और नया जल, (गुड़वैकृत) गुड़ के विकार से जो सिरका आदि बनता है उसके सेवन से अक्सर प्रमेहरोग होता है और जितने कफकारक पदार्थ हैं सो सब प्रमेह होने के कारण हैं ॥

( प्रश्न ) अगर जलचर मछली आदि, जल के किनारे रहनेवाले वन्य आदि जीवों के मांस खाने से प्रमेह रोग होता हो तो बंगाली और केरानी इन दोनों जाति मात्र को प्रमेह रोग होना चाहिये क्योंकि बहुधा इन दोनों जातों का भोजन उन्हीं जीवों पर निर्भर है सो इन इन दोनों में प्रमेह रोग बहुत कम देखते हैं ( उत्तर ) इसका कारण यह है कि बंगाली लोग कड़ूतेल की भूजी हुई मछली खाते हैं, इसलिये विकार नहीं करता क्योंकि तेल मछली के श्लेष्मकारी गुण को नष्ट करदेता है । और अंगरेजों को हंस आदि जल तटस्थ जीवों के मांस रस हानिकर इसलिये नहीं होता, सब यह है कि प्रथम तो अंगरेज लोग इन्हीं के मांस पर निर्भर नहीं हैं, दूसरे भोजन के साथ प्रायः मद्य निमलेट का सेवन रहता है उसे विकार नहीं करता । सब से अमिल बात तो यह है कि जब तक मधुनादि से धीर्यक्षीण नहीं होता चाहे जो खाया पिया करो कुछ भी नहीं होता, धीर्य निर्बल हुआ कि जरा भी कुपय्य से विमारी धरदबाया । प्रमेह रोग होने में सुश्रुत जी की राय ।

दिवास्वप्नाव्यायामालस्यप्रसक्तं शीतस्निग्धमधुरमे-  
दद्रवान्नपानसेविनं पुरुषंजानीयात्प्रमेहीभविष्यति ॥

यह मनुष्य जो प्रातु विरुद्ध दिन में बहुत सोता है, दण्ड कसरत

कुश्ती आदि शारीरिक परिश्रम नहीं करता आलस्य में अत्यन्त प्रसक्त रहता है, अतिशीघ्र, अति चिकना घी आदि अतिमीठा और मेदा के बढ़ाने वाले भोजन और पानादिक करता है जामना चाहिये कि ऐसे मनुष्य को प्रमेह रोग होने वाला है अर्थात् प्रमेह रोग अवश्य होगा ।

( प्रश्न ) उपरोक्त कारणों से स्त्री के भी प्रमेह रोग होता है या नहीं । ( उत्तर ) स्त्रियों को प्रमेह रोग नहीं होता क्योंकि ( रजःप्रसेका-  
नारीणां मासिमाभिश्चिदुद्ध्यति । सर्वेऽशरीरदोषाश्चनप्रमेहन्त्यतःस्त्रियः )  
महीने २ स्त्रियों के रजोदशन द्वारा सम्पूर्ण शारीरिक दोष शुद्ध हो जाते हैं इससे स्त्रियों को प्रमेह रोग नहीं होता. हां प्रमेह के स्थान में स्त्रियों को प्रदर और सेन रोग होता है और जो स्त्रियों में प्रमेह रोग मानते हैं उनका मानना युक्त नहीं है ।

## प्रमेह रोगों की संप्राप्ति ।

मेदश्चमांसंचशरीरजंचक्लेदंकफोवस्तिगतःप्रदूष्य ।  
करोतिमेहान्समुदीर्णमुष्णैस्तानेवपित्तंपरिदूष्यचापि ॥  
इत्यादि ।

वस्ति जो मूत्र के घैली के समीप स्थान है जिसे पेहू कहते हैं उसमें गत अर्थात् प्राप्त जो कफ यह बिगड़ कर मेद, मांस और शरीर के क्लेद को बिगड़ कर कफज प्रमेह को उत्पन्न करता है, समीपकार गरम पदार्थों के सेवन से पित्त दूषित हो कर पूर्वोक्त मेद मांस को बिगड़ कर पित्तज रक्त प्रकार के प्रमेह को उत्पन्न करता है । और यद्यु यह दोष क्षीण होने से घातू ( कहिये यसा मज्जादिक ) को हृष कर ( बस्ती के मुख पर लापकर ) प्रमेह को प्रगट करता कफ से उत्पन्न दस प्रमेह साध्य है कारण

इसका यह है कि कफ दोष और मेदः प्रभृति दूष्य इन पर कटु तिक्तादि क्रिया समान है इस रोग में रोगवाही प्रभाव ऐसा है कि इसमें तुल्य दूष्य को साध्यत्व कहा है और प्रमेह के बिना और रोगों को अतुल्य ( असमान ) दूष्यत्व साध्य का हेतु होता है पित्त के छः प्रमेह विषम चिकित्सा करने से घाय्य होते हैं अर्थात् पित्त हरण करनेवाले जो शीत मधुर भादि द्रव्य जो मेद को बढ़ानेवाले हैं और मेद हरण कर्ता उष्ण कटुकादि द्रव्य जो पित्त कर्ता हैं ऐसे क्रिया विषम हैं । बादीसे प्रगट चार प्रमेह मज्जादि गंभीर घातु के आकर्षण करने से अत्यन्त पीड़ा करते हैं और इनकी विषमही क्रिया है इसीसे ए चार असाध्य हैं ।

इस स्थल में दोष और दूष्य दो शब्द उचित हुये हैं उनको स्पष्ट जानने के अर्थ नीचे श्लोक लिखा है ।

## प्रमेह का दोष दूष्य संग्रह ।

कफःसपित्तंपवनश्चदेापामेदोस्तशुक्रांबुवसालसीकाः ।  
मज्जारसौजःपिशितंचदूष्याप्रमेहिणींविंशतिरेवमेहाः ॥

कफ पित्त और वायु यह तीनों दोष कहे जाते हैं और यही तीनों दोष कुपित हो रस एक घातु को छोड़ मेदादि छ घातों को दूषित करता है इसे मेदादि घातु दूष्य कहे जाते हैं । उक्त दोष मेदा, ( अस्त्र ) रुधिर ( शुक्र ) धीर्य ( अंबु ) जल अर्थात् जिससे शरीर में तररी रहती है; ( वसा ) चरबी जो हड्डी के भीतर रहती है ( लसिका ) मांस का जल, मज्जा रस, ( ओज ) पराक्रम और मांस इन सबों को दूष्य जानना, उक्त दोष और दूष्य इन दोनों से २० प्रकार के प्रमेह उत्पन्न होते हैं ।

तात्पर्य यह है कि अन्य रोगोत्पन्न में पूर्वोक्त घातु ऐसे दूषित

महीं होते जो द्रवीभूत हैं और इस रोग में द्रवीभूत हों मूत्रमार्ग द्वारा मूत्र के साथ मिल कर बहना करते हैं और जो ओज का नाम लिया गया है उसका कारण यह है कि जिस २ मीदादि घातु कल होते जाते हैं उसीके साथही ताकत भी घटती जाती है ।

## प्रमेह रोग का पूर्वरूप ।

दन्तादीनामलाढ्यत्वंप्राग्रूपंपाणिपादयोः । दाहचि-  
क्लणतादेहेतुश्वासश्चोपजायते ॥

दांतों तथा आदि शब्द से जिह्वा तालू जामना इनमें मिलाका अधिक जमना हाथ पैरों में जलन या बहुत गरम रहना, अंग का चिकनापन, प्यास की आधिष्यता, थोड़े से भी काम करनेसे हांकवाना अथवा श्वास का होना, बालों में लटबंधना और नखों का अधिक बढ़ना समझना चाहिये यह प्रमेह के प्राग्रूप हैं अर्थात् ऐसे होने से जानना की प्रमेह रोग होनेवाला है । इसके बाद क्या होता है सो सुनिये ।

## प्रमेह का सामान्य लक्षण ।

सामान्यलक्षणतेषां प्रभृताविलमूत्रता ।

मूत्र कुछ अधिक और कईबार तथा कुछ मात्रा आना आरम्भ हो उस इसके बादही प्रमेह होता है और दीप दूष्य के संयोग वशात् मूत्रों का रंग किरंमाण और उसके साथ आनेवाले पदार्थ दृष्टि गोचर होने लगते हैं ।

## विंशति २० प्रमेह के नाम ।

कफदोष से १० प्रमेह ।

१-उदकप्रमेह

२-इक्षुप्रमेह

३-सांद्रप्रमेह

४-सुराप्रमेह

५-पिष्टप्रमेह

६-शुक्रप्रमेह

७-सिक्ताप्रमेह

८-शीतप्रमेह

९-शनेःप्रमेह

१०-सालाप्रमेह

पित्तदोष से ६ प्रमेह ।

१-सारप्रमेह

२-नीलप्रमेह

३-कालप्रमेह

४-हारिद्रप्रमेह

५-सांजिष्ठप्रमेह

६-रक्तप्रमेह

वायुदोष से ४ प्रमेह होते हैं ।

१-वसाप्रमेह

२-मज्जाप्रमेह

३-क्षौद्रप्रमेह

४-हस्तीप्रमेह

यह सब मिला के २० प्रकार के प्रमेह होते हैं जिनका लक्षण यह है ॥

—:०:—

## १० कफज प्रमेह के लक्षण ।

१-उदक प्रमेहवाले का मूत्र बहुत स्पष्ट मजेद, शीतल (मूत्र करते समय शीतल जल के समान सूत्रवाग में घोष हो) गन्ध रहित पानी के समान ।

२-इक्षुप्रमेह में ऊस के रस के समान रंगत और गीठा होता है उसमें चीटें भी लगती हैं किन्तु रोग अग्राध्य नहीं होता ॥

३-सांद्रप्रमेहवालेका मूत्र रात को पात्र में धर रखने से गाढ़ा हो जाता है और नीचे गेंदला जग भी जाता है ॥

- ४-सुरामेह-यह मूत्र कारुरे में देखने से नीचे गांढापन और ऊपर का भाग पतला रंगत मटमैला या कुछ सुरखी नायल होता है ॥
- ५-पिष्टमेहवाले का मूत्र पिसेहुये चावल के पानी के समान होता है ॥
- ६-शुक्रमेह-इस रोग में मूत्र के साथ मिलकर धीर्य निकलता है ॥
- ७-शिक्राप्रमेह-इस प्रमेह वाले के मूत्र के साथ खालू तथा नदी के रेत के समान वस्तु आता है और किसी को उसके निकलने में दर्द भी होता है उसीको हिकमतवाले रोगमसाना रोगभी कहते हैं ॥
- ८-शीतप्रमेह-इसरोगवाला मधुर तथा अत्यन्त शीतल ऐसा बारम्बार मूतता है । किन्तु सुश्रुत आदि कई महाशयों ने निज रचित संहिता में शीतप्रमेह को नहीं लिखा इस स्थल में उन्होंने लवणमेह लिखा है (विशदं लवणतुस्यं लवणमेही) लवणप्रमेहवाले का मूत्र विशद लवण जल के समान होता है ॥
- ९-शनैः प्रमेह-इस रोग में बारम्बार और थोड़ा २ पेशाव होता है और उसमें किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होती जैसा कि मूत्ररुच्छ में होता है कहने का सधब यह है कि कितने लोग शनैः प्रमेह को मूत्ररुच्छ समझते हैं सो भूल है ॥
- १०-लालाप्रमेह-जिसका मूत्र लार के समान तारयुक्त और चिकना होवे यह लालाप्रमेह है किन्तु इस प्रमेह का भी सुश्रुत में बयान नहीं है बल्कि इस स्थल में फेन प्रमेह कहा है (सोफं सोफंसफेनं फेनमेहीमेहति) बस्ति स्थान में दोक्कासा प्रतीत हो और मूत्र कागदार अर्थात् मूत्र के ऊपर फेन २ सा जमजाता है और प्रायः लालाप्रमेह और फेनमेही दोनों देखने में आते हैं ॥



### ६ पित्तज प्रमेह के लक्षण ।

- १-क्षारप्रमेह-में खारीजल के समान गन्ध, वर्ण, रस और स्पर्श ऐसा मूत्र होता है ॥
- २-नीलप्रमेह-नीलेरंग का 'भयोत्' पपैया पक्षी के पैर के समान रंगका पेशाब होता है ॥
- ३-कालप्रमेह-इस प्रमेह में काली स्याही के समान मूत्र उतरता है किन्तु सुश्रुत में इसकी गणना नहीं है इसके स्थल में उन्होंने ने अक्षप्रमेह को कहा है (अक्षरसगन्ध अक्षमेही) जिसके मूत्र में खही दुर्गन्ध आये उसको अक्षमेही कहते हैं ॥
- ४-हारिद्रप्रमेह-इसमें गहरी हल्दी के रंग के समान और दाहयुक्त मूत्र होता है ॥
- ५-साजिष्ठप्रमेह-इसमें मनुष्य मँजीठ के रंग के समान लाल और आम दुर्गन्धि सहित मूत्रता है ॥
- ६-रक्तप्रमेह-इस रोग में दुर्गन्धि युक्त, गरम, खारा, और रुधिर के समान लाल रंग मूत्र उतरता है ॥

### घातज ४ प्रमेह ।

- १-धसाप्रमेह-इस रोग में मूत्र के साथ चर्बी मिलकर आती है ॥
- २-मज्जाप्रमेह-इसमें मज्जा के समान अथवा मज्जा मिला हुआ भार-म्यार पेशाब होता है ॥
- ३-क्षौद्रप्रमेह-शहद के समान रंगवाला, अथवा सीठा कसेला पेशाब होता है, जिसपर चोटी चोटे और गक्खियां बैठती हैं ॥

४-हस्तिप्रमेह-इस रोग में मूत्र घापी के भावे से-जैसा मूद घहता है उस मूद के समान निरन्तर वेग रहित जिसमें तार निकले और आंखें २ याने ठहर २ कर पेशाब होता है ॥

## कफप्रमेह के उपद्रव ।

अविपाकोऽरुचिश्छर्दी ज्वरःकासःसपीनसः ।

उपद्रवाःप्रजायन्ते मेहानां कफजन्मनाम् ॥

अन्न का यथार्थ न पचना अथवा कभी पचना कभी न पचना, याने भोजन पचने की शिकायत कुछ न कुछ घना रहना, भोजन पर अरुचि, घमन याने कभी २ भीतर पित्त सञ्चित होने से जी सघलाना या घमन होना, ह्रारत खांसी बारम्बार जुकाम होना या जुकाम का घना रहना यह कफजप्रमेह के उपद्रव हैं ॥

## पित्तप्रमेह के उपद्रव ।

वस्तिमेहनयोःशूलं मुष्कावदरणज्वरः ।

दाहस्तृष्णास्त्रिकामूर्च्छा विडम्बेदःपित्तजन्मनाम् ॥

वस्ति (पेहू) और लिंग में दर्द हो और किसी २ को लिंग में दर्द न होके सिर्फ पेहू में दर्द हुआ करता है अथवा ऐसा मालूम हो कि पेहू में कोई चीज भरा है यह भी कभी २ अंशकोशों का फूलना या पक कर फूटना और कभी २ ह्रारत का होना प्यास की आधिक्यता चट्टी हकार जाना शिर में चक्कर या आंख तले अंधियारा होना दस्त पतला ये सब पित्त प्रमेह के उपद्रव हैं ॥

## प्रमेह पिडिका ।

सराविकाकच्छपिका जालनीविनताऽलजी । मसू-  
रिकासर्पपिका पुत्रिणीसविदारिका । विद्रधिश्चेतिपिडिकाः  
प्रमेहोपेक्षयादश । संधिमर्मसुजायन्ते मांसलेपुचधामसु ॥

१-सराविका-(अन्तीकृताघतद्रूपा निम्नमध्यासराविका) जो पिडिका ऊपर के भाग में कुछ ऊंची हो और बीच में धैठी सी हो जिस प्रकार मही का पिआला होता है उसको सराविका कहते हैं ॥

२-कण्डपिका-(सदाहाकूर्मसंस्थाना जयाकण्डपिकायुधैः) जो पिडिका कण्डूआ के पीठ के समान कुछ ऊपर की उभड़ी और दाढ़ युक्त हो याने भीतर जलन हो उसे कण्डपिका कहते हैं ॥

३-जालिनी-(जालिनीतीव्रदाहातु मांसजालसमावृता) जो पिडिका अधिक दाढ़ से युक्त और मांस जाल में व्याप्त हो उसे जालिनी कहते हैं ॥

४-विनता-(अवगाढरुजोत्कृदापृष्ठेषाप्युदरेऽपिवा । महतीपिडिकानीला सायुधैर्विनतास्मृता) जो पिडिका पीठ और पेटमें होती है अधिक पीड़ा करती है ठंडी बड़ी और नीले रंग की होती है उसकी विनता संज्ञा है ॥

५-अलजी-(रक्तासितास्फोटयती दारुणात्यलजीभवेत्) जो फुड़िया लाल और काले रंग की हो और उसके आस पास छोटी २ फुन्सियां भी हों तथा जलन आदि अनेक उपद्रव करके युतही उसको अलजी कहते हैं यह पिडिका बहुत क्लेशदायक होती है और बहुत कठिनता से आराम होती है और नहीं भी आराम होती ॥

६-मसूरिका-(मसूरदलसंस्थाना विद्येयातुमसूरिका) जो पिडिका मसूर के दाल के समान हो जैसी मसूरिका नामक माता होती है उसको मसूरिका कहते हैं ॥

७-सर्पिका-(गौरसर्प संस्थाना तदप्रमाणासर्पिणी) जिन फुन्सियों का आकार सर्पों के समान हो उनको सर्पिका कहते हैं ॥

८-पुत्रिणी-महत्सर्पचिताज्ञेया पिडिकाचापिपुत्रिणी) बीच में एक बड़ी फुन्सी हो और उसके आसपास चारों ओर छोटी २ अनेक फुन्सियाँ हों उसको पुत्रिणी कहते हैं ॥

९-बिदारिका-(बिदारीकंदयद्युक्ता कठिनासबिदारिका) जो फोड़ा बिदारीकंद के समान बड़ा हो और कठीन २ उसीके आकार भी हो किन्तु गोलाकार और छूने से बहुत कड़ा मालूम हो उसे बिदारिका कहते हैं ।

१०-बिद्रुषिका-(नामक फुन्सी बिद्रुषि नामक पिडिका के समान होती है, प्रायः यह फूट के बिपर भी जाती है यह दश प्रकार की पिडिका प्रमेह रोग के बढ़जाने से होती भी उन्हीं को ही जिनका अन्त अथवा यह संसार परित्याग करने का है । यह मत्त भाव-प्रकाश माधोनिदान आदि ग्रन्थों का है किन्तु भोजसंहिता और शुश्रुतसंहिता के मत से जी ९ पिडिका है और चरक के मत से सात ही है ॥

## पिडिका उत्पन्न होनेका मुख्य कारण ।

येयन्मयाःस्मृतामेहास्तेपामेतास्तुतन्मयाः । विना-  
प्रमेहमप्येताजायन्तेदुष्टमेदसः । तावच्चैतानलक्ष्यन्तेयात्र-  
द्वास्तुपरिग्रहः ॥

जो प्रमेह जिन २ दोषों के अधिक कोप होने से होता है उन्हीं दोषों के उखण होने से प्रमेहपिड़िकायें भी होती हैं और बिना प्रमेह रोग के भी दुष्ट मेद होने से पिड़िका होती है इस श्लोक के लिखने का मुख्य-प्रयोजन यह है कि पिड़िका होने ही से प्रमेह रोग नहीं जान लेना क्योंकि बिना प्रमेह के भी दुष्ट मेद से पिड़िका होती है (इसमें चन्वन्तरि जी की राय है कि जितने प्रकार के प्रमेह होते हैं उतने ही प्रकार की तज्जन्य पिड़िका भी होती है) और पिड़िकाओं की जब तक गांठ नहीं बँधती तब तक यह नहीं दिखलाई देती कहने का तात्पर्य यह है कि प्रमेह के अन्तमें प्रमेह पिड़िका होना आरंभ होजाती है किन्तु जब मेद में पूर्ण रूप से दोष उत्पन्न होता है तब पिड़िका की गांठ बँध जाती है ॥

## असाध्य पिड़िका ।

गुदेहृदिशिरस्यंसे पृष्ठे मर्माणि चोत्थिताः ।

सोपद्रवा दुर्बलस्य पिड़िकाः परिवर्जयेत् ।

जो पिड़िका गुदा या नै पाखाने के स्थान में होती है नजानने से लोग इसी पिड़िका को जब वह फूटकर बहजाती है और फिर सर्वद्रा घोड़ा रसा करती है लोग भगंदर समझते हैं किन्तु भगंदर में और इस पिड़िका में घोड़ा मेद है, भगंदर में कई छिद्र हो जाते हैं और यह पिड़िका एकही छिद्रवाली रहती है । हृदि अर्थात् छाती या धुकधुकी के ऊपर अथवा यत्रु के ४ अंगुल नीचे होती है और इस स्थान के बाजे २ फुड़ियोंमें; मुवासा एक प्रकार का गूदा निकलता है । कंधा और शिर तथा पीठ में और मर्मस्थान में पिड़िका होती है जो असाध्य होती है क्योंकि प्रायः उक्त पिड़िकायें प्रमेह से दुर्बल और उपद्रव युक्त पुरुष को होती है और बिना प्रमेह आराम भये पिड़िका आराम नहीं होती

घातजमेह आरम नहीं होता इसके प्रमेह पिड़िकाभी आरामनहीं होती, उसे कहते हैं ।

## घातज प्रमेह असाध्य क्यों है ?

कृत्स्नंशरीरंनिष्पीडप्रमेदोमज्जावसायुतः ।

अधःप्रक्रमतेवायुस्तेनासाध्यस्तुघातजाः ॥

घातजप्रमेह जब शरीर को दुबला कर और संपूर्ण शरीर को पीड़न करता है अर्थात् संपूर्ण शारीरिक धातुओं को सूत्र मार्गसे बाहर निकाल देता है और मेद मज्जा एवं चर्बी से युत होकर वायु जम उन सधोंको नीचे को प्रेरण करता है तब घातज प्रमेह असाध्य होते हैं । यही कारण है असाध्य होने का ॥

## पिड़िका के उपद्रव चरक से ।

तट्कासमांससंकोच मीहहिकामदज्वराः ।

विसर्पमर्मसंरोधाः पिड़िकानामुपद्रवम् ॥

पियास का अधिक लगना, सांभी, मांस का सिकुड़ना जिसे कुरी पहना कहते हैं जैसा अति यद्धि पुरुषों के शरीर में सिकुड़न पड़ जाता है (मूच्छा) गणभ्राना या बदहोशी, हिचकी, नेत्रमें नशा सरीखा मालुन होना सफ़ीफ़ पत्र का घना रहना, विसर्प नामक फुड़िया, मर्म संरोध होना यह सब प्रमेह पिड़िका के उपद्रव हैं ॥

## असाध्य होने का पूर्व ।

सचापिगमनात्स्थानं स्थानादासनमिच्छति ।

आसनाद्ब्रणुतेशय्यां शयनात्स्वप्नमिच्छति ॥

जब मनुष्य को प्रमेह रोग असाध्य होनेवाला होता है तो उसको क्रमशः ऐसी सुस्ती आने लगती है कि चलने फिरने की ताकत कम हो जाती है क्योंकि चलने से खड़ा रहना अच्छा लगता है, फिर खड़ा रहने से बैठना अच्छा लगता है और बैठने से लेट रहना और लेट रहने से सोना अच्छा लगता है यह लक्षण क्रमशः होने से चाहे उपद्रव रहित भी रोगी हो अन्त में गव्यागत हो प्राण परित्याग करता है ॥

मनुष्य को उचित है, प्रमेह के निदान शरीरमें कुछ भी दृष्टि होने लगे उसके हटाने की चेष्टा प्रथमही से करना आरंभ कर दे क्योंकि बढ़ जाने पर प्रमेह रोग नहीं आराम होता है, और मूत्र का कुछ अधिक आना दबैला या गाढ़ा पेशाब का होना तथा प्रतिदिन सुस्तीका घेरना आदि देखने ही से चिकित्सा शुरू कर दे और सर्वदा अपने खाने पीने प्रसंगादि का नियम ऐसे ढंग से रखे ताकि प्रमेह रोग शरीर में न होने पावे ॥

## प्रमेह भेद ।

दौप्रमेहौसहजोऽपथ्यनिमित्तश्चभवतः । तत्रसहजो  
मातृपितृबीजदोषकृतः । अहिताहारजोऽपथ्यनिमित्तः ।  
तयोःपूर्वेणोपद्रुतः कृशोरुक्षोऽल्पासीपिपासासुभृशं परि-  
सरणशीलश्चभवति । उत्तरेणस्थूलोवहवाशीस्त्रिगधशय्या-

सनस्वप्नशीलः प्रायेणेति । तत्र, कृशमन्त्रपानप्रति संस्कृ-  
ताभिः क्रियाभिश्चिकित्सयेत् । स्थूलमपतर्पणयुक्ताभिः ॥

सुश्रुतसंहिता से अब हम प्रमेह के दो भेद दिखलाते हैं । एक सहज दूसरा अपथ्य निमित्त । इनमें से जो माता पिता के दूषित वीर्य और रज से उत्पन्न हुआ बालक जिसको समय पाकर प्रमेह रोग होता है जिसका वयान हम ऊपर लिख आये हैं उसको सहज प्रमेह कहते हैं, और जिसे मिथ्याहार और मिथ्या बिहार अर्थात् अहिताचार से जो प्रमेह उत्पन्न होता है, उसको अपथ्य निमित्त प्रमेह रोग कहते हैं, जिस मनुष्य के सहज प्रमेह होता है वह मनुष्य दुबला रुक्त थोड़ा भोजन करनेवाला होता है और पियाम उसे अधिक लगती है (परिसरणशील) अर्थात् बहुत चलने फिरने वाला होता है । सहज प्रमेह वालेको प्रायः यक्ष्मा रोग हो जाता है विशेषकर स्त्रियों को दश बारह वर्ष के आयु होने से ही रोग आरंभ हो जाता है और क्रमशः बढ़ कर अन्ततोगत्वा असाध्य हो जाता है । यथार्थ परीक्षित है कि माता पिताके वीर्यदाय से उत्पन्न बालक के उष्णता पाकर प्रायः पेशाब चूना सरीखा जम जाया करता है और चिकित्सा न होने से वही अवस्था पाकर घोर रूप से निदान उपस्थित करता है ॥

सहज प्रमेहवाले की चिकित्सा उत्तम अन्न पानादि से संस्कार की हुई क्रियाओं के द्वारा करे क्योंकि इस प्रमेहवाला स्वयं कृश रहता है यदि और भी कृश आदि क्रिया की गई तो रोगी शय्यागत हो जायगा और अपथ्य जनित रोग में कृशकारक उपाय करना चाहिये क्योंकि उक्त रोगी स्थूलकाय होता है यद्यपि उसमें शारीरिक पुष्टता नहीं है सिर्फ देखने में मोटा ताजा मालूम होता है किन्तु बिना कृशकारक क्रिया किये रोग समूल नष्ट होना अति दुष्कर है ॥



## प्रमेह में वर्जित वस्तु ।

सर्वएवचपरिहरेयुःसौवीरकतुपोदकसुक्तमैरेयसुरास-  
वतोय पयस्तैलघृतेक्षुबिकारदधि पिष्टान्नासूपानकानि-  
ग्राम्यानूपौदकमांसानिचेति ॥

प्रमेह रोग प्राप्त होने पर रोगी को चाहिये की निम्नलिखित पदार्थों को परित्याग करे जैसे (कांजी) सिरका, रायता और झाल पदार्थ आदि जैसे मूली आदि का आचार जो गरम पानी तेल में तीन चार दिन धूप में रखने से खड़ा हो जाता है (तुपोदक) भूखी आदि का जल जो धूप के योग से खड़ा भया हो (शुक्त) ऊख आदि का सिरका (मैरेय) यह भी मद्य विशेष है अर्थात् उक्त नाम का शराब है (सुरा) सामूली शराब (आसव) जो जमीन में गाड़ के बगता है कुमारी आसव आदि (तोय) अधिक जल का पीना (पय) दूध सहज रोग में अधिक निषेध नहीं है (तेल) तेल खाने में बिलकुल परित्याग गर्दन में लाभ दायक है (घृत) अधिक पी न खावे किन्तु दाल तरकारी वचार सक्ता है तथा सहज प्रमेहवाला कुछ अधिक घी भी खा सकता है (क्षुबिकार) ऊख का रस राय वगैरह, दही और पीसा अन्न सेतुआ आदि (असूपानकानि) अमली आम आदि खट्टे पदार्थों का सर्वत तपान्नास्य, औदक और आनूप पशुओं का मांस जिसका दधान ऊपर कर्षुके हैं, रोगी यदि आरोग्य की इच्छा रखता हो तो अवश्य त्याग करे ।

## प्रमेह में सेवन वस्तु ।

ततःशालिपष्टिकयवगोधूमकोद्रवीद्वालकाननवान्भु-  
ञ्जीत । चणकाढकोकुलत्थमुग्द विकल्पेनतिक्तकपायाभ्यां

शाकगणाभ्यांनिकुभ्येगुदीसर्पपातसीतैलसिद्धाभ्यां बृहृमू-  
त्रैर्वाजाङ्गलैमांसैरपद्धृतमेदोभिरनम्लैरघृतैश्चेति ॥

प्रमेह रोगवालों के सेवन योग्य यह वस्तु हैं, पुराना आसमती  
आदि चावल और शाठी के चावल का या कोदण के चावल का भात,  
जव और गेहूं की रोटी किन्तु सहजवाले को जीकी रोटी लाभदायक  
कम होगी और उद्दालक आदि पुराने अन्नों को सेवन करें तथा चना अ-  
रहर कुरची और मूंग की दाल किन्तु सबों से उत्तम मूंग और अरहर की  
दाल दोनों को एक में मिला कर खाना अच्छा है, तरकारी में  
करैला आदि चरपरे कमायले साग जो गोंदी, सरसो, अलसी के तेल में  
अच्छे प्रकार भूँजिये हों ( किन्तु तेल की भूँजी तरकारी आदि सहज  
प्रमेहवाले के लिये कदापि लाभदायक न होगा ) अथवा जांगल जीवों  
के मांस के घूस के साथ भी रोटी का खाना उत्तम है किन्तु बलकारी  
मेद सज्जाबद्धक द्रव्य अवश्य प्रमेह रोगवाले को उत्तम नहीं है यदि  
खाने की इच्छा हो तो मांस के भीतर से मेदा निकाल कर और जिस्में  
ची खटाई न पड़े चनाकर खावे ।

### प्रमेह चिकित्सा ।

अथ हम प्रमेह रोग के नाशनाथ अनेक औषध लिखते हैं, जिनके  
द्वारा अनेक रोगियों को आराम किया और निदान पूर्वक चिकित्सा  
करने से आराम होने की पूरी सम्भावना है । आयुर्वेद में जिस तरह  
बीसों प्रमेह को कहकर पथात् सहज और अपथ्यजनित दो प्रकार का  
प्रमेह दिखलाया है किन्तु उन दोनों के लिये औषध भिन्न नहीं लिखा,  
यह विचार वैद्यों के बुद्धिपर छोड़ दिया है, जो लायक हैं वे रोगी को  
प्रकृति अवस्था समय और औषधियों का गुण देख कर उत्तम औषध  
खिलाय रोगी को आराम करदेते हैं, अज्ञान वैद्य पुस्तक में खिली हुई

तारीकी दवाइयों के गुणों को पढ़ नसी पर मोहित हो जाते हैं और ऊट उन्हीं दवाइयों को घनाय रोगी को खिलाते हैं जिसमें रोग न घटकर और भी बढ़जाता है । इसलिये हम उन दवाइयों को लिखते हैं, जो दोनों प्रकृति के रोगियों को लाभ पहुंचा सकता है ।

जय देखे कि रोग नवीन है अथवा कुछ र निदान मिलते हैं तो रोगी को तेज दवां न देके साधारण दवा से आराम करे और पथ्य ठीक रखे क्योंकि पथ्य ठीक न रखने से रोग नहीं छूटता विशेषकर प्रमेह रोग, इसी से सुश्रुत जी ने बड़े आदमियों के खाने पीने में घुरी बस्तु मिला देने को लिखा है जिसे घृणा उत्पन्न होने से वह अपथ्य वस्तुओं को त्याग दे. सुश्रुतसंहिता के चिकित्सा स्थान ग्यारहवें अध्याय में लिखा भी है ।

कपायाणिवापातुं महाधनमहिताहार मौपधद्वे-  
पिणामीश्वरं वा पाठाभयाचित्रक प्रगाढमनत्यमाक्षिक  
मन्यतममासवं ।

प्रमेह रोगवाले को कपाय का पान कराना बहुत हित है किन्तु प्रायः धनवान् रोगी अपथ्य करडालते हैं और कड़वी औषधों को भी पीना नहीं चाहते इसलिये राजाओं को पाड़ी, हड़ और चीता के काण में बहुतसा सहत डालकर, पिलावे अथवा मदकारक आसव बनाकर पिलावे ।

मधुकपित्थमरिचानु सिद्धानिचारुमैपानान्युपहरेत् ।  
उष्ट्राश्वेतरस्वरपुरीषचूर्णानि चारुमैदद्याशनेषु । हिंसुसै-  
न्धवयुक्तैर्यूपैः सारुपैश्चरागैर्भोजयेत् ॥ अविरुद्धानिचा-

रोग में वायु गरम हो के मेदा के साथ मिल जाता है जिसे शरीर तैयार होती जाती है और चल पड़ता जाता है उसके दमनार्थ कसरत अप्रवश्य करना चाहिये क्योंकि शारीरिक परिश्रम से शरीर दुबली होती है जो प्रमेह रोग में फायदा करता है । किन्तु प्रायः यह नियम अप्रवश्य जनिन प्रमेह रोग का है ॥

यहूत लोगों को विश्वास है कि प्रमेह रोगमें कसरत करना निषेध है मेरा उनकी भूल है, क्योंकि कसरत न करने से प्रमेह रोग होता है, सिर्फ निम्नलिखित रोगों में कसरत न करना चाहिये ॥

रक्तपित्तकृतःशोषो श्वासकासक्षतातुरः ॥

भुक्तवान्स्त्रीपुत्रक्षीणोभ्रमार्तश्चविवर्जयेत् ॥

रक्तपित्ती, दुर्बल और जो किसी रोग से सूखा जाता हो दमा, खांसी, और घाव से पीड़ित या भोजन के उपरान्त अति स्त्री प्रसंग करनेवाला, क्षीण पुरुष और जो रास्ता चलनेसे थका हो इन मनुष्योंको कसरत नहीं करना चाहिये ॥

### प्रमेह पर औषध ।

उदकप्रमेह—उदकप्रमेह वाले को चाहिये कम से कम एक मास पर्यन्त नीम के अतरखाल का काथ पिये । जैसे दो तोला नीम के छाल को एक पात्र पानी में मृत्तिका पात्र में पकावै जब आधपाव या एक छंटाक जल रह जाय मल खानकर एक तोला शहद डाल कर पिये । यदि सुष्की अधिक रहती हो तो, काथ न यना के आधपाव जल में नीम के छाल को हाल के भिजाकर ओग में रख देय और सवेरे मल खानकर शहद डालकर पिये इसी प्रकार सवेरे भिगावै साम को पिये ॥

अथवा धव का फूल, अर्जुन वृक्ष और शालवृक्ष की छाल और सफेदचन्दन सबों को दो तोला ले काथ बनाय शहद डाल के या रात में भिगा हिम यना कर शहद डाल के पिये, यह पूर्ण सात्वा है, रोगी बलहीन हो तो सात्वा कम कर लेना चाहिये ॥

२-इलुमेही को अरजी का काढ़ा या हिम पिलावे ॥

३-सान्द्रप्रमेह वाले को सातला के जड़ की छाल का काढ़ा या हिम एक भास पर्यन्त पिलाना चाहिये ॥

४-सुराप्रमेह वाले को गोंध वृक्ष के अतरछाल का काढ़ा या हिम पिलावे ॥

५-पिष्टप्रमेह रोगीको दोनों हरदी अर्थात् हरदी और दारु हरदी का काढ़ा या हिम पिलावे जयलक्ष पेशाब से पिसान का आना बन्द न हो अथवा थोड़े दिनों तक पीने के पश्चात् भागे कहीं हुई औषधियां सेवन करावे ॥

६-शुकमेही को सफेद दूध की जड़, शीवाल और कंजा की गरी का काढ़ा अथवा हिम पीना चाहिये ॥

७-शिक्षाप्रमेह में चीते की जड़ के छाल का काढ़ा या हिम बहुत फायदा करता है । शिक्षाप्रमेह का निदान ठीक मिला लेना चाहिये क्योंकि शिक्षाप्रमेह के निदान से अर्क रोग जो सुजाकके वजे से होता है जिसके हिक्मत में रोग मसाना कहते हैं और इकीम लोग शिक्षाप्रमेह को भी रोगमसाना कहते हैं । इन दोनों में भेद है शिक्षाप्रमेह मूत्र के साथ सफेद रंग का बालू आता है और अर्क में लाल रंग का रेत आता है जैसा प्रायः नदी या नारों में पाया जाता है ॥

८-शीतप्रमेह-सुश्रुत में शीतप्रमेह की जगह लवणमेह लिखा है यह भी ठीक है क्योंकि निदान उभका भी मिलता है । अन्य ऋषियों ने जो शीतप्रमेह लिखा है उसका निदान प्रत्यक्ष में यह है । शीतप्रमेहवाला मूत्र करते समय कांप उठता है याने रोंगटे खड़े हो जाते हैं और कुछ जाड़ा सा बोध होना है । इस प्रमेहवालों को कुछ दिनों तक पाढ़ी और अजर का काढ़ा अथवा हिम अवश्य पिलाना चाहिये ॥

८-शुनैः प्रमेह वाले को खैर वृक्ष की खाल का काय या हिम पिलाना उत्तम है ॥

१०-लाला प्रमेह अथवा फेण प्रमेह दोनों एक ही का नाम है इस प्रमेह वाले को सिर्फ त्रिफला का काढ़ा या हिम पिलाना उत्तम है । त्रिफला योग । इह का बकल १ भाग, बड़ेरा का बकल २ भाग, आंवला बीज रहित ४ भाग इसका नाम त्रिफला है ॥

उपरोक्त दशों प्रमेहों में काय या हिम में मिश्री की जगह गहद डालना चाहिये जिसकी मात्रा ३ मासा से लेकर एक तोला पर्यन्त है । कुछ दिनों तक यदि उपरोक्त कायों के पीते हुये बीमारी आराम होते न देख पड़े तो आगे प्रमेह रोग पर जो बड़ी २ दवाइयां लिखी है उसका सेवन करे ॥

### काय और हिम का निर्णय ।

जाड़ा और वर्षा काल में काय और ग्रीष्म ऋतु अर्थात् गरम दिनों में हिम बना के पीना चाहिये । दूसरे तरी और खुष्की पर निर्भर है, चाहे जो काल हो तर मिजाज वाले को काय और खुष्क मिजाज वाले को हिम पिलाना चाहिये ॥

### पित्तज छः प्रमेह ।

१-क्षार प्रमेह वाले को भी त्रिफला का हिम पिलाना उत्तम है ।

२-नील प्रमेह वाले को पीपल वृक्ष की खाल का काय या हिम अथवा पीपल वृक्ष के पञ्चांग का चूर्ण गो दुग्ध के साथ पिलाने से लाभ होता है । अथवा खश, आंवला, नागरमेथा और इह, इन्हों का काय या हिम पीने से फायदा होता है ॥

३-कालप्रमेह वाले को परवल का हार पात, नीम का अतरछाल, आंवला और गुर्घ (गिलोय) इन चारों का क्वाथ या हिम मिश्री हाल के या शहद हाल कर एक मास पर्यन्त बराबर दोनों समय पथ्य सहित पीने से अधिक लाभ देखा गया है ॥

४-हारिद्र प्रमेह रोग में मोथा, इड़, पद्माल और इन्द्रजी इनका काढ़ा या हिम अथवा पटानीलोथ, सुगन्धबाला, पीत चन्दन या स्वेत चन्दन और घव का फूल इन चारों का काढ़ा या हिम पीना श्रेष्ठ है । यदि हारिद्र प्रमेहवाले को दस्त साफ न आते हों तो अमिलतास के गूदे का काढ़ा देके रचन करादे पश्चात् पुनः उपरोक्त काढ़े को पीने को देय ।

५-माजिष्ट प्रमेह पर नीम का छाल, अर्जुन वृक्ष का छाल और कमलगट्टा इन तीनों का क्वाथ या हिम पिलाना निस्सन्देह फायदा करता है । अथवा शीतलचिनी जिस को कयाचिनी कहते हैं, उसका चूर्ण कर दो दो भासे की पुड़िया बनालेय, दो दो घंटे पर एक २ पुड़िया मुख में रखकर थोड़े जल से चत्तार जाय, जल का कोई नियम नहीं है एक छँटाक से लेकर एक पाव तक जल मनुष्य पी सकता है । प्रमेह रोग में अधिक जल पीने का निषेध है यहि सन्देह हो तो समकालेय कि इस दवा के साथ में जल पीना हानिकर नहीं है दूसरे इस औषध के साथ मिलाकर वह मूत्र के द्वारा निकल जाता है । दूसरे अधिक जल का पीना वायु और श्लेष्मा जनित प्रमेह रोग में बहुत निषेध है ।

६-जब तक पेशाब सूत्र निर्मल जल के समान न हो जाय बराबर दवा खरता जायै । सूत्र स्वच्छ निर्मल होने के बाद आंगे ध्यान की हुई कोई धातु मर्दुक औषध का सेवन करै जब तक प्रमेह का सन्देह विलकुल जाता न रहै । यह औषध जो सिर्फ शीतलचिनी है वही प्रकार के प्रमेह रोगों को मूत्रद्वारा बीर्य की गरमी बाहर निकाल बीर्य शीतल और प्रसक्त करता है । जैसे उदरस्थ रोगों के शांत्यर्थ वैद्यलोग प्रकृति के अनु-

सार रेचनद्वारा मलसाफ़ करके तब औषध का प्रयोग करते हैं उसी प्रकार प्रमेह रोगों में उपरोक्त द्रव्यद्वारा मूत्रमार्ग से धीरे धीरे का अधिकार साफ़ कर के कोई उत्तम औषध सेवन करावें तो बहुत शीघ्र रोग जाता रहै ।

७-रक्तप्रमेह में शीतलचिनी से मूत्र साफ़ करने की निहायत जरूरत है क्योंकि इस प्रमेह में आन्तरिक सप्लता मनुष्य के शरीर में बहुत फैल जाती है और उसका दिल इस कदर कमजोर हो जाता है कि शिथिलता की स्थिरता जाती रहती है । प्रथम तो रोगी का विश्वास दवाइयों से कम हो जाता है दूसरे औषध देर में गुण दिखलाती है, इससे मूत्र साफ़ कर देने से रोगी का मिजाज शीतल हो जाता है और आराम होने का विश्वास आजाता है पश्चात् इस काय को देय ।

८-मियंगु का फूल, लाल कमल का फूल, नील कमल का फूल और पलास का फूल इन चारों को मिश्री मिला के चाँहे काढ़ा पिलावे या दिन पिलावे अवश्य लाभ होगा ।

## अन्य प्रयोग ।

अमृतायारसःक्षौद्र युक्तसर्वप्रमेहजित् । हारिद्रचू-  
र्णयुक्तोवा रसोधात्र्याःसमाक्षिकः ॥

ताजी गुर्च को शिल पर कुचल दो तोला उसका स्वरस ले उसमें छः मासा शहद हाल कर पीजावे इसी प्रकार दोनां समय गुर्च का स्वरस और शहद पीने से पित्त तथा वात जनित प्रमेह रोग आराम होता है इसी प्रकार ताजा भाँवले का स्वरस ४ तोला, हलदी का चूर्ण एक मासा, और शहद छः मासा मिला कर दोनां समय पीने से सब प्रमेहों का नाश होता है खासकर पित्तजनित प्रमेह रोगतो अवश्यही नाश होता है । किन्तु इस दवा को तीन सहीने तक बराबर सेवन करना चाहिये ।



घंटे पश्चात् चार आंगुला घी और गहद के साथ खावे और दूध आदि-स्निग्ध पदार्थों का सेवन करे किन्तु हलका भोजन करे ता कि अजीर्ण न हो क्योंकि रसायन में कोष्ठघट्ट और दस्त का पतला होना दोनों हानिकर है । इसतरह एक वर्ष पर्यन्त त्रिफला रसायन का सेवन करता रहे तो अजर (बुढ़ापा न हो के ) और प्रमेहादि व्याधि रहित होकर भी वर्ष पर्यन्त मनुष्य जीता रहे ॥

**रसायनविधिभ्रंसाज्जायेरन्व्याधियोयदि । यथा-  
स्वमौपधन्तेपां कार्यभुवत्वारसायनम् ॥**

रसायन विधि में गड़गड़ हो जाने से 'यदि' रोग उत्पन्न हो जाय अथवा प्राचीन रोग उभड़ आवे तो रसायन बन्द करके अन्य औषधियों से रोग को शीघ्र शान्ति कर पुनः रसायन सेवन करना आरंभ करे ॥

रसायन सेवन करनेवाला झूठ बोलना, क्रोध करना, शराय पीना, क्री प्रसंग करना, जीव मारना, बहुत मेहनत करना, चिन्ता, शोक, जागरण, उपवास, निष्ठुरता आदि अपथ्यों को त्यागकर सत्यवादी, प्रियवादी, दयापरायण, उचित समय पर सोने, जागनेवाला, समय पर शीघ्र दन्तधावन, स्नान, दान, संध्या, भोजन करनेवाला, जितेन्द्रिय और विद्वानों का सेवक होना चाहिये क्योंकि ।

**यथास्थलमनिर्वाहप्रदोपान्शारीरमानसान् । रसा-  
यनगुणैर्जन्तुर्युज्यतेनकदाचन ॥**

इसका अर्थ यह है कि जो मनुष्य शारीरिक और मानसिक दोनों के बिना दूर किये रसायन सेवन करता है उसको रसायन का विनाकुल फल नहीं मिलता है तात्पर्य यह है कि आरोग्यता प्राप्त करने में यथाथे पथ्य सेवन करने की निहायत जरूरत है ॥

## कफपित्त प्रमेह परं लोध्रासव ।

लोध्रंशठीपुष्करमूलमेला मूर्वाविडंगत्रिफलायवा-  
नी । चट्यंप्रियंगुंक्रमुकंविशालां किराततिक्तंकटुरोहिणीं  
च ॥ भाङ्गींनतंचित्रकपिप्यलीनां मूलंसकुष्ठातिविषां च  
पाटाम् । कलिङ्गकंकेसरमिन्द्रसाह्या नन्तासिपत्रंमरिच-  
प्लवंच ॥ द्रोणोऽभसःकर्षसमांश्रुपक्त्वा पूतेचतुर्भागजलाव-  
शेषे । रसार्धभागमधुनःप्रदाय पक्षनिधेयोघृतभाजनस्थः ॥  
लोध्रासवोऽयंकफपित्तमेहान्क्षिप्रंनिहन्याद्विपलप्रयोगात् ।  
पांडुमयाशंस्यरुचिंग्रहण्या दीपंवलासंविधिचकुष्ठम् ॥

(लोध्र) पठानी लोध (शठी) कचूर (पुष्करमूल) पोहकरमूल (एला)  
छोटीलायचीके दाने (मूर्वा) मुरा (विडंग) धायविरंग, त्रिफला, (यवानी)  
अजयाइन (चट्यं) धाव, प्रियंगुफूल (क्रमुक) दक्षिणी चिकनीसुपारी (वि-  
शाला) ईंद्रारुण के जड़ की छाल (किराततिक्त) कहुभाचिरायता (कटुरो-  
हिणी) कुटकी (भाङ्गी) भारगी (नत) तगर (चित्रक) चीत्की जड़का छाल  
(पिप्यलीमूल) विपरासूल (कुष्ठ) कूट (अतिविषा) अतीस और पाही  
(कलिङ्गक) इन्द्रजय (केशर) नागकेशर अर्जुन वृक्ष की छाल, जयासा,  
ईखं कालोमिर्च और मोया इन अष्टादश औषधों को एक २ तोला से  
अधककरा कर १२ सेर जल में रात को भिजा देय सृत्तिकापात्र अथवा  
कलईदार वर्तन हो, सबेरे धोमी आंच से पकाये जय चौपाई जल पाने  
३ सेर पानी रह जाय शीतल कर मल के ज्ञान लेय और उसमें १॥ सेर  
शहद मिला किसी चिकने पात्र अथवा युषाममें भर मुल बन्द कर दे ता  
कि भीतर हवा न जाने पावे १५ दिन घर राखे बाद १५ दिन के फिर  
उसे ज्ञान योगतलमें भर देय इस आसव का मात्रा खः मासासे दो तोला

तक है वल के अनुसार मात्रा बना लेय इस आसव को दोनों समय परहेज के साथ पीने से कफपित्त जनित प्रमेह रोग आराम होता है । यह आंसव पांडु और खादी यथासीर को भी फायदा करता है जिस प्रमेहवाले को इस आसव के पीने से दस्त जारी हो उसके दवा में इन्द्रायन न छोड़े ॥

## देवदार्वारिष्ट वात कफ प्रमेह पर ।

तुलाद्वैदेवदारुस्याद्वासाचपलविंशतिः । मंजिष्टेन्दु  
यवादन्ती तगरंरजनीद्वयम् ॥ रास्त्राकृमिघ्नमुस्तंच शिरी-  
पंखदिरार्जुनी । भागान्दिशपलान् दद्याद्यवान्यावत्सक-  
स्यच ॥ चन्दनस्यगुडूच्याश्च रोहिन्याश्चित्रकस्यच ।  
भागानष्टपलानेतानष्टद्रोणोऽभसःपचेत् ॥ द्राणेष्टोपेकपा-  
येच पूतेशीतेप्रदापयेत् । घातक्याःपोडुशपलं माक्षिकस्य  
तुलात्रयम् ॥ व्यीपस्यद्विपलंदद्यात् त्रिजातस्यचतुःपलम् ।  
चतुपलंप्रियंगुश्च द्विपलंनागकेशरम् ॥ सर्वाण्येतानिसंचूर्ण्य  
घृतभांडेनिधापयेत् । मासादूर्ध्वपिवेद्देनं प्रमेहंहंतिदुर्ज-  
यम् ॥ वातरोगान्गृहण्यशौं मूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् । देवदा-  
र्वादिकोरिष्टोदद्दुकुण्ठविनाशनः ॥

देवदारु तेलही गांठ १०० तोला, (वासा) रूसा की पत्ती २० तोला  
मंजीठ, इन्द्रजय, जयालगोटेकीअड़, तगर, हरदी, दारुहरदी, रासन,  
वायभिरंग, मोपा, शिरस की छाल, सैर वल की छाल, अर्जुन वृक्ष की  
छाल यह सब द्रव्य २ तोला, अजमोदा, फुरैया की छाल, मफेदचन्दन,  
गुरिच, कुटकी, चीते के जड़ का छाल, यह छः औषध पाठ २ तोला

लेय सब दवाइयों को अघकथरा कर सयामन जल में रात को भिजा देय सबेरे आंच पर चढ़ाय धीमी आंच से पकावे जब चौथाई जल अर्थात् १२ सेर जल बाकी रह जाय घूरे पर से उतार शीतल कर. छान लेय और उसे किसी घृत पात्र अथवा घुयान में भर तब उसमें घब का फूल १६ तोला, शहद ३ सेर, शोंठ छोटीपीपर और कालीमिर्च यह तीनों दो तोला, दालचीनी, छोटीलायची और तेजपात यह तीन चीज ४ तोला लेय, प्रियंगुका फूल, और नागकेशर दोदो तोला लेय इन सब दवाइयों को अघकथरा कर उसी काढ़ेमें हाल देय किसी लकड़ी से सबों को मिला के धरतन का मुख बन्द कर दे ताकि हवा न जाने पावे एक सहीने तक खुले मैदान में रख देय जो कि दिनमें धूप और रातको ओस लगे एक सहीने के बाद पुनः उसे छान घोटल में भरकर रख देय । इस आसव का मात्रा १ तोला से चार तोला तक है, रोगी की अवस्था और पलायल देख के मात्रा बना लेय । इस आसव को दिन में दो या तीन बार पीने से उपद्रव सहित श्लेष्मा और घात जनित प्रमेह रोग नाश होता है इसके अलावा ग्रहणी, धायाक्षीर और गुजाक भी इसके सेवन से बाराज होता है किन्तु विशेषकर यह आसव प्रमेहरोग पर है ॥

### प्रमेह रोग पर बसन्तकुसुमाकर रस ।

द्वौभागौहेमभूतेश्च गगनंचापित्तसमम् । लोहभस्म  
त्रयोभागाश्चत्वारोरसभस्मतः ॥ बह्वभस्मत्रिभागंस्यात्स-  
र्वमेकत्रमर्दयेत् । प्रवालमौक्तिकंचैव रससात्म्येनदाययेत् ॥  
भायनागव्यदुग्धेन रसैर्घृष्ट्वाटरूपकैः । हरिद्रावारिणाचैव-  
मौचकंदरसेनच ॥ शतपत्ररसेनापि मालत्यास्वरसेनच ।  
पश्चान्मृगमदश्चन्द्रस्तुलसीरसभावितः ॥ कुसुमाकरइत्ये-  
पत्रसन्तपदपूर्वकः । गुंजाद्वयंददीतास्य मधुनासर्वमेहनृत् ॥  
सिताचन्दनसंयुक्तश्चान्नपित्तादिरोगजित् ।

त्रिवृद्धंतीपत्रकंचत्वगेलावंशरीचना । प्रत्येकंकर्पमात्रंच  
 कुर्यादेतानियुद्धिमान् ॥ द्विकर्पहतलोहंस्याञ्जुतुःकर्पासिता  
 भवेत् । शिलाजत्वष्टकर्पस्यादष्टौकर्पास्तुगुग्गुलाः ॥ एभि-  
 रेकत्रसंक्षुरयैः कर्तव्यागुटिकाशुभा । चन्द्रप्रभेतिविख्या-  
 तासर्वरोगप्रणाशिनी । प्रमेहान्विंशतिकृच्छ्रं मूत्राघातं  
 तथाश्मरीम् ॥ चन्द्रप्रभायांकर्पस्तु चतुःशाणोविधीयते ॥

( चन्द्रप्रभा ) कषूर, दुधियाघच, ( मुस्तं ) नागरमोषा ( भूमिम्ब )  
 मिष्ठबिरायता ( अमृत ) गुर्चं वा गिलोय, देवदारु, हरदी ( अतिविषा )  
 अतीस, ( दार्वी ) दारुहरदी, पिपरामूल, चीता के जड़ की छाल, घन्नि-  
 या, त्रिकला, चाव, बावबिरंग, गजपीपर, ( व्योषं ) शोंठ प्रीपर और  
 मिर्च ( मासिक घातु ) सुवर्णनाडिक का शुद्ध भस्म, ( द्वीक्षारी ) जवा-  
 खार और सज्जीखार ( लवणत्रय ) सेंधानेन, कालानेन और बिहूनेन  
 इन चीजों को तीन २ मासा लेय ( त्रिवृत ) निशोध, ( दन्ती ) जवाल-  
 गोटे के जड़ की छाल, ( पत्रक ) तेजपात, ( त्वग ) दालचीनी, ( एला )  
 छोटी लायची के दाने और बंसलोचन इन सब दवाइयों को दश २  
 मासा लेय । सूख शुद्ध कांतीसार अथवा पोलाद भस्म जो जल पर उत-  
 राता है २० मासा लेय सबों को चूर्ण कर तथा अढ़ाई तोला मिश्री  
 और शुद्ध शिलाजीत पांच तोला उभोंमें मिलादेय और शिलाजीत के  
 बराबर सोधा उत्तम गुग्गुल मिलाय पानी का पुट दे चना बराबर गोली  
 बनाय छाये में सुखाय थोतल में भर कर रखदेय इसको चन्द्रप्रभा गुटिका  
 कहते हैं । इसको देानों समय सेवन करने से कफ घात जनित प्रमेह  
 रोग नष्ट होता है ॥

चन्द्रप्रभा गुटिका का गुण दन्त नेत्रादि रोगोंका भी नाशक लिखा है  
 किन्तु बिलकुल वाह्यमात्र है जो यथार्थ गुण है वह हमने लिख दिया है ।

दूसरी बात यह है कि चन्द्रप्रभायटी की तील एक कर्ष भर लिखा है (चन्द्रप्रभायां कर्षस्तु) यदि कर्षभर याने दश मासा की मोली बना के रोगी को खिलाई जाय तो बيمार विचारे की क्या दशा होगी, रोग दूर होना तो दूर रहा उसे खुदी इस दुनिये को तिलांजलि देना पड़े, मात्रा निष्या नहीं है क्योंकि उस जमाने में लोग वीसाही बलवान होते थे जिस जमाने में यह पुस्तक रची गई है, शोक वर्तमान के वैद्यों पर होता है जो नई पुस्तक रचने अथवा टीका बनाने में तो धन्वन्तरि के भी गुरु बनजाते हैं किन्तु देश समयके अनुसार मनुष्यके बलाबलपर बिल कुल ध्यान नहीं रखते। हमने ठीक देखा है जिस औषधकी मात्रा छ मासा है आजकल के लोगोंको एक मासा दवा पचना मुस्किल पड़जाता है। यही समय है जो आजकल लोगों की बिमारी न आराम हो के उस र दवा खाते हैं और भी बिमारी बढ़ती है।

दूसरे आजकल के टीकाकारों में एक बड़ा भारी दोष और भी पाया जाता है, वैद्यक क्या चीज है जानते नहीं व्याकरण की शक्ति से शब्दार्थ निकाल कर रख देते हैं यह भी औषधियों के नाम तो बड़ा ही गड़बड़ करहालते हैं उदाहरण में सिर्फ एक दवा को दिखलाते हैं। जैसे—पत्रज जिसका प्रसिद्ध नाम तेजपात है मसाला में भी पड़ता है उसके परयाय नाम में एक नाम तमाल पत्र है और भारत में यह प्रसिद्ध है कि तमाकू को लोग तमाल पत्र कहते हैं तो यह समस्त साधारण लोगों में नहीं होता, भाषा की किताबों को देख के प्रायः आयुर्वेद विज्ञान रहित जन औषध बनाते हैं, तमाल पत्र को पढ़ कर तेजपात की जगह कहीं तमाकू छोड़ दिया तो रोगी की क्या गति होगी इसीसे पण्डितों की सम्मति आर्थ ग्रन्थों में रहती है और भी अनेक आपत्तियाँ हैं जिन्हें समय पा के दिखलावेंगे ॥

**प्रमेह रोग पर शिलाजीत प्रयोग ।**

वातज चार प्रमेह जो प्रायः नासाध्य होता है क्योंकि यह रोग

मनुष्य के मारने के लिये जाता है ऐसे दुष्कर रोग को यदि आराम करने की सामर्थ्य है तो शिलाजीतमें है यदि उत्तम शिलाजीत मिले और पंच्य सहित सेवन किया जाय तो मिस्रन्देह प्रमेह रोग आराम हो जाय क्योंकि उत्तम औषध के अलाभ से रोग मनुष्य को मारता है । शिलाजीत में वैद्यों की सम्मति ।

नसोस्तिरोगोभुविसाध्यरूपो योह्यस्यजेयंनजयेत्प्रसह्य । तत्कालयोगैर्विविधैः प्रयुक्तस्वास्थ्यंतनौयद्विपुलं ददाति ॥

ऐसा कोई असाध्य रोग पृथ्वी पर नहीं है जो शिलाजीत के खाने से न जाय, अनेक रोगों के साथ शिलाजीत को सेवन करने से बहुत शीघ्र शरीर में आरोग्यता लाभ होता है ।

### शिलाजीत की उत्पत्ति ।

शिलाजीत की उत्पत्ति शास्त्रकारों ने इस प्रकार लिखा है समुद्र से अमृत निकालने के समय जब देवतां और दैत्यों ने मिलकर मंदराचल पर्वत को समुद्र में डालकर मथा था, ऐसा कहा जाता है कि उस समय गरभाहट पाकर उस पर्वत में पसीना निकला और समुद्र में गिरा, मथने के समय यह भी देवतां को मिला, तब देवतां ने उस शिलाजीत को ब्रह्मा और इन्द्र की राय लेकर मनुष्यों के उपकारार्थ उसे समस्त पर्वतों को दिया अर्थात् सब पर्वतों में उसका ब्रेहन डालदिया तभी से यह सामान्य शिलाजीत अमृत कल्प के समान ग्रीष्म रितु में सूर्य की धूप से पर्वत तप्त होने से उसमें से बहता है जिस पर्वत में जो धातु होता है उसीके वर्ण के समान उस पर्वत से शिलाजीत निकलता है ।

सेना, चांदी, रांगा, सीसा, तांबा और लोहे से शिलाजीत की उत्पत्ति है अर्थात् जिन पर्वतों में उपरोक्त धातुओं में से किसी धातु का

निदाघेधर्मसंतप्ता धातुसारंधराधराः । निर्यासवत्प्र-  
मुंचन्ति शिलाजतुप्रकीर्त्तितम् ॥

सूर्य के किरणों की गर्मी से जन्म पर्वत तप्त होते हैं तब उनमें से धातुओं का भार रूप ( निर्यासवत् ) याने गोद के समान पतला पदार्थ जिसे शिलाजीत कहते हैं निकलता है और बहुत दिनों तक गोद के समान लसदार बना रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो शिला-जीत बाजार में बतियों के यहां मूषा मिलता है दर हकीकत बन्दरों का विष्टा है, अज्ञान लोग उसे शिलाजीत समझते हैं ॥

**शुद्ध असिल शिलाजोतकी परीक्षा ।**

वन्हौंक्षितन्तुनिर्धूमं एकत्वालिक्षोपमंभवेत् । तृणाग्रे-  
णांभसिक्षितमधोग्लतितन्तुवत् ॥ गोसूत्रगन्धमलिनं शुद्धं  
ज्ञेयंशिलाजतु ॥

जो शिलाजीत अग्नि में डालने से निर्धूम याने धुआं न देय और पकनेसे याने अग्नि पर रखने से लिङ्गके समान खड़ा होजाय तिनका के अग्रभाग पर रखकर जल में डालने से तार तार सा होकर जल में नीचे बैठ जावे, और उसमें गोसूत्र की सी दुर्गन्ध आवे, मलिन काले रंग का पतला गोद के समान हो उसे शुद्ध शिलाजीत मानना ॥

**शुद्ध शिलाजोत के गुण ।**

रसोपरससूतेन्द्र रत्नलोहेपुयेगुणाः । वसंतितेशिला-  
धातौः जराभृत्युजिगोपया ॥ शिलाजकटुतिक्तोष्ण कटु-  
पाकरसायनम् । छर्दिरोगन्तथाहन्ति कम्पमेहास्मशकराः॥



मूत्रकृच्छ्रक्षयश्वासं वातमर्शांसिपांडुता । अपस्मारमथो-  
न्माद शोफकुण्ठोदरकृमीन् ॥

रस, उपरस, पारद, रत्न और लोहे में जो गुण हैं वह सब गुण शिलाजीत में हैं वह बुढ़ापा और मृत्यु को जीतनेवाला है शिलाजीत कहुआ, तीता, गरग, पाक में कटु और रसायन याने बुढ़ापापन को नाश करनेवाला है । वमन, कन्धवायु, बीसोंप्रमेहरोग, पथरी, रोगमसाना, सुजाक, कफसर्द, श्वासरोग, यादीबाधासीर, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, मूजन, कोढ़ और कृमिरोध को नाश करता है ॥

### शिलाजीत का सामान्य लक्षण ।

यत्सर्वतित्तकटुकं कपायानुरसंसरम् । कटुपाक्यु-  
ष्णवीर्यञ्च शोषणंछेदनंतथा ॥ तेषुयत्कृष्णमलद्यु स्त्रिगंध-  
निःशर्करञ्चयत् । गोमूत्रगन्धियच्चापि तत्प्रधानंप्रचक्षते ॥

यस प्रकार के शिलाजीत स्याद में घरपरे, कहुये, कपायल, हेते हैं गुणों में दस्तायर कटुपाकी, उष्णवीर्य, ( शोषी ) रसादि धातुओं का सुखानेवाला और छेदी • है लेकिन उन सबों में से जो शिलाजीत काले रंग का भारी चिकना कंकड़ रेत रहित और जिसमें गोमूत्र किसी दुर्गन्ध आती है वह शिलाजीत उत्तम होता है ।

### शिलाजीत शुद्ध करने की प्रथम विधिः ।

गरमी के दिनों में जय आकाश मेघ और वायु पर के रहित है उस समय उत्तम स्थान में लोहे के चार पात्र जो कटारे के भाँति हों

• जो औषध मिळे हुये कफादि दोषों को अपने शक्ति से यहां से हटाकर बाहर करदे उसे छेदी कहते हैं ।

स्थापन करै उनमें से पहले पाल में शिलाजीत को टुकड़े कर के डाल दे और शिलाजीत से उसमें दूना जल डाल दे और ऊपर से घोड़ा गरम जल डाल के हाथ से सूख जल के मोटे कपड़े से छानले, उस छाने जल को दूसरे पात्र में डालकर धूपमें रखदेवै और उसके ऊपर जस २ मलाई जमतीजाय तीसरे पात्र में रखता जाय, जब मलाई का जमना बन्द हो जाय उस पानी को फेक बरतन साफ करलेप और जिस बर्तन में मलाई रखी गई है उसमें भी गरम जल डाल के धूप में रखदे, जब उसमें भी मलाई जमना बुरू हो चौथे पात्र में रखताजाय जब मलाई जमना बन्द हो जाय तो उसका भी पानी फेंक बर्तन साफ करलेप और चौथे पात्र में फिर गरम पानी डाल के धूप में रखदेप और जस २ मलाई जमती जाय पुनः प्रथम पात्र में रखता जाय और गरम पानी डाल के धूप में रखदेप इस प्रकार पांच छ बार करने से जब देखे की अब मलाई नहीं जमती पानी सूँघ बना है तब जानना चाहिये कि शिलाजीत शुद्ध हो गया उसे निकाल किसी उत्तम पात्र में रखदेप, यह उत्तम शुद्ध शिलाजीत है ।

### द्वितीय विधिः ।

शिलाजतुंसमानीय शीघ्रेतप्तशिलाच्युतं । गोदुग्धै-  
खिलाक्वाथैर्भृङ्गद्रावैश्चमदयेत् ॥ आतपेदिनमेकैकं  
तच्छुष्कंशुद्धतां व्रजेत् ।

शीघ्र शतु अर्थात् गरमी के दिनों में जब पर्यंत अत्यन्त गरम हो जाता है तब पर्वतों से शिलाजीत चूता है । उस शिलाजीत से मलिन दूरी करणार्थ गौ का दूध, त्रिफला का काढ़ा और भांगरे का स्वरस में एक २ दिन भावना देके सुखालेशे शिलाजीत शुद्ध होजायगा । किन्तु यह शुद्धता मध्यम दर्जे का है यह शिलाजीत गरम करता है ।

नष्ट होता है क्योंकि इस औषध का फल बहुत शीघ्र दृष्टिगोचर होता है । जब औषध पच जाय तब उत्तम भोजन करे ।

## मधुमेह की चिकित्सा ।

सुश्रुत संहिता चिकित्सित स्थानः ।

मधुमेहिवत्पन्नं भिषग्भिःपरिवर्जितम् । योगेना-  
नेनमतिमान् प्रमेहिणमुपाचरेत् ॥ मासेशुक्रेशुचौचैवशैलाः  
सूर्योशुतापिताः । जतुप्रकाशंस्वरसं शिलाभ्यःप्रस्रवन्तिह ॥  
शिलाजत्वितिचिख्यातं सर्वव्याधिविनाशनम् । त्रप्यादी-  
नान्तुलोहानां पण्णामन्यतमान्वयम् । ज्ञेयंस्वगन्धतश्चापि  
पेडूयोनिप्रथितंक्षितौ ॥ लोहात्भवतितद्यस्माच्छिलाजतु  
जतुप्रभम् । तस्यलोहस्यतद्वीर्यं रसज्जापिविभर्तितत् ॥  
त्वपुसीसायसादीन प्रधानान्युत्तरोत्तरम् । यथातथाप्रयो-  
गेऽपि श्रेष्ठेश्रेष्ठगुणाःस्मृताः ॥

मधुमेहादि चार प्रकार के वातज प्रमेह रोग में सुश्रुत जी ने शिला-  
जीत को प्रधान औषध कहा है । सुश्रुत जी कहते हैं कि जिस मधुमेही  
को असाध्य जानकर वैद्यों ने त्याग दिया हो उसकी चिकित्सा निम्न-  
लिखित उपाय से करना उचित है । ज्येष्ठ अथवा जापाढ़ के महीने में  
जब सूर्य की गरमी से पर्वत अत्यन्त तप्त हो जाते हैं तब पत्थरों के  
सन्धिपों से पिघली हुई लाहरी के समान एक प्रकार का रस निकलता  
है, उसी रस को वैद्य लोग शिलाजीत कहते हैं, और उसी नाम से चि-  
ख्यात है तथा शहरों में बिकता भी है । यह बात अवश्य है कि जो रोग किमी

जीवध से आराम न हो वह रोग शिलाजीत से दूर होता है अर्थात् शिलाजीत अनेक-प्रकार के योगों से अनेक रोगों को नाश करता है ।

रांगा, सीसा, तांबा, रूपा सुवर्ण और लोहा इन छ धातुओं में से किसी एक धातु कि सुगन्धि शिलाजीत में अवश्य आया करती है इसी से शिलाजीत को खट्योनि भी कहते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि उपरोक्त छः धातुओं में किसी एक धातु की खान या अंश जिस परवत में होगा उसी परवत से शिलाजीत कि उत्पत्ति होगी अन्य परवतों से नहीं हस्ते जो परवत में जिस धातु का अंश होगा उसी धातु कि गन्ध शिलाजीत में आवेगी और उसी धातु का वीर्य और उसीका रस भी शिलाजीत धारण करता है । रांगा, सीसा, तांबा, लोहा इत्यादि सब धातु गुणों में उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं उसी तरह शिलाजीत भी गुणों और प्रयोगों में श्रेष्ठ है ।

तद्भावितंसारगणैर्हृतदोषोदिनोदये । पिवेत्सारोदकेनैव श्लक्ष्णपिष्टंयथात्रलम् ॥ जाङ्गलेनरसेनान्तं तस्मिन्जीर्णंतुभोजयेत् । उपयुत्यतुलामेवगिरिजादमृतापमात् ॥ वपुर्वर्णवलोपेतो मधुमेहविवर्जितः । जीवद्वेषशतपूर्णां जरोऽमरसन्निभः ॥ शतशतंतुलायान्तु सहस्रशतौलिके । भ्रूतिकविधानेन परिहारविधिःस्मृतः ॥ मेहंकुष्टमपस्मार भुन्भादंशलीपदंगरम् । शोषशोफार्शसीगुल्मं पाण्डुतांविपमज्वरम् ॥ अषोहत्यचिरात्कालाच्छिलाजतुनिषोवितम् । नरोऽस्तिरोगीयज्ञापि निहन्यान्न-

शिलाजतु ॥ शर्करांचिरसम्भूतां भिनत्तिचतथाश्मरीम् ।  
भावनालोडनेचास्य कर्त्तव्येभेपजैर्हितैः ॥

पूर्वोक्त प्रकार से शुद्ध किया हुआ शिलाजीत को अथवा शालि-  
सारादि द्रव्यों की भावना देकर अमन विरेचनादि द्वारा दीपों के दूर  
होने पर सुयोदय के पश्चात् उसी शालिसारादि केजल में पीस के बल  
के अनुसार खाय उसके पचाने पर जंगल पशुओं के मांस रस के साथ  
पुराने चावल का भात या जव की रोटी भोजन करे इस रीति से अमृत  
के समान गुणकारी इस शिलाजीत को जो पांच सेर खालीग उसका देह  
सुन्दरवर्ण और बल से युक्त हो जायगा, और मधुमेह भी जाता रहेगा ।  
अगर अमर होकर सौ बरस की पूर्ण आयु को प्राप्त करेगा और एक  
पसेरी शिलाजीत सेवन करने से सौवर्ष आयु बढ़ती चली जायगी अर्थात्  
सवामन खालीने से सहस्र वर्ष की अवस्था को प्राप्त होगा । भिलाये के  
विधान के समानही इसमें आहार विहार का नियम है । शिलाजीत से  
प्रमेह, कोढ़, मृगी, पागलपना, पीलपाय, शोथ, शोफ, अर्श, गुल्म, पायुहु  
रोग, विषमज्वर इत्यादि सब रोग बहुतही अल्पकाल में नष्ट हो जाते  
हैं । ऐसा कोई रोग नहीं है जो शिलाजीत से दूर न हो। बहुत दिवस के  
उत्पन्न हुये शर्करा और पथरी रोग हटजाते हैं । इसमें उत्तम २ औषधों  
की भावना देकर उत्तमही औषधों में इसे घोटै ॥

सात्पर्य यह है कि भूतपूर्व ऋषियों ने जिन औषधियों को अधिक  
गुणकारी पाया है उसीको अधिक पुष्टता के साथ सिलाने को जोर  
दिया है सिफं भेद इतनाही है ऋषियों ने उसी समय के अनुसार औ-  
षधियों के गुण मात्रा और खाने का विधान लिखा है, जिस समय कि  
उन्होंने अपनी २ संहिता रची है उन को यह मालूम नहीं था कि  
भविष्य में इस शुद्ध आयुर्वेद में सौहार्द का राज्य होगा और राम, याम,

व्यवहारादिक धर्तन से मनुष्यों की प्रकृति, बल, रोग, और समय का भी बहुत कुछ हेर फेर हो जायगा नहीं तो भविष्यत के लिये भी यही श्रवण गण औषधियों के मात्रा की न्यूनाधिक करने की विधि लिखगते ।

लिखा है कि इस शिलाजीत को एक तुला, याने पांच सेर जो खालीगः विमारी आराम होने के बाद सी वर्ष जीवैगः, इसी तरह प्रति पांच सेर से सी २ वर्ष की आयु समझना चाहिये इस प्रकार से मवामन शिलाजीतखाने से मनुष्य एक हजार वर्ष जी सकता है । अगर यह बात सत्य हो तो कौन मनुष्य ऐसा है जो बहुत दिनों तक इस संसार में जीने की इच्छा न रखता हो । पाँडेकगण यह न समझें कि हम शिलाजीत के गुण का जो श्रवणों ने लिखा है असत्य समझते हैं नहीं बिलकुल सत्य है किन्तु अब मनुष्य में यह बल नहीं रहा जो देा तोला रोग खासके । पूर्व जमाने में जिन औषधियों की मात्रा एक तोला थी उसकी मात्रा आज के जमाने में एक मासा था अधिक से अधिक दो मासा समझना चाहिये, तो आज के समय में यदि ५ सेर शिलाजीत खाना चाहे तो उसके लिये १३ वर्ष ४ महीना की जरूरत है । आयु अद्दुपथे इतने दिनों तक किसी औषध का सेवन करना कठिन बात नहीं है, यहां तो लोग चाहते हैं कि एकही दिन के औषध सेवन से जन्म के रोग छुट जाय यही मे आज भारत में १०० में ८५ वे मनुष्य रोग ग्रस्त हो रहे हैं । प्रमेहरोग पर शिलाजीत का सेवन करना हमारी पूरी सम्मति है क्योंकि इसे हम स्वयं सेवन करके परीक्षा लेचुके हैं ।

इसी तरह एक और प्रधान औषध परीक्षित है जिसे छठवें खण्ड में प्रकाश करते हैं ॥